5

श्रीगणेशाम्बा गुरूभ्यो नमः

ऐमम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।

पंचांगकर्त्ता:
पं.कौशलकिशोर कौशिक ज्यो.

राजा मंगल

मन्त्री बुध

श्री ब्रजभूमि पञ्चाङ्गम्

शुभ सम्वत् २०६७ शाके १९३२ ईसवीं सन् २०१०-११

सम्पादक :- पं. श्री कौशलकिशोर कौशिक ज्यो., संरक्षक :- ज्योतिर्विद पं. श्री प्रेमपाल कौशिक, रजत-स्वर्ण पदक विजेता

वर्षाङ्क १६

श्री ब्रजभूमि पंचांग कार्यालय :- ई-२१९, मेन रोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-११००५३
निवास :- जी-९७, शिव मंदिर वाली गली, जगजीत नगर, दिल्ली-११००५३

मूल्य ३८/-

प्रकाशक- श्रीराजधानीपंचांग कार्यालय,E-219,मेनरोड़,जगजीतनगर,दिल्ली-53,फोन- 22852476, 22941608, 9868909063

श्रीराजधानीपंचांग एवं श्रीब्रजभूमिपंचांग के तत्त्वावधान में दिनांक 20-21 जून 2009 को श्री भक्ति मंदिर, बुर्जारोड़, चैतन्य विहार, वृन्दावनमें

अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन

पं. प्रेमपाल कौशिक ज्योतिषाचार्य के संयोजन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन में देशभर के लगभग 400 प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य, विद्वानों ने भाग लिया। जिनमें देश के प्रमुख पंचांगकर्त्ता भी शामिल थे। सम्मेलन का उद्घाटन महामहोपाध्याय डा. वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी के करकमलों द्वारा हुआ। सम्मेलन की व्यापक कवरेज स्थानीय टेलीवीजन व समाचार पत्रों ने की। सम्मेलन की समाप्ति पर पं. प्रेमपाल कौशिक जी ने सभी विद्वानों का सम्मान स्मृतिचिन्ह, गोल्डमेडल व प्रमाणपत्र देकर किया। प्रस्तुत हैं ज्योतिष सम्मेलन के कुछ अविस्मरणीय चित्र।

पं. प्रेमपाल कौशिक ज्यो.

पं.कौशलकिशोरकौशिक ज्यो.

संरक्षक :-पं० प्रेमपाल कौशिक ज्यो०
ज्योतिष सम्राट्

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ऐमम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती ।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि ।।

अवै.सं.कौशलकिशोर कौशिक ज्यो.
बी.ए.,एल.एल.बी.

श्री ब्रजभूमि-पञ्चाङ्गम्

संरक्षक:- ज्योतिर्विद् पं० श्री प्रेमपाल कौशिक, सम्पादक:- श्रीकौशलकिशोर कौशिक ज्यो०

श्री ब्रजभूमि पंचांग कार्यालय, E-219, मेन रोड, जगजीत नगर, दिल्ली -110053
Email:rajdhanipanchang@Gmail.com दूरभाष:- कार्यालय : 22852476, निवास : 22941608, मोबाइल : 9868909063

विषय - सूची संवत् 2067

इस वर्ष के नए विषय

नाड़ी दोष और उसके परिहार
सातवां भाव और स्त्री जातक पर विशेष विचार
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और वैष्णव मत परिलेख
सामूहिक व्यापार भविष्य
शेयरबाजार एवं तेजी मन्दी समीक्षा

होलोग्राम स्टीकर देखें- नये साल का पंचांग खरीदते समय मुखपृष्ठ पर संरक्षक पं. श्रीप्रेमपाल कौशिक जी का हिन्दी व अंग्रेजी में नाम तथा फोटोवाला त्रिदर्पणीय इन्द्रधनुषीय होलोग्राम अवश्य देख लें।

सरकारी छुट्टियाँ एवं प्रमुख पर्व-दिन सं.२०६७ (16 मार्च 2010 से 3 अप्रैल 2011 ई.तक)

पर्व	तिथि	वार
गुडी१,गौतमज.,नवरात्रप्रा.	१६ मार्च	मंगल
गणगौर पूजन सवारी जयपुर	१८ "	गुरु
श्रीरामनवमी व्रतोत्सव	२४ "	बुध
श्रीमहावीरजयंती(२६०९वीं)	२८ "	रवि
श्रीहनुमज्जयंती, चैत्रीपूर्णिमा	३० "	मंगल
बैंक वार्षिक लेखाबन्दी	१ अप्रैल	गुरु
गुडफ्राईडे	२ "	शुक्र
वैशाखी,कुम्भमहापर्व हरिद्वार	१४ "	बुध
डा.अम्बेडकरज.,विशू केरल	१४ "	बुध
श्री बुद्धपूर्णिमा	२७ मई	गुरु
वट्सावित्री व्रत	१२ जून	शनि
श्रीगङ्गादशहरा स्नानादि पर्व	२१ "	सोम
जन्मदिन हजरतअली	२६ "	शनि
श्रीजगदीश रथयात्रा (पुरी)	१३ जुला.	मंगल
गुरुपूर्णिमा	२५ "	रवि
मासशिवरात्रिव्रत,रुद्राभिषेक	८ अग.	रवि
हरियाली तीज	१२ "	गुरु
६४ वाँ स्वतन्त्रतादिवस	१५ "	रवि
ओनम् (केरल, तमिलनाडु)	२३ "	सोम
रक्षाबन्धन (राखी)	२४ "	मंगल
श्रीकृष्णजन्माष्टमी स्मार्त्त	१ सित.	बुध
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव	२ "	गुरु
जमातुल विदा मुस.	३ "	शुक्र
ईदुलफितर (मीठीईद)	१० "	शुक्र.
श्रीगणेशज,पत्थरचौथ महा.	११ "	शनि
श्रीविश्वकर्मा पूजा	१७ "	शुक्र
बैंक अर्धावार्षिक लेखाबन्दी	३० "	गुरु
श्रीगांधीजीव शास्त्रीजीजयंती	२ अक्टू	शनि
शारदीय नवरात्रप्रारम्भ	८ अक्टू	शुक्र
श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	१५ "	शुक्र
विजया १० दशहरा मेला	१७ "	रवि
म.बाल्मीक जयंती	२२ "	शुक्र
करवाचौथ व्रत	२६ "	मंगल
दीपावली श्रीमहालक्ष्मीपूजन	५ नव.	शुक्र
अन्नकूट गोवर्धनपूजा	६ "	शनि
भइयादूज (टीका)	७ "	रवि
ईद-उल-जुहा	१७ "	बुध
गुरुनानकजयंती,कार्तिकीपूर्णिमा	२१ "	रवि
गुरुतेगबहादुर बलिदान दि.	१० दिस.	शुक्र
मोहर्रम (ताजिया)	१७ "	शुक्र
क्रिसमसडे (बड़ादिन)	२५ "	शनि
अंग्रेजी नववर्ष २०११ प्रा.	१ जन.	शनि
गुरु गोविन्दसिंह जयंती	५ "	बुध
लोहड़ी (पंजाब,हरि.,हिमा.)	१३ "	गुरु
मकरसंक्रांति, पोंगल	१४ "	शुक्र
६२ वाँ गणतन्त्र दिवस	२६ "	बुध
वसंतपंचमी	८ फर.	मंगल
बाराबफात, ईद-ए-मिलाद	१६ "	बुध
माघीपूर्णिमा,भक्तरविदास ज.	१८ "	शुक्र
महाशिवरात्रिव्रत	२ मार्च	बुध
होलिका दहन	१९ "	शनि
धुलैण्डी	२० "	रवि
बैंकवार्षिक लेखाबन्दी	१ अप्रैल	शुक्र

सूचना:- सरकारी छुट्टियाँ तथा पर्व-दिन तारीख की सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से मिलान कर लेना चाहिए। किंचित फेरबदल का उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं है।

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

मास	तिथि	वार
प्र.वैशाख २०१०	२ अप्रैल	शुक्रवार
द्वि.वैशाख	१ मई	शनिवार
ज्येष्ठ	३१ "	सोमवार
आषाढ़	३० जून	बुधवार
श्रावण	२९ जुला.	गुरुवार
श्रावण वरद्	१३ अग.	शुक्रवार
भाद्रपद बहुला	२८ "	शनिवार
भाद्रपद गणेशज.	११ सित.	शनिवार
आश्विन	२७ "	सोमवार
कार्तिक करवा	२६ अक्टू.	मंगलवार
मार्गशीर्ष	२५ नव.	गुरुवार
मार्गशीर्ष वैनायकी	९ दिस.	गुरुवार
पौष	२४ दिस.	शुक्रवार
माघ सकट	२२ जन.	शनिवार
माघ तिल	७ फर.	सोमवार
फाल्गुन	२१ "	सोमवार
चैत्र	२२ मार्च	मंगलवार

कालाष्टमी व्रत

मास	तिथि	वार
प्र.वैशाख	६ अप्रैल	मंगलवार
द्वि.वैशाख	६ मई	गुरुवार
ज्येष्ठ	४ जून	शुक्रवार
आषाढ़	४ जुलाई	रविवार
श्रावण	३ अगस्त	मंगलवार
भाद्रपद	१ सित.	बुधवार
आश्विन	३० सित.	गुरुवार
कार्तिक	३० अक्टू.	शनिवार
मार्ग.भैरवाष्टमी	२८ नव.	रविवार
पौष	२८ दिस.	मंगलवार
माघ	२६ जनवरी	बुधवार
फाल्गुन	२४ फरवरी	गुरुवार
चैत्र	२६ मार्च	शनिवार

एकादशी व्रत

एकादशी	तिथि	वार
चैत्र शुक्ल कामदा	२६ मार्च	शुक्र
प्र.वैशा. कृष्ण वरूथिनी	१० अप्रैल	शनि
" शुक्ल पुरुषोत्तमा	२४ "	शनि
द्वि.वैशा. कृष्ण पुरुषोत्तमा	९ मई	रवि
" शुक्ल मोहिनी	२४ "	सोम
ज्येष्ठ कृष्ण अपरा	८ जून	मंगल
" शुक्ल निर्जला	२२ "	मंगल
आषाढ़ कृष्ण योगिनी	८ जुला.	गुरु
" शुक्ल शयनी	२१ "	बुध
श्रावण कृष्ण कामिका	६ अग.	शुक्र
" शुक्ल पवित्रा	२० "	शुक्र
भाद्रपद कृष्ण अजा स्मार्त्त	४ सित.	शनि
" शुक्ल पद्मा	१८ "	शनि
आश्विन कृष्ण इन्दिरा	४ अक्टू.	सोम
" शुक्ल पापांकुशा	१८ "	सोम
कार्तिक कृष्ण रमा	२ नव.	मंगल
" शुक्ल प्रबोधिनी	१७ "	बुध
मार्ग. कृष्ण उत्पत्ति,स्मार्त्त	१ दिस.	बुध
" शुक्ल मोक्षदा	१७ "	शुक्र
पौष कृष्ण सफला	३१ "	शुक्र
" शुक्ल पुत्रदा	१६ जन.	रवि
माघ कृष्ण षट्तिला	२९ "	शनि
" शुक्ल जया	१४ फर.	सोग
फाल्गुन कृष्ण विजया	२८ "	सोम
" शुक्ल आमला	१६ मार्च	बुध
चैत्र कृष्ण पापमोचनी	३० "	बुध

एकादशीव्रत स्मार्त्त- सद्गृहस्थियों के लिए हैं, जिससे अग्रिमदिन चक्रांकित महाभागवत वैष्णवजन, साधूसन्यासी, योगीजती, विधवा स्त्रियाँ व्रत करती हैं। जिस दिन एकादशी के सामने कुछ न लिखा हो वह सभी के लिए समान व्रतोपयोगी है।

माघ	कृष्ण	३१ "	सोमवार
"	शुक्ल	१६ फर.	बुधवार
फाल्गुन	कृष्ण	२ मार्च	बुधवार
"	शुक्ल	१७ "	गुरुवार
चैत्र	कृष्ण	३१ "	गुरुवार

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	२७ मार्च	शनिवार
प्र.वैशाख	कृष्ण	११ अप्रैल	रविवार
"	शुक्ल	२६ "	सोमवार
द्वि.वैशाख	कृष्ण	११ मई	मंगलवार
"	शुक्ल	२५ "	मंगलवार
ज्येष्ठ	कृष्ण	१० जून	गुरुवार
"	शुक्ल	२३ "	बुधवार
आषाढ़	कृष्ण	९ जुला.	शुक्रवार
"	शुक्ल	२३ "	शुक्रवार
श्रावण	कृष्ण	७ अग.	शनिवार
"	शुक्ल	२१ "	शनिवार
भाद्रपद	कृष्ण	६ सित.	सोमवार
"	शुक्ल	२० "	सोमवार
आश्विन	कृष्ण	५ अक्टू.	मंगलवार
"	शुक्ल	२० "	बुधवार
कार्तिक	कृष्ण	४ नव.	गुरुवार
"	शुक्ल	१९ "	शुक्रवार
मार्गशीर्ष	कृष्ण	३ दिस.	शुक्रवार
"	शुक्ल	१८ "	शनिवार
पौष	कृष्ण	१ जन.	शनिवार
"	शुक्ल	१७ "	सोमवार

मासिक शिवरात्रि व्रत

श्रीगङ्गाजल से शिव अभिषेक आराधना में सर्वोत्तम माना गया है। गंगाजलके अतिरिक्त रत्नोदक, इक्षुरस (गन्नेका रस) दुग्धा, पञ्चामृत (दूध, दही, घी, चीनी, शहद) आदि अनेक द्रव्योंसे किया जाता है। वृहद्धर्मपुराण अ.५७ में तो यहां तक लिखा है कि शिवलिङ्ग में सभी देवताओंका पूजन करें- शिवलिङ्गेऽपि सर्वेषां देवानां पूजनं भवेत्। सर्वलोक मये यस्याच्छिव शक्तिर्विभुः प्रभुः॥ पञ्चाक्षर मन्त्र- (नमः शिवाय) षडाक्षरमन्त्र- (ॐ नमः शिवाय) शिवजी के अनन्य भक्त श्रावण मास में कन्धों पर कांवड़ि उठाए नंगेपांव भागते दौड़ते मुख से बोलते बम-बम भोले। हर-हर महादेव॥ के उद्घोष अत्यन्त शोभायमान लगते हैं। अवढ़रदानी सदा शिव सबकी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

प्र.वैशाख	१२ अप्रैल	सोमवार
द्वि.वैशाख	१२ मई	बुधवार
ज्येष्ठ	१० जून	गुरुवार
आषाढ़	१० जुलाई	शनिवार
श्रावणमासशिवरात्रि	८ अगस्त	रविवार
भाद्रपद	६ सित.	सोमवार
आश्विन	६ अक्टू.	बुधवार
कार्तिक	४ नव.	गुरुवार
मार्गशीर्ष	४ दिस.	शनिवार
पौष (२०११)	२ जनवरी	रविवार
माघ	१ फरवरी	मंगलवार
फाल्गु. महाशिवरात्रि	२ मार्च	बुधवार
चैत्र	१ अप्रैल	शुक्रवार

शिव अभिषेक
हर-हर महादेव

व्रत की पूर्णिमाएं

चैत्र (२०१०)	२९ मार्च	सोमवार
प्र.वैशाख	२८ अप्रैल	बुधवार
द्वि.वैशाख	२७ मई	गुरुवार
ज्येष्ठ	२६ जून	शनिवार
आषाढ़	२५ जुलाई	रविवार
श्रावण	२४ अग.	मंगलवार
भाद्रपद	२२ सित.	बुधवार
आश्विन	२२ अक्टू.	शुक्रवार
कार्तिक	२१ नव.	रविवार
मार्गशीर्ष	२० दिस.	सोमवार
पौष (२०११)	१९ जनवरी	बुधवार
माघ	१७ फरवरी	गुरुवार
फाल्गुन	१९ मार्च	शनिवार

अमावस्याएं

प्र.वैशाख	१४ अप्रैल	बुधवार
द्वि.वैशाख	१४ मई	शुक्रवार
ज्येष्ठ	१२ जून	शनिवार
आषाढ़	११ जुलाई	रविवार
श्रावण	१० अग.	मंगलवार
भाद्रपद	८ सित.	बुधवार
आश्विन पितर	७ अक्टू.	गुरुवार
कार्तिक	६ नव.	शनिवार
मार्गशीर्ष	५ दिस.	रविवार
पौष सूर्यग्रहण	४ जन.	मंगलवार
माघ	३ फर.	गुरुवार
फाल्गुन	४ मार्च	शुक्रवार
चैत्र	३ अप्रैल	रविवार

संक्रान्तियाँ पुण्यकाल

मेष	१४ अप्रैल	पुण्यकाल दिनभर
वृष	१४ मई	पुण्यकालअग्रिमदिन
मिथुन	१५ जून	पुण्यकाल दिनभर
कर्क	१६ जुला.	पुण्यकाल ९/१० से
सिंह	१६ अग.	पुण्यकालअग्रिमदिन
कन्या	१६ सित.	पुण्यकालअग्रिमदिन
तुला	१७ अक्टू.	पुण्यमध्याह्नात्परतः
वृश्चि.	१६ नव.	पुण्यमध्याह्नात्परतः
धनु	१६ दिस.	पुण्यकाल दिनभर
मकर	१४ जन.	पुण्यमध्याह्नात्परतः १५ जन. मेंप्रातःकाल
कुम्भ	१३ फर.	पुण्यकालअपराह्नतक
मीन	१४ मार्च	पुण्यकालअग्रिमदिन

सौंदर्यवर्धक सोभाग्य सुखसूचक रोहिणी व्रत

चैत्र (२०१०)	२२ मार्च	सोमवार
वैशाख	१८ अप्रैल	रविवार
वैशाख	१५ मई	शनिवार
ज्येष्ठ	११ जून	शुक्रवार
आषाढ़	९ जुलाई	शुक्रवार
श्रावण	५ अगस्त	गुरुवार
भाद्रपद	१ सित.	बुधवार
आश्विन	२९ सित.	बुधवार
कार्तिक	२६ अक्टू.	मंगलवार
मार्गशीर्ष	२२ नव.	सोमवार
मार्गशीर्ष	२० दिस.	सोमवार
पौष (२०११)	१६ जन.	रविवार
माघ	१२ फर.	शनिवार
फाल्गुन	१२ मार्च	शनिवार

'चन्द्र पत्नी च रोहिणी' सूत्रानुसार जिस दिन चन्द्रमा अपनी सर्वाधिक प्रियपत्नी रोहिणी के यहाँ निवास करते हैं। उस दिन विदूषी महिलाएं अपने बल पुरुपार्थमय सौन्दर्य वृद्धि, सौभाग्य सुखोपभोग भोगने की कामना से रोहिणी व्रत किया करती हैं। यह व्रत किस दिन करना अभिष्ट रहेगा, इसका उल्लेख हम प्रतिवर्ष पाठकों की सुविधा के लिए कर देते हैं। जनश्रुति के अनुसार रोहिणी ने चन्द्रमासे यह वर प्राप्त किया था कि जो भी मेरे आपके सानिध्य दिवसमें व्रत रखकर तारोदय होने

पर सविधिपूजन करके अर्घ्य देकर चन्द्रमा सहित रोहिणी का ध्यान करेगा उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जायें।

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रे सुधाशनः। विषमस्थानसम्भूतां पीडांदहतुमें विधुः॥

पद्मपुराण में उल्लिखित ऋषिखण्ड के अनुसार भीष्मजी के प्रश्नोत्तर में पुलस्त्यमुनि ने कहा- हे राजन्! इस लोक में रोहिणी चन्द्रशयन नामक व्रत बडा ही उत्तम माना गया है, जिसके करने वालों को अक्षय स्वर्ग सुख की प्राप्ति होती है। इसमें चन्द्रमा के नामोच्चार सहित नारायण का पूजन होता है। सोमवारी पूर्णिमा को रोहिणी नक्षत्र आने से यह सबल योग बनता है।

सिक्खों के गुरुपर्व

(नानकशाही कैलेण्डर)

श्रीगुरु अनंगदेवजी	१८	अप्रैल
श्रीगुरु तेगबहादुरजी	१८	"
श्रीगुरु अर्जुनदेवजी	२	मई
श्रीगुरु अमरदासजी	२३	"
श्रीगुरु हरगोविन्दजी	५	जुला.
श्रीगुरु हरकिशनजी	२३	"
श्रीगुरु रामदासजी	९	अक्टू.
श्रीगुरु नानकदेवजी	२१	नव.
श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी	५	जनवरी
श्रीगुरु हररायजी	३१	"

(पुरानी परम्परा से)

श्री गुरु तेगबहादुर जी	३	अप्रैल
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	५	"
श्री गुरु अंगददेव जी	१५	"
श्री गुरु अमरदास जी	२७	"
श्री गुरु हरगोविन्द जी	२७	जून
श्री गुरु हरकिशन जी	४	अग.
श्री गुरु रामदास जी	२५	अक्टू.
श्री गुरु नानकदेवजी	२१	नव.
श्री गुरु गोविन्दसिंह जी	११	जन.
श्री गुरु हरराय जी	२	फर.

आश्विनपितरपक्षकेश्राद्ध

पूर्णिमा का श्राद्ध	२३सित.	गुरुवार
प्रतिपदाका श्राद्ध	२४सित.	शुक्रवार
द्वितीया का श्राद्ध	२५सित.	शनिवार
तृतीया का श्राद्ध	२६सित.	रविवार
चतुर्थी का श्राद्ध	२७सित.	सोमवार
पंचमी का श्राद्ध	२८सित.	मंगलवार
षष्ठी का श्राद्ध	२९सित.	बुधवार
सप्तमी का श्राद्ध	३०सित.	गुरुवार
अष्टमी का श्राद्ध	१अक्टू.	शुक्रवार
※नवमी का श्राद्ध	२अक्टू.	शनिवार
दशमी का श्राद्ध	३अक्टू.	रविवार
एकादशीकाश्राद्ध	४अक्टू.	सोमवार
द्वादशी का श्राद्ध	५अक्टू.	मंगलवार
त्रयोदशीकाश्राद्ध	५अक्टू.	मंगलवार
※चतुर्दशीकाश्राद्ध	६अक्टू.	बुधवार
मावसका श्राद्ध	७अक्टू.	गुरुवार

※मातृनवमी को सुहागिन (मृतक) स्त्रियों का श्राद्ध विशेषरूपसे किया जाता है।

※विष, जलाग्नि, अस्त्र, शस्त्र, चोट-फेंट, विषाक्त जीव-जन्तुओं के दंश (काटने) एवं अपमृत्यु वालोंका श्राद्ध चतुर्दशी तिथि में होता है। भले ही उनकी मृत्यु चाहे जिस तिथि में हुई हो। चतुर्दशीमें सामान्य मृत्यु वालोंका श्राद्ध सर्वपितृ अमावस्या वाले दिन करना चाहिए। पिशाचमोचन (मुक्तियर्थ) श्राद्ध मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षकी चतुर्दशीमें किया जाताहै।

नोटः- मृत्यु तिथि पर होने वाले श्राद्ध को अपराह्नकाल में करने की शास्त्राज्ञा है। कभी-कभी ह्रास वृद्धि के कारण अभिष्ट तिथि दो दिन अपराह्न को स्पर्श कर लेती है। उस स्थितिमें सुविधा नुसार श्राद्ध पूर्वापर दिन कर सकते हैं।

जैन पर्वोत्सव

दशलक्षणपर्व प्रारम्भ	२०	मार्च
आ.भिक्षु अभिनिष्क्रमण	२४	"
श्री महावीर जयंती	२८	"
श्री महावीर केवलज्ञान	२३	मई
श्री महावीर च्यवन	१७	जुलाई
अष्टाह्निकाव्रत प्रारम्भ	१९	"
जैनमुनीनां चातुर्मासप्रा.	२४	"
तेरापन्थस्थापना दिवस	२६	"
जैयाचार्यनि.दि.पर्युषणप्रा.	५	सित.
जैनसंवत्सरीक्षमावाणीपर्व	१२	"
पर्युषणप्रा.,दशलक्षणप्रा.	१२	"
श्री कालूनिर्वाण दिवस	१३	"
आ.श्रीतुलसी पट्टारोहण	१६	"
आ.श्रीभिक्षु निर्वाणदिवस	२१	"
श्री महावीर निर्वाण	५	नव.
आ.श्रीतुलसी जन्म	७	"
ज्ञानपंचमी जैन	१०	"
अष्टाह्निका प्रारम्भ	१४	"
चौमासी चौदस जैन	२०	"
जैन चातुर्मास समाप्त	२१	नव.
श्री महावीर दीक्षादिवस	१	दिस.
आ.तुलसी दीक्षा दिवस	२५	"
श्रीपार्श्वनाथचन्द्रप्रभुज.	३०	"
मेरुत्रयोदशीजैन	३१	जन.
दसलक्षण पर्व प्रारम्भ	८	फर.
मर्यादा महोत्सव जैन	१०	"
जितेन्द्ररथयात्रा जैन	१७	"
अष्टाह्निका प्रारम्भ	१२	मार्च

क्रिश्चियन त्योहार

पामसन्डे	२८	मार्च
गुडफ्राईडे	२	अप्रैल
ईस्टर सन्डे	४	"
ईसा जयंती बड़ादिन	२५	दिस.
न्यू-ईयर-इव	३१	"
ईसाई नववर्ष २०११प्रारम्भ	१	जन.
सेंट वेलंटाइन डे	१४	फर.

मुस्लिम त्योहार

ग्यारहवीं शरीफ	२८	मार्च
उर्स मेला अजमेर प्रा.	१४	जून
उर्स मेला बहरायच	२६	"
शब्बे मिराज	१०	जुला.
शब्बेरात यवनोत्सव	२७	"
पाक रोजे शुरु	१२	अग.
सहादते हजरतअली	१	सित.
इबादतरात मुस.	२	"
जुमातुल विदा	३	"
शब-ए-कद्र	६	"
ईदुल फितर (मीठीईद)	१०	"
हज्ज	१६	नव.
ईदुलजुहा (ईद)	१७	"
मुहर्रम हिजरी १४३२प्रा.	८	दिस.
कत्लरात मुस.	१६	"
मुहर्रम (ताजिया)	१७	"
चैहल्लुम मुस.	२५	जन.
सहादते इमामहसन	२	फर.
बारावफात,ईद-ए-मिलाद	१६	"
ईद ए मौलाद मुस.	२१	"
उर्स निजामुद्दीन	२३	"

नोटः- स्थानीय चन्द्रदर्शनानुसार मुस्लिम त्यौहारों में एक दिन का अन्तर संभव है।

दशावतार जयन्तियाँ

श्रीमत्स्यजयन्ती (२०१०)	१८	मार्च
श्रीरामनवमी जन्मोत्सव	२४	"
श्री परशुराम जयन्ती	१६	मई
श्री नृसिंह जयन्ती	२६	"
श्री कूर्म जयन्ती	२६	"
श्री बौद्धावतार जयन्ती	२७	"
श्री कल्कि जयन्ती	१५	अगस्त
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	१	सित.
श्री वराहवतार जयन्ती	१०	"
श्री वामन जयन्ती	१९	"

दसमहाविद्या जयन्तियाँ

श्री तारा जयन्ती	२३ मार्च मंगल
श्री मातङ्गी जयन्ती	१६ मई रवि
श्रीबगलामुखीजयन्ती	२१ ” शुक्र
श्रीछिन्नमस्ताजयन्ती	२५ ” मंगल
श्री धूमावतीजयन्ती	१९ जून शनि
श्रीआद्यकालीजयन्ती	१सित. बुध
श्रीभुवनेश्वरिजयन्ती	१९ ” रवि
श्री कमला जयन्ती	५ नव. शुक्र
श्रीत्रिपुरभैरवीजयन्ती	२१दिस. मंगल
श्री ललिता जयन्ती	१७फर. गुरु

द्वादशसिद्धिविद्याजयन्तियाँ

श्रीकुब्जिका जयन्ती	१२अप्रैल सोम
श्रीसिद्धिलक्ष्मीजयन्ती	२५ मई मंगल
श्रीचण्डिका जयन्ती	२७ ” गुरु
श्रीबटुकभैरवजयन्ती	२५ जून शुक्र
श्रीपार्वती जयन्ती	१८जुलाई रवि
श्रीदक्षिणमूर्तिजयन्ती	२५ ” रवि
श्रीगायत्री जयन्ती	२४अगस्तमंगल
श्रीविन्ध्यवासिनीज.	१ सित. बुध
श्रीअपराजिताजयन्ती	१७अक्टू. रवि
श्रीबाला जयन्ती	४ दिस. शनि
श्रीअन्नपूर्णा जयन्ती	२१ ” मंगल
श्रीसरस्वती जयन्ती	८ फर. मंगल

नोटः-सिद्धिविद्याओंमें से कुब्जिका और पार्वती तो पश्चिमाम्नाय हैं। अन्नपूर्णा व सरस्वती पूर्वाम्नाय हैं। चण्डिका उत्तराम्नाय और सिद्धि लक्ष्मी, बटुक भैरवी, दक्षिण मूर्ति, गायत्री, विन्ध्यवासिनी, अपराजिता और बाला, ये ऊर्ध्वाम्नाय कहलाती हैं। अभिष्ट कार्य सिद्धियर्थ उपासना करें।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना हेतु शुभ समय

श्री रामनवमी	२४ मार्च
गुरुपुष्यामृतयोग	२५ ”
हनुमज्जयंतीबालाजीजयंती	३० ”
वैशाखीपुण्यपर्व खर्परयोग	१४अप्रैल
पुरुषोत्तमीपूनो,सिद्धियोग	२८ ”
वञ्जुली महाद्वादशी	१० मई
पुरुषोत्तमीमावस,संक्रांतिपर्व	१४ ”
अक्षयतीज सौम्ययोग	१६ मई
देवी बगलामुखी जयंती	२१ ”
देवी छिन्नमस्ताजयंती	२५ ”
शनैश्चरीमावस जयंती	१२ जून
संक्रांतिपुण्यःपुष्यभे	१५ ”
देवीधूमावतीजयंती	१९ ”
शनीचरी ज्येष्ठीपूनो	२६ ”
पुष्यभे मनोरथद्वितीया	१३जुलाई
पक्षवर्धिनी द्वादशी	२२ ”
गुरुपूर्णिमा,स.सि.योग	२६ ”
मासशिवरात्रि,पुष्यनक्षत्र	८ अग.
देवी गायत्री जयंती	२४ ”
श्रीकृष्णजन्माष्टमी	१ सित.
रविपुष्यामृतयोग	५ ”
वञ्जुली महाद्वादशी	१९ ”
रविपुष्यामृतयोग	३अक्टू.
अपराजिता जयंती	१७ ”
पक्षवर्धिनी द्वादशी	१९ ”
शरदपूर्णिमा,स.सि.योग	२२ ”
कालाष्टमी पुष्यनक्षत्रे	३० ”
श्रीकमला जयंती	५ नव.
आशा११,वृश्चिकसंक्रांति	१६ ”
कृत्तिकायुक्त,कार्तिकीपूनो	२१ ”
महाकाल भैरवाष्टमी	२८ ”
श्रीबालाजी जयंती	४ दिस.
श्रीविद्याजयंती, पूर्णिमा	२१ ”
गुरुपुष्यामृत योग	२३ ”
भौमवतीमावस,सूर्यग्रहण	४ जन.
मकरसंक्रांति	१४ ”
पुष्यभे पूर्णिमा	१९ ”
गुरुपुष्यामृत योग	२० जन.
संकष्टी चतुर्थी	२२ ”
पक्षवर्धिनी द्वादशी	३० ”
मौनी अमावस्या	३ फर.
श्री सरस्वती जयंती	८ ”
जयंतीनाम वाली द्वादशी	१५ ”
गुरुपुष्यामृतयोग,ललिताज.	१७ ”
स्नानादि माघीपूर्णिमा	१८ ”
महाशिवरात्रिव्रत	२ मार्च
आमला११, पुष्यसुयोग	१६ ”
दारुणरात्रि हुताशनी	१९ ”
शीतलाष्टमी शनि	२६ ”
वारुणीपर्व का सुयोग	१ अप्रैल

कालसर्प योग का विवरण संवत् २०६७

जब राशिचक्र में राहु अथवा केतु के एक ओर सभी ग्रह आ जाते हैं, तब कालसर्पनामक योग बनता है। इस वर्ष कालसर्पयोग नहीं है।

❁ हरिद्वार में कुम्भ महापर्व ❁

मेष संक्रान्ति के दिन जिस वर्ष देवगुरु बृहस्पति कुम्भ राशि में होते हैं, उस वर्ष हरिद्वार में कुम्भ महापर्व का सुयोग बनता है।

कुम्भ राशि गते जीवे यद्दिने मेषगोरविः।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्तिवर्जनम्॥

सम्वत् २०६७ प्र.वैशाख कृष्ण ३० बुधवार १४ अप्रैल २०१० वैशाखी के दिन गुरु कुम्भ राशि में होने से हरिद्वार में कुम्भ पर्व मनाया जायेगा। कुम्भ पर्व में स्नानादि के फल का वर्णन करना तो ब्रह्मा के लिए भी सम्भव नहीं, तब तो साधारण प्राणीमात्र का कहना ही क्या है।

लोके कुम्भ इति ख्यातःजानीयात् सर्वकामदः।
गङ्गायां स्नानमहात्म्यं नालं वक्तुं चतुर्मुखः॥

❁ सामान्य स्नान पर्व दिन ❁

१४ जनवरी २०१० गुरुवार मकर संक्रान्तिजन्य पुण्यकालः
१५ जनवरी २०१० शुक्रवार मौनी मावस में सूर्यग्रहण पर्व
२० जनवरी २०१० बुधवार वसन्तपंचमी-श्रीपंचमी
३० जनवरी २०१० शनिवार पुष्ययुता माघी पूर्णिमा
१३ फरवरी २०१० शनीश्चरी मावस, संक्रान्तिजन्यपुण्यकालः
२८ फरवरी २०१० रविवार होलिका दहन

❁ शाही स्नान पर्व दिन ❁

प्रथम शाही स्नान- १२ फरवरी २०१० शुक्रवार महाशिवरात्रि
द्वितीय शाही स्नान- १५ मार्च २०१० सोमवार सोमोतीमावस
तृतीय शाही स्नान- १४अप्रैल२०१० बुधवारमेषसंक्रान्ति वैशाखी

टिप्पणी- जिस वर्ष वैशाख की पूर्णिमा को गुरु कुम्भ राशि में होता है, उस वर्ष महाकाल की नगरी क्षिप्रानदी के तट पर तथा भगवान श्री राधाकृष्ण की क्रीड़ास्थली मथुरा में कुम्भपर्व का अर्धसत्र मनाने की जनसाधारण की भावना सदियों से चली आ रही है। इसका कोई शास्त्रीय प्रमाण तो नहीं मिलता, परन्तु हरिद्वार और प्रयाग की देखा-देखी मथुरा, उज्जैन और नासिक में अर्धकुम्भ मनाने की जिज्ञासा प्रबलोत्तर अवश्य देखी गई है।

ग्रहण विवरण

१६ मार्च २०१० से ३ अप्रैल २०११ तक विक्रमाब्द २०६७ में समस्त भूमण्डल पर चार ग्रहण होंगे। जिनमें से दो सूर्यग्रहण और दो चन्द्रग्रहण होंगे। भारतीय भूभाग पर केवल एक सूर्यग्रहण तथा भारत के पूर्वोत्तर सम्भागों में अल्पकालीन चन्द्रग्रहण देखा जा सकेगा।

ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण

२६ जून २०१० ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा शनिवार को भा.स्टैं.टा. के अनुसार सायं ६।३० तक होने वाले चन्द्रग्रहण को देश के पूर्वोत्तर सम्भाग में देखा जा सकेगा। कलकत्ता, ढ़ाका, शिलांग, गुवाहाटी, शिलचर, अगरतला, इटानगर, कोहिमा, इम्फाल आदि में जहाँ चन्द्रोदय सायं ६ बजकर ३० मिनट से पहले होगा, वहाँ अल्पकालीन चन्द्रग्रहण को समाप्त होते हुए देख सकते हैं।
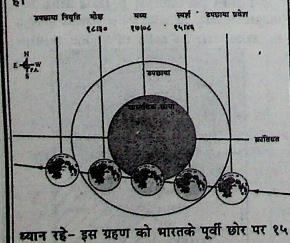
ध्यान रहे- इस ग्रहण को भारतके पूर्वी छोर पर १५ मिनट से अधिक कहीं भी नहीं देखा जा सकेगा। यह ग्रहण दूसरे देशों में दिन में ३ बजकर ४६ मिनट से ही शुरु हो जायेगा। ग्रहण की समाप्ति सायं ६ बजकर ३० मिनट पर होगी। देश के प्रमुख शहरों में चन्द्रोदय- शिलचर १८।१४, इम्फाल १८।९, गुवाहाटी १८।२१, कोहिमा १८।९, इटानगर १८।१६, शिलांग १८।१९, कलकत्ता १८।१७, अगरतला १८।१७ तथा बांग्लादेश के ढ़ाका में १८।२० पर होगा।

नोटः- ग्रहण जहाँ दृश्य होता है उसका प्रभाव भी उन्हीं स्थानों पर पड़ता है। देश के पूर्वोत्तर सम्भागों को छोड़कर देश के अन्य प्रदेशों में धार्मिक दृष्टि से इस चन्द्रग्रहण का कुछ भी महत्त्व नहीं है।

विदेशों में खग्रास सूर्यग्रहण

११ जुलाई २०१० आषाढ़ कृष्ण अमावस्या रविवार की रात्रि में दक्षिण अमेरिका आदि देशों में खग्रास सूर्यग्रहण होगा। भा.स्टै.टा. के अनुसार ग्रहण प्रारम्भ २३ बजकर ४६ मिनट से तथा समाप्त २६ बजकर २० मिनट पर होगा। ग्रहण का मध्यकाल २५ बजकर २१ मिनट पर होगा। यह ग्रहण पूर्णबिम्बग्रास के रूप में ईस्टर आइसलैंड से देखा जा सकेगा। खण्डग्रास के रुप में यह अर्जेन्टीना, बोलीविया, चिली, पेरागुआ, पेरू, ब्राजील आदि देशों से भी देखा जा सकेगा। भारत में धार्मिक दृष्टि से इस ग्रहण का कुछ भी महत्त्व नहीं है।

विदेशों में खग्रास चन्द्रग्रहण

२१ दिसम्बर २०१० मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार को भारत से बाह्य पूर्व के देशों में खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। भा.स्टै.टा. के अनुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिन में १२ बजकर २ मिनट से तथा समाप्त दिन में १५ बजकर ३१ मिनट पर होगा। ग्रहण का मध्य १३ बजकर ४६ मिनट पर होगा। इस ग्रहण को आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, चीन, जापान, फिलीपींस आदि देशों में देखा जा सकेगा। भारत में धार्मिक दृष्टि से इस ग्रहण का कोई महत्त्व नहीं है।

भारत में खण्डग्रास सूर्यग्रहण

४ जनवरी २०११ पौष कृष्ण अमावस्या मंगलवार को देश के पश्चिमोत्तर संभागीय क्षेत्रों मुरादाबाद, ऋषिकेश, हरिद्वार, अम्बाला, जयपुर, अजमेर, बीकानेर, चुरु, झुंझुनू, जामनगर, जम्मू, श्रीनगर, शिमला, अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, चण्डीगढ़, कुरुक्षेत्र, हिसार, जींद, भिवानी, सिरसा, रेवाड़ी, पानीपत, रोहतक, जैसलमेर, बाड़मेर, सीकर, जोधपुर आदि में खण्डग्रास सूर्यग्रहण दृश्य होगा। दिल्ली में ग्रहण का प्रारम्भ भा. स्टैं. टा. के अनुसार दिन में ३ बजकर १२ मिनट से तथा समापन दिन में ३ बजकर ५२ मिनट पर हो जायेगा। दिल्ली में सूर्यग्रहण केवल ४० मिनट तक दृश्य रहेगा। सूर्य की मामूली कोर ग्रस्त होती हुई दूरवीक्षण यन्त्रों की सहायता से देखी जा सकेगी।

ध्यान रहे- सूर्यग्रहण को कभी खुली आंखोंसे नहीं देखना चाहिए। देश की विभिन्न वेधशालाओं द्वारा सूर्यग्रहण को देखने का विशेष प्रबन्ध किया जाता है।

दिल्ली में आंशिक सूर्यग्रहण एवं दृश्याकृति

स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	कुलसमय घं. मि.	ग्रासमान प्रतिशत
१५।१२	१५।३०	१५।५२	०।४०	०.४८

नोटः- ४ जनवरी २०११ में होने वाले आंशिक सूर्यग्रहण को समूचे ब्रजक्षेत्र और पूर्व के सम्भागों में कहीं भी देख पाना सम्भव नहीं होगा।

भारत के मानचित्र पर खींची गई रेखा 'क-ख' के पश्चिमी सम्भागों में इस ग्रहण को देखा जा सकेगा।

☆ प्रमुख शहरों में सूर्यग्रहण का विवरण ☆

नाम	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	कुलसमय	ग्रास
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	मान
अमृतसर	१४।४६	१५।३०	१६।११	१।२५	५.१६
चण्डीगढ़	१४।५७	१५।३२	१६।०५	१।०८	२.६४
जयपुर	१५।२१	१५।३०	१५।३९	०।१८	०.०५
जम्मू	१४।४२	१५।३०	१६।१४	१।३२	६.७४
जोधपुर	१५।०३	१५।२६	१५।४९	०।४६	०.७०
दिल्ली	१५।१२	१५।३२	१५।५२	०।४०	०.४८
बीकानेर	१४।५३	१५।२७	१५।५९	१।०६	२.०८
मेरठ	१५।१२	१५।३३	१५।५३	०।४१	०.५६
लुधियाना	१४।५२	१५।३१	१६।०७	१।१५	३.५४
श्रीनगर	१४।३८	१५।३०	१६।१८	१।४०	८.९७
ऋषिकेश	१५।१७	१५।३८	१६।००	०।४३	०.४८
देहरादून	१५।०५	१५।३२	१६।००	०।५५	०.४९
बुलन्दशहर	१५।२०	१५।३३	१५।४६	०।२६	०.०७

सूर्यग्रहण को भारत से बाह्य देशों- अफगानिस्तान, अल्जीरिया, आस्ट्रिया, अजरबेजान, बहरीन, बेल्जियम, बुल्गारिया, केमरुन, मध्यअफ्रीका, चीन, क्रोशिया, साइप्रस, क्रेचगणराज्य, डेनमार्क, इजिप्ट, इथोपिया, फिनलैंड, फ्रांस, गाजा, जोर्जिया, जर्मनी, ग्रीस, हंगरी, ईरान, इराक, इजराइल, इटली, जोर्डन, कजाकिस्तान, कुवैत, लेबनान, लीबिया, माल्टा, मोरक्को, नीरदलैण्ड, बुल्गारिया, नार्वे, ओमान, पाकिस्तान, पोलैण्ड, कतर, सूडान, स्वीडन, स्वीटजरलैंड, सीरिया, तजाकिस्तान, तुर्की, उक्रेन, संयुक्तअरबअमीरात, उजबेकिस्तान, यमन, ब्रिटेन आदि से भी देखा जा सकेगा।

सूतक- दिल्ली के आसन्न क्षेत्रों में ४ जनवरी २०११ मंगलवार के दिन होने वाले सूर्यग्रहण का सूतक सूर्य निकलने से पूर्व ३ बजकर १२ मिनट से शुरु हो जायेंगी। सूतकों में बाल, वृद्ध, रोगी, आसक्तजनों को छोड़कर अन्य को भोजन शयनादि नहीं करना चाहिए।

सूतक परिहार-

आरनालं पयस्तक्रं दधि स्नेहाज्यपाचितम्।
माणिकस्योदकं चैव न दुष्येद्राहुसूतके॥
अन्नं पक्कमिह त्याज्यं स्नानं सवसनं ग्रहे।
वारि तक्रारनालादि तिलदर्भैर्न दुष्यति॥

निर्णयसिन्धु पृ.१०७

नोटः- सूर्यग्रहण को कभी खुली आँखों से न देखें। उदर में जिन महिलाओं के शिशु पल रहा हो, उन्हें चाकू आदि से फल, केंची से वस्त्रादि नहीं काटने चाहिए। ग्रहणकाल को ईश्वर आराधना में व्यतीत करें। प्रकृति के विरुद्ध आचरण का दुष्प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ता है। निवृत्ति के लिये सत्याचरण गेरुलेप से युक्त साड़ी का पल्ला शिर पर ओढ़ना, दान देना, यज्ञादि कर्म करना अभिष्ट है।

ग्रस्यमाने भवेत्स्नानं ग्रस्ते होमो विधीयते।
मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्ते स्नानं विधीयते॥

सूर्यग्रहण में - श्रीगंगा, कनखल, प्रयाग और पुष्कर पवित्र हैं तथा कुरुक्षेत्र महापवित्र है-

गङ्गा कलखलं पुण्यं प्रयागे पुष्करं तथा।
कुरुक्षेत्रं महापुण्यं राहुग्रस्ते दिवाकरे॥

४ जनवरी २०११ के सूर्यग्रहण का राशिफल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

जिस राशि नक्षत्र में तथा देश प्रदेश के ऊपर ग्रहण होते हैं, उनका शुभाशुभ प्रभाव भी उन्हीं स्थानों पर घटित हुआ करता है।

देश के कतिपय शहरों में ग्रहणाकृत्ति

जयपुर में दृश्याकृत्ति

चंडीगढ़ में दृश्याकृत्ति

जम्मू में दृश्याकृत्ति

श्रीनगर में दृश्याकृत्ति

लुधियाना में दृश्याकृत्ति

जोधपुर में दृश्याकृत्ति

अमृतसर में दृश्याकृत्ति

मेरठ में दृश्याकृत्ति

बीकानेर में दृश्याकृत्ति

सपरिहार शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः सं. २०६७ (अप्रैल २०१० से मार्च २०११ तक)

जयति जयति श्रीराधिके, वंदौं-पद अरविंद।
चहत मुदित मकरंद मृदु, जेहि ब्रजचन्द मलिंद॥

गुरुउदय- २०मार्च २०१० चैत्र शुक्लचतुर्थी शनिवारमें गुरुउदय होगा।
शुक्रअस्तोदय- २१अक्टूबर आश्विन शुक्ल चतुर्दशीमें शुक्रास्त होकर ता.३ नवम्बर २०१० कार्तिक कृष्ण द्वादशी बुधवार में उदय होगा।
गुरुअस्त- ता.२७ मार्च २०११ सम्वत्सरान्ते चैत्र कृष्ण नवमी में गुरु अस्त होकर आगामी संवत् २०६८ के वैशाख में उदय होगा। श्री ब्रजभूमि पंचांग में ग्रहों का उदयास्तकालांश सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित के आधार पर छपा है।
गुरु नवांश में श्रेष्ठः- इस वर्ष गुरु कुम्भ-मीन दो राशियों में गतिशील रहेगा। प्रस्तुत है विशेष जानकारी श्रीब्रजभूमि पंचांग के पाठकों के लिए- ता.१८ से ३१ मार्च २०१० तक मेष के नवांश में श्रेष्ठ जानें। आगे २ मई से ११ जून तक स्वगृही गुरु को श्रेष्ठ नवांश में होने पर बलवान समझें। आगे २ सितम्बर से ३१ अक्टूबर तक तथा ६ दिसम्बर से २६ जनवरी २०११ तक गुरु श्रेष्ठ नवांश में रहेगा। आगे २७ फरवरी से २७ मार्च २०११ तक स्वगृही गुरु की नवांश में अच्छी स्थिति रहेगी, अर्थात् वर्गोत्तमी गुरु श्रेष्ठ कहा जायेगा।

तिथि,वार	ता.मास	नक्षत्र रेखाशुद्धि	विवाहलग्न	लग्नारंभ	लग्नारंभ	अन्य विवरण
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष						
२ शनौ	२९ मई	मूल रे.८ऽऽ।।।ऽ।।।।	७।१२।१	१५।३९	२५।३२	मीन मेष गु.बु.श.दानात्शुभः
३ रवि	३० "	मूल रे.९ऽ।।।। ।।।।।	दिवा ४	८।४३	--	अन्यान्यलग्नचिन्त्येत्बुधः
३ चन्द्रे	३१ "	उषा.रे.७।।।।ऽ।ऽ।ऽ	७।१२।१	१५।३१	२५।२४	दिवा रात्रौ लग्नानांशुभः
४ भौमे	१ जून	उषा.रे.७।।।ऽ।।ऽऽ।	७गोधूलि	१५।२७	गोरजे	धेनुधूरिवेलालग्नसकल..
५ बुधे	२ "	धनि.रे.७ऽ।।।।।ऽ।ऽ।	१२।१	--	२५।१६	ग.क्रांतिसाम्यदोषाऽभावः
६ गुरौ	३ "	धनि.रे.७ऽ।।।।ऽऽ।।	तुला	१५।१९	--	अन्यान्य लग्नचिन्त्येत्बुधः
९ रवि	६ "	उभा.रे.७।।ऽ।ऽ।।ऽ।।	१२।१	गोधूलि	२५।०	गुरौर्युति सौख्यदाः च
११ भौमे	८ "	अश्विरे.८ऽ।।।।।।ऽ।।	१२।१	गोधूलि	२४।५२	शनि चन्द्र पूजनादि शुभः
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष						
६ गुरौ	१७ जून	मघा रे.९।ऽ।।। ।।।।।	वृश्चिक	--	१६।४३	अन्यान्य लग्नचिन्त्येत्बुधः
७ शुक्रे	१८ "	उफा.रे.७ऽ।ऽ।।।।ऽ।।	मीनादि	--	२४।१३	कन्येन्दु युति दोषाऽभावः
९ रवि	२० "	चित्रारे.९ऽ।।।। ।।।।।	मीनादि	--	२४।६	रात्रौचं.श.दानादि से शुभः

तिथि,वार	ता.मास	नक्षत्र रेखाशुद्धि	विवाहलग्न	लग्नारंभ	लग्नारंभ	अन्य विवरण
१०चन्द्रे	२१ "	स्वा. रे.८।।।।।ऽऽ।।।	७।८।१२।१	१४।९	२४।२	श.बु.पूजनादि से शुभ जानें
११भौमे	२२ "	स्वा. रे.८।।।।।ऽऽ।।।	वृश्चिक	१६।२४	गोरजे	धेनुधूरिवेला लग्न सकल.
१२बुधे	२३ "	अनु. रे.७ऽऽ।।।ऽ।।।।	वृष	--	२६।५८	चन्द्रदान पूजनादि से शुभः
१३गुरौ	२४ "	अनु. रे.७ऽऽ।।।ऽ।।।।	७।८	१३।५७	--	आवश्यके लग्नचिन्त्येत्बुध
आषाढ़ कृष्ण पक्ष						
२ चन्द्रे	२८ जून	उषा. रे.१०।।।।।।।।।।	७।८।१२।१।२	१३।४२	२३।३५	मीन में शनि पूजनादि शुभः
३ भौमे	२९ "	श्रव. रे.८।ऽ।।।ऽ।।।।	७।८।१२।१।२	१३।३८	२३।३१	दिवावृष्टिस्तिथ्य परार्धजा शुभकरी
४ बुधे	३० "	धनि.रे.६।।।ऽऽ।ऽऽ।।	८।१२।१	१५।५३	२३।२७	दिवा रात्रौ लग्नानां शुभः
७ शनौ	३ जुला.	उभा.रे.८।।ऽ।।ऽ।।।।	८।१।२	१५।४१	२४।४२	दिवा वृश्चि.रात्रौमेषवृषश्रे.
७ रवि	४ "	उभा.रे.९।।ऽ।।।।।।।	वृश्चिक	१५।३७	--	अन्यान्य लग्नचिन्त्येत्बुधः
११गुरौ	८ "	रोहि.रे.७ऽऽ।।।ऽ।।।।	१२।१	--	२२।५५	शनिगुरुदानात्शुभ जानें।
१२शुक्रे	९ "	मृग. रे.९।।।।। ।ऽ।।।	८।१२।१	१५।१७	२२।५१	धेनुधूरिवेलालग्नसकल..
आषाढ़ शुक्ल पक्ष						
३ बुधे	१४जुला.	मघा रे.९।।ऽ।। ।।।।।	वृश्चिक	१४।५८	--	श्रीब्रजभूमिपंचांगविजयते
कार्तिक शुक्ल पक्ष						
१२गुरौ	१८ नव.	रेव. रे.६ऽऽ।।ऽ।ऽ।।।	कर्क	--	२१।२६	वि.ल.कर्कादिचं.दानादिशुभ
१३शुक्रे	१९ "	अश्विरे.८।।।।ऽऽ।।।।	१०।११।४।५	१०।५४	२१।२२	व्यतिपाश्चवैधृतिमध्याह्नात्परतः
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष						
१ चन्द्रे	२२ नव.	रोहि.रे.८।।।।ऽऽ।।।।	१।४।५	१५।२३	२१।११	वि.ल.१शु.मं.पू.दानादिशुभ
२ भौमे	२३ "	मृग. रे८।।।।ऽ।ऽ।।।	१०।११।४।५	१०।३९	२१।७	दिवारात्रौ लग्नानां श्रेष्ठ
६ शनौ	२७ "	मघा रे.८ऽ।।।। ऽ।।।।	तुला	--	२८।५१	निशायां श्लेषान्ते लग्न७श्रे.
७ रवि	२८ "	मघा रे.९ऽ।।।। ।।।।।	१।४।५	१४।५९	२०।४७	व्यतिपातश्चवैधृतिमध्याह्ना.
८ चन्द्रे	२९ "	उफा.रे.८।।।।। ऽ।ऽ।।	तुला	--	२७।३५	वि.ल.रात्रौ तुला चिन्तनीयम्
९ भौमे	३० "	उफा.रे.७।।।।।ऽ।ऽ।ऽ	१०।१।४।५	१४।५२	२०।४०	दि.कुम्भ मेष रात्रौ कर्कसिंह
१२गुरौ	२ दिस.	चित्रारे.९ऽ।।।। ।।।।।	१।४।५	१४।४४	२०।३२	शुक्रपू.रात्रौस्वात्यां लग्नश्रे.
१३शुक्रे	३ "	स्वा. रे.९।।ऽ।। ।।।।।	मेष	१४।४०	--	क्षीणेन्दुअत्यावश्यकेरात्रौनक्षत्राऽभाव

तिथि,वार	ता.मास	नक्षत्र रेखाशुद्धि	विवाहलग्न	लग्नारंभ	लग्नारंभ	अन्य विवरण
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष						
३ बुधे	८ दिस.	उषा.रे.८ऽ।।।।ऽ।।।।	४।५	--	२०।९	रात्रौ २७।१ से तुला श्रेष्ठ
४ गुरौ	९ "	उषा.रे.९ऽ।।।। ।।।।।	१२।४५	१४।१७	२०।४	दिवावृष्टितिथ्यपरार्धजाशुभकरी
५ शुक्रे	१० "	श्रव.रे.८।।।।।ऽ।ऽ।।	१।४५	१४।१३	२०।१	ल.१शु.पू.अन्यान्यलग्नानांचं.दा.
६ शनौ	११ "	धनि.रे.९।।।।।।ऽ।।।	१।४५	१४।९	१९।५७	अन्यान्य लग्नचिन्त्येत्बुधः
पौष शुक्ल पक्ष						
११रवि	१६ जन.	रोहि.रे.७ऽ।।।।।।।ऽऽ	७।८	--	२४।२६	वि.लग्न रात्रौ तुलादिश्रेष्ठ
माघ कृष्ण पक्ष						
४ रवि	२३ जन.	उफा.रे.९।।।।।।।ऽ।।।	५।७।८	१९।२५	२३।५९	वि.ल.दिवा-रात्रौ श्रेष्ठ
५ चन्द्रे	२४ "	उफा.रे.८।।।।।।ऽऽ।।	१२।९।७८	९।४८	२३।५५	रात्रौहस्तभे युतिदोषाऽभावः
६ भौमे	२५ "	चित्रारे.९ऽ।।।।।।।।।	गोधूलि	--	गोधूलि	धेनुधूरिवेलालगनसकल..
१०शुक्रे	२८ "	अनु. रे.८।।।।।।ऽऽ।।	५।७।८	१९।६	२३।४०	गोरजे चावलअनुदानतः

नोटः- अगहन आदि (दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च) मासोंमें मंगल अस्त रहेगा। गोधूलि लग्न में आठवें स्थान पर दोषकारक नहीं माना जायेगा। विवाह कर सकते हैं।

तिथि,वार	ता.मास	नक्षत्र रेखाशुद्धि	विवाहलग्न	लग्नारंभ	लग्नारंभ	अन्य विवरण
माघ शुक्ल पक्ष						
४ चन्द्रे	७ फर.	रेव. रे.५ऽऽ।।।ऽऽऽ।।	वृश्चिक	--	२५।१७	अन्यान्य लग्नचिन्त्येत्बुधः
५ भौमे	८ "	रेव. रे.५ऽऽ।।ऽ।ऽऽ।।	७।८	--	२२।५७	धेनुधूरिवेलालगनसकल..
६ बुधे	९ "	अश्विरे.९।।।।। ऽ।।।।	७।८	--	२२।५३	गोरजेश्रे.७।८चं.अनुदानतः
९ शनौ	१२ "	रोहि.रे.८ऽ।।।। ।।ऽ।	७।८	--	२२।४१	अन्यान्य लग्न चिन्त्येत्बुधः
१५शुक्रे	१८ "	मघा रे.८।।।।ऽ ।ऽ।।।	४।७।८	१५।२३	२२।१५	दि.कर्क रात्रौ ७।८ श्रेष्ठ
फाल्गुन कृष्ण पक्ष						
१ शनौ	१९ फर.	उफा.रे.९।।।।। ऽ।।।।	वृश्चिक	--	२४।३०	अत्यावश्यकेतंदुलअनुदानतः
३ रवि	२० "	उफा.रे.१०।।।।।।।।।।	२।४	११।४	१५।१५	भद्रावासं पाताले शुभः
४ चन्द्रे	२१ "	चित्रारे.७।ऽ।।।ऽ।ऽ।।	७।८	--	२२।३	चन्द्रदानादि परित्वेन शुभ
५ भौमे	२२ "	चित्रारे.७।ऽ।।।।।ऽऽ।	वृष	१०।५७	--	अन्यान्य लग्नचिन्त्येत्बुधः
७ गुरौ	२४ "	अनु. रे.७ऽ।।।।ऽऽ।।।	७।१०	--	२१।५२	धेनुधूरिवेलालगनसकल..
१२भौमे	१ मार्च	श्रव. रे.९।।।।। ।ऽ।।।	७।८	--	२१।३४	अत्यावश्यकेल.चिन्त्येत्बुधः
फाल्गुन शुक्ल पक्ष						
२ रवि	६ मार्च	उभा.रे.७ऽ।ऽऽ।।।।।।	७।८	--	२१।१३	लोकप्रसिद्धिमु.फुलैरादूज
२ चन्द्रे	७ मार्च	रेव. रे.६ऽ।।।ऽऽऽ।।।	४।७।८	१४।१७	२१।९	दिवारात्रौ लग्नानां चिन्त.
३ भौमे	८ "	अश्विरे.९।।।।। ।।।।ऽ	४।७।८	१४।१३	२१।५	मासदग्धाश्चतिथयोमध्य..
६ शुक्रे	११ "	रोहि.रे.७ऽ।।।।ऽऽ।।।	७।८	--	२०।५३	वि.ल.रात्रौ रोहिण्यां श्रेष्ठ
७ शनौ	१२ "	रोहि.रे.८ऽ।।।। ।ऽ।।।	४।७।८	१३।५८	२०।५०	स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये.....

पंजाब आदि द्विगर्तदेशों के लिए विवाह मुहूर्त्ताः २०६७ वि.

तिथि,वार	ता.मास	नक्षत्र रेखाशुद्धि	विवाहलग्न	लग्नारंभ	लग्नारंभ	अन्य विवरण
आषाढ़ शुक्ल पक्ष						
८ रवि	१८जुला.	चित्रारे.७ऽ।।।।ऽ।ऽऽ।	वृष	--	२५।२०	ग.क्रांतिसाम्यदोषाऽभावः
९ चन्द्रे	१९ "	स्वा. रे.८।।।।।ऽऽ।।।	७।८	१२।१९	--	लोकप्रसिद्धमु.श्रे.लग्नचिन्त.
१०भौमे	२० "	अनु. रे.८।।।।।।।ऽऽ।	वृष	--	२५।१२	लग्नस्थ७चं.अनुदानतःश्रेष्ठ
११बुधे	२१ "	अनु. रे.७।।।।।ऽ।ऽऽ।	७।१।२	१२।११	२३।३१	ल.मे.वृ.चं.दान,स्वर्गेभद्रा...
१३शुक्रे	२३ "	मूल रे.८ऽ।।।।ऽ।।।।	७।१।२	१२।४	२३।२४	दिवारात्रौ लग्नानां श्रेष्ठ
१५रवि	२५ "	उषा. रे.८।।।।।ऽ।ऽ।।	७।८।१।२	११।५६	२३।१६	दिवा ७।८,रात्रौ १।२श्रेष्ठ
१५चन्द्रे	२६ "	श्रव. रे.८।।।ऽऽ।।।।।	७।८।१।२	११।५२	२३।१२	पादवेधेनबुधन्वेधाऽभावः
श्रावण कृष्ण पक्ष						
४ शुक्रे	३०जुला.	उभा.रे.६।।ऽ।ऽऽ।ऽ।।	१।२	--	२२।५६	वि.ल.रात्रौ१।२भौमपूजनसेशुभ
५ शनौ	३१ "	उभा.रे.७।।ऽ।ऽ।।ऽ।।	७।८।१	११।३२	२२।५२	दि.रात्रौ लग्नचिन्त्येत्बुधः
७ चन्द्रे	२ अग.	अश्विरे.८ऽ।।।।ऽ।।।।	८।२	१३।४४	२४।२२	दि.रात्रौ उल्लिखितल.मु.श्रे.
१०गुरौ	५ "	रोहि.रे.८ऽ।।।।।।ऽ।।	वृश्चिक	१३।३२	--	स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये...
११शुक्रे	६ "	मृग. रे.७ऽ।।।।।ऽऽ।।	१।२	--	२२।३०	वि.ल.रात्रौ मेषादि श्रेष्ठ
श्रावण शुक्ल पक्ष						
२ बुधे	११अग.	मघा रे.९।।।।।ऽ।।।।	७।८	१०।५०	--	दि.ल.चि.रात्रौनक्षत्राऽभावः
३ गुरौ	१२ "	उफा.रे.१०।।।।।।।।।।	वृष	--	२३।४३	रात्रि ल.वृष चिन्त्येत्बुधः
५ शनौ	१४ "	चित्रारे.८ऽऽ।।।।।।।।	८।२	१२।५७	२३।३५	मासदग्धाश्चतिथयोमध्य..
८ भौमे	१७ "	अनु. रे.९।।।।।।।ऽ।।	८।२	चन्द्र	दान	रविनिरंशःअत्यावश्यके ल.चि.
१०गुरौ	१९ "	मूल रे.९ऽ।।।।।।।।।	८।२	१२।३८	२३।१६	धेनुधूरिवेलालग्नसकल..
१२शनौ	२१ "	उषा. रे.८ऽ।।।।ऽ।।।।	८।२	१२।३४	२३।१२	दि.रात्रौ लग्नचिन्त्येत्बुधः
१३रवि	२२ "	उषा. रे.९ऽ।।।।।।।।।	वृश्चिक	१२।२६	--	दि.रात्रौ लग्नचिन्त्येत्बुधः

तिथि,वार	ता.मास	नक्षत्र रेखाशुद्धि	विवाहलग्न	लग्नारंभ	लग्नारंभ	अन्य विवरण
१४चन्द्रे	२३ अग.	धनि.रे.७।।।।ऽऽऽ।।	वृष	--	२३।०	वि.ल.धनिष्ठायां श्रेष्ठ
१५ भौमे	२४ "	धनि.रे.८।।।।।ऽऽ।।	वृश्चिक	१२।१८	--	केवलदिवालग्न वृश्चिकश्रे.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष						
३ शुक्रे	२७अग.	उभा.रे.९।।ऽ।।।।।।	वृश्चिक	१२।६	--	उभायांगुरुयुति सुखप्रदजानें
४ रवि	२९ "	अश्विरे.६ऽऽ।ऽऽ।।ऽ।।	वृष	--	२२।३६	पादभेदेनबुधवेधाभाव रे.वृ.
७ बुधे	१ सित.	रोहि.रे.७ऽऽ।।।ऽ।।।।	वृष	--	२२।२४	अवतारतिथिनाम सुखप्रदः
८ गुरौ	२ "	मृग. रे.७ऽ।।।।।ऽऽ।।	८।१।२	११।४२	२०।४३	मं.शु.चं.पूजा दानात्शुभः
भाद्रपद शुक्ल पक्ष						
१ गुरौ	९ सित.	उफा.रे.८।ऽ।।।ऽ।।।।	मकर	१५।३६	--	दि.ल.श्रे.अन्यचिन्त्येत्बुधः
४ शनी	११ "	चित्रारे.८ऽ।।।।ऽ।।।।	१०।४	१५।२८	२५।५६	दि.चित्रा रा.स्वा.भ.वा.पाताले
५ रवि	१२ "	स्वा. रे.७।।ऽ।।।ऽऽ।।	वृश्चिक	११।३	--	अत्यावश्यके दिवाल.श्रेष्ठ
६ चन्द्रे	१३ "	अनु. रे.७।ऽ।।।ऽऽ।।।	१०।२	१५।२०	२१।३७	चं.अनुदानतःशुभजानें
१२रवि	१९ "	श्रव. रे.९।।।।।ऽ।।।।	१०।४	१४।५६	२५।२४	चन्द्रपूजा दानादिसे शुभ
१२चन्द्रे	२० "	धनि.रे.८ऽ।।।।।ऽ।।।	१०।४	१४।५२	२५।२०	दि.रा.कर्कादिलग्नानामशुभः
आश्विन शुक्ल पक्ष						
२ शनौ	९ अक्टू.	स्वा. रे.७।ऽऽ।।।ऽ।।।	१०।४	१३।३६	२४।४	दिवारात्रौलग्नचिन्त्येत्बुधः
३ रवि	१० "	अनु. रे.१०।।।।।।।।।	कर्क	--	२४।०	तंदुलअनुदानतःशुभ जानें
४ चन्द्रे	११ "	अनु. रे.१०।।।।।।।।।	१०।१२	१३।२८	१६।४१	स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये....
कार्तिक शुक्ल पक्ष						
६ शुक्रे	१२ नव.	श्रव. रे.८।ऽ।।।ऽ।।।।	१०।११।४५	११।२१	२१।४९	मकरकुंभलग्ने शनिपूजनादि
७ शनौ	१३ "	धनि.रे.८।।।।।।ऽऽ।।	११।४।५	१३।१	२१।४५	भद्रावास पाताल में
८ रवि	१४ "	धनि.रे.७।।।।।ऽऽऽ।	१०।११	११।१३	--	दिवालग्ने श.चं.दानात्शुभः

साक्षेपयुक्त विवाह मुहूर्त्ताः

श्री ब्रजभूमिपंचांग में सुनिश्चित किये गए सभी मुहूर्त्त शास्त्रोक्त दृष्ट्या शुद्ध होते हैं। जिन लग्न मुहूर्त्तों में किंचित दोष परिलक्षित हुए हैं, उन्हें पूर्ण शुद्ध मुहूर्त्तों में स्थान न देकर यहाँ दर्शाया गया है, ताकि सुविज्ञजन अपनी-अपनी सुविधा, देशकाल परिस्थित्यानुसार मुहूर्त्तों का चयनकर लाभ के भागीदार बन सकें। समय ही सर्वोपरीय है, जिसमें लग्न की शुद्धता से सभी दोष निर्दोष हो जाते हैं। सर्वेदोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदाभवेत्।

१५ मई शनौ रोहि.रे.१०।।।।। ।।।।। लग्न ५।७
२० " गुरौ मघा रे.९।।।।। ।।ऽ।। लग्न १२।१
२१ " शुक्रे मघारे.८।।।।।ऽचो।ऽ।ल.गोधूलि
२३ " रवि रे.६।।।ऽऽऽरो.ऽ।।। लग्न १२।१
२४ " चन्द्रे रे.९ऽ।।।। ।।।।। लग्न ७।१२।१
२७ " गुरौ रे.९।।।ऽबु.। ।।।।। लग्न ७।१२।१

नोटः- द्वितीया वैशाख शुक्ल पक्ष में ता. १५, २०, २१, २३, २४, २७ मई के उपरोक्त विवाह मुहूर्त्त रेखाशोधन दृष्टि से दस दोष गणना शुद्ध हैं। परन्तु १३ दिन का विश्वघस्त्रपक्ष अशुद्ध होने की वजह से शुद्ध मुहूर्त्तोंमें स्थान न देकर ऊपर दर्शाया गया है। जो सज्जन विवाह करना चाहें वे कर सकते हैं।

१६ मई रवि मृग.मृत्युवान एकार्गल दोषः
अत्यावश्यकेग्राह्य,स्वयंसिद्धिमु.
२२ " शनौ उफायां शनि युति दोषः
२५ " भौमे स्वात्यां मृत्युवान,व्यतिपातदोषः
२६ " बुधे स्वात्यां मृत्युवान. तिथिक्षयः
२८ " शुक्रे अनु. दिवा लग्नाऽभावः
३ जून गुरौ भद्रामुखकाल१८।४२से२०।५४तक
७ " चन्द्रे रेवती शनिवेध भद्रादोषः
९ " बुधे अश्वि.लग्नाऽभावःक्षीणेन्दुदोष
१६ " बुधे मघा मृत्युवान तिथिक्षय
१९ " शनौ हस्तभे वेध रेखाअल्प व्यतिपात
२५ " शनौ मूलभे मृत्युपंचक लग्नाऽभावः
२६ " रवि मूलभे मृत्युवान दोषः
५ जुला.चन्द्रे रेवती मृत्युपंचक
६ " भौमे अश्विनी भौम वेध दोषः
१० " शनौ तिथिक्षयः क्षीणेन्दु दोषः
१६ " शुक्रे उफायां संक्रान्तिदिन
१७ " शनौ हस्तभे रविनिरंशः तिथिक्षयः
२२ " गुरौ मूलभे रात्रौ लग्नाऽभावः
२७ " भौमे धनिष्ठायां मृत्युपंचक

२८ " बुधे धनि. लग्नाऽभावः
१ अग. रवि रेवत्यां मं.शु.श.वेध
१३ " शुक्रे हस्त युति वेध रेखाअल्प
१५ " रवि स्वात्यां मृत्युवान दोषः
२८ " शनौ रेवत्यां मृत्युवान भुजंगपातदोषः
३ सित. शुक्रे मृग. लग्नाऽभावः
१० " शुक्रे हस्तभे वेध, युति तिथिक्षयः
१५ सित. बुधे मूल मृत्युवान दोषः
१७ " शुक्रे उषा. रवि निरंशः
१८ " शनौ उषा. मृत्युपंचक
२३ " गुरौ उभायां श्राद्धपूर्णिमा
१३ अक्टू. बुधे मूलभे राहुयुति दोषः
१५ " शुक्रे उषा.दग्धातिथि मृत्युवान
अग्रे शुक्रास्त दोषः
९ नव. भौमे मूलभे राहुयुति दोषः
११ " गुरौ उषा.भुजंगपात सर्वत्रवर्जयेत्
१ दिस. बुधे हस्त शनि युति तिथिक्षयः
७ " भौमे मूल भुजंगपात वर्ज्येतः
१४ " भौमे उभा. मृत्युपंचक व्यतिपातः
१५ " बुधे रेव.रेखाऽल्प,मासान्त,दग्धातिथिः
१७ जन. चन्द्रे मृग.मं.सू.वेध तिथिक्षयः दोषः
२१ " शुक्रे मघा भौम वेध वर्जितः
२२ " शनौ मघा भौमवेध भद्रादोषः
२६ " बुधे स्वाती भुजंगपात, तिथिक्षयः
३० " रवि मूल राहुयुति, दग्धातिथिः
६ फर. रवि उभा.युति, वेधदोषः
१३ " रवि मृगशिर संक्रांतिदिन वैधृतिपात
१४ " चन्द्रे मृगशिर मृत्युपंचक
२३ " बुधे स्वाती भौमवेध भद्रादोषः
२५ " शुक्रे अनुराधायां लग्नाऽभावः
२६ " शनौ मूलभे राहु की युति
३ मार्च बुधे श्रवण क्षीणेन्दु दोषः
९ " बुधे अश्विनी दिवा लग्नाऽभावः
१३ " रवि मृग. मृत्युवान होलाष्टक

विवाह के लिए शुभ समय अंग्रेजी मास–तारीखें (त्रिबल शुद्धि कोष्ठक)

सम्वत् २०६७ (अप्रैल २०१० से मार्च २०११ ई. तक)

वर-वधू राश्यानुसार सूर्य, गुरु तथा चन्द्रबल का संशोधन करके विवाह हेतु शुद्ध समय अंग्रेजी मास-तारीखें लिख दी गई हैं। जिस किसी भी राशि वाले वर-वधू का परस्पर विवाह करना हो, उन दोनों की राशियों के सामने जिन मासोंमें जो-जो तारीखें समान मिल जायें, वही दिन-तारीखें विवाह के लिए शुभ हैं। ऐसा समझना चाहिए।

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)
मेष	(१४ अप्रैल से १४ मई तक उच्चस्थ रवि ग्राह्य, आगे १५ जून तक पूजनादि से शुभ जानें) मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ३, ६, ८, १७, १८, २०, २१, २२, २८, २९, ३०, जुलाई- ४, ८, ९, १४, जनवरी- १६, २३, २४, २५, फरवरी- ८, ९, १२, १८, १९, २०, २१, २२, मार्च- १, ६, ८, ११, १२	मेष	नवम्बर- १८, १९, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, स्वगृही मीन का गुरु मई जून जुलाई तथा ८ दिसम्बर से जन. फर. मार्च में मेष राशि वालोंके लिए बारहवाँ रहेगा। आवश्यकतामें ग्राह्यताहेतु प्रमाणवाक्य- झषचाप कुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयादिषु॥ आ.बृहस्पति कहते हैं मीन धनु कर्क का गुरु अशुभ स्थानमें भी शुभ होता है।
वृष	(मई, जून, जुलाई, नवम्बर, दिस. तथा जनवरी में रवि की मामूली पूजा से शुभ जानें), मई- ३१, जून- १, २, ३, ६, ८, १८, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, नवम्बर- १८, १९, २२, २३, २७, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२, २०, २१, २२, २४ मार्च- १, ६, ७, ८, ११, १२	वृष	मई- ३१, जून- १, २, ३, ६, ८, १८, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, (नव.दिस.में गुरु पूजनादि से शुभ जानें) नवम्बर- १८, १९, २२, २३, २७, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२, २०, २१, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ८, ११, १२
मिथुन	(जून व फरवरी में रवि पूजनादि से शुभ जानें), जून- १७, १८, २१, २२, २३, २४, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, १४, नवम्बर- १८, १९, २२, २३, २७, २८, २९, दिसम्बर- २, ३, ८, ११, फरवरी- १८, १९, २२, २४, मार्च- ६, ७, ८, ११, १२	मिथुन	(मई से अक्टूबर तक आगे ६ दिस. से ८ मई तक स्वगृही गुरु को शुभ जानें) मई- २९, ३०, ३१, जून- ३, ६, ८, १७, १८, २१, २२, २३, २४, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, १४, नवम्बर- १८, १९, २२, २३, २७, २८, २९, दिसम्बर- २, ३, ८, ११, जनवरी- १६, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२, १८, १९, २२, २४, मार्च- ६, ७, ८, ११, १२
कर्क	मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ६, ८, नवम्बर- १८, १९, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- ८, ९, १०, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२	कर्क	मई-२९, ३०, ३१, जून-१, २, ६, ८, १७, १८, २०, २३, २४, २८, २९, जुलाई- ३, ४, ८, ९, १४, दिसम्बर-८, ९, १०, जनवरी-१६, २३, २४, २५, २८, फरवरी-७,८,९,१२,१८,१९,२०,२१,२४, मार्च-१,६,७,८,९,११,१२
सिंह	(अप्रैल में उच्चस्थरवि ग्राह्यः) मई- २९,३०,३१, जून- १,२, ३,८,१७, १८, २०, २१, २२, २८, २९, ३०, जुलाई- ८, ९, १४, जनवरी- १६, २३, २४, २५, (फर.उत्तरार्ध से मार्च पूर्वार्ध तक रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) फरवरी- ८, ९, १२, १८, १९, २०, २१, २२, मार्च- १, ६, ८, ११, १२	सिंह	नवम्बर- १९, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, मीन का गुरु श्रेष्ठ नवांश में होने पर सिंह राशि वालों को अत्यावश्यकता में ग्राह्य कहा जायेगा। स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रेवा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। अशुभोऽपि शुभोज्ञेयो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन्॥ केवल लग्नबल विचारकर विवाह का आदेश पूर्वाचार्यों ने दिया है।
कन्या	(मई व जनवरी में रवि पूजनादि से शुभ जानें) मई- ३१, जून- १, २, ३, ६, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, १४, नवम्बर- १८, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, १२, १८, २०, २१, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ११, १२	कन्या	मई- ३१, जून- १, २, ३, ६, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, १४, (नव.दिस.में गुरु की मामूली पूजा से शुभ जानें) नवम्बर- १८, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ११, १२

... श्रेष्ठ नवांश वर्गोत्तम में अनिष्ट स्थान के भी शुभ माने जाते हैं।

विवाह के लिए शुभ समय अंग्रेजी मास—तारीखें (त्रिबल शुद्धि कोष्ठक)

सम्वत् २०६७ (अप्रैल २०१० से मार्च २०११ ई. तक)

उदाहरण- वृश्चिकराशि वाले लड़के का विवाह मीनराशि वाली लड़की के साथ करना है, तो देखिए वृश्चिक और मीन राशियों के सामने कोष्ठक में मई की २९, ३०, ३१ और जून की १, २, ६, ८ तारीखें मिलती हैं, जोकि विवाहके लिए श्रेष्ठ हैं। जिनमें से किसी तारीख में आप सुविधानुसार विवाह सुनिश्चित कर सकते हैं।

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)
तुला	(अप्रैल, नवम्बर, फरवरी तथा मार्च में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) जून- १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, जुलाई- ३, ४, १४, नवम्बर- १८, १९, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ११, फरवरी- १८, १९, २०, २१, २२, २४, मार्च- ६, ७, ८,	तुला	मई से अक्टूबर तक आगे ६ दिसम्बर से ८ मई तक स्वगृही गुरु को शुभ जानें। मई- २९, ३०, ३१, जून- ३, ६, ८, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, जुलाई- ३, ४, १४, नवम्बर- १८, १९, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ११, जनवरी- २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १८, १९, २०, २१, २२, २४, मार्च- ६, ७, ८,
वृश्चि.	मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ६, ८, (नव. दिस.में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें।), नवम्बर- १८, १९, २२, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२	वृश्चि.	मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ६, ८, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, जुलाई- ३, ४, ८, ९, १४, दिसम्बर- ८, ९, १०, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२, १८, १९, २०, २१, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ८, ११, १२
धनु	मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ३, ८, १७, १८, २०, २१, २२, २८, २९, ३०, जुलाई- ८, ९, १४, जनवरी- १६, २३, २४, २५, फरवरी- ८, ९, १२, १८, १९, २०, २१, २२ मार्च- १, ६, ८, ११, १२	धनु	नवम्बर- १९, २२, २३, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- २, ३, स्वगृही गुरुके लिये अत्यावश्यकतामें ग्राह्य शास्त्रवचन- रजस्वलाया कन्याया गुरुशुद्धिं न चिन्तयेत्। अष्टमेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रि गुणार्चनात्॥ द्विजाचार्य स्वविवेक से काम लें। त्रिगुणपूजा अर्चना दानादि परित्वेन दोष मान्य नहीं रहता है।
मकर	(मई, जून तथा फरवरी में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) मई- २९, ३१, जून- १, २, ३, ६, १८, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, नवम्बर- १८, २२, २३, २७, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, १२, २०, २१, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ११, १२,	मकर	(मीन के गुरु मामूली पूजनादि से शुभ जानें) मई- २९, ३१, जून- १, २, ३, ६, २०, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, नवम्बर- १८, २२, २३, २७, ३०, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, १२, २०, २१, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ११, १२
कुम्भ	(जून, फरवरी, मार्च में रवि पूजनादि से शुभ जानें) जून- १७, १८, २१, २२, २३, २४, २८, ३०, जुलाई- ३, ४, १४, नवम्बर- १८, १९, २३, २७, २८, २९, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११, फरवरी- १८, १९, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ८	कुम्भ	मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ३, ६, ८, १७, १८, २१, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, १४, नवम्बर- १८, १९, २३, २७, २८, २९, दिसम्बर- २, ३, ८, ९, १०, ११ (नवम्बर व दिस. में ता.६ तक गुरु पूजनादि से शुभ जानें) जनवरी- २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १८, १९, २२, २४, मार्च- १, ६, ७, ८,
मीन	मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ३, ६, ८, (नवम्बर में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें।) नवम्बर- १८, १९, २२, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर- ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२	मीन	(जन्मके गुरु मामूली पूजनादिसे शुभ जानें) मई- २९, ३०, ३१, जून- १, २, ३, ६, ८, १७, १८, २०, २३, २४, २८, २९, ३०, जुलाई- ३, ४, ८, ९, १४, दिसम्बर- ८, ९, १०, ११, जनवरी- १६, २३, २४, २५, २८, फरवरी- ७, ८, ९, १२, १८, १९, २०, २१, २४, मार्च- १, ६, ७,८,११,१२

नोटः- राशि से बारहवाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है। पाणिग्रहे सुरतोऽभिषेके यात्रान्नप्राशने चलबन्धने च। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैःप्रोक्तःशुभो द्वादशगो हिमांशुः॥ -गर्गः

☆ द्विरागमन (गौना) मुहूर्त्त ☆

१८ नव. गुरौ रेवत्यां लग्न मकर मीन
१९ " शुक्रे अश्विनी अभिजितमु.
२२ " चन्द्रे रोहिण्यां ल.मकर कुम्भ श्रेष्ठ
२७ " शुक्रे पुष्यभे लग्न चिन्तनीय
३ दिस. शुक्रे स्वात्यां अभिजित मुहूर्त्ते
१० " शुक्रे श्रवण अभिजित मुहूर्त्ते
१२ " रवि शतभिषा लग्न मकर मीन
१५ " बुधे रेवत्यां घं.११ मि.५ उपरान्त
२० जन. गुरौ गुरुपुष्यामृत योगे
२४ " चन्द्रे उफायां लग्न चिन्तनीय
२८ " शुक्रे अनुराधा भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
३१ " चन्द्रे मूलभे लग्न चिन्तनीय
८ फर. भौमे रेवत्यां वसन्त पंचमी
१४ " चन्द्रे मृगशिर भद्रात्पूर्वे
१६ " बुधे पुष्यभे लग्न वृष
२० " रवि उफायां लग्न वृष
२५ " शुक्रे अनुराधा लग्न चिन्तनीय
२७ " रवि मूलभे लग्न श्रेष्ठ
६ मार्च रवि उभायां फुलैरा दूज
७ " चन्द्रे रेवत्यां लग्न वृष

नोटः- पूर्वाचार्यों के मतानुसार गुरु-शुक्र अस्त, शिशुत्व-वृद्धत्वमें भी साल भीतर द्विरागमन शुभ होता है। यथा- अस्तेऽथवा शिशुत्वे बालत्वे गुरु शुक्रयोः। शुभो द्विरागमो यावद्वर्षमेकं विवाहिताः॥ रेवत्यादि छः नक्षत्रों (रे.अ.भ.कृ.रो.मृग.) में गतिशील चन्द्रमा के रहते हुए शुक्र अन्धा रहता है। कश्यप,वशिष्ठ,अत्रि,भृगु, अंगिरा,भारद्वाज व वत्स गोत्रवालों को सम्मुख शुक्रका दोष नहीं लगता। यथा- काश्यपेशु वशिष्ठेषु चात्रिभृग्वङ्गिरःसु च। भारद्वाजेषु वात्स्येषु प्रतिशुक्रो न दुष्यति॥

☆ उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त ☆

३० मई रवि मूलभे भद्रात्पूर्वे
७ जून चन्द्रे उभायां लग्न कर्क
१८ " शुक्रे पूफायां लग्न कन्या
२१ " चन्द्रे चित्रायां श्रीगंगादशहरा
२४ जन. चन्द्रे उफायां अभिजित्
२८ " शुक्रे अनुराधायां भद्रात्पूर्वे
६ फर. रवि पूभा. अभिजित्
८ " भौमे रेवती वसन्त पंचमी
२० " रवि उफा. सर्वार्थसिद्धि योग
२७ " रवि मूलभे लग्न वृष
२८ " चन्द्रे पूर्वाषाढ़ा लग्न वृष
१ मार्च भौमे उ.षा. सामवेदीय
६ " रवि उभा. सर्वार्थसिद्धियोग

नोटः- आवश्यकतानुसार तीर्थस्थानमें किसी पर्व विशेष के अवसर पर चन्द्रबल देखकर बिना उपनयन मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत किया जा सकता है। वंश परम्परा (कुलाचार) वेद शाखानुसार उपाकर्म के दिन श्रावणी पूर्णिमादि में भी लग्नशुद्धि देखकर यज्ञोपवीत संस्कार करा सकते हैं।

☆ चूड़ाकरण (मुण्डन) मुहूर्त्त ☆

७ जून चन्द्रे रेवती १२।४७ उपरान्त
९ " बुधे अश्विनी १०।४९ तक
२१ " चन्द्रे चित्रा श्रीगङ्गा दशहरा
१ जुला. गुरौ शतभिषायां
५ " चन्द्रे रेवत्यां लग्न चिन्तनीय
२७ नव. शुक्रे पुष्यभे लग्न मकर
२ दिस. गुरौ चित्रायां श्रेष्ठ
१० " शुक्रे श्रवण लग्न मकर कुम्भ
१४ फर. चन्द्रे मृगशिर भद्रात्पूर्वे
१६ " बुधे पुनर्वसु पुष्यभे श्रेष्ठ
२५ " शुक्रे अनुराधायां श्रेष्ठ
७ मार्च चन्द्रे रेवत्यां लग्न चिन्तनीय

☆ कर्णवेध मुहूर्त्त ☆

नोटः- चूड़ाकरण मुहूर्त्तोंमें कर्णवेध संस्कार सविधि किया जा सकता है। कुलाचार मान्यतानुसार देवस्थान, तीर्थस्थान, मंगलकार्य पर्वोत्सवों के शुभ अवसर पर चन्द्र, तारा एवं लग्नबल विचारकर मुण्डन तथा कर्ण वेध कुलगुरु द्विजाचार्य की आज्ञानुसार सम्पन्न कर सकते हैं।

☆ गृहारम्भ मुहूर्त्त ☆

२१ जुला. बुधे अनु.वृषभचक्रशुभः ल.चिन्त.
२३ " शुक्रे मूल वृषभचक्रशुभःस्थिरयोगे
२६ " चन्द्रे श्रवणवृषभचक्रशुभः अभि.मु.
५ अग. गुरौ रोहि.भद्रात्पूर्वे स्थिर ल.५
१९ " गुरौ मूल वृषभ चक्रशुभःअभि.मु.
२२ " रवि उषा.वृषभचक्रशुभः अमृतयोगे
२७ " शुक्रे उभा.वृषभचक्रशुभःस्थिरल.८
१७ नव. बुधे उभा.वृषभचक्रशुभःलोकप्र.मु.
१८ " गुरौ रेव. वृषभचक्रशुभः स.सि.यो.
२६ " शुक्रे पुष्यभे लग्न चिन्त्येत्बुधः
१० दिस. शुक्रे श्रवणभे स.सि.योग. अभि.मु.
२० जन. गुरौ पुष्यभे वृषभचक्रशुभः लग्न१२
१४ फर. चन्द्रे मृग.वृषभचक्रशुभः अभि.मु.
१६ " बुधे पुष्य वृषभचक्रशुभःस्थिरलग्न
२० " रवि उफा.वृषभचक्रशुभःस.सि.योग
६ मार्च रवि उभा.लोकप्रसिद्धमु, लग्नचिन्त.

रविपुष्यामृत-गुरुपुष्यामृतमें कोई दोष मान्य नहीं रहता, क्योंकि पुष्य सभी में श्रेष्ठ है

नोटः- इस वाणिज्य युग में भवन निर्माण, गृह प्रवेश एवं अन्यान्य मूहूर्त्तों की बहुत आवश्यकता महसूस की जाती है। इस संदर्भ में वृषभचक्र कालगणना परित्वेन मुहूर्त्त न्यून ही बन पाते हैं। अतः सुयोग्य ज्योतिर्विद् सूक्ष्मातिसूक्ष्म तिथि, नक्षत्र, क्षण, वार, मान्यता के अनुसार मुहूर्त्त शोधन का कार्य सविधि सम्पन्न करा सकते हैं। आप अपनी सुविधानुसार श्रीब्रजभूमि पंचांग कार्यालय में सम्पर्क करके अपनी राशि नामानुसार रु.२५१/- भेजकर समाधान ले सकते हैं। श्रेष्ठ मुहूर्त्त निकलवा सकते हैं।

☆ गृहप्रवेश मुहूर्त्त ☆

३० मई रवि मूलभे स.सि.यो. लग्नचिन्तनीय
१९ जून शनौ उफा.क.चक्रशु.भद्रोत्तरल.६
२१ " चन्द्रे चित्रा कलशचक्रशुभःगंगा१०
२४ " गुरौ अनु.ल.६।७ कलशचक्रशुभः
५ जुला. चन्द्रे कलशचक्रशुभःअभिजित्मु.
९ " शुक्रे रोहि.कलशचक्रशुभःल.चिन्त.
१८ " रवि चित्राक.च.शु.,धनविवर्धनयोग
२१ " बुधे अनु.भद्रात्पूर्वेल.७,क.च.शुभः
२३ " शुक्रे मूल क.च.शुभःस्थिरयोगेल.७
५ अग. गुरौ रोहि.कलशच.शुभःस्वर्गेभद्रा.
६ " शुक्रे मृगे.कलशचक्रशुभःल.७ व ८
१५ " रवि स्वातीक.च.शु.धनविवर्धनयोग
१९ " गुरौ मूलकलशचक्रशुभ,लग्नचिन्त.
२२ " रवि उषा.अमृतयोगे कलशचक्रशुभ
५ सित. रवि पुष्यामृतयोगे कलशचक्रशुभः
१२ नव. शुक्रे उषा.क.च.शु.आनन्दयोगल.११
१३ " शनौ श्रवण स्थिरयोगे, कलशचक्र शुभः भद्रावास पाताले शुभः
१४ " रवि धनि.क.च.शुभ,कुलवृद्धियोग
१७ " बुधे उभा.क.चक्रशुभःलोकप्र.मु.
१८ " गुरौ रेवतील.कुम्भ,कलशचक्रशुभः
१९ " शुक्रे अश्वि.ल.११, क.चक्रशुभः
२ दिस. गुरौ चित्रायां क.च.शुभः लग्नकुम्भ
१० " शुक्रे श्रवण स.सि.योग स्थिर लग्ने
११ " शनौ धनि.क.चक्रशुभःल.११-१२
२० जन. गुरौ गुरु पुष्यामृतयोग में श्रेष्ठ

२८ जन. शुक्रे अनु. कलशचक्रशुभः ल.चिन्त.
३१ " चन्द्रे मूल कलशचक्रशुभ:अभि.मु.
८ फर. भौमे रेवत्यां लोकप्रसिद्धमुहूर्त्ते
१४ " चन्द्रे मृग. क.चक्रशु.भद्रात्पूर्वे ल.२
२५ " शुक्रे अनु.स्थिर ल.२ कलशचक्रशुभः
२७ " रवि मूल.क.च.शुभ,ल.२भद्रापाताले
६ मार्च रवि उभा. लोकप्र.मु. स्थिरयोगेश्रेष्ठ
१२ " शनौ रोहिणी श्रीवत्सयोगे स्थिर लग्ने
सर्वेदोषा:विनश्यन्तिलग्नशुद्धिर्यदाभवेत्।

☆ जीर्णानि(पुरातन)गृहप्रवेशमुहूर्त्त ☆

नीचे लिखे पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त उन सबके लिए ग्राह्य हैं, जिन्हें नौकरी में ट्रांसफर के कारण मकान बदलने पड़ते हैं, अथवा किराये के मकान खालीकर दूसरी जगह निवास करना होता है। देशकाल परिस्थित्यावसात् इन मुहूर्तोंमें गुरु शुक्र का अस्तकाल, अधिमास दोष, गुर्वादित्य (सिंहे सिहांशक) दोष, कलशचक्रशुद्धि, होलाष्टक आदि का विचार नहीं किया जाता। अत्यन्त व्यस्तता वाले इस वाणिज्य युग में रविवार को अधिकांश विद्वान ग्राह्य मानते हैं।

१ अप्रैल गुरौ स्वात्यां स्थिर लग्ने
५ " चन्द्रे मूलभे लग्न चिन्तनीयम्
११ " रवि शतभिषा शुभ लग्न २
१९ " चन्द्रे मृगशिर आनन्द योगे
२२ " गुरौ गुरुपुष्यामृत योगे
२८ " बुधे स्वात्यां वैशाखी पूनो
५ मई बुधे श्रवण भद्रोत्तर श्रेष्ठ
१० " चन्द्रे उभायां लग्न चिन्तनीयम्
१६ " रवि मृगशिर स्वयं सिद्धि मुहूर्त्त
१९ " बुधे पुष्यभे कुलवृद्धि सुयोग
२३ " रवि उफा. सर्वार्थसिद्धि योग
२४ मई चन्द्रे हस्तभे भद्रोत्तर लग्न श्रेष्ठ
२७ " गुरौ अनुराधा बुद्धपूर्णिमायां
३० " रवि मूलभे सिद्धियोगे
२ जून बुधे श्रवण लग्न चिन्त्येत्बुधः
७ " चन्द्रे रेवत्यां अभिजित मुहूर्त्ते
१९ " शनौ उफायां लग्न चिन्त्येत्बुधः
२१ " चन्द्रे चित्रायां श्रीगङ्गादशहरा
२४ " गुरौ अनुराधा आनन्द योगे
२६ " शनौ मूलभे पूर्णिमायां
१ जुला. गुरौ शतभिषायां श्रीवत्सयोगे
४ " रवि उभा. स्थिरयोगे श्रेष्ठ
५ " चन्द्रे रेवती अभिजितमुहूर्त्ते
९ " शुक्रे रोहिण्यां लग्नचिन्त्येत्बुधः
१३ " भौमे पुष्यभे प्रवर्धमान योगे
१८ " रवि चित्रायां लग्न चिन्त्येत्बुधः
२१ " बुधे अनुराधा भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
२३ " शुक्रे मूलभे स्थिरयोगे श्रेष्ठ
२५ " रवि उषा. गुरुपूर्णिमायां
३१ " शनौ उभा.लग्न अभिजितमुहूर्त्त
१ अग. रवि रेवत्यां प्रवर्धमान योगे श्रेष्ठ
५ " गुरौ रोहिण्यां लग्न चिन्तनीयम्
६ " शुक्रे मृगशिर अभिजित मुहूर्त्ते
८ " रवि पुनर्वसु भद्रात्पूर्वे लग्न शुभः
१५ " रवि स्वात्यां धन ऐश्वर्य वृद्धि योग
१९ " गुरौ मूलभे लग्न चिन्तनीयम्
२२ " रवि उषा. अमृतसिद्धि योग
२४ " भौमे धनिष्ठायां भद्रोत्तर लग्न ८
२९ " रवि अश्विन्यां प्रवर्धमान योगे
२ सित. गुरौ रोहिण्यां स्थिर लग्न में
५ " रवि रविपुष्यामृत योगे
१२ " रवि स्वात्यां योग श्रेष्ठ ल.चिन्त.
१३ अक्टू बुधे मूलभे लग्न श्रेष्ठ
११ नव. गुरौ उषा. धाता योग श्रेष्ठ
१२ " शुक्रे उषा. आनन्द योगे
१४ नव. रवि धनिष्ठा कुलवृद्धि योग
१७ " बुधे उभा. लोकप्रसिद्ध मुहूर्त्ते
१८ " गुरौ रेवत्यां लग्न चिन्तनीयम्
१९ " शुक्रे अश्विन्यां लग्न श्रेष्ठ
२६ " शुक्रे पुष्यभे लग्न कुम्भ
२ दिस. गुरौ चित्रायां लग्न चिन्तनीयम्
१० " शुक्रे श्रवण सर्वार्थ सिद्धि योग
११ " शनौ धनिष्ठा प्रवर्धमान योग
१६ जन. रवि रोहिण्यां लग्न चिन्तनीयम्
१९ " बुधे पुनर्वसु पूर्णिमायां
२० " गुरौ गुरुपुष्यामृत योगे
२४ " चन्द्रे उफा. श्रीवत्स योगे
२८ " शुक्रे अनुराधायां भद्रात्पूर्वे लग्न
३० " रवि मूलभे लग्न चिन्तनीयम्
५ फर. शनौ शतभिषायां आनन्द योगे
८ " भौमे रेवती वसन्त पंचमी श्रेष्ठ
१४ " चन्द्रे मृगशिर भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
१७ " गुरौ गुरुपुष्यामृत योगे
२० " रवि उफा. सर्वार्थसिद्धि योगे
२५ " शुक्रे अनुराधा अभिजितमुहूर्त्ते
२७ " रवि मूलभे सिद्धि योगे
२ मार्च बुधे श्रवण भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
६ " रवि उभा. सर्वार्थ सिद्धि योग
७ " चन्द्रे रेवती लग्न चिन्त्येत्बुधः
१२ " शनौ रोहिण्यां श्रीवत्स योगे

☆ देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

३० मई रवि मूल सिद्धि योग में श्रेष्ठ
२ जून बुधे श्रवण लग्न चिन्त्येत्बुधः
३ " गुरौ धनिष्ठा भद्रात्पूर्वे श्रीवत्सयोग
२० " रवि हस्त सर्वार्थसिद्धि योग में
२१ " चन्द्रे चित्रायां श्रीगंगादशहरा
२४ " गुरौ अनुराधा आनन्द योग स्थिलग्ने
१९ जन. बुधे पुनर्वसु स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये.
२४ जन. चन्द्रे उफा.श्रीवत्सयोग लग्न वृष
२८ " शुक्रे अनुराधा लग्न मीनादि ३
५ फर. शनौ शतभिषा अभिजितमुहूर्त्त
८ " भौमे रेवती वसन्त पंचमी
१६ " बुधे पुष्यभे स्थिर लग्ने वृष
२० " रवि उफा. सर्वार्थसिद्धि योग में
२५ " शुक्रे अनुराधा स्थिर लग्न वृष
६ मार्च रवि उभा. लोक प्रसिद्ध मुहूर्त्त
१२ " शनौ रोहिणी श्रीवत्स योगे

☆ तामसी देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

१ जुलाई गुरौ शतभिषा श्रीवत्सयोग श्रेष्ठ
४ " रवि उभा. स्थिर योग लग्न ६
९ " शुक्रे रोहिण्यां लग्न चिन्तनीय्
१३ " भौमे पुष्यभे प्रवर्धमान योगे
२१ " बुधे अनु.भद्रात्पूर्वे लग्नचिन्त.
२५ " रवि उषा.भद्रावास पाताले
१ अग. रवि रेवत्यां अभिजित मुहूर्त्त
७ " शनौ आर्द्रायां लग्न चिन्त्येत्बुध
१९ " गुरौ मूलभे वृश्चिक लग्ने
२४ " भौमे धनिष्ठायां अभिजित्
२७ " शुक्रे उभा. स्थिर लग्ने वृश्चि.
२ सित. गुरौ रोहिणी श्रीकृष्णाष्टमी
५ " रवि रविपुष्यामृतयोगे
१२ " रवि स्वाती स्थिरलग्न में
१८ " शनौ उषा.भद्रात्पूर्वे लग्न श्रे.
२० " चन्द्रे धनि.शुभ योग में
९ अक्टू शनौ स्वात्यां सिद्धियोग श्रेष्ठ
१५ " शुक्रे उषा. आनन्दयोगे
११ नव. गुरौ उषा. धाता योग में
२४ " बुधे आर्द्रा,अमृतयोगे,स्वर्गे भद्रा
२६ " शुक्रे पुष्यभे लग्नचिन्तनीय
३० " भौमे उफा.धातायोगे१०।४९से
२ दिस. गुरौ चित्रायां स्थिर लग्न
१० " शुक्रे श्रवण लग्न मीन

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

३१ मई चन्द्रे पूषायां अभिजितमु.
३० जून बुधे धनिष्ठाल.११।४५तक
११सित.शनौ चित्रायां लग्नचिन्त.
२३ जन. रवि पूफायां अभिजित्मु.
२१ फर. चन्द्रे हस्तभे स्थिर लग्न वृष

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

२४मार्च बुधे आर्द्रायां स्थिरलग्न
२० जून रवि हस्त सर्वार्थसिद्धियोगे
१९जुला.चन्द्रे स्वात्यां अभिजित्मु.
१३अक्टू बुधे मूलभे स्थिर लग्ने
१४दिस. भौमेउभायां सिद्धि योग
१२ फर. शनौ रोहि.स्थिरल११।३५से

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

१३अप्रैलभौमे उभा.सिद्धियोगश्रेष्ठ
११ जून शुक्रेरोहिण्यां १०।४२उप.
२१ " चन्द्रे चित्रा रामेश्वरप्र.दि.
१ फर. भौमेउषा.भद्रावासपाताले
३मार्च गुरौ धनि.स्थिरलग्न वृष

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

१६ मई रवि मृग. स्वयंसिद्धि मुहूर्त्त
१५ जून भौमेपुष्यभे प्रवर्धमानयोगे
१८जुला.बुधे मघायां लग्नचिन्त.
६ फर. रवि पूभायां स्थिरलग्न२
८ मार्च भौमेरेवत्यां शुभ योगे

श्रीविष्णुरामकृष्णप्रतिष्ठामुहूर्त्त

१४मार्च बुधे आर्द्रायां स्थिरलग्न २
२७ " शनौ मघायां मानस सुयोगे
२३ जून बुधे विशाखा धातायोग में
२सित.गुरौ रोहिण्यां लग्नचिन्त.
१५ फर. भौमेपुनर्वसु स्थिर लग्न २

उद्योग संचालन मुहूर्त्त

१०मार्च गुरौ गुरुपुष्यामृतयोगे
१अप्रै. गुरौ स्वाती स्थिर लग्न २
३ " शनौ अनुराधा अमृतयोगश्रे.
९ " शुक्रे धनि.धातायोगस्थिरल.
१६ मई रवि मृग. स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त
२४ " चन्द्रे हस्तभे भद्रोत्तरलग्न ५
२ जून बुधे श्रवण लग्न चिन्त.
४ " शुक्रे शत. अभिजित मुहूर्त्त
१४ " चन्द्रे पुन. अभिजित मुहूर्त्त
१जुला. गुरौ शत. लग्नचिन्त्येत्बुध
१३ " भौमे पुष्यल.६प्रवर्धमानयोग
१९ " चन्द्रे स्वाती लोकप्रसिद्धमु.
२६ " चन्द्रे श्रवण अभिजितमुहूर्त्त
२८ " बुधे धनि. लग्नचिन्त्येत्बुध
२अग. चन्द्रे अश्वि.भद्रोत्तर लग्न ७
८ " रवि पुन.चरलग्न में श्रेष्ठ
५सित. रवि रविपुष्यामृतयोगे
१२ " रवि स्वाती अभिजिन्मुहूर्त्ते
१९ " रवि श्रवण स्थिरलग्नश्रेष्ठ
९अक्टू.शनौ स्वात्यां सिद्धियोगश्रे.
१२ नव. शुक्रे श्रवण अभिजितमुहूर्त्त
१९ " शुक्रे अश्विनी स्थिरलग्न११
२६ " शुक्रे पुष्यभे लग्नकुम्भश्रेष्ठ
३दिस. शुक्रे स्वाती लग्नचिन्त्येत्बुध
१० " शुक्रे श्रवण स्थिरलग्नमें श्रे.
१२ " रवि शत.लग्नचिन्त्येत्बुधः
२० जन. गुरौ गुरुपुष्यामृतयोगे
५ फर. शनौ शत.आनन्दयोग श्रेष्ठ
१६ " बुधे पुष्यभे चर लग्ने श्रेष्ठ
२मार्च बुधे श्रवण स्थिर लग्ने
६ " रवि उभा. लोकप्रसिद्धमु.

विपणी (व्यापार) मुहूर्त्त

१८मार्च गुरौ रेवती अश्विनी
२२ " चन्द्रे रोहिणी स.सि.योग
२५ " गुरौ पुनर्वसु पुष्यभे
१अप्रैल गुरौ स्वात्यां भद्रात्पूर्वे
३ " शनौ अनुराधा अमृतयोगे
९ " शुक्रे धनि.भद्रोत्तरधातायोगे
११ " रवि शतभिषायां श्रेष्ठ
१५ मई शनौ रोहिणी श्रीवत्सयोगे
१६ " रवि मृगशिर अक्षयतीज
१९ " बुधे पुष्यभे श्रेष्ठ
२३ " रवि उफा. स.सि.योग
२४ " चन्द्रे हस्तभे भद्रोत्तर
२७ " गुरौ अनुराधा लग्न श्रेष्ठ
२ जून बुधे श्रवण लग्नचिन्त.
४ " शुक्रे शतभिषा सौम्ययोगे
६ " रवि उभा. स.सि.योग
१९ " शनौ उफा. भद्रोत्तर श्रेष्ठ
२१ " चन्द्रे चित्रा श्रीगंगादशमी
२४ " गुरौ अनुराधा आनन्दयोगे
२८ " चन्द्रे उषायां लग्न चिन्त.
१जुला. गुरौ धनिष्ठा श्रीवृद्धियोगे
४ " रवि उभा. स.सि.योग
९ " शुक्रे रोहिणी पुष्टियोग
१८ " रवि चित्रा भद्रोत्तरम्
२१ " बुधे अनुराधा भद्रात्पूर्वे
२५ " रवि उषा. स.सि.योग
२९ " गुरौ शतभिषायां श्रेष्ठ
१ अग. रवि रेवती प्रवर्धमानयोग
५ " गुरौ रोहिणी भद्रात्पूर्वे
८ " रवि पुनर्वसु भद्रात्पूर्वे
१५ " रवि चित्रा अभिजितमु.
२२ " रवि उषा. स.सि.योग
२७ अग. शुक्रे उभा. भद्रात्पूर्वेश्रेष्ठ
२ सित. गुरौ रोहिण्यां लग्न ८
५ " रवि रविपुष्यामृत योगे
१२ " रवि स्वाती अभिजित मु.
१८ " शनौ उषा. भद्रात्पूर्वे
२० " चन्द्रे धनिष्ठा शुभ योगे
९अक्टू. शनौ स्वाती सिद्धियोगे
१५ " शुक्रे उषा. आनन्दयोग
२२ " शुक्रे रेवती पूर्णिमायां
२७ " बुधे मृगशिर पंचमी में
३ नव. बुधे उफा. प्रवर्धन योगे
११ " गुरौ उषा. धातायोगश्रेष्ठ
१४ " रवि धनिष्ठायां श्रेष्ठ
१७ " बुधे उभा. देवउठान
१९ " शुक्रे अश्विन्यां श्रेष्ठ
२६ " शुक्रे पुष्यभे श्रेष्ठ
१ दिस. बुधे हस्त भद्रोत्तरं
१० " शुक्रे श्रवण श्रेष्ठ
११ " शनौ धनिष्ठा प्रवर्धनयोगे
१६ जन. रवि रोहिणी भद्रोत्तर
१९ " बुधे पुनर्वसु पूर्णिमायां
२४ " चन्द्रे उफा. श्रीवत्सयोगे
२८ " शुक्रे अनुराधा भद्रात्पूर्वे
५ फर. शनौ शतभिषाआनन्दयोगे
९ " बुधे अश्विनी लग्न वृष
१४ " चन्द्रे मृगशिर
१६ " बुधे पुष्यभे श्रेष्ठ
२० " रवि उफा. स.सिद्धियोग
२३ " बुधे स्वाती भद्रात्पूर्वे
२५ " शुक्रे अनुराधायां
२ मार्च बुधे श्रवण विशेष लाभ
६ " रवि उभा. स.सि.योग
१२ " शनौ रोहिणीश्रीवत्सयोग

वस्तुखरीदने(संग्रह) के शुभ नक्षत्र

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती माने गये हैं। रिक्ता व क्षयःतिथि एवं भौमवार रहित सभी दिन ग्राह्य कहे गये हैं।

बेचने (विक्री) के नक्षत्र

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूफा., उफा. विशाखा, मूल, पूषा. उषा. पूभा. और उभा., वारों में गुरु,सोम श्रेष्ठ माने गये हैं। मु.चिन्तामणि में मघा के बजाय ज्येष्ठा को निषेध कहा है। अतःयुक्तियुक्त विचारकर काम में लेना चाहिए। व्यापारमें गुरु शुक्रास्तकाल, क्षयाधिमास, खर मास, होलाष्टक, पितरपक्ष, सिंहस्थकाल, लुप्त संवत्सर आदि का दोष मान्य नहीं रहता। यह तो मन की इच्छावृत्ति पर आधारित कृत्य हैं। सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रविपुष्य, गुरुपुष्यामृतयोग व रवि योगसे शुद्ध होने वाला दिन व्यापार वृद्धि, उत्तरोत्तर सौख्य-समृद्धिमें सहायक होता है।

वाहन क्रयविक्रय मुहूर्त्त

१६ मई रवि मृग. स्वयंसिद्धि मुहूर्त्त
२४ " चन्द्रे हस्त९।४६उप.लग्नचि.
२७ " गुरौ अनुराधा बुद्धपूर्णिमा
२ जून बुधे श्रवण नक्षत्रे
४ " शुक्रे शत. सौम्ययोगे
२१ " चन्द्रे चित्रा अभि.मुहूर्त्त

२४ जून गुरौ अनु. आनन्दयोगे
१जुला.गुरौ धनिश्रीवत्सयोगे
१८ " रवि चित्राभद्रापाताले
२१ " बुधे अनुभद्रात्पूर्वेल७
२८ " बुधे धनिष्ठाल.चिन्त.
६अग.शुक्रेमृगशिर लग्न७
१५ " रवि स्वाती१३।३०से
२९ " रवि अश्वि.प्रवर्धमान
५सित.रवि रविपुष्यामृतयोगे
१२ " रवि स्वाती लग्न ८
१९ " रवि श्रवण ल.चिन्त
९अक्टू.शनौ स्वातीसिद्धियोगे
१२नव. शुक्रे श्रवणआनन्दयोगे
१८ " गुरौ रेवती स.सि.योग
१९ " शुक्रेअश्विनी श्रेष्ठ
२६ " शुक्रेपुष्यभे लग्न १०
३दिस.शुक्रेस्वाती ल.चिन्त.
१० " शुक्रे श्रवणल.मकरादि
१२ " रवि शतभिषायां श्रे.
२८जन. शुक्रेअनुरा.भद्रात्पूर्वे
५फर.शनौशत.आनन्दयोगे
१६ " बुधे पुष्यभे श्रेष्ठ
२५ " शुक्रे अनुराधायां श्रे.
२मार्चबुधे श्रवणभेलग्न२

नोटः- कार, बस, ट्रक, स्कूटर, मोटरसाईकिल, वायु यान आदि वाहन लेने पर अपने देवस्थान में या शक्तिस्थान में दर्शनार्थ अवश्य जाना चाहिए। कुलगुरु आचार्य से पूजा कराते समय सिंदूर से स्वस्तिकचिह्न, शुभ-लाभ एवं मारुति यन्त्र बनवाकर रखने वालों को वाहनसे अत्यन्त लाभ होताहै।

☆ नलकूपारम्भ मुहूर्त ☆

१९ मई बुधे पुष्यभे श्रेष्ठ
२१ " शुक्रेमघायां लग्न सिंह
२४ " चन्द्रेहस्त भद्रोत्तर
२ जून बुधे श्रवणलग्न चिन्त.
३ " गुरौ धनि.श्रीवत्सयोगे
४ " शुक्रेशत. सौम्ययोगे
२४ " गुरौ अनु. आनन्दयोगे
१जुला.गुरौ शत. श्रीवत्सयोगे
२ " शुक्रेशत. सौम्ययोगे
९ " शुक्रेरोहिणी ल.कन्या
२१ " बुधे अनु. भद्रात्पूर्वे
२६ " चन्द्रेउषा. श्रवण
२८ " बुधे धनिष्ठा मित्रयोगे
५अग.गुरौ रोहि. स्वर्गेभद्रा
६ " शुक्रेमृगशिर नक्षत्र
२० " शुक्रेपूषा.भद्रापाताले
२७ " शुक्रेउभा. भद्रात्पूर्वे
२सित.गुरौ रोहिण्यां श्रेष्ठ
६ " चन्द्रेपुष्यभे धातायोगे
१७ " शुक्रेपूषा.प्रवर्धमान
२० " चन्द्रेधनिष्ठा शुभयोगे
१४अक्टू.गुरौ पूषा. धातायोग
१० नव. बुधे पूषा. लग्न कुम्भ
११ " गुरौ पूषा. धातायोगे
१२ " शुक्रेउषा. आनन्दयोगे
१८ " गुरौ रेवती मित्र योगे
२७ " शुक्रेपुष्यभे श्रेष्ठ
८दिस.बुधे पूषा.श्रीवत्सयोगे
१० " शुक्रेश्रवण लग्न श्रे.
२४ जन. चन्द्रे उफा.श्रीवत्सयोगे
२८ " शुक्रेअनु.भद्रात्पूर्वे
३१ " चन्द्रेपूर्वाषाढ़ा
१४फर.चन्द्रेमृग. भद्रात्पूर्वे
१६ " बुधे पुष्यभे लग्न श्रे.
२५फर.शुक्रेअनुराधा ल.चि.
२८ " चन्द्रेपूषा. लग्न वृष
२मार्चबुधे श्रवण भद्रात्पूर्वे
७ " चन्द्रेउभा.रेवती श्रेष्ठ

श्रीगणेश, लक्ष्मीन्द्र, वरुण, कुबेर, कुलदेव, वास्तुदेव तथा शिव स्वरूप भैरव भगवान् का सविधि पूजन करके उपरोद्र मुहूर्तों में नल लगाने, बोरिंग करवाने, कुँआ-बाबडी खुदवाने पर उसमें उत्तम जल प्राप्त होता है।

☆ हलप्रवहणबीजोप्तिमुहूर्त ☆

१८ मार्च गुरौ रेवती अश्विनी
२२ " चन्द्रे रोहिणी नक्षत्र
२५ " गुरौ पुनर्वसु
१अप्रैलगुरौ स्वाती
५ " चन्द्रेमूल
१० " शनौ धनिष्ठा
१९ " चन्द्रेमृगशिर
२२ " गुरौ पुष्यभे
२६ " चन्द्रेहस्तभे
५ मई बुधे उत्तराषाढ़ा
१२ " बुधे अश्विनी
१९ " बुधे पुष्यभे
२४ " चन्द्रेहस्त भद्रोत्तर
२ जून बुधे श्रवण
३ " गुरौ धनिष्ठा
१४ " चन्द्रेपुनर्वसु
२४ " गुरौ अनुराधा
२८ " चन्द्रेउत्तराषाढ़ा
१जुला.गुरौ धनिष्ठा शत.
२ " शुक्रेशतभिषा
९ " शुक्रेरोहिणी
१४ " बुधे मघायां
२१ जुला. बुधे अनुराधा
२३ " शुक्रे मूलभे श्रेष्ठ
२६ " चन्द्रे उत्तराषाढ़ा
२८ " बुधे धनिष्ठा
३१ " शनौ उत्तराभाद्रपद
२ अग. चन्द्रे अश्विनी
५ " गुरौ रोहिणी
६ " शुक्रे मृगशिर
१९ " गुरौ मूल नक्षत्रे
२७ " शुक्रे उत्तराभाद्रपद
३० " चन्द्रे अश्विनी
२ सित. गुरौ रोहिणी
६ " चन्द्रे पुष्यभे
१८ " शनौ उत्तराषाढ़ा
२० " चन्द्रे धनिष्ठा
९अक्टू.शनौ स्वाती
१३ " बुधे मूलभे
१५ " शुक्रे उत्तराषाढ़ा
१८ " चन्द्रे शतभिषा
२३ " शनौ अश्विनी
२९ " शुक्रे पुनर्वसु
३० " शनौ पुष्यभे
१ नव. चन्द्रे मघायां
३ " बुधे उत्तराफाल्गुनी
४ " गुरौ हस्तभे श्रेष्ठ
८ " चन्द्रे अनुराधा
१० " बुधे मूलभे श्रेष्ठ
११ " गुरौ उत्तराषाढ़ा
१३ " शनौ श्रवण
१७ " बुधे उत्तराभाद्रपद
१८ " गुरौ रेवती श्रेष्ठ
२४ " बुधे मृगशिर
२६ " शुक्रे पुष्य नक्षत्रे
१ दिस. बुधे हस्तभे
२ " गुरौ चित्रायां
३ " शुक्रे स्वाती
१० दिस. शुक्रे श्रवण
११ " शनौ धनिष्ठा
१७ " शुक्रे अश्विन्यां
२३ " गुरौ पुनर्वसु
३० " गुरौ स्वात्यां
७ जन. शुक्रे धनिष्ठा
१२ " बुधे रेवती
२० " गुरौ पुष्यभे
२४ " चन्द्रे उत्तराफाल्गुनी
२८ " शुक्रे अनुराधा
५ फर. शनौ शतभिषा
९ " बुधे अश्विनी
१४ " चन्द्रे मृगशिर
२३ " बुधे स्वाती नक्षत्र
२ मार्च बुधे श्रवण
७ " चन्द्रे उत्तराभाद्रपद
१२ " शनौ रोहिणी
१६ " बुधे पुष्यभे
२१ " चन्द्रे चित्रायां
२४ " गुरौ अनुराधा
३० " बुधे धनिष्ठायां
३१ " गुरौ शतभिषायां

☆ अक्षरारम्भ मुहूर्त ☆

१६ मई रवि मृग.स्वयंसि.मु.
१९ " बुधे पुष्य नक्षत्रे
२४ " चन्द्रेहस्त भद्रोत्तर
२ जून बुधे श्रवण
३ " गुरौ धनि.श्रीवत्सयो
२१ " चन्द्रे चित्रायां
९जुला.शुक्रेरोहिण्यां
२५ " रवि उषा. स.सि.योग
२४ जन. चन्द्रे हस्तभे श्रेष्ठ
२८ " शुक्रेअनुराधा
८ फर. भौमेरेव.सरस्वतीज.
१४ " चन्द्रेमृगशिर
१६ फर. बुधे पुनर्वसु पुष्य
२३ " बुधे स्वात्यां श्रेष्ठ
२मार्चबुधे श्रवण
७ " चन्द्रेरेवत्यां

☆ विद्यारम्भ मुहूर्त ☆

१६ मई रवि मृग.स्वयंसि.मु.
१९ " बुधे पुष्यभे लग्न ५
२३ " रवि उफा.स.सि.योग
२४ " चन्द्रेहस्त ९।४६उप.
३० " रवि मूल सिद्धियोग
२ जून बुधे श्रवण ल.चिन्त.
३ " गुरौ धनि.श्रीवत्सयोग
७ " चन्द्रेरेवती ल.चिन्त.
१८ " शुक्रेपूफा. सिद्धियोग
२१ " चन्द्रेचित्रायां श्रेष्ठ
२८ " चन्द्रेउषा. लग्न कन्या
१जुला.गुरौ शत.श्रीवत्सयोगे
२ " शुक्रेशत. सौम्ययोगे
९ " शुक्रेरोहिणीमित्रयोग
१४ " बुधे श्लेषा.लग्नचि.
२१ " बुधे अनु. भद्रात्पूर्वे
२५ " रवि उषा. गुरुपूर्णिमा
२४जन. चन्द्रे उफाश्रीवत्सयोगे
२८ " शुक्रेअनु.भद्रात्पूर्वे
३१ " चन्द्रेमूल पू.षा.
६फर.रवि पूभा. लग्न वृष
८ " भौमेरेवतीसरस्वतीज.
१४ " चन्द्रेमृग.भद्रात्पूर्वे
१६ " बुधे पुनर्वसु पुष्य
२० " रवि उफा. स.सि.योग
२३ " बुधे स्वाती भद्रात्पूर्वे
२७ " रवि मूल सिद्धियोग
२८ " चन्द्रेपूर्वाषाढ़ा
२मार्चबुधे श्रवण श्रेष्ठ
६ " रवि उभा. लो.प्र.मु.
७ " चन्द्रेरेवती श्रेष्ठ

☆ अखण्डपाठारम्भ मुहूर्त्त ☆

गुरु आश्रित नक्षत्र से श्री रामचरित मानस पाठारम्भ मुहूर्त्त दिन नक्षत्र तक गिनने पर १६ की संख्या तक अर्थलाभ-सिद्धिप्रद, आगे २४ तक गिनने पर नेष्ट, उपरान्त २७ तक गिनने पर मोक्षप्रद जानें। शुक्ल पक्ष में देवप्रीत्यर्थ तथा कृष्णपक्ष में पितर बाधा, रोगशान्त्यर्थ श्रेष्ठ रहता है। गोस्वामी जी ने हरिनाम को जैसे भी बने स्मरण कर लिया जाए तो सर्वथा मंगलदायककहा है।

☆ श्रीमद्भागवतसप्ताहमुहूर्त्त ☆

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन शुक्लपक्ष, कार्तिक और मार्गशीर्ष अत्यन्त श्रेष्ठ, अन्यान्य आचार्यों के मत से चैत्र व पौष को छोड़कर सभी मास श्रेष्ठ माने गये हैं। तिथियाँ २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १५ सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। नक्षत्र अश्विनी, मृग. पुन. पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वा.,अनु.,श्रवण, धनि., पूभा. तथा रेवती शुभ जानें।

पितरमोक्ष के लिए- मृत्युतिथि, श्राद्धदिन, अगहन शुक्ल चौदस अथवा अमावस्या में भागवत् कथा का शुभारम्भ होना चाहिए।

☆ नृत्यारम्भ मुहूर्त्त ☆

पुष्य,उफा.,हस्त,ज्येष्ठा,उषा.,धनि., शत.,उभा. एवं रेवती नक्षत्र सत् तिथियाँ मंगलवार को छोड़कर सभी वार नृत्यारम्भ, कलाकृति, नाटक, गायन, कला, फिल्म आदि बनाने के लिए श्रेष्ठ हैं।

☆ चुनावमें नामांकन मुहूर्त्त ☆

दोनों पक्ष की शुभ तिथियाँ- २,३,५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ और कृष्ण पक्ष की १ श्रेष्ठ

शुभ वार- रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। **सूर्यकी होरा**- टेण्डर लेने, चुनाव लड़ने, नौकरी आदि के फार्म भरने, पर्चा जमा करने, राजकाज का चार्ज लेने, शपथ ग्रहण करने में सर्वश्रेष्ठ रहती है। वार चाहे जो भी हो सूर्य की होरा या राशीश की होरा में सफलता सुनिश्चित है। शुभनक्षत्र- अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, स्वाती, अनु., उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, उ.भा. और रेवती, शुभलग्न- जिससे नवम एवं दशम भाव प्रभावशाली हों अर्थात् कोई पापग्रह न हो और लग्न भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो। राशि से चन्द्रमा शुभ स्थान में हो। शपथग्रहण-जहाँ तक हो सके स्थिर लग्न में करनी चाहिए।

☆ बिटोड़ा-काष्ठ संग्रह मुहूर्त्त ☆

सूर्याश्रित नक्षत्र से चान्द्र नक्षत्र तक साभिजित् गणना करके देख लें- ६ नक्षत्र श्रेष्ठ, २ शवदाह नेष्ट, ४ सर्पभय के नेष्ट, ४ श्रेष्ठ, ४ रोगभय, ४ असुख और आगे के ४ नक्षत्रोंमें शुभ रहता है। दोहा- रविनक्षत्र से षट् भलो, षट् खोटो शुभ चारि। आठ अशुभ शुभ चारि है, उपले धरो विचारि।। बिटोड़ा (उपले, कण्डे) रखते समय वार चाहे जो भी हो, पंचकों के (धनिष्ठादि पांच नक्षत्र) छोड़कर भद्रादि कुयोगरहित दिनमें बिटोड़ारखना शुभहै।

☆ कालसर्प योग पूजा विधान ☆

कालसर्प योग की शान्ति हेतु यज्ञानुष्ठान कराते समय द्विजाचार्यों को ध्यान रखना चाहिए कि यज्ञ का आरम्भ या समाप्ति पंचमी, अष्टमी, दशमी या चतुर्दशी तिथि वार चाहे जो भी हो, भरणी आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित् और श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ अन्यान्य मध्यम जानने चाहिए। कर्त्ता की राशि से ग्रहगणना विचार परमावश्यक है। वर्ष मध्ये कालसर्प योग जिस समय बने उस समय अनुष्ठान सर्वश्रेष्ठ रहता है।

मूल तथा गण्डमूल नक्षत्रोंका प्रारम्भ व समाप्तिकाल

ता.मास घं.मि. से	ता.मास घं.मि. तक
सन् २०१० ई.	
१७ मार्च ८।५१ "	१९ मार्च ११।५१ "
२६ " ८।५२ "	२७ " २८।१८ "
३ अप्रैल १७।५३ "	५ अप्रैल २०।५७ "
१३ " १५।४२ "	१५ " १८। ५ "
२२ " १५।२२ "	२४ " १२। ८ "
३० " २७।२२ "	२ मई २९।३६ "
१० मई २३।४२ "	१२ " २५।५२ "
१९ " २०।४३ "	२१ " १७।५३ "
२८ " १२। ९ "	३० " १४।१५ "
७ जून ८।१६ "	९ जून १०।४९ "
१५ " २७। ४ "	१७ " २३।२६ "
२४ " १९।२३ "	२६ " २१।५७ "
४ जुला. १६।२६ "	६ जुला. १९।५२ "
१३ " ११।३६ "	१५ " ६।३८ "
२१ " २५।१४ "	२३ " २८।२४ "
३१ " २३।३५ "	२ अग. २७।५४ "
९ अग. २१।५७ "	११ " १६। ५ "
१८ " ६।५१ "	२० " १०। ६ "
२७ " २९।४४ "	३० " १०।२७ "
६ सित. ८।३७ "	७ सित. २६।५५ "
१४ " १३।४१ "	१६ " १६।११ "
२४ " ११।३६ "	२६ " १६। ७ "
३ अक्टू. १७।४८ "	५ अक्टू. १३।१८ "
११ " २२।२५ "	१३ " २३।४० "
२१ " १८। ७ "	२३ " २२।११ "
३० " २४।३६ "	१ नव. २१।३५ "
८ नव. ८।२७ "	१० " ८।४१ "
१७ " २५।४५ "	१९ " २९।४० "
२६ " २९।५९ "	२८ " २७।३१ "
५ दिस. १८। ९ "	७ दिस. १८।१४ "
१५ " १०।१० "	१७ " १४।३० "
२४ दिस. १२।२० "	२६ दिस. ९। २ "

ता. मास घं.मि. से	ता. मास घं.मि. तक
सन् २०११ ई.	
१ जन. २५।५७ "	३ जन. २६।४५ "
११ " १८।२८ "	१३ " २३।३३ "
२० " २१।१७ "	२२ " १६।३३ "
२९ " ७।४६ "	३१ " ९।२४ "
७ फर. २५।५३ "	१० फर. ७।३३ "
१७ " ८।१३ "	१८ " २६।४५ "
२५ " १३।२१ "	२७ " १४।५५ "
७ मार्च ८।२० "	९ मार्च १४। ७ "
१६ " १८।५९ "	१८ " १४। ३ "
२४ " २०।४३ "	२६ " २१। ६ "
३ अप्रैल १४।२१ "	५ अप्रैल १९।५८ "

पंचक प्रारम्भ व समाप्तिकाल

ता.मास घं.मि. से	ता.मास घं.मि.तक
सन् २०१० ई.	
१३ मार्च १२। ३ "	१८ मार्च १०।३३ "
९ अप्रैल १९।.६ "	१४ अप्रैल १७। ७ "
६ मई २६।५४ "	११ मई २५। ४ "
३ जून १०।५५ "	८ जून ९।५२ "
३० " १८।३३ "	५ जुला. १८।२८ "
२७ जुला. २५।२२ "	१ अग. २६। ० "
२४ अग. ७।३२ "	२९ " ८।१६ "
२० सित. १३।३६ "	२५ सित १४। ० "
१७ अक्टू. २०।१२ "	२२ अक्टू. २०।१९ "
१३ नव. २७।५० "	१८ नव. २७।५७ "
११ दिस. १२।१३ "	१६ दिस. १२।३६ "
सन् २०११ ई.	
७ जन. २०।३५ "	१२ जन. २१।१३ "
३ फर. २८। २ "	८ फर. २८।५० "
३ मार्च १०।१९ "	८ मार्च ११।१७ "
३० " १८। ६ "	४ अप्रैल १७।१४ "

सम्वत्- शाके- सनादि विवरण

स्वस्ति श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्य राज्यात्संवत् २०६७ शकसंवत् १९३२ अब्दप्रवेशेसृष्टितोगताब्दाः१९५५८८५१११ कल्पादितो गताब्दाः१९७२९४९१११ प्रमाणितः। ईस्वीसन् २०१० व २०११ हिजरी १४३१ व ३२ श्रीमहावीरनिर्वाण जैनसं. २५३६ व ३७ फसली १४१७ व १८ भा.स्वतन्त्रसं. ६३ व ६४ कलिगताब्दाः ५१११ शेषाब्दाः ४२६८८९ बंगला १४१७ कौल्लम ११८५ व ८६ श्रीराम-रावण युद्धतोगताब्दाः ८८०१५२ श्रीकृष्णावतारः ५२३६ कुरुपाण्डव युद्धतोगताब्दाः ५१११ मलयालम सन् ११८५ व ८६ पारसी १९७९ व ८०

राजा मन्त्री आदि विवरण

अथाऽस्मिन्वर्षे राजाभौमः। मन्त्रीबुधः। सस्येशो शुक्रः। धान्येशोगुरुः। मेघेशोभौमः। रसेशोरविः। नीरसेशःशुक्रः। फलेशश्चन्द्रः। धनेशोगुरुः। दुर्गेशःचन्द्रः। ऐते दशाधिकारिणः। तत्रबार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्टियब्दानां मध्ये विष्णुर्विंशतिकायां १७वाँ शोभननाम सम्वत्सरः प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्कसमये गत मासादिः ११।१५।१८।४३ भोग्यमासादिः०।१४।४१।७ विश्वेदेवदैवतं युगम्। वर्षनाम भाद्रपदः। मेघनाम पुष्करः। रोहिणी निवासःपर्वते। समय निवासः कुम्भकार गृहे।

✱ सम्वत् आदि के विश्वामान ✱

संवत् विश्वा	१८	वर्षा विश्वा	५	छुधाविश्वा	३	व्याधिविश्वा	७
समयवाहन	वृषभः	धान्यविश्वा	१७	तृष्णाविश्वा	१५	व्याधिनाशः"	३
स्तम्भ २ वायु	अन्न	तृणविश्वा	१५	निद्राविश्वा	३	आचारविश्वा	१
सोमोतीमावस	०	शीतविश्वा	१५	आलस्यविश्वा	१३	अनाचारविश्वा	५
सोम पंचमी	१	तेजविश्वा	११	उद्यमविश्वा	५	मृत्युदरविश्वा	१
अंगारकी चतुर्थी	१	वायुविश्वा	१३	शान्तिविश्वा	१५	जन्मदर विश्वा	९
बुधाष्टमी	२	प्रजावृद्धि "	१५	क्रोधविश्वा	९	देशोपद्रव"	१५
भानु सप्तमी	१	प्रजाक्षयः"	१५	दम्भविश्वा	५	देशस्वस्थता	३
रवि दशमी	३	विग्रहविश्वा	११	लोभविश्वा	३	चोरभयविश्वा	९
समय मुहूर्त्ताः	४०५	ऐक्यम्	११७	विलासिता "	१५	चोरभयनाश	१
समयदिनानि	३८४	सत्यविश्वा	आधा	रसनिष्पत्ति "	९	उद्भिजविश्वा	७
तिथिक्षयः	२०	धर्मविश्वा	ड्योढ़ा	फलनिष्पत्ति"	१३	जरायुजविश्वा	३
तिथि वृद्धिः	१४	पापविश्वा	१८	उत्साहविश्वा	११	अण्डजविश्वा	३
उत्पत्तिविश्वा	९६	शनिदृष्टिः	दक्षिणे	उग्रताविश्वा	७	स्वेदजविश्वा	३
खपतिविश्वा	१०८	ग्रहणस्य १	सूर्यस्य	पुण्यविश्वा	९		

अथ दशाधिकारी शुभाशुभ फलम्

भौमेनृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव विग्रहं च।
दुःखं प्रजाव्याधिवियोगपीड़ा स्वल्पंपयोमुञ्चति वारिवाहाः॥

राजा मंगल का फल- वर्ष मध्ये चोर, अग्नि, आतंकी, दुराचारी तथा राजाओं में युद्धादि का भय व्याप्त रहेगा, नाना प्रकार की व्याधियों से जनता दुःख पावे। गृहस्थों में वियोग-विखराव बढ़ेंगे। मेघ जल की वर्षा कम करेंगे। पानी को लेकर सरकारों में झगड़े-झमेले होंगे।

शशिसुते शुभ मन्त्रिसमागते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यव मसूरचणान्न महर्घता॥

मन्त्री बुध का फल- इस वर्ष स्त्रियाँ अपने-अपने पतियों के साथ हास्यरस, सांसारिक सुखोपभोग भोगने में आनन्दमग्न रहें। मेघाडम्बर, वर्षाधिक्य से पैदावार अच्छी हो। बाजार में घटा-बढ़ी चलती रहे। जौं, मसूर, चनादि में तेजी हो। विदेशों से व्यापार खूब बढ़े। उद्योग-धन्धों में बढ़ता विदेशी वर्चस्व क्षोभ का कारण बने। सरकारी तन्त्र की निर्बलता से राष्ट्रीय सम्पदा का दुरुपयोग हो।

शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघोजलं वर्षतिशोभनं प्रियम्।
गोधूम शालिछुधनं प्रियंगु वृक्षेषु पुष्पाणि सुख प्रदानि॥

सस्येश शुक्र का फल- अच्छा है। समयोचित वर्षा से खेती में पैदावार बढ़ेगी। चावल, गन्ना, कन्दमूल, पादपवृन्द एवं लता कुंजादि फल-फूलों से आच्छांदित पृथ्वी शोभायमान लगेगी। प्रजा किंवा सुख शान्ति का अनुभव करेगी।

गुरौ धान्यपतौ याति यव गोधूम शालयः।
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्रह्मणादयः॥

धान्येश गुरु का फल- इस वर्ष जौं, गेंहू, चावल, मूंग, उड़द, कांगुनी, कोंदो एवं अन्नादि की पैदावार अधिक होने से महंगाई कम बढ़े। द्विजमात्र विद्वान, यजमान, यज्ञ आदि सत्कर्मों में लगे रहें। विकास से सम्बन्धित कामों को बल मिले।

अवनिजे जलदस्यपतौ भुविश्रुतिविचार विहीन धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलंमल्पकं क्वचिदपि प्रचुरं बहुतापदम्॥

मेघेश मंगल का फल- नेष्ट होने से सत-असत का विचार कम रहे। कहीं जनता आपाधापी में लगी रहे। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि से क्षति हो। धन का दुरुपयोग होने से राष्ट्र की स्थिति कमजोर बने। कहीं अराजकता का खुला ताण्डव नृत्य देखने को मिले।

रसपतौ तरणौ धरणी तदा विरसभोगरताल्पपयोधराः।
वसन तैल घृत प्रियमानवाः सुख रसं न भुनक्तिमहीपतिः॥

रसेश सूर्य का फल- इस वर्ष वर्षाकी कमी से पैदावार कम हो। रसकश, दूध, दही,

तेलादि के लिए लोग लालायत रहें। वस्त्र, तेल, घी, गुड़, खांड, चीनी में तेजी रहे। कूट राजनीतिज्ञ धर्मान्ध मठाधीश जनता में अशान्ति फैलाती रहे।

कर्पूरागरुगन्धानां हेममौक्तिक वाससाम्।
अर्घवृद्धिःप्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि।।

नीरसेश शुक्र का फल- कपूर, अगर, तगर अन्यान्य सुगन्धित द्रव्य तथा सोना, वस्त्र, मोती आदि के भाव कमती रहें। मशीनरी, कलपुर्जे, लोहादि धातुओं के भावों में वृद्धि का रुख बने।

यदि विधुः फलपोद्रुम राशयःफलयुताबलिभिःकुसुमैर्युताः।
द्विजमुखावरभोग समन्विता नृपतयो जनपालनतत्पराः।।

फलेश चन्द्र का फल- इस वर्ष वृक्ष लता पेड़ पौधों में फल-फूल खूब लगें। द्विजमात्र ब्राह्मण, विद्वानों को उत्तम साधन मिलें। देश की न्याय प्रणाली सुदृढ़ बने। नेता जनता की भलाई का आश्वासन देते रहें।

सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपराःसुखभाजनाः।
फलित पुष्पित भूमिरुहाःसदा विविधद्रव्ययुताभुवि मानवाः।।

धनेश गुरु का फल- व्यापारी वर्ग लाभ में रहे, सुख पावे। इस वर्ष लता, वृक्ष खूब फलें फूलें। खेती में पैदावार अच्छी रहे। धनवस्त्रादि से सम्पन्न मनुष्य सुख पावें। भौतिक विकास होता रहे।

गढ़पतिःशशिलांक्षनकोयदा नृपस्वराज्य विलासिता पौरजा।
बहुधनेछुज गोरस भोगिनो नरवरा नरवर्णित विग्रहाः।।

दुर्गेश चन्द्र का फल- राष्ट्रनायक अपने-अपने राज्यों की देखभाल करते रहें। पाश्चात्य देश तथा महानगरों में विलासिता के साथ-साथ फैशन खूब बढ़े। इस वर्ष स्त्रियों को विशेष अधिकार मिलें। गन्ना, गुड़, दूध, दही, घी आदि समयोचित मिलते रहें। किसी देश-प्रदेश में भारी विग्रह हो।

शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा।
तथापि सुखिनो लोका बहुसयार्घवृष्टयः।।

शोभन नामक सम्वत्सर में- धरा पर रोगोपद्रव अधिक होंगे। समयोचित वर्षा मौसम की अनुकूलता से खेती में पर्याप्त उन्नति होने तथा कल-कारखानों में उत्पादन बढ़ने से सुख का संचार होगा।

अर्घमहर्घतां याति धनं धान्यं समं भवेत्।
मघवावर्षतिस्वच्छं सम्पदो भाद्रवर्षके।।

भाद्रपद नामक वर्ष में- लगभग सभी वस्तुओं में तेजी होगी। मेघ पृथ्वी पर स्वच्छ जल की वर्षा करेंगे। धन-धान्यादि की पैदावार समान रहेगी। उपयोगी वस्तुएं मिलती रहेगी। जनमानस खुशहाल बनेगा। यह वर्ष मध्यम बीतेगा।

मेघनाम पुष्कर का फल- 'पुष्करे मंदवृष्टिःस्यात्'- वर्षमध्ये मन्दवृष्टि मध्यम दर्जे की रहेगी। कहीं वर्षाधिक्य तो कहीं अवर्षणवसात् क्षति होगी। कहीं खुशहाली भी बढ़ेगी। **रोहिणी का वास पर्वत पर होने का फल 'पर्वते विन्दुमात्रश्च'-** इस वर्ष वर्षा अनियमित होगी। जहाँ-तहाँ बिन्दुमात्र होने खड़ी फसलों में क्षति का कारण बनेगी। **सम्वत् का वासा कुम्हार के घर होने से 'अनावृष्टिःप्रजायतौ'-** जहाँ-तहाँ अनावृष्टि का संयोग दुःख का कारण बनेगा। अन्त्यजों के लिए यह वर्ष फायदे में रहेगा। ढ़लाई के माध्यम से बनने वाले सामान खूब तेज बिकेंगे।

सारांश

वर्षेश अर्थात् राजा का प्रभाव कश्मीर अफगानिस्तान में सर्वाधिक होता है, ऐसे ही मन्त्री का पूर्वीप्रदेश कलिंगादि में, सस्येश का ईशान व मध्यदेश में, धान्येश का नर्मदातट (मध्यप्रदेश) में, मेघेश का मगध (बिहार) में, रसेश का कोंकण और गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवादि में, फलेश का पश्चिमी भाग कश्मीरादि में तथा धनेश व दुर्गेश का फल सर्वत्र समान घटित होता है।

वर्ष के चार स्तम्भ

चैत्र शुदीएकम्- में रेवती का अभाव होने से जल का स्तम्भ सुदृढ़ नहीं है, अतः समयोचित वर्षा न होने से पैदावार कम होगी। पेयजल एवं विजली आपूर्ती को लेकर होहल्ला मचेगा। राज्य सरकारों में जल बंटवारे को लेकर संघर्ष होगा।

वैशाखशुक्ल प्रतिपदा- में भरणी न होने से तृण का स्तम्भ सही नहीं है। इस वर्ष पशुचारा घास-फूंस, फल, हरीसब्जियों की कमी रहेगी। महंगाई की मार से त्राहि-त्राहि मचेगी। चोरी छिपे उपयोगी वस्तुओं को दूसरे देशों में भेजा जायेगा।

ज्येष्ठशुदी एकम्- में मृगशिरा आ जाने से वायु का स्तंभ अर्धाधिक श्रेष्ठ है। सामान्य गति से बहती वायु सुहावनी लगेगी। किंवा आंधी-तूफान, बडम्बर के कारण क्षति होगी। पर्वतीय प्रदेशों में झन्झावात शीतलहर प्रभावित करेगी।

आषाढ़शुक्लप्रतिपदा- में पुनर्वसु नक्षत्र होने से अन्न का स्तम्भ सुदृढ़ बना है। इस वर्ष कृषि कार्यों में पर्याप्त उन्नति होगी। गेंहू, जौं, चना की उपज अच्छी रहेगी। आलू, गाजर, मूली, मूंगफली, शलगम, शकलकंद, पटसन, मक्का की पैदावार बढ़ेगी। पूर्वापेक्षा यह वर्ष सबके लिए अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के चार स्तम्भों में से केवल एक ही श्रेष्ठ है और वर्ष के चार आर्घमानों में से कोई भी अच्छा नहीं है, अतः ऐनकेन प्रकारेण कार्य तो चलेंगे, मगर रामभरोसे रहेंगे।

आर्घमान विचार

आखै तीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृत्तिका टारो।
मही माहि खलबली प्रकाशै, कहै भड्डरी साख विनाशै।

श्रीसम्वत् २०६७ में अक्षय तृतीया वाले दिन रोहिणी नक्षत्र का अभाव है। पौष की अमावस्या मंगलवार में मूल है ही नहीं। राखी वाले दिन श्रवण भी नहीं है। केवल कार्तिक की पूर्णिमा वाले दिन कृत्तिका नक्षत्र का कुछ अंश अवश्य है। भड्डरी के मत से यह वर्ष श्रेष्ठ नहीं, विश्व के किन्हीं भागों में युद्धोत्पाती षड्यन्त्र रचा जायेगा। कहीं आंधी-तूफान, भूकम्प, भूस्खलन, झन्झावात, प्राकृतिक आपदावसात् भारीक्षति होगी। इस वर्ष अस्त्र-शस्त्र तथा वाहन आपस में खूब टकरायेंगे।

नागफल- इस वर्ष द्वादश नागों में से नन्दसारी नामक दूसरा रहेगा। जिसका फल-

यस्मिन्वर्षे नागराजोनंदसार्यभिधानकः।
तस्मिन्वर्षे महावृष्टिं कुरुतेनन्दतेजनः॥

इस वर्ष वर्षा की अधिकता रहे। मनुष्य आनन्दानुभूति का अनुभव करें।

गुर्राफल- इस्लामी वर्ष १४३२ का राजा बुध विश्व के अनेक देशों में शान्ति के प्रयासों को बल प्रदान करेगा। फिरभी अधिकांश देश असुरक्षा की भावना से ग्रस्त रहेंगे। ता.७ दिसम्बर २०१० सायंकाल १७।२१ बजे नवीन चन्द्रोदय लग्न २ का निरीक्षण करने से पता चलता है कि इस्लामिक देश अराजकता की चपेट में अवश्य आयेंगे। आतंकवादी पिशाच ग्रसने की कुचेष्टा करेगा।

आर्द्राप्रवेश

भुवनभास्कर भगवान् सूर्यदेव का आर्द्रा में प्रवेश २२ जून २०१० ज्येष्ठ शुदी एकादशी मंगलवार के दिन १० बजे सिंह लग्न में होगा। 'दिवार्द्रांजलशोषकः' सूत्रानुसार इस वर्ष वर्षा की कमी रहेगी।

भानोर्वेशःपृथ्वीसूनोर्वरि रौद्रेधिष्ण्येचेत्सात्।
शस्त्रघातात्पृथ्वीशानां निःसदेहंमृत्युस्तर्हि॥

के अनुसार राजाओं में युद्ध हो, कोई नायक काल के गर्त में समा जाए तो आश्चर्य नहीं। आर्द्राप्रवेश की लग्न में युद्ध का देवता मंगल बैठा है, जिसे शनि-शुक्र का सहयोग मिल रहा है। ईसा मूसा को ठनेजू, घणी लडाई होय। विश्व तमासा देखता बीच करे न कोय॥

शनि की साढ़ेसाती और लघुकल्याणी ढैय्या विचार

संवत् २०६७ में शनि कन्या राशि एवं उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में गतिशील रहेगा। ३० मई को मार्गी होगा। ता.३१ अगस्त को हस्त में प्रवेश करेगा। नवम्बर में चौथे चरण में पहुँच जायेगा। ता.२७ जनवरी २०११ में वक्री हो जायेगा।

कन्या के शनि का राशिफल

मेष ६	मिथुन ४C	वृश्चिक ११	स्वर्णपादफल-संशय,प्रमाद व अवसाद हो, लाभकमरहे।मिथुन-वृश्चिक राशिवालोंको झन्झटों
वृष ५	कन्या १B	मकर ९	लौहपादफल-अच्छाहोने से विकासको बल मिले, कन्याराशि को तंगी का अहसास हो।
कर्क ३	तुला १२A	कुम्भ ८C	ताम्रपादफल- तुला-कुम्भ राशिवाले त्रस्तरहें। कर्क राशिवाले लाभके भागीदार बनें। खुशीहो।
सिंह २D	मीन ७	धनु १०	रजतपादफल- लाभोन्नति का सुनहरा अवसर मिले। मेहमान की खुशी हो, गृहखर्च भी बढ़े।

A-शिर पर चढ़ती साढ़ेसाती अशुभ। B-हृदय के बीच की ढैय्या नेष्ट । C-लघुकल्याणी ढैय्या शुभ नहीं। D- अनावश्यकभ्रमण श्रमाधिक्यसे क्षोभ॥

ग्रहदोष शान्त्यिर्थ दानोपाय- जिन्हें शनि की साढ़ेसाती से दिक्कत हो रही हो, उन्हें प्रतिदिन लौहवानयुक्त वर्तिका कड़वे तेल में डालकर सन्ध्यासमय पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। बन्दरों को गुड़-चना, भैंसे को उरद के आटे की रोटी खिलानी चाहिए। काले वस्त्र कम्बलादि, छायापात्र, तुलादान करने तथा जटायुक्त ११ कच्चे नारियल सिर के ऊपर से ग्यारह-ग्यारह बार उतारकर बहते पानी में प्रवाहित करने से बहुत लाभ होता है। भौतिक समृद्धि के साथ-साथ मान-सम्मान बढ़ता है। सुख-शान्ति मिलती है।

२ मई २०१० तक कुम्भ के गुरु का राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फलम्
मेष	आर्थिक लाभ हो
वृष	सुखोपभोग
मिथुन	अपयश क्षोभ
कर्क	अभिवृद्धि खेद
सिंह	सांसारिक सुख
कन्या	विकास को बल
तुला	भ्रम अपवाद
वृश्चिक	अवनतिकारक
धनु	लाभोन्नति सुख
मकर	यशोपलब्धि हो
कुम्भ	अवनति दुःख
मीन	हानि अपयश

२मई १० से अक्टू.तक मीनके गुरुका राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फलम्
मेष	आर्थिक लाभ
वृष	भय विषाद
मिथुन	अवनति दुःख
कर्क	आर्थिक लाभ
सिंह	विकास को बल
कन्या	गृहस्थी में झन्झट
तुला	अवनति कारक
वृश्चिक	भाग्य विकास
धनु	कार्य में सफलता
मकर	अवनति दुःख
कुम्भ	मध्यम फल
मीन	लाभालाभ समान

१नव.से ५ दिस.तक कुम्भ के गुरुका राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फलम्
मेष	अर्थप्रद रहे
वृष	अवनतिकारक
मिथुन	बौद्धिक विकास
कर्क	लाभालाभ समान
सिंह	विकास फल
कन्या	अतिनेष्ट दुःख
तुला	भाग्य विकास
वृश्चिक	सफलता दायक
धनु	अर्थलाभ हो
मकर	अतिनेष्ट दुःख
कुम्भ	मध्यम फल
मीन	आर्थिक लाभ

६दिसम्बर१० से आगे मीनके गुरुका राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फलम्
मेष	अवनति क्षोभ
वृष	आर्थिक लाभ
मिथुन	अवनति क्षोभ
कर्क	आर्थिक लाभ
सिंह	भय विषाद
कन्या	भौतिक विकास
तुला	अवनति कारक
वृश्चिक	अर्थलाभ हो
धनु	विफलता क्षोभ
मकर	कार्य का विकास
कुम्भ	मध्यम फल हो
मीन	आर्थिक लाभ

सूर्यादि ग्रहोंके निरयन राशि नक्षत्रप्रवेश, वक्री-मार्गी, उदयास्तादि विवरण सं. २०६७ (सन् २०१०-११)

सूर्य नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र	राशि	घं. मि.
१८	मार्च	उभा.		६।४८
३१	"	रेवती		१७।४०
१४	अप्रैल	अश्विनी	मेष	६।५६
२७	"	भरणी		२२।४६
११	मई	कृत्तिका		१६।५८
१४	"		वृष	२७।४६
२५	"	रोहिणी		१२।५८
८	जून	मृगशिर		११।००
१५	"		मिथुन	१०।२०
२२	"	आर्द्रा		१०।००
६	जुलाई	पुनर्वसु		९।३६
१६	"		कर्क	२१।१०
२०	"	पुष्य		९। २
३	अगस्त	श्लेषा		८।००
१६	"	मघा	सिंह	२९।३२
३०	"	पूफा.		२५।३७
१३	सित.	उफा.		१९।२४
१६	"		कन्या	२९।३०
२७	"	हस्त		१०।५९
१०	अक्टू.	चित्रा		२३।५२
१७	"		तुला	१७।२७
२४	"	स्वाती		१०।२७
६	नव.	विशाखा		१८।३७
१६	"		वृश्चि.	१७।१७
१९	"	अनुराधा		२४।४०
२	दिस.	ज्येष्ठा		२९। २
१६	"	मूल	धनु	७।५७
२९	"	पूषा.		१०।१८
११	जनवरी	उषा.		१२।१२
१४	"		मकर	१८।४२
२१	"	अभिजित्प्रवृत्तौ		७।५६
२४	"	श्रवण		१४।३४
२५	"	अभिजित्निवृत्तौ		११।३३
६	फरवरी	धनि.		१७।४०
१३	फर.		कुम्भ	७।४१
१९	"	शत.		२२।१३
४	मार्च	पूभा.		२८।३०
१४	"		मीन	२८।३२
१८	"	उभा.		१२।५५
३१	"	रेवती		२३।४५

मंगल राशि सञ्चार

ता.	मास		राशि	घं. मि.
२६	मई		सिंह	१६।००
२०	जुलाई		कन्या	६।३१
५	सित.		तुला	२७। ५
१९	अक्टू.		वृश्चिक	२६।२२
२९	नव.		धनु	३०।२४
८	जन.		मकर	२२। ३
१५	फर.		कुम्भ	१६।५०
२५	मार्च		मीन	१८।३८

बुध राशि सञ्चार

ता.	मास		राशि	घं. मि.
२९	मार्च		मेष	२८।४१
१८	अप्रैल	वक्री		९।४०
१२	मई	मार्गी		१४।२८
६	जून		वृष	१७। २
२२	"		मिथुन	२१।३०
६	जुलाई		कर्क	२१।३१
२३	"		सिंह	२२। ८
२१	अग.	वक्री		१२।१५
१३	सित.	मार्गी		६।१५
३०	"		कन्या	१०।५३
१७	अक्टू.		तुला	१२।५४
५	नव.		वृश्चि.	६।१७
२५	"		धनु	२८।००
१०	दिस.	वक्री		१७।४५
२३	"		वृश्चि.	८।१४
३०	"	मार्गी		१६।१०
७	जन.		धनु	२४।२६
३०	"		मकर	२९।५३
१८	फर.		कुम्भ	१७।३२
६	मार्च		मीन	२०।१९
२८	"		मेष	१९।३६
३१	"	वक्री		६।२२
२	अप्रैल		मीन	१०।१२

गुरु नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र	राशि	घं. मि.
१८	मार्च	पूभा.१		१०।२३
१	अप्रैल	पूभा.२		१४।४१
१६	"	पूभा.३		१०।३६
२	मई	पूभा.४	मीन	८।१०
२०	"	उभा.१		५।४५
११	जून	उभा.२		१६।३५
२३	जुलाई		वक्री	१८।१०
३	सित.	उभा.१		२१।४१
२९	"	पूभा.४		१३।५९
१	नव.	पूभा.३	कुम्भ	१३। ३
१९	"		मार्गी	२२।२०
६	दिस.	पूभा.४	मीन	९।१२
६	जन.	उभा.१		२१। ८
२६	"	उभा.२		१५।३६
११	फर.	उभा.३		३०।४६
२७	फर.	उभा.४		११। २
१३	मार्च	रेवती१		१९।४७
२७	"	रेवती२		१७।५९

शुक्र राशि सञ्चार

ता.	मास		राशि	घं. मि.
२६	मार्च		मेष	२६।३६
२०	अप्रैल		वृष	१२।३७
१५	मई		मिथुन	६।४३
९	जून		कर्क	११।४७
५	जुला.		सिंह	९।४८
१	अग.		कन्या	१५।५१
१	सित.		तुला	१२। ५
८	अक्टू.	वक्री		१२।४०
१९	नव.	मार्गी		७।१०
१	जन.		वृश्चिक	१६।४१
२९	जन.		धनु	२८। १
२४	फर.		मकर	३०।११
२२	मार्च		कुम्भ	१२।४१

शनि नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र		घं. मि.
२९	मार्च	उफा.३		२७।५
३०	मई		मार्गी	२३।४०
२९	जुला.	उफा.४		१७।३२
३१	अग.	हस्त१		६।५०
२७	सित.	हस्त२		२४।३४
२५	अक्टू.	हस्त३		८।५४
२४	नव.	हस्त४		२९।३०
२७	जन.		वक्री	७।२०

राहु केतु नक्षत्रराशि सञ्चार

ता.	मास	राहु	केतु	घं. मि.
२२	मार्च	पूषा.३	पुन.१	२२।१८
२४	मई	पूषा.२	आर्द्रा४	२०।३६
२६	जुला.	पूषा.१	आर्द्रा३	१७।४६
२७	सित.	मूल४	आर्द्रा२	२४।५४
२९	नव.	मूल३	आर्द्रा१	२२।३९
३१	जन.	मूल२	मृग.४	२०।३८

हर्षल नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र		घं. मि.
३०	मार्च	उभा.१		२८।१०
५	जुला.		वक्री	२२।२०
२५	अक्टू.	पूभा.४		२८।४५
६	दिस.		मार्गी	७।३०
१५	जन.	उभा.१		१४।१०
२४	मार्च	उभा.२		५।३१

नेपच्यून नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र		घं. मि.
१९	मार्च	धनि.४		११।१०
१	जून		वक्री	५।४०
१८	अग.	धनि.३		२२।४४
७	नव.		मार्गी	११।३४
२०	जन.	धनि.४		११।४४

प्लूटो नक्षत्र सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र		घं. मि.
७	अप्रैल		वक्री	८। २
२९	जून	मूल३		२८।१०
१४	सित.		मार्गी	१०। ४
२४	नव.	मूल४		१७।३०
१५	मार्च	पूषा.१		७।४५

मंगल उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
२७	नव.	अस्त	पश्चि.	१६।२०
२५	अप्रैल	उदय	पूर्व	६।१०

बुध उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
२७	मार्च	उदय	पश्चि.	१७।३०
२०	अप्रैल	अस्त	पश्चि.	६।१५
७	मई	उदय	पूर्व.	१२।५५
१७	जून	अस्त	पूर्व	१६।२७
१०	जुला.	उदय	पश्चि.	७।३४
२७	अग.	अस्त	पश्चि.	२०।३७
१०	सित.	उदय	पूर्व	२२।२७
३०	"	अस्त	पूर्व	१०।४५
७	नव.	उदय	पश्चि.	२४।१०
१४	दिस.	अस्त	पश्चि.	७।४०
२५	"	उदय	पूर्व	१६।४०
७	फर.	अस्त	पूर्व	७।१५
११	मार्च	उदय	पश्चि.	२०।३३
१	अप्रैल	अस्त	पश्चि.	२४।२३

गुरु उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
२०	मार्च	उदय	पूर्व	१४।५०
२७	मार्च	अस्त	पश्चि.	२२।१५

शुक्र उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
२१	अक्टू.	अस्त	पश्चि.	२५। ७
३	नव.	उदय	पूर्व	२६।३७

शनि उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
१६	सित.	अस्त	पश्चि.	१५।५४
१९	अक्टू.	उदय	पूर्व	२१।९

☆ दैनिक ग्रह स्पष्ट ☆

ग्रहस्पष्ट करने की विधि- जिस समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, उक्त समय में से ५ घं. ३० मि. घटा दें, शेष घं. मि. चालन धन होगा। चालन तुल्य लाघवाङ्क कोष्ठक (पृष्ठ ९१-९२) से लाघवाङ्क दशमलव सहित प्राप्त करें। पुनः ग्रहगति के अनुसार लाघवाङ्क लेकर पूर्व प्राप्त लाघवाङ्क में जोड़ दें। कुल योग को लाघवाङ्क कोष्ठक में देखें। जहाँ समानांक मिलें, उनके ऊपर कला तथा बाईं ओर विकला अथवा (अंश कलादि) प्राप्त फल को प्रातःकालीन स्पष्ट ग्रह में जोड़ने पर तत्कालीन ग्रह स्पष्ट हो जायेगा। यदि वक्री ग्रह हो तो उक्त फल घटाना चाहिए। गतिसाधनसूत्र- दिनद्वयग्रहान्तरं पूर्वदिने स्पष्टस्य सूक्ष्म गतिः।

उदाहरण- २६ मार्च २०१० रात्रि में २।३६ बजे शुक्र स्पष्ट करना है, तो २६।३६ में से ५।३० घटाने पर २१ घं. ६ मि. चालन धन हुआ। चालन तुल्य लाघवाङ्क कोष्ठक पृ.९१ से .०५५९ अंक प्राप्त किए। ता.२७ मार्च शुक्र स्पष्ट ०।०।९।१९ में से ता.२६ मार्च के शुक्र स्पष्ट ११।२८।५५।१० को घटाया तो १ अं.१४ क. ९ वि. गति प्राप्त हुई, जिसके अनुसार अनुपात से लाघवाङ्क १.२८८५ लेकर पूर्व प्राप्त लाघवाङ्क .०५५९ में जोड़ दिया। यथा १.२८८५ + .०५५९ = १.३४४४ हुए, जिन्हें पुनः लाघवाङ्क कोष्ठक में देखा अनुपातेन अंशादि फल १।४।४९ मिला, जिसे ता.२६ मार्च प्रातः ५।३० बजे के शुक्र स्पष्ट ११।२८।५५।१० में जोड़ा तो शुक्रवार की रात्रि २६।३६ बजे पर शुक्र स्पष्ट ११।२९।५९।५९ हुआ। अर्थात् उक्त समय शुक्र मेष राशि में प्रवेश करने वाला है।

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
मार्च सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।१३, वेंकटेश (प्लूटो) ८।११।३।२१															
१६	११। १।१७।१५	११। २।४०। १	३। ६।२७।३४	११। २।४०।४३	१०।१९।२८।३५	११।१६।३१।५७	५। ७।४५।२५	८।२३।४१।१९	११। २।२९।४२	१०। ३।१३।३४	१।५४	६।२२	१९। २	११।३३। २	१६
१७	११। २।१७। १	११।१४।५५।२९	३। ६।३२।४१	११। ४।३९।१५	१०।१९।४२।५५	११।१७।४६।२५	५। ७।४०।४३	८।२३।३८। ८	११। २।३३। ८	१०। ३।१५।३७	१।३१	६।५३	१९।५६	११।३६।५९	१७
१८	११। ३।१६।४६	११।२७।२०।५८	३। ६।३६।२९	११। ६।३८।२९	१०।१९।५७।१४	११।१९। ०।५१	५। ७।३६। १	८।२३।३४।५७	११। २।३६।३३	१०। ३।१७।४०	१। ७	७।२६	२०।५२	११।४०।५५	१८
१९	११। ४।१६।२८	०। ९।५७। ०	३। ६।४१।५७	११। ८।३८।१४	१०।२०।११।३२	११।२०।१५।१५	५। ७।३१।१८	८।२३।३१।४६	११। २।३९।५९	१०। ३।१९।४१	०।४३	८। २	२१।५०	११।४४।५२	१९
२०	११। ५।१६। ९	०।२२।४४।१५	३। ६।४८। ४	११।१०।३८।२३	१०।२०।२५।४८	११।२१।२९।३७	५। ७।२६।३५	८।२३।२८।३६	११। २।४३।२५	१०। ३।२१।४२	०।२०	८।४३	२२।५०	११।४८।४८	२०
२१	११। ६।१५।४६	१। ५।४३।४५	३। ६।५४।५०	११।१२।३८।४३	१०।२०।४०। २	११।२२।४३।५८	५। ७।२१।५१	८।२३।२५।२५	११। २।४६।५०	१०। ३।२३।४२	+। ४	९।३०	२३।५०	११।५२।४५	२१
२२	११। ७।१५।२२	१।१८।५६।५३	३। ७। २।१४	११।१४।३९। ३	१०।२०।५४।१५	११।२३।५८।१६	५। ७।१७। ७	८।२३।२२।१४	११। २।५०।१६	१०। ३।२५।४०	०।२८	१०।२३	-। -	११।५६।४१	२२
२३	११। ८।१४।५५	२। २।२५।२४	३। ७।१०।१५	११।१६।३९। ५	१०।२१। ८।२६	११।२५।१२।३३	५। ७।१२।२४	८।२३।१९। ३	११। २।५३।४१	१०। ३।२७।३८	०।५१	११।२३	०।४९	१२। ०।३८	२३
२४	११। ९।१४।२७	२।१६।१०।५९	३। ७।१८।५२	११।१८।३८।३३	१०।२१।२२।३६	११।२६।२६।४७	५। ७। ७।४०	८।२३।१५।५२	११। २।५७। ६	१०। ३।२९।३५	१।१५	१२।२७	१।४४	१२। ४।३४	२४
२५	११।१०।१३।५५	३। ०।१४।४६	३। ७।२८। ५	११।२०।३७। ८	१०।२१।३६।४४	११।२७।४१। ०	५। ७। २।५७	८।२३।१२।४२	११। ३। ०।३१	१०। ३।३१।२९	१।३९	१३।३४	२।३४	१२। ८।३१	२५
२६	११।११।१३।२२	३।१४।३६।३६	३। ७।३७।५३	११।२२।३४।२९	१०।२१।५०।४९	११।२८।५५।१०	५। ६।५८।१५	८।२३। ९।३१	११। ३। ३।५५	१०। ३।३३।२४	२। २	१४।४१	३।२०	१२।१२।२८	२६
२७	११।१२।१२।४६	३।२९।१४।२३	३। ७।४८।१५	११।२४।३०।१४	१०।२२। ४।५३	०। ०। ९।१९	५। ६।५३।३२	८।२३। ६।२०	११। ३। ७।१९	१०। ३।३५।१७	२।२६	१५।४८	४। २	१२।१६।२४	२७
२८	११।१३।१२। ८	४।१४। ३।३४	३। ७।५९।१०	११।२६।२३।५७	१०।२२।१८।५५	०। १।२३।२५	५। ६।४८।५१	८।२३। ३। ९	११। ३।१०।४३	१०। ३।३७। ९	२।४९	१६।५४	४।४१	१२।२०।२१	२८
२९	११।१४।११।२८	४।२८।५७।१४	३। ८।१०।३८	११।२८।१५।१६	१०।२२।३२।५४	०। २।३७।२९	५। ६।४४।११	८।२२।५९।५८	११। ३।१४। ६	१०। ३।३९। ०	३।१३	१७।५९	५।१८	१२।२४।१७	२९
३०	११।१५।१०।४५	५।१३।४६।१५	३। ८।२२।३७	०। ०। ३।४५	१०।२२।४६।५२	०। ३।५१।३१	५। ६।३९।३२	८।२२।५६।४८	११। ३।१७।२८	१०। ३।४०।४९	३।३६	१९। ५	५।५६	१२।२८।१४	३०
३१	११।१६।१०। १	५।२८।२३।३९	३। ८।३५। ६	०। १।४८।५९	१०।२३। ०।४७	०। ५। ५।३१	५। ६।३४।५४	८।२२।५३।३७	११। ३।२०।५०	१०। ३।४२।३९	३।५९	२०।१०	६।३५	१२।३२।१०	३१
अप्रैल सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।१६, वेंकटेश (प्लूटो) ८।११।२४।२३															
१	११।१७। ९।१३	६।१२।४०। ६	३। ८।४८। १	०। ३।३०।३६	१०।२३।१४।४०	०। ६।१९।२९	५। ६।३०।१७	८।२२।५०।२६	११। ३।२४।१२	१०। ३।४४।२६	४।२३	२१।१५	७।१७	१२।३६। ७	१
२	११।१८। ८।२५	६।२६।३३।१२	३। ९। १।४०	०। ५। ८।१२	१०।२३।२८।३०	०। ७।३३।२५	५। ६।२५।४२	८।२२।४७।१५	११। ३।२७।३३	१०। ३।४६।१२	४।४६	२२।१८	८। ३	१२।४०। ३	२
३	११।१९। ७।३५	७। ९।५४।५१	३। ९।१५।४०	०। ६।४१।२४	१०।२३।४२।१८	०। ८।४७।१८	५। ६।२१। ८	८।२२।४४। ४	११। ३।३०।५३	१०। ३।४७।५७	५। ९	२३।१७	८।५३	१२।४४। ०	३
४	११।२०। ६।४३	७।२२।५१।४४	३। ९।३०।१०	०। ८। ९।५४	१०।२३।५६। ४	०।१०। १।१०	५। ६।१६।३६	८।२२।४०।५४	११। ३।३४।१२	१०। ३।४९।४०	५।३२	-। -	९।४६	१२।४७।५७	४
५	११।२१। ५।४९	८। ५।२४।४८	३। ९।४५। ६	०। ९।३३।१२	१०।२४। ९।४७	०।११।१५। ०	५। ६।१२। ७	८।२२।३७।४३	११। ३।३७।३१	१०। ३।५१।२२	५।५५	०।१०	१०।४१	१२।५१।५३	५
६	११।२२। ४।५४	८।१७।३८।२७	३।१०। ०।३०	०।१०।५१।३३	१०।२४।२३।२७	०।१२।२८।४८	५। ६। ७।३९	८।२२।३४।३२	११। ३।४०।४९	१०। ३।५३। २	६।१८	०।५८	११।३६	१२।५५।५०	६
७	११।२३। ३।५७	८।२९।३७।५७	३।१०।१६।२२	०।१२। ४।१२	१०।२४।३७। ५	०।१३।४२।३४	५। ६। ३।१३	८।२२।३१।२१	११। ३।४४। ७	१०। ३।५४।४२	६।४०	१।४१	१२।३१	१२।५९।४६	७
८	११।२४। २।५८	९।११।२८।५१	३।१०।३२।३१	०।१३।११। ६	१०।२४।५०।४०	०।१४।५६।१८	५। ५।५८।५०	८।२२।२८।१०	११। ३।४७।२३	१०। ३।५६।२०	७। ३	२।१८	१३।२५	१३। ३।४३	८
९	११।२५। १।५७	९।२३।१६।३३	३।१०।४९।२३	०।१४।१२। ४	१०।२५। ४।१२	०।१६।१०। ०	५। ५।५४।२९	८।२२।२५। ०	११। ३।५०।३९	१०। ३।५७।५६	७।२५	२।५२	१४।१८	१३। ७।३९	९
१०	११।२६। ०।५४	१०। ५। ५।५८	३।११। ६।३१	०।१५। ६।५६	१०।२५।१७।४१	०।१७।२३।४०	५। ५।५०।११	८।२२।२१।४९	११। ३।५३।५३	१०। ३।५९।३१	७।४७	३।२३	१५।१०	१३।११।३६	१०
११	११।२६।५९।४९	१०।१७। १।२०	३।११।२४। ५	०।१५।५५।३५	१०।२५।३१। ७	०।१८।३७।१८	५। ५।४५।५६	८।२२।१८।३८	११। ३।५७। ६	१०। ४। १। ४	८। ९	३।५३	१६। २	१३।१५।३२	११

अप्रैल सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।१६, वेंकटेश (प्लूटो) ८।११।२४।२३

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि (व.) रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति उ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१२	११।२७।५८।४२	१०।२९।६।२	३।११।४२।३	०।१६।३७।५६	१०।२५।४४।२९	०।१९।५०।५३	५।५।४१।४४	८।२२।१५।२७	११।४।०।११	१०।४।२।३६	८।३२	४।२३	१६।५४	१३।१९।२१	१२
१३	११।२८।५७।३४	११।११।१२।२१	३।१२।०।२५	०।१७।१३।५३	१०।२५।५७।४९	०।२१।४।२७	५।५।३७।३४	८।२२।१२।१६	११।४।३।३१	१०।४।४।७	८।५४	४।५४	१७।४८	१३।२३।२६	१३
१४	११।२९।५६।२४	११।२३।५१।३४	३।१२।१९।१०	०।१७।४३।२४	१०।२६।११।५	०।२२।१७।५९	५।५।३३।२८	८।२२।९।६	११।४।६।४१	१०।४।५।३६	९।१५	५।२६	१८।४४	१३।२७।२२	१४
१५	०।०।५५।१२	०।६।३३।५९	३।१२।३८।१९	०।१८।६।२९	१०।२६।२४।१६	०।२३।३१।२८	५।५।२९।२५	८।२२।५।५५	११।४।९।५०	१०।४।७।३	९।३७	६।२	१९।४३	१३।३१।१९	१५
१६	०।१।५३।५८	०।१९।२९।१०	३।१२।५७।४१	०।१८।२३।९	१०।२६।३७।२५	०।२४।४४।५५	५।५।२५।२५	८।२२।२।४४	११।४।१२।५९	१०।४।८।२९	९।५८	६।४२	२०।४३	१३।३५।१५	१६
१७	०।२।५२।४२	१।२।३६।१६	३।१३।१७।४२	०।१८।३३।२८	१०।२६।५०।३१	०।२५।५८।२०	५।५।२१।२९	८।२१।५९।३३	११।४।१६।६	१०।४।९।५३	१०।२०	७।२८	२१।४४	१३।३९।१२	१७
१८	०।३।५१।२४	१।१५।५४।२६	३।१३।३७।५६	०।१८।३७।३४	१०।२७।३।३२	०।२७।११।४२	५।५।१७।३७	८।२१।५६।२२	११।४।१९।११	१०।४।११।१५	१०।४१	८।२०	२२।४४	१३।४३।८	१८
१९	०।४।५०।४	१।२९।२३।१	३।१३।५८।३१	०।१८।३५।३७	१०।२७।१६।३०	०।२८।२५।२	५।५।१३।४९	८।२१।५३।१२	११।४।२२।१६	१०।४।१२।३६	११।२	९।१८	२३।४०	१३।४७।५	१९
२०	०।५।४८।४१	२।१३।१।४९	३।१४।१९।२६	०।१८।२७।५०	१०।२७।२९।२४	०।२९।३८।२०	५।५।१०।४	८।२१।५०।१	११।४।२५।१९	१०।४।१३।५५	११।२२	१०।२०	-।-	१३।५१।१	२०
२१	०।६।४७।१६	२।२६।५१।०	३।१४।४०।४२	०।१८।१४।३०	१०।२७।४२।१५	१।०।५१।३५	५।५।६।२४	८।२१।४६।५०	११।४।२८।२१	१०।४।१५।१३	११।४३	११।२५	०।३१	१३।५४।५८	२१
२२	०।७।४५।४९	३।१०।५०।४६	३।१५।२।१७	०।१७।५६।०	१०।२७।५५।१	१।२।४।४८	५।५।२।४८	८।२१।४३।३९	११।४।३१।२१	१०।४।१६।२९	१२।३	१२।३०	१।१७	१३।५८।५५	२२
२३	०।८।४४।२०	३।२५।०।५३	३।१५।२४।११	०।१७।३२।४५	१०।२८।७।४३	१।३।१७।५७	५।४।५९।१६	८।२१।४०।२८	११।४।३४।२०	१०।४।१७।४३	१२।२३	१३।३५	१।५९	१४।२।५१	२३
२४	०।९।४२।४९	४।९।२०।७	३।१५।४६।२३	०।१७।५।१५	१०।२८।२०।२०	१।४।३१।५	५।४।५५।४८	८।२१।३७।१८	११।४।३७।१८	१०।४।१८।५५	१२।४३	१४।३९	२।३७	१४।६।४८	२४
२५	०।१०।४१।१५	४।२३।४५।४९	३।१६।८।५४	०।१६।३४।२	१०।२८।३२।५४	१।५।४४।९	५।४।५२।२५	८।२१।३४।७	११।४।४०।१४	१०।४।२०।६	१३।३	१५।४३	३।१४	१४।१०।४४	२५
२६	०।११।३९।३९	५।८।१३।४२	३।१६।३१।४२	०।१५।५९।४४	१०।२८।४५।२३	१।६।५७।११	५।४।४९।७	८।२१।३०।५६	११।४।४३।८	१०।४।२१।१५	१३।२३	१६।४६	३।५१	१४।१४।४१	२६
२७	०।१२।३८।२	५।२२।३८।०	३।१६।५४।४७	०।१५।२३।१	१०।२८।५७।४८	१।८।१०।१०	५।४।४५।५३	८।२१।२७।४५	११।४।४६।१	१०।४।२२।२२	१३।४२	१७।५१	४।२९	१४।१८।३७	२७
२८	०।१३।३६।२२	६।६।५२।५९	३।१७।१८।९	०।१४।४४।३५	१०।२९।१०।८	१।९।२३।६	५।४।४२।४४	८।२१।२४।३४	११।४।४८।५२	१०।४।२३।२७	१४।१	१८।५५	५।९	१४।२२।३४	२८
२९	०।१४।३४।४१	६।२०।५२।२१	३।१७।४१।४७	०।१४।५।१०	१०।२९।२२।२४	१।१०।३५।५९	५।४।३९।३९	८।२१।२१।२४	११।४।५१।४२	१०।४।२४।३१	१४।२०	१९।५९	५।५३	१४।२६।३०	२९
३०	०।१५।३२।५८	७।४।३३।४८	३।१८।५।४२	०।१३।२५।२८	१०।२९।३४।३५	१।११।४८।५०	५।४।३६।४०	८।२१।१८।१३	११।४।५४।३०	१०।४।२५।३३	१४।३९	२१।१	६।४१	१४।३०।२७	३०

मई सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।१९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।११।१६।१०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	०।१६।३१।१२	७।१७।४८।४८	३।१८।२९।५२	०।१२।४६।१२	१०।२९।४६।४२	१।१३।१।३९	५।४।३३।४५	८।२१।१५।२	११।४।५७।१६	१०।४।२६।३३	१४।५७	२१।५८	७।३४	१४।३४।२४	१
२	०।१७।२९।२५	८।०।४३।२	३।१८।५४।१८	०।१२।८।५	१०।२९।५८।४३	१।१४।१४।२४	५।४।३०।५५	८।२१।११।५८	११।५।०।१	१०।४।२७।३१	१५।१५	२२।५०	८।२९	१४।३८।२०	२
३	०।१८।२७।३७	८।१३।१६।८	३।१९।१८।५९	०।११।३१।४५	११।०।१०।४०	१।१५।२७।७	५।४।२८।१०	८।२१।८।४०	११।५।२।४४	१०।४।२८।२७	१५।३३	२३।३५	९।२५	१४।४२।१७	३
४	०।१९।२५।४८	८।२५।३१।२१	३।१९।४३।५५	०।१०।५७।४६	११।०।२२।३२	१।१६।३९।४८	५।४।२५।३१	८।२१।५।३०	११।५।५।२५	१०।४।२९।२२	१५।५१	-।-	१०।२१	१४।४६।१३	४
५	०।२०।२३।५७	९।७।३३।०	३।२०।९।६	०।१०।२६।४०	११।०।३४।२०	१।१७।५२।२५	५।४।२२।५७	८।२१।२।१९	११।५।८।४	१०।४।३०।१५	१६।८	०।१५	११।१६	१४।५०।१०	५
६	०।२१।२२।५	९।१९।२६।७	३।२०।३४।३२	०।९।५८।५६	११।०।४६।२	१।१९।५।१	५।४।२०।२७	८।२०।५९।८	११।५।१०।४२	१०।४।३१।६	१६।२५	०।५०	१२।९	१४।५४।६	६
७	०।२२।२०।११	१०।१।१६।०	३।२१।०।११	०।९।३४।५५	११।०।५७।३८	१।२०।१७।३३	५।४।१८।४	८।२०।५५।५७	११।५।१३।१७	१०।४।३१।५४	१६।४१	१।२३	१३।१	१४।५८।३	७
८	०।२३।१८।१५	१०।१३।७।५०	३।२१।२६।४	०।९।१४।५६	११।१।९।१०	१।२१।३०।३	५।४।१५।४६	८।२०।५२।४६	११।५।१५।५१	१०।४।३२।४१	१६।५८	१।५३	१३।५३	१५।१।५९	८
९	०।२४।१६।१८	१०।२५।६।३१	३।२१।५२।११	०।८।५९।२४	११।१।२०।३६	१।२२।४२।३०	५।४।१३।३३	८।२०।४९।३६	११।५।१८।२२	१०।४।३३।२६	१७।१५	२।२३	१४।४५	१५।५।५६	९
१०	०।२५।१४।२०	११।७।१६।१२	३।२२।१८।३१	०।८।४७।५९	११।१।३१।५६	१।२३।५४।५५	५।४।११।२६	८।२०।४६।२५	११।५।२०।५३	१०।४।३४।९	१७।३१	२।५३	१५।३८	१५।९।५३	१०
११	०।२६।१२।२०	११।१९।४०।१०	३।२२।४५।५	०।८।४१।१८	११।१।४३।१०	१।२५।७।१६	५।४।९।२४	८।२०।४३।१४	११।५।२३।२१	१०।४।३४।५१	१७।४६	३।२४	१६।३३	१५।१३।४९	११
१२	०।२७।१०।१९	०।२।२०।३१	३।२३।११।५०	०।८।३९।१६	११।१।५४।१९	१।२६।१९।३५	५।४।७।२८	८।२०।४०।३	११।५।२५।४६	१०।४।३५।३०	१८।२	३।५९	१७।३१	१५।१७।४६	१२
१३	०।२८।८।१६	०।१५।१८।३	३।२३।३८।४९	०।८।४१।५३	११।२।५।२२	१।२७।३१।५२	५।४।५।३८	८।२०।३६।५२	११।५।२८।१०	१०।४।३६।८	१८।१७	४।३८	१८।३१	१५।२१।४२	१३
१४	०।२९।६।१२	०।२८।३२।२०	३।२४।६।१	०।८।४९।१	११।२।१६।२०	१।२८।४४।६	५।४।३।५४	८।२०।३३।४२	११।५।३०।३१	१०।४।३६।४३	१८।३१	५।२२	१९।३३	१५।२५।३९	१४
१५	१।०।४।७	१।१२।२।४६	३।२४।३३।२४	०।९।१।०	११।२।२७।११	१।२९।५६।१६	५।४।२।१४	८।२०।३०।३१	११।५।३२।५०	१०।४।३७।१७	१८।४६	६।१३	२०।३५	१५।२९।३५	१५
१६	१।१।२।०	१।२५।४३।५८	३।२५।१।०	०।९।१७।२२	११।२।३७।५६	२।१।८।२३	५।४।०।४१	८।२०।२७।२०	११।५।३५।७	१०।४।३७।४८	१९।०	७।१०	२१।३४	१५।३३।३२	१६
१७	१।१।५९।५२	२।९।३६।१७	३।२५।२८।४८	०।९।३८।९	११।२।४८।३४	२।२।२०।२७	५।३।५९।१५	८।२०।२४।९	११।५।३७।२२	१०।४।३८।१८	१९।१४	८।१३	२२।२८	१५।३७।२८	१७
१८	१।२।५७।४२	२।२३।३६।७	३।२५।५६।४८	०।१०।३।१५	११।२।५९।७	२।३।३२।२९	५।३।५७।५४	८।२०।२०।५८	११।५।३९।३४	१०।४।३८।४६	१९।२७	९।१८	२३।१६	१५।४१।२५	१८
१९	१।३।५५।३०	३।७।४१।२२	३।२६।२४।५८	०।१०।३२।३४	११।३।९।३२	२।४।४४।२६	५।३।५६।३९	८।२०।१७।४८	११।५।४१।४५	१०।४।३९।१२	१९।४१	१०।२४	२३।५९	१५।४५।२२	१९
२०	१।४।५३।१६	३।२१।४९।४०	३।२६।५३।२०	०।११।५।५७	११।३।१९।५२	२।५।५६।२१	५।३।५५।३०	८।२०।१४।३७	११।५।४३।५३	१०।४।३९।३६	१९।५३	११।२९	-।-	१५।४९।१८	२०
२१	१।५।५१।१	४।५।५३।५७	३।२७।२१।५३	०।११।४३।१७	११।३।३०।४	२।७।८।१२	५।३।५४।२८	८।२०।११।२६	११।५।४५।५८	१०।४।३९।५७	२०।६	१२।३२	०।३८	१५।५३।१५	२१

मई सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।१९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।११।१६।१०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
२२	१।६।४८।४४	४।२०।१०।२७	३।२७।५०।३६	०।१२।४२।२८	११।३।४०।११	२।८।२०।०	५।३।५३।३१	८।२०।८।२५	११।५।४८।२	१०।४।४०।१६	२०।१८	१३।३४	१।१५	१५।५७।११	२२
२३	१।७।४६।२६	५।४।१९।१२	३।२८।१९।२९	०।१३।९।२२	११।३।५०।१०	२।९।३१।४३	५।३।५२।४१	८।२०।५।४	११।५।५०।३	१०।४।४०।३४	२०।३०	१४।३६	१।५१	१६।१।८	२३
२४	१।८।४४।६	५।१८।२३।४८	३।२८।४८।३३	०।१३।५७।५३	११।४।०।३	२।१०।४३।२४	५।३।५१।५६	८।२०।१।५४	११।५।५२।१	१०।४।४०।५०	२०।४१	१५।३९	२।२७	१६।५।४	२४
२५	१।९।४१।४४	६।२।२२।१९	३।२९।१७।४६	०।१४।४९।५३	११।४।९।४८	२।११।५५।०	५।३।५१।१७	८।१९।५८।४३	११।५।५३।५७	१०।४।४१।४	२०।५२	१६।४२	३।५	१६।९।१	२५
२६	१।१०।३९।२१	६।१६।८।३४	३।२९।४७।९	०।१५।४५।१७	११।४।१९।२७	२।१३।६।३३	५।३।५०।४५	८।१९।५५।३२	११।५।५५।५१	१०।४।४१।१६	२१।३	१७।४५	३।४७	१६।१२।५७	२६
२७	१।११।३६।५६	६।२९।४२।३३	४।०।१६।४२	०।१६।४३।५१	११।४।२८।५९	२।१४।१८।२	५।३।५०।१९	८।१९।५२।२१	११।५।५७।४२	१०।४।४१।२६	२१।१३	१८।४७	४।३२	१६।१६।५४	२७
२८	१।१२।३४।३०	७।१३।०।४५	४।०।४६।२४	०।१७।४५।५४	११।४।३८।२३	२।१५।२९।२८	५।३।४९।५९	८।१९।४९।१०	११।५।५९।३१	१०।४।४१।३४	२१।२३	१९।४६	५।२३	१६।२०।५१	२८
२९	१।१३।३२।४	७।२६।१।४१	४।१।१६।१५	०।१८।५०।५६	११।४।४७।४०	२।१६।४०।४९	५।३।४९।४५	८।१९।४६।०	११।६।१।१८	१०।४।४१।४१	२१।३३	२०।४०	६।१७	१६।२४।४७	२९
३०	१।१४।२९।३६	८।८।४५।३	४।१।४६।१५	०।१९।५९।१	११।४।५६।५०	२।१७।५२।७	५।३।४९।३७	८।१९।४२।४९	११।६।३।१	१०।४।४१।४५	२१।४२	२१।२८	७।१३	१६।२८।४४	३०
३१	१।१५।२७।८	८।२१।११।४९	४।२।१६।२५	०।२१।१०।६	११।५।५।५३	२।१९।३।२१	५।३।४९।३७	८।१९।३९।३८	११।६।४।४३	१०।४।४१।४७	२१।५१	२२।११	८।१०	१६।३२।४०	३१

जून सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।२४, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।१०।४२।५४

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	१।१६।२४।३८	९।३।२४।७	४।२।४६।४३	०।२२।२४।६	११।५।१४।४८	२।२०।१४।३२	५।३।४९।३९	८।१९।३६।२७	११।६।६।२२	१०।४।४१।४८	२२।०	२२।४८	९।६	१६।३६।३७	१
२	१।१७।२२।७	९।१५।२५।१०	४।३।१७।९	०।२३।४०।५९	११।५।२३।३५	२।२१।२५।३८	५।३।४९।५०	८।१९।३३।१६	११।६।७।५८	१०।४।४१।४६	२२।८	२३।२२	१०।१	१६।४०।३३	२
३	१।१८।१९।३५	९।२७।१८।५५	४।३।४७।५५	०।२५।०।४२	११।५।३२।१४	२।२२।३६।४१	५।३।५०।६	८।१९।३०।६	११।६।९।३१	१०।४।४१।४३	२२।१५	२३।५३	१०।५३	१६।४४।३०	३
४	१।१९।१७।३	१०।९।९।५२	४।४।१८।२९	०।२६।२३।१४	११।५।४०।४६	२।२३।४७।३९	५।३।५०।२९	८।१९।२६।५५	११।६।११।३	१०।४।४१।३७	२२।२३	-।-	११।४४	१६।४८।२६	४
५	१।२०।१४।३०	१०।२१।२।५०	४।४।४९।२२	०।२७।४८।३१	११।५।४९।९	२।२४।५८।३४	५।३।५०।५८	८।१९।२३।४४	११।६।१२।३१	१०।४।४१।३०	२२।३०	०।२२	१२।३६	१६।५२।२३	५
६	१।२१।११।५७	११।३।२।४१	४।५।२०।२२	०।२९।१६।३२	११।५।५७।२५	२।२६।९।२५	५।३।५१।३३	८।१९।२०।३३	११।६।१३।५७	१०।४।४१।२०	२२।३६	०।५२	१३।२७	१६।५६।२०	६
७	१।२२।९।२२	११।१५।१४।२	४।५।५१।३१	१।०।४७।१७	११।६।५।३२	२।२७।२०।१२	५।३।५२।१४	८।१९।१७।२२	११।६।१५।२०	१०।४।४१।९	२२।४३	१।२२	१४।२१	१७।०।१६	७
८	१।२३।६।४७	११।२७।४१।०	४।६।२२।४८	१।२।२०।४४	११।६।१३।३१	२।२८।३०।५४	५।३।५३।१	८।१९।१४।१२	११।६।१६।४०	१०।४।४०।५६	२२।४८	१।५५	१५।१७	१७।४।१३	८
९	१।२४।४।११	०।१०।२६।४५	४।६।५४।१३	१।३।५६।५२	११।६।२१।२१	२।२९।४१।३३	५।३।५३।५४	८।१९।११।१	११।६।१७।५७	१०।४।४०।४१	२२।५४	२।३१	१६।१६	१७।८।९	९
१०	१।२५।१।३५	०।२३।३३।१६	४।७।२५।४६	१।५।३५।४०	११।६।२९।२	३।०।५२।७	५।३।५४।५३	८।१९।७।५०	११।६।१९।१२	१०।४।४०।२४	२२।५९	३।१३	१७।१७	१७।१२।६	१०
११	१।२५।५८।५९	१।७।१।०	४।७।५७।२७	१।७।१७।८	११।६।३६।३६	३।२।२।३७	५।३।५५।५९	८।१९।४।३९	११।६।२०।२४	१०।४।४०।५	२३।३	४।१	१८।२०	१७।१६।२	११
१२	१।२६।५६।२१	१।२०।४८।४४	४।८।२९।१६	१।९।१।१४	११।६।४४।०	३।३।१३।३	५।३।५७।१०	८।१९।१।२८	११।६।२१।३४	१०।४।३९।४४	२३।७	४।५७	१९।२१	१७।१९।५९	१२
१३	१।२७।५३।४३	२।४।५३।३८	४।९।१।१२	१।१०।४७।५५	११।६।५१।१६	३।४।२३।२४	५।३।५८।२८	८।१८।५८।१८	११।६।२२।४०	१०।४।३९।२१	२३।११	५।५९	२०।११	१७।२३।५५	१३
१४	१।२८।५१।४	२।१९।११।३७	४।९।३३।१६	१।१२।३७।११	११।६।५८।२३	३।५।३३।४०	५।३।५९।५१	८।१८।५५।७	११।६।२३।४४	१०।४।३८।५६	२३।१४	७।५	२१।११	१७।२७।५२	१४
१५	१।२९।४८।२५	३।३।३७।४३	४।१०।५।२७	१।१४।२८।५८	११।७।५।२०	३।६।४३।५२	५।४।१।२१	८।१८।५१।५६	११।६।२४।४५	१०।४।३८।३०	२३।१७	८।१३	२१।५७	१७।३१।४९	१५
१६	२।०।४५।४४	३।१८।६।५३	४।१०।३७।४६	१।१६।२३।१३	११।७।१२।९	३।७।५३।५९	५।४।२।५७	८।१८।४८।४५	११।६।२५।४३	१०।४।३८।२	२३।२०	९।२०	२२।३१	१७।३५।४५	१६
१७	२।१।४३।३	४।२।३४।२१	४।११।१०।१२	१।१८।१९।५२	११।७।१८।४८	३।९।४।१	५।४।४।३८	८।१८।४५।३४	११।६।२६।३८	१०।४।३७।३२	२३।२२	१०।२६	२३।१७	१७।३९।४२	१७
१८	२।२।४०।२१	४।१६।५६।१०	४।११।४२।४५	१।२०।१८।४८	११।७।२५।१७	३।१०।१३।५८	५।४।६।२५	८।१८।४२।२४	११।६।२७।३१	१०।४।३७।०	२३।२४	११।२९	२३।५३	१७।४३।३८	१८
१९	२।३।३७।३७	५।१।९।१४	४।१२।१५।२५	१।२२।१९।५३	११।७।३१।३८	३।११।२३।५०	५।४।८।१९	८।१८।३९।१३	११।६।२८।२०	१०।४।३६।२६	२३।२५	१२।३१	-।-	१७।४७।३५	१९
२०	२।४।३४।५३	५।१५।११।२५	४।१२।४८।११	१।२४।२३।१	११।७।३७।४९	३।१२।३३।३५	५।४।१०।१८	८।१८।३६।२	११।६।२९।७	१०।४।३५।५०	२३।२६	१३।३३	०।२९	१७।५१।३१	२०
२१	२।५।३२।८	५।२९।१।१५	४।१३।२१।४	१।२६।२७।५१	११।७।४३।५०	३।१३।४३।१५	५।४।१२।२३	८।१८।३२।५१	११।६।२९।५१	१०।४।३५।१३	२३।२६	१४।३४	१।६	१७।५५।२८	२१
२२	२।६।२९।२३	६।१२।३७।४०	४।१३।५४।४	१।२८।३४।३६	११।७।४९।४१	३।१४।५२।५०	५।४।१४।३३	८।१८।२९।४०	११।६।३०।३२	१०।४।३४।३४	२३।२६	१५।३६	१।४५	१७।५९।२४	२२
२३	२।७।२६।३७	६।२६।०।३८	४।१४।२७।१०	२।०।४२।३९	११।७।५५।२३	३।१६।२।२८	५।४।१६।५०	८।१८।२६।३०	११।६।३१।१०	१०।४।३३।५३	२३।२६	१६।३८	२।२८	१८।३।२१	२३
२४	२।८।२३।५१	७।९।९।२३	४।१५।०।२३	२।२।५१।५३	११।८।०।५५	३।१७।११।४१	५।४।१९।१२	८।१८।२३।१९	११।६।३१।४५	१०।४।३३।१०	२३।२५	१७।३७	३।१६	१८।७।१८	२४
२५	२।९।२१।४	७।२२।४।४	४।१५।३३।४१	२।५।२।२	११।८।६।१७	३।१८।२०।५८	५।४।२१।४०	८।१८।२०।८	११।६।३२।१७	१०।४।३२।२६	२३।२४	१८।३२	४।८	१८।११।१४	२५
२६	२।१०।१८।१६	८।४।४५।२	४।१६।७।६	२।७।१२।५०	११।८।११।२९	३।१९।३०।९	५।४।२४।१३	८।१८।१६।५७	११।६।३२।४७	१०।४।३१।४०	२३।२२	१९।२२	५।३	१८।१५।११	२६
२७	२।११।१५।२८	८।१७।१२।५५	४।१६।४०।३८	२।९।२३।५९	११।८।१६।३१	३।२०।३९।१३	५।४।२६।५२	८।१८।१३।४६	११।६।३३।१३	१०।४।३०।५३	२३।२०	२०।७	६।०	१८।१९।७	२७
२८	२।१२।१२।४०	८।२९।२८।५०	४।१७।१४।१५	२।११।३५।१३	११।८।२१।२३	३।२१।४८।११	५।४।२९।३६	८।१८।१०।३६	११।६।३३।३७	१०।४।३०।३	२३।१८	२०।४६	६।५६	१८।२३।४	२८
२९	२।१३।९।५२	९।११।३४।३०	४।१७।४७।५९	२।१३।४६।१५	११।८।२६।४	३।२२।५७।३	५।४।३२।२६	८।१८।७।२५	११।६।३३।५८	१०।४।२९।१३	२३।१५	२१।२१	७।५२	१८।२७।०	२९
३०	२।१४।७।३	९।२३।३२।९	४।१८।२१।४८	२।१५।५६।५०	११।८।३०।३५	३।२४।५।४८	५।४।३५।२२	८।१८।४।१४	११।६।३४।१६	१०।४।२८।२०	२३।१२	२१।५३	८।४५	१८।३०।५७	३०

जुलाई सन् २०१० ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०।२९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।९।५८।१०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
१	२।१५। ४।१४	१०। ५।२४।३८	४।१८।५५।४३	२।१८। ६।४२	११। ८।३४।५६	३।२५।१४।२७	५। ४।३८।२३	८।१८। १। ३	११। ६।३४।३१	१०। ४।२७।२६	२३। ८	२२।२३	९।३७	१८।३४।५४	१
२	२।१६। १।२६	१०।१७।१५।२५	४।१९।२९।४४	२।२०।१५।४०	११। ८।३९। ६	३।२६।२२।५९	५। ४।४१।२९	८।१७।५७।५२	११। ६।३४।४३	१०। ४।२६।३१	२३। ४	२२।५३	१०।२८	१८।३८।५०	२
३	२।१६।५८।३८	१०।२९। ८।२३	४।२०। ३।५१	२।२२।२३।३०	११। ८।४३। ६	३।२७।३१।२४	५। ४।४४।४०	८।१७।५४।४२	११। ६।३४।५२	१०। ४।२५।३३	२२।५९	२३।२२	११।१९	१८।४२।४७	३
४	२।१७।५५।५०	११।११। ७।४७	४।२०।३८। ३	२।२४।३०। २	११। ८।४६।५४	३।२८।३९।४३	५। ४।४७।५७	८।१७।५१।३१	११। ६।३४।५९	१०। ४।२४।३५	२२।५५	२३।५३	१२।११	१८।४६।४३	४
५	२।१८।५३। २	११।२३।१८। ६	४।२१।१२।२२	२।२६।३५। ९	११। ८।५०।३२	३।२९।४७।५४	५। ४।५१।१९	८।१७।४८।२०	११। ६।३५। २	१०। ४।२३।३४	२२।४९	-। -	१३। ५	१८।५०।४०	५
६	२।१९।५०।१४	०। ५।४३।४३	४।२१।४६।४७	२।२८।३८।४२	११। ८।५३।५९	४। ०।५५।५८	५। ४।५४।४६	८।१७।४५। ९	११। ६।३५। २	१०। ४।२२।३३	२२।४४	०।२७	१४। १	१८।५४।३६	६
७	२।२०।४७।२६	०।१८।२८।४१	४।२२।२१।१७	३। ०।४०।३६	११। ८।५७।१४	४। २। ३।५५	५। ४।५८।१९	८।१७।४१।५८	११। ६।३५। ०	१०। ४।२१।२९	२२।३८	१। ६	१५। १	१८।५८।३३	७
८	२।२१।४४।३९	१। १।३६।१३	४।२२।५५।५३	३। २।४०।४५	११। ९। ०।१९	४। ३।११।४५	५। ५। १।५६	८।१७।३८।४८	११। ६।३४।५४	१०। ४।२०।२४	२२।३१	१।५०	१६। २	१९। २।२९	८
९	२।२२।४१।५३	१।१५। ८।१४	४।२३।३०।३५	३। ४।२९। ७	११। ९। ३।१३	४। ४।१९।२७	५। ५। ५।३९	८।१७।३५।३७	११। ६।३४।४६	१०। ४।१९।१८	२२।२४	२।४१	१७। ४	१९। ६।२६	९
१०	२।२३।३९। ७	१।२९। ४।५४	४।२४। ५।२३	३। ६।३५।३९	११। ९। ५।५५	४। ५।२७। १	५। ५। ९।२६	८।१७।३२।२६	११। ६।३४।३५	१०। ४।१८।११	२२।१७	३।४०	१८। ३	१९।१०।२३	१०
११	२।२४।३६।२१	२।१३।२४।१३	४।२४।४०।१६	३। ८।३०।१९	११। ९। ८।२६	४। ६।३४।२८	५। ५।१३।१९	८।१७।२९।१५	११। ६।३४।२१	१०। ४।१७। २	२२। ९	४।४५	१८।५९	१९।१४।१९	११
१२	२।२५।३३।३५	२।२८। १।५६	४।२५।१५।१६	३।१०।२३। ६	११। ९।१०।४५	४। ७।४१।४७	५। ५।१७।१८	८।१७।२६। ४	११। ६।३४। ४	१०। ४।१५।५३	२२। २	५।५३	१९।४९	१९।१८।१६	१२
१३	२।२६।३०।४९	३।१२।५१।४५	४।२५।५०।२०	३।१२।१३।५८	११। ९।१२।५३	४। ८।४८।५७	५। ५।२१।२०	८।१७।२२।५४	११। ६।३३।४४	१०। ४।१४।४१	२१।५३	७। ३	२०।३४	१९।२२।१२	१३
१४	२।२७।२८। ३	३।२७।४६। ५	४।२६।२५।३०	३।१४। २।५६	११। ९।१४।५०	४। ९।५५।५९	५। ५।२५।२८	८।१७।१९।४३	११। ६।३३।२२	१०। ४।१३।२८	२१।४४	८।११	२१।१५	१९।२६। ९	१४
१५	२।२८।२५।१८	४।१२।३७। ५	४।२७। ०।४६	३।१५।४९।५९	११। ९।१६।३५	४।११। २।५२	५। ५।२९।४०	८।१७।१६।३२	११। ६।३२।५६	१०। ४।१२।१४	२१।३५	९।१८	२१।५३	१९।३०। ५	१५
१६	२।२९।२२।३३	४।२७।१७।४१	४।२७।३६। ७	३।१७।३५। ७	११। ९।१८। ८	४।१२। ९।३५	५। ५।३३।५७	८।१७।१३।२१	११। ६।३२।२८	१०। ४।१०।५९	२१।२६	१०।२३	२२।३०	१९।३४। २	१६
१७	३। ०।१९।४८	५।११।४२।३३	४।२८।११।३३	३।१९।१८।२१	११। ९।१९।२९	४।१३।१६।१०	५। ५।३८।१९	८।१७।१०।१०	११। ६।३१।५७	१०। ४। ९।४२	२१।१६	११।२६	२३। ७	१९।३७।५८	१७
१८	३। १।१७। ३	५।२५।४८।१८	४।२८।४७। ४	३।२०।५९।४०	११। ९।२०।३९	४।१४।२२।३४	५। ५।४२।४५	८।१७। ७। ०	११। ६।३१।२३	१०। ४। ८।२४	२१। ६	१२।२९	२३।४६	१९।४१।५५	१८
१९	३। २।१४।१८	६। ९।३३।३६	४।२९।२२।४०	३।२२।३९। ४	११। ९।२१।३८	४।१५।२८।४९	५। ५।४७।१५	८।१७। ३।५०	११। ६।३०।४६	१०। ४। ७। ५	२०।५५	१३।३१	-। -	१९।४५।५२	१९
२०	३। ३।११।३३	६।२२।५८।४५	४।२९।५८।२२	३।२४।१६।३४	११। ९।२२।२४	४।१६।३४।५३	५। ५।५१।५१	८।१७। ०।४०	११। ६।३०। ६	१०। ४। ५।४५	२०।४४	१४।३२	०।२८	१९।४९।४८	२०
२१	३। ४। ८।४८	७। ६। ५। ८	५। ०।३४। ८	३।२५।५२।१०	११। ९।२२।५९	४।१७।४०।४८	५। ५।५६।३०	८।१६।५७।३०	११। ६।२९।२४	१०। ४। ४।२४	२०।३३	१५।३१	१।१४	१९।५३।४५	२१
२२	३। ५। ६। ४	७।१८।५४।४७	५। १। ९।५९	३।२७।२५।५१	११। ९।२३।२३	४।१८।४६।३१	५। ६। १।१४	८।१६।५४।२०	११। ६।२८।३९	१०। ४। ३। २	२०।२१	१६।२७	२। ४	१९।५७।४१	२२
२३	३। ६। ३।२०	८। १।२९।५८	५। १।४५।५६	३।२८।५७।३७	११। ९।२३।३४	४।१९।५२। ३	५। ६। ६। ३	८।१६।५१।१०	११। ६।२७।५१	१०। ४। १।३८	२०। ९	१७।१८	२।५७	२०। १।३८	२३
२४	३। ७। ०।३७	८।१३।५२।५४	५। २।२१।५७	४। ०।२७।२६	११। ९।२३।३३	४।२०।५७।२३	५। ६।१०।५५	८।१६।४८। ०	११। ६।२७। १	१०। ४। ०।१४	१९।५७	१८। ४	३।५३	२०। ५।३४	२४
२५	३। ७।५७।५४	८।२६। ५।४१	५। २।५८। ३	४। १।५५।२०	११। ९।२३।२२	४।२२। २।३२	५। ६।१५।५२	८।१६।४४।५०	११। ६।२६। ८	१०। ३।५८।४९	१९।४५	१८।४५	४।४९	२०। ९।३१	२५
२६	३। ८।५५।११	९। ८।१०।१२	५। ३।३४।१४	४। ३।२१।१५	११। ९।२२।५८	४।२३। ७।२९	५। ६।२०।५३	८।१६।४१।४०	११। ६।२५।१२	१०। ३।५७।२३	१९।३२	१९।२२	५।४४	२०।१३।२७	२६
२७	३। ९।५२।२९	९।२०। ८।१७	५। ४।१०।२९	४। ४।४५।११	११। ९।२२।२३	४।२४।१२।१४	५। ६।२५।५८	८।१६।३८।३०	११। ६।२४।१४	१०। ३।५५।५६	१९।१८	१९।५५	६।३८	२०।१७।२४	२७
२८	३।१०।४९।४८	१०। २। १।५१	५। ४।४६।५०	४। ६। ७। ५	११। ९।२१।३६	४।२५।१६।४६	५। ६।३१। ७	८।१६।३५।२०	११। ६।२३।१३	१०। ३।५४।२८	१९। ५	२०।२५	७।३१	२०।२१।२१	२८
२९	३।११।४७। ७	१०।१३।५२।५५	५। ५।२३।१५	४। ७।२६।५६	११। ९।२०।३७	४।२६।२१। ५	५। ६।३६।२०	८।१६।३२।१०	११। ६।२२। ९	१०। ३।५३। ०	१८।५१	२०।५५	८।२२	२०।२५।१७	२९
३०	३।१२।४४।२८	१०।२५।४३।५२	५। ५।५९।४५	४। ८।४४।४१	११। ९।१९।२६	४।२७।२५।१२	५। ६।४१।३७	८।१६।३०। ०	११। ६।२१। ३	१०। ३।५१।३०	१८।३७	२१।२४	९।१३	२०।२९।१४	३०
३१	३।१३।४१।४९	११। ७।३७।३०	५। ६।३६।२०	४।१०। ०।१७	११। ९।१८। ३	४।२८।२९। ५	५। ६।४६।५८	८।१६।२६।५०	११। ६।१९।५५	१०। ३।५०। ०	१८।२२	२१।५४	१०। ५	२०।३३।१०	३१

अगस्त सन् २०१० ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०।३५, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।९।१४।५०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	३।१४।३९।११	११।१९।३७। ३	५। ७।१३। ०	४।११।१३।४०	११। ९।१६।२९	४।२९।३३।४५	५। ६।५२।२३	८।१६।२३।४०	११। ६।१८।४५	१०। ३।४८।२९	१८। ७	२२।२७	१०।५७	२०।३७। ७	१
२	३।१५।३६।३५	०। १४६।१६	५। ७।४९।४४	४।१२।२४।४७	११। ९।१४।४३	५। ०।३६।१०	५। ६।५७।५१	८।१६।२०।२९	११। ६।१७।३२	१०। ३।४६।५७	१७।५२	२३। २	११।५२	२०।४१। ३	२
३	३।१६।३४। ०	०।१४। ९।१२	५। ८।२६।३३	४।१३।३३।३४	११। ९।१२।४५	५। १।३९।२१	५। ७। ३।२३	८।१६।१७।१९	११। ६।१६।१५	१०। ३।४५।२४	१७।३७	२३।४३	१२।४८	२०।४५। ०	३
४	३।१७।३१।२६	०।२६।५०। २	५। ९। ३।२७	४।१४।३९।५४	११। ९।१०।३६	५। २।४२।१७	५। ७। ८।५९	८।१६।१४। ८	११। ६।१४।५६	१०। ३।४३।५१	१७।२१	-। -	१३।४७	२०।४८।५६	४
५	३।१८।२८।५३	१। ९।५२।४४	५। ९।४०।२६	४।१५।४३।४४	११। ९। ८।१५	५। ३।४४।५९	५। ७।१४।३९	८।१६।१०।५७	११। ६।१३।३५	१०। ३।४२।१७	१७। ५	०।२९	१४।४७	२०।५२।५३	५
६	३।१९।२६।२२	१।२३।२०।३१	५।१०।१७।३०	४।१६।४४।५५	११। ९। ५।४२	५। ४।४७।२५	५। ७।२०।२२	८।१६। ७।४६	११। ६।१२।१२	१०। ३।४०।४३	१६।४९	१।२३	१५।४७	२०।५६।५०	६
७	३।२०।२३।५२	२। ७।१५।१६	५।१०।५४।३९	४।१७।४३।२३	११। ९। २।५८	५। ५।४९।३५	५। ७।२६। ९	८।१६। ४।३६	११। ६।१०।४६	१०। ३।३९। ८	१६।३२	२।२३	१६।४३	२१। ०।४६	७
८	३।२१।२१।२२	२।२१।३६।४०	५।११।३१।५२	४।१८।३८।५९	११। ९। ०। ३	५। ६।५१।२९	५। ७।३१।५९	८।१६। १।२५	११। ६। ९।१८	१०। ३।३७।३३	१६।१५	३।३०	१७।३६	२१। ४।४३	८
९	३।२२।१८।५४	३। ६।२२।४६	५।१२। ९।१०	४।१९।३१।३५	११। ८।५६।५६	५। ७।५३। ७	५। ७।३७।५२	८।१५।५८।१४	११। ६। ७।४८	१०। ३।३५।५७	१५।५८	४।३९	१८।२३	२१। ८।३९	९

अगस्त सन् २०१० ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०।३५ वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।९।१४।५०

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु (व.) रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून(व.) रा.अं.क.वि.	र.क्रांति उ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	संपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१०	३।२३।१६।२७	३।२१।२४।३०	५।१२।४६।३४	४।२०।२१। २	११। ८।५३।३८	५। ८।५४।२७	५। ७।४३।४९	८।१५।५५। ३	११। ६। ६।१५	१०। ३।३४।२१	१५।४१	५।४९	११। ७	२१।१२।३६	१०
११	३।२४।१४। २	४। ६।३६।१७	५।१३।२४। १	४।२१। ७।१०	११। ८।५०। ८	५। ९।५५।२९	५। ७।४९।४९	८।१५।५१।५३	११। ६। ४।४०	१०। ३।३२।४४	१५।२४	६।५८	११।४७	२१।१६।३२	११
१२	३।२५।११।३७	४।२१।४६।५९	५।१४। १।३४	४।२१।४९।४९	११। ८।४६।२८	५।१०।५६।१२	५। ७।५५।५२	८।१५।४८।४२	११। ६। ३। ३	१०। ३।३१। ७	१५। ६	८। ५	२०।२६	२१।२०।२९	१२
१३	३।२६। ९।१४	५। ६।४६।४१	५।१४।३९।११	४।२२।२८।४८	११। ८।४२।३७	५।११।५६।३७	५। ८। १।५९	८।१५।४५।३१	११। ६। १।२४	१०। ३।२९।३०	१४।४८	९।२१	२१। ४	२१।२४।२५	१३
१४	३।२७। ६।५१	५।२१।२६।३९	५।१५।१६।५२	४।२३। ३।५५	११। ८।३८।३४	५।१२।५६।४१	५। ८। ८। ८	८।१५।४२।२०	११। ५।५९।४३	१०। ३।२७।५२	१४।२९	१०।१७	२१।४४	२१।२८।२२	१४
१५	३।२८। ४।२९	६। ५।४३।२१	५।१५।५४।३८	४।२३।३४।५७	११। ८।३४।२२	५।१३।५६।२६	५। ८।१४।२१	८।१५।३९।१०	११। ५।५८। ०	१०। ३।२६।१४	१४।११	११।२१	२२।२६	२१।३२।१९	१५
१६	३।२९। २। ८	६।१९।३२।४८	५।१६।३२।३०	४।२४। १।४१	११। ८।२९।५९	५।१४।५५।४८	५। ८।२०।३६	८।१५।३५।५९	११। ५।५६।१४	१०। ३।२४।३६	१३।५२	१२।२४	२३।१२	२१।३६।१५	१६
१७	३।२९।५९।४८	७। २।५६। ५	५।१७।१०।२५	४।२४।२३।५४	११। ८।२५।२५	५।१५।५४।४९	५। ८।२६।५४	८।१५।३२।४८	११। ५।५४।२७	१०। ३।२२।५८	१३।३३	१३।२५	-।-	२१।४०।१२	१७
१८	४। ०।५७।२९	७।१५।५५।३७	५।१७।४८।२४	४।२४।४१।२२	११। ८।२०।४२	५।१६।५३।२७	५। ८।३३।१५	८।१५।२९।३७	११। ५।५२।३८	१०। ३।२१।२०	१३।१४	१४।२३	०। १	२१।४४। ८	१८
१९	४। १।५५।१२	७।२८।३४।५४	५।१८।२६।२८	४।२४।५३।४९	११। ८।१५।४८	५।१७।५१।४१	५। ८।३९।३९	८।१५।२६।२७	११। ५।५०।४७	१०। ३।१९।४१	१२।५५	१५।२६	०।५३	२१।४८। ५	१९
२०	४। २।५२।५५	८।१०।५७।५४	५।१९। ४।३६	४।२५। १। ४	११। ८।१०।४५	५।१८।४९।३०	५। ८।४६। ६	८।१५।२३।१६	११। ५।४८।५४	१०। ३।१८। ३	१२।३५	१६। ३	१।४८	२१।५२। १	२०
२१	४। ३।५०।४०	८।२३। ८।३१	५।१९।४२।४९	४।२५। २।५५	११। ८। ५।३३	५।१९।४६।५५	५। ८।५२।३५	८।१५।२०। ५	११। ५।४७। ०	१०। ३।१६।२४	१२।१५	१६।४५	२।४४	२१।५५।५८	२१
२२	४। ४।४८।२६	९। ५।१०।१६	५।२०।२१। ६	४।२४।५९। १	११। ८। ०।११	५।२०।४३।५३	५। ८।५९। ७	८।१५।१६।५४	११। ५।४५। ३	१०। ३।१४।४६	११।५५	१७।२२	३।३९	२१।५९।५४	२२
२३	४। ५।४६।१३	९।१७। ६। ९	५।२०।५९।२७	४।२४।४९।३९	११। ७।५४।४०	५।२१।४०।२३	५। ९। ५।४१	८।१५।१३।४४	११। ५।४३। ५	१०। ३।१३। ८	११।३५	१७।५६	४।३३	२२। ३।५१	२३
२४	४। ६।४४। १	९।२८।५८।३८	५।२१।३७।५२	४।२४।३४।१७	११। ७।४९। ०	५।२२।३६।२६	५। ९।१२।१७	८।१५।१०।३३	११। ५।४१। ७	१०। ३।११।२९	११।१५	१८।२८	५।२६	२२। ७।४८	२४
२५	४। ७।४१।५०	१०।१०।४९।४७	५।२२।१६।२२	४।२४।१३। २	११। ७।४३।१०	५।२३।३२। ०	५। ९।१८।५७	८।१५। ७।२२	११। ५।३९। ६	१०। ३। ९।५१	१०।५४	१८।५८	६।१८	२२।११।४४	२५
२६	४। ८।३९।४१	१०।२२।४१।१७	५।२२।५४।५६	४।२३।४५।५८	११। ७।३७।१३	५।२४।२७। ४	५। ९।२५।३८	८।१५। ४।११	११। ५।३७। ३	१०। ३। ८।१३	१०।३३	१९।२७	७। ९	२२।१५।४१	२६
२७	४। ९।३७।३४	११। ४।३४।४८	५।२३।३३।३३	४।२३।१३।१२	११। ७।३१। ७	५।२५।२१।३७	५। ९।३२।२२	८।१५। १। १	११। ५।३४।५९	१०। ३। ६।३६	१०।१३	१९।५७	८। ०	२२।१९।३७	२७
२८	४।१०।३५।२९	११।१६।३३। ५	५।२४।१२।१६	४।२२।३५। १	११। ७।२४।५२	५।२६।१५।३९	५। ९।३९। ७	८।१४।५७।५०	११। ५।३२।५३	१०। ३। ४।५८	९।५२	२०।२९	८।५२	२२।२३।३४	२८
२९	४।११।३३।२५	११।२८।३५।१६	५।२४।५१। ३	४।२१।५१।४७	११। ७।१८।३०	५।२७। ९। ७	५। ९।४५।५५	८।१४।५४।३९	११। ५।३०।४६	१०। ३। ३।२१	९।२९	२१। ३	९।४५	२२।२७।३०	२९
३०	४।१२।३१।२३	०।१०।४६।५६	५।२५।२९।५५	४।२१। ४। ४	११। ७।१२। ०	५।२८। २। १	५। ९।५२।४५	८।१४।५१।२८	११। ५।२८।३७	१०। ३। १।४४	९। ९	२१।४१	१०।४१	२२।३१।२७	३०
३१	४।१३।२९।२२	०।२३।१०।१०	५।२६। ८।५०	४।२०।१२।३३	११। ७। ५।२२	५।२८।५४।२०	५। ९।५९।३८	८।१४।४८।१७	११। ५।२६।२७	१०। ३। ०। ७	८।४८	२२।२४	११।३८	२२।३५।२३	३१

सितम्बर सन् २०१० ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०।३९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।८।४९।२८

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु (व.) रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून(व.) रा.अं.क.वि.	र.क्रांति उ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	संपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१	४।१४।२७।२३	१। ५।४८।३२	५।२६।४७।५०	४।१९।१८। ३	११। ६।५८।३८	५।२९।४६। ३	५।१०। ६।३२	८।१४।४५। ६	११। ५।२४।१५	१०। २।५८।३१	८।२६	२३।१३	१२।३६	२२।३९।२०	१
२	४।१५।२५।२७	१।१८।४५।५७	५।२७।२६।५५	४।१८।२१।३५	११। ६।५१।४६	६। ०।३७। ८	५।१०।१३।२८	८।१४।४१।५६	११। ५।२२। २	१०। २।५६।५५	८। ४	-।-	१३।३४	२२।४३।१७	२
३	४।१६।२३।३२	२। २। ६। ३	५।२८। ६। ४	४।१७।२४।१४	११। ६।४४।४८	६। १।२७।३४	५।१०।२०।२६	८।१४।३८।४५	११। ५।१९।४९	१०। २।५५।२०	७।४२	०। १	१४।३०	२२।४७।१३	३
४	४।१७।२१।४०	२।१५।५२।४८	५।२८।४५।१८	४।१६।२७।१३	११। ६।३७।४३	६। २।१७।१९	५।१०।२७।२६	८।१४।३५।३४	११। ५।१७।३४	१०। २।५३।४५	७।२०	१।११	१५।२२	२२।५१।१०	४
५	४।१८।१९।५०	३। ०। ४।३५	५।२९।२४।३६	४।१५।३१।४६	११। ६।३०।३३	६। ३। ६।२२	५।१०।३४।२७	८।१४।३२।२३	११। ५।१५।१९	१०। २।५२।११	६।५८	२।१६	१६।११	२२।५५। ६	५
६	४।१९।१८। १	३।१४।४३।१५	६। ०। ३।५८	४।१४।३९।१०	११। ६।२३।१६	६। ३।५४।४२	५।१०।४१।३०	८।१४।२९।१३	११। ५।१३। २	१०। २।५०।३७	६।३६	३।२४	१६।५६	२२।५९। ३	६
७	४।२०।१६।१४	३।२९।४३।३१	६। ०।४३।२५	४।१३।५०।३९	११। ६।१५।५४	६। ४।४२।१६	५।१०।४८।३५	८।१४।२६। २	११। ५।१०।४४	१०। २।४९। ४	६।१४	४।३३	१७।३७	२३। २।५९	७
८	४।२१।१४।२९	४।१४।५७।४१	६। १।२२।५६	४।१३। ७।२३	११। ६। ८।२७	६। ५।२९। ४	५।१०।५५।४२	८।१४।२२।५१	११। ५। ८।२६	१०। २।४७।३१	५।५१	५।४१	१८।१७	२३। ६।५६	८
९	४।२२।१२।४६	५। ०।१५।२७	६। २। २।३२	४।१२।३०।२४	११। ६। ०।५६	६। ६।१५। २	५।११। २।५०	८।१४।१९।४०	११। ५। ६। ६	१०। २।४५।५९	५।२८	६।४८	१८।५७	२३।१०।५२	९
१०	४।२३।११। ५	५।१५।२५।११	६। २।४२।१२	४।१२। ०।३९	११। ५।५३।२०	६। ७। ०।१०	५।११। ९।५९	८।१४।१६।३०	११। ५। ३।४६	१०। २।४४।२८	५। ६	७।५६	१९।३७	२३।१४।४९	१०
११	४।२४। ९।२५	६। ०।१७।४०	६। ३।२१।५६	४।११।३८।५२	११। ५।४५।३९	६। ७।४४।२४	५।११।१७।१०	८।१४।१३।१९	११। ५। १।२५	१०। २।४२।५८	४।४३	९। ३	२०।१९	२३।१८।४६	११
१२	४।२५। ७।४६	६।१४।४४।२१	६। ४। १।४५	४।११।२५।३८	११। ५।३७।५५	६। ८।२७।४३	५।११।२४।२२	८।१४।१०। ८	११। ४।५९। ४	१०। २।४१।२८	४।२०	१०। ९	२१। ५	२३।२२।४२	१२
१३	४।२६। ६।१०	६।२८।४२। ७	६। ४।४१।३८	४।११।२१।२३	११। ५।३०। ८	६। ९।१०। ४	५।११।३१।३५	८।१४। ६।५७	११। ४।५६।४२	१०। २।३९।५९	३।५७	११।१३	२१।५५	२३।२६।३९	१३
१४	४।२७। ४।३५	७।१२।१०। ८	६। ५।२१।३५	४।११।२६।२०	११। ५।२२।१८	६। ९।५१।२४	५।११।३८।४९	८।१४। ३।४७	११। ४।५४।१९	१०। २।३८।३२	३।३४	१२।१४	२२।४८	२३।३०।३५	१४
१५	४।२८। ३। २	७।२५।१०।४७	६। ६। १।३३	४।११।४०।३४	११। ५।१४।२५	६।१०।३१।४२	५।११।४६। ४	८।१४। ०।३६	११। ४।५१।५६	१०। २।३७। ५	३।११	१३।१०	२३।४३	२३।३४।३२	१५
१६	४।२९। १।३०	८। ७।४८। ४	६। ६।४१।४२	४।१२। ४। २	११। ५। ६।३०	६।११।१०।५५	५।११।५३।२०	८।१३।५७।२५	११। ४।४९।३३	१०। २।३५।३९	२।४८	१४। ०	-।-	२३।३८।२८	१६
१७	५। ०। ०। ०	८।२०। ६।४७	६। ७।२१।५१	४।१२।३६।३६	११। ४।५८।३३	६।११।४८।५९	५।१२। ०।३७	८।१३।५४।१४	११। ४।४७। ९	१०। २।३४।१४	२।२५	१४।४४	०।३९	२३।४२।२५	१७
१८	५। ०।५८।३२	९। २।११।५५	६। ८। २। ५	४।१३।१७।४७	११। ४।५०।३५	६।१२।२५।५२	५।१२। ७।५५	८।१३।५१। ४	११। ४।४४।४५	१०। २।३२।५०	२। २	१५।२३	१।३५	२३।४६।२१	१८

सितम्बर सन् २०१० ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०।३९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।८।४९।२८

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु (व.) रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अ.क.वि.	नेपच्यून(व.) रा.अं.क.वि.	र.क्रांति उ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१९	५।१।५७।६	९।१४।८।११	६।८।४२।२२	४।१४।७।२०	११।४।४२।३५	६।१३।१।३२	५।१२।१५।१५	८।१३।४७।५३	११।४।४२।११	१०।२।३१।२७	१।३९	१५।५८	२।२१	२३।५०।१८	१९
२०	५।२।५५।४१	९।२५।५९।४२	६।९।२२।४४	४।१५।४।४३	११।४।३४।३५	६।१३।३५।५५	५।१२।२२।३४	८।१३।४४।४२	११।४।३९।५६	१०।२।३०।५	१।१६	१६।३०	३।२२	२३।५४।१५	२०
२१	५।३।५४।१७	१०।७।४९।५०	६।१०।३।१०	४।१६।९।२२	११।४।२६।३४	६।१४।८।५८	५।१२।२९।५५	८।१३।४१।३१	११।४।३७।३२	१०।२।२८।४४	०।५२	१७।०	४।१३	२३।५८।११	२१
२२	५।४।५२।५४	१०।१९।४१।१८	६।१०।४३।४०	४।१७।२०।४२	११।४।१८।३३	६।१४।४०।३७	५।१२।३७।१६	८।१३।३८।२१	११।४।३५।८	१०।२।२७।२४	०।२९	१७।३०	५।५	०।२।८	२२
२३	५।५।५१।३४	११।१।३६।१	६।११।२४।१४	४।१८।३८।४	११।४।१०।३३	६।१५।१०।५१	५।१२।४४।३८	८।१३।३५।१०	११।४।३२।४३	१०।२।२६।६	०।६	१८।०	५।५६	०।६।४	२३
२४	५।६।५०।१६	११।१३।३५।२६	६।१२।४।५२	४।२०।०।५०	११।४।२।३३	६।१५।३९।३५	५।१२।५२।०	८।१३।३१।५९	११।४।३०।१९	१०।२।२४।४९	-०।१८	१८।३१	६।४८	०।१०।१	२४
२५	५।७।४९।१	११।२५।४०।४१	६।१२।४५।३४	४।२१।२८।२२	११।३।५४।३३	६।१६।६।४७	५।१२।५९।२३	८।१३।२८।४८	११।४।२७।५५	१०।२।२३।३३	०।४१	१९।५	७।४१	०।१३।५७	२५
२६	५।८।४७।४७	०।७।५२।५१	६।१३।२६।२०	४।२३।०।१	११।३।४६।३६	६।१६।३२।२२	५।१३।६।४६	८।१३।२५।३८	११।४।२५।३०	१०।२।२२।१८	१।५	१९।४२	८।३६	०।१७।५४	२६
२७	५।९।४६।३५	०।२०।१३।१८	६।१४।७।१०	४।२४।३५।१२	११।३।३८।३९	६।१६।५६।१७	५।१३।१४।९	८।१३।२२।२७	११।४।२३।७	१०।२।२१।४	१।२८	२०।२३	९।३२	०।२१।५०	२७
२८	५।१०।४५।२६	१।२।४३।४६	६।१४।४८।५	४।२६।१३।२२	११।३।३०।४५	६।१७।१८।३०	५।१३।२१।३३	८।१३।१९।१६	११।४।२०।४३	१०।२।१९।५२	१।५१	२१।१०	१०।२९	०।२५।४७	२८
२९	५।११।४४।१९	१।१५।२६।३६	६।१५।२९।३	४।२७।५४।५८	११।३।२२।५३	६।१७।३८।५५	५।१३।२८।५७	८।१३।१६।५	११।४।१८।२०	१०।२।१८।४१	२।१५	२२।३	११।२७	०।२९।४३	२९
३०	५।१२।४३।१४	१।२८।२४।३६	६।१६।१०।६	४।२९।३६।३४	११।३।१५।४	६।१७।५७।३१	५।१३।३६।२१	८।१३।१२।५४	११।४।१५।५७	१०।२।१७।३१	२।३८	२३।०	१२।२२	०।३३।४०	३०
अक्टूबर सन् २०१० ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०।४२, वेंकटेश (प्लूटो) ८।८।५१।१६															
१	५।१३।४२।११	२।११।४०।५१	६।१६।५१।१३	५।१।२०।४२	११।३।७।१८	६।१८।१४।१३	५।१३।४३।४५	८।१३।९।४३	११।४।१३।३५	१०।२।१६।२३	३।१	-।-	१३।१४	०।३७।३७	१
२	५।१४।४१।११	२।२५।१८।२४	६।१७।३२।२५	५।३।६।२	११।२।५९।३५	६।१८।२८।५७	५।१३।५१।९	८।१३।६।३३	११।४।११।१३	१०।२।१५।१५	३।२५	०।३	१४।३	०।४१।३३	२
३	५।१५।४०।१३	३।९।१८।४५	६।१८।१३।४०	५।४।५२।१३	११।२।५१।५७	६।१८।४१।४१	५।१३।५८।३४	८।१३।३।२२	११।४।८।५२	१०।२।१४।१०	३।४८	१।७	१४।४७	०।४५।३०	३
४	५।१६।३९।१७	३।२३।४२।३६	६।१८।५५।०	५।६।३८।५९	११।२।४४।२२	६।१८।५२।२१	५।१४।५।५८	८।१३।०।११	११।४।६।३२	१०।२।१३।६	४।११	२।१३	१५।२९	०।४९।२६	४
५	५।१७।३८।२४	४।८।२७।२६	६।१९।३६।२४	५।८।२६।४	११।२।३६।५२	६।१९।०।५३	५।१४।१३।२२	८।१२।५७।०	११।४।४।१२	१०।२।१२।३	४।३४	३।१९	१६।८	०।५३।२३	५
६	५।१८।३७।३३	४।२३।२७।४७	६।२०।१७।५२	५।१०।१३।१६	११।२।२९।२६	६।१९।७।१४	५।१४।२०।४५	८।१२।५३।५०	११।४।१।५३	१०।२।११।३	४।५७	४।२५	१६।४७	०।५७।१८	६
७	५।१९।३६।४४	५।८।३५।१६	६।२०।५९।२५	५।१२।०।२६	११।२।२२।६	६।१९।११।२२	५।१४।२८।९	८।१२।५०।३९	११।३।५९।३५	१०।२।१०।३	५।२०	५।३२	१७।२७	१।१।१६	७
८	५।२०।३५।५७	५।२३।३९।४२	६।२१।४१।२	५।१३।४७।२४	११।२।१४।५१	६।१९।१३।१२	५।१४।३५।३२	८।१२।४७।२८	११।३।५७।१८	१०।२।९।५	५।४३	६।३९	१८।९	१।५।१२	८
९	५।२१।३५।१२	६।८।३०।५२	६।२२।२२।४२	५।१५।३४।४	११।२।७।४२	६।१९।१२।४४	५।१४।४२।५५	८।१२।४४।१७	११।३।५५।२	१०।२।८।९	६।६	७।४७	१८।५४	१।९।९	९
१०	५।२२।३४।२९	६।२३।०।२०	६।२३।४।२७	५।१७।२०।२०	११।२।०।४०	६।१९।९।५३	५।१४।५०।१७	८।१२।४१।७	११।३।५२।४७	१०।२।७।१५	६।२९	८।५४	१९।४३	१।१३।६	१०
११	५।२३।३३।४८	७।७।२।४३	६।२३।४६।१६	५।१९।६।७	११।१।५३।४४	६।१९।४।४०	५।१४।५७।३९	८।१२।३७।५६	११।३।५०।३३	१०।२।६।२२	६।५२	९।५८	२०।३६	१।१७।२	११
१२	५।२४।३३।९	७।२०।३६।३	६।२४।२८।८	५।२०।५१।२१	११।१।४६।५५	६।१८।५७।१	५।१५।४।५९	८।१२।३४।४५	११।३।४८।२०	१०।२।५।३१	७।१४	१०।५८	२१।३२	१।२०।५९	१२
१३	५।२५।३२।३१	८।३।४१।२२	६।२५।१०।५	५।२२।३६।१	११।१।४०।१३	६।१८।४६।५८	५।१५।१२।१९	८।१२।३१।३४	११।३।४६।९	१०।२।४।४१	७।३७	११।५२	२२।३०	१।२४।५५	१३
१४	५।२६।३१।५६	८।१६।२१।५३	६।२५।५२।६	५।२४।२०।५	११।१।३३।३८	६।१८।३४।२९	५।१५।१९।३९	८।१२।२८।२४	११।३।४३।५८	१०।२।३।५४	७।५९	१२।४०	२३।२७	१।२८।५२	१४
१५	५।२७।३१।२२	८।२८।४२।१२	६।२६।३४।११	५।२६।३।२९	११।१।२७।१२	६।१८।१९।३७	५।१५।२६।५७	८।१२।२५।१३	११।३।४१।४९	१०।२।३।८	८।२१	१३।२१	-।-	१।३२।४८	१५
१६	५।२८।३०।५०	९।१०।४७।३४	६।२७।१६।१९	५।२७।४६।१५	११।१।२०।५३	६।१८।२।२२	५।१५।३४।१४	८।१२।२२।२	११।३।३९।४१	१०।२।२।२४	८।४४	१३।५८	०।२३	१।३६।४५	१६
१७	५।२९।३०।२०	९।२२।४३।१३	६।२७।५८।३२	५।२९।२८।२२	११।१।१४।४३	६।१७।४२।४९	५।१५।४१।३१	८।१२।१८।५१	११।३।३७।३५	१०।२।१।४१	९।६	१४।३१	१।१६	१।४०।४१	१७
१८	६।०।२९।५१	१०।४।३४।८	६।२८।४०।४८	६।१।९।५०	११।१।८।४१	६।१७।२१।१	५।१५।४८।४६	८।१२।१५।४१	११।३।३५।३०	१०।२।१।१	९।२८	१५।२	२।८	१।४४।३८	१८
१९	६।१।२९।२५	१०।१६।२४।३८	६।२९।२३।९	६।२।५०।३८	११।१।२।४८	६।१६।५७।३	५।१५।५६।०	८।१२।१२।३०	११।३।३३।२७	१०।२।०।२२	९।४९	१५।३२	३।०	१।४८।३५	१९
२०	६।२।२९।०	१०।२८।१८।२०	७।०।५।३३	६।४।३०।४७	११।०।५७।४	६।१६।३१।२	५।१६।३।१३	८।१२।९।१९	११।३।३१।२५	१०।१।५९।४५	१०।११	१६।२	३।५०	१।५२।३१	२०
२१	६।३।२८।३६	११।१०।१७।५५	७।०।४८।१	६।६।१०।१८	११।०।५१।२९	६।१६।३।५	५।१६।१०।२५	८।१२।६।८	११।३।२९।२५	१०।१।५९।१०	१०।३३	१६।३३	४।४२	१।५६।२८	२१
२२	६।४।२८।१४	११।२२।२५।१९	७।१।३०।३३	६।७।४९।१२	११।०।४६।४	६।१५।३३।२१	५।१६।१७।३५	८।१२।२।५८	११।३।२७।२७	१०।१।५८।३७	१०।५४	१७।५	५।३५	२।०।२४	२२
२३	६।५।२७।५५	०।४।४१।४२	७।२।१३।८	६।९।२७।२८	११।०।४०।४८	६।१५।२।१	५।१६।२४।४४	८।११।५९।४७	११।३।२५।३१	१०।१।५८।५	११।१५	१७।४२	६।२९	२।४।२१	२३
२४	६।६।२७।३८	०।१७।७।४०	७।२।५५।४८	६।११।५।१०	११।०।३५।४२	६।१४।२९।१५	५।१६।३१।५१	८।११।५६।३६	११।३।२३।३६	१०।१।५७।३६	११।३६	१८।२२	७।२६	२।८।१७	२४
२५	६।७।२७।२३	०।२९।४३।३५	७।३।३८।३१	६।१२।४२।१६	११।०।३०।४६	६।१३।५५।१५	५।१६।३८।५७	८।११।५३।२५	११।३।२१।४५	१०।१।५७।८	११।५७	१९।८	८।२३	२।१२।१४	२५
२६	६।८।२७।९	१।१२।२९।४९	७।४।२१।१८	६।१४।१८।४९	११।०।२६।०	६।१३।२०।१५	५।१६।४६।१	८।११।५०।१५	११।३।१९।५४	१०।१।५६।४३	१२।१८	१९।५९	९।२१	२।१६।१०	२६
२७	६।९।२६।५९	१।२५।२७।२	७।५।४।१०	६।१५।५४।४९	११।०।२१।२५	६।१२।४४।२९	५।१६।५३।४	८।११।४७।४	११।३।१८।५	१०।१।५६।१९	१२।३८	२०।५५	१०।१७	२।२०।७	२७
२८	६।१०।२६।५०	२।८।३६।२६	७।५।४७।५	६।१७।३०।१७	११।०।१७।०	६।१२।८।१०	५।१७।०।५	८।११।४३।५३	११।३।१६।१८	१०।१।५५।५७	१२।५८	२१।५६	११।१०	२।२४।४	२८

अक्टूबर सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।४२, वेंकटेश (प्लूटो) ८।८।५।१६

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु(व.) रा.अं.क.वि.	शुक्र(व.) रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून(व.) रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
२९	६।११।२६।४३	३।२१।५८।५५	७। ६।३०। ५	६।१९। ५।१६	११। ०।१२।४६	६।११।३१।३६	५।१७। ७। ४	८।११।४०।४२	११। ३।१४।३४	१०। १।५५।३७	१३।१८	२२।५१	११।५१	२।२८। ०	२९
३०	६।१२।२६।३९	३। ५।३६।३३	७। ७।१३। ७	६।२०।३९।४४	११। ०। ८।४३	६।१०।५४।५८	५।१७।१४। १	८।११।३७।३१	११। ३।१२।५१	१०। १।५५।१९	१३।३८	-।-	१२।४४	२।३१।५७	३०
३१	६।१३।२६।३७	३।१९।३०।२१	७। ७।५६।२४	६।२२।१३।४५	११। ०। ४।५०	६।१०।१८।३४	५।१७।२०।५७	८।११।३४।२०	११। ३।११।१०	१०। १।५५। ३	१३।५४	०। २	१३।२५	२।३५।५३	३१

नवम्बर सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।४५, वेंकटेश (प्लूटो) ८।९।२।३६

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु(व.) रा.अं.क.वि.	शुक्र(व.) रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून(व.) रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१	६।१४।२६।३६	४। ३।४०।३७	७। ८।३९।२५	६।२३।४७।१७	११। ०। १। ९	६। ९।४२।३७	५।१७।२७।५०	८।११।३१।१०	११। ३। ९।३२	१०। १।५४।४९	१४।१७	१। ६	१४। ४	२।३९।५०	१
२	६।१५।२६।३८	४।१८। ६। ४	७। ९।२२।४०	६।२५।२०।२२	१०।२९।५७।४०	६। ९। ७।२३	५।१७।३४।४१	८।११।२७।५९	११। ३। ७।५६	१०। १।५४।३८	१४।३७	२। ९	१४।४२	२।४३।४६	२
३	६।१६।२६।४२	५। २।४३।२१	७।१०। ५।५९	६।२६।५३। ०	१०।२९।५४।२२	६। ८।३३। ५	५।१७।४१।३०	८।११।२४।४८	११। ३। ६।२२	१०। १।५४।२८	१४।५८	३।१३	१५।२०	२।४७।४३	३
४	६।१७।२६।४८	५।१७।२६।५४	७।१०।४९।२१	६।२८।२५।१४	१०।२९।५१।१५	६। ७।५९।५५	५।१७।४८।१७	८।११।२१।३७	११। ३। ४।५०	१०। १।५४।२०	१५।१४	४।१८	१५।५९	२।५१।३९	४
५	६।१८।२६।५६	६। २। ९।३२	७।११।३२।४८	६।२९।५७। २	१०।२९।४८।२०	६। ७।२८। ८	५।१७।५५। २	८।११।१८।२७	११। ३। ३।२१	१०। १।५४।१४	१५।३३	५।२४	१६।४२	२।५५।३६	५
६	६।१९।२७। ७	६।१६।४३।२२	७।१२।१६।१८	७। १।२८।२६	१०।२९।४५।३७	६। ६।५७।५२	५।१८। १।४४	८।११।१५।१६	११। ३। १।५४	१०। १।५४।१०	१५।५१	६।३१	१७।२९	२।५९।३३	६
७	६।२०।२७।१८	७। १। १।११	७।१२।५९।५२	७। २।५९।२७	१०।२९।४३। ७	६। ६।२९।२०	५।१८। ८।२४	८।११।१२। ५	११। ३। ०।२९	१०। १।५४। ८	१६। ९	७।३८	१८।२१	३। ३।२९	७
८	६।२१।२७।३२	७।१४।५७।३३	७।१३।४३।३०	७। ४।३०। २	१०।२९।४०।४८	६। ६। २।३९	५।१८।१५। १	८।११। ८।५४	११। २।५९। ७	१०। १।५४। ८	१६।२७	८।४१	१९।१७	३। ७।२६	८
९	६।२२।२७।४७	७।२८।२९।२७	७।१४।२७।१२	७। ६। ०।१३	१०।२९।३८।४१	६। ५।३७।५९	५।१८।२१।३६	८।११। ५।४४	११। २।५७।४८	१०। १।५४।११	१६।४४	९।३९	२०।१५	३।११।२२	९
१०	६।२३।२८। ५	८।११।३६।२२	७।१५।१०।५७	७। ७।३०। ०	१०।२९।३६।४७	६। ५।१५।२६	५।१८।२८। ८	८।११। २।३३	११। २।५६।३१	१०। १।५४।१५	१७। १	१०।३१	२१।१४	३।१५।१९	१०
११	६।२४।२८।२३	८।२४।२०। १	७।१५।५४।४६	७। ८।५९।२१	१०।२९।३५। ५	६। ४।५५। ६	५।१८।३४।३७	८।१०।५९।२२	११। २।५५।१६	१०। १।५४।२२	१७।१८	११।१६	२२।१२	३।१९।१५	११
१२	६।२५।२८।४३	९। ६।४३।४४	७।१६।३८।३९	७।१०।२८।१७	१०।२९।३३।३६	६। ४।३७। ४	५।१८।४१। ३	८।१०।५६।११	११। २।५४। ५	१०। १।५४।३०	१७।३५	११।५५	२३। ७	३।२३।१२	१२
१३	६।२६।२९। ४	९।१८।५१।५६	७।१७।२२।३६	७।११।५६।४६	१०।२९।३२।१८	६। ४।२१।२३	५।१८।४७।२७	८।१०।५३। १	११। २।५२।५६	१०। १।५४।४१	१७।५१	१२।३०	-।-	३।२७। ८	१३
१४	६।२७।२९।२७	१०। ०।४९।३७	७।१८। ६।३६	७।१३।२४।४६	१०।२९।३१।१४	६। ४। ८। ८	५।१८।५३।४८	८।१०।४९।५०	११। २।५१।४९	१०। १।५४।५३	१८। ७	१३। २	०। १	३।३१। ५	१४
१५	६।२८।२९।५१	१०।१२।४१।५३	७।१८।५०।३९	७।१४।५२।१७	१०।२९।३०।२१	६। ३।५७।१९	५।१९। ०। ५	८।१०।४६।३९	११। २।५०।४६	१०। १।५५। ८	१८।२२	१३।३२	०।५२	३।३५। २	१५
१६	६।२९।३०।१६	१०।२४।३३।३८	७।१९।३४।४५	७।१६।१९।१६	१०।२९।२९।४१	६। ३।४८।५१	५।१९। ६।२०	८।१०।४३।२८	११। २।४९।४५	१०। १।५५।२५	१८।३६	१४। २	१।४३	३।३८।५८	१६
१७	७। ०।३०।४३	११। ६।२९।२०	७।२०।१८।५५	७।१७।४५।४०	१०।२९।२९।१४	६। ३।४३। ७	५।१९।१२।३१	८।१०।४०।१८	११। २।४८।४७	१०। १।५५।४४	१८।५३	१४।३२	२।३४	३।४२।५५	१७
१८	७। १।३१।११	११।१८।३२।४६	७।२१। ३। ८	७।१९।११।२६	१०।२९।२८।५९	६। ३।३९।४३	५।१९।१८।३९	८।१०।३७। ७	११। २।४७।५१	१०। १।५६। ५	१९। ७	१५। ४	३।२६	३।४६।५१	१८
१९	७। २।३१।४०	०। ०।४६।५२	७।२१।४७।२४	७।२०।३६।३२	१०।२९।२८।५६	६। ३।३८।४६	५।१९।२४।४४	८।१०।३३।५६	११। २।४६।५९	१०। १।५६।२८	१९।२१	१५।३९	४।२०	३।५०।४८	१९
२०	७। ३।३२।११	०।१३।१३।४२	७।२२।३१।४५	७।२२। ०।५१	१०।२९।२९। ६	६। ३।४०।१४	५।१९।३०।४५	८।१०।३०।४५	११। २।४६। ९	१०। १।५६।५३	१९।३५	१६।१८	५।१६	३।५४।४४	२०
२१	७। ४।३२।४४	०।२५।५४।१६	७।२३।१६। ८	७।२३।२४।२०	१०।२९।२९।२८	६। ३।४४। ७	५।१९।३६।४३	८।१०।२७।३५	११। २।४५।२२	१०। १।५७।२०	१९।४९	१७। ३	६।१४	३।५८।४१	२१
२२	७। ५।३३।१८	१। ८।४८।४७	७।२४। ०।३५	७।२४।४६।५२	१०।२९।३०। २	६। ३।५०।२०	५।१९।४२।३८	८।१०।२४।२४	११। २।४४।३७	१०। १।५७।४९	२०। २	१७।५३	७।१३	४। २।३७	२२
२३	७। ६।३३।५३	१।२१।५६।४४	७।२४।४५। ६	७।२६। ८।२०	१०।२९।३०।४९	६। ३।५८।५३	५।१९।४८।२९	८।१०।२१।१३	११। २।४३।५५	१०। १।५८।२०	२०।१५	१८।४९	८।१०	४। ६।३४	२३
२४	७। ७।३४।३०	२। ५।१७। ८	७।२५।२९।४०	७।२७।२८।३५	१०।२९।३१।४९	६। ४। ९।४१	५।१९।५४।१७	८।१०।१८। २	११। २।४३।१७	१०। १।५८।५३	२०।२७	१९।४९	९। ६	४।१०।३१	२४
२५	७। ८।३५। ८	२।१८।४८।५३	७।२६।१४।१७	७।२८।४७।२७	१०।२९।३३। ०	६। ४।२२।४१	५।२०। ०। ०	८।१०।१४।५२	११। २।४२।४२	१०। १।५९।२८	२०।४०	२०।५२	९।५७	४।१४।२७	२५
२६	७। ९।३५।४८	३। २।३०।५५	७।२६।५८।५८	८। ०। ४।४५	१०।२९।३४।२४	६। ४।३७।५०	५।२०। ५।४०	८।१०।११।४१	११। २।४२।१०	१०। २। ०। ५	२०।५१	२१।५६	१०।४३	४।१८।२४	२६
२७	७।१०।३६।३०	३।१६।२२।१४	७।२७।४३।४२	८। १।२०।१६	१०।२९।३६। ०	६। ४।५५। ५	५।२०।११।१७	८।१०। ८।३०	११। २।४१।४०	१०। २। ०।४४	२१। ३	२३। ०	११।२५	४।२२।२०	२७
२८	७।११।३७।१३	४। ०।२१।५६	७।२८।२८।२९	८। २।३३।४४	१०।२९।३७।४९	६। ५।१४।२१	५।२०।१६।४९	८।१०। ५।१९	११। २।४१।१४	१०। २। १।२६	२१।१४	-।-	१२। ४	४।२६।१७	२८
२९	७।१२।३७।५८	४।१४।२८।५४	७।२९।१३।२०	८। ३।४४।५१	१०।२९।३९।४९	६। ५।३५।३४	५।२०।२२।१८	८।१०। २। ८	११। २।४०।५०	१०। २। २। ९	२१।२४	०। २	१२।४२	४।३०।१३	२९
३०	७।१३।३८।४४	४।२८।४१।३८	७।२९।५८।१५	८। ४।५३।१८	१०।२९।४२। २	६। ५।५८।४१	५।२०।२७।४२	८। ९।५८।५७	११। २।४०।३०	१०। २। २।५४	२१।३४	१। ५	१३।१८	४।३४।१०	३०

दिसम्बर सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।५०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।१०।१३।३०

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु(व.) रा.अं.क.वि.	शुक्र(व.) रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून(व.) रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१	७।१४।३९।३२	५।१२।५७।४१	८। ०।४३।१२	८। ५।५८।४०	१०।२९।४४।२६	६। ६।२३।३६	५।२०।३३। २	८। ९।५५।४७	११। २।४०।१२	१०। २। ३।४१	२१।४४	२। ७	१३।५६	४।३८। ६	१
२	७।१५।४०।२१	५।२७।१४।२५	८। १।२८।१३	८। ७। ०।३०	१०।२९।४७। ३	६। ६।५०।१८	५।२०।३८।१८	८। ९।५२।३६	११। २।३९।५८	१०। २। ४।३०	२१।५३	३।११	१४।३६	४।४२। ३	२
३	७।१६।४१।१२	६।११।२७।३०	८। २।१३।१८	८। ७।५८।१९	१०।२९।४९।५२	६। ७।१८।४२	५।२०।४३।३०	८। ९।४९।२५	११। २।३९।४६	१०। २। ५।२१	२२। २	४।१५	१५।२०	४।४६। ०	३
४	७।१७।४२। ४	६।२५।३३।४७	८। २।५८।२६	८। ८।५१।३२	१०।२९।५२।५३	६। ७।४८।४३	५।२०।४८।३८	८। ९।४६।१४	११। २।३९।३८	१०। २। ६।१५	२२।११	५।२०	१६। ९	४।४९।५६	४
५	७।१८।४२।५८	७। ९।२५।५९	८। ३।४३।३७	८। ९।३९।३१	१०।२९।५६। ६	६। ८।२०।१९	५।२०।५३।४१	८। ९।४३। ४	११। २।३९।३३	१०। २। ७।१०	२२।१९	६।२४	१७। २	४।५३।५३	५
६	७।१९।४३।५२	७।२३। ३।३१	८। ४।२८।५१	८।१०।२१।३२	१०।२९।५९।३०	६। ८।५३।२५	५।२०।५८।४०	८। ९।३९।५३	११। २।३९।३१	१०। २। ८। ७	२२।२६	७।२४	१८। ०	४।५७।४९	६

दिसम्बर सन् २०१० ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।५०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।१०।१३।३०

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तिथि
७	७।२०।४४।४७	८।६।२२।५१	८।५।१४।८	८।२०।५६।५०	११।०।३।८	६।९।२७।५८	५।२१।३।३४	८।९।३६।४२	११।२।३९।३२	१०।२।९।६	२२।३३	८।१९	१८।५९	५।१।४६	७
८	७।२१।४५।४४	८।१९।२२।५६	८।५।५९।२८	८।२१।२४।३५	११।०।६।५६	६।१०।३।५५	५।२१।८।२४	८।९।३३।३१	११।२।३९।३६	१०।२।१०।७	२२।४०	९।७	१९।५८	५।५।४२	८
९	७।२२।४६।४१	९।२।४।७	८।६।४४।५२	८।२१।४३।५६	११।०।१०।५५	६।१०।४९।१२	५।२१।१३।९	८।९।३०।२१	११।२।३९।४३	१०।२।११।१०	२२।४६	९।४९	२०।५५	५।९।३९	९
१०	७।२३।४७।३९	९।१४।२८।१२	८।७।३०।१८	८।२१।५४।३	११।०।१५।७	६।११।१९।४६	५।२१।१७।४९	८।९।२७।१०	११।२।३९।५३	१०।२।१२।१४	२२।५२	१०।२७	२१।५०	५।१३।३५	१०
११	७।२४।४८।३८	९।२६।३८।४	८।८।१५।४७	८।२१।५४।२	११।०।१९।२९	६।११।५९।३५	५।२१।२२।२५	८।९।२३।५९	११।२।४०।७	१०।२।१३।२१	२२।५८	११।०	२२।४३	५।१७।३२	११
१२	७।२५।४९।३७	१०।८।३७।३२	८।९।१।२०	८।२१।४३।१८	११।०।२४।३	६।१२।४०।३५	५।२१।२६।५५	८।९।२०।४८	११।२।४०।२४	१०।२।१४।२९	२३।२	११।३१	२३।३४	५।२१।२९	१२
१३	७।२६।५०।३७	१०।२०।३०।५९	८।९।४६।५५	८।२१।२१।१४	११।०।२८।४९	६।१३।२२।४४	५।२१।३१।२१	८।९।१७।३८	११।२।४०।४३	१०।२।१५।३९	२३।७	१२।१	-।-	५।२५।२५	१३
१४	७।२७।५१।३७	११।२।२२।१२	८।१०।३२।३२	८।२०।४७।३७	११।०।३३।४५	६।१४।५।५९	५।२१।३५।४२	८।९।१४।२७	११।२।४१।६	१०।२।१६।५१	२३।११	१२।३१	०।२५	५।२९।२२	१४
१५	७।२८।५२।३८	११।१४।१८।५५	८।११।१८।१३	८।२०।१।३७	११।०।३८।५२	६।१४।५०।१८	५।२१।३९।५७	८।९।११।१६	११।२।४१।३२	१०।२।१८।५	२३।१४	१३।२	१।१७	५।३३।१८	१५
१६	७।२९।५३।४०	११।२६।२२।४७	८।१२।३।५६	८।९।६।४८	११।०।४४।११	६।१५।३५।३८	५।२१।४४।८	८।९।८।५	११।२।४२।१	१०।२।१९।२०	२३।१८	१३।३६	२।९	५।३७।१५	१६
१७	८।०।५४।४२	०।८।३८।५५	८।१२।४९।४२	८।८।१।२०	११।०।४९।३९	६।१६।२१।५७	५।२१।४८।१३	८।९।४।५४	११।२।४२।३३	१०।२।२०।३८	२३।२०	१४।१३	३।४	५।४१।११	१७
१८	८।१।५५।४४	०।२१।१०।४४	८।१३।३५।३०	८।६।४७।५५	११।०।५५।१९	६।१७।९।१२	५।२१।५२।१४	८।९।१।४३	११।२।४३।८	१०।२।२१।५७	२३।२२	१४।५४	४।०	५।४५।८	१८
१९	८।२।५६।४७	१।४।०।४०	८।१४।२१।२१	८।५।२८।४५	११।१।१।९	६।१७।५७।२३	५।२१।५६।९	८।८।५८।३२	११।२।४३।४६	१०।२।२३।१७	२३।२४	१५।४२	४।५९	५।४९।४	१९
२०	८।३।५७।५०	१।१७।९।५२	८।१५।७।१५	८।४।६।२४	११।१।७।१०	६।१८।४६।२६	५।२१।५९।५९	८।८।५५।२१	११।२।४४।२७	१०।२।२४।४०	२३।२५	१६।३६	५।५८	५।५३।१	२०
२१	८।४।५८।५४	२।०।३८।८	८।१५।५३।१२	८।२।४३।४०	११।१।१३।२१	६।१९।३६।२०	५।२२।३।४३	८।८।५२।११	११।२।४५।१२	१०।२।२६।४	२३।२६	१७।३६	६।५५	५।५६।५८	२१
२२	८।५।५९।५९	२।१४।२३।५२	८।१६।३९।११	८।१।२३।१९	११।१।१९।४२	६।२०।२७।३	५।२२।७।२२	८।८।४९।०	११।२।४५।५९	१०।२।२७।२९	२३।२६	१८।४०	७।४९	६।०।५४	२२
२३	८।७।१।४	२।२८।२४।९	८।१७।२५।१२	८।०।७।५३	११।१।२६।१३	६।२१।१८।३३	५।२२।१०।५६	८।८।४५।४९	११।२।४६।५०	१०।२।२८।५७	२३।२६	१९।४६	८।३९	६।४।५१	२३
२४	८।८।२।१०	३।१२।३५।१२	८।१८।११।१७	७।२८।५९।३३	११।१।३२।५५	६।२२।१०।४९	५।२२।१४।२४	८।८।४२।३८	११।२।४७।४३	१०।२।३०।२६	२३।२५	२०।५१	९।२४	६।८।४७	२४
२५	८।९।३।१६	३।२६।५२।४५	८।१८।५७।२३	७।२७।५९।५९	११।१।३९।४६	६।२३।३।४८	५।२२।१७।४७	८।८।३९।२८	११।२।४८।३९	१०।२।३१।५६	२३।२४	२१।५६	१०।५	६।१२।४४	२५
२६	८।१०।४।२२	४।११।१२।३४	८।१९।४३।३३	७।२७।१०।१९	११।१।४६।४७	६।२३।५७।३०	५।२२।२१।४	८।८।३६।१७	११।२।४९।३९	१०।२।३३।२८	२३।२३	२२।५९	१०।४३	६।१६।४०	२६
२७	८।११।५।२९	४।२५।३०।४१	८।२०।२९।४५	७।२६।३१।१	११।१।५३।५७	६।२४।५१।५२	५।२२।२४।१५	८।८।३३।६	११।२।५०।४१	१०।२।३५।२	२३।२१	-।-	११।२०	६।२०।३७	२७
२८	८।१२।६।३७	५।९।४४।२८	८।२१।१५।५९	७।२६।२।४३	११।२।१।१८	६।२५।४६।५३	५।२२।२७।२१	८।८।२९।५५	११।२।५१।४६	१०।२।३६।३७	२३।१८	०।१	११।५७	६।२४।३३	२८
२९	८।१३।७।४५	५।२३।५१।२	८।२२।२।१३	७।२५।४४।४८	११।२।८।४७	६।२६।४२।३१	५।२२।३०।२१	८।८।२६।४४	११।२।५२।५५	१०।२।३८।१४	२३।१५	१।४	१२।३६	६।२८।३०	२९
३०	८।१४।८।५४	६।७।४८।४६	८।२२।४८।३३	७।२५।३७।२	११।२।१६।२६	६।२७।३८।४५	५।२२।३३।१५	८।८।२३।३३	११।२।५४।६	१०।२।३९।५२	२३।१२	२।७	१३।१८	६।३२।२७	३०
३१	८।१५।१०।३	६।२१।३६।२४	८।२३।३४।५८	७।२५।३८।४७	११।२।२४।१५	६।२८।३५।३३	५।२२।३६।३	८।८।२०।२२	११।२।५५।२०	१०।२।४१।३२	२३।८	३।१०	१४।३	६।३६।२३	३१

जनवरी सन् २०११ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०।५५, वेंकटेश (प्लूटो) ८।११।१८।५८

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तिथि
१	८।१६।११।१३	७।५।१२।५३	८।२४।२१।२२	७।२५।४९।२२	११।२।३२।१२	६।२९।३२।५५	५।२२।३८।४५	८।८।१७।११	११।२।५६।३७	१०।२।४३।१३	२३।३	४।१३	१४।५४	६।४०।२०	१
२	८।१७।१२।२३	७।१८।३७।२३	८।२५।७।४९	७।२६।८।४	११।२।४०।१९	७।०।३०।४८	५।२२।४१।२१	८।८।१४।०	११।२।५७।५७	१०।२।४४।५५	२२।५८	५।१३	१५।४९	६।४४।१६	२
३	८।१८।१३।३४	८।१।४९।७	८।२५।५४।१८	७।२६।३४।७	११।२।४८।३५	७।१।२९।१२	५।२२।४३।५२	८।८।१०।४९	११।२।५९।२०	१०।२।४६।३९	२२।५३	६।९	१६।४६	६।४८।१३	३
४	८।१९।१४।४५	८।१४।४७।३०	८।२६।४०।५०	७।२७।६।४८	११।२।५७।०	७।२।२८।४	५।२२।४६।१६	८।८।७।३८	११।३।०।४६	१०।२।४८।२५	२२।४७	६।५९	१७।४५	६।५२।९	४
५	८।२०।१५।५६	८।२७।३२।१४	८।२७।२७।२२	७।२७।४५।२८	११।३।५।३३	७।३।२७।२५	५।२२।४८।३४	८।८।४।२८	११।३।२।१५	१०।२।५०।१२	२२।४१	७।४४	१८।४३	६।५६।६	५
६	८।२१।१७।६	९।१०।३।३३	८।२८।१३।५८	७।२८।२९।२८	११।३।१४।१५	७।४।२७।१३	५।२२।५०।४६	८।८।१।१७	११।३।३।४७	१०।२।५२।०	२२।३४	८।२३	१९।३९	७।०।३	६
७	८।२२।१८।१६	९।२२।२२।१५	८।२९।०।३५	७।२९।१८।१३	११।३।२३।६	७।५।२७।२७	५।२२।५२।५२	८।७।५८।६	११।३।५।२१	१०।२।५३।४९	२२।२७	८।५८	२०।३३	७।३।५९	७
८	८।२३।१९।२६	१०।४।२९।५४	८।२९।४७।१५	८।०।११।१४	११।३।३२।५	७।६।२८।६	५।२२।५४।५१	८।७।५४।५५	११।३।६।५८	१०।२।५५।४०	२२।२०	९।३०	२१।२५	७।७।५६	८
९	८।२४।२०।३६	१०।१६।२८।५१	९।०।३३।५६	८।१।८।३	११।३।४१।१२	७।७।२९।१०	५।२२।५६।४५	८।७।५१।४५	११।३।८।३८	१०।२।५७।३१	२२।१२	१०।१	२२।१६	७।११।५२	९
१०	८।२५।२१।४५	१०।२८।२२।१३	९।१।२०।३९	८।२।८।१४	११।३।५०।२७	७।८।३०।३६	५।२२।५८।३२	८।७।४८।३४	११।३।१०।२१	१०।२।५९।२४	२२।३	१०।३१	२३।७	७।१५।४९	१०
११	८।२६।२२।५४	११।१०।१३।४५	९।२।७।२४	८।३।११।२७	११।३।५९।५०	७।९।३२।२१	५।२३।०।१३	८।७।४५।२३	११।३।१२।६	१०।३।१।१९	२१।५४	११।१	२३।५९	७।१९।४५	११
१२	८।२७।२४।२	११।२२।७।४७	९।२।५४।११	८।४।१७।२१	११।४।९।२२	७।१०।३४।२६	५।२३।१।४७	८।७।४२।१२	११।३।१३।५४	१०।३।३।१४	२१।४५	११।३३	-।-	७।२३।४२	१२
१३	८।२८।२५।१०	०।४।८।५८	९।३।४१।०	८।५।२५।४१	११।४।१९।०	७।११।३७।७	५।२३।३।१४	८।७।३९।२	११।३।१५।४५	१०।३।५।१०	२१।३५	१२।८	०।५२	७।२७।३८	१३
१४	८।२९।२६।१७	०।१६।२२।७	९।४।२७।५०	८।६।३६।१२	११।४।२८।४७	७।१२।३९।५९	५।२३।४।३६	८।७।३५।५१	११।३।१७।३८	१०।३।७।८	२१।२५	१२।४७	१।४७	७।३१।३५	१४
१५	९।०।२७।२३	०।२८।५२।४८	९।५।१४।४१	८।७।४८।४१	११।४।३८।४१	७।१३।४३।११	५।२३।५।५१	८।७।३२।४०	११।३।१९।३४	१०।३।९।६	२१।१४	१३।३१	२।४४	७।३५।३२	१५

जनवरी सन् २०११ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भ चित्रापक्षीय अयनांश: २४।०।१५, वेंकटेश (प्लूटो) ८।११।१८।५८

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
१६	९।१।२८।२९	१।११।४३।४	९।६।१।३४	८।९।२।५७	११।४।४८।४२	७।१४।४६।४१	५।२३।७।०	८।७।२९।२१	११।३।२१।३२	१०।३।११।६	२१।३	१४।२१	३।४२	७।३९।२८	१६
१७	९।२।२९।३५	१।२४।५५।५२	९।६।४८।२९	८।१०।१८।५१	११।४।५८।५१	७।१५।५०।३०	५।२३।८।३	८।७।२६।११	११।३।२३।३३	१०।३।१३।६	२०।५२	१५।१८	४।४०	७।४३।२५	१७
१८	९।३।३०।३९	२।८।३४।३४	९।७।३५।२५	८।११।३६।१२	११।५।९।६	७।१६।५४।३७	५।२३।८।५९	८।७।२३।८	११।३।२५।३६	१०।३।१५।८	२०।४०	१६।२१	५।३६	७।४७।२१	१८
१९	९।४।३१।४३	२।२२।३७।२९	९।८।२२।२३	८।१२।५४।५५	११।५।१९।२९	७।१७।५९।१	५।२३।९।४९	८।७।१९।५७	११।३।२७।४२	१०।३।१७।११	२०।२८	१७।२७	६।२८	७।५१।१८	१९
२०	९।५।३२।४६	३।७।१।२७	९।९।९।२३	८।१४।१४।५२	११।५।२९।५९	७।१९।३।४२	५।२३।१०।३३	८।७।१६।४६	११।३।२९।५०	१०।३।१९।१५	२०।१६	१८।३४	७।१६	७।५५।१४	२०
२१	९।६।३३।४९	३।२१।४१।५	९।९।५६।२४	८।१५।३५।५८	११।५।४०।३५	७।२०।८।४०	५।२३।११।१०	८।७।१३।३६	११।३।३२।१	१०।३।२१।१९	२०।३	१९।४१	८।०	७।५९।११	२१
२२	९।७।३४।५१	४।६।२९।८	९।१०।४३।२६	८।१६।५८।१०	११।५।५१।१८	७।२१।१३।५३	५।२३।११।४०	८।७।१०।२५	११।३।३४।१४	१०।३।२३।२५	१९।४९	२०।४७	८।४१	८।३।७	२२
२३	९।८।३५।५२	४।२१।१७।३८	९।११।३०।३०	८।१८।२१।२२	११।६।२।८	७।२२।१९।२२	५।२३।१२।४	८।७।७।१४	११।३।३६।२९	१०।३।२५।३१	१९।३६	२१।५२	९।१९	८।७।४	२३
२४	९।९।३६।५३	५।५।५९।६	९।१२।१७।३५	८।१९।४५।३३	११।६।१३।४	७।२३।२५।५	५।२३।१२।२२	८।७।४।३	११।३।३८।४७	१०।३।२७।३७	१९।२२	२२।५६	९।५८	८।११।१	२४
२५	९।१०।३७।५४	५।२०।२७।३५	९।१३।४।४१	८।२१।१०।३७	११।६।२४।६	७।२४।३१।३	५।२३।१२।३३	८।७।०।५३	११।३।४१।७	१०।३।२९।४५	१९।७	२४।०	१०।३७	८।१४।५७	२५
२६	९।११।३८।५४	६।४।३९।१४	९।१३।५१।४९	८।२२।३६।३५	११।६।३५।१५	७।२५।३७।१४	५।२३।१२।३८	८।६।५७।४२	११।३।४३।२९	१०।३।३१।५३	१८।५३	-।-	११।१८	८।१८।५४	२६
२७	९।१२।३९।५३	६।१८।३२।२०	९।१४।३८।५७	८।२४।३।२२	११।६।४६।३०	७।२६।४३।३९	५।२३।१२।३६	८।६।५४।३१	११।३।४५।५४	१०।३।३४।२	१८।३७	१।४	१२।२	८।२२।५०	२७
२८	९।१३।४०।५२	७।२।६।५९	९।१५।२६।७	८।२५।३०।५९	११।६।५७।५१	७।२७।५०।१७	५।२३।१२।२८	८।६।५१।२०	११।३।४८।२०	१०।३।३६।१२	१८।२२	२।६	१२।५१	८।२६।४७	२८
२९	९।१४।४१।५१	७।१५।२७।२६	९।१६।१३।१९	८।२६।५९।२२	११।७।९।१८	७।२८।५७।७	५।२३।१२।१३	८।६।४८।१०	११।३।५०।४९	१०।३।३८।२२	१८।६	३।७	१३।४३	८।३०।४३	२९
३०	९।१५।४२।४९	७।२८।२६।२८	९।१७।०।३२	८।२८।२८।३१	११।७।२०।५१	८।०।४।९	५।२३।११।५२	८।६।४४।५९	११।३।५३।२०	१०।३।४०।३३	१७।५०	४।३	१४।३९	८।३४।४०	३०
३१	९।१६।४३।४६	८।११।१५।३	९।१७।४७।४५	८।२९।५८।२५	११।७।३२।३०	८।१।११।२२	५।२३।११।२५	८।६।४१।४८	११।३।५५।५३	१०।३।४२।४५	१७।३४	४।५५	१५।३६	८।३८।३६	३१

फरवरी सन् २०११ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।१।१०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।१२।२२।१३

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	९।१७।४४।४२	८।२३।५५।५३	९।१८।३५।०	९।१।२९।३	११।७।४४।१४	८।२।१८।४६	५।२३।१०।५१	८।६।३८।३७	११।३।५८।२८	१०।३।४४।५७	१७।१७	५।४०	१६।३४	८।४२।३३	१
२	९।१८।४५।३७	९।६।१८।२४	९।१९।२२।१६	९।३।०।२६	११।७।५६।५	८।३।२६।२१	५।२३।१०।१०	८।६।३५।२६	११।४।१।६	१०।३।४७।१०	१७।०	६।२१	१७।३०	८।४६।३०	२
३	९।१९।४६।३२	९।१८।३५।४४	९।२०।९।३३	९।४।३२।३३	११।८।८।०	८।४।३४।६	५।२३।९।२४	८।६।३२।१५	११।४।३।४५	१०।३।४९।२३	१६।४३	६।५७	१८।२४	८।५०।२६	३
४	९।२०।४७।२५	१०।०।४४।५१	९।२०।५६।५१	९।६।५।२५	११।८।२०।१	८।५।४२।०	५।२३।८।३०	८।६।२९।५	११।४।६।२६	१०।३।५१।३७	१६।२५	७।३१	१९।१७	८।५४।२३	४
५	९।२१।४८।१७	१०।१२।४६।४१	९।२१।४४।९	९।७।३९।१	११।८।३२।७	८।६।५०।४	५।२३।७।३१	८।६।२५।५४	११।४।९।९	१०।३।५३।५१	१६।७	८।२	२०।९	८।५८।१९	५
६	९।२२।४९।८	१०।२४।४४।२१	९।२२।३१।२८	९।९।१३।२१	११।८।४४।१८	८।७।५८।१७	५।२३।६।२५	८।६।२२।४३	११।४।११।५४	१०।३।५६।६	१५।४९	८।३२	२१।०	९।२।१६	६
७	९।२३।४९।५८	११।६।३५।१६	९।२३।१८।४८	९।१०।४८।२७	११।८।५६।३५	८।९।६।३९	५।२३।५।१३	८।६।१९।३२	११।४।१४।४१	१०।३।५८।२१	१५।३१	९।२	२१।५१	९।६।१२	७
८	९।२४।५०।४५	११।१८।२६।८	९।२४।६।८	९।१२।२४।१८	११।९।८।५६	८।१०।१५।९	५।२३।३।५५	८।६।१६।२२	११।४।१७।२९	१०।४।०।३६	१५।१२	९।३३	२२।४३	९।१०।९	८
९	९।२५।५१।३१	०।०।१८।५४	९।२४।५३।३०	९।१४।०।५५	११।९।२१।२२	८।११।२३।४८	५।२३।२।३१	८।६।१३।११	११।४।२०।१९	१०।४।२।५१	१४।५३	१०।६	२३।३६	९।१४।५	९
१०	९।२६।५२।१७	०।१२।१७।२८	९।२५।४०।५१	९।१५।३८।१९	११।९।३३।५२	८।१२।३२।३४	५।२३।१।०	८।६।१०।०	११।४।२३।११	१०।४।५।७	१४।३४	१०।४३	-।-	९।१८।२	१०
११	९।२७।५३।१	०।२४।२६।२१	९।२६।२८।१२	९।१७।१६।३०	११।९।४६।२८	८।१३।४१।२९	५।२२।५९।२३	८।६।६।४९	११।४।२६।४	१०।४।७।२३	१४।१४	११।२४	०।३१	९।२१।५९	११
१२	९।२८।५३।४३	१।६।५०।२६	९।२७।१५।३४	९।१८।५५।३०	११।९।५९।७	८।१४।५०।३०	५।२२।५७।४१	८।६।३।३९	११।४।२८।५९	१०।४।९।३९	१३।५५	१२।१०	१।२७	९।२५।५५	१२
१३	९।२९।५४।२३	१।१९।३४।३८	९।२८।२।५६	९।२०।३५।१८	११।१०।११।५१	८।१५।५९।३९	५।२२।५५।५२	८।६।०।२८	११।४।३१।५६	१०।४।११।५५	१३।३५	१३।३	२।२४	९।२९।५२	१३
१४	१०।०।५५।१	२।२।४३।२३	९।२८।५०।१९	९।२२।१५।५७	११।१०।२४।३९	८।१७।८।५५	५।२२।५३।५८	८।५।५७।१७	११।४।३४।५४	१०।४।१४।१२	१३।१५	१४।१	३।२०	९।३३।४८	१४
१५	१०।१।५५।३९	२।१६।१९।५४	९।२९।३७।४२	९।२३।५७।२७	११।१०।३७।३२	८।१८।१८।१८	५।२२।५१।५८	८।५।५४।६	११।४।३७।५४	१०।४।१६।२९	१२।५४	१५।४	४।१३	९।३७।४५	१५
१६	१०।२।५६।१४	३।०।२५।२७	१०।०।२५।४	९।२५।३९।४१	११।१०।५०।२८	८।१९।२७।४७	५।२२।४९।५२	८।५।५०।५६	११।४।४०।५५	१०।४।१८।४६	१२।३४	१६।११	५।३	९।४१।४१	१६
१७	१०।३।५६।४८	३।१४।५८।२३	१०।१।१२।२७	९।२७।२३।४	११।११।३।२९	८।२०।३७।२३	५।२२।४७।४०	८।५।४७।४५	११।४।४३।५७	१०।४।२१।२	१२।१३	१७।१८	५।४९	९।४५।३८	१७
१८	१०।४।५७।२१	३।२९।५३।४७	१०।१।५९।५०	९।२९।७।३	११।११।१६।३३	८।२१।४७।६	५।२२।४५।२३	८।५।४४।३४	११।४।४७।१	१०।४।२३।१९	११।५२	१८।२६	६।३२	९।४९।३४	१८
१९	१०।५।५७।५१	४।१५।३।११	१०।२।४७।१४	१०।०।५२।१५	११।११।२९।४१	८।२२।५६।५५	५।२२।४३।०	८।५।४१।२३	११।४।५०।६	१०।४।२५।३५	११।३१	१९।३३	७।१२	९।५३।३१	१९
२०	१०।६।५८।२१	५।०।१६।३८	१०।३।३४।३७	१०।२।३८।१२	११।११।४२।५२	८।२४।६।५०	५।२२।४०।३२	८।५।३८।१३	११।४।५३।१२	१०।४।२७।५२	११।९	२०।४०	७।५२	९।५७।२८	२०
२१	१०।७।५८।४८	५।१५।२२।५५	१०।४।२२।०	१०।४।२५।४	११।११।५६।८	८।२५।१६।५१	५।२२।३७।५८	८।५।३५।२	११।४।५६।२०	१०।४।३०।९	१०।४८	२१।४७	८।३२	१०।१।२४	२१
२२	१०।८।५९।१४	६।०।१२।४१	१०।५।९।२३	१०।६।१२।५२	११।१२।९।२६	८।२६।२६।५८	५।२२।३५।१९	८।५।३१।५१	११।४।५९।२९	१०।४।३२।२५	१०।२६	२२।५३	९।१४	१०।५।२१	२२
२३	१०।९।५९।३९	६।१४।४०।४	१०।५।५६।४७	१०।८।१।३५	११।१२।२२।४९	८।२७।३७।११	५।२२।३२।३५	८।५।२८।४०	११।५।२।३९	१०।४।३४।४१	१०।४	२३।५८	९।५९	१०।९।१७	२३
२४	१०।११।०।३	६।२८।४३।१३	१०।६।४४।१०	१०।९।५१।१२	११।१२।३६।१४	८।२८।४७।२९	५।२२।२९।४५	८।५।२५।३०	११।५।५।५०	१०।४।३६।५७	९।४२	-।-	१०।४७	१०।१३।१४	२४

फरवरी सन् २०११ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।१।१०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।१२।२२।३

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि (व.) रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
२५	१०।१२। ०।२५	७।१२।१७।१२	१०। ७।३३।३४	१०।११।४१।४४	११।१२।४९।४३	८।२९।५७।५३	५।२१।२६।५०	८। ५।२२।१९	११। ५। ९। ४	१०। ४।३९।१३	९।२०	१। ०	११।३९	१०।१७।१०	२५
२६	१०।१३। ०।४६	७।२५।२९।११	१०। ८।२०।५७	१०।१३।३३। ८	११।१३। ३।१५	९। १। ८।२२	५।२१।२३।४९	८। ५।१९। ८	११। ५।१२।१७	१०। ४।४१।२८	८।५८	१।५८	१२।३४	१०।२१। ७	२६
२७	१०।१४। १। ६	८। ८।२०।४७	१०। ९। ६।२०	१०।१५।२५।२२	११।१३।१६।५१	९। २।१८।५५	५।२१।२०।४६	८। ५।१५।५७	११। ५।१५।३१	१०। ४।४३।४४	८।३५	२।५२	१३।३१	१०।२५। ३	२७
२८	१०।१५। १।२५	८।२०।५५।४७	१०। ९।५३।४३	१०।१७।१८।२४	११।१३।३०।२९	९। ३।२९।३४	५।२१।१७।३६	८। ५।१२।४७	११। ५।१८।४७	१०। ४।४५।५९	८।१३	३।३९	१४।२८	१०।२९। ०	२८

मार्च सन् २०११ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।१।१४, वेंकटेश (प्लूटो) ८।१३।५।१५

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि (व.) रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	१०।१६। १।४०	९। ३।१७।४९	१०।१०।४१। ४	१०।१९।११।१०	११।१३।४४।१०	९। ४।४०।१७	५।२१।१४।२२	८। ५। ९।३६	११। ५।२२। ३	१०। ४।४८।१४	७।५०	४।२१	१५।२४	१०।३२।५७	१
२	१०।१७। १।५५	९।१५।३०। १	१०।११।२८।२८	१०।२१। ६।३६	११।१३।५७।५४	९। ५।५१। ४	५।२१।११। ३	८। ५। ६।२५	११। ५।२५।२०	१०। ४।५०।२९	७।२७	४।५८	१६।१९	१०।३६।५३	२
३	१०।१८। २। ९	९।२७।३४।५६	१०।१२।१५।५०	१०।२३। १।३५	११।१४।११।४१	९। ७। १।५६	५।२१। ७।४०	८। ५। ३।१४	११। ५।२८।३८	१०। ४।५२।४३	७। ५	५।३२	१७।१२	१०।४०।५०	३
४	१०।१९। २।२१	१०। ९।३४।३०	१०।१३। ३।११	१०।२४।५७। ०	११।१४।२५।३१	९। ८।१२।५१	५।२१। ४।१२	८। ५। ०। ३	११। ५।३१।५७	१०। ४।५४।५७	६।४२	६। ४	१८। ४	१०।४४।४६	४
५	१०।२०। २।३१	१०।२१।३०।१२	१०।१३।५०।३२	१०।२६।५१।२४	११।१४।३९।२३	९। ९।२३।५०	५।२१। ०।३९	८। ४।५६।५२	११। ५।३५।१७	१०। ४।५७।१०	६।१९	६।३४	१८।५५	१०।४८।४३	५
६	१०।२१। २।३९	११। ३।२३।१७	१०।१४।३७।५३	१०।२८।४८।३०	११।१४।५३।१८	९।१०।३४।५३	५।२०।५७। ३	८। ४।५३।४२	११। ५।३८।३७	१०। ४।५९।२३	५।५५	७। ४	१९।४६	१०।५२।३९	६
७	१०।२२। २।४५	११।१५।१५। ०	१०।१५।२५।१२	११। ०।४४।१३	११।१५। ७।१५	९।११।४६। ०	५।२०।५३।२२	८। ४।५०।३१	११। ५।४१।५८	१०। ५। १।३५	५।३२	७।३५	२०।३७	१०।५६।३६	७
८	१०।२३। २।४९	११।२७। ६।५९	१०।१६।१२।३२	११। २।३९।३५	११।१५।२१।१४	९।१२।५७। ९	५।२०।४९।३८	८। ४।४७।२०	११। ५।४५।२०	१०। ५। ३।४७	५। ९	८। ७	२१।३०	११। ०।३२	८
९	१०।२४। २।५२	०। ९। १।२१	१०।१६।५९।५०	११। ४।३४।२०	११।१५।३५।१६	९।१४। ८।२२	५।२०।४५।५०	८। ४।४४। ९	११। ५।४८।४२	१०। ५। ५।५८	४।४५	८।४३	२२।२४	११। ४।२९	९
१०	१०।२५। २।५२	०।२१। ०।५५	१०।१७।४७। ७	११। ६।२८। ९	११।१५।४९।१९	९।१५।१९।३८	५।२०।४१।५८	८। ४।४०।५९	११। ५।५२। ४	१०। ५। ८। ९	४।२२	९।२१	२३।१९	११। ८।२५	१०
११	१०।२६। २।५०	१। ३। ९।१४	१०।१८।३४।२३	११। ८।२०।४१	११।१६। ३।२५	९।१६।३०।५७	५।२०।३८। २	८। ४।३७।४८	११। ५।५५।२८	१०। ५।१०।१९	३।५८	१०। ५	-। -	११।१२।२२	११
१२	१०।२७। २।४५	१।१५।३०।३३	१०।१९।२१।४०	११।१०।११।३२	११।१६।१७।३३	९।१७।४२।१९	५।२०।३४। ३	८। ४।३४।३७	११। ५।५८।५१	१०। ५।१२।२८	३।३५	१०।५४	०।२४	११।१६।१९	१२
१३	१०।२८। २।३९	१।२८। ९।३१	१०।२०। ८।५४	११।१२। ०।१६	११।१६।३१।४२	९।१८।५३।४४	५।२०।३०। १	८। ४।३१।२६	११। ६। २।१५	१०। ५।१४।३७	३।११	११।४८	१। ८	११।२०।१७	१३
१४	१०।२९। २।३१	२।११।१०।५१	१०।२०।५६। ८	११।१३।४६।२७	११।१६।४५।५३	९।२०। ५।१२	५।२०।२५।५५	८। ४।२८।१६	११। ६। ५।४०	१०। ५।१६।४५	२।४८	१२।४७	२। १	११।२४।१२	१४
१५	११। ०। २।२०	२।२४।३८।४२	१०।२१।४३।२०	११।१५।२९।३५	११।१७। ०। ७	९।२१।१६।४२	५।२०।२१।४६	८। ४।२५। ५	११। ६। ९। ४	१०। ५।१८।५२	२।२४	१३।५०	२।५०	११।२८। ८	१५
१६	११। १। २। ७	३। ८।३५।४८	१०।२२।३०।३१	११।१७। ९।१२	११।१७।१४।२१	९।२२।२८।१६	५।२०।१७।३५	८। ४।२१।५४	११। ६।१२।२९	१०। ५।२०।५९	२। ०	१४।५५	३।३७	११।३२। ५	१६
१७	११। २। १।५२	३।२३। २।२५	१०।२३।१७।४१	११।१८।४४।४७	११।१७।२८।३७	९।२३।३९।५२	५।२०।१३।२१	८। ४।१८।४३	११। ६।१५।५४	१०। ५।२३। ५	१।३७	१६। १	४।२०	११।३६। १	१७
१८	११। ३। १।३५	४। ७।५५।२८	१०।२४। ४।५०	११।२०।१५।५२	११।१७।४२।५५	९।२४।५१।३०	५।२०। ९। ४	८। ४।१५।३३	११। ६।१९।२०	१०। ५।२५। ९	१।१३	१७। ८	५। २	११।३९।५८	१८
१९	११। ४। १।१५	४।२३। ८। ४	१०।२४।५१।५८	११।२१।४१।५८	११।१७।५७।१३	९।२६। ३।११	५।२०। ४।४४	८। ४।१२।२२	११। ६।२२।४५	१०। ५।२७।१३	०।४९	१८।१६	५।४२	११।४३।५४	१९
२०	११। ५। ०।५३	५। ८।३०। १	१०।२५।३९। ४	११।२३। २।३७	११।१८।११।३३	९।२७।१४।५५	५।२०। ०।२२	८। ४। ९।११	११। ६।२६।१०	१०। ५।२९।१६	०।२५	१९।२४	६।२३	११।४७।५१	२०
२१	११। ६। ०।३०	५।२३।४९।२३	१०।२६।२६। ९	११।२४।१७।२४	११।१८।२५।५४	९।२८।२६।४२	५।१९।५५।५८	८। ४। ६। ०	११। ६।२९।३६	१०। ५।३१।१८	०। २	२०।३२	७। ५	११।५१।४८	२१
२२	११। ७। ०। ४	६। ८।५४।५१	१०।२७।१३।१३	११।२५।२५।५७	११।१८।४०।१७	९।२९।३८।३०	५।१९।५१।३२	८। ४। २।५०	११। ६।३३। २	१०। ५।३३।१९	+।२२	२१।४०	७।५०	११।५५।४४	२२
२३	११। ७।५९।३६	६।२३।३७।३१	१०।२८। ०।१५	११।२६।२७।५३	११।१८।५४।४०	१०। ०।५०।२२	५।१९।४७। ४	८। ३।५९।३९	११। ६।३६।२७	१०। ५।३५।१९	०।४६	२२।४७	८।३८	११।५९।४१	२३
२४	११। ८।५९। ७	७। ७।५२।१२	१०।२८।४७।१७	११।२७।२२।५४	११।१९। ९। ४	१०। २। २।१६	५।१९।४२।३४	८। ३।५६।२८	११। ६।३९।५३	१०। ५।३७।१८	१। ९	२३।४९	९।३१	१२। ३।३७	२४
२५	११। ९।५८।३६	७।२१।३७।२४	१०।२९।३४।१७	११।२८। १।४६	११।१९।२३।३०	१०। ३।१४।१२	५।१९।३८। २	८। ३।५३।१७	११। ६।४३।१८	१०। ५।३९।१६	१।३३	-। -	१०।२७	१२। ७।३४	२५
२६	११।१०।५८। ४	८। ४।५४।३३	११। ०।२१।१५	११।२८।५९।१६	११।१९।३७।५६	१०। ४।२६।१०	५।१९।३३।२९	८। ३।५०। ७	११। ६।४६।४३	१०। ५।४१।१४	१।५७	०।४५	११।२५	१२।११।३०	२६
२७	११।११।५७।३०	८।१७।४७। २	११। १। ८।१३	११।२९।२९।४५	११।१९।५२।२३	१०। ५।३८।११	५।१९।२८।५४	८। ३।४६।५६	११। ६।५०। ९	१०। ५।४३।१०	२।२०	१।३६	१२।२३	१२।१५।२७	२७
२८	११।१२।५६।५४	९। ०।११।१५	११। १।५५। ९	११।२९।४९।३७	११।२०। ६।५१	१०। ६।५०।१४	५।१९।२४।१८	८। ३।४३।४५	११। ६।५३।३४	१०। ५।४५। ५	२।४४	२।२०	१३।२०	१२।१९।२३	२८
२९	११।१३।५६।१६	९।१२।३५।५०	११। २।४२। ३	०। ०। ७।२३	११।२०।२१।२०	१०। ८। २।१९	५।१९।१९।४१	८। ३।४०।३४	११। ६।५६।५८	१०। ५।४६।५९	३। ७	२।५९	१४।१५	१२।२३।२०	२९
३०	११।१४।५५।३७	९।२४।४१।१०	११। ३।२८।५५	०। ०।१७।३३	११।२०।३५।४९	१०। ९।१४।२५	५।१९।१५। ३	८। ३।३७।२४	११। ७। ०।२३	१०। ५।४८।५१	३।३०	३।३४	१५। ८	१२।२७।१७	३०
३१	११।१५।५४।५५	१०। ६।३९। ५	११। ४।१५।४७	०। ०।२०।१५	११।२०।५०।१९	१०।१०।२६।३४	५।१९।१०।२५	८। ३।३४।१३	११। ७। ३।४७	१०। ५।५०।४३	३।५४	४। ६	१६। ०	१२।३१।१३	३१

अप्रैल सन् २०११ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।१।१९, वेंकटेश (प्लूटो) ८।१३।२८।१६

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि (व.) रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	११।१६।५४।११	१०।१८।३२।४१	११। ५। २।३६	०। ०।१५।४२	११।२१। ४।४९	१०।११।३८।४४	५।१९। ५।४५	८। ३।३१। २	११। ७। ७।११	१०। ५।५२।३३	४।१७	४।३७	१६।५१	१२।३५।१०	१
२	११।१७।५३।२५	११। ०।२४।२७	११। ५।४९।२४	०। ०। ४।११	११।२१।१९।२०	१०।१२।५०।५६	५।१९। १। ५	८। ३।२७।५१	११। ७।१०।३४	१०। ५।५४।२३	४।४०	५। ७	१७।४२	१२।३९। ६	२
३	११।१८।५२।३८	११।१२।१६।१२	११। ६।३६।११	११।२९।४६। ६	११।२१।३३।५१	१०।१४। ३। ९	५।१८।५६।२५	८। ३।२४।४०	११। ७।१३।५७	१०। ५।५६।१०	५। ३	५।३७	१८।३३	१२।४३। ३	३
४	११।१९।५१।४९	११।२४।१२।२४	११। ७।२२।५५	११।२९।२९।५५	११।२१।४८।२२	१०।१५।१५।२३	५।१८।५१।४५	८। ३।२१।२९	११। ७।१७।१९	१०। ५।५७।५७	५।२६	६।१०	१९।२५	१२।४६।५९	४

सर्वार्थसिद्धि-अमृतसिद्धि तथा रविपुष्य-गुरुपुष्यामृत योगोंका विवरण, सम्वत् २०६७ वि.

सर्वार्थ सिद्धि योग

वार, नक्षत्र एवं तिथि के संयोग से बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि योगों का विवरण तारीख के सामने घं. मि. में लिखा है। अच्छे समय में किये गए कार्य की सफलता प्रायः सुनिश्चित है।

ता. मास	घं.मि.	से	घं.मि.	तक
१६ मार्च	६।४७	"	३०।३१	"
१८ "	६।३०	"	३०।२९	"
१९ "	६।२९	"	११।५१	"
२२ "	६।२५	"	३०।२४	"
२५ "	६।२२	"	३०।२१	"
२८ "	२५।४७	"	३०।१८	"
२अप्रैल	१७।३४	"	३०।१२	"
४ "	११।०२	"	३०।०९	"
१३ "	६।०१	"	१५।४२	"
१५ "	५।५९	"	१८।०५	"
१७ "	१८।५१	"	२९।५६	"
१९ "	५।५५	"	१८।१९	"
२२ "	५।५२	"	१५।२२	"
२५ "	१०।१७	"	२९।४८	"
२९ "	२७।२०	"	२९।४५	"
३० "	५।४५	"	२७।२२	"
२ मई	५।४४	"	२९।३६	"
९ "	२१।४५	"	२९।३९	"
११ "	२५।०४	"	२९।३७	"
१५ "	५।३५	"	२५।१७	"
२३ "	५।३२	"	२९।३१	"
२७ "	११।५८	"	२९।२९	"
२८ "	५।२९	"	१२।०९	"
३० "	५।२९	"	१४।१५	"
६ जून	६।०३	से	२९।२८	तक
८ "	९।५२	"	२९।२८	"
१२ "	५।२८	"	९।४८	"
१४ "	२८।५९	"	२९।२८	"
१५ "	२७।०४	"	२९।२८	"
२० "	५।२९	"	१९।३३	"
२३ "	१८।४७	"	२९।३०	"
२४ "	५।३०	"	१९।२३	"
२७ "	२३।५६	"	२९।३१	"
२८ "	२६।२०	"	२९।३१	"
४जुलाई	५।३३	"	१६।२६	"
६ "	५।३४	"	११।५२	"
७ "	२०।३२	"	२९।३४	"
१२ "	१४।०४	"	२९।३७	"
१३ "	११।३६	"	२९।३७	"
२१ "	५।४१	"	२५।१४	"
२५ "	६।३६	"	२९।४३	"
२६ "	९।०८	"	२९।४४	"
१अगस्त	२६।००	"	२९।४७	"
३ "	२९।०९	"	२९।४८	"
४ "	५।४८	"	२९।४९	"
८ "	२४।३५	"	२९।५१	"
९ "	५।५१	"	२१।५७	"
१० "	५।५१	"	११।०३	"
१८ "	५।५५	"	६।५१	"
२२ "	५।५७	"	१५।१०	"
२३ "	५।५८	"	१८।०३	"
२७ "	२९।४४	"	३०।००	"
२९ "	८।१६	"	३०।०१	"
३१ "	१२।१०	"	३०।०२	"
१ सित.	६।०२	"	३०।०२	"
५ "	१०।५२	"	३०।०४	"
६ "	६।०४	"	८।३७	"
११ सित.	१५।५८	से	३०।०७	तक
१३ "	१३।३८	"	३०।०८	"
१८ "	२१।०८	"	३०।१०	"
२४ "	११।३६	"	३०।१३	"
२६ "	६।१३	"	१६।०७	"
२८ "	६।१४	"	१९।१५	"
२९ "	६।१४	"	३०।१५	"
१ अक्टू.	२०।१२	"	३०।१६	"
३ "	६।१६	"	१७।४८	"
९ "	६।१९	"	२४।२६	"
११ "	६।२०	"	२२।२५	"
१५ "	२७।५३	"	३०।२३	"
१६ "	६।२३	"	३०।२४	"
२१ "	१८।०७	"	३०।२६	"
२२ "	६।२६	"	३०।२७	"
२५ "	२४।४८	"	३०।२९	"
२७ "	६।३०	"	२५।५७	"
२८ "	२५।५६	"	३०।३१	"
२९ "	६।३१	"	२५।३०	"
३ नव.	१७।२०	"	३०।३६	"
६ "	६।३७	"	१०।५६	"
८ "	६।३८	"	८।२७	"
१२ "	११।५४	"	३०।४२	"
१३ "	६।४२	"	१४।२४	"
१६ "	२३।०८	"	३०।४५	"
१८ "	६।४६	"	३०।४७	"
१९ "	६।४७	"	२९।४०	"
२२ "	७।३९	"	३०।५०	"
२४ "	६।५०	"	७।५६	"
२५ "	७।३३	"	३०।५२	"
२६ "	६।५२	"	६।५४	"
१ दिस.	६।५६	"	२२।५४	"
१० "	७।०२	"	२२।५५	"
१४दिस.	७।२३	से	३१।०६	तक
१६ "	७।०६	"	३१।०७	"
१७ "	७।०७	"	१४।३०	"
२० "	७।०९	"	३१।०९	"
२३ "	७।१०	"	३१।११	"
३१ "	२६।०८	"	३१।१३	"
२ जन.	२६।०८	"	३१।१४	"
७ "	७।१५	"	७।२२	"
११ "	७।१५	"	१८।२८	"
१३ "	७।१५	"	२३।३३	"
१५ "	२६।२०	"	३१।१५	"
१७ "	७।१४	"	२६।०९	"
२० "	७।१४	"	२१।१७	"
२३ "	१४।१३	"	३१।१२	"
२८ "	७।३९	"	३१।११	"
३० "	८।२२	"	३१।१०	"
६ फर.	२२।५३	"	३१।०६	"
८ "	२८।५०	"	३१।०५	"
१० "	७।०५	"	७।३३	"
१२ "	११।२९	"	३१।०२	"
१४ "	७।०१	"	१२।३१	"
१७ "	६।५८	"	८।१३	"
२० "	६।५६	"	३०।५५	"
२४ "	१३।३५	"	३०।५१	"
२५ "	६।५१	"	१३।२१	"
२७ "	६।५०	"	१४।५५	"
६ मार्च	६।४२	"	३०।४१	"
८ "	११।१७	"	३०।३९	"
१२ "	६।३६	"	२०।२३	"
२० "	६।२८	"	२८।४२	"
२३ "	२१।४४	"	३०।२३	"
२४ "	६।२३	"	२०।४३	"
२७ "	२२।२५	"	३०।१९	"
२८ मार्च	२४।२१	से	३०।१८	तक
३ अप्रैल	६।१२	"	१४।२१	"

अमृत सिद्धि योग

अ.सि.योगको शास्त्रकारोंने अत्यन्त शुभ फलदायक कहा है। ध्यान रहे- गुरु-पुष्य के संयोग से बना अ.सि.योग विवाह में, ऐसे ही शनि-रोहिणीसे बना प्रयाणमें और मंगल-अश्विनी से बना अमृतसिद्धियोग गृहप्रवेश में वर्जित है।

ता. मास	घं.मि.	से	घं.मि.	तक
२२ मार्च	१३।२०	से	३०।२४	तक
२५ "	१०।४०	"	३०।२१	"
१७ अप्रैल	१८।५१	"	२९।५६	"
१९ "	५।५५	"	१८।१९	"
२२ "	५।५२	"	१५।२२	"
११ मई	२५।०४	"	२९।३७	"
१५ "	५।३५	"	२५।१७	"
२३ "	१५।०८	"	२९।३१	"
८ जून	९।५२	"	२९।२८	"
१२ "	५।२८	"	९।४८	"
२० "	५।२९	"	१९।३३	"
२३ "	१८।४७	"	२९।३०	"
६ जुलाई	५।३४	"	११।५२	"
२१ "	५।४१	"	२५।१४	"
१८ अगस्त	५।५५	"	६।५१	"
२७ "	२९।४४	"	३०।००	"
२४ सित.	११।३६	"	३०।१३	"
२२ अक्टू.	६।२६	"	२०।१९	"
२० दिस.	१६।३२	"	३१।०९	"
२३ "	१३।५०	"	३१।११	"
१५ जन.	२६।२०	"	३१।१५	"
१७ "	७।१४	"	२६।०९	"

२० जन. ७।१४ से २१।१७तक
८ फर. २८।५० " ३१।०५ "
१२ " ११।२९ " ३१।०२ "
१४ " ७।०१ " १२।३१ "
१७ " ६।५८ " ८।१३ "
२० " २०।५३ " ३०।५५ "
८ मार्च ११।१७ " ३०।३९ "
१२ " ६।३६ " २०।२३ "
२० " ७।४९ " २८।४२ "
२३ " २१।४४ " ३०।२३ "

रविपुष्य-गुरुपुष्यामृत योग

ता. मास घं. मि.से घं. मि.तकसंज्ञा
२५ मार्च १०।४० "३०।२१ " गु.पु.
२६ " ६।२१ " ८।५२ " पुष्य
२१ अप्रैल१६।३७ "२९।५२ " "
२२ " ५।५२ "१५।२२ " गु.पु.
१८ मई २२।०४ "२९।३३ " पुष्य
१९ " ५।३३ "२०।४३ " "
१४ जून २८।५९ "२९।२८ " पुष्य
१५ " ५।२८ "२७।०४ " "
१२ जुला. १४।०४ "२९।३७ " "
१३ " ५।३७ "११।३६ " "
८ अग. २४।३५ "२९।५१ " र.पु.
९ " ५।५१ "२१।५७ " पुष्य
५ सित. १०।५२ "३०।०४ " र.पु.
६ " ६।०४ " ८।३७ " पुष्य
२ अक्टू१९।१८ "३०।१६ " "
३ " ६।१६ "१७।४८ " र.पु.
२९ " २५।३० "३०।३२ " पुष्य
३० " ६।३२ "२४।३६ " "
२६ नव. ६।५४ "२९।५९ " "
२३ दिस. १३।५० "३१।११ " गु.पु.
२४ " ७।११ "१२।२० " पुष्य
१९ जन. २३।२२ "३१।२४ " "
२० जन. ७।१४से २१।१७तक गु.पु.
१६ फर. १०।१९ " ३०।५८ " पुष्य
१७ " ६।५८ " ८।१३ " गु.पु.
१५ मार्च २०।३१ " ३०।३२ " पुष्य
१६ " ६।३२ " १८।५९ " "

संकेत- र.पु.= रविपुष्य, गु.पु. = गुरुपुष्ययोग जानना चाहिए। जहाँ केवल पुष्य नक्षत्र का शुभ संयोग बना हुआ है, वहाँ केवल पुष्य लिखा गया है।

द्विपुष्कर योग

३० मार्च २९।०४ से ३०।१५ तक
१५ मई २५।१७ " २८।१० "
२५ " ५।३१ " ७।५८ "
१७ जुला. २५।१३ " २८।३० "
२७ " ११।५४ " २९।४४ "
१९ सित. २४।०४ " ३०।१० "
२३ नव. ७।५९ " २२।१७ "
१६ जन. २६।३७ " ३१।१४ "
२५ " १०।१७ " ३१।११ "
२० मार्च २८।४२ " ३०।२७ "

त्रिपुष्कर योग

११ अप्रैल ११।२५ से १४।०७ तक
२० " १७।३७ " २९।५३ "
२५ " १०।१७ " २४।५४ "
४ मई १८।१४ " २९।४२ "
२२ जून १८।३८ " २९।३० "
२७ " २३।५६ " २९।३१ "
३ जुला. ५।३३ " १३।५४ "
२१ अग. १२।२८ " १५।३८ "
३१ " १२।१० " ३०।०२ "
४ सित. २९।५५ " ३०।०४ "
५ " ६।०४ " १०।५२ "
२९ अक्टू. २२।४८ " २५।२८ "
२४ अक्टू. २३।४० से ३०।२८ तक
२ नव. २१।५८ " ३०।३५ "
७ " ८।०६ " ९।२४ "
१२ दिस. २८।२५ " ३०।१२ "
१५ फर. ११।४८ " २३।०९ "
१९ " २३।४६ " ३०।३९ "
१ मार्च ६।४८ " १८।३७ "
५ " २८।४३ " २९।२१ "

रवि योग

१९मार्च११।५१ "२०मार्च१२।४६ "
२१ " १३।१६ "२२ " १३।२० "
२४ " १२।०२ "२६ " ८।५२ "
२७ " २८।१८ "२८ " २५।४७ "
४अप्रै.१९।०२ " ५ अप्रै२०।५७ "
१७ " १८।५१ "१८ " १८।४४ "
१९ " १८।१९ "२० " १७।३७ "
२२ " १५।२२ "२४ " १२।०८ "
२६ " ८।२५ "२७ " ६।३८ "
२७ " २२।४६ "२७ " २९।०६ "
४ मई ७।४४ " ५ मई १०।२४ "
१६ " २४।२४ "१७ " २३।१९ "
१८ " २२।०४ "१९ " २०।४३ "
२१ " १७।५३ "२३ " १५।०८ "
२५ " १२।५६ "२५ " १२।५८ "
२६ " १२।१५ "२७ " ११।५८ "
२ जून २१।२५ " ३ जून २४।२५ "
१४ " २८।५९ "१५ " २७।०४ "
१६ " २५।११ "१७ " २३।२६ "
१९ " २०।३३ "२१ " १८।५४ "
२२ " १०।०० "२२ " १८।३८ "
२४ " १९।२३ "२५ " २०।२६ "
२जुला.११।०१ " ३जुला.१३।५४ "
१४ " ९।०४ "१५ " ६।३८ "
१५ " २८।२६ "१६ " २६।३६ "
१८जुला.२४।२२ "२१जुला.२५।१४ "
२३ " २८।२४ "२५ " ६।३६ "
३१ " २३।३५ " १अग.२६।०० "
१२अग.१३।१४ "१३ " १०।४१ "
१४ " ८।३५ "१५ " ७।०५ "
१८ " ६।५१ "२० " १०।०६ "
२२ " १५।१० "२३ " १८।०३ "
३० " १०।२७ "३० " २५।३७ "
३१ " १२।१० " १सित.१३।१८ "
१०सित.१८।०९ "११ " १५।५८ "
१२ " १४।२४ "१३ " १३।३८ "
१३ " १९।२४ "१४ " १३।४१ "
१६ " १६।११ "१८ " २१।०८ "
२० " २७।०७ "२१ " ३०।०६ "
२९ " २०।०८ "३० " २०।२८ "
९अक्टू२४।२६ "१०अक्टू३।०३ "
१० " २३।५२ "११ " २२।२५ "
१२ " २२।३७ "१३ " २३।४० "
१५ " २७।५३ "१८ " ९।४३ "
२० " १५।३४ "२१ " १८।०७ "
२८ " २५।५६ "२९ " २५।३० "
९ नव. ८।१२ "१० नव. ८।४१ "
११ " ९।५६ "१२ " ११।५४ "
१४ " १७।१६ "१६ " २३।०८ "
१८ " २७।५७ "१९ " २४।४० "
१९ " २९।४० "२१ " ६।५४ "
२६ " २९।५९ "२७ " २८।५१ "
८दिस.१९।११ " ९दिस.२०।४६ "
१० " २२।५५ "११ " २५।३२ "
१४ " ७।२३ "१७ " १४।३० "
१९ " १६।२८ "२० " १६।३२ "
२६ " ९।०२ "२७ " ७।२४ "
७जन. ७।२२ " ८जन. ९।४८ "
९ " १२।३३ "१० " १५।३१ "
११ " १२।१२ "११ " १८।२८ "
१३जन.२३।३३ "१५जन.२६।२० "
१७ " २६।०९ "१८ " २५।०२ "
२४ " १२।०५ "२४ " १४।३४ "
२५ " १०।१७ "२६ " ८।५५ "
५फर.१९।५८ " ६फर.१७।४० "
६ " २२।५३ " ७ " २५।५३ "
८ " २८।५० "१० " ७।३३ "
१२ " ११।२९ "१४ " १२।३१ "
१६ " १०।१९ "१७ " ८।१३ "
२३ " १४।३० "२४ " १३।३५ "
८मार्च११।१७ " ९मार्च१४।०७ "
१० " १६।४१ "११ " १८।५० "
१३ " २१।१४ "१५ " २०।३१ "
१७ " १६।४६ "१८ " १२।५५ "
१८ " १४।०३ "१९ " ११।०० "
२४ " २०।४३ "२५ " २०।३० "

ज्वालामुखी अशुभ योग

२०मार्च ६।३२ "२०मार्च१२।४६ "
२३अप्रै ८।३५ "२३अप्रै.१३।५१ "
२६ जून १७।१० "२६ जून २१।५७ "
१सित.१०।५० " १सित.१३।१८ "
२ " १०।४२ " २ " १३।४६ "
६दिस.१७।५४ " ६दिस.२२।१९ "
११फर. ९।४९ "११फर.२५।२५ "
१२ " ११।२९ "१२ " २६।०६ "
९मार्च१४।०७ "१०मार्च१४।१२ "

परिवा मूल पंचमी भरनी,
अष्टमी कृत्तिका नवे रोहिनी।
दसे आश्लेखा तू तो बांच
ज्वालामुखी नखत यह पांच॥

जनमेतो जीवेनही,बसेतो ऊजड़होय।
नारीपहिने भूषणो,पुरुष विहूनोहोय॥
संग्रामचढ़ेजीवेनहीं,कृषिनिष्फलजाय॥
कूँआपोखरजोखने,तुरतैवारिपराय॥

संदिग्ध व्रत-पर्व और धर्मशास्त्रीय व्यवस्था

श्रीपंचमी:- के दिन लक्ष्मीव्रत में पुरुषार्थचिन्तामणि के अनुसार चतुर्थीविद्धा पंचमी ली जाती है। **'सा च स्कन्दोपवासातिरिक्तोपवासे पूर्व (चतुर्थी) विद्धाग्राह्या'** इस वर्ष चैत्र शुक्ल पंचमी सूर्योदय के पश्चात् मात्र १२ पल रहेगी, उसके बाद षष्ठी आ जायेगी। इसलिए श्रीपंचमी (लक्ष्मीव्रत) २० मार्च २०१० शनिवार को किया जायेगा। इस तिथि में केशव की आज्ञा से श्री लक्ष्मीजी ब्रह्मलोक से मनुष्यलोक में आईं थीं, अतः जो लक्ष्मी का पूजन करता है वह कभी निर्धन नहीं होता- **श्रीर्ब्रह्मलोकान्मानुष्यं सम्प्राप्ता केशवाज्ञया। ततस्तां पूजयेत्तत्र यस्तं लक्ष्मीर्नमुञ्चति॥**

रम्भातीजव्रत- ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया में होता है। यदि तृतीया सूर्यास्त से पहले ही समाप्त होती हो तो यह व्रत (द्वितीयाविद्धा) तृतीया में किया जाता है। जैसा कि धर्मसिन्धु का आदेश है- **ज्येष्ठशुक्लतृतीयां रम्भा व्रतम्। सा पूर्वविद्धाग्राह्या॥** के अनुसार इस वर्ष रम्भातीज व्रत १४ जून २०१० सोमवार में मान्य रहेगा, क्योंकि अग्रिम दिन तृतीया मध्याह्न से पहले ही समाप्त हो जायेगी।

गुरुपूर्णिमा व्यासपूजा- के लिए सूर्योदयान्तर त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी आषाढ़ी पूर्णिमा होनी चाहिए जैसाकि धर्मसिन्धु का आदेश है- **अत्र कर्मणि औदयिकी त्रिमुहूर्त्ता पौर्णमासी ग्राह्याः।** इस वर्ष आषाढ़ की पूर्णिमा २५ जुलाई रविवार में वृद्धि होकर २६ जुलाई सोमवार में सुबह ३ घटी २७ पल तक रहेगी, जो कि तीन मुहूर्त्त से कम है। सन्यास पद्धति में तीन मुहूर्त्त (६घटी) से भी अधिक तिथि होने पर ग्राह्य कही गई है- **अत्रैव व्यासपूजोक्ता। तत्र त्रिमुहूर्त्ता चेत्परैवेति संन्यासपद्धतौ। त्रिमुर्ताधिकं ग्राह्यं पर्व क्षौर प्रणामयोः॥** इसी पूर्णिमा को सन्यासी चतुर्मास प्रारम्भ में ग्राह्य मानते हैं- **अस्यां पौर्णमास्यां सन्यासिनां चतुर्मास्यावास संकल्पांगत्वेन क्षौरव्यास-पूजादिकं विहितम्।** सो गुरुपूर्णिमा व्यासपूजा २५ जुलाई २०१० रविवार में धर्मशास्त्र दृष्टिया मान्य रहेगी। अग्रिम दिन उदया पूर्णिमा में भी स्नान ध्यान दानादि का लाभ प्राप्त होगा।

मासशिवरात्रिव्रत- प्रत्येक मास की प्रदोष या निशीथकाल व्यापिनी कृष्ण चतुर्दशी में किया जाता है- **सा च केषुचिद्वचनेषु प्रदोषव्यापिनी ग्राह्योत्यक्तं, केषुचिन्निशीथव्यापिनी।** अधिकांश विद्वान इस व्रत में निशीथ व्यापिनी चतुर्दशी ग्रहण करने के पक्ष में हैं। **भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशा। शिवरात्रिव्रतं तत्र कुर्याज्जागरणं तथा॥** हमारे जीवन में श्रावण तथा फाल्गुन की शिवरात्रि व्रत का सर्वाधिक महत्त्व है। श्रावण कृष्णा चतुर्दशी ९ अगस्त २०१० सोमवार के दिन १२ बजकर १५ मिनट पर समाप्त हो जायेगी। इसलिए मासशिवरात्रिव्रत ८ अगस्त रविवार में मान्य रहेगी। इस व्रत में रविवार, मंगलवार या सोमवार हो तो उसे बहुत अच्छा माना जाता है- **इयं च रविभौमसोमवारेषु शिवयोगे चातिप्रशस्ता।** शिवजी के जलाभिषेक में भद्रा का दोष मान्य नहीं होता। **जयन्ती शिवरात्रिश्च कार्येभद्रा जयान्विते।** वैसे भी इस वर्ष भद्रावास स्वर्ग में रहेगा, जिसे शुभफलप्रद कहा जायेगा- **स्वर्गे भद्रा शुभे कार्ये...** अतः इच्छित समयानुसार रुद्राभिषेक कर सकते हैं।

ललहीछटि- व्रत अधिकांशतः पूर्वीभारत में स्त्रियाँ किया करती हैं। इसमें सप्तमी युता षष्ठी ली जाती है। **भाद्रकृष्ण षष्ठी हलषष्ठी। सा सप्तमीयुतेति दिवोदासः।** अतः यह इस वर्ष ३१ अगस्त मंगलवार के दिन किया जायेगा। चन्द्रषष्ठीव्रत में चन्द्रोदय व्यापिनी षष्ठी ली जाती है, सो यह ३० अगस्त २०१० सोमवार में मान्य रहेगा। इसे विशेषकर विवाहिता या अविवाहिता लड़कियाँ ही करती हैं। सायंकाल चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देती हैं।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी- व्रत के संदर्भ में स्मार्त्त एवं वैष्णव भेद से मत मतान्तर बहुत हैं। भाद्रपद कृष्णाष्टमी अर्धरात्रि व्यापिनी स्मार्तों को ग्राह्य है तथा वैष्णव उदयकाल व्यापिनी अष्टमी में व्रतोपवास को उत्तम मानते हैं। रोहिणी नक्षत्र में बालरूपी चतुर्भुज गोविन्द उत्पन्न हुए, इसे सभी स्वीकार करते हैं- **समायोगेतु रोहिण्यां निशीथे राजसत्तमः। समजायत गोविन्दो बालरूपी चतुर्भुजः॥**

२ सितम्बर २०१० भाद्रपद कृष्णाष्टमी गुरुवार में १० बजकर ४२ मिनट तक रहेगी। रोहिणी नक्षत्र दिन में १ बजकर ४६ मिनट पर समाप्त हो जायेगा। उदयाष्टमी के नियमानुसार तो वैष्णवों के लिए सही है, लेकिन मध्यरात्रि में न तो भगवान् का जन्म नक्षत्र रोहिणी मिलेगा न अष्टमी तिथि।

१ सितम्बर २०१० बुधवार को अर्धरात्रि में अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र का सुखद संयोग बनेगा, जोकि श्रीकृष्णजन्माष्टमी के लिये अतिउत्तम रहेगा। **रोहिणया मर्धरात्रि च यदा कृष्णाष्टमी भवेत्। तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति पापं त्रिजन्मजम्॥** इस दिन व्रत करने वाले तीनजन्मों के पापों से मुक्त जो जायेंगे। बुधवार में भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार हुआ था। निर्णयसिन्धु पृष्ठ सं.२६६ पर लिखा है-**भवते बुध**

संयुक्ता प्राजापत्यर्क्षसंयुता। अपि वर्षशतेनापि लभ्यते वाऽथवा न वा॥

देश के समस्त धर्माचार्य, विद्वान, ज्योतिषियों को श्रीकृष्णजन्माष्टमी १ सितम्बर २०१० बुधवार की त्रिगुण फलदायिनी स्वीकार कर लेनी चाहिए। इसमें अष्टमी तिथि, रोहिणीनक्षत्र और बुधवार तीनों का फल मिलेगा।

एकादशीव्रत पारण- १९ सित. रविवार में द्वादशी की वृद्धि हुई है। इस दिन श्रवण नक्षत्र आ जाने से हरिवासर का सुखद संयोग बनता है। सो पद्माएकादशी व्रत पारणा स्मार्त्त मतेन १५।६ बजे के बाद कर सकते हैं। अन्यथा दोनों दिन व्रत करके दोगुने पुण्य के भागीदार बनें।

शारदीय नवरात्र- इस वर्ष ८ अक्टूबर २०१० शुक्रवार से प्रारम्भ होंगे। उक्त दिन चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग को व्यवधान कारक कहा है- **वैधृतौ पुत्रनाशःस्याच्चित्रायां धन नाशनम्। तस्मान्नस्थापयेत्कुम्भं चित्रायां वैधृतौ तथा॥** यदि सम्पूर्ण दिन प्रतिपदा चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग से युक्त हो तो मध्याह्न के समय अभिजित् मुहूर्त्त में घट स्थापन करें- **सम्पूर्ण प्रतिपद्येव चित्रायुक्ता यदा भवेत्। वैधृत्या वापि युक्ता स्यात्तदामध्यन्दिने रवौ॥ अभिजित्तु मुहूर्त्तं यत्तत्र स्थापनमिष्यते॥** शास्त्राज्ञानुसार ८ अक्टूबर में ११ बजकर ४५ मिनट से १२ बजकर ३३ मिनट तक अभिजित् मुहूर्त्त रहेगा, जिसमें नवरात्रा शुरु करने तथा कराने वालों को माँ भगवती की अनुकम्पा से सब तरह की समृद्धि मिलेगी। शुभ का चौघड़िया मुहूर्त्त १२ बजकर ८ मिनट से शुरु हो जायेगा, तब तक देश के दक्षिण सम्भागों में मान्यता प्राप्त राहुकाल का समय भी व्यतीत हो चुका होगा।

करवाचौथव्रत- २६ अक्टूबर २०१० मंगलवार को चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी में सम्पन्न किया जायेगा। **कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करक चतुर्थी। सा चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्या॥** इस व्रत को सौभाग्यवती स्त्रियाँ एवं नवविवाहिता पतिसुख सौभाग्य की कामना से करती हैं। इस व्रत में शिव-शिवा, स्वामी कार्तिकेय और चन्द्रमा का पूजन किया जाता है। **नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं सन्ततिं शुभाम्। प्रयच्छभक्ति युक्तानां नारीणां हरवल्लभे॥** सौभाग्यसूचक रोहिणी व्रत भी इसी दिन किया जायेगा। दो व्रतों का पुण्य सधवा स्त्रियोंको प्राप्त होगा।

गोपाष्टमी- कार्तिक शुक्ल अष्टमी को गोपाष्टमी कहते हैं- **कार्तिक शुक्लाष्टमी गोपाष्टमी।** इस दिन गौओं का सविधि पूजन, यवन्नादिदान, गौओं की परिक्रमा तथा उनके पीछे चलने से इच्छित कामनाओं की पूर्ति होती है। इस वर्ष गोपाष्टमी १४ नवम्बर रविवार में मान्य रहेगी।

हरिवासरः- कार्तिक शुक्ल द्वादशी में रेवती नक्षत्र के होने से हरिवासर का सुयोग बनता है, जिसमें एकादशी व्रत का पारण करना निषेध कहा है, क्योंकि द्वादश एकादशियों के व्रत का फल नष्ट हो जाता है- **कार्तिक शुक्लद्वादश्यां रेवती नक्षत्रयोग रहितायां पारणं कार्यम्। आ भा का सितपक्षेषु मैत्रश्रवण रेवती। सङ्गमे नहि भोक्तव्यं द्वादशद्वादशीर्हरेत्॥** यदि रेवती नक्षत्र से रहित द्वादशी पारण करने के लिये उपलब्ध न हो तो रेवती का चतुर्थ पाद छोड़कर पारण करने की शास्त्राज्ञा है- **यदा तु रेवतीयोगरहिता द्वादशी सर्वथा न लभ्यते तदा रेवत्याश्चतुर्थपादं वर्जयेत्॥** ता.१८ नवम्बर में एकादशी व्रत का पारण करने में दोष मान्य नहीं, क्योंकि रेवती का अन्तिमपाद (तृतीयांश) तो सायं ७ बजकर १३ मिनट से शुरु होगा।

मकर संक्रान्ति- १४ जनवरी २०११ शुक्रवार की सन्ध्या में लगी है। जिस वर्ष मकर संक्रांति सायंकाल में होती है, उस वर्ष विशेष पुण्यकाल उसी दिन मध्याह्नोत्तर माना जाता है। **आसन्नसंक्रमं पुण्यं दिनार्धं स्नानदानयोः।** रात्रि में पुण्य का निषेध कहा गया है- **रात्रौ स्नानं न कुर्वीत दानं चैव विशेषतः। निमित्तिकं च कुर्वीत स्नानं दानञ्च रात्रिषु॥** ध्यान रहे- मकर संक्रान्ति का विशेष पुण्यकाल संक्रान्ति लगने के पश्चात् ४० घटी तक माना जाता है। कहीं कहीं २० घटी लिखा है। उत्तरकाल मान्यतानुसार मकर संक्रान्ति का पुण्यकाल १५ जनवरी में सूर्योदयान्तर कुछ समय के लिये माना जायेगा, स्नान-ध्यान-दानादि जो श्रद्धालु करना चाहे तो कर सकते हैं।

मौनी अमावस्या- माघ कृष्ण अमावस्या वृद्धि होकर २ फरवरी बुधवार में पूरे दिन रहेगी और ता.३ फरवरी गुरुवार को प्रातः ८ बजे तक भोग करेगी, इसलिए दोनों दिन स्नान-दान-पूजनार्चन का लाभ प्राप्त होगा। **यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं यति भास्करः। सा तिथिः सकला ज्ञेया स्नान-दान-जपादिषु॥** इस नियम के अनुसार मौनी अमास्या ३ फरवरी गुरुवार को लिखी है।

अक्षय पुण्यार्जन अर्थलाभ के पुनीत अवसर

श्री रामनवमीः– २४ मार्च २०१० चैत्र शुदी नवमी बुधवार के दिन पुनर्वसु नक्षत्र के सुखद संयोग में मनाई जायेगी। श्री ब्रजभूमि पंचांग के अनुसार नवमी मध्य रात्रौपरान्त १ बजकर ४८ मिनट तक रहेगी। आर्द्रा नक्षत्र दिन में १२।२ बजे तक रहेगा, बाद में पुनर्वसु आ जायेगा, जिसमें स्वयं रामावतार हुआ था-

चैत्रमासे नवम्यां तु जातो रामःस्वयं हरिः।
पुनर्वस्वृक्षसंयुक्ता सा तिथिःसर्वकामदाः॥

अवतार तिथि होने से सभी कामों में अभिष्ट सिद्धिप्रद कही गई है। बुधवार के दिन १०।५७ बजे से शुभ का चौघड़िया मुहूर्त्त शुरु होकर १२।२८ बजे तक रहेगा। इसी अवधि में भगवान् के अवतार ग्रहण का समय विहित होगा, जिसे सभी के लिए कल्याणकारी कहा गया है। श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्रादि देवपूजन कराकर अपने खाते बादलने वाले व्यापारी- उद्योगपति साल मध्ये लाभोन्नति की ओर अग्रसर होते रहेंगे। राज-समाज में मान-सम्मान के भागीदार बनेंगे।

बैंक वार्षिक लेखाबन्दीः– वाले दिन अधिकांश व्यापारी उद्योगधन्धे वाले खाते बदलते हैं। उत्तमोत्तम लग्नमुहूर्त्त में सविधि गणेशादि देवपूजन कराकर बही-बसना(खाता) पूजन कराते हैं, ताकि वर्षमध्ये लाभोन्नति की ओर अग्रसर होते रहें। भूमि वाहनादि का सुख मिले। यशोपलब्धि सहित मान-सम्मान के भागीदार बनें। १ अप्रैल २०१० प्र. वैशाख कृष्णा तृतीया में स्वाती नक्षत्र गुरुवार के संयोग से बना स्थिर योग तथा स्वाती नक्षत्र चल चर संज्ञक एवं जया तिथि अपने आपमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। ध्यान रहे- इस वर्ष पूजन के लिए वृष लग्न घं.८ मि. २७ बजे के पश्चात् सर्वोत्तम रहेगी। पूजन करने तथा कराने वालों को लाभोन्नति के साधन सुलभ होंगे। स्थिर योग में जो भी कार्य किया जाता है, उसके दूरगामी परिणाम अच्छे निकलते हैं। उद्योग-धन्धे, कारोबार में स्थिरता रहती है।

अक्षयतृतीयाः– १६ मई २०१० रविवार को मृगशिर नक्षत्र, सुकर्मा योग और तैतिल करण के सुखद संयोग में मनाई जायेगी। इसी दिन श्री परशुरामजयन्ती भी मान्य रहेगी। यह तिथि 'स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त' संज्ञक है। अक्षयकारिणी होने से इसमें होने वाले सभी कार्य सिद्धि होते हैं। जैसाकि पूर्वाचार्यों ने लिखा है- 'जयासु संग्रामे बलोपयोगी कार्याणि सिद्धियति निमित्तानि'। अनादिकाल से पूर्वज इसे बड़ी ही श्रद्धा विश्वास के साथ सभी शुभ कार्यों में अपनाते चले आ रहे हैं। पंजाब में अक्षयतीज को 'अणपूछामुहूर्त्त' के नाम से जाना जाता है। स्वयं सिद्धि मुहूर्त्त में कार्य करते समय यदि किसी को अपने नाम राश्यानुसार लग्न, मुहूर्त्त, चौघड़िया भी सही मिल जाए तो 'सोने में सुगन्धी' वाली कहावत चरितार्थ होना स्वभाविक है। रविवार में मृगशिर से बना सौम्य योग बहुसुख प्रदायक है। प्रातः ७।१५ बजे से शुरु होने वाले चर, लाभ, अमृत के तीनों चौघड़िया मुहूर्त्त कार्यसिद्धियर्थ अति उत्तम रहेंगे। पूजन के लिए इस वर्ष ११।५७ से शुरु होने वाली सिंह लग्न सर्वोत्तम मानी जायेगी। लग्नेश की स्थिति कर्म क्षेत्र में भौतिक विकास को बल देगी। रविवार के दिन ११।५२ से १२।४० के मध्य अभिजित् मुहूर्त्त वर्त्तमान रहेगा। श्रेष्ठ समय में श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्रयो ऋद्धि-सिद्धि, महालक्ष्मीजी, कुबेरभण्डारी, अन्यान्य देवपूजनार्चन के साथ-साथ बही बसना खाता(रोकड़ा) कलमदानपूजा, अत्याधुनिक उपकरण कम्प्यूटर आदि का पूजन कराने तथा करने वाले साल मध्ये उत्तरोत्तर सौख्य-समृद्धि की ओर अग्रसर होंगे। राज-समाज में मान बढ़ेगा। भूमि,वाहन, भौतिक सुखों के साथ घर में नई किलकारियाँ गूंजेंगी। पूजन सदैव द्विजाचार्य से ही कराना चाहिए।

रथयात्राः– १३ जुलाई २०१० आषाढ़ शुदी द्वितीया मंगलवार के दिन पुष्य नक्षत्र के सुखद संयोग में श्रीजगन्नाथजी (श्रीकृष्ण)बलराम जी तथा सुभद्राजी के विराजमान रथों की सवारी जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) में बड़ी ही श्रद्धा भक्ति के साथ निकाली जायेगी। मंगलवार में पुष्य से बना प्रवर्धमान योग धन-धान्यादि की बढ़ोत्तरी करने में सक्षम है। पुष्य की महिमा से तो सब परिचित हैं ही- जैसे- जानवरों में सिंह बलशाली होता है, उसी तरह नक्षत्रों में पुष्य माना गया है, जिस दिन यह नक्षत्र होता है, उस दिन कोई दोष मान्य नहीं रहता। केवल विवाह को छोड़कर सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि करता है। पुष्य दिन में ११ बजकर ३६ मिनट तक रहेगा।

रथयात्रा दिन मंगलवार में प्रातः ९ बजे से शुरु होने वाले चर, लाभ, अमृत के तीनों चौघडिया मुहूर्त्त घं.१४ मि.९ बजे तक श्रेष्ठ फलदायक रहेंगे। कन्या लग्न १०।२७ बजे शुरु होगी, जिसमें शनि की स्थिति 'स्थानवृद्धिकरौशनिः' सूत्रानुसार बलवान समझी जायेगी। बुध का लाभ स्थान में बैठना भौतिक विकास की ओर संकेत करता है।

तुला लग्न- १२।४३ बजे शुरु हो जायेगी। लग्नेश शुक्र का धनेश के साथ मिलकर लाभ स्थान में होना पूजन करने एवं करवाने वालों के लिए पर्याप्त उन्नति का संकेत है। ध्यान रहे- इस वर्ष कन्या लग्न में विहित लाभामृत चौघड़िया एवं अभिजित् मुहूर्त्त में पूजन सर्वोत्तम माना जायेगा।

रथयात्रा पुरी का प्रमुख उत्सव है, जिसे अन्य महानगरों में भी बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। पुरी का रथोत्सव देखते ही बनता है। देश-विदेश से आये हुए असंख्य श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ, बलराम तथा बहिन सुभद्राजी के विशाल रथों को रस्सों से खींचते हुये अपने को धन्य समझते हैं। श्रद्धान्वत् भक्तजनों की प्रभु मनोइच्छा पूर्ण करते हैं।

श्रीगणेश-महालक्ष्मी पूजन

श्री गणेश लक्ष्मीन्द्रप्रभु, ऋद्धि सिद्धि दातार।
आन विराजो काज मह, करदो मम उद्धार॥

इस वर्ष ५ नवम्बर २०१० कार्तिक कृष्ण १४ शुक्रवार में श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपमालिकापर्व) मान्य रहेगा, क्योंकि उक्त दिन १३ बजकर १ मिनट से अमावस्या शुरु हो जायेगी। प्रदोष के समय अमावस्या में लक्ष्मीपूजन की महत्ता सर्वोपरीय है- प्रदोषसमये राजन् कर्त्तव्या दीपमालिका॥ दीपावली के दिन चित्रा नक्षत्र १२ बजकर ५२ मिनट तक रहेगा, उपरान्त स्वाती भोग करेगा। नक्षत्र दोनों ही श्रेष्ठ संज्ञक हैं। शुक्रवार में स्वामी से बना गद योग मुहूर्त्त चिन्तामणिकार ने विद्या धनवृद्धि करने वाला लिखा है। तिथि ३० तो लक्ष्मी के प्रादुर्भाव ही है ही।

✤ दिन के लग्न मुहूर्त्त ✤

सौख्यसमृद्धि हर्षोल्लास के इस पावन पर्व में श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्रादि देवपूजन का क्रम पूरे दिन तथा मध्य रात्रि तक जारी रहता है। कुछ व्यापारी दीपावली पूजन के लिए धनु लग्न को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। उनकी धाराणा भी सही है, क्योंकि धनु का स्वामी बृहस्पति शुभ ग्रह है। इस वर्ष धनु लग्न ९।४५ से शुरु होकर ११।४९ तक रहेगी। शुक्रवार के दिन चर-लाभ-अमृत के तीन चौघड़िया मुहूर्त्त १० बजकर ४४ मिनट तक रहेंगे। काल का चौघड़िया मुहूर्त्त १०।४३ से १२।१० बजे के मध्य रहेगा, जिसके स्वामी शनि की आस्था उद्योग-धन्धे, लोहा, चमड़ा, वाहन, मशीनरी आदि में होने से इनसे जुड़े कारोबारियों को काल का चौघड़िया मुहूर्त्त सही हो सकता था, लेकिन १०।३० से १२।०० बजे के मध्य राहुकाल की व्याप्ति नेष्ट फलदायक है, पंचांगकार के मत से काल के चौघड़िया मुहूर्त्त को यत्नपूर्वक त्याग देना चाहिए।

दीपावली के दिन ११।४९ से १५।२ बजे तक मकर कुम्भ दो लग्न भोग करेंगी, लग्नेश की स्थिति भाग्य स्थान में होने से पूजा करने वालों के लिए विकास को बल देगी। अभिजितमुहूर्त्त की महिमा तो सब जानते ही हैं। जो कि ११।४१ से १२।२९ बजे के मध्य रहेगा, जिसमें अनेक दोष निवारण की क्षमता है। पूजा करने-कराने वाले पर्याप्त उन्नति के भागीदार बनेंगे। मीन लग्न १५।२ से शुरु होकर १६।२९ बजे तक रहेगी, जिसमें उद्वेग, चर के दो चौघड़िया मुहूर्त्त अभिष्ट सिद्धिप्रद कहे जायेंगे। चौघड़िया के स्वामी सूर्य एवं शुक्र दोनों की शुभ हैं।

✤ रात्रि के लग्न मुहूर्त्त ✤

प्रदोषकाल- दीपावली की रात्रि में १७।३० से १९।५४ बजे तक रहेगा। प्रदोष के अधिपति आशुतोष भगवान सदाशिव हैं। अवढ़रदानी अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण करने में सक्षम हैं। पूर्वाचार्यो ने प्रदोष को लक्ष्मी पूजन के लिए बहुत उपयोगी कहा है- प्रदोष समये राजन् कर्त्तव्या दीपमालिका। इस वर्ष प्रदोष के समय वृष लग्न वर्त्तमान रहेगी। लग्नेश शुक्र छटे स्थान में अस्त होने से निर्बल समझी जायेगी। इसमें प्रदोष की बलिष्ठता काम आयेगी। रोग और काल के दो चौघड़िया २० बजकर ४८ मिनट तक रहेंगे। चौघड़िया मुहूर्त्तो के स्वामी भौम व शनि हैं, जिनकी आस्था ईंट, पत्थर, निर्माण की वस्तुएं, अग्नि से सम्बन्धित कार्य, उद्योगधन्धे, लोहा, चमड़ा, प्लास्टिक, मशीनरी, वाहनादि में रहती है। इनसे जुड़े कार्यसमूह वाले अपने यहाँ पूजा कराकर लाभ के भारीदार बनेंगे। मिथुन लग्न- रात्रि में २०।३ से शुरु होकर २२।१७ तक रहेगी। केतू का लग्न में बैठना कार्य शैथिल्यता का संकेत है, अतः पूजा में विशेष दानपुण्य परमावश्यक है। २०।४८ से लाभ, उद्वेग, शुभ, अमृत और चर के चौघड़िया मुहूर्त्त शुभ कहे जाएंगे।

कर्क लग्न- दीपावली की रात्रि में २२।१७ से शुरु होगी, जो कि निशीथकाल तक वर्त्तमान रहेगी। महानिशीथकाल २३।४० से २४।३३ बजे के मध्य रहेगा। जिसे धन की देवी लक्ष्मीपूजन हेतु शुभ कहा है- निशीथे लक्ष्म्यादिपूजनं कृत्यं शुभम्। श्रीगणेश, महालक्ष्मी, ऋद्धि-सिद्धि, इन्द्र, वरुण, कुबेरभण्डारी, शक्तियों सहित ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कुलदेवता, स्थानदेवता, सूर्यादि समस्तग्रह पूजनार्चन के साथ-साथ बही-बसना, खाता, कलमदान, रोकड़ापूजन, अत्याधुनिक उपकरण कम्प्यूटर आदि का सविधि पूजन करने तथा करवाने वाले इस वर्ष लाभोन्नति की ओर अग्रसर होते जाऐंगे। राजसमाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। वर्ष का अधिक समय हर्षोल्लास के साथ-साथ नया कुछ करने में गुजरेगा।

अपने कुलगुरु, सुयोग्य द्विजाचार्य द्वारा सुनिश्चित लग्न मुहूर्त्त में कल कारखाने, उद्योगधन्धे, आफिस, दुकान, मकान, व्यवसाय, फैक्ट्री, फार्महाउस, नाट्यकलाकेन्द्र, कार्यालय, विद्यालय आदि में महालक्ष्मी की अर्चना कराना अभिष्ट रहता है। पूजन दूसरे के माध्यम से कराने पर लक्ष्मी का भण्डार कभी खाली नहीं होता, क्योंकि उसमें पुण्य का अंश मिला रहता है।

लक्ष्मी के भण्डार की बडी अपूरब बात।
ज्यों ज्यों दे त्यों त्यों बढ़े, बिन खर्चे घटजात॥

समुद्र से प्रादुर्भूत विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी आश्रय ग्रहणार्थ सद्गृहस्थ दुकान, कारखाना, उद्योग, ऑफिस, स्टोर आदि का निरीक्षण करती हैं। किसने कितनी स्वच्छता से घर सजाया है और किसने नहीं। कहाँ में निवास करुँ अथवा कहाँ नहीं, यह भी देखती हैं कि कौन मेरी भक्ति में संलग्न है- अर्धरात्रे भ्रमत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहान्। अतःस्वलंकृता लिप्ता दीपैर्जाग्रज्जनोत्सवाः॥ जहाँ अच्छा लगता है, वहीं ठहर जाती हैं। इसलिए मनुष्य अलंकारों से युक्त तथा पुष्प माल्यादि से सुशोभित चन्दन लगाकर दीपकों के उजाले में उत्सव करते हुए जागते रहें। ब्रह्ममुहूर्त्त में सद्गृहणियाँ आट-खटका करके अपने-अपने घरों से अलक्ष्मी को निष्काषित करें- तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिण्डिभवादनैः। निष्कास्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीःस्वगृहाङ्गणात्॥ और कहें कि हे अलक्ष्मी! (दरिद्रता) तुम मेरे घर से चली जाओ, क्योंकि अब यहाँ श्रीविष्णुसहित लक्ष्मीजी का निवास हो गया है। ऐसा करने से वर्ष में सुख-समृद्धि बढ़ती है।

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ चैत्र शुक्ल पक्ष १ — ता.१६ से ३० मार्च सन् २०१० ई. तक।

वसन्तऋतु,रविउत्तरायणे,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गण:६५५४

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टैं.टा.घं.मि.में हैं।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल
१	मं	५३	५७	२८	७	पूषा	०	३८	६	४७	शुभ	९	४०	१०	२४	किं	२१	५५
२	बु	५७	०	२९	१९	उभा	५	५०	८	५१	शु	९	५५	१०	२९	बा	२५	३०
३	गु	५९	५	३०	८	रे	१०	७	१०	३३	ब्र	९	२५	१०	१६	तै	२८	२
४	शु	६०	०	-	-	अ	१३	२५	११	५१	ऐं	८	१०	९	४५	व	२९	३७
४	श	०	१०	६	३२	भर	१५	४५	१२	४६	वै	६	८	८	५५	वि	०	१०
५	र	०	१२	६	३२	कृ	१७	३	१३	१६	वि	३/५९	५५/३०	७/३०	४५/१५	बा	०	१२
६	र	५९	३	३०	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	चं	५६	४७	२९	८	रो	१७	१७	१३	२०	आ	५४	५३	२८	२२	गर	२७	५८
८	मं	५३	१८	२७	४३	मृग	१६	१७	१२	५५	सौ	४९	१५	२६	६	वि	२५	३
९	बु	४८	३२	२५	४८	आ	१४	८	१२	२	शो	४२	३७	२३	२६	बा	२०	५५
१०	गु	४२	४०	२३	२६	पुन	१०	४५	१०	४०	अति	३५	५	२०	२४	तै	१५	३७
११	शु	३५	४७	२०	४०	पु	६	१७	८	५२	सु	२६	४३	१७	२	व	९	१५
१२	श	२८	१०	१७	३६	श्ले	०/५४	५५/५५	६/२८	४३/१८	धृ	१७	४२	१३	२५	बव	२	०
१३	र	२०	५	१४	२१	पूफा	४८	४०	२५	४७	शूल	८/५८	१५/३५	९/२१	३७/४५	तै	२०	५
१४	चं	११	५५	११	४	उफा	४२	३३	२३	१९	वृ	४९	१०	२५	५८	व	११	५५
१५	मं	४	५	७	५५	ह	३७	२	२१	६	धु	४०	१७	२२	२४	बव	४	५

तिथि	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.फा.	प्र.चै.	मु.रअ	क्रि	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रात:५/३० रा.	अं.	क.	विवरण
१	२९	४०	६	३२	१८	२४	२५	३	२९	16	मीन	११	१	१७	इष्टि:,नवरात्रारम्भ:,कलशस्था.वर्षफलश्रवण,ध्वजारोपणं,A
२	२९	४५	६	३१	१८	२५	२६	४	३०	17	मीन	११	२	१७	सिंधारा२,चन्द्रदर्शनमु.३०,विश्वविकलाङ्गदि.,झूलेलालज.
३	२९	४७	६	३०	१८	२५	२७	५	१	18	मे१०।३३	११	३	१६	सौभाग्यतृतीया,गणगौरपूजन(राज),पंचकस.१०।३३,मत्स्यB
४	२९	५३	६	२९	१८	२६	२८	६	२	19	मेष	११	४	१६	भ.१८।२०से,दमनकचतुर्थी,स.सि.यो.११।५१तक
४	२९	५५	६	२८	१८	२६	२९	७	३	20	वृ१८।५४	११	५	१६	भ.६।३२तक,श्रीपंचमी,हयव्रत५,पूर्वोदयगुरु१४।५०,सा.मेषेC
५	३०	०	६	२७	१८	२७	३०	८	४	21	वृष	११	६	१५	यमुनाषष्ठी,स्कन्दषष्ठी,मे.माईसरखानाअमृतसर,रात्रिदिनम्समम्
६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	षष्ठीक्षय:
७	३०	५	६	२५	१८	२७	१	९	५	22	मि२५।८	११	७	१५	भ.२९।८से,दुर्गार्चनं,रा.चैत्र शाके१९३२प्रा.,रेवत्यांबुध:२९।३४D
८	३०	१०	६	२४	१८	२८	२	१०	६	23	मिथुन	११	८	१४	भ.१६।२५तक,अशोकाष्टमी,दुर्गा८,भवान्युत्पत्ति,मे.मनसादेवीE
९	३०	१२	६	२३	१८	२८	३	११	७	24	क२१।१	११	९	१४	श्रीरामनवमी व्रतोत्सव:, श्रीदुर्गा९, नवरात्रसमाप्त
१०	३०	१७	६	२२	१८	२९	४	१२	८	25	कर्क	११	१०	१३	धर्मराजदशमी, अ.सि.यो.१०।४०से, स.सि.योग
११	३०	२०	६	२१	१८	२९	५	१३	९	26	कर्क	११	११	१३	भ.१०।३से२०।४०तक,कामदाएकादशीव्रतसबका,अश्वि.F
१२	३०	२५	६	२०	१८	३०	६	१४	१०	27	सिं६।४२	११	१२	१२	प्रदोषव्रत,बुधोदय:पश्चि.१७।३०,मदन१२,हरिदमनोत्सव:
१३	३०	२८	६	१९	१८	३०	७	१५	११	28	सिंह	११	१३	१२	अनङ्ग१३,श्रीमहावीरज.पामसन्डे,ग्यारहवींशरीफ,बन्दीआनंदीG
१४	३०	३३	६	१८	१८	३१	८	१६	१२	29	क७।१०	११	१४	११	भ.११।४से२१।३०तक,अन्वा.,दमनक१४,अश्वि.मेषमेंबुध:H
१५	३०	३७	६	१७	१८	३२	९	१७	१३	30	कन्या	११	१५	१०	इष्टि:,चैत्रीपूर्णिमा,हनुमज्जयंती,मे.सालासर-बालाजी,ओलीK

A गुड़ी१,गौतमज.,आर्यस.स्था.दि.,उभायांबुध:१३।३०,रेवत्यांशुक्र:८।१६,हेडगेवारज.,कल्पादि,स.सि.यो.६।४७से B जयंती,उभायांरवि:६।४८,पूभा.१गुरु:१०।२३,रविउस्सानी४,सरहुलबिहार,मन्वादि,स.सि.यो. C भानु:२३।३,वसंतसम्पात,महाविषुवदिन,सूर्यकाउत्तरगोलमेंप्रवेश,कल्पादि: D रोहिणीव्रत,पूषा.३राहु:पुन.१केतु:२२।१८,नवपदओलीप्रा.जैन,जलसंसाधनदि.,अ.सि.यो.१३।२०से,स.सि.यो. E अन्नपूर्णापरिक्रमा, मीराबाईज.शहीददि. F मेषमेंशुक्र२६।३६,लक्ष्मीकांतडोलोत्सव G मेलामथुरा,स.सि.यो.२५।४७से H २८।४१,व.उफा.३शनि:२७।५,सत्यव्रत,देवीमेलादेवबन्द K स.वैशाखस्नानप्रा.सिद्धांचलयात्रा,संतपीपाज.मन्वा.

चैत्रशु.८भौमे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कृ.ता.२३मार्च

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	२	३	११	१०	११	५	८	२
अं.	८	२	७	१६	२१	२५	७	२३	२३
क.	१४	२५	१०	३९	८	१२	१२	१९	१९
वि.	५५	२४	१५	५	२६	३३	२४	३	३
गति	५९	८२५	८	११९	१४	७४	४	३	३
	३२	३५	३७	२८	१०	१४	४४	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	उभा.२	मृग.३	पुष्य.२	उभा.४	पूभा.१	रे.३	उफा.४	पूषा.३	पुन.१
नाड़ी	सौम्या	दहना	दहना	सौम्या	नीरा	दहना	नीरा	सौम्या	नीरा

॥ फलम् ॥

श्रीगुरुराधाकृष्णा को सुमिरहुँ बारम्बार। शोभन संवत फल लिखूँ, ग्रहाधीन संसार॥ श्रीविष्णुबीसी का १७वाँ शोभन नामक सम्वत्सर धनु लग्न में शुरु हो रहा है। इसका राजा युद्ध का देवता मंगल है। मन्त्री नपुंशक ग्रह बुध बना हुआ है। कन्या का शनि इस वर्ष कहीं ना कहीं भयंकर युद्ध करायेगा- कन्या मीने यदा सौरि राशि वक्रं प्रजायते। नृपयुद्धं भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते॥ भयातंक से दुःखित जनता भागती फिरेगी। अशान्ति का सर्वत्र साम्राज्य विकास में बाधक बनेगा। धनु का राहु भौतिक विज्ञान के साथ-साथ अन्धविश्वास, छल, दम्भ, कपट, पाखण्ड को बढ़ावा देगा। बाजार भाव- चन्द्रदर्शनमु.३० साम्यार्घकारक हैं। मीन राशि में त्रिग्रही योग वर्षा तो करेगा ही, भावों में फेरबदल भी कर सकता है- एकराशौ गताह्येते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाःस्वल्प जलप्रदाः॥ अन्य ग्रहचाल के प्रभाव से मशीनरी, वाहन, घी, तेल, साबुन, श्रृंगारप्रसाधन, मेवा, दूध, दही, फल, सब्जी एवं निर्माण की चीजें तेज होंगी। सट्टा, शेयर तथा सर्राफाबाजार गर्म रहेगा। मौसम- पक्ष के आरम्भ और अन्त में खराब होगा। मेघगर्जन के साथ ओले पड़ सकते हैं। सर्द-गर्म की प्रतिक्रिया से रोग फैलेंगे। चैत्र की वर्षा नुकसानदायक होती है- एक बूंद जो चैत मँह परै। सहस बूंद सावन मँह हरै॥ ग्रहदर्शन- सूर्यास्त के बाद पश्चिम में शुक्र, पूर्व में मंगल तथा शनि के दर्शन होंगे। प्रातः पूर्वीक्षितिज में गुरु को देख सकते हैं। ता.२७ में बुध उदय होकर मौसम को खराब करेगा।

कृ.ता.३०मार्च चैत्रशु.१५भौमे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	५	३	०	१०	०	५	८	२
अं.	१५	१३	८	०	२२	३	६	२२	२२
क.	१०	४६	२२	३	४६	५१	३९	५६	५६
वि.	४५	१५	३७	४५	५२	३१	३२	४८	४८
गति	५९	८७७	१२	१०५	१३	७४	४	३	३
	१६	२४	२९	१४	५५	०	३८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	उभा.४	हस्त.२	पुष्य.२	अश्वि.१	पूभा.१	अश्वि.१	उफा.३	पूषा.३	पुन.१
नाड़ी	सौम्या	सौम्या	दहना	वायु	नीरा	वायु	नीरा	सौम्या	नीरा

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ प्र.वैशाख कृष्ण पक्ष २

ता.३१ मार्च से १४अप्रैल सन् २०१०ई. तक।
वसन्तऋतु,रविउत्तरायणे,उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६५६१
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	रा.चै	प्र.चै.	मु.रउ	ग्रे.मा.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	
१	मं	५६	५७	२९	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	प्रतिपदाक्षयः
२	बु	५१	८	२६	४२	चि	३२	३७	१९	१८	व्या	३२	२०	१९	११	तै	२४	३	३०	४२	६	१५	१८	३२	१०	१८	१४	31	तु.८।१२	११	१६	१०	रेवत्यां रविः१७।४०
३	गु	४६	५०	२४	५८	स्वा	२९	३५	१८	४	ह	२५	३३	१६	२७	व	१९	०	३०	४५	६	१४	१८	३२	११	११	१५	1	तुला	११	१७	९	भ.१३।५०से २४।५८तक, पूभा.२गुरुः१४।४१, अप्रैल ४A
४	शु	४४	२५	२३	५९	वि	२८	२२	१७	३४	वज्र	२०	१०	१४	१७	बव	१५	३७	३०	४८	६	१३	१८	३२	१२	२०	१६	2	वृ११।४१	११	१८	८	चतुर्थीव्रतचन्द्रोदय२२।१८,गुडफ्राईडे (क्रिश्चि.),स.सि.B
५	श	४४	१२	२३	५३	अनु	२९	१३	१७	५३	सि	१६	२७	१२	४७	कौ	१४	२०	३०	५३	६	१२	१८	३३	१३	२१	१७	3	वृश्चिक	११	१९	७	
६	र	४६	३	२४	३६	ज्ये	३२	८	१९	२	व्य	१४	२५	११	५७	गर	१५	८	३०	५५	६	११	१८	३३	१४	२२	१८	4	ध११।२	११	२०	६	भ.२४।३६से, ईस्टरसन्डे, स.सि.यो.११।२से
७	चं	४९	५२	२६	६	मू	३७	०	२०	५७	वरि	१४	०	११	४५	वि	१८	०	३१	२	६	९	१८	३४	१५	२३	१९	5	धनु	११	२१	५	भ.१३।२१तक, शीतलापूजन (बूढ़ाबासौड़ा)
८	मं	५५	१३	२८	१३	पूषा	४३	२५	२३	३०	परि	१४	५८	१२	७	बा	२२	३२	३१	५	६	८	१८	३४	१६	२४	२०	6	धनु	११	२२	४	कालाष्टमीव्रत, भरण्यांशुक्रः२२।१२
९	बु	६०	०	-	-	उषा	५०	५३	२६	२८	शि	१६	५२	१२	५२	तै	२८	२३	३१	१०	६	७	१८	३५	१७	२५	२१	7	म.६।१४	११	२३	३	चण्डिकानवमीव्रत, विश्वस्वास्थ्यदिवस
९	गु	१	३५	६	४४	श्र	५८	४२	२९	३५	सि	१९	२५	१३	५२	गर	१	३५	३१	१२	६	६	१८	३५	१८	२६	२२	8	मकर	११	२४	२	भ.२०।२से, भरण्यांबुधः९।०
१०	शु	८	१२	९	२२	ध	६०	०	-	-	सा	२२	३	१४	५४	वि	८	१२	३१	१७	६	५	१८	३६	१९	२७	२३	9	कु११।६	११	२५	१	भ.९।२२तक, पंचकप्रारम्भ ११।६, शौर्यदिवस
११	श	१४	३५	११	५४	ध	६	२५	८	३८	शुभ	२४	२२	१५	४९	बा	१४	३५	३१	२०	६	४	१८	३६	२०	२८	२४	10	कुम्भ	११	२६	०	वरुथिनीएकादशीव्रत (सबका),वल्लभाचार्यज.रेलसप्ताहप्रा.
१२	र	२०	१०	१४	७	शत	१३	२५	११	२५	शु	२६	७	१६	३०	तै	२०	१०	३१	२५	६	३	१८	३७	२१	२९	२५	11	कुम्भ	११	२६	५९	प्रदोषव्रत
१३	चं	२४	४०	१५	५४	पूभा	१९	२५	१३	४८	ब्र	२७	०	१६	५०	व	२४	४०	३१	२८	६	२	१८	३७	२२	३०	२६	12	मी७।१२	११	२७	५८	भ.१५।५४से २८।३३तक
१४	मं	२७	५५	१७	११	उभा	२४	१२	१५	४२	ऐं	२६	५८	१६	४८	श	२७	५५	३१	३३	६	१	१८	३८	२३	३१	२७	13	मीन	११	२८	५७	तेजीमन्दी सूचकांक २४२४, स.सि.योग १५।४२तक
३०	बु	२९	५५	१७	५८	रे	२७	४८	१७	७	वै	२५	५७	१६	२३	ना	२९	५५	३१	३५	६	०	१८	३८	२४	१	२८	14	मे१७।७	११	२९	५६	स्नान-दानादि अमापुण्यः, अन्वा., पंचकस.१७।७, अश्विC

A ता.३०, बैंकवार्षिक लेखाबन्दी B योग १७।३४से

C मेषमें सूर्य ६।५६,संक्रांतिमु.३०,खर्परयोग में वैशाखीका महत्त्वपूर्णयोग, बड़्व सौर वैशाखप्रा.,विशूकेरल, कुम्भमहापर्व हरिद्वार, मुनिशुकदेवज.,खरमासस.,डा.अम्बेडकरजयंती

प्र.वैशाखकृ.८भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.६अप्रैल

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	८	३	०	१०	०	५	८	२
अं.	२२	१७	१०	१०	२४	१२	६	२२	२२
क.	४	३८	०	५१	२३	२८	७	३४	३४
वि.	५४	२७	३०	३३	२७	४८	३९	३२	३२
गति	५९	७९९	१५	७२	१३	७३	४	३	३
	३	३०	५२	३९	३८	४६	२६	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	रेव. २	पूषा. २	पुष्य ३	अश्वि४	पूभा. २	अश्वि४	उफा. ३	पूषा. ३	पुन. १
नाड़ी	दहना	सौम्या	ज्वाला	वायु	नीरा	वायु	नीरा	सौम्या	नीरा

शु. १ बु. | गु.११ | १२ सू. | २ | १० | ३ के. | ९ चं. रा. | ४ मं. | ६ श. | ८ | ५ | ७

॥ फलम् ॥

मास में पांच मंगलवार नेष्ट तो बुधवार श्रेष्ठ हैं- यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥ विश्व के किन्हीं देशों में रक्तपात होगा। राजनीतिक उठापटक के चलते सरकार बदल सकती है। आतंकी भयातंक से दुःखित जनता भागती फिरेगी। कुम्भ महापर्व के अवसर पर विशेष चौकसी बरतनी चाहिए। कश्मीर की समस्या सिरदर्द बनेगी। सूर्य शनी समसप्तक, राहु केतू केन्द्र। युद्ध कहीं पर होयगा, बन्दी बने नरेन्द्र॥ प्रभावी देश विश्व में शान्ति बहाल करने के लिए घड़ियाली आंसू बहायेंगे। सही स्थिति को भांपते हुए देश के प्रहरियों को काम करना चाहिए।

बाजारभाव- तिथियों की ह्रास-वृद्धि का फल अच्छा होने से चालू मार्केट का रुख नरम रहेगा- जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥ अमावस्या में सूती मेष की संक्रांति खर्पर योगकारक नेष्ट है- यस्मिन्वारेस्ति संक्रान्तिस्तत्रै अमाभिधातिथिः। लोके खर्परयोगोयं जीवधान्यादिनाशकः॥ पेयपदार्थ, रसकश, चीनी, मेवा, मिष्ठान्न, दूध, दही, घी, सजावट तथा निर्माण की चीजें, वाहन, शेयर, सर्राफा में तेजी का रुख बनेगा। मौसम- आकाश कभी स्वच्छ तो कभी मेघाच्छादित रहेगा। हल्की वर्षा, आंधी-तूफान, विद्युत्पात, ओलावृष्टि की आशंका जाननी चाहिए। देश के दक्षिणसम्भागों में तापमान रिकार्ड तोड़ बढ़ सकता है। बीमारी फैल सकती है। ग्रहदर्शन- सायं पश्चिम में बुध,शुक्र, पूर्व में भौम, शनि और गुरु को प्रातः पूर्वीक्षितिज में देखें।

कु.ता.१४अप्रैल प्र.वैशाखकृ.३०बुधे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

बु. १ शु. | गु.११ | सू.१२ चं. | २ | १० | ३ के. | ९ रा. | ४ मं. | ६ श. | ८ | ५ | ७

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	३	०	१०	०	५	८	२
अं.	२९	२३	१२	१७	२६	२२	५	२२	२२
क.	५६	५१	१९	४३	११	१७	३३	९	९
वि.	२४	३४	१०	२४	५	५९	२८	६	६
गति	५८	७६२	१९	२३	१३	७३	४	३	३
	४८	२५	९	५	११	२९	३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	रेव. ४	रेव. ३	पुष्य ३	भर. २	पूभा. २	भर. ३	उफा. ३	पूषा. ३	पुन. १
नाड़ी	दहना	दहना	ज्वाला	चण्डा	नीरा	चण्डा	नीरा	सौम्या	नीरा

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ प्र.वैशाख शुक्ल पक्ष ३

ता.१५ से २८ अप्रैल सन् २०१० ई. तक।

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६५८४

भद्रा, पंचक, ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीखें रा.चै.	प्र.वै.	मु.रउ.	इं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	
१	गु	३०	४७	१८	१८	अ	३०	१५	१८	५	वि	२४	५	१५	३७	किं	०	२२	३१	४०	५	५९	१८	३९	२५	२	२९	15	मेष	०	०	५५	इष्टिः, ऋषिपाराशरज, पुरुषोत्तम (अधिकमास) प्रारम्भ,A
२	शु	३०	३५	१८	१२	भर	३१	४२	१८	३१	प्री	२१	२०	१४	३०	बा	०	४३	३१	४५	५	५८	१८	४०	२६	३	३०	16	वृ२४।४२	०	१	५३	चन्द्रदर्शनमु.१५, पूभा.३गुरुः१०।३६
३	श	२९	२७	१७	४४	कृ	३२	१५	१८	५१	आ	१७	५२	१३	६	तै	०	२	३१	५०	५	५७	१८	४१	२७	४	१	17	वृष	०	२	५२	भ.२९।२०से, कृत्ति.शुक्रः१९।९, जमादिउलअव्वल५, स.B
४	र	२७	३०	१६	५६	रो	३२	०	१८	४४	सौ	१३	४२	११	२५	वि	२७	३०	३१	५३	५	५६	१८	४१	२८	५	२	18	वृष	०	३	५१	भ.१६।५६तक, वक्रीबुधः९।४०, पुरातत्त्वरक्षणदि., रोहिणीव्रत
५	चं	२४	४७	१५	५०	मृग	३१	०	१८	१९	शो	८	५७	९	३०	वा	२४	४७	३१	५५	५	५५	१८	४१	२९	६	३	19	मि६।२१	०	४	५०	स.सि.योग व अ.सि.योग १८।१९तक
६	मं	२१	२०	१४	२६	आ	२९	१८	१७	३७	अति	३/५७	३८/४३	७/२८	३१/५१	तै	२१	२०	३२	०	५	५४	१८	४२	३०	७	४	20	मिथुन	०	५	४८	वृषमेंशुक्र१२।३७, बुधास्तःपश्चि.६।१५, सा.वृषेभानुः१०।१C
७	बु	१७	१२	१२	४६	पुन	२६	५०	१६	३७	धृ	५१	१२	२६	२२	व	१७	१२	३२	२	५	५३	१८	४२	१	८	५	21	क१०।५२	०	६	४७	भ.१२।४६से २३।४७तक, रा.वैशाखारम्भः
८	गु	१२	२०	१०	४८	पु	२३	४५	१५	२२	शूल	४४	१३	२३	३३	बव	१२	२०	३२	७	५	५२	१८	४३	२	९	६	22	कर्क	०	७	४५	वसुन्धरारक्षणदिवस, स.सि.योग व अ.सि.योग १५।२२तक
९	शु	६	५०	८	३५	श्ले	२०	०	१३	५१	गंड	३६	४२	२०	३२	कौ	६	५०	३२	१०	५	५१	१८	४३	३	१०	७	23	सिं१३।५१	०	८	४४	बाबूकुंवरसिंहजयंती (बिहार)
१०	श	०	४७	६	९	म	१५	४५	१२	८	वृ	२८	४७	१७	२१	गर	०	४७	३२	१५	५	५०	१८	४४	४	११	८	24	सिंह	०	९	४२	भ.१६।५१से२७।३३तक, कमलापुरुषोत्तमाएकादशीव्रतस्मार्त्त
११	श	५४	१८	२७	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	एकादशीक्षयः
१२	र	४७	४२	२४	५४	पूफा	११	१०	१०	१७	ध्रु	२०	४२	१४	६	बव	२१	०	३२	२०	५	४९	१८	४५	५	१२	९	25	क१५।४९	०	१०	४१	कमला११व्रतवैष्णवानाम्, स.सि.योग १०।१७से
१३	चं	४१	१५	२२	१८	उफा	६	३३	८	२५	व्या	१२	३५	१०	५०	कौ	१४	३०	३२	२३	५	४८	१८	४५	६	१३	१०	26	कन्या	०	११	३९	सोमप्रदोषव्रत, आश्लेषायां भौमः१३।५५
१४	मं	३५	१५	१९	५३	ह	२/५८	७/१८	६/२१	३८/६	ह	४/५७	४३/१७	७/२८	४०/४२	गर	८	१५	३२	२८	५	४७	१८	४६	७	१४	११	27	तु१७।५२	०	१२	३८	भ.११।५३से, भरण्यां रविः२२।४६
१५	बु	३०	५	१७	४८	स्वा	५५	२७	२७	५७	सि	५०	४२	२६	३	वि	२	४०	३२	३३	५	४६	१८	४७	८	१५	१२	28	तुला	०	१३	३६	भ.६।५०तक, अन्वाधान, स्नान-दानादिपूर्णिमापुण्यः, रोहिण्यांD

A स.सि.यो.१८।५तक, देवदामोदरतिथि असम   B सि.व अ.सि.यो.१८।५१से

C ग्रीष्मऋतुप्रा.   D शुक्रः१७।४०, अगस्ततारास्त२३।१०

प्र.वैशाखशु.८गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२२अप्रैल

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	३	३	०	१०	१	५	८	२
अं.	७	१०	१५	१७	२७	२	५	२१	२१
क.	४५	५०	२	५६	५५	४	२	४३	४३
वि.	४१	४६	१७	०	१	४८	४८	३९	३९
गति	५८/३१	८५०/७	२१/५४	२३/१५	१२/४२	७३/९	३/३२	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	मा./उ.	मा./उ.	व./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचरण	अश्वि.३	पुष्य ३	पुष्य ४	भर.२	पूभा.३	कृत्ति.२	उफा.३	पूषा.३	पुन.१
नाड़ी	वायु	जल	जल	चण्डा	नीरा	चण्डा	नीरा	सौम्या	नीरा

शु.२ | १२ | ३ के. | १ सू. बु. | ११ गु. | ४ चं. मं. | १० | ५ | ७ | ९ रा. | श.६ | ८

॥ फलम् ॥

शनिवारी एकादशी नेष्ट है- एकादश्यां शनौ तस्मिञ्छत्र भंगोऽथवा भुवि। नगर ग्राम भंगःस्याद्वैरिचौराद्युपद्रवा॥ राजनीतिक, सामाजिक तथा प्राकृतिक उपद्रवों के चलते कोई महानगर, ग्राम, देश-प्रदेश अस्तित्त्वहीन हो। किसी सरकार पर संकट आ जाए तो आश्चर्य नहीं। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान-इराक, साऊदीअरब, सीरिया, टर्की में ग्रहवेध के कारण उपद्रव अधिक होंगे। भृगुपुत्रो वृषेस्थित्वा सुभिक्षं पृथ्वी तले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रह कारकम्॥ वृष का शुक्र भौतिक सुख सुविधाओं में बढ़ोत्तरी करेगा। मुस्लिम देशों में सौहार्दपूर्ण मैत्री का वातावरण बनेगा। बाजारभाव- द्वितीया में चन्द्रदर्शनमु.१५ तेजीकारक है। मेष राशि में सूर्य बुध की युति व्यापार में भारी उथल-पुथल करेगी। सर्राफा, सट्टा व शेयर बाजार में दो तरफा चाल चलेगी। सरकार आयात-निर्यात नीति में हस्तक्षेप कर सकती है। मौसम- ता.२० बुधास्त, ता.२८ अगस्तास्त के प्रभाव से यत्र-तत्र बादलचाल, वायुवेग के साथ बूंदा-बांदी होगी। दक्षिण सम्भागों में बेहद गर्मी, अग्निकाण्ड, तूफानभय और पानी के अभाव में हो हल्ला मचेगा। यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। अधिकमास वैशाख का फल- वैशाखयुग्मेधान्यानां निष्पत्तिशुभःक्वचित्। कहीं फसल अच्छी तो कहीं खराब रहेगी। ग्रहदर्शन- प्रतिदिन सूर्यास्त के पीछे पश्चिम में शुक्र, खमध्य में मंगल, पूर्व में शनि के दर्शन होंगे। प्रातः पूर्वीक्षितिज में गुरु को देख सकते हैं। ता.२० में बुध अस्त हो जायेगा।

कु.ता.२८अप्रैल प्र.वैशाखशु.१५बुधे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

शु.२ | १२ | ३ के. | सू. १ बु. | ११ गु. | ४ मं. | १० | ५ | ७ चं. | ९ रा. | श.६ | ८

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	६	३	०	१०	१	५	८	२
अं.	१३	६	१७	१४	२९	९	४	२१	२१
क.	३६	५२	१८	४४	१०	२३	४२	२४	२४
वि.	२२	५९	९	३५	८	६	४४	३४	३४
गति	५८/१९	८९२/२२	२३/३८	३९/२५	१२/१६	७२/५३	३/५	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	मा./उ.	मा./उ.	व./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचरण	भर.१	स्वा.१	आश्ले.१	भर.१	पूभा.३	कृत्ति.४	उफा.३	पूषा.३	पुन.१
नाड़ी	चण्डा	वायु	अमृता	चण्डा	नीरा	चण्डा	नीरा	सौम्या	नीरा

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ द्वि.वैशाख कृष्णपक्ष ४ | **ता.२९ अप्रैल से १४ मई सन् २०१०ई. तक।**

ग्रीष्मऋतु,रविउत्तरायणे,उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६५९८

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा.वै.	प्र.वै.	मु.ज.	अंग्रे.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।
१	गु	२६	२	१६	११	वि	५३	५५	२७	२०	व्य	४५	८	२३	४९	कौ	२६	२	३२	३३	५	४६	१८	४७	९	१६	१३	29	वृ२१।२९	०	१४	३४	इष्टिः, स.सि.योग २७।२०से
२	शु	२३	३३	१५	१०	अनु	५४	३	२७	२२	वरि	४०	५	२२	६	गर	२३	३३	३२	३७	५	४५	१८	४८	१०	१७	१४	30	वृश्चिक	०	१५	३२	भ.२७।१से, व.अश्वि.बुधः७।५०, स.सि.योग २७।२२तक
३	श	२२	४५	१४	५१	ज्ये	५५	५५	२८	७	परि	३८	३	२०	५८	वि	२२	४५	३२	३७	५	४५	१८	४८	११	१८	१५	1	ध२८।७	०	१६	३१	भ.१४।५१तक, मईद५ता.३१, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय२१।५८,A
४	र	२३	५२	१५	१७	मूल	५९	४०	२९	३६	शि	३६	४२	२०	२५	बा	२३	५२	३२	४२	५	४४	१८	४९	१२	१९	१६	2	धनु	०	१७	२९	पूभा.४ मीनमें गुरुप्र.८।१०, स.सि.योग २१।३६तक
५	चं	२६	४८	१६	२६	पूषा	६०	०	–	–	सि	३६	४७	२०	२६	तै	२६	४८	३२	४५	५	४३	१८	४९	१३	२०	१७	3	धनु	०	१८	२७	सौरऊर्जादिवस
६	मं	३१	१७	१८	१४	पूषा	५	२	७	४४	सा	३७	५८	२०	५४	व	३१	१७	३२	४७	५	४३	१८	५०	१४	२१	१८	4	म१४।२४	०	१९	२५	भ.१८।१४से
७	बु	३७	०	२०	३०	उषा	११	४५	१०	२४	शुभ	४०	५	२१	४४	वि	४	१०	३२	५०	५	४२	१८	५०	१५	२२	१९	5	मकर	०	२०	२३	भ.७।२२तक
८	गु	४३	१७	२३	०	श्र	१९	१३	१३	२२	शु	४२	३५	२२	४३	बा	१०	१०	३२	५५	५	४१	१८	५१	१६	२३	२०	6	कु२६।५४	०	२१	२२	पंचकप्रारम्भ२६।५४, कालाष्टमीव्रत
९	शु	४९	२८	२५	२७	ध	२६	५२	१६	२५	ब्र	४५	२	२३	४१	तै	१६	२३	३२	५७	५	४०	१८	५१	१७	२४	२१	7	कुम्भ	०	२२	२०	बुधोदयःपूर्वस्यां १२।५५, कविटैगोरजयंती
१०	श	५४	५७	२७	३९	शत	३४	०	१९	१६	ऐं	४७	०	२४	२८	व	२२	१२	३३	०	५	४०	१८	५२	१८	२५	२२	8	कुम्भ	०	२३	१८	भ.१४।३३से २७।३९तक
११	र	५९	२२	२९	२४	पूभा	४०	१५	२१	४५	वै	४८	१०	२४	५५	बव	२७	१०	३३	२	५	३९	१८	५२	१९	२६	२३	9	मी१५।८	०	२४	१६	कमलापुरुषोत्तमा एकादशीव्रत(सबका),मृगेशुक्रः१७।५५B
१२	चं	६०	०	–	–	उभा	४५	७	२३	४२	वि	४८	१५	२४	५७	कौ	३०	५०	३३	५	५	३९	१८	५३	२०	२७	२४	10	मीन	०	२५	१४	कमला११व्रत निम्बार्कानाम्
१२	मं	२	२२	६	३५	रे	४८	३५	२५	४	प्री	४७	१०	२४	३०	तै	२	२२	३३	१०	५	३८	१८	५४	२१	२८	२५	11	मे२५।४	०	२६	१२	भौमप्रदोषव्रत, पंचकस.२५।४, कृत्तिकायांरविः१६।५८C
१३	बु	३	५०	७	९	अ	५०	३८	२५	५२	आ	४४	५५	२३	३५	व	३	५०	३३	१३	५	३७	१८	५४	२२	२९	२६	12	मेष	०	२७	१०	भ.७।९से १९।८तक, मार्गीबुधः१४।२८
१४	गु	३	४७	७	७	भर	५१	१५	२६	६	सौ	४१	३५	२२	१४	श	३	४७	३३	१७	५	३६	१८	५५	२३	३०	२७	13	मेष	०	२८	८	अन्वा.,पितरकार्येऽमा,तेजीमन्दीसूचकांक२५६२,एकतादिवस
३०	शु	२	२५	६	३४	कृ	५०	४२	२५	५३	शो	३७	१५	२०	३०	ना	२	२५	३३	२०	५	३६	१८	५६	२४	१	२८	14	वृ.८।३	०	२९	६	इष्टिः, देवकार्येऽमापुण्यः, वृषमेंसूर्य२७।४६, संक्रांतिमु.४५D

A मईडे, श्रमिकदिवस

B सर्वार्थसिद्धियोग २१।४५से

C स.सि.व अ.सि.योग २५।४से

D बड़्.व सौरमास ज्येष्ठारंभः,पुरुषोत्तममासस.

द्वि.वैशाखकृ.८गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कृ.ता.६मई

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	९	३	०	११	१	५	८	२
अं.	२१	१९	२०	९	०	१९	४	२०	२०
क.	२२	२६	३४	५८	४६	५	२०	५९	५९
वि.	५	७	३२	५६	२	१	२७	८	८
गति	५८	७०९	२५	२४	११	७२	२	३	३
	६	५३	३९	१	३६	३२	२३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	भर. ३	श्रव. ३	श्ले. २	अश्वि३	पूभा. ४	रोहि. ३	उफा. ३	पूषा. ३	पुन. १
नाड़ी	चण्डा	अमृता	अमृता	वायु	नीरा	वायु	नीरा	सौम्या	नीरा

शु.२ — गु.१२ — ३ के. — १ सू. बु. — ११ — ४ मं. — १० चं. — ५ — ७ — ९ रा. — श.६ — ८

॥ फलम् ॥

मास में पांच गुरुवार नेष्ट हैं- यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते॥ के अनुसार पश्चिम के किन्हीं देश-प्रदेशों में युद्धमय व्याप्त रहेगा। यूरोप के देशों में आतंकी गतिविधियाँ तेज कर सकते हैं। अमेरिकादि कोई देश छुब्ध होकर प्रभावी कदम उठा सकता है। मीन के गुरु का शनि से प्रतियोग छः मास तक सभी देशों में भारी क्षति का कारण बनेगा- यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागरा सर्वनद्योपि विनश्यति चतुष्पदाम्॥ इस कुयोग के चलते वाहन तो टकराते ही हैं, सीमापार से अस्त्र-शस्त्रों की गूंज सुनाई पड़ने लगती है। नेताओं को देशहित में सचेत रहना चाहिए। बाजारभाव- तिथि घटा-बढ़ी का फल- कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥ पदार्थों की कमी से महंगाई बढ़ेगी। मावस में बैठी वृष संक्रांतिमु.४५ मन्दीकारक है। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं। वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की, एकदम पलटा खाय॥ व्यापारियों को मार्कीट का रुख देखकर काम करना चाहिए। मौसम- प्रतिकूल नाड़ीवेध के कारण तापमान उत्तरोत्तर बढ़ता जायेगा। मरुस्थलोंमें आंधी-तूफान का जोर रहेगा। यत्र-तत्र बादलचाल, बूंदा-बांदी से राहत मिलेगी। पानी बंटवारे के संदर्भ में राज्यसरकारें एक दूसरे पर हावी होने का प्रयास करेंगी। ग्रहदर्शन- सायं पश्चिम में शुक्र,मध्यमें मंगल, पूर्व में शनिदृश्य रहेगा। प्रातःपूर्वदिशा में गुरुको देखें। ता.७बुध उदय होगा।

कृ.ता.१४मई द्वि.वैशाखकृ.३०शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

शु. २ — गु.१२ — ३ के. — सू. १ चं. बु. — ११ — ४ मं. — १० — ५ — ७ — ९ रा. — श.६ — ८

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	०	३	०	११	१	५	८	२
अं.	२९	२८	२४	८	२	२८	४	२०	२०
क.	६	३२	६	४९	१६	४४	३	३३	३३
वि.	१२	२०	१	९	२०	६	५४	४२	४२
गति	५७	८०९	२७	११	१०	७२	१	३	३
	५५	२६	२३	५१	५१	१०	४०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	कृत्ति.१	कृत्ति.१	श्ले. ३	अश्वि३	पूभा.४	मृग. २	उफा.३	पूषा. ३	पुन. १
नाड़ी	चण्डा	चण्डा	अमृता	वायु	नीरा	दहना	नीरा	सौम्या	नीरा

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ द्वि.वैशाख शुक्लपक्ष ५ — ता.१५ से २७ मई सन् २०१० ई. तक।

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६६१४
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल
१	शु	५९	५२	२९	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	श	५६	२८	२८	१०	रो	४९	१५	२५	१७	अति	३२	७	१८	२६	बा	२८	१०
३	र	५२	१७	२६	३०	मृग	४७	२	२४	२४	सु	२६	२०	१६	७	तै	२४	२२
४	चं	४७	३८	२४	३७	आ	४४	२३	२३	१९	धृ	२०	८	१३	३७	व	१९	५७
५	मं	४२	३५	२२	३६	पुन	४१	१५	२२	४	शूल	१३	३०	१०	५८	बव	१५	५
६	बु	३७	२०	२०	२९	पु	३७	५५	२०	४३	गंड	६/५१	४०/३७	८/२१	१३/२४	कौ	९	५८
७	गु	३१	५२	१८	१८	श्ले	३४	२५	१९	१९	ध्रु	५२	२८	२६	३२	गर	४	३५
८	शु	२६	२५	१६	६	म	३०	५२	१७	५३	व्या	४५	२२	२३	४१	बव	२६	२५
९	श	२०	५५	१३	५४	पूफा	२७	२०	१६	२८	ह	३८	१५	२०	५०	कौ	२०	५५
१०	र	१५	३५	११	४६	उफा	२४	०	१५	८	वज्र	३१	२०	१८	४	गर	१५	३५
११	चं	१०	३७	९	४६	ह	२१	३	१३	५६	सि	२४	४५	१५	२५	वि	१०	३७
१२	मं	६	८	७	५८	चि	१८	३३	१२	५६	व्य	१८	३५	१२	५७	बा	६	८
१३	बु	२	२०	६	२६	स्वा	१६	५२	१२	१५	वरि	१३	५	१०	४४	तै	२	२०
१४	बु	५९	२७	२९	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	गु	५७	४८	२८	३७	वि	१६	१०	११	५८	परि	८	१७	८	४९	वि	२८	३७

तिथि	दिनमान घटी	पल	स्टैण्डर्डटाइम सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीखें रा.वै.	प्र.ज्ये.	मु.जउ.	ई.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	प्रतिपदाक्षयः, विश्वघस्त्रपक्षः
२	३३	२२	५	३५	१८	५६	२५	२	२९	15	वृष	१	०	४	चन्द्रदर्शनमु.४५, मिथुनमें शुक्र ६।४३,वीरशिवाजीज.४०३A
३	३३	२५	५	३५	१८	५७	२६	३	१	16	मि१२।५०	१	१	२	अक्षयतृतीया, श्रीपरशुरामज., जमादिउस्सानी६, त्रेतायुगादिःB
४	३३	२७	५	३४	१८	५७	२७	४	२	17	मिथुन	१	१	५९	भ.१३।३३से २४।३७तक
५	३३	३०	५	३४	१८	५८	२८	५	३	18	क१६।२३	१	२	५७	आद्यशंकराचार्यजयंती, सूरदासज.५३२वीं
६	३३	३३	५	३३	१८	५८	२९	६	४	19	कर्क	१	३	५५	श्रीरामानुजाचार्यज.(उ.भारत)
७	३३	३५	५	३३	१८	५९	३०	७	५	20	सिं१९।१९	१	४	५३	भ.१८।१८से२९।१२तक,श्रीगङ्गासप्तमी, उभा.१गुरुः५।४५C
८	३३	३८	५	३२	१८	५९	३१	८	६	21	सिंह	१	५	५१	श्रीदुर्गाष्टमी,बगलामुखीज,सा.मिथुनेभानुः९।५,राजीवपुण्यःD
९	३३	४०	५	३२	१९	०	१	९	७	22	क२२।८	१	६	४८	श्रीजानकीनवमी(वै.), रा.ज्येष्ठारम्भः
१०	३३	४०	५	३२	१९	०	२	१०	८	23	कन्या	१	७	४६	भ.२२।४६से, भरण्यांबुधः१०।४५, महावीरस्वामीकेवलज्ञानE
११	३३	४५	५	३१	१९	१	३	११	९	24	तु२५।२६	१	८	४४	भ.९।४६तक, मोहिनीएकादशीव्रत (सबका), पूषा.२राहुःF
१२	३३	४७	५	३१	१९	२	४	१२	१०	25	तुला	१	९	४१	भौमप्रदोषव्रत,रोहि.रविः१२।५८, छिन्नमस्ताज.तपनकालप्रा.
१३	३३	५०	५	३०	१९	२	५	१३	११	26	तुला	१	१०	३९	भ.२१।१७से,मघासिंहमेंमंगल१६।०,श्रीनृसिंहज.श्रीकूर्मजयंती
१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	चतुर्दशीक्षयः
१५	३३	५२	५	३०	१९	३	६	१४	१२	27	वृ.६।२	१	११	३६	भ.१६।५७तक, अन्वा., बुद्धपूर्णिमा, सत्यव्रत, स्नानपूर्णाG

A वीं,विश्वपरिवारदि.,रोहिणीव्रत,स.सि.व अ.सि.यो.२५।१७तक B कल्पादिः,चन्दनयात्रा,वर्षीतपपारणजैन C आर्द्रायांशुक्रः२०।३ D मे.भृतहरि अलवर
E अ.सि.यो.१५।८से, स.सि.योग F आर्द्रा४केतुः२०।३६ G जलकुम्भदान, पीपलपूजनं, देवयानीयात्रा साम्भरलोके, नेहरुजीपुण्यः, स.सि.योग ११।५८से

द्वि.वैशाखशु.८शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२१मई

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	४	३	०	११	२	५	८	२
अं.	५	५	२७	११	३	७	३	२०	२०
क.	५१	५९	२१	४३	३०	८	५४	११	११
वि.	१	५७	५३	१७	४	१२	२८	२६	२६
गति	५७	८५०	२८	४१	१०	७१	०	३	३
	४३	३०	४३	११	७	४८	५७	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	कृति.३	मघा२	पुष्य.४	अश्वि४	उभा.१	आर्द्रा१	उफा.३	पूषा.३	पुन.१
नाड़ी	चण्डा	अमृता	अमृता	वायु	सौम्या	सौम्या	नीरा	सौम्या	नीरा

शु.३ के. | बु.१ | ४ मं. | २ सू. | १२ गु. | ५ चं. | ११ | ६ श. | ८ | १० | ७ | रा.९

॥ फलम् ॥

तेरह दिन का पक्ष 'विश्वघस्त्र पक्ष' कहलाता है- यदा च जायते पक्षस्त्रियोदश दिनात्मकः। भवेल्लोके क्षयोघोरो मुण्डमाला महीयुता॥ जिस वर्ष ऐसा होता है, उस वर्ष वसुन्धरा मुण्डों की माला धारण करती है। दैहिक दैविक भौतिक सन्ताप सताते हैं। भयंकर युद्धोत्पात के कारण रुण्ड मुण्ड लुढ़कते फिरते हैं। भारतीय राजनीति में भूचाल आ सकता है। यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वासप्तमेस्थितः। तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्न परिक्षयः॥ गुरु शनि का प्रतियोग अक्टूबर २०१० तक अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में हो हल्ला मचवायेगा। कश्मीर के मामले में सजग रहना चाहिए।

कु.ता.२७मई द्वि.वैशाखशु.१५गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

शु.३ के. | बु.१ | ४ | सू.२ | १२ गु. | ५ मं. | ११ | ६ श. | ८ | १० | चं.७ | रा.९

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	६	४	०	११	२	५	८	२
अं.	११	२९	०	१६	४	१४	३	१९	१९
क.	३६	४२	१६	४३	२८	१८	५०	५२	५२
वि.	५६	३३	४२	५९	५९	२	१९	२१	२१
गति	५७	७९८	२९	६१	९	७१	०	३	३
	३४	१२	४२	५५	२४	२६	२०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	रोहि.१	विशाखा४	मघा१	भर.१	उभा.१	आर्द्रा३	उफा.३	पूषा.२	आर्द्रा४
नाड़ी	वायु	चण्डा	अमृता	चण्डा	सौम्या	सौम्या	नीरा	सौम्या	सौम्या

बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमु.४५ मन्दीकारक है, लेकिन मन्दी नहीं होगी। मिथुन का शुक्र जौं, गेंहू, चावलादि के भावों में वृद्धि करेगा। सिंह के मंगल का फल- यदा सिंह गतो भौमः कांचनं रुवं ताम्रकम्। आरक्त सर्वद्रव्याणि महार्घाणि भवन्ति हि॥ सोना, चांदी, तांबा एवं लाल रंग की सभी वस्तुओं में तेजी का चक्र चलेगा। सट्टा, शेयरबाजार में घटा-बढ़ी का संयोग बनेगा। संग्रह करने वालों को आगे लाभ होगा। मौसम- पक्ष के आरम्भ और अन्त में मौसम खराब होगा। बूंदा-बांदी होने से राहत मिलेगी। मरुस्थलों में काली-पीली आंधियाँ चलेंगी। पर्वतीय प्रदेशों में घामाछांई का संयोग बनेगा। यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। मध्यभारत में गर्मी बेतहासा पड़ेगी। पानी चारा के अभाव से पशु-पक्षी परेशान होंगे। ग्रहदर्शन- सायं पश्चिम में मंगल, शुक्र, पूर्व में शनि और प्रातःकाल पूर्व में बुध-गुरु के दर्शन होते रहेंगे।

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ६																			दिनमान		स्टैण्डर्डटाइम सूर्योदयास्त				तारीखें				चन्द्र संचार	दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५/३०			ता.२८ मई से १२ जून सन् २०१० ई. तक। ग्रीष्मऋतु,रविउत्तरायणे,उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६६२७
तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा. ज्ये	प्र. ज्ये	मु. जड	मई	स्टैं.टा. रा.घं.मि	रा.	अं.	क.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।
१	शु	५७	२७	२८	२८	अनु	१६	४०	१२	९	शि	४	३२	७	१८	बा	२७	३८	३३	५५	५	२९	१९	३	७	१५	१३	28	वृश्चिक	१	१२	३४	इष्टिः,वीरसावरकरज.,जिनवरव्रतप्रा.जैन,स.सि.यो.१२।९तक
२	श	५८	३८	२८	५६	ज्ये	१८	३३	१२	५४	सि	१	५३	६	१४	तै	२८	२	३३	५७	५	२९	१९	४	८	१६	१४	29	ध१२।५४	१	१३	३२	श्रीनारदज.वीणादान,(वि.मु.मूल),वृन्दावनपरिक्रमा वनविहार
३	र	६०	०	-	-	मू	२१	५५	१४	१५	सा	०	२३	५	३८	व	२९	५७	३३	५८	५	२९	१९	४	९	१७	१५	30	धनु	१	१४	२९	भ.१७।२८से,मार्गीशनिः२३।४०,पातस्पर्शः२८।४०,(वि.मु.A
३	चं	१	१७	६	०	पूषा	२६	४२	१६	१०	शुभ	०	२	५	३०	वि	१	१७	३४	०	५	२९	१९	५	१०	१८	१६	31	म२२।४७	१	१५	२७	भ.६।०तक,चतुर्थीव्रत,चन्द्रोदय२२।११,पुन.शुक्रः२४।३५,B
४	मं	५	२३	७	३८	उषा	३२	४७	१८	३६	शु	०	५०	५	४९	बा	५	२३	३४	०	५	२९	१९	५	११	१९	१७	1	मकर	१	१६	२४	जून मास ६ ता.३०, (वि.मु.उषा.)
५	बु	१०	३७	९	४४	श्र	३९	५०	२१	२५	ब्र	२	३०	६	२९	तै	१०	३७	३४	२	५	२९	१९	६	१२	२०	१८	2	मकर	१	१७	२२	(वि.मु.धनिष्ठा)
६	गु	१६	३३	१२	६	ध	४७	२०	२४	२५	ऐं	४	४५	७	२३	व	१६	३३	३४	३	५	२९	१९	६	१३	२१	१९	3	कु२०।५५	१	१८	१९	भ.१२।६से२५।१९तक,पंचकप्रारम्भः१०।५५,(वि.मु.धनि.)
७	शु	२२	४०	१४	३	शत	५४	४५	२७	२२	वै	७	१८	८	२३	बव	२२	४०	३४	८	५	२८	१९	७	१४	२२	२०	4	कुम्भ	१	१९	१७	कालाष्टमीव्रत, कृत्तिकायांबुधः१०।१३
८	श	२८	२०	१६	४८	पूभा	६०	०	-	-	वि	९	३३	९	१७	कौ	२८	२०	३४	८	५	२८	१९	७	१५	२३	२१	5	मी२३।२३	१	२०	१४	सन्तदादूदयालपुण्यः, पर्यावरणदिवस, सघनवृक्षाःसंकल्पे
९	र	३३	२	१८	४१	पूभा	१	२७	६	३	प्री	११	७	९	५५	तै	०	४०	३४	१०	५	२८	१९	८	१६	२४	२२	6	मीन	१	२१	११	वृषमेंबुधप्र.१७।२, (वि.मु.उभा.), स.सि.योग ६।३से
१०	चं	३६	२०	२०	०	उभा	७	०	८	१६	आ	११	४७	१०	११	व	४	४०	३४	१०	५	२८	१९	८	१७	२५	२३	7	मीन	१	२२	९	भ.७।२०से २०।०तक
११	मं	३७	५७	२०	३९	रे	११	०	९	५२	सौ	११	१२	९	५७	बव	७	७	३४	१०	५	२८	१९	८	१८	२६	२४	8	मे९।५२	१	२३	६	अपराएकादशीव्रत(सबका)भद्रकालीग्यारस(पं.),पंचकC
१२	बु	३७	५०	२०	३६	अ	१३	२३	१०	४९	शो	९	१८	९	११	कौ	७	५२	३४	१२	५	२८	१९	९	१९	२७	२५	9	मेष	१	२४	४	कर्कमेंशुक्र११।४७
१३	गु	३६	२	१९	५३	भर	१४	०	११	४	अति	५	५७	७	५१	गर	६	५८	३४	१३	५	२८	१९	९	२०	२८	२६	10	वृ१६।५९	१	२५	१	भ.१९।५३से, प्रदोषव्रत, सावित्रीव्रतारम्भः
१४	शु	३२	४५	१८	३४	कृ	१३	५	१०	४२	सु	१/५५	२३/३८	६/२७	१/४३	वि	४	२३	३४	१५	५	२८	१९	१०	२१	२९	२७	11	वृष	१	२५	५८	भ.७।१३तक, उभा.२गुरुः१६।३५, रोहिणीव्रत
३०	श	२८	१	१६	४४	रो	१०	५०	९	४८	शूल	४८	५७	२५	३	च	०	२७	३४	१५	५	२८	१९	१०	२२	३०	२८	12	मि२१।८	१	२६	५६	अन्वा.भावुका३०,वद्सावित्रीव्रतपूजन,रोहि.बुधः१८।४२,D

A मूल), स.सि.यो.१४।१५तक ,स.सि.योग व अ.सि.योग ९।५२से

B (वि.मु.उषा.), तम्बाकूनिषेधदिवस, पातमोक्षः१४।३५

C समाप्त९।५२, मृगे.रविः११।०, (वि.मु.अश्वि.), वायुप्रवाहकालप्रा.

D पुष्येशुक्रः७।५४, शनिजयंती, शनैश्चरीमावस महत्पुण्यदायकाः, बालश्रमनिषेधदिवस, स.सि.योग व अ.सि.योग ९।४८तक

ज्येष्ठकृ.८शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.५जून

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	१०	४	०	११	२	५	८	२
अं.	२०	२१	४	२७	५	२४	३	१९	१९
क.	१४	२	४९	४८	४९	५८	५०	२३	२३
वि.	३०	५०	२२	३१	९	३४	५८	४४	४४
गति	५७	७९१	३१	८८	८	७०	०	३	३
	२७	५१	०	१	१६	५१	३५	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	रोहि.४	पूभा.१	मघा २	कृत्ति.१	उभा.१	पुन.२	उफा.३	पूषा.२	आर्द्रा.४
नाड़ी	वायु	नीरा	अमृता	चण्डा	सौम्या	नीरा	नीरा	सौम्या	सौम्या

॥ फलम् ॥

मास में पांच शनिवार नेष्ट हैं- शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देशभङ्.श्च वह्निदाहोमहर्घता:॥ के अनुसार अमेरिकादि देशों में प्राकृतिक आपदा अथवा आतंकी कुकृत्य जानलेवा सिद्धि होंगे। भारत के उत्तर पूर्व सम्भागों में कोई देश, प्रदेश, महानगर तहस-नहस हो सकता है। अग्निदाह, महंगाई वृद्धि से त्राहि-त्राहि मचेगी। पांच शुक्रवारों का फल अच्छा होने से सरकारी तौर पर राहत कार्यों को वरीयता दी जायेगी। धर्मान्ध, दुराचारी, चोर, उचक्के, लफंगे के प्रति सरकार को शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा। पड़ौसी देश के हालात और भी बिगड़ सकते हैं। सीमाओं पर चौकसी बरतनी चाहिए। बाजारभाव- कर्क का शुक्र रसकश, पेयजल, फल-फूल, सब्जियां, श्रृंगारप्रसाधन, वस्त्र, आभूषण, वाहन, मशीनरी, लेखनसामग्री आदि में तेजी करेगा। अनाजों में समता बनाये रखेगा- दैत्यगुर्यदा कर्के रसानां वे महर्घता। सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबलाभुवि॥ शनि मार्गी होने पर भावों में तब्दीली कर सकता है- वक्र चाल चलते हुये, शनि मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की, एकदम पलटा खाय॥ सो व्यापार सोच विचारकर करें। मौसम- गर्मी रिकाई तोड़ पड़ेगी। पानी, बिजली की किल्लत होगी। यत्र-तत्र आंधी-तूफान के साथ बूंदा-बांदी होने से राहत मिलेगी। मघा का मंगल वाहनों को आपस में टकरवाता है। किंवा भूकम्प, दिग्दाह का कारण बनता है। ग्रहदर्शन- सायंकाल पश्चिम में मंगल- शुक्र, पूर्व में शनि और प्रातः पूर्व में बुध-गुरु को देख सकते हैं।

कु.ता.१२जून ज्येष्ठकृ.३०शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	१	४	१	११	३	५	८	२
अं.	२६	२०	८	९	६	३	३	१९	१९
क.	५६	४८	२९	१	४४	१३	५७	१	१
वि.	२१	४४	१६	१४	०	३	१०	२८	२८
गति	५७	८४०	३१	१०६	७	७०	१	३	३
	२२	५४	५६	४१	१६	२१	१८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	मृग.२	रोहि.४	मघा ३	कृत्ति.४	उभा.२	पुन.४	उफा.३	पूषा.२	आर्द्रा.४
नाड़ी	दहना	वायु	अमृता	चण्डा	सौम्या	नीरा	नीरा	सौम्या	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ७ — ता.१३ से २६ जून सन् २०१० ई. तक।

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तरगोले। केतकीअहर्गण:६६४३
भद्रा, पंचक, ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में हैं।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा. ज्ये	प्र. ज्ये	मु. जउ	ता.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	
१	र	२२	३५	१४	३०	मृग	७	३०	८	२८	गंड	४१	३२	२२	५	बव	२२	३५	३४	१५	५	२८	१९	१०	२३	३१	२९	13	मिथुन	१	२७	५३	इष्टि:, करवीरव्रत, संदिग्धचन्द्रदर्शनमु.१५, दशाश्वमेधघाटस्नानA
२	चं	१६	२०	१२	०	आ	३ / ५८	२२ / ४७	६ / २८	४९ / ५१	वृ	३३	४०	१८	५६	कौ	१६	२०	३४	१७	५	२८	१९	११	२४	३२	१	14	कर३।२७	१	२८	५१	रम्भातीजव्रत, रज्जब७, अजमेरकाउर्सप्रारम्भ:, स.सि.यो.२८।५९से
३	मं	९	४०	९	२०	पु	५४	०	२७	४	ध्रु	२५	३०	१५	४०	गर	९	४०	३४	१८	५	२८	१९	११	२५	१	२	15	कर्क	१	२९	४८	भ.११।५८से, मिथुनमेंसूर्य१०।२०, संक्रांतिमु.३०, बङ्गव सौरB
४	बु	२	५२	६	३७	श्ले	४९	१८	२५	११	व्या	१७	२०	१२	२४	वि	२	५२	३४	१८	५	२८	१९	११	२६	२	३	16	सिंर्५।११	२	०	४५	भ.६।३७तक, श्रुतिपंचमीजैन, शहीदीगुरुअर्जुनदेव, तेजीमन्दीC
५	बु	५६	१३	२७	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	पंचमीक्षय:
६	गु	४९	५०	२५	२४	म	४४	५५	२३	२६	ह	९	१७	९	११	कौ	२३	०	३४	१८	५	२८	१९	१२	२७	३	४	17	सिंह	२	१	४३	बुधास्तपूर्वस्यां१६।२७, अरण्यषष्ठी, जामित्रषष्ठीबंगाल, विन्ध्यD
७	शु	४३	५७	२३	३	पूफा	४१	०	२१	५२	वज्र	३ / ५४	३२ / १५	६ / २७	५ / १०	गर	१६	५३	३४	१८	५	२८	१९	१२	२८	४	५	18	कर७।३२	२	२	४०	भ.२३।३से, रानीझांसीपुण्य:, बड़पूजाभिण्ड, (वि.मु.उफा.)
८	श	३८	४३	२०	५८	उफा	३७	४०	२०	३३	व्य	४७	२८	२४	२८	वि	११	२०	३४	२०	५	२९	१९	१३	२९	५	६	19	कन्या	२	३	३७	भ.१०।१तक, दुर्गा८, धूमावतीज., मे.क्षीरभवानी(क.), मृगे.E
९	र	३४	१७	१९	१२	ह	३५	१०	१९	३३	वरि	४१	२३	२२	२	बा	६	३०	३४	२०	५	२९	१९	१३	३०	६	७	20	कन्या	२	४	३५	महेशनवमी माहेश्वरिवंशे, पूफायांभौम:२८।४१, (वि.मु.चित्रा)F
१०	चं	३०	४३	१७	४६	चि	३३	३३	१८	५४	परि	३६	०	१९	५३	तै	२	३०	३४	२०	५	२९	१९	१३	३१	७	८	21	तु.७।१३	२	५	३२	भ.२१।१५से, श्रीगङ्गादशहरा, रामेश्वरप्रतिष्ठादि., बटुकभैरवG
११	मं	२८	७	१६	४४	स्वा	३२	५२	१८	३८	शि	३१	२५	१८	३	वि	२८	७	३४	२०	५	२९	१९	१३	१	८	९	22	तुला	२	६	२९	भ.१६।४४तक, निर्जलाएकादशीव्रत(सबका), मिथुनमेंH
१२	बु	२६	३०	१६	६	वि	३३	१३	१८	४७	सि	२७	४०	१६	३४	बा	२६	३०	३४	२०	५	३०	१९	१३	२	९	१०	23	वृ१२।४५	२	७	२६	प्रदोषव्रत, चम्पकद्वादशी, आश्ले.शुक्र:१८।३०, (वि.मु.अनु.)J
१३	गु	२६	५	१५	५६	अनु	३४	४२	१९	२३	सा	२४	४७	१५	२५	तै	२६	५	३४	२०	५	३०	१९	१४	३	१०	११	24	वृश्चिक	२	८	२३	सावित्रीव्रतारम्भ:, (वि.मु.अनु.), स.सि.यो.११।२३तक
१४	शु	२६	४७	१६	१३	ज्ये	३७	२०	२०	२६	शुभ	२२	५५	१४	४०	व	२६	४७	३४	२०	५	३०	१९	१४	४	११	१२	25	ध२०।२६	२	९	२१	भ.१६।१३से२८।३६तक, आर्द्रायांबुध:२३।३०, सत्यव्रत
१५	श	२८	४५	१७	०	मू	४१	७	२१	५७	शु	२१	५५	१४	१६	बव	२८	४५	३४	२०	५	३०	१९	१४	५	१२	१३	26	धनु	२	१०	१८	अन्वा., ज्येष्ठीपूर्णिमा, गुर्जराणांवट्सावित्रीव्रत, संतकबीरज.K

A प्रारम्भ (काशी) B आषाढ़ारम्भ:, राणाप्रतापज., स.सि.यो.२७।४से C सूचकांक२२१५ D वासिनीपूजा, (वि.मु.मघा) E बुध:१७।१२ F स.सि.व अ.सि.यो.११।३३तक G जयंती, सा.कर्कभानु:१७।०, वर्षाऋतुप्रा., रविदक्षिणायने, (वि.मु.स्वाती) H बुध२१।३०, रा.आषाढ़ारम्भ:, (वि.मु.स्वा.), आर्द्रायांरवि:१०।०, चं.सू.स्त्री-स्त्री, वर्षावाहन अश्वसे वायुवेग मेघाडम्बर, भीमसैनी११व्रत J मे.खाटूश्याम(राज.), स.सि.व अ.सि.यो.१८।४७से K मन्वादि:, श्रीजगन्नाथस्नानयात्रा, नशाविरोधदिवस, अहिल्याबाईहोल्करज., जन्मदिन हजरतअली उर्सबहरायच

ज्येष्ठशु.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कृ.ता.१९जून

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	५	४	१	११	३	५	८	२
अं.	३	१	१२	२२	७	११	४	१८	१८
क.	३७	९	१५	१९	३१	२३	८	३९	३९
वि.	३७	१४	२५	५३	३८	५०	१९	१३	१३
गति	५७ १६	८४२ ११	३२ ४६	१२३	६ ८	६९ ११	१ ४५	३ ५९	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	मृग. ४	उफा. २	मघा ४	रोहि. ४	उभा. २	पुष्य ३	उफा. ३	पूषा. २	आर्द्रा ४
नाड़ी	दहना	नीरा	अमृता	वायु	सौम्या	जला	नीरा	सौम्या	सौम्या

शु.४ | बु.२ | ३ सू. के. | १ | ५ मं. | ६ चं. श. | गु.१२ | ७ | रा.९ | ११ | ८ | १०

॥ फलम् ॥

देश के पूर्वोत्तर सम्भाग सिल्चर, गुवाहाटी आदि में ग्रस्तोदय अल्पकालीन चन्द्रग्रहण का फल- क्रूर संयुक्त सूर्येन्दोर्ग्रहणे नृपतिक्षय:। राष्ट्रभङ्ग.इति प्राहुर्भ प्रजावै मुनीश्वरा:॥ किसी देश-प्रदेश, राज्यादि तथा सात्त्विक प्रवृत्ति वालों के लिए श्रेष्ठ नहीं। ईशान सम्भाग में भूकम्प, भूस्खलन, झञ्झावात, सामाजिक महोत्पात के चलते भगदड़ मचेगी। सत्ता परिवर्तन अथवा महंगाई की मार से जनता त्रस्त रहेगी। देश में विदेशियों का बढ़ता वर्चस्व श्रेष्ठ नहीं। धार्मिक उन्माद को रोकने के लिए न्याय व्यवस्था को हस्तक्षेप करना पड़ सकता है। सम सप्तक बहु ग्रह हों, अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट पावे अति, जन विग्रह का रंग॥ नेताओं में अभद्र व्यवहार हो सकता है। बाजारभाव- चन्द्रदर्शन मु.१५ मिथुन की बैठी संक्रांतिमु.३० तेजीकारक है- मिथुने भास्करे याति कर्पास: कन्दमूलकम्। तिलाश्चसर्वं धान्यादि महर्घाणिस्युरेव हि॥ कपास, रूई, सूतीवस्त्र, फल-फूल, कन्दमूल, तिल तथा सभी अनाज तेज होंगे। किसी प्रदेश में दैनिक उपयोग की चीजों का मिलना कठिन हो सकता है। सर्राफा, शेयर बाजार में दो तरफा चाल चलेगी। मौसम- २२ जून आर्द्राप्रवेश दिनमें अधिक गर्मी का सूचक है- दिवार्द्रायातिचेत् भानुर्जलभक्षण कारका:। आंधी-तूफान का जोर रहेगा। यत्र-तत्र बादलचाल, बूंदा-बांदी से राहत मिलेगी। दक्षिणमें मानसून की भारी वर्षा हो सकती है। ग्रहदर्शन- सायं पश्चिम में शुक्र-मंगल तथा प्रातःशिरोभाग में गुरु को देख सकते हैं। ता.१७ बुध अस्त होगा। ता.२६ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण।

कृ.ता.२६जून ज्येष्ठशु.१५शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

शु.४ | २ | सू.३ बु. के. | ५ मं. | १ | ६ श. | गु.१२ | ७ | ९ चं. रा. | ११ | ८ | १०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहा
२	८	४	२	११	३	५	८	२	रा.
१०	४	१६	७	८	१९	४	१८	१८	अं.
१८	४५	७	१२	११	३०	२४	१६	१६	क.
१६	२	६	५०	२१	९	१३	५७	५७	वि.
५७ १२	७४७ ५३	३३ ३२	१३१ ९	५ २	६९ ४	२ ३९	३ ११	३ ११	गति
मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.	स्थिति
आर्द्रा २	मूल २	पूफा. १	आर्द्रा १	उभा. २	श्ले. १	उफा. ३	पूषा. २	आर्द्रा ४	नक्षत्रचार
सौम्या	दहना	जला	सौम्या	सौम्या	अमृता	नीरा	सौम्या	सौम्या	नाड़ी

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ आषाढ़ कृष्ण पक्ष८ — ता.२७जून से ११ जुलाई सन् २०१० ई. तक।

वर्षाऋतु,रविदक्षिणायने,उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६६५७

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.आ	प्र.आ	मु.रज	तारीख	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।
१	र	३१	४७	१८	१४	पूषा	४६	३	२३	५६	ब्र	२१	५०	१४	१५	बा	०	१५	३४	१७	५	३१	१९	१४	६	१३	१४	27	धनु	२	११	१५	इष्टिः, गुरु हरगोविन्दजयंती, स.सि.योग २३।५६से
२	चं	३६	३	१९	५६	उषा	५२	२	२६	२०	ऐं	२२	४०	१४	३५	तै	३	५५	३४	१७	५	३१	१९	१४	७	१४	१५	28	म.६।३२	२	१२	१२	(वि.मु.उषा.), स.सि.योग २६।२०से
३	मं	४१	१०	२१	५९	श्र	५८	५३	२९	४	वै	२४	१५	१५	१३	व	८	३७	३४	१७	५	३१	१९	१४	८	१५	१६	29	मकर	२	१३	९	भ.८।५८से २१।५९तक, (वि.मु.श्रवण)
४	बु	४६	५७	२४	१९	घ	६०	०	-	-	वि	२६	२३	१६	५	बव	१४	३	३४	१५	५	३२	१९	१४	९	१६	१७	30	कु१८।३३	२	१४	७	चतुर्थीव्रतचन्द्रोदय२१।५५,पंचकप्रा.१८।३३,(वि.मु.धनि)A
५	गु	५३	३	२६	४५	घ	६	१२	८	१	प्री	२८	५०	१७	४	कौ	२०	०	३४	१५	५	३२	१९	१४	१०	१७	१८	1	कुम्भ	२	१५	४	जुलाई७ता.३१, पुन.बुधः२६।३४
६	शु	५८	५७	२९	७	शत	१३	४३	११	१	आ	३१	१७	१८	३	गर	२६	०	३४	१५	५	३२	१९	१४	११	१८	१९	2	कुम्भ	२	१६	१	भ.२१।७से
७	श	६०	०	-	-	पूभा	२०	५२	१३	५४	सौ	३३	२०	१८	५३	वि	३१	३२	३४	१२	५	३३	१९	१४	१२	१९	२०	3	मी७।११	२	१६	५८	भ.१८।१०तक, (वि.मु.उभा.)
७	र	४	७	७	१२	उभा	२७	१३	१६	२६	शो	३४	४२	१९	२६	बव	४	७	३४	१२	५	३३	१९	१४	१३	२०	२१	4	मीन	२	१७	५५	कालाष्टमी,विवेकानन्दपुण्य,(वि.मु.उभा.),ससियो.१६।२६तक
८	चं	८	१०	८	४९	रे	३२	१७	१८	२८	अति	३५	०	१९	३३	कौ	८	१०	३४	१२	५	३३	१९	१४	१४	२१	२२	5	मे१८।२८	२	१८	५३	मघासिंहमें शुक्र ९।४८, पंचकस.१८।२८, पंढ़रपुरयात्राशुरु
९	मं	१०	३७	९	४९	अ	३५	४५	१९	५२	सु	३३	५८	१९	९	गर	१०	३७	३४	१०	५	३४	१९	१४	१५	२२	२३	6	मेष	२	१९	५०	भ.२१।५७से, कर्कमें बुध२१।३१, पुन.रविः९।३६,चं.चं.B
१०	बु	११	१८	१०	५	भर	३७	२५	२०	३२	धृ	३१	३०	१८	१०	वि	११	१८	३४	१०	५	३४	१९	१४	१६	२३	२४	7	वृ२६।३१	२	२०	४७	भ.१०।५तक, स.सि.योग २०।३२से
११	गु	१०	७	९	३७	कृ	३७	१२	२०	२७	शूल	२७	३०	१६	३४	बा	१०	७	३४	१०	५	३४	१९	१४	१७	२४	२५	8	वृष	२	२१	४४	योगिनीएकादशीव्रत सबका, पुष्येबुधः१४।११, (वि.मु.C
१२	शु	७	३	८	२४	रो	३५	१०	१९	३९	गंड	२२	२	१४	२४	तै	७	३	३४	५	५	३५	१९	१३	१८	२५	२६	9	वृष	२	२२	४१	प्रदोषव्रत, (वि.मु.मृग.), रोहिणीव्रत
१३	श	२	१७	६	३०	मृग	३१	४०	१८	१५	वृ	१५	१७	११	४२	व	२	१७	३४	५	५	३५	१९	१३	१९	२६	२७	10	मि६।५७	२	२३	३९	भ.६।३०से१७।१७तक,बुधोदयःपश्चिमायां७।३४,शब्बेमिराज
१४	श	५६	१०	२८	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	चतुर्दशीक्षयः
३०	र	४८	५५	२५	१०	आ	२६	५३	१६	२१	ध्रु	७/५८	२३/४०	८/२१	३३/४	च	२२	३२	३४	३	५	३६	१९	१३	२०	२७	२८	11	मिथुन	२	२४	३६	अन्वाधान, स्नानदानादि अमापुण्यः

A पातस्पर्शः११।४५,पातमोक्षः२१।१९ B स्त्री-पुरुषसंयोग वर्षावाहन भेड़, आंधी-तूफान मेघ गाज वर्षामध्यम, स.सि.यो.व अ.सि.यो.१९।५२तक C रोहिणी),बाबादेवराहापुण्यः

आषाढ़कृ.८चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.५जुलाई

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	११	४	२	११	३	५	८	२
अं.	१८	२३	२१	२६	८	२९	४	१७	१७
क.	५३	१८	१२	३५	५०	४७	५१	४८	४८
वि.	२	६	२२	९	३२	५४	११	२०	२०
गति	५७	७४५	३४	१२२	३	६८	३	३	३
	१२	३७	२५	३३	२७	४	२७	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	आर्द्रा४	रेव.२	पूफा.३	पुन.२	उभा.२	श्ले.४	उफा.३	पूषा.२	आर्द्रा४
नाड़ी	सौम्या	दहना	जला	नीरा	सौम्या	अमृता	नीरा	सौम्या	सौम्या

शु.४ | २ | ३ सू. बु. के. | ५ मं. | १ | ६ श. | चं.१२ गु. | ७ | ९ रा. | ११ | ८ | १०

॥ फलम् ॥

यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगःस्यात्तदास्ते च महद्भयम्॥ पांच रविवार नेष्ट हैं। देश के किन्हीं भागों में हालात खराब हो सकते हैं। सत्तारूढ़ पार्टी में अकल्पित उलटफेर, मारपीट, तोड़फोड़, हड़ताल, धरना प्रदर्शन भयातंक का रूप ले सकते हैं। पश्चिम के किसी देश में असम्भावी कुघटनाचक्र सम्भव है। युद्ध के काले बादल मंढ़राने लगें तो आश्चर्य नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्ति परिचर्चा होगी। कर्क का बुध दुःख-सुख की प्रतिक्रिया को समान बल देगा- निशा पतेश्चतनयः कर्क राशौ यदाभवेत्। ततोऽति दुःखं भवति सुभिक्षं स्वल्पकारकम्॥ खेती में पैदावार उद्योगों में उत्पादन अधिक होगा। बाजारभाव- पक्षान्तर्गत तिथियों की ह्रास-वृद्धि का फल- जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥ अच्छा होने से बाजार का रुख नरम रहेगा। सिंह का शुक्र सोना, तांबा अन्य लाल रंग की धातुओं के साथ-साथ अनाज, दाल, चावल, मेवा-मिष्ठान्न आदि के भावों में तेजी करेगा। सर्राफा, सट्टा तथा शेयर बाजार में उठा-पटक के योग बन रहे हैं।

कु.ता.११जुलाई आषाढ़कृ.३०रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

बु.४ | २ | सू. ३ चं. के. | ५शु. मं. | १ | ६ श. | गु.१२ | ७ | ९ रा. | ११ | ८ | १०

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	२	४	३	११	४	५	८	२
अं.	२४	१३	२४	८	९	६	५	१७	१७
क.	३६	२४	४०	३०	८	३४	१३	२९	२९
वि.	२१	१३	१६	१९	२६	२८	१९	१५	१५
गति	५७	८७७	३५	११२	२	६७	३	३	३
	१४	४३	०	४७	१९	१९	५९	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पुन.२	आर्द्रा३	पूफा.४	पुष्य२	उभा.२	मघा२	उफा.३	पूषा.२	आर्द्रा४
नाड़ी	नीरा	सौम्या	जला	जला	सौम्या	अमृता	नीरा	सौम्या	सौम्या

मौसम- पक्ष के आरम्भ और अन्त में मौसम खराब होगा। मेघाडम्बर, आंधी-तूफान, विद्युत्पात के साथ हल्की वर्षा का संयोग बनेगा। नोत्पात परित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो वक्रत्युदयम्। जलदहन पवनभय कृद्धान्यर्घ क्षयः विवृद्धयैर्वा॥ ग्रहदर्शन- सायंकाल पश्चिम में शुक्र-मंगल-शनि और प्रातः खमध्य में गुरु के दर्शन कर सकते हैं। ता.१० बुधोदय से मौसम खराब होगा।

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ आषाढ़ शुक्लपक्ष ९ — ता.१२ से २६ जुलाई सन् २०१० ई. तक॥

वर्षाऋतु,रविदक्षिणायने,उत्तरगोले। केतकीअहर्गण:६६७२

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा.आ	प्र.आ	मु.रज	ता.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रात:५/३० रा.	अं.	क.	
१	चं	४०	५५	२१	५८	पुन	२१	१०	१४	४	ह	४९	२५	२५	२२	कि	१४	५५	३४	३	५	३६	१९	१३	२१	२८	२९	12	क८।३८	२	२५	३३	इष्टि:, गुप्तनवरात्रविधानप्रारम्भ:, स.सि.यो.१४।४से
२	मं	३२	३२	१८	३८	पु	१४	५८	११	३६	वज्र	३९	५०	२१	३३	बा	६	४२	३४	०	५	३७	१९	१३	२२	२९	३०	13	कर्क	२	२६	३०	चन्द्रदर्शनमु.१५मनोरथ२(बं.), श्रीजगन्नाथजीरथयात्रापुरीA
३	बु	२४	१०	१५	१७	श्ले	८	३७	९	४	सि	३०	२०	१७	४५	गर	२४	१०	३४	०	५	३७	१९	१३	२३	३०	१	14	सिं९।४	२	२७	२८	भ.२५।४१से,सावान८,(वि.मु.मघा),गुडीचामहोत्सव:,उफायांB
४	गु	१६	७	१२	५	म	२/५७	३०/०	६/२८	३६/२६	व्य	२१	५	१४	४	वि	१६	७	३३	५५	५	३८	१९	१२	२४	३१	२	15	सिंह	२	२८	२५	भ.१२।५तक, आश्ले.बुध:१६।५५,तेजीमन्दीसूचकांक१५७२
५	शु	८	४८	९	९	उफा	५	२५	२६	३६	वरि	१२	३०	१०	३८	बा	८	४८	३३	५५	५	३८	१९	१२	२५	१	३	16	क९।५८	२	२९	२२	स्कन्दपूजन, कर्कमेंसूर्य२१।१० संक्रांतिमु.४५, बड़वसौरC
६	श	२	२०	६	३५	ह	४८	५५	२५	१३	परि	४/५७	४०/५०	७/२८	३१/४७	तै	२	२०	३३	५२	५	३९	१९	१२	२६	२	४	17	कन्या	३	०	११	भ.२८।३०से,विवस्वत्७सूर्यपूजा,पूफायांशुक्र:६।५१,महावीरD
७	श	५७	७	२८	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	सप्तमीक्षय: C श्रावणारम्भ:,बंगालकीमनसापूजाप्रा.
८	र	५३	१८	२६	५८	चि	४६	४७	२४	२२	सि	५२	७	२६	३०	वि	२५	१२	३३	५०	५	३९	१९	११	२७	३	५	18	तु१२।४७	३	१	१७	भ.१५।४४तक D गर्भकल्याणंक
९	चं	५०	४७	२५	५९	स्वा	४६	२	२४	५	सा	४७	३३	२४	४१	बा	२२	२	३३	४७	५	४०	१९	११	२८	४	६	19	तुला	३	२	१४	भड्डलीनवमी, मेलाशरीफभवानी(क.), अष्ट्राह्निकाप्रा.जैन
१०	मं	४१	५०	२५	३६	वि	४६	४८	२४	२३	शुभ	४४	१०	२३	२०	तै	२०	२०	३३	४७	५	४०	१९	११	२९	५	७	20	वृ१८।११	३	३	११	कन्यामेंमंगल ६।३१, मन्वादि:, पुष्येरवि:९।२, चं.सू.स्त्री-E
११	बु	५०	१२	२५	४६	अनु	४८	५३	२५	१४	शु	४१	५२	२२	२६	व	२०	०	३३	४३	५	४१	१९	१०	३०	६	८	21	वृश्चिक	३	४	८	भ.१३।४१से२५।४६तक, देवशयनीएकादशीव्रत(सबका)F
१२	गु	५१	५८	२६	२८	ज्ये	५२	१५	२६	३५	ब्र	४०	४०	२१	५७	बव	२१	५	३३	४३	५	४१	१९	१०	३१	७	९	22	ध२६।३५	३	५	६	सा.सिंहेभानु:२७।५२, शयनी११व्रतनिम्बार्क
१३	शु	५४	४७	२७	३७	मू	५६	४५	२८	२४	ऐं	४०	२०	२१	५०	कौ	२३	२०	३३	३८	५	४२	१९	९	१	८	१०	23	धनु	३	६	३	प्रदोषव्रत,मघासिंहमेंबुध२२।८,वक्रीगुरु:१८।१०,रा.श्रावणG
१४	श	५८	४३	२९	११	पूषा	६०	०	-	-	वै	४०	५०	२२	२	गर	२६	४५	३३	३८	५	४२	१९	९	२	९	११	24	धनु	३	७	०	भ.२९।११से, चौमासी१४जैनमुनीनां चतुर्मासप्रारम्भ:
१५	र	६०	०	-	-	पूषा	२	१२	६	३६	वि	४२	२	२२	३२	वि	३१	२	३३	३२	५	४३	१९	८	३	१०	१२	25	म१३।१४	३	७	५७	भ.१८।८तक,अन्वा.,गुरुपूर्णिमा,व्यासपूजा,मुडियापूनो,मेलाH
१५	चं	३	२७	७	६	उषा	८	३३	९	८	प्री	४३	४७	२३	१४	बव	३	२७	३३	३२	५	४३	१९	८	४	११	१३	26	मकर	३	८	५५	इष्टि,उदयापूनोपुण्य:सन्यासीनांचतुर्मासप्रा.,पूषा.१राहु:आर्द्राK

A (उड़ीसा),स.सि.यो.११।३६से B भौम:१५।२२,बल्लभाचार्यबैकुंठगमन E नपुं.वर्षा वाहनगज उत्तमवृष्टि: F शयनोत्सव,यमनियमादिचतुर्मासप्रा.,जिनदत्तशूरिश्वरनि.दादामेलाअजमेरप्रा.,स.सि.यो.व अ.सि.यो.२५।१४तक G प्रा.,श्रीतिलक व चन्द्रशेखरज. H नैमिषारण्य,परिक्रमागोवर्धन,वायुपरीक्षा,कोकिलाव्रत,शिवशयनोत्सव,स.सि.यो.६।३६से K ३केतु:१७।४६,स.सि.यो.९।८से

आषाढ़शु.८रवि प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कृ.ता.१८जुलाई

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	५	४	३	११	४	५	८	२
अं.	१	२५	२८	२०	९	१४	५	१७	१७
क.	१७	४८	४७	५९	२०	२२	४२	७	७
वि.	३	१८	४	४०	३९	३४	४५	०	०
गति	५७	८२५	३५	९९	०	६६	४	३	३
	१५	१८	३६	२४	५९	१५	३०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पुन. ४	चित्रा १	उफा. १	श्ले. २	उभा. २	पूफा. १	उफा. ३	पूषा. २	आर्द्रा ४
नाड़ी	नीरा	दहना	नीरा	अमृता	सौम्या	जला	नीरा	सौम्या	सौम्या

॥ फलम् ॥

इस वर्ष कर्क व मकर दोनों संक्रान्तियाँ शुक्रवार की हैं। यथा- करक मकर दो बहिन हैं, बैठे एकहि वार। कै परजा को पति मरे, कै पड़े अचिन्त्योकार॥ के अनुसार किंवा अकाल जैसी असामान्य विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ सकता है। प्रभावी राजनेता काल का ग्रास बन जाए तो आश्चर्य नहीं। पांच सोमवारों का फल अच्छा होने से सौहार्दपूर्ण मैत्री का वातावरण बनेगा। सोमस्य पंच वारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन-धान्य समृद्धि:स्यात् सुखं भवति सर्वदा॥ अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में वसुन्धरा रक्षण के उपाय सोचे जायेंगे। शान्ति के संदर्भ में भारत का योगदान सराहनीय रहेगा। बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त १५ तेजीकारक हैं। सूती कर्क की संक्रांतिमु.४५ मन्दी का संकेत है। योगायोग के प्रभाव से चालू मार्कीट का रुख अनिश्चित रहेगा। सिंह का बुध दाल, चावल, सभी तरह का अनाज, सोना, देवदारु तथा अन्यान्य इमारती सामान तेज होंगे- सिंह राशौ बुध:स्याच्वेत् सर्वधान्य महर्घता:। सुवर्णं देवदारुश्च महर्घं प्रभवेत्तदा॥ कन्या का मंगल लाल चन्दन, लालरंग की सभी वस्तुएं, वस्त्र, कत्था, सुपारी आदि में तेजी करेगा। मौसम- ग्रह राशि नक्षत्रचार गति परिवर्तनवसात् आंधी-तूफान के साथ सामान्य से कहीं अधिक वर्षा होगी- ग्रहाणामुदयेवाऽस्ते राश्यन्तर गतेऽयने। संयोगेवाऽपि पक्षान्ते प्रायोवृष्टि: प्रजायते॥ ग्रहदर्शन- प्रतिदिन सूर्यास्त के बाद पश्चिमी क्षितिज में बुध, शुक्र, मंगल व शनि श्रृंखलाबद्ध शोभायमान लगेंगे। प्रात: पश्चिमनत् गुरु के दर्शन कर सकते हैं।

कृ.ता.२६जुलाई आषाढ़शु.१५चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	९	५	४	११	४	५	८	२
अं.	८	८	३	३	९	२३	६	१६	१६
क.	५५	१०	३४	२१	२२	७	२०	४१	४१
वि.	११	१२	१४	१५	५८	२९	५३	४०	४०
गति	५७	७१८	३६	८३	०	६४	५	३	३
	१८	५	१५	५६	३५	४५	५	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पुष्य २	उषा. ४	उफा. ३	मघा २	उभा. २	पूफा. ३	उफा. ३	पूषा. २	आर्द्रा ४
नाड़ी	जला	नीरा	नीरा	अमृता	सौम्या	जला	नीरा	सौम्या	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ श्रावण कृष्णपक्ष१०

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा.श्रा	प्र.श्रा	मु.सा	ता.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.
१	मं	८	५०	९	१६	श्र	१५	२५	११	५४	आ	४५	५८	२४	७	कौ	८	५०	३३	२७	५	४४	१९	७	५	१२	१४	27	कुर५।२२	३	९	५२
२	बु	१४	४५	११	३८	ध	२२	४८	१४	५१	सौ	४८	२३	२५	५	गर	१४	४५	३३	२७	५	४४	१९	७	६	१३	१५	28	कुम्भ	३	१०	४९
३	गु	२०	४७	१४	४	शत	३०	१७	१७	५२	शो	५०	५०	२६	५	वि	२०	४७	३३	२३	५	४५	१९	६	७	१४	१६	29	कुम्भ	३	११	४७
४	शु	२६	५०	१६	२९	पूभा	३७	४०	२०	४९	अति	५३	७	२७	०	बा	२६	५०	३३	२३	५	४५	१९	६	८	१५	१७	30	मी१४।५	३	१२	४४
५	श	३२	२०	१८	४२	उभा	४४	३३	२३	३५	सु	५४	५५	२७	४४	तै	३२	२०	३३	१८	५	४६	१९	५	९	१६	१८	31	मीन	३	१३	४१
६	र	३७	३	२०	३६	रे	५०	३२	२६	०	धृ	५५	५८	२८	१०	गर	४	४०	३३	१२	५	४७	१९	४	१०	१७	१९	1	मे.२६।०	३	१४	३१
७	चं	४०	३२	२२	०	अ	५५	१८	२७	५४	शूल	५६	०	२८	११	वि	८	४८	३३	१२	५	४७	१९	४	११	१८	२०	2	मेष	३	१५	३६
८	मं	४२	२५	२२	४६	भर	५८	२२	२९	९	गंड	५४	४३	२७	४१	बा	११	२७	३३	७	५	४८	१९	३	१२	१९	२१	3	मेष	३	१६	३४
९	बु	४२	३०	२२	४८	कृ	५९	४३	२९	४१	वृ	५२	०	२६	३६	तै	१२	२७	३३	७	५	४८	१९	३	१३	२०	२२	4	वृ११।१७	३	१७	३१
१०	गु	४०	३७	२२	४	रो	५९	५	२९	२७	ध्रु	४७	४२	२४	५४	व	११	३	३३	२	५	४९	१९	२	१४	२१	२३	5	वृष	३	१८	२८
११	शु	३६	५३	२०	३४	मृग	५६	३७	२८	२८	व्या	४१	५३	२२	३४	बव	८	४५	३३	०	५	४९	१९	१	१५	२२	२४	6	मि१६।५८	३	१९	२६
१२	श	३१	२०	१८	२२	आ	५२	२८	२६	४९	ह	३४	३७	१९	४१	कौ	४	५	३२	५५	५	५०	१९	०	१६	२३	२५	7	मिथुन	३	२०	२३
१३	र	२४	१५	१५	३२	पुन	४६	५२	२४	३५	वज्र	२६	८	१६	१७	व	२४	१५	३२	५५	५	५०	१९	०	१७	२४	२६	8	क१९।८	३	२१	२१
१४	चं	१६	०	१२	१५	पु	४०	१५	२१	५७	सि	१६	३५	१२	२९	श	१६	०	३२	५०	५	५१	१८	५९	१८	२५	२७	9	कर्क	३	२२	१८
३०	मं	६	५५	८	३७	श्ले	३३	०	१९	३	व्य	६/५५	२५/५५	८/२८	२५/१३	ना	६	५५	३२	४८	५	५१	१८	५८	१९	२६	२८	10	सिं१९।३	३	२३	१६

ता.२७जुलाई से १०अगस्त सन् २०१०ई. तक।
वर्षाऋतु,रविदक्षिणायने,उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६६८७
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

- (१) अशून्यशयनव्रतारम्भः,पंचकप्रारम्भः२५।२२,सबेरातयवनोत्सव
- (२) भ.२४।५१से, काँवड़धारणमुहूर्त्त
- (३) भ.१४।४तक,उफा.शुक्रः१२।३७,चतुर्थीव्रतचन्द्रोदय२०।५५A
- (४)
- (५) नागपंचमी मरुस्थले बंगेऽपि, काँवड़धारणमुहूर्त्त
- (६) भ.२०।३६से,अगस्त८ता.३१,कन्यामेंशुक्र१५।५१,पंचकB
- (७) भ.९।१८तक, पूफायांबुधः२४।४७, काँवड़धारणमुहूर्त्त
- (८) कालाष्टमी, आश्ले.रविः८।०, चं.चं.स्त्री-पु.संयोगवर्षावाहनC
- (९) सर्वार्थसिद्धियोग
- (१०) भ.१०।२६से२२।४तक,हस्तेभौमः१८।११,काँवड़धारणमुहूर्त्तD
- (११) कामिकाएकादशीव्रत (सबका), काँवड़धारणमुहूर्त्त
- (१२) शनिप्रदोषव्रत
- (१३) भ.१५।३२से२५।५३तक, मासशिवरात्रिव्रत, श्रीगङ्गाजलसेE
- (१४) अन्वाधान,पितरकार्येऽमा,भा.क्रांतिदिवस,स.सि.यो.२१।५७तक
- (३०) हरियाली३०, अमावस्या, स.सि.योग १९।३तक

A उफा.४शनिः१७।३२ B समाप्त२६।०,तिलकपुण्यः,स.सि.यो.२६।०से, फ्रेंडशिपडे C मेंढ़क मेघाडम्बर,आंधीतूफान,वर्षाविशेष, स.सि.यो.२९।९से
D रोहिणीव्रत E रुद्राभिषेक, भद्रावास स्वर्गमें श्रेष्ठ, सर्वार्थसिद्धियोग २४।३५से

श्रावणकृ.८भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.३अगस्त

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	०	५	४	११	५	५	८	२
अं.	१६	१४	८	१३	९	१	७	१६	१६
क.	३४	९	२६	३३	१२	३९	३	१७	१७
वि.	०	१२	३३	३४	४५	२१	२३	१९	१९
गति	५७	७६०	३६	६६	२	६२	५	३	३
	२६	५०	५४	२०	९	५६	३६	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पुष्य ४	भर. १	उफा. ४	पूफा. १	उभा. २	उफा. २	उफा. ४	पूषा. १	आर्द्रा ३
नाड़ी	जला	चण्डा	नीरा	जला	सौम्या	नीरा	नीरा	सौम्या	सौम्या

कुण्डली (कु.ता.३अगस्त): बु.५ | के.३ | मं. शु.६ श. | ४ सू. | २ | ७ | चं. १ | ८ | १० | गु १२ | रा.९ | ११

॥ फलम् ॥

मास में पांच मंगलवार नेष्ट हैं- यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥ के अनुसार विश्व के किन्हीं देशों में दैहिक-दैविक-भौतिक उपद्रवों के चलते रक्तरंजित धरा अकुलायेगी। किसी देश-प्रदेश में सत्ता परिवर्तन हो सकता है। पड़ौसी देश में अराजकता का ताण्डव नृत्य होगा। धार्मिक उन्माद समाप्त करने हेतु सरकार बल प्रयोग कर सकती है। आस्तीन में छिपे विषधरों से सरकार को सचेत रहना चाहिए। शनैश्चर धरापुत्रावेकस्थो वृष्टिकारको। तदा च तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी॥ कन्यागत यह योग यूरोप के देशों में तहलका मचवा सकता है। बाजारभाव- जहाँ-तहाँ अतिवृष्टि वसात् खेती में नुकसान होगा। अनाज, दाल, चावल, चीनी, गुड़, शक्कर, सोयाबीन, सूरजमुखी, मूंगफली में तेजी का रुख बनेगा। हरी सब्जियाँ, फल, फूल, रसकश, पेयपदार्थों में मन्दी सम्भव है। चैत्रे वा श्रावणे मासि यदा पंचाऽर्कःभौमवासराः। राजानष्टश्च क्षयं यान्ति मन्दा दुर्भिक्षकारकाः॥ किसी बड़े राजनेता पर संकट आ सकता है। मौसम- कन्यागत त्रग्रही योग अतिवृष्टि, झन्झावात, भूकम्पादि महोत्पात से भारी क्षति का संकेत है। शकुनविचार- पुरवा बादर पश्चिम जाय। वासे वृष्टि अधिक बरसाय॥ जो पच्छिम ते पूरब जाय। बरखा बहुत न्यून हो जाय॥ ग्रहदर्शन- सन्ध्या समय पश्चिम में बुध, शुक्र, मंगल और शनि को समानान्तर देखकर मन खुश होगा। प्रातः गुरु पश्चिम की शोभा बढ़ायेगा। मालाकार ग्रह वर्षाधिक्य का कारण बनते हैं।

कु.ता.१०अगस्त श्रावणकृ.३०भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

कुण्डली (कु.ता.१०अगस्त): बु.५ | के.३ | मं. ६शु. श. | सू. ४ चं. | २ | ७ | १ | ८ | १० | १२ गु | रा.९ | ११

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	३	५	४	११	५	५	८	२
अं.	२३	२१	१२	२०	८	८	७	१५	१५
क.	१६	२४	४६	२१	५३	५४	४३	५५	५५
वि.	२७	३०	३४	२	३८	२७	४९	३	३
गति	५७	९११	३७	४६	३	६१	६	३	३
	३५	४७	२७	८	३०	२	०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	श्ले. २	श्ले. २	हस्त १	पूफा. ३	उभा. २	उफा. ४	उफा. ४	पूषा. १	आर्द्रा ३
नाड़ी	अमृता	अमृता	सौम्या	जला	सौम्या	नीरा	नीरा	सौम्या	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ श्रावण शुक्ल पक्ष ११																			दिनमान		स्टैण्डर्डटाइम सूर्योदयास्त				तारीखें				चन्द्र संचार	दैनिक रवि स्पष्ट			ता.११ से २४ अगस्त सन् २०१० ई. तक। वर्षाऋतु,रविदक्षिणायने,उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६७०२
तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टैं.टा घं.	मि.	करण	घटी	पल	घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा. श्रा	प्र. श्रा	मु. सा	अंग्रेजी	स्टैं.टा. रा.घं.मि	प्रात:५/३० रा.	अं.	क.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।
१	मं	५७	३०	२८	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	प्रतिपदाक्षयः नक्तव्रतारम्भः
२	बु	४८	२	२५	५	म	२५	३३	१६	५	परि	४५	२५	२४	२	बा	२२	४५	३२	४३	५	५२	१८	५७	२०	२७	२९	11	सिंह	३	२४	१४	सिंधारा२, चन्द्रदर्शनमु.३०, हस्तेशुक्रः७।१६
३	गु	३९	८	२१	३१	पूफा	१८	२५	१३	१४	शि	३५	२०	२०	०	तै	१३	३५	३२	४०	५	५२	१८	५६	२१	२८	१	12	क१८।३६	३	२५	११	हरियालीतीज,मधुश्रवा-सिंधारातीज,सुवर्णगौरीव्रत,रमजान१A
४	शु	३१	२	१८	१८	उफा	१२	०	१०	४१	सि	२५	५५	१६	१५	व	५	५	३२	३७	५	५३	१८	५६	२२	२९	२	13	कन्या	३	२६	९	भ.७।५५से१८।१८तक, वरद४ विनायकचतुर्थी, श्रवणतपजैन
५	श	२४	१५	१५	३५	ह	६	४५	८	३५	सा	१७	३३	१२	५४	बा	२४	१५	३२	३५	५	५३	१८	५५	२३	३०	३	14	तु१९।५०	३	२७	६	नागपंचमीदेशाचारे, नागपूजन, मंत्रॐकुरुकुल्येहूँफट्स्वाहाB
६	र	११	०	१३	३०	चि	२	५८	७	५	शुभ	१०	२५	१०	४	तै	११	०	३२	३०	५	५४	१८	५४	२४	३१	४	15	तुला	३	२८	४	वर्णश्रृयालषष्ठी,श्रीकल्किज.,स्वतन्त्रतादिवस६४वाँध्वजारोहणं
७	चं	१५	३३	१२	७	स्वा	०	५५	६	१६	शु	४	४५	७	४८	व	१५	३३	३२	२८	५	५४	१८	५३	२५	१	५	16	वृ२४।१३	३	२९	२	भ.१२।७से२३।४८तक,शीतला७सिंध,श्रीतुलसीदासज.,मघाC
८	मं	१३	५७	११	३०	वि	०	४३	६	१२	ब्र	०/५७	३५/५५	६/२१	१/५	बव	१३	५७	३२	२२	५	५५	१८	५२	२६	२	६	17	वृश्चिक	३	२९	५९	दुर्गाष्टमीसिंध,मे.नयनादेवीचिन्तपूर्णीतेजीमन्दीसूचकांक२२६१
९	बु	१४	१८	११	३८	अनु	२	२०	६	५१	वै	५६	३७	२८	३४	कौ	१४	१८	३२	२०	५	५५	१८	५१	२७	३	७	18	वृश्चिक	४	०	५७	स.सि.योग व अ.सि.योग ६।५१तक
१०	गु	१६	१५	१२	२६	ज्ये	५	४०	८	१२	वि	५६	३०	२८	३२	गर	१६	१५	३२	१५	५	५६	१८	५०	२८	४	८	19	ध.८।१२	४	१	५५	भद्रा २५।७से
११	शु	१९	४०	१३	४८	मू.	१०	२५	१०	६	प्री	५७	२३	२८	५३	वि	१९	४०	३२	१३	५	५६	१८	४९	२९	५	९	20	धनु	४	२	५२	भ.१३।४८तक, पवित्राएकादशीव्रत(सबका)
१२	श	२४	१३	१५	३८	पूषा	१६	१७	१२	२८	आ	५८	५२	२९	३०	बा	२४	१३	३२	७	५	५७	१८	४८	३०	६	१०	21	म.११।८	४	३	५०	शनिप्रदोषव्रत,वक्रीबुधः१२।१५,दधित्यागव्रतारम्भ,श्रीविष्णुD
१३	र	२९	३५	१७	४७	उषा	२३	३	१५	१०	सौ	६०	०	-	-	तै	२९	३५	३२	५	५	५७	१८	४७	३१	७	११	22	मकर	४	४	४८	सर्वार्थसिद्धियोग १५।१०तक
१४	चं	३५	२	२०	७	श्र	३०	१२	१८	३	सौ	०	५५	६	२०	गर	२	२८	३२	०	५	५८	१८	४६	१	८	१२	23	मकर	४	५	४६	भ.२०।७से,सा.कन्यायांभानुः१०।५८,रा.भाद्रपदारंभ,शरदृतुE
१५	मं	४१	३०	२२	३४	ध	३७	४०	२१	२	शो	३	१२	७	१५	वि	८	२५	३१	५८	५	५८	१८	४५	२	९	१३	24	कु७।३२	४	६	४४	भ.९।२०तक,अन्वा.,पूर्णिमाव्रत,रक्षाबन्धन(राखी),श्रावणीF

A पाकरोजेशुरु B अमरनाथयात्रारम्भः C सिंहमेंसूर्य२९।३२,संक्रांतिमु.४५,वङ्कव सौरभाद्रपदारम्भः,चं.सू.,स्त्री-नपुं,वर्षावाहन महिष अतिवृष्टिः D पवित्रार्पणं
E प्रा.ओनमपर्व केरल-तमिलनाडु,हयग्रीवोत्पत्तिः,स.सि.यो.१८।३तक F उपाकर्म,श्रीगायत्रीज.,पंचकप्रा.७।३२,चित्रायांशुक्रः२४।१८,अमरनाथजीदर्शन(क.),ऋषितर्पण,संस्कृतदिवस,बंगालोत्सवः

श्रावणशु.८भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१७अगस्त

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	७	५	४	११	५	५	८	२
अं.	२९	२	१७	२४	८	१५	८	१५	१५
क.	५९	५६	१०	२३	२५	५४	२६	३२	३२
वि.	४८	५	२५	५४	२५	४९	५४	४८	४८
गति	५७	७११	३७	१७	४	५८	६	३	३
	४१	३२	५१	२७	४३	३८	२१	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	पूफा. ४	विशा. १	हस्त ३	पूफा. ४	उभा. २	हस्त २	उफा. ४	पूषा. १	आर्द्रा ३
नाड़ी	अमृता	वायु	सौम्या	जला	सौम्या	सौम्या	नीर	सौम्या	सौम्या

बु. ५ | ३ के. | मं. ६शु. श. | ४ सू. | २ | ७ | १ | ८ चं. | १० | १२ गु. | रा.९ | ११

॥ फलम् ॥

श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणाव्वापि तिथिर्भवेत्। तदावे कार्तिके मासिछत्रभङ्गःप्रजायते॥ के अनुसार इस वर्ष कार्तिक में राजविग्रह होगा। किसी देश-प्रदेश की सत्ता पलट सकती है। अमेरिका, अल्जीरिया, मिश्रगणराज्य, लीबिया, मोरक्को, स्पेन, फ्रांस आदि में प्राकृतिक महोत्पात की आशंका जाननी चाहिए। ग्रहों के त्रिकोण योग पाकिस्तान, अफगानिस्तान की राजनीति में उथल-पुथल करा सकते हैं। श्रीलंका, वर्मा, जापान, बांग्लादेश तथा नेपाल भी अछूता नहीं रहेगा। देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में चौकसी बरतनी चाहिए। बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमु.३० सोमवार में बैठी सिंह संक्रांतिमु.४५ मन्दांकारक है। सिंह राशि स्थिते भानौ इक्ष्वादिसिष्ट शर्करा। रक्तानि सर्व भाण्डानि तिल तेल महर्घता॥ के अनुसार गन्ना, मिष्ठान्न, शक्कर, गुड़, चीनी, बूरा, बतासा, रसकश, तेल, तिल, लालरंग की अन्यान्य वस्तुऐं तेज होंगी। अन्नादि के भाव पड़े रह सकते हैं। सट्टा, शेयर, सर्राफाबाजार कुछ गरम रहेगा। पक्षान्त में वक्री बुध प्रतिकूल फल देगा। मौसम- सूर्य के आगे मंगल वर्षा की कमी करता है- आगे मंगल पीछे भान। वर्षा होवे ओस समान॥ त्रिग्रही योग पर गुरु का पूर्ण प्रभाव अतिवृष्टि, बाढ़, समुद्रीतूफान, भूकम्प, दिग्दाह, अन्तरिक्ष उत्पात का संकेत कहा गया है। कहीं अनावृष्टि चिन्ता का कारण बनेगी। रक्षाबन्धन- २४ अगस्त में ९घं.२० मि. के बाद उपयोगी रहेगा। ग्रहदर्शन- सायं पश्चिम में बुध, शुक्र, मंगल व शनि शोभायमान लगेंगे। प्रातः पश्चिमनत् गुरु आकाश की शोभा बढ़ायेगा।

कु.ता.२४अगस्त श्रावणशु.१५भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

शु.६मं. श. | ४ | ७ | सू. ५ बु. | ३ के. | ८ | २ | ९ रा. | ११ | १ | चं.१० | गु.१२

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	९	५	४	११	५	५	८	२
अं.	६	२८	२१	२४	७	२२	९	१५	१५
क.	४४	५८	३७	३४	४९	३६	१२	१०	१०
वि.	१	३८	५२	१७	०	२६	१७	३३	३३
गति	५७	७११	३८	२१	५	५५	६	३	३
	४९	९	३०	१५	५०	३४	४०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	मघा ३	धनि. २	हस्त ४	पूफा. ४	उभा. २	हस्त ४	उफा. ४	पूषा. १	आर्द्रा ३
नाड़ी	अमृता	अमृता	सौम्या	जला	सौम्या	सौम्या	नीर	सौम्या	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२ | दिनमान | स्टैण्डर्डटाइम सूर्योदयास्त | तारीखें | चन्द्र संचार | दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५/३०

ता.२५ अग. से ८ सित. सन् २०१०ई. तक।
शरदृत्तु,रविदक्षिणायने,उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६७१६
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा.भा.	प्र.भा.	मु.रम	ता.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	
१	बु	४७	३३	२५	०	शत	४५	७	२४	२	अति	५	३७	८	१४	बा	१४	३०	३१	५२	५	५९	१८	४४	३	१०	१४	25	कुम्भ	४	७	४१	इष्टिः, अशून्यशयनव्रतस., श्रवणतपपूर्णजैन
२	गु	५३	३०	२७	२३	पूभा	५२	२५	२६	५७	सु	८	०	९	११	तै	२०	३०	३१	५०	५	५९	१८	४३	४	११	१५	26	मी२०।१३	४	८	३९	भीमचण्डीविन्ध्याज., चित्रायांभौमः२१।३, अगस्तोदय६।०
३	शु	५८	५७	२९	३५	उभा	५९	२०	२९	४४	धृ	१०	८	१०	३	व	२६	१३	३१	४५	६	०	१८	४२	५	१२	१६	27	मीन	४	९	३७	भ.१६।२९से २९।३५तक, कज्जलीतीज, सातूड़ीतीजव्रत,A
४	श	६०	०	-	-	रे	६०	०	-	-	शूल	११	५७	१०	४७	बव	३१	२५	३१	४३	६	०	१८	४१	६	१३	१७	28	मीन	४	१०	३५	बहुलाचौथव्रत चन्द्रोदय२०।२९ B वर्षावा.अश्ववर्षाधिक्य
४	र	३	५०	७	३३	रे	५	३७	८	१६	गंड	१३	१५	११	१९	बा	३	५०	३१	३८	६	१	१८	४०	७	१४	१८	29	मे.८।१६	४	११	३३	पंचकसमाप्त८।१६, स.सि.यो.८।१६से
५	चं	७	५०	९	९	अ	११	५	१०	२७	वृ	१३	५०	११	३३	तै	७	५०	३१	३५	६	१	१८	३९	८	१५	१९	30	मेष	४	१२	३१	रक्षापंचमी,चन्द्रषष्ठीव्रत,पूफायांरविः२५।३७,सू.चं.स्त्री-पु.B
६	मं	१०	३८	१०	१७	भर	१५	२०	१२	१०	ध्रु	१३	२५	११	२४	व	१०	३८	३१	३०	६	२	१८	३८	९	१६	२०	31	वृ१८।२७	४	१३	२९	भ.१०।१७से२२।३३तक,ललहीछटिपूजाबिहार,हस्ते१शनिः C
७	बु	१२	०	१०	५०	कृ	१८	१०	१३	१८	व्या	११	५५	१०	४८	बव	१२	०	३१	२७	६	२	१८	३७	१०	१७	२१	1	वृष	४	१४	२७	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतस्मार्त्तचन्द्रोदय२३।१३,सितम्बर९ता.३० D
८	गु	११	४०	१०	४२	रो	१९	२०	१३	४६	ह	९	५	९	४०	कौ	११	४०	३१	२५	६	२	१८	३६	११	१८	२२	2	मि२५।३९	४	१५	२५	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतवैष्णव,चन्द्रोदय२४।९,ज्ञानेश्वरज.E
९	शु	९	२७	९	५०	मृग	१८	४०	१३	३१	वज्र	४/५१	३५/०	७/२१	५७/३१	गर	९	२७	३१	२०	६	३	१८	३५	१२	१९	२३	3	मिथुन	४	१६	२३	भ.२१।१से, गोगानवमी नन्दोत्सवनन्दगाँव, जुमातुलविदा,व.F
१०	श	५	२५	८	१३	आ	१६	१२	१२	३२	व्य	५१	४५	२६	४५	वि	५	२५	३१	१५	६	३	१८	३३	१३	२०	२४	4	क२१।२७	४	१७	२१	भ.८।१३तक, अजाएकादशीव्रत स्मार्त्त
११	श	५९	४०	२९	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	एकादशीक्षयः E गुरुजम्भेश्वरज.,मन्वा.,इबादतरातमुस.
१२	र	५२	२०	२७	०	पुन	१२	०	१०	५२	वरि	४३	१३	२३	२१	कौ	२६	०	३१	१०	६	४	१८	३२	१४	२१	२५	5	कर्क	४	१८	१९	अजा११व्रतवैष्णव,गोवत्सपूजा,बछबारस,तुलामेंमंगल२७।५G
१३	चं	४३	५०	२३	३६	पु	६/५१	२२/३५	८/२१	३७/५४	परि	३३	३७	१९	३१	गर	१८	५	३१	८	६	४	१८	३१	१५	२२	२६	6	सिं२१।५४	४	१९	१८	भ.२३।३६से, सोमप्रदोषव्रत, कलियुगादि,शबेकद्र,स.सि.H
१४	मं	३४	२८	१९	५२	म	५२	५	२६	५५	शि	२३	१५	१५	२३	वि	९	७	३१	३	६	५	१८	३०	१६	२३	२७	7	सिंह	४	२०	१६	भ.९।४४तक, अघोरा१४, मेलाकैलाशयात्रा(क.),व.मघायांK
३०	बु	२४	४५	१५	५९	पूफा	४४	२३	२३	५०	सि	१२	२८	११	४	ना	२४	४५	३१	०	६	५	१८	२९	१७	२४	२८	8	क२१।५	४	२१	१४	अन्वा.,पिठोरी३०कुशोत्पाटनॐहूँफट्स्वाहामन्त्रसे,सतीपूजाM

A बुधास्तःपश्चि.२०।३७,मदरटैरेसाज.,स.सि.व अ.सि.यो.२१।४४से **C** ६।५०,स.सि.यो.१२।१०से **D** तुलामेंशुक्र१२।५,द्रोणमे.दनकौर,सहादतेहजरतअली,रोहिणीव्रत,स.सि.यो. **F** उभा.१ गुरुः२१।४१ **G** पर्यूषणप्रा.शिक्षकदि.,वि.शान्तिदि.,स.सि.यो.१०।५२से **H** यो.८।३७तक **K** बुधः२२।२९ **M** अग्रवंशे,लोहार्गलयात्रा,कल्पसूत्रपाठजैन,मे.सुथरेशाहदिल्ली,मन्वा.,वि.साक्षरतादिवस

भाद्र.कृ.८गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कृ.ता.२सितम्बर

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१	५	४	११	६	५	८	२
अं.	१५	१८	२७	१८	६	०	१०	१४	१४
क.	२५	४५	२६	२१	५१	३७	१३	४१	४१
वि.	२७	५७	५५	३५	४६	८	२८	५६	५६
गति	५८	८००	३९	५७	६	५०	६	३	३
	५	६	९	२१	५८	२६	५८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूफा.१	रोहि.३	चित्रा२	पूफा.२	उभा.१	चित्रा३	हस्त१	पूषा.१	आर्द्रा३
नाड़ी	जला	वायु	दहना	जला	सौम्या	दहना	सौम्या	सौम्या	सौम्या

मं. ६ श. | ४ | ५ सू. बु. | ३ के. | ७ शु. | ८ | २ चं. | ९ रा. | ११ | १ | १० | गु.१२

॥ फलम् ॥

मास में पांच बुधवार श्रेष्ठ हैं- बुधस्य पंचवाराःस्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुखसम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥ खेती में पैदावार होने, कल कारखानों में उत्पादन बढ़ने से राहत मिलेगी। जनता सुख-शान्ति का अनुभव करेगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्ति परिचर्चा होगी। श्रीकृष्णजन्माष्टमी के दिन तुला में शुक्र का फल- यदा दैत्यगुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचद्विरोधकृत्॥ कहीं तो अच्छा फल देगा, कहीं धार्मिक उन्माद के तहत दंगे फसाद करायेगा। सत्ता के भूखे-भेड़िये षड्यन्त्र रचना में संलग्न रहेंगे। पश्चिम संभागों में सीमातिक्रमण क्षोभ का कारण बनेगा। बाजारभाव- तिथियों की घटा-बढ़ी का फल अच्छा है- जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥ के अनुसार महंगाई कुछ कम होगी। शनिवारी ग्यारस का फल- एकादश्यां शनौ तस्मिञ्छत्रभंगोऽथवा भुवि। नगर ग्रामभंगःस्याद्वैरि चौराद्युपद्रवाः॥ जहाँ-जहाँ उपद्रव अधिक होंगे, वहाँ-वहाँ महंगाई अधिक बढ़ेगी। अनाज, उड़द, मूंग, मोठ, राजमा, सूत, कपास, वस्त्रादि में अधिक तेजी सम्भव है। सट्टा, शेयर व सर्राफा में तेजी जानें। मौसम- ता.२५, ३१ अग., ८सित. के आसन्न दिनों में मौसम खराब होगा। यत्र-तत्र मेघाडम्बर के साथ वर्षा होगी। उगै अगस्त फुले बनकास। अब छोड़ो बरखा कै आस॥ ग्रहदर्शन- प्रदोष के समय पश्चिम में शनि, मंगल व शुक्र देखे जा सकेंगे। प्रातः पश्चिमनत् गुरु आकाश में शोभायमान लगेगा। बुध अस्त रहेगा।

कृ.ता.८सितम्बर भाद्र.कृ.३०बुधे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

६ श. | ४ | सू. ५ बु. चं. | ३ के. | मं.७ शु. | ८ | २ | ९ रा. | ११ | १ | १० | गु.१२

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	४	६	४	११	६	५	८	२
अं.	२१	१४	१	१३	६	५	१०	१४	१४
क.	१४	५७	२२	७	८	२९	५५	२२	२२
वि.	२९	४१	५६	२३	२७	४	४२	५१	५१
गति	५८	९१७	३९	३६	७	४५	७	३	३
	१७	४६	३६	५९	३१	५८	८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूफा.३	पूफा.१	चित्रा३	मघा४	उभा.१	चित्रा४	हस्त१	पूषा.१	आर्द्रा३
नाड़ी	जला	जला	दहना	अमृता	सौम्या	दहना	सौम्या	सौम्या	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ भाद्रपद शुक्लपक्ष १३ — ता.९ से २३ सितम्बर सन् २०१० ई. तक।

शरद्ऋतु, रविदक्षिणायने, उत्तरगोले। केतकीअहर्गणः६७३१

भद्रा, पंचक, ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टैं.टा.घं.मि.में हैं।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा.भा.	प्र.भा.	मु.रम.	ता.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	भद्रा, पंचक, ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादि
१	गु	१५	३	१२	७	उफा	३६	५२	२०	५१	सा	१/५१	३७/१०	६/२६	४५/३४	बव	१५	३	३०	५५	६	६	१८	२८	१८	२५	२९	9	कन्या	४	२२	१२	इष्टिः, चन्द्रदर्शनमु.४५, नक्तव्रतपूर्ण, स्वा.शुक्रः१८।५०, वीरA
२	शु	५	५५	८	२८	ह	३०	७	१८	९	शु	४१	२५	२२	४०	कौ	५	५५	३०	५२	६	६	१८	२७	१९	२६	१	10	तु.२९।३	४	२३	११	गौरी३, हरतालिकातीजव्रत, सव्वाल१०, बुधोदयःपूर्व.२२।२७B
३	शु	५७	५०	२९	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	तृतीयाक्षयः F२८।३०, इन्जीनियर्सडे, दधीचज., मे.पाण्डुपोल
४	श	५१	५	२६	३३	चि	२४	३८	१५	५८	ब्र	३२	४३	१९	१२	व	२४	२७	३०	४८	६	७	१८	२६	२०	२७	२	11	तुला	४	२४	९	भ.१५।५४से२६।३३तक, श्रीगणेशचतुर्थीजन्मोत्सवारंभःमहाC
५	र	४६	१०	२४	३५	स्वा	२०	४२	१४	२४	ऐं	२५	२५	१६	१७	बव	१८	३८	३०	४३	६	७	१८	२४	२१	२८	३	12	तुला	४	२५	७	ऋषिपंचमी, जैनसम्वत्सरी, क्षमावाणीपर्व, पर्यूषणप्रारम्भ
६	चं	४३	१५	२३	२६	वि	१८	४५	१३	३८	वै	१९	४२	१४	१	कौ	१४	४८	३०	३७	६	८	१८	२३	२२	२९	४	13	वृ७।४९	४	२६	६	सूर्यषष्ठी, बलदेवछटि, मे.ब्रजमण्डल, देवछटिमेलागौमत, मार्गीD
७	मं	४२	३३	२३	९	अनु	१८	५३	१३	४१	वि	१५	४०	१२	२४	गर	१२	५३	३०	३५	६	८	१८	२२	२३	३०	५	14	वृश्चिक	४	२७	४	भ.२३।९से, मुक्ताभरण७, महालक्ष्मीव्रतप्रा.राष्ट्रभाषादि.वायुवेगE
८	बु	४३	५२	२३	४१	ज्ये	२१	२	१४	३३	प्री	१३	२०	११	२८	वि	१३	१२	३०	३२	६	८	१८	२१	२४	३१	६	15	ध१४।३३	४	२८	३	भ.११।२५तक, श्रीराधाष्टमीव्रतोत्सवबरसाना, स्वात्यांभौमः F
९	गु	४७	०	२४	५७	मू	२५	५	१६	११	आ	१२	३०	११	९	बा	१५	२५	३०	२८	६	९	१८	२०	२५	१	७	16	धनु	४	२९	१	श्रीचन्दनवमीमहोत्सवउदासीनसं., कन्यामेंसूर्य२१।३०, संक्रांतिG
१०	शु	५१	३७	२६	४८	पूषा	३०	४३	१८	२६	सौ	१३	०	११	२१	तै	१९	२०	३०	२५	६	९	१८	१९	२६	२	८	17	म२५।६	५	०	०	नवलदुर्गेमे.रामदेवजी, तेजा१०, सुगन्धधूप१०जैन, दशावतार१०H
११	श	५७	१५	२९	४	उषा	३७	२५	२१	८	शो	१४	२५	११	५६	व	२४	२५	३०	२०	६	१०	१८	१८	२७	३	९	18	मकर	५	०	५८	भ.१५।५६से२९।४तक, पद्माएकादशीव्रत(सबका), पूफायांK
१२	र	६०	०	-	-	श्र	४४	४५	२४	४	अति	१६	३०	१२	४६	बव	३०	२०	३०	१५	६	१०	१८	१६	२८	४	१०	19	मकर	५	१	५७	श्रवणद्वादशी, श्रीवामनज.हरिवासर१५।६तक, पद्मा११निम्बा.M
१२	चं	३	२५	७	३२	ध	५२	२२	२७	७	सु	१८	५५	१३	४४	बा	३	२५	३०	१३	६	१०	१८	१५	२९	५	११	20	कु१३।३६	५	२	५५	सोमप्रदोषव्रत, पंचकप्रारम्भ१३।३६से E केसाथवर्षाहो
१३	मं	९	४०	१०	३	शत	५९	४७	३०	६	धृ	२१	१७	१४	४२	तै	९	४०	३०	७	६	११	१८	१४	३०	६	१२	21	कुम्भ	५	३	५४	गणपतिविसर्जन, मटकीफोरडोंगालीलाबरसाना Mभुवनेश्वरिज.
१४	बु	१५	४७	१२	३०	पूभा	६०	०	-	-	शूल	२३	३३	१५	३६	व	१५	४७	३०	५	६	११	१८	१३	३१	७	१३	22	मी२६।१४	५	४	५२	भ.१२।३०से२५।३८तक, अनन्तचौदस, सत्यव्रत
१५	गु	२१	२५	१४	४६	पूभा	६	५२	८	५७	गंड	२५	२५	१६	२२	बव	२१	२५	३०	०	६	१२	१८	१२	१	८	१४	23	मीन	५	५	५१	अन्वा., प्रौष्ठपदीपूर्णिमा, श्राद्धमहालयारंभः, रा.आश्विन्यारंभN

A जन्मोत्सवजैन, पंतजयंती B साम.उपाकर्म, बाबारामदेवबीज.रुणीचामे.जैसलमेर, तेलाधारतपजैन, ईदुलफितर(ईद), वराहज., शंकरदेवतिथिअसम, मन्वा. C पत्थरचौथ, चन्द्रदर्शननिषेध, शिवाचतुर्थी, विनोवाज.स.सि.यो.१५।५८से D बुधः६।१५, उफायांरविः११।२४, सु.सु.स्त्री-नपुं.वर्षावा.मूषक, स.सि.यो.१३।३८से G मु.३०, बङ्कवसौरआश्विनप्रा., पश्चिमास्तशनिः१५।५४, श्रीमद्भागवतज.लक्ष्मीव्रतस. H विश्वकर्मापूजा, तेजीमन्दीसूचकांक२०७७ K बुधः६।३३, कटिपरिवर्तनोत्सवः, फूलडोलमे.चारभुजाजीमेवाड़, स.सि.यो.२१।८से N सा.तुलायांभानुः८।४०, शरदसम्पात, सूर्यकादक्षिणगोलमेंप्रवेश, दिनरातबराबर, कु.सन्ध्यापूजनप्रा.

भाद्र.शु.८बुधे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१५सितम्बर

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	७	६	४	११	६	५	८	२
अं.	२८	२५	६	११	५	१०	११	१४	१४
क.	३	१०	१	४०	१४	३१	४६	०	०
वि.	२	४७	३३	३४	२५	४२	४	३६	३६
गति	५८ / २८	७१७ / १७	४० / ९	२३ / २८	७ / ५५	३१ / १३	७ / १६	३ / ११	३ / ११
वक्री/मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
उदय/अस्त	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	उफा.१	ज्ये.३	चित्रा ४	मघा ४	उभा.१	स्वा.३	हस्त १	पूभा.१	आर्द्रा ३
नाड़ी	नीरा	वायु	दहना	अमृता	सौम्या	वायु	सौम्या	सौम्या	सौम्या

६ श. | ४ | ७मं. शु. | ५ सू. बु. | ३ के. | ८ चं. | २ | ९ रा. | ११ | १ | १० | गु.१२

॥ फलम् ॥

क्रूर पाप के मध्य में पिता पुत्र एक संग। अनहोनी होवे तभी होय किसी से जंग॥ इस योग के चलते पश्चिम के देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान-इराक, साऊदीअरब, मिश्रगणराज्य आदि में युद्धभय व्याप्त रहेगा। प्रकुपित प्राकृतिक महोत्पात जानलेवा सिद्ध हो सकता है। अमेरिकादि समृद्धदेश कूटनीति के तहत किसी को आर्थिक मदद तो किसी को सैन्यबल प्रदान करने की पेशकश करेंगे। यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहःपश्चिमे देशे खड्ग.युद्धञ्च जायते॥ देश के कर्णधारों को सचेत रहना चाहिए। बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमु.४५ एवं कन्या की सूती संक्रांतिमु.३० मन्दीकारक है। मार्गी बुध भावों में फेरबदल करेगा- वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की, एकदम पलटा खाय॥ ग्रहचाल के हिसाब से चालू मार्कीट का रुख अनिश्चित रहेगा। व्यापार निजी सूझबूझ के आधार पर करें। मौसम- बुधोदय, शनिअस्त, प्रतिकूल ग्रह नाड़ीवेध के कारण कभी आकाश स्वच्छ तो कभी मेघाच्छादित रहेगा। कहीं अधिक तो कहीं कम वर्षा का संयोग बनेगा- उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टि कारकः। चलत्यक्कारके वृष्टिस्त्रिया वृष्टिः शनैश्चरे॥ इस योग के प्रभाव से कभी-कभी अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्पादि उपद्रव प्राणियों को काल के गर्त में ढ़केल देते हैं। ग्रहदर्शन- प्रातःकाल पूर्व में बुध, पश्चिम में गुरु को देख सकते हैं। सूर्यास्त के पीछे पश्चिमी कपाल में मंगल, शुक्र दृश्य रहेंगे। ता.१६ में शनि अस्त हो जायेगा।

कु.ता.२३सितम्बर भाद्र.शु.१५गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

मं.७ शु. | ५ बु. | सू. ६ श. | ८ | ४ | ९ रा. | ३ के. | १० | १२ चं. गु. | २ | ११ | १

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	११	६	४	११	६	५	८	२
अं.	५	१	११	१८	४	१५	१२	१३	१३
क.	४१	३६	२४	३८	१०	१०	४४	३५	३५
वि.	३४	१	१४	४	३३	५१	३८	१०	१०
गति	५८ / ४२	७११ / २५	४० / ३८	८२ / ४६	८ / ०	२८ / ४४	७ / २२	३ / ११	३ / ११
वक्री/मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
उदय/अस्त	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	उफा.३	पूभा.४	स्वा.२	पूफा.२	उभा.१	स्वा.३	हस्त १	पूभा.१	आर्द्रा ३
नाड़ी	नीरा	नीरा	वायु	जला	सौम्या	वायु	सौम्या	सौम्या	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ आश्विन कृष्णपक्ष १४ — ता.२४ सित. से ७ अक्टू. सन् २०१०ई.तक।

शरदृतु,रविदक्षिणायने,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गण:६७४६

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा.आ	प्र.आ	मु.स	तारीख	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रात:५/३० रा.	अं.	क.	विवरण
१	शु	२६	३५	१६	५०	उभा	१३	३०	११	३६	वृ	२६	५३	१६	५७	कौ	२६	३५	२९	५८	६	१२	१८	११	२	९	१५	24	मीन	५	६	५०	इष्टि,प्रतिपदाश्राद्ध,पितृपक्षारम्भ:,स.सि.व अ.सि.यो.११।३६से
२	श	३१	३	१८	३८	रे	१९	२८	१४	०	ध्रु	२७	४७	१७	२०	गर	३१	३	२९	५२	६	१३	१८	१०	३	१०	१६	25	मे१४।०	५	७	४९	द्वितीयाकाश्राद्ध, पंचकस.१४।०
३	र	३४	४५	२०	७	अ	२४	४५	१६	७	व्या	२८	१२	१७	३०	व	२	५५	२९	४८	६	१३	१८	८	४	११	१७	26	मेष	५	८	४७	भ.७।२३से२०।७तक,तृतीयाश्राद्ध,उर्समेलाअमीरखुशरो,स.A
४	चं	३७	३२	२१	१४	भर	२९	१०	१७	५३	ह	२७	५५	१७	२३	बव	६	१०	२९	४५	६	१३	१८	७	५	१२	१८	27	वृ२४।१४	५	९	४६	चतुर्थीव्रतचन्द्रोदय२०।२३,चतुर्थीश्राद्ध,हस्तेरवि:१०।५९B
५	मं	३९	१५	२१	५६	कृ	३२	३२	१९	१५	वज्र	२६	४५	१६	५६	कौ	८	२२	२९	४०	६	१४	१८	६	६	१३	१९	28	वृष	५	१०	४५	उफायांबुध:११।४२, पंचमीकाश्राद्ध, श.भगतसिंहज., सू.C
६	बु	३९	४५	२२	८	रो	३४	४५	२०	८	सि	२४	४३	१६	७	गर	९	३०	२९	३७	६	१४	१८	५	७	१४	२०	29	वृष	५	११	४४	भ.२२।८से,षष्ठीकाश्राद्ध,व.पूभा.४गुरु:१३।५९,रोहिणीव्रतD
७	गु	३८	४८	२१	४६	मृग	३५	३३	२०	२८	व्य	२१	३०	१४	५१	वि	९	१५	२९	३३	६	१५	१८	४	८	१५	२१	30	मि८।१८	५	१२	४३	भ.९।५७तक,कन्यामेंबुध१०।५३,बुधास्त:पूर्वस्यां१०।४५E
८	शु	३६	२०	२०	४७	आ	३४	५२	२०	१२	वरि	१७	१०	१३	७	बा	७	३५	२९	३०	६	१५	१८	३	९	१६	२२	1	मिथुन	५	१३	४२	अक्टू.१०ता.३१, कालाष्टमीव्रत श्राद्ध, जीवित्पुत्रिकाव्रतF
९	श	३२	१५	१९	१०	पुन	३२	३५	१९	१८	परि	११	३२	१०	५३	तै	४	१५	२९	२५	६	१६	१८	२	१०	१७	२३	2	क१३।३२	५	१४	४१	भ.३०।३से, मातृनवमी, सौभाग्यवतीनांश्राद्ध, श्रीगांधीजीG
१०	र	२६	४०	१६	५६	पु	२८	५०	१७	४८	शि	४/५६	४०/३५	८/२८	८/५४	वि	२६	४०	२९	२२	६	१६	१८	१	११	१८	२४	3	कर्क	५	१५	४०	भ.१६।५६तक, दशमीकाश्राद्ध, स.सि.योग १७।४८तक
११	चं	१९	४०	१४	९	श्ले	२३	४३	१५	४६	सा	४७	३०	२५	१७	बा	१९	४०	२९	१५	६	१७	१७	५९	१२	१९	२५	4	सिं१५।४६	५	१६	३९	इंदिराएकादशीव्रत(सबका), ग्यारसकाश्राद्ध
१२	मं	११	४०	१०	५७	म	१७	३२	१३	१८	शुभ	३७	४३	२१	२२	तै	११	४०	२९	१३	६	१७	१७	५८	१३	२०	२६	5	सिंह	५	१७	३८	भौमप्रदोषव्रत,सन्यासीनां१२,त्रयोदशीकाश्राद्ध,विशा.भौम:H
१३	बु	२	५३	७	२७	पूफा	१०	४०	१०	३४	शु	२७	२५	१७	१६	व	२	५३	२९	८	६	१८	१७	५७	१४	२१	२७	6	क१५।५१	५	१८	३७	भ.७।२७से१७।३८तक,विषजलाग्निशस्त्रादिदुर्मरण-चतुर्दशीK
१४	बु	५३	४८	२७	४९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	चतुर्दशीक्षय: K काश्राद्ध, देवीकात्यायनीजयंती
३०	गु	४४	५०	२४	१४	उफा	३/५६	३२/३७	७/२८	४३/५७	ब्र	१७	२	१३	७	च	१९	१७	२९	५	६	१८	१७	५६	१५	२२	२८	7	कन्या	५	१९	३६	अन्वा.सर्वपितृअमावस्याश्राद्ध,पितरविसर्जन,मे.गयाजीपिंडाराM M कुरुक्षेत्र एवं गढ़गङ्गा, गजछाया योग ७।४३से

A सि.यो.१६।७तक B हस्तेरशनि२४।३४, मूल४राहु:आर्द्रा२केतु:२४।५४, वि.पर्यटनदि. C चं.स्त्री-पु.वर्षावाहनखर मध्यमवृष्टि, स.सि.यो.१९।१५तक D स.सि.योग

E बैंक-अर्धवार्षिकलेखाबन्दी, सप्तमीकाश्राद्ध F रक्तदानदिवस,बुजुर्गदिवस,स.सि.यो.२०।१२से G व शास्त्रीजीजयंती H १९।९,हस्तेबुध:२६।३४,वरिष्ठनागरिकदि.

आश्विनकृ.८शुक्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१अक्टू.

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	२	६	५	११	६	५	८	२
अं.	१३	११	१६	१	३	१८	१३	१३	१३
क.	४२	४०	५१	२०	७	१४	४३	९	९
वि.	११	५१	१३	४२	१८	१३	४५	४३	४३
गति	५९	८१७	४१	१०५	७	१४	७	३	३
	०	२३	१२	२०	४३	४४	२४	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	हस्त २	आर्द्रा २	स्वा. ४	उफा. २	पूभा. ४	स्वा. ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २
नाड़ी	सौम्या	सौम्या	वायु	नीरा	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

शु. ७ मं. | ६ सू. श. बु. | ५ | ८ | ४ | ९ रा. | ३ चं. के. | १० | १२ गु. | २ | ११ | १

॥ फलम् ॥

सूर्य बुध के साथ कन्या में शनि नायकों में क्षोभ पैदा करेगा- मिथुन-स्त्री-धनुर्मीन राशौ मन्दो यदा भवेत्। तदा भूपा: विनश्यन्ति पृथ्वी शोणित पूरिता।। राजा लोग (मन्त्रिस्तर के प्रभावी नेता) एक दूसरे को परास्त करने का प्रयास करेंगे। भयातंक से त्रस्त जनता भागती फिरेगी। नेपाल, म्यांनमार, चीन, लाओस, थाईलैण्ड, हांगकांग में दंगे-फसाद होंगे। कन्या का शनि आश्चर्यजनक परिवर्तन करायेगा। शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रर्वतते।। के अनुसार किंवा भौतिक सुख सुविधाएं बढ़ेंगी। आम जनता सुख शान्ति का अनुभव करेगी। बाजारभाव- इस पक्ष में कोई खास परिवर्तन नहीं होंगे। कन्यागत बुध सोना-चांदी, अन्य धातुएं, गुड़, शक्कर, घी, तेल, श्रृंगारप्रसाधन, मशीनरी, कलपुर्जे संग्रह करने वालों को आगे लाभ करायेगा- कन्याराशि गते बुधे कांचनं शुद्धशर्करा:। मासे षष्ठे द्देलाभं पुन:सस्तो भविष्यति।। शेयर, सर्राफा व सट्टाबाजार में रद्दोबदल के योग बन रहे हैं। मौसम- यत्र-तत्र बादलचाल हल्की बूंदा-बांदी होगी। कहीं आकाश स्वच्छ तो कहीं मेघाच्छादित रहेगा। श्राद्धविषये- मृत्युतिथि पर होने वाला श्राद्ध एकोद्दिष्टन्तु कहलाता है, उसे मध्याह्न में करने की शास्त्राज्ञा है- आम श्राद्धन्तुपूर्वाह्णे एकोद्दिष्टन्तु मध्यमे।

कु.ता.७अक्टू. आश्विनकृ.३०गुरौ प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

शु. ७ मं. | सू. बु. ६ चं. श. | ५ | ८ | ४ | ९ रा. | ३ के. | १० | १२ गु. | २ | ११ | १

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	५	६	५	११	६	५	८	२
अं.	१९	८	२०	१२	२	१९	१४	१२	१२
क.	३६	३५	५९	०	२२	११	२८	५०	५०
वि.	४४	१६	२५	२६	६	२२	९	३९	३९
गति	५९	९०४	४१	१०६	७	१	७	३	३
	१३	२६	३७	५८	१५	५०	२३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	हस्त ३	उफा. ४	विशा. १	हस्त १	पूभा. ४	स्वा. ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २
नाड़ी	सौम्या	नीरा	चण्डा	सौम्या	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

ग्रहदर्शन- सूर्यास्त के बाद पश्चिम में मंगल, शुक्र तथा पूर्व में गुरु के दर्शन होते रहेंगे। शनि अस्त चल ही रहा है। ता.३० में बुध अस्त होकर मौसम को खराब करेगा।

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ आश्विन शुक्लपक्ष १५ — ता.८ से २३ अक्टूबर सन् २०१० ई. तक।

शरदृऋतु,रविदक्षिणायने,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गण:६७६०
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा. आ	प्र. आ	मु. स	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट (प्रातः५/३०) रा.	अं.	क.	
१	शु	३६	२५	२०	५३	चि	५०	२०	२६	२७	ऐं	६/५७	५५/३०	१/२१	५/११	कि	१०	३५	२९	०	६	१९	१७	५५	१६	२३	२९	8	तु१५।४२	५	२०	३५	इष्टि:,शा.नवरात्रप्रा.कलशस्थापनं,मातामहश्राद्ध,वक्रीशुक्र:A
२	श	२९	५	१७	५७	स्वा	४५	१७	२४	२६	वि	४९	५	२५	५७	बा	२	४५	२८	५८	६	१९	१७	५४	१७	२४	३०	9	तुला	५	२१	३५	चन्द्रदर्शनमु.१५, वि.डाकदि., स.सि.यो.२४।२६तक
३	र	२३	१०	१५	३६	वि	४१	४८	२३	३	प्री	४१	५५	२३	६	गर	२३	१०	२८	५३	६	२०	१७	५३	१८	२५	१	10	वृ१७।२४	५	२२	३४	भ.२६।४७से,सिन्दूरतृतीया,जिल्काद११,चित्रा.रवि:२३।५२,B
४	चं	१९	८	१३	५९	अनु	४०	१३	२२	२५	आ	३६	२०	२०	५२	वि	१९	८	२८	५०	६	२०	१७	५२	१९	२६	२	11	वृश्चिक	५	२३	३३	भ.१३।५९तक,स.सि.यो.२२।२५तक G मन्दीसूचकांक१८९६
५	मं	१७	१०	१३	१३	ज्ये	४०	४०	२२	३७	सौ	३२	२५	१९	११	बा	१७	१०	२८	४५	६	२१	१७	५१	२०	२७	३	12	ध२२।३७	५	२४	३३	उपांगललितापंचमी B सू.सू.स्त्री-नपुं.वर्षावा.मेषअनावृष्टि:
६	बु	१७	२३	१३	१८	मू	४३	१७	२३	४०	शो	३०	१५	१८	२७	तै	१७	२३	२८	४२	६	२१	१७	५०	२१	२८	४	13	धनु	५	२५	३२	चित्रायांबुध:१५।३१,सरस्वतीआवाहनम् D २७।५३से
७	गु	१९	३५	१४	१२	पूषा	४७	४५	२५	२८	अति	२९	३५	१८	१२	व	१९	३५	२८	३७	६	२२	१७	४९	२२	२९	५	14	धनु	५	२६	३१	भ.१४।१२से२७।१तक,भद्रकाल्यावतार:,सरस्वतीपूजनं,पुष्करC
८	शु	२३	३७	१५	५०	उषा	५३	४५	२७	५३	सु	३०	१३	१८	२८	बव	२३	३७	२८	३२	६	२३	१७	४८	२३	३०	६	15	म.८।४	५	२७	३१	महाष्टमीपूजनं,सरस्वतीबलिदानं,नवपदओलीप्रा.स.सि.यो.D
९	श	२९	०	१७	५९	श्र	६०	०	-	-	धृ	३१	५०	१९	७	कौ	२९	०	२८	३०	६	२३	१७	४७	२४	३१	७	16	मकर	५	२८	३०	महानवमी,दुर्गार्चनं,अस्त्र-शस्त्रपूजनं,सरस्वतीविसर्जनं,मन्वा.E
१०	र	३५	८	२०	२७	श्र	०	४५	६	४२	शूल	३४	०	२०	०	तै	२	२	२८	२५	६	२४	१७	४६	२५	१	८	17	कु२०।१२	५	२९	३०	विजयादशमी(रावणदाह),बौद्धावतार:,पंचकप्रा.२०।१२F
११	चं	४१	३२	२३	१	ध	८	१७	९	४३	गंड	३६	२०	२०	५६	व	८	२०	२८	२३	६	२४	१७	४५	२६	२	९	18	कुम्भ	६	०	२९	भ.९।४४से२३।१तक,पापांकुशाएकादशीव्रत,भरतमिलाप,तेजीG
१२	मं	४७	३७	२५	२८	शत	१५	४८	१२	४४	वृ	३८	३०	२१	४९	बव	१४	३३	२८	१७	६	२५	१७	४४	२७	३	१०	19	कुम्भ	६	१	२९	वृश्चिकमेंमंगल२६।२२,पूर्वोदय:शनि२१।९ C मुनिज.
१३	बु	५३	१०	२७	४१	पूभा	२२	५२	१५	३४	ध्रु	४०	१५	२२	३१	कौ	२०	२२	२८	१५	६	२५	१७	४३	२८	४	११	20	मी८।५२	६	२	२९	प्रदोषव्रत H स.सि.यो.१८।७से,शाकुम्भरीदेवीदर्शनदेवबन्द
१४	गु	५७	५०	२९	३४	उभा	२९	१३	१८	७	व्या	४१	२३	२२	५९	गर	२५	३०	२८	१०	६	२६	१७	४२	२९	५	१२	21	मीन	६	३	२८	भ.२९।३४से, स्वात्यांबुध:१२।४५, शुक्रास्त:पश्चि.२५।७H
१५	शु	६०	०	-	-	रे	३४	४२	२०	१९	ह	४१	५३	२३	११	वि	२९	४५	२८	८	६	२६	१७	४१	३०	६	१३	22	मे२०।१२	६	४	२८	भ.१८।२०तक,अन्वा.शरद्पूर्णिमा,कोजागरीव्रत,लक्ष्मीन्द्रयोK
१५	श	१	३८	७	६	अ	३९	२०	२२	११	वज्र	४१	३५	२३	५	बव	१	३८	२८	३	६	२७	१७	४०	१	७	१४	23	मेष	६	५	२७	इष्टि:,उदयापूर्णिमा,कार्तिकस्नानप्रा.सा.वृश्चिकेभानु:१८।६M

A १२।४०,अग्रसेनज.वायुसेनादि.अश्वादिकनीरांजनं E वि.खाद्यदि.नीरांजनस.,स.सि.यो. F तुलामेंसूर्य१७।२७,संक्रांतिमु.३०,बङ्गवसौरकार्तिकप्रा.,तुलामेंबुध१२।५४,अपराजितापूजा,शमीपूजा, नीलकंठदर्शन,सीमोल्लंघनं K पूजा,पंचकस.२०।१९,म.बाल्मीकज.,दीपदानं,रासपूर्णिमा,क्षीरशयनोत्सव:,स.सि.यो.,अ.सि.यो.२०।१९तक M हेमन्तऋतुप्रा.रा.कार्तिकप्रा.,ओलीपूर्ण,अश्वयुजी

आश्विनशु.८शुक्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१५अक्टू.

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	८	६	५	११	६	५	८	२
अं.	२७	२८	२६	२६	१	१८	१५	१२	१२
क.	३१	४२	३४	३	२७	१९	२६	२५	२५
वि.	२२	१२	११	२९	१२	३७	५७	१३	१३
गति	५९	७२५	४२	१०२	६	१७	७	३	३
	२८	२२	८	४६	१९	१५	१७	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	चित्रा २	उषा. १	विशा. २	चित्रा १	पूभा. ४	स्वा. ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २
नाड़ी	दहना	नीरा	चण्डा	दहना	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

॥ फलम् ॥

पांच शनिवारों का फल नेष्ट है- शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देशभङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता॥ के अनुसार अमेरिकादि देशों में भूकम्प, दिग्दाह, तूफानजन्य प्राकृतिक आपदा जानलेवा सिद्ध होगी। भारत के ईशान में कोई देश-प्रदेश, नगर या ग्राम अग्निदाह-युद्धादि के कारण तहस-नहस हो सकता है। राजनीतिक फेरबदल के योग बन रहे हैं। सीमा पर युद्ध के काले बादल मंढ़राने लगें तो आश्चर्य नहीं। म्यांनमार, थाईलैण्ड, नेपाल, चीन, रुस, मंगोलिया तथा जापान में असम्भावी कुघटनाचक्र सम्भव है। यदा भास्कर तनय: कन्या राशि प्रविश्यति। जलशोषं भवेद्वायुर्मध्य देशेनृपक्षय:॥ बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमु.१५ और दशहरा के दिन बैठी तुला की संक्रांतिमु. ३० तेजी का संकेत है। त्रिगृही योग का फल- एक राशौ गता ह्येते सौम्य शुक्र दिनाधिपा:। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघा:स्वल्प जलप्रदा:॥ धान्यादि के भाव कुछ बढ़ेंगे। मेघ जल की थोड़ी वर्षा करेंगे। चाय, काफी, मूंगफली, छुहारा, बादाम, किसमिस, केसर, ऊनीवस्त्र तथा ऊन के दामों में इजाफा होगा। शेयर, सट्टा, सर्राफाबाजार में घट-बढ़ चलेगी। मौसम- ग्रहों के उदयास्त, राशि एवं गतिपरिवर्तन, नाडीवेध के कारण मौसम खराब होगा। गरज के साथ जहाँ-तहाँ छींटे पड़ सकते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात दुर्दिनवसात् क्षति सम्भव है। ग्रहदर्शन- सूर्यास्त के पीछे पश्चिम में मंगल, शुक्र तथा पूर्वीक्षितिज में गुरु ग्रह अच्छा चलेगा। ता.१९ में शनि पूर्वोदय होकर गड़बड़ी करेगा। बुध अस्त रहेगा।

कु.ता.२३अक्टू. आश्विनशु.१५शनौ प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहा
६	०	७	६	११	६	५	८	२	रा.
५	४	२	९	०	१५	१६	११	११	अं.
२७	४१	१३	२७	४०	२	२४	५९	५९	क.
१५	४२	८	२८	४८	१	४४	४७	४७	वि.
५९	७८५	४२	१७	५	३२	७	३	३	गति
४३	१८	४०	४२	६	४६	७	११	११	
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	स्थिति
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	
चित्रा ४	अश्विनी २	विशाखा ४	स्वा. १	पूभा. ४	स्वा. ३	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २	नक्षत्रचरण
दहना	वायु	चण्डा	वायु	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या	नाड़ी

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ कार्तिक कृष्णपक्ष १६ — ता.२४ अक्टू. से ६ नव. सन् २०१० ई.तक।

हेमन्तऋतु,रविदक्षिणायने,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गणः६७७६

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.का	प्र.का	मु.जि	अंग्रेजी तारीख	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	विवरण
१	र	४	३०	८	१५	भर	४३	३	२३	४०	सि	४०	३८	२२	४२	कौ	४	३०	२८	२	६	२७	१७	४०	२	८	१५	24	वृ२१।५७	६	६	२७	अनु.भौमः१९।५, कृषकभूमिपूजा, स्वात्यांरविः१०।२७,A
२	चं	६	२३	९	१	कृ	४५	५०	२४	४८	व्य	३८	५५	२२	२	गर	६	२३	२७	५७	६	२८	१७	३९	३	९	१६	25	वृष	६	७	२७	भ.२१।१३से, हस्त३शनिः८।५४, स.सि.यो.२४।४८से
३	मं	७	२०	९	२५	रो	४७	४२	२५	३४	वरि	३६	३०	२१	५	वि	७	२०	२७	५३	६	२९	१७	३८	४	१०	१७	26	वृष	६	८	२७	भ.९।२५तक, करक४ करवाचौथव्रत चन्द्रोदय१९।५८,B
४	बु	७	२२	९	२७	मृग	४८	३७	२५	५७	परि	३३	१७	१९	४९	बा	७	२२	२७	४८	६	३०	१७	३७	५	११	१८	27	मि१३।४६	६	९	२६	दशरथपूजा, स.सि.योग २५।५७तक
५	गु	६	२५	९	४	आ	४८	३५	२५	५६	शि	२९	२०	१८	१४	तै	६	२५	२७	४५	६	३०	१७	३६	६	१२	१९	28	मिथुन	६	१०	२६	पद्मप्रभुजयंतीजैन, स.सि.योग २५।५६से
६	शु	४	२३	८	१६	पुन	४७	२८	२५	३०	सि	२४	३०	१६	१९	व	४	२३	२७	४०	६	३१	१७	३५	७	१३	२०	29	क१९।३७	६	११	२६	भ.८।१६से१९।३९तक,विशा.बुध१९।२७,स.सि.यो.२५।३०तक
७	श	१	१५	७	२	पु	४५	१०	२४	३६	सा	१८	४५	१४	२	बव	१	१५	२७	३५	६	३२	१७	३४	८	१४	२१	30	कर्क	६	१२	२६	अहोईअष्टमीव्रतचन्द्रोदय२४।२,वि.बचतदि.,दाम्पत्याष्टमीC
८	श	५७	२	२९	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	अष्टमीक्षयः
९	र	५१	४३	२७	१४	श्ले	४१	५०	२३	१७	शुभ	१२	५	११	२३	तै	२४	२०	२७	३०	६	३३	१७	३३	९	१५	२२	31	सिं२३।१७	६	१३	२६	पटेलजयंती, इन्दिराजीपुण्यः, संकल्पदिवस
१०	चं	४५	३०	२४	४५	म	३७	३५	२१	३५	शु	४/५६	४०/३०	८/२९	२५/९	व	१८	३७	२७	२८	६	३३	१७	३२	१०	१६	२३	1	सिंह	६	१४	२६	भ.१४।०से२४।४५तक,नवम्बर११ता.३०,वक्रीपूभा.३कुम्भD
११	मं	३८	३०	२१	५८	पूफा	३२	३०	१९	३४	ऐं	४७	४२	२५	३९	बव	१२	०	२७	२५	६	३४	१७	३२	११	१७	२४	2	क२५।०	६	१५	२६	रमाएकादशीव्रत (सबका) शुक्रउदय
१२	बु	३१	०	१८	५९	उफा	२६	५२	१७	२०	वैं	३८	३३	२२	०	कौ	४	४२	२७	२०	६	३५	१७	३१	१२	१८	२५	3	कन्या	६	१६	२६	गोवत्स१२,शुक्रोदयःपूर्वस्यां२६।३७,धनतेरस,श्रीधनवन्तरिE
१३	गु	२३	२२	१५	५७	ह	२१	७	१५	३	वि	२९	२२	१८	२१	व	२३	२२	२७	१५	६	३६	१७	३०	१३	१९	२६	4	तु२५।५७	६	१७	२६	भ.१५।५७से२६।२९तक, प्रदोषव्रत, वृश्चिकमेंबुध३०।१७F
१४	शु	१६	३	१३	१	चि	१५	४०	१२	५२	प्री	२०	२५	१४	४६	श	१६	३	२७	१५	६	३६	१७	३०	१४	२०	२७	5	तुला	६	१८	२६	अन्वा.श्रीमहालक्ष्मीपूजन दीपावली,कालरात्रिकमलाजयंतीG
३०	श	९	२०	१०	२१	स्वा	१०	४८	१०	५६	आ	१२	३	११	२६	ना	९	२०	२७	१०	६	३७	१७	२९	१५	२१	२८	6	वृ२७।४७	६	१९	२७	इष्टिः, शनैश्चरीअमापुण्यः, विशा.रविः१८।३७, व.चित्रायांH

C राधाकुण्डमेंस्नान गोवर्धन, कालाष्टमी

A सू.चं.स्त्री-पु.वर्षावाह.मूषक वर्षागतिरोधकःसंयुक्तराष्ट्रदि. B रोहिणीव्रत D मेंगुरुः१३।३ E जयंती, नारीकर्तृक नीरांजनं, स.सि.यो.१७।२०से

F दीपदानम् G दीपोत्सवः,नरकहरा१४, रूपचतुर्दशी, तैलाभ्यङ्गस्नानं महावीरनिर्वाणदि. H शुक्रः२०।१६, अन्नकूट गोवर्धनपूजा,बलिपूजा, स.सि.योग १०।५६तक

कार्तिककृ.७शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.३०अक्टू.

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	३	७	६	११	६	५	८	२
अं.	१२	५	७	२०	०	१०	१७	११	११
क.	२६	३६	१३	३९	८	५४	१४	३७	३७
वि.	३९	३३	७	४४	४३	५८	१	३१	३१
गति	५९/५८	८३३/४८	४३/७	९४/१	३/५३	३६/२४	६/५६	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	स्वा.२	पुष्य१	अनु.२	विशा.१	पूभा.४	स्वा.२	हस्त३	मूल४	आर्द्रा२
नाड़ी	वायु	जला	चण्डा	चण्डा	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

८ मं. | ६ श. | ७ सू. शु. बु. | ९ रा. | ५ | १० | ४ चं. | ११ | ३ के. | १ | गु.१२ | २

॥ फलम् ॥

एक मास छःदिन तक कुम्भ के गुरु का फल- कुंभराशि गते जीवे मेघःस्वल्पाम्बु वर्षति। कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्व देशे समर्घता॥ के अनुसार मेघ पृथ्वी पर हल्की वर्षा करेंगे। खेती में क्षति होगी। कल-कारखाने, उद्योगों में हड़ताल, तोड़फोड़ के कारण उत्पादन कम होने से महंगाई बढ़ेगी। किन्हीं देश-प्रदेशों में हालात नाजुक हो सकते हैं। बड़े राजनीतिक संगठन में विघटन के योग बन रहे हैं। शनीश्चरी मावस भयातंक की सूचक है- कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि भौम युता वापि सर्वलोक भयावहा॥ अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनावपूर्ण बनेगी। पश्चिम का कोई देश किसी देश में सीमातिक्रमण कर सकता है। बाजारभाव- वृश्चिक का बुध घी, तेल, बेसन, चीनी, खांड, पेठा के भावों में तेजी करेगा- बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृत तैल महार्घताः। सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभं भवेत्॥ वृश्चिक का मंगल सभी चीजों को तेज करता है। इमारती सामान, कलपुर्जे अधिक महंगे होते हैं। सट्टा, सर्राफा, शेयरबाजार अधिक गर्म हो सकता है। मौसम- यत्र-तत्र बादलचाल, मेघगर्जन, बिजली गाज के साथ जहाँ-तहाँ न्यूनाधिक वर्षा होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में दुर्दिन होने, बर्फ गिरने से शीतलहर चलेगी। यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। ता.२४, २५ अक्टू. तथा ३, ४, ५, ६, ७ नव. के आसन्न अच्छी वर्षा सम्भव है। ग्रहदर्शन- सायंकाल पश्चिम में मंगल, पूर्व में गुरु दृश्य रहेगा। ता.३ में पूर्वोदय होकर शुक्र शनि के साथ आकाश की शोभा बढ़ायेगा।

कु.ता.६नव. कार्तिककृ.३०शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

बु. ८ मं. | ६ श. | सू. ७ शु. चं. | ९ रा. | ५ | १० | ४ | ११ गु. | ३ के. | १ | १२ | २

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	६	७	७	१०	६	५	८	२
अं.	१९	१६	१२	१	२९	६	१८	११	११
क.	२७	४३	१६	२८	४५	५७	१	१५	१५
वि.	७	२२	१८	२६	३७	५२	४४	१६	१६
गति	६०/११	८५७/४९	४३/३४	९९/१	२/३०	२८/३२	६/४०	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	स्वा.४	स्वा.४	अनु.३	विशा.४	पूभा.३	स्वा.१	हस्त३	मूल४	आर्द्रा२
नाड़ी	वायु	वायु	चण्डा	चण्डा	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ कार्तिक शुक्लपक्ष १७ — ता.७ से २१ नवम्बर सन् २०१० ई. तक।

हेमन्तऋतु,रविदक्षिणायने,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गणः६७९०

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टैं.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	रा.का	प्र.का	मु.जि	तारीख	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	विवरण
१	र	३	४०	८	६	वि	६	५५	९	२४	सौ	४/५८	३७/५	८/२१	२५/५२	बव	३	४०	२७	७	६	३८	१७	२९	१६	२२	२९	7	वृश्चिक	६	२०	२७	चन्द्रदर्शनमु.३०,यमर भइयादूज(टीका),अनु.बुधः१०।४६A
२	र	५९	२७	३०	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	द्वितीयाक्षयः B २७।५०,स.सि.यो.१४।२४तक
३	चं	५६	५८	२९	२५	अनु	४	३२	८	२७	अति	५३	५	२७	५२	तै	२८	१३	२७	५	६	३८	१७	२८	१७	२३	१	8	वृश्चिक	६	२१	२७	जिल्हेज१२मुस., स.सि.यो.८।२७तक C व्रतारंभः
४	मं	५६	२०	२९	११	ज्ये	३	५३	८	१२	सु	४९	३२	२६	२८	व	२६	३७	२७	२	६	३९	१७	२८	१८	२४	२	9	ध.८।१२	६	२२	२७	भ.१७।१८से २९।११तक, बिहारका छटिमेला शुरु
५	बु	५७	४५	२९	४५	मू	५	५	८	४१	धृ	४७	३५	२५	४१	बव	२७	२	२७	०	६	३९	१७	२७	१९	२५	३	10	धनु	६	२३	२८	सौभाग्यपंचमी,पाण्डवज्ञान५ Dवृन्दावन,मे.सरस्वतीकुण्ड
६	गु	६०	०	-	-	पूषा	८	१०	९	५६	शूल	४७	३	२५	२९	कौ	२९	२०	२६	५८	६	४०	१७	२७	२०	२६	४	11	म१६।२५	६	२४	२८	ज्येष्ठायांभौमः३०।१३, सूर्यषष्ठी,डालाछटिपूजा
६	शु	०	५७	७	४	उषा	१३	२	११	५४	गंड	४७	४२	२५	४६	तै	०	५७	२६	५३	६	४१	१७	२६	२१	२७	५	12	मकर	६	२५	२८	रा.जनप्रसारणदिवस, स.सि.योग ११।५४से
७	श	५	४५	९	०	श्र	१९	१५	१४	२४	वृ	४९	१५	२६	२४	व	५	४५	२६	५०	६	४२	१७	२६	२२	२८	६	13	कुर७।५०	६	२६	२९	भ,९।०से२२।१०तक,सहस्रार्जुनजयंती,कल्पादिः,पंचकप्रा.B
८	र	११	३५	११	२०	ध	२६	२५	१७	१६	ध्रु	५१	२०	२७	१४	बव	११	३५	२६	४७	६	४३	१७	२५	२३	२९	७	14	कुम्भ	६	२७	२९	गोपाष्टमी,गोपूजायवन्नादिदान,नेहरुज.बालदिवस,अष्टाह्निकाC
९	चं	३७	५	२१	३५	शत	३३	५०	२०	१५	व्या	५३	२७	२८	६	कौ	१७	५	२६	४३	६	४३	१७	२४	२४	३०	८	15	कुम्भ	६	२८	२९	अक्षय-आँवला-कूष्माण्डनवमी,कृतयुगादि,जुगलजोड़ीपरिक्रमाD
१०	मं	२४	५	१६	२२	पूभा	४१	०	२३	८	ह	५५	१८	२८	५१	गर	२४	५	२६	४०	६	४४	१७	२४	२५	१	९	16	मी१६।२५	६	२९	३०	भ.२९।२९से,आशादशमी,वृश्चिकमेंसूर्य१७।१७संक्रान्तिमु.E
११	बु	२९	३७	१८	३६	उभा	४७	३०	२५	४५	वज्र	५६	३०	२९	२१	वि	२९	३७	२६	३५	६	४५	१७	२३	२६	२	१०	17	मीन	७	०	३०	भ.१८।३६तक,प्रबोधिनीएकादशीव्रतदेवउठान,ईदुलजुहाF
१२	गु	३४	१०	२०	२६	रे	५२	५७	२७	५७	सि	५६	५२	२९	३१	बव	१	५२	२६	३२	६	४६	१७	२३	२७	३	११	18	मेर७।५७	७	१	३१	हरिवासरः२०।२६तक,(वि.मु.रेव.),कविकालीदासज.मन्वा.G
१३	शु	३७	२८	२१	४६	अ	५७	१३	२९	४०	व्य	५६	१७	२९	१८	कौ	५	४७	२६	३०	६	४७	१७	२२	२८	४	१२	19	मेष	७	२	३१	प्रदोषव्रत, अनु.रविः२४।४०,मार्गीगुरुः२२।२०,मार्गीशुक्रःH
१४	श	३९	३३	२२	३६	भर	६०	०	-	-	वरि	५४	४५	२८	४१	गर	८	३०	२६	२८	६	४७	१७	२२	२९	५	१३	20	मेष	७	३	३२	भ.२२।३६से, बैकुंठचतुर्दशी, चौमासासमाप्तजैन
१५	र	४०	२२	२२	५७	भर	०	१५	६	५४	परि	५२	१५	२७	४२	वि	९	५८	२६	२५	६	४८	१७	२२	३०	६	१४	21	वृ१३।५	७	४	३२	भ.१०।४७तक,अन्वा.,कार्तिकस्नानपूर्णिमा,गुरुनानकजयंतीM

A बुधोदयःपश्चि.२४।१०,गुर्जराणांकार्तिकादिनववर्षारम्भः,वीरनिर्वाणसं.२५३७,नेपालीसं.११३१प्रा.मे.बटेश्वरकाशुरु,चित्रगुप्तविश्वकर्मापूजा E ३०,बङ्गवसीरमार्गशीर्षप्रा.ज्येष्ठाबुधः११।१२,हज्ज,
तेजीमन्दीसूचकांकर३१४,स.सि.यो.२३।८से F चतुर्मासस.,तुलसीविवाह,भीष्मपंचकप्रा.३,वनपरिक्रमा G मे.खाटूश्याम(राज),पंचकस.२७।५७,स.सि.यो. H ७।१०,(वि.मु.अश्वि.),इन्द्रजीज.
,स.सि.यो.२९।४०तक M रासपूर्णिमा,त्रिपुरोत्सवमे.पुष्करराजरेणुकातीर्थ,गढ़गंगा,भीष्मपंचकस.,निम्बार्काचार्यज.मन्वा.,अष्टा.पूर्ण,चतुर्मासस.,रथयात्राजैन,हरिहरमे.सोनपुर,भृगुआश्रमबलिया,ददरीमेंस्नान

कार्तिकशु.८रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१४नवम्बर

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	१०	७	७	१०	६	५	८	२
अं.	२७	०	१८	१३	२९	४	१८	१०	१०
क.	२९	४९	६	२४	३१	८	५३	४९	४९
वि.	२७	३७	३६	४६	१४	८	४८	५०	५०
गति	६०	७१२	४४	८७	०	१०	६	३	३
	२४	१६	३	३१	५३	४९	१७	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	विशा.३	धनि.३	ज्ये.१	अनु.४	पूभा.३	चित्रा४	हस्त३	मृग.४	आर्द्रा२
नाड़ी	चण्डा	अमृता	वायु	चण्डा	नीरा	दहना	सौम्या	दहना	सौम्या

बु. ८ मं. | ६ श. | ७ सू. शु. | ९ | ५ | रा | १० | ४ | चं. ११ | १ | ३ | गु. | के. | १२ | २

॥ फलम् ॥

मास में पांच रविवार नेष्ट हैं- यत्र मासे रवेर्वारा जायंते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगःस्यात्तदास्ते च महद्भयम्॥ इस योग के चलते राजविग्रह होगा। उपयोगी सामान के अभाव में जनता दुःख पायेगी। किंवा अकल्पित उलटफेर सम्भव है। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरिजाघर को लेकर धर्मविरोधी झगड़े-झमेले हो सकते हैं। वक्री-मार्गी तुला का शुक्र अशान्ति के मध्य शान्ति का संचार करेगा- यदा दैत्यगुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्य किंचित्किंचिद्विरोधकृत्॥ यूरोप के कुछ देश तथा दक्षिण अफ्रीकादि में भूकम्प, तूफानजन्य प्राकृतिक महोत्पात की आशंका जाननी चाहिए। कहीं शान्ति परिचर्चा को बल मिलेगा। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शनमु.३० एवं मंगलवार में बैठी वृश्चिक की संक्रांतिमु.३० बाजार भाव पड़े रहने का संकेत है। यदा वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः महार्घं सर्व द्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥ वृश्चिक का मंगल सभी चीजों में तेजी करेगा। सूर्य व बुध साथ होने से व्यापार जगत् में नई हलचल होगी। शेयर, सट्टा, सर्राफाबाजार गर्म रहेगा। **मौसम-** पक्षारम्भ में बुधोदय तथा ता.१९ में गुरु शुक्र गतिपरिवर्तनवसात् यत्र-तत्र बादलचाल, न्यूनाधिक वर्षा का संयोग बनेगा। उत्तरसम्भागों में हिमपात के कारण शीतलहर चलेगी। ग्रहाणामुदये वाऽस्ते राश्यन्तर गतेऽयने। संयोगेवाऽपि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिःप्रजायते॥ **ग्रहदर्शन-** सायंकाल पश्चिम में मंगल-बुध, पूर्व में गुरु दृश्य रहेगा। प्रातः पूर्वीक्षितिज में शुक्र व शनि शोभायमान लगेंगे।

कु.ता.२१नवम्बर कार्तिकशु.१५रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

९ रा. | शु. ७ | सू. | १० | बु. ८ मं. | ६ श. | ११ गु. | ५ | १२ | २ | ४ | १ चं. | के.३

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	०	७	७	१०	६	५	८	२
अं.	४	२५	२३	२३	२९	३	१९	१०	१०
क.	३२	५४	१६	२४	२९	४४	३६	२७	२७
वि.	४४	१६	८	२०	२८	७	४३	३५	३५
गति	६०	७७४	४४	८२	०	६	५	३	३
	३४	३१	२७	३२	३४	१३	५५	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	अनु.१	मूल.४	ज्ये.२	ज्ये.३	पूभा.३	चित्रा४	हस्त३	मृग.४	आर्द्रा२
नाड़ी	चण्डा	चण्डा	वायु	वायु	नीरा	दहना	सौम्या	दहना	सौम्या

श्रीसम्वत्२०६७ शाके१९३२ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष१८ | **दिन मान** | **स्टैण्डर्डटाइम सूर्योदयास्त** | **तारीखें** | **चन्द्र संचार** | **दैनिक रवि स्पष्ट** | **ता.२२ नव. से ५ दिस. सन् २०१० ई. तक।**

हेमन्तऋतु,रविदक्षिणायने,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गण:६८०५

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	रा.मा	प्र.मा	मु.जि	ता.	स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रात:५/३० रा.	अं.	क.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।
१	चं	४०	०	२२	४९	कृ	२	५	७	३९	शि	४८	५३	२६	२२	बा	१०	१०	२६	२३	६	४९	१७	२२	१	७	१५	22	वृष	७	५	३३	इष्टि:, सा.धनुषिभानु:१५।४६, रा.मार्गशीर्षप्रा., मे.बटेश्वरA
२	मं	३८	३७	२२	१७	रो	२	५३	७	५९	सि	४४	४२	२४	४३	तै	९	१७	२६	२०	६	५०	१७	२२	२	८	१६	23	मि१९।५७	७	६	३३	बाबासत्यसांईजयंती, (वि.मु.मृगशिर)
३	बु	३६	२५	२१	२४	मृग	२	४५	७	५६	सा	३९	५२	२२	४७	व	७	३२	२६	१७	६	५०	१७	२१	३	९	१७	24	मिथुन	७	७	३४	भ.९।५१से२१।२४तक,हस्त४शनि:२९।३०,स.सि.यो.७।५६तक
४	गु	३३	२२	२०	१२	आ	१	४५	७	३३	शुभ	३४	२५	२०	३७	बव	४	५३	२६	१५	६	५१	१७	२१	४	१०	१८	25	क२५।४	७	८	३५	चतुर्थीव्रतचन्द्रोदय२०।५२, मूलधनुमेंबुध२८।०,स.सि.यो.B
५	शु	२९	४०	१८	४४	पुन	०/५७	५/४८	६/२९	५४/५१	शु	२८	२५	१८	१४	कौ	१	३०	२६	१२	६	५२	१७	२१	५	११	१९	26	कर्क	७	९	३५	एन.सी.सी.वर्षगांठ, स.सि.योग ६।५४तक
६	श	२५	२३	१७	२	श्ले	५४	५५	२८	५१	ब्र	२१	५५	१५	३९	व	२५	२३	२६	१०	६	५३	१७	२१	६	१२	२०	27	सिं२८।५१	७	१०	३६	भ.१७।२से२८।५तक,भौमास्त:पश्चि.१६।२०,(वि.मु.मघा)
७	र	२०	३५	१५	७	म	५१	३५	२७	३१	ऐं	१५	५	१२	५५	बव	२०	३५	२६	१०	६	५३	१७	२१	७	१३	२१	28	सिंह	७	११	३७	(वि.मु.मघा), श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी, श्रीभैरवसमुत्पत्तिः
८	चं	१५	२०	१३	२	पूफा	४७	५२	२६	३	वै	७	५०	१०	२	कौ	१५	२०	२६	८	६	५४	१७	२१	८	१४	२२	29	सिंह	७	१२	३७	मूलधनुमेंमंगल३०।२४, (वि.मु.उफा.), मूल३राहु:आर्द्रा१C
९	मं	९	४५	१०	४९	उफा	४३	५५	२४	२९	वि	०/५२	१७/३८	७/२७	२/५८	गर	९	४५	२६	५	६	५५	१७	२१	९	१५	२३	30	क७।३९	७	१३	३८	भ.२१।४०से, (वि.मु.उफा.)
१०	बु	४	०	८	३२	ह	३९	५५	२२	५४	आ	४४	५५	२४	५४	वि	४	०	२६	२	६	५६	१७	२१	१०	१६	२४	1	कन्या	७	१४	३९	भ.८।३२तक,उत्पत्तिएकादशीव्रतस्मार्त्त,दिसम्बर१२ता.३१D
११	बु	५८	१७	३०	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	एकादशीक्षयः
१२	गु	५२	५०	२८	४	चि	३६	५	२१	२२	सौ	३७	२०	२१	५२	कौ	२५	३५	२६	२	६	५६	१७	२१	११	१७	२५	2	तु.१०।८	७	१५	४०	ज्येष्ठायांरवि:२९।२,उत्पत्तिएकादशीव्रतवैष्णव,(वि.मु.चित्रा)
१३	शु	४७	४८	२६	४	स्वा	३२	३५	१९	५९	शो	३०	५	१८	५९	गर	२०	१८	२६	०	६	५७	१७	२१	१२	१८	२६	3	तुला	७	१६	४१	भ.२६।४से, प्रदोषव्रत, (वि.मु.स्वाती)
१४	श	४३	३०	२४	२२	वि	२९	४८	१८	५३	अति	२३	२०	१६	१८	वि	१५	३७	२५	५७	६	५८	१७	२१	१३	१९	२७	4	वृ१३।१०	७	१७	४२	भ.१३।१३तक,मेलापुरमण्डलदेविकास्नान(जम्मू),श्रीबालाजीE
३०	र	४०	१५	२३	५	अनु	२७	५५	१८	९	सु	१७	२०	१३	५५	च	११	५२	२५	५५	६	५९	१७	२१	१४	२०	२८	5	वृश्चिक	७	१८	४२	अन्वा., स्नान-दानादि देवपितृकार्येऽमा

A समाप्त, (वि.मु.रोहिणी), रोहिणीव्रत, स.सि.यो.७।३९से B ७।३३से C केतु:२२।३९
D स्वात्यांशुक्र:२०।१६, महावीरदीक्षाकल्याणंक, स.सि.यो.२२।५४तक E जयंती,नौसेनादिवस

मार्ग.कृ.८चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२९ नवम्बर

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	४	७	८	१०	६	५	८	२
अं.	१२	१४	२९	३	२९	५	२०	१०	१०
क.	३७	२८	१३	४४	३९	३५	२२	२	२
वि.	५८	५४	२०	५१	४९	३४	१८	८	८
गति	६०/४६	८५२/४४	४४/५५	६८/२७	२/१३	२३/७	५/२४	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	अनु. ३	पूफा. १	ज्ये. ४	मूल २	पूभा. ३	चित्रा ४	हस्त ४	मूल ४	आर्द्रा २
नाड़ी	चण्डा	जला	वायु	दहना	नीरा	दहना	सौम्या	दहना	सौम्या

बु. ९ रा. | ७ शु. | ८ सू. मं. | १० | ६ श. | ११ गु. | ५ चं. | १२ | २ | ४ | १ | ३ के.

॥ फलम् ॥

धनु राशि में बनने वाला अंगारक योग त्रस्त करेगा- राहु रंगारकश्चैक राशिऋक्षगतोतथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि:प्रजायते॥ धनु का बुध जंगली जानवर मृग, हाथी, शेर, चीते तथाऽन्य जीवजन्तु, पशु-पक्षियों के लिए श्रेष्ठ नहीं- धने मीने बुधोयाति मारयति मृगान् गजान्। प्रजा शाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा॥ राज प्रजाजनों में असुरक्षा की भावना पनपेगी। कहीं सत्तारुढ़ दल में विघटन सम्भव है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान में आतंकी विषवेल उत्तरोत्तर फैलती जायेगी। कोई समृद्ध देश सुरक्षा के नाम पर सैनिक कार्यवाही कर सकता है। इस वर्ष तेल के लिए जमकर संघर्ष होगा। कोई प्रभावी राष्ट्रनायक काल के गर्त में समा सकता है। बाजारभाव- तिथियों की ह्रास-वृद्धि का फल- कृष्णपक्ष की तिथि घटे, शुक्लपक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥ इस योग के चलते पैदावार अच्छी होती है, तब तो भाव पड़े रहते हैं। धनु का मंगल मूल द्रव्य कच्चेमाल, तृण, लकड़ी, घी, तेल, कपास, ऊनी-सूतीवस्त्र, मूंगफली, चाय, काफी, तिल, मेवादि में तेजी करेगा। सर्राफा, शेयरबाजार अनिश्चित रहेगा। मौसम- पक्ष के आरम्भ और अन्त में खराब होगा। मेघगर्जना, विद्युत्पात, वर्षा न के बराबर होगी। दूर दराज के क्षेत्रों में हिमपात से शीतलहर चलेगी। यातायात सम्बन्धी कुघटनाचक्र सम्भव है। ग्रहदर्शन- सायंकाल पश्चिम में बुध खमध्य में गुरु दृश्य रहेगा। प्रातः पूर्वीक्षितिज में शुक्र शनि को देख सकते हैं। ता.२७ में मंगल पश्चिम में अस्त होगा।

कु.ता.५दिसम्बर मार्ग.कृ.३०रवि प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

रा.९ बु. मं. | ७ शु. | सू. ८ चं. | १० | ६ श. | ११ गु. | ५ | १२ | २ | ४ | १ | ३ के.

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	७	८	८	१०	६	५	८	२
अं.	१८	९	३	९	२९	८	२०	९	९
क.	४२	२५	४३	३९	५६	२०	५३	४३	४३
वि.	५८	५९	३७	३१	६	१९	४१	४	४
गति	६०/५४	८१७/३२	४५/१४	४२/१	३/२४	३३/६	४/५९	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	ज्ये. १	अनु. २	मूल २	मूल ३	पूभा. ३	स्वा. १	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
नाड़ी	वायु	चण्डा	दहना	दहना	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष १९ — ता.६ से २१ दिसम्बर सन् २०१० ई. तक।

हेमन्तऋतु,रविदक्षिणायने,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गणः६८१९

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.मा	प्र.मा	मु.जि	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	
१	चं	३८	२०	२२	१९	ज्ये	२७	१८	१७	५४	धृ	१२	१८	११	५४	कि	९	१७	२५	५५	६	५९	१७	२१	१५	२१	२९	6	घ१७।५४	७	१९	४३	इष्टिः, पूभा.४मीनमेंगुरुः९।१२, श्रीमल्लारीभैरव षड्रात्रप्रा.
२	मं	३७	५३	२२	९	मू	२८	५	१८	१४	शूल	८	२३	१०	२१	बा	८	५	२५	५२	७	०	१७	२१	१६	२२	३०	7	धनु	७	२०	४४	चन्द्रदर्शनमु.३०,झण्डादिवस,पातस्पर्शः१४।४,पातमोक्षः२७।७
३	बु	३९	२	२२	३८	पूषा	३०	२५	१९	११	गंड	५	३७	९	१६	तै	८	२५	२५	५०	७	१	१७	२१	१७	२३	१	8	म२५।३५	७	२१	४५	मुहर्रम१हिजरीसन्१४३२प्रा., (वि.मु.उषा.)
४	गु	४१	५२	२३	४७	उषा	३४	२०	२०	४६	वृ	४	१०	८	४२	व	१०	२८	२५	४८	७	२	१७	२१	१८	२४	२	9	मकर	७	२२	४६	भ.११।१३से २३।४७तक, वैनायकीचौथव्रत, (वि.मु.उषा.)
५	शु	४६	१३	२५	३१	श्र	३९	४२	२२	५५	ध्रु	३	५५	८	३६	बव	१४	२	२५	४८	७	२	१७	२१	१९	२५	३	10	मकर	७	२३	४७	बांकेबिहारीपंचमी,प्राकट्योत्सवः,वक्रीबुध१७।४५,रामजानकीA
६	श	५१	४०	२७	४३	ध	४६	१३	२५	३२	व्या	४	४२	८	५६	कौ	१८	५५	२५	४७	७	३	१७	२२	२०	२६	४	11	कु१२।१३	७	२४	४८	स्कन्द६चम्पाषष्ठी, गुहाषष्ठी,मूलकरूपिणी६बंगाल, पंचकB
७	र	५७	५२	३०	१२	शत	५३	२५	२८	२५	ह	६	२०	९	३५	गर	२४	४७	२५	४७	७	३	१७	२२	२१	२७	५	12	कुम्भ	७	२५	४९	भ.३०।१२से,मित्रसप्तमी,नरसीमेहताज.,विष्णु-नन्दा-भद्रा७
८	चं	६०	०	-	-	पूभा	६०	०	-	-	वज्र	८	१७	१०	२३	वि	३०	५८	२५	४५	७	४	१७	२२	२२	२८	६	13	मीर४।३८	७	२६	५०	भ.१९।२७तक B प्रारम्भ१२।१३,(वि.मु.धनिष्ठा)
८	मं	४	५	८	४३	पूभा	०	४५	७	२३	सि	१०	१८	११	२	बव	४	५	२५	४३	७	५	१७	२२	२३	२९	७	14	मीन	७	२७	५१	बुधास्तःपश्चिमायां ७।४०, स.सि.योग ७।२३से
९	बु	९	५५	११	४	उभा	७	४०	१०	१०	व्य	११	५५	११	५२	कौ	९	५५	२५	४३	७	६	१७	२३	२४	३०	८	15	मीन	७	२८	५२	नन्दिनीनौमी,कल्पादिः, जैनदिवाकरचौथपुण्यः, पटेलपुण्यःC
१०	गु	१४	४७	१३	१	रे	१३	४५	१२	३६	वरि	१२	५२	१२	१५	गर	१४	४७	२५	४२	७	६	१७	२३	२५	१	९	16	मेर२।३६	७	२९	५३	भ.२५।४३से, पंचकस.१२।३६,मूलधनुमेंसूर्य७।५७,संक्रांतिD
११	शु	१८	१८	१४	२६	अ	१८	२७	१४	३०	परि	१२	४३	१२	१२	वि	१८	१८	२५	४२	७	७	१७	२४	२६	२	१०	17	मेष	८	०	५४	भ.१४।२६तक, मोक्षदाएकादशीव्रत(सबका), गीताज.E
१२	श	२०	१०	१५	१२	भर	२१	४०	१५	४८	शि	११	२२	११	४१	बा	२०	१०	२५	४०	७	८	१७	२४	२७	३	११	18	वृ११।५८	८	१	५५	अखण्डा१२, व्यञ्जनद्वादशी, प्रदोषव्रत
१३	र	२०	२५	१५	१८	कृ	२३	२०	१६	२८	सि	८	५०	१०	४०	तै	२०	२५	२५	४०	७	८	१७	२४	२८	४	१२	19	वृष	८	२	५६	गुरुग्रंथोत्सवः
१४	चं	१९	५	१४	४७	रो	२३	२८	१६	३२	सा	५	०	९	९	व	१९	५	२५	४०	७	९	१७	२५	२९	५	१३	20	मिर८।१८	८	३	५७	भ.१४।४७से २६।१५तक, सत्यव्रत, श्रीदत्तज., रोहिणीव्रतF
१५	मं	१६	२५	१३	४३	मृग	२२	१५	१६	३	शुभ	०/५४	५/१२	७/२८	११/५०	बव	१६	२५	२५	४०	७	९	१७	२५	३०	६	१४	21	मिथुन	८	४	५८	अन्वा., पूर्णिमापुण्यः, विशा.शुक्रः१६।४३, सा.मकरेभानुःG

A विवाहोत्सवः(वि.मु.श्रवण),गु.तेगबहादुरबलिदानदि.,नाग५(द.भा.),मानवाधिकारदिवस,स.सि.यो.२२।५५तक   C तेजीमन्दीसूचकांक२५६८   D मु.३०,बङ्गवसौरमास पौषारंभः, दशादित्यव्रत, कल्लरातमुस.धनुखरमासप्रा.अमरनाथजन्म+मोक्षजैन,स.सि.योग   E मौनी११जैन,पूषा.भौमः२१।२१,मोहर्रम(ताजिया),श्रीघालदासज.रामधामखेडापाजोधपुर,स.सि.यो.१४।३०तक   F संभवनाथज.जैन,पिशाचमोचनश्राद्ध,कपर्दीश्वरयात्रादर्शन(काशी),स.सि.यो.,अ.सि.यो.१६।३२से   G २१।१०,शिशिरऋतुप्रा.रविउत्तरायणे,षोडसीत्रिपुरसुन्दरीश्रीविद्याज.अन्नपूर्णाज.

मार्ग.शु.८चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१३दिसम्बर

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	१०	८	८	११	६	५	८	२
अं.	२६	२०	९	११	०	१३	२१	९	९
क.	५०	३०	४६	२१	२८	२२	३१	१७	१७
वि.	३७	५९	५५	१४	४९	४४	२१	३८	३८
गति	६१/०	७९२/१३	४५/३७	३३/३७	४/५६	४३/१५	४/२१	३/११	३/११
दिशा	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
क्रान्ति	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	४ ज्ये.	१ पूभा.	३ मूल	४ मूल	४ पूभा.	३ स्वा.	४ हस्त	३ मूल	१ आर्द्रा
नाडी	वायु	नीरा	दहना	दहना	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

॥ फलम् ॥

मीन का गुरु वर्षपर्यन्त भय-विषाद तथा प्राणियों की क्षति का कारण बनेगा- यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराःसर्वनद्योपि विनश्यति चतुष्पदा॥ अन्तर्राष्ट्रीयजगत में चिन्ता व्याप्त रहेगी। कहीं भयातंक से तो कहीं रोग उपद्रवादि से दुःखित जनता भागती फिरेगी। पश्चिम के किसी देश-प्रदेश में गृहयुद्ध के आसार बन सकते हैं। क्रूर पाप के मध्य में, रवि के राहु संग। अनहोनी होवे तभी, होय किसी से जंग॥ चार ग्रह संयोग न चाहते हुए भी किसी से किसी का युद्ध करा सकता है। देश की पश्चिमोत्तर सीमाओं पर चौकसी बरतनी चाहिए। विदेशी कूटनीतिज्ञ द्वारा शान्ति प्रस्ताव लेकर आना खतरे से खाली नहीं।   **बाजारभाव**- चन्द्रदर्शन एवं गुरुवार में बैठी धनु की संक्रांतिमु.३० समभाव बने रहने का संकेत है। चार ग्रह संयोग में भाव घटते-बढ़ते रहते हैं। अनिश्चित माहौल में व्यापार निजी सूझबूझ के आधार पर करना चाहिए।   **मौसम**- ग्रहराशि नक्षत्रचार बुधास्त के प्रभाव से यत्र-तत्र बादलचाल, हल्की वर्षा सम्भव है- उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। दूर-दराज के क्षेत्रों में बर्फवारी होने, पाला पड़ने से यातायात में बाधा पड़ेगी। उत्तर भारत में शीतलहर प्रभावित करेगी। किंवा यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। सूर्य या चन्द्रमा के इर्द-गिर्द गोलाकार मण्डल का बनना असम्भावी आपदा का संकेत माना जाता है।   **ग्रहदर्शन**- सायंकाल खमध्य में गुरु प्रातः पूर्वदिशा में शुक्र शनि के दर्शन होते रहेंगे। मंगल अस्त है ही। ता.१४ में बुध भी अस्त हो जायेगा।

कु.ता.२१दिसम्बर मार्ग.शु.१५भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	२	८	८	११	६	५	८	२
अं.	४	०	१५	२	१	१९	२२	८	८
क.	५८	३८	५३	४३	१३	३६	३	५२	५२
वि.	५४	८	१२	४०	२१	२०	४३	११	११
गति	६१/५	८२५/४४	४५/५९	८०/२१	६/२१	५०/४३	३/३९	३/११	३/११
दिशा	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
क्रान्ति	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	२ मूल	३ मृग	१ पूषा	१ मूल	४ पूभा.	४ स्वा.	४ हस्त	३ मूल	१ आर्द्रा
नाडी	दहना	दहना	सौम्या	दहना	नीरा	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ पौष कृष्ण पक्ष २० — ता.२२ दिस.से ४ जनवरी सन् २०११ई. तक।

शिशिरऋतु,रविउत्तरायणे,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गण:६८३५

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.पौ	प्र.पौ	मु.मु.	अंग्रेजी ता.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	ता.२२ दिस.से ४ जनवरी सन् २०११ई. तक।
१	बु	१२	३०	१२	१०	आ	१९	५२	१५	७	ब्र	४७	२८	२६	९	कौ	१२	३०	२५	४०	७	१०	१७	२६	१	७	१५	22	मिथुन	८	५	५९	इष्टिः, रा.पौषप्रारम्भ
२	गु	७	४२	१०	१५	पुन	१६	४०	१३	५०	ऐं	४०	१२	२३	१५	गर	७	४२	२५	४०	७	१०	१७	२६	२	८	१६	23	क.८।९	८	७	१	भ.२१।१०से, व.ज्ये.वृश्चिकमेंबुध८।१४, श्रद्धानन्दबलिदानA
३	शु	२	१७	८	६	पु	१२	५३	१२	२०	वै	३२	३०	२०	११	वि	२	१७	२५	४०	७	११	१७	२७	३	९	१७	24	कर्क	८	८	२	भ.८।६तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय२०।५१
४	शु	५६	३०	२१	४७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	चतुर्थीक्षयः
५	श	५०	३५	२७	२५	श्ले	८	४७	१०	४२	वि	२४	३७	१७	२	कौ	२३	३२	२५	४०	७	११	१७	२७	४	१०	१८	25	सिं१०।४२	८	९	३	बुधोदयःपूर्वस्यां१६।४०, क्रिसमसडे(बड़ादिन), ईसाजयंतीB
६	र	४४	४२	२५	५	म	४	३५	९	२	प्री	१६	४५	१३	५४	गर	१७	३७	२५	४२	७	१२	१७	२९	५	११	१९	26	सिंह	८	१०	४	भ.२५।५से
७	चं	३९	७	२२	५१	पूफा	०/५६	३०/४५	७/२१	२४/५४	आ	९	०	१०	४८	वि	११	५५	२५	४२	७	१२	१७	२९	६	१२	२०	27	क१३।२	८	११	५	भ.११।५८तक
८	मं	३३	५५	२०	४७	ह	५३	२५	२८	३५	सौ	१/५४	३०/२२	७/२८	४९/५८	बा	६	३०	२५	४३	७	१३	१७	३०	७	१३	२१	28	कन्या	८	१२	६	कालाष्टमी,अष्टकाश्राद्ध
९	बु	२९	२७	१८	५६	चि	५०	४०	२७	२९	अति	४७	४५	२६	१९	तै	१	३५	२५	४३	७	१३	१७	३०	८	१४	२२	29	तु१६।२	८	१३	७	भ.३०।८से, पूषायांरविः१०।१८
१०	गु	२५	१८	१७	२०	स्वा	४८	३५	२६	३९	सु	४१	३७	२३	५२	वि	२५	१८	२५	४५	७	१३	१७	३१	९	१५	२३	30	तुला	८	१४	८	भ.१७।२०तक, मार्गीबुधः१६।१०, श्रीपार्श्वनाथ+चन्द्रप्रभुज.
११	शु	२२	२	१६	२	वि	४७	१८	२६	८	धृ	३६	८	२१	४०	बा	२२	२	२५	४५	७	१३	१७	३१	१०	१६	२४	31	वृ२०।१६	८	१५	१०	सफलाएकादशीव्रत(सबका),न्यू-ईयर-इव,स.सि.यो.२६।८से
१२	श	१९	३५	१५	३	अनु	४६	५०	२५	५७	शूल	३१	१७	१९	४४	तै	१९	३५	२५	४७	७	१३	१७	३२	११	१७	२५	1	वृश्चिक	८	१६	११	शनिप्रदोषव्रत, जनवरी१ता.३१ सन्२०११प्रा., वृश्चिकC
१३	र	१८	३	१४	२७	ज्ये	४७	१५	२६	८	गंड	२७	८	१८	५	व	१८	३	२५	४८	७	१४	१७	३३	१२	१८	२६	2	ध२६।८	८	१७	१२	भ.१४।२७से२६।२१तक,बाबानागपालपुण्यः,स.सि.यो.२६।८से
१४	चं	१७	३५	१४	१६	मू	४८	४७	२६	४५	वृ	२३	५३	१६	४७	श	१७	३५	२५	४८	७	१४	१७	३३	१३	१९	२७	3	धनु	८	१८	१३	उषायांभौमः२९।२
३०	मं	१८	२५	१४	३२	पूषा	५१	२८	२७	४९	ध्रु	२१	२७	१५	४९	ना	१८	१५	२५	५०	७	१४	१७	३४	१४	२०	२८	4	धनु	८	१९	१४	अन्वा., देवपितृकार्ये, वकुलामावस(उड़ीसा), अनु.शुक्रःD

A दिवस, किसानदिवस, स.सि.योग,अ.सि.योग १३।५०से — B पं.मदनमोहनमालवीयजयंती

C में शुक्र १६।४१ — D २६।२९, हत्तापनाशनस्नान,ब्रह्महत्याशमनार्थ(मद्रास),आंशिक सूर्यग्रहण

पौषकृ.८भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२८दिसम्बर

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	५	८	७	११	६	५	८	२
अं.	१२	९	२१	२६	२	२५	२२	८	८
क.	६	४४	१५	२	१	४६	२७	२९	२९
वि.	३७	२८	५९	४३	१८	५३	२१	५५	५५
गति	६१ / ८	८४६ / ३७	४६ / १४	१७ / ५५	७ / २९	५५ / ३८	३ / ०	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचरण	मूल ४	उफा. ४	पूषा. ३	ज्ये. ४	पूभा. ४	विशाखा २	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
नाड़ी	दहना	नीरा	सौम्या	वायु	नीरा	चण्डा	सौम्या	दहना	सौम्या

१० | ८ बु | ९ सू. मं. रा. | ११ | ७ शु. | १२ गु. | ६ चं. श. | १ | ३ के. | ५ | २ | ४

॥ फलम् ॥

सूर्य के साथ बनने वाला अंगारक योग नेष्ट है- राहु रंगारकश्चैक राशिऋक्षगतो तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते॥ कहीं उपद्रव तो कहीं अतिवृष्टि-अनावृष्टिवसात् खड़ी फसलों में हानि होगी। उद्योगधन्धों में तोड़-फोड़, आगजनी, हड़तालादि का चक्र चलेगा। बुधस्य पंचवाराःस्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥ पांच बुधवारों का फल अच्छा होने से सरकार की पहल पर सुख-शान्ति का संचार होगा। सर्वहारा वर्ग के हितों में राहत कार्यों की घोषणा हो सकती है। विज्ञान तथा शान्ति के संदर्भ में भारत नया कीर्तिमान स्थापित करेगा। बाजारभाव- वृश्चिक का बुध घी, तेल, मूंगफली, सोयाबीन, पटसन, सूरजमुखी, रूई, ऊन के भावों में वृद्धि करेगा- बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृत तेल महार्घता। सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभं भवेत्। वृश्चिक के शुक्र का फल- वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्य महर्घता। अनाजों में तेजीकारक होता है। पक्षारम्भ के बने भावों को मार्गी बुध पक्षान्त में पलट सकता है- वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की, एकदम पलटा खाय॥ मौसम- बड़े दिन के आसपास तथा जनवरी के पहले सप्ताह में भारी मेघगर्जन के साथ ओले पड़ सकते हैं। कोहरा छाने, बर्फवारी होने से क्षति होगी। उत्तरभारत में कड़ाके की सर्दी पड़ेगी। ग्रहदर्शन- प्रातः खमध्य में शनि, शुक्र तथा सायं गुरु को स्पष्ट देख सकते हैं। ता.२५ में बुध उदय होगा। मंगल अस्त रहेगा।

कृ.ता.४जनवरी पौषकृ.३०भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

१० | बु ८ | सू. शु. | चं.९ मं. | रा. | ११ | ७ | १२ गु. | ६ श. | १ | ३ के. | ५ | २ | ४

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	८	८	७	११	७	५	८	२
अं.	१९	१४	२६	२७	२	२	२२	८	८
क.	१४	४७	४०	६	५७	२८	४६	७	७
वि.	४५	३०	५०	४८	०	४	१६	३८	३८
गति	६१ / ११	७६४ / ४४	४६ / ३२	३८ / ४०	८ / ३३	५९ / २१	२ / १८	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. उ.	मा. अ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचरण	पूषा. २	पूषा. १	उषा. १	ज्ये. ४	पूभा. ४	विशाखा ४	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
नाड़ी	सौम्या	सौम्या	नीरा	वायु	नीरा	चण्डा	सौम्या	दहना	सौम्या

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ पौष शुक्ल पक्ष २१ | **ता.५ से १९ जनवरी सन् २०११ ई. तक।**

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे, दक्षिणगोले। केतकीअहर्गण:६८४९

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.पौ.	प्र.पौ.	मु.मु.	ई.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रात:५/३० रा.	अं.	क.	भद्रा, पंचक, ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टैं.टा.घं.मि.में है।
१	बु	२०	७	१५	१७	उषा	५५	१७	२१	२१	व्या	१९	५७	१५	१३	बव	२०	७	२५	५०	७	१४	१७	३४	१५	२१	२९	5	म१०।१२	८	२०	१५	इष्टि:, चन्द्रदर्शनमु.४५, गुरुगोविन्दसिंहजयंती
२	गु	२३	१०	१६	३१	श्र	६०	०	-	-	ह	१९	२२	१५	०	कौ	२३	१०	२५	५०	७	१५	१७	३५	१६	२२	१	6	मकर	८	२१	१७	सफर२, उभा.१गुरु:२१।८
३	शु	२७	३०	१८	१५	श्र	०	१८	७	२२	वज्र	१९	४५	१५	९	गर	२७	३०	२५	५२	७	१५	१७	३६	१७	२३	२	7	कु२०।३५	८	२२	१८	मूलधनुमेंबुध२४।२६, पंचकप्रा.२०।३५, यतीन्द्रसूरिपुण्य:A
४	श	३२	५०	२०	२३	ध	६	२२	९	४८	सि	२०	५५	१५	३७	व	०	१०	२५	५५	७	१५	१७	३७	१८	२४	३	8	कुम्भ	८	२३	१९	भ.७।१९से २०।२३तक, मकरमेंमंगल२२।३
५	र	३८	५५	२२	४९	शत	१३	१५	१२	३३	व्य	२२	४०	१६	१९	बव	५	५२	२५	५७	७	१५	१७	३८	१९	२५	४	9	कुम्भ	८	२४	२०	५६भोग गरुड़गोविन्द, प्रवासीभारतीयदिवस
६	चं	४५	२०	२५	२३	पूभा	२०	४०	१५	३१	वरि	२४	४५	१७	९	कौ	१२	८	२६	०	७	१५	१७	३९	२०	२६	५	10	मी८।४७	८	२५	२१	सत्गुरुप्रकाशोत्सव:
७	मं	५१	३३	२७	५२	उभा	२८	३	१८	२८	परि	२६	४७	१७	५८	गर	१८	२५	२६	०	७	१५	१७	३९	२१	२७	६	11	मीन	८	२६	२२	भ.२७।५२से, उषायांरवि:१२।१२, गुरुराजेन्द्रसूरिजन्म+पुण्य:B
८	बु	५७	०	३०	३	रे	३४	५५	२१	१३	शि	२८	२८	१८	३८	वि	२४	१५	२६	३	७	१५	१७	४०	२२	२८	७	12	मे२१।१३	८	२७	२४	भ.१६।५७तक, पंचकसमाप्त २१।१३
९	गु	६०	०	-	-	अ	४०	४५	२३	३३	सि	२९	२२	१९	०	बा	२९	५	२६	५	७	१५	१७	४१	२३	२९	८	13	मेष	८	२८	२५	लोहड़ी(पंजाब-हरि.-हिमा.), तेजीमन्दीसूचकांक२२७२, C
९	शु	१	१२	७	४४	भर	४५	७	२५	१८	सा	२९	७	१८	५४	कौ	१	१२	२६	५	७	१५	१७	४१	२४	१	९	14	मेष	८	२९	२६	मकरमेंसूर्य१८।४२, संक्रांतिमु.१५, पुण्यकालमध्याह्ने, बङ्गवD
१०	श	३	४५	८	४५	कृ	४७	४२	२६	२०	शुभ	२७	३३	१८	१६	गर	३	४५	२६	८	७	१५	१७	४२	२५	२	१०	15	वृ७।३४	९	०	२७	भ.२०।५२से, शाम्बदशमी(उड़ीसा), थलसेनादि. जिनसागरE
११	र	४	२३	९	०	रो	४८	२५	२६	३७	शु	२४	३०	१७	३	वि	४	२३	२६	१०	७	१५	१७	४३	२६	३	११	16	वृष	९	१	२८	भ.९।०तक, पुत्रदाएकादशीव्रत(सबका), मन्वादि:,(वि.F
१२	चं	३	७	८	२९	मृग	४७	१७	२६	९	ब्र	१९	५७	१५	१३	बा	३	७	२६	१५	७	१४	१७	४४	२७	४	१२	17	मि१४।२३	९	२	२९	सोमप्रदोषव्रत, ज्ये.शुक्र:२४।२, स.सि.व अ.सि.यो.२६।९तक
१३	चं	५९	५८	३१	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	त्रयोदशीक्षय:
१४	मं	५५	१०	२९	१८	आ	४४	३०	२५	२	ऐं	१४	०	१२	५०	गर	२७	३५	२६	१७	७	१४	१७	४५	२८	५	१३	18	मिथुन	९	३	३०	भ.२९।१८से
१५	बु	४९	२	२६	५१	पुन	४०	२०	२३	२२	वै	६/५८	४५/३२	२/३०	५५/३१	वि	२२	५	२६	२०	७	१४	१७	४६	२९	६	१४	19	क१७।४७	९	४	३१	भ.१६।४तक, अन्वा., पूर्णिमाव्रत, माघस्नानप्रा., पूषायांबुध:G

A त्रि:स्तुतिजैन, स.सि.यो.७।२२तक B त्रि:स्तुतिजैन, शास्त्रीजीपुण्य:, स.सि.यो.१८।२८तक C स.सि.यो.२३।३३तक D सौरमाघारम्भ:, पोंगलपर्व, माघविहू, खरमासस., श्रीगंगासागर यात्रारम्भ:, पातस्पर्श:२२।२९ E पुण्य:, खरतरगच्छजैन, पातमोक्ष:८।३०, स.सि.व अ.सि.यो.२६।२०से F मु.रोहिणी), रोहिणीव्रत G १३।१, शाकम्भरीजयंती, मेलामंढारदेवी सतारा(महा.)

पौषशु.८बुधे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१२जनवरी

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	११	९	८	११	७	५	८	२
अं.	२७	२२	२	४	४	१०	२३	७	७
क.	२४	७	५४	१७	९	३४	१	४२	४२
वि.	२	४७	११	२१	२२	३६	४७	१२	१२
गति	६१ / ८	७२१ / ११	४६ / ४९	६८ / २०	९ / ३८	६२ / ३१	१ / २७	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / अ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचरण	उषा. १	रेव. २	उषा. २	मूल २	उभा. १	अनु. ३	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
नाड़ी	नीरा	दहना	नीरा	दहना	सौम्या	चण्डा	सौम्या	दहना	सौम्या

१० मं. | ८ शु. | ९ सू. रा. बु. | ११ | ७ | १२ चं. गु. | ६ श. | १ | ३ के. | ५ | २ | ४

॥ फलम् ॥

ग्रहों के बनने वाले तामस योग नेष्ट हैं- आगे पीछे बहुत ग्रह, सूर्य से तामस योग। हा! हा!! कार होय जग, बाढ़े रोग वियोग॥ संसार में चारों ओर हा! हा!! कार मचेगा, दैहिक, दैविक, भौतिक सन्तापों की वृद्धि होगी। धने मीने बुधोयाति मारयति मृगान् गजान्। प्रजाशाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा॥ धनु का बुध मृग, हाथी, शेर, चीते, नीलगाय, हिरण, अन्यान्य पशु-पक्षी, जीव-जन्तुओं की क्षति करेगा। राजा-प्रजा में वैर-विरोध का प्रादुर्भाव होगा। मकर में सूर्य+मंगल का योग भारतीय राजनीति में उठापटक का संकेत है। पश्चिमी देशों में झगड़े-झमेले होंगे। कश्मीर समस्या पुनः सिर उठाने लगेगी। कर्णधारों को सचेत रहना चाहिए। बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमु.४५ मन्दीकारक है। सूती मकर की संक्रान्ति मु.१५ तेजी का लक्षण है। पक्षान्तर्गत भाव समानान्तर चलते रहेंगे। मकर का मंगल घी, तेल, तिल, गुड़, मूंगफली, मेवा, ऊनीवस्त्र आदि में तेजी करेगा- मकरे च स्थिते भौमे घृत तेल महार्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख पीडनम्॥ तिथियों की ह्रास-वृद्धि का फल अच्छा होने से भाव अधिक नहीं बढ़ेंगे।

कु.ता.१९जनवरी पौषशु.१५बुधे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

११ | बु. ९ | १२ गु. | सू. रा. १० मं. | ८ शु. | १ | ७ | २ | ४ | ६ श. | ३ के.चं. | ५

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	२	९	८	११	७	५	८	२
अं.	४	२२	८	१२	५	१७	२३	७	७
क.	३१	३७	२२	५४	१९	५९	९	१९	१९
वि.	४३	२९	२३	५५	२९	१	४९	५७	५७
गति	६१ / ३	८६३ / ५८	४७ / ०	७९ / ५७	१० / ३०	६४ / ४१	० / ४४	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / अ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचरण	उषा. ३	पुन. १	उषा. ४	मूल ४	उभा. १	ज्ये. १	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १
नाड़ी	नीरा	नीरा	नीरा	दहना	सौम्या	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

मौसम- यत्र-तत्र बादलचाल, मेघगर्जन, विद्युत्पात हल्की वर्षा होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात, ओलावृष्टि से क्षति, शीतलहर प्रभावित करेगी। यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। पूस उंजेली सप्तमी, आठैं नवमी गाज। मेघ होय तो जानि लैं, अब सरिहैं सब काज॥ **ग्रहदर्शन-** भोरमें पूर्वनत् बुध, शुक्र तथा मध्य आकाश में शनि को देख सकते हैं। सायं शिरोभाग में गुरु दृश्य रहेगा।

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ माघ कृष्ण पक्ष २२

ता.२० जन. से ३ फरवरी सन् २०११ ई.तक।

शिशिरऋतु,रविउत्तरायणे,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गणः६८६४

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	रा.पौ	प्र.मा	मु.स	ई.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	
१	गु	४१	५५	२४	०	पू	३५	८	२१	१७	प्री	४९	३५	२७	४	बा	१५	२७	२६	२०	७	१४	१७	४६	३०	७	१५	20	कर्क	९	५	३२	इष्टिः, सा.कुम्भेभानुः१५।५०, दशाश्वमेधघाटस्नानप्रा.काशीA
२	शु	३४	१५	२०	५६	श्ले	२९	२०	१८	५८	आ	४०	१०	२३	१८	तै	८	५	२६	२२	७	१४	१७	४७	१	८	१६	21	सिं१८।५८	९	६	३३	रा.माघारम्भः, श्रवणेभौमः७।१९, अभि.प्रवृत्तौरविः७।५६
३	श	२६	२७	१७	४८	म	२३	२०	१६	३३	सौ	३०	४५	१९	३१	व	०	२२	२६	२८	७	१३	१७	४८	२	९	१७	22	सिंह	९	७	३४	भ.७।२२से१७।४८तक,संकष्टीश्रीगणेशचतुर्थी(सकटचौथ)B
४	र	१८	५०	१४	४५	पूफा	१७	३०	१४	१३	शो	२१	२५	१५	४७	बा	१८	५०	२६	३०	७	१३	१७	४९	३	१०	१८	23	क१९।४१	९	८	३५	श्रीसुभाषज., (वि.मु.उफा.), स.सि.यो.१४।१३से
५	चं	११	४५	११	५४	उफा	१२	१२	१२	५	अति	१२	३८	१२	१५	तै	११	४५	२६	३३	७	१२	१७	५०	४	११	१९	24	कन्या	९	९	३६	श्रवणेरविः१४।३४, (वि.मु.उफा.हस्त)
६	मं	५	२८	९	२३	ह	७	४३	१०	१७	सु	४/५७	२७/७	८/३०	५९/३	व	५	२८	२६	३७	७	१२	१७	५१	५	१२	२०	25	तु२१।३६	९	१०	३७	भ.९।२३से२०।२१तक, अभि.निवृत्तौरविः११।३३,(वि.मु.C
७	बु	०	१७	७	१८	चि	४	२०	८	५५	शूल	५०	५०	२७	३१	बव	०	१७	२६	४०	७	११	१७	५१	६	१३	२१	26	तुला	९	११	३८	६२वाँ गणतन्त्रदिवस, उभा.२गुरुः१५।३६, कालाष्टमी,D
८	बु	५६	१८	२१	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	अष्टमीक्षयः
९	गु	५३	३८	२८	३८	स्वा	२	५	८	१	गंड	४५	३०	२५	२३	तै	२४	५७	२६	४२	७	११	१७	५२	७	१४	२२	27	वृ२५।४५	९	१२	३९	वक्रीशनिः७।२०,
१०	शु	५२	१२	२८	४	वि	१	१०	७	३९	वृ	४१	१३	२३	४०	व	२२	५५	२६	४५	७	११	१७	५३	८	१५	२३	28	वृश्चिक	९	१३	४०	भ.१६।२१से२८।४तक, उषायांबुधः२४।१५, (वि.मु.अनु.)E
११	श	५२	३	२८	०	अनु	१	२७	७	४६	ध्रु	३७	५	२२	२०	बव	२२	७	२६	४८	७	११	१७	५४	९	१६	२४	29	वृश्चिक	९	१४	४१	षट्तिलाएकादशीव्रत(सबका), मूलधनुमें शुक्र२८।१
१२	र	५३	५	२८	२४	ज्ये	३	०	८	२२	व्या	३५	३०	२१	२२	कौ	२२	३५	२६	५०	७	१०	१७	५४	१०	१७	२५	30	ध८।२२	९	१५	४२	मकरमेंबुध२१।५३,षट्तिला११व्रतनिम्बार्क,शीतलनाथज.F
१३	चं	५५	७	२९	१३	मू	५	३५	९	२४	ह	३३	५५	२०	४४	गर	२४	५	२६	५३	७	१०	१७	५५	११	१८	२६	31	धनु	९	१६	४३	भ.२१।१३से,प्रदोषव्रत,मूल२राहुःमृग.४केतुः२०।३८,मेरु१३G
१४	मं	५८	१३	३०	२६	पूषा	९	१५	१०	५१	वज्र	३३	८	२०	२४	वि	२६	४०	२६	५७	७	९	१७	५६	१२	१९	२७	1	म१७।१८	९	१७	४४	भ.१७।४९तक, फरवरीरता.२८, रटन्तीकालिकापूजन
३०	बु	६०	०	-	-	उषा	१३	४५	१२	३९	सि	३३	०	२०	२१	च	३०	१०	२७	०	७	९	१७	५७	१३	२०	२८	2	मकर	९	१८	४५	अन्वा.,स्नानादिअमापुण्यः,मेलाप्रयागराज,सहादतेईमामहसनH
३०	गु	२	१०	८	०	श्र	१९	१०	१४	४८	व्य	३३	३५	२०	३४	ना	२	१०	२७	५	७	८	१७	५८	१४	२१	२९	3	कु२८।२	९	१९	४६	इष्टिः,पंचकप्रा.२८।२,मौनीमावस,स्नानादिदेवकार्येपुण्यःK

A स.सि.व अ.सि.यो.२१।१७तक B चन्द्रोदय२०।४७ C चित्रा),स्वामीविवेकानन्द व रामानन्दाचार्यज.,चैहल्लुम D अष्टकाश्राद्ध,पातस्पर्शः२१।४१,मोक्षः२८।२१ E स.सि.यो.७।३९से,लालालाजपतरायजयंती F गांधीजीपुण्यःसर्वोदयपखवाराशुरु,स.सि.यो.८।२२से G आदिनाथनिर्वाणकल्याणंकजैन H आखरीचहारशाम्बा K द्वापरयुगादिः

माघकृ.७बुधे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२६जनवरी

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	६	९	८	११	७	५	८	२
अं.	११	४	१३	२२	६	२५	२३	६	६
क.	३८	३९	५१	३६	३५	३७	१२	५७	५७
वि.	५४	१४	४९	३५	१५	१४	३८	४२	४२
गति	६०/५९	८३३/६	४७/८	८६/४७	११/२५	६६/२५	०/५	३/११	३/११
स्थिति	मा.उ.	मा.उ.	मा.अ.	मा.उ.	मा.उ.	मा.उ.	मा.उ.	व.अ.	व.अ.
नक्षत्रचार	श्रव.१	चित्रा ४	श्रव.२	पूषा.३	उभा.१	ज्ये.३	हस्त ४	मूल.३	आर्द्रा १
नाड़ी	अमृता	दहना	अमृता	सौम्या	सौम्या	वायु	सौम्या	दहना	सौम्या

कुण्डली (२६ जनवरी): ११; ९ बु. रा.; १२ गु.; १० सू. मं.; ८ शु.; १; ७ चं.; २; ४; ६ श.; ३ के.; ५

॥ फलम् ॥

यत्र मासे पंचवाराःजायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहःपश्चिमे देशेखड्ग.युद्धञ्च जायते॥ पश्चिम के देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तेहरान, बगदाद, कुवैत, अंकारा, यमन, मिश्र, अरबगणराज्य आदि में हालात नाजुक बनेंगे। दक्षिण अमेरिका में प्राकृतिक प्रकोप की सम्भावना है। कहीं युद्धभय व्याप्त रहेगा। अतीचारी गुरु, वक्री शनि हो-हल्ला मचवायेंगे- अतीचार गते जीवे शनौ वक्रत्व मागते। हा! हा!! भूतं जगत्सर्वं रुण्ड मुण्डा च मेदिनी॥ इस योग के चलते पृथ्वी पर रुण्ड-मुण्ड लुढ़कते फिरें, तो आश्चर्य नहीं। सीमावर्त्ती राज्य एवं महानगरों में चौकसी बरतनी चाहिए। आस्तीन के छिपे विषधर कब डंक मार दें, कुछ नहीं कहा जा सकता। बाजारभाव- तिथियों की ह्रास-वृद्धि का फल अच्छा होने से भाव पड़े रह सकते हैं- जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकें, महंगाई हट जाय॥ जनवरी के अन्त में धनु राशिगत शुक्र खेती में हानि करेगा, तब भाव वृद्धि को प्राप्त होंगे- यदा च धनु राशिस्थो दैत्याचार्यःप्रवर्तते। महार्घं च विजानीयात् सर्व सस्य विनश्यति॥ सट्टा, सर्राफा, शेयर बाजार में दो तरफा चाल चलेगी। मौसम- पक्षान्तर्गत घामाछांई सी चलती रहेगी। यत्र-तत्र मेघ गर्जना के साथ बूंदा-बांदी होगी। ओले पड़ सकते हैं। बर्फवारी होने से शीतलहर चलेगी। भूकम्प, भूस्खलन, दुर्दिनवशात् संचार व्यवस्था बाधित रहेगी। ग्रहदर्शन- प्रातःकाल पूर्व में बुध शुक्र, पश्चिम में शनि दृश्य रहेगा। सन्ध्या समय पश्चिम में गुरु के दर्शन होते रहेंगे।

कु.ता.३फरवरी माघकृ.३०गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

कुण्डली (३ फरवरी): ११; ९ शु. रा.; १२ गु.; सू. बु.१०चं. मं.; ८; १; ७; २; ४; ६ श.; के.३; ५

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	९	९	९	११	८	५	८	२
अं.	१९	१८	२०	४	८	४	२३	६	६
क.	४६	३५	९	३२	८	३४	९	३२	३२
वि.	३२	४४	३३	३३	०	६	२४	१५	१५
गति	६०/५३	७२१/७	४७/१८	९२/५२	१२/१	६७/५४	०/५४	३/११	३/११
स्थिति	मा.उ.	मा.अ.	मा.अ.	मा.उ.	मा.उ.	मा.उ.	व.उ.	व.अ.	व.अ.
नक्षत्रचार	श्रव.३	श्रव.३	श्रव.४	उषा.३	उभा.२	मूल.२	हस्त ४	मूल.३	मृग.४
नाड़ी	अमृता	अमृता	अमृता	नीरा	सौम्या	दहना	सौम्या	दहना	दहना

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ माघ शुक्ल पक्ष २३

ता.४ से १८ फरवरी सन् २०११ ई. तक।

शिशिरऋतु,रविउत्तरायणे,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गणः६८७९

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	रा.मा	प्र.मा	मु.स	ता.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	
१	शु	६	५५	९	५४	ध	२५	१८	१७	१५	वरि	३४	४३	२१	१	बव	६	५५	२७	८	७	८	१७	५९	१५	२२	३०	4	कुम्भ	९	२०	४७	चन्द्रदर्शनमु.१५, गुप्तनवरात्रविधान
२	श	१२	२७	१२	६	शत	३२	७	१९	५८	प	३६	२२	२१	४०	कौ	१२	२७	२७	१०	७	७	१७	५९	१६	२३	१	5	कुम्भ	९	२१	४८	बाबारामदेवबीज., रविउलअवल३, बाबालालदयालजयंती
३	र	१८	३०	१४	३१	पूभा	३९	२५	२२	५३	शि	३८	२३	२२	२८	गर	१८	३०	२७	१३	७	७	१८	०	१७	२४	२	6	मी१६।१	९	२२	४९	भ.२७।४८से,धनि.रविः१७।४०,श्रवणेबुध१७।१८,धनि.भौमA
४	चं	२४	५८	१७	५	उभा	४६	५८	२५	५३	सि	४०	३७	२३	२१	वि	२४	५८	२७	१७	७	६	१८	१	१८	२५	३	7	मीन	९	२३	४९	भ.१७।५तक, तिलचतुर्थी,वरद४, कुन्दपुष्पादिसे देवपूजन,B
५	मं	३१	२२	१९	३९	रे	५४	२०	२८	५०	सा	४२	४२	२४	११	बा	३१	२२	२७	२०	७	६	१८	२	१९	२६	४	8	मे२८।५०	९	२४	५०	वसन्तपंचमी,श्रीसरस्वतीज.,पंचकस.२८।५०,रतिकामोत्सवC
६	बु	३७	२०	२२	१	अ	६०	०	-	-	शुभ	४४	३०	२४	५३	कौ	१	५२	२७	२२	७	५	१८	२	२०	२७	५	9	मेष	९	२५	५१	(वि.मु.अ.),मन्दारषष्ठी,शीतलाद,दारिद्र्यहरणद(बं.),पातD
७	गु	४२	१७	२४	०	अ	१	१०	७	३३	शु	४५	२७	२५	१६	गर	९	४७	२७	२५	७	५	१८	३	२१	२८	६	10	मेष	९	२६	५२	भ.२४।०से,भानुसप्तमी,रथ-आरोग्य-अचला७,पूषायांशुक्रःE
८	शु	४५	५३	२५	२५	भर	६	५३	९	४९	ब्र	४५	२२	२५	१३	वि	१४	५	२७	३०	७	४	१८	४	२२	२९	७	11	वृ१६।१४	९	२७	५३	भ.१२।४२तक,दुर्गाष्टमी,भीष्माष्टमी,उभा.३गुरुः३०।४६
९	श	४७	३८	२६	६	कृ	११	५	११	२९	ऐं	४३	५३	२४	३६	बा	१६	४५	२७	३३	७	३	१८	४	२३	३०	८	12	वृष	९	२८	५३	नर्मदाज.,सर्वोदयदि.(वि.मु.रो.),दीनबन्धुएण्ड्रयूजज.तेजीमन्दीF
१०	र	४७	१७	२५	५७	रो	१३	२५	१२	२४	वै	४०	५०	२३	२२	तै	१७	२७	२७	३८	७	२	१८	५	२४	१	९	13	मि२४।२८	९	२९	५४	कुम्भमेंसूर्य७।४१,संक्रांतिमु.४५,बङ्गवसौरफाल्गुनारम्भ,राधाG
११	चं	४४	५०	२४	५७	मृग	१३	४५	१२	३१	वि	३६	७	२१	२८	व	१६	५	२७	४२	७	१	१८	६	२५	२	१०	14	मिथुन	१०	०	५५	भ.१३।२७से२४।५७तक, जयाएकादशीव्रतसर्वे., भैनी११H
१२	मं	४०	२३	२३	९	आ	१२	०	११	४८	प्री	२९	४८	१८	५५	बव	१२	३८	२७	४७	७	०	१८	७	२६	३	११	15	कर८।४२	१०	१	५५	भीष्मद्वादशी,कुम्भमेंमंगल१६।५०,जया११निम्बार्क,वेणेश्वरK
१३	बु	३४	१०	२०	३९	पुन	८	२०	१०	१९	आ	२२	०	१५	४७	कौ	७	१७	२७	५३	६	५९	१८	८	२७	४	१२	16	कर्क	१०	२	५६	प्रदोषव्रत,बारावफात,ईद-ए-मिलाद,कल्पादि,मे.विराटनगरM
१४	गु	२६	३०	१७	३४	पु	३/५६	७/४०	८/२१	१३/३८	सौ	१३	०	१२	१०	गर	०	२०	२७	५५	६	५८	१८	८	२८	५	१३	17	सिं२१।३८	१०	३	५६	भ.१७।३४से२७।५०तक,अन्वा.,सत्यव्रत,जितेन्द्रस्थयात्राजैनN
१५	शु	१७	४८	१४	५	म	४९	२८	२६	४५	शो	३/५२	२/३०	८/२७	११/५८	बव	१७	४८	२७	५८	६	५८	१८	९	२९	६	१४	18	सिंह	१०	४	५७	इष्टि,माघीपूर्णिमा,गुरुरविदासज.कुम्भमेंबुध१७।३२,सा.P

A ३०।५,स.सि.यो.२२।५३से B बुधास्तःपूर्वस्यां७।१५,(वि.मु.रेवती) C तक्षकपूजा,(वि.मु.रे.)दुर्वासात्रऋषिमे.मथुरा,स.सि.व अ.सि.यो.२८।५०से D स्पर्शः८।३०,मोक्षः१४।३९ E २२।१, मन्वादि,देवनारायणज.,स.सि.यो.७।३३तक F सूचकांक१५८८,रोहिणीव्रत,स.सि.वअ.सि.यो.११।२९से G दामोदरप्राकट्योत्सव H (बं.),धनि.बुधः२०।३७,सेंटवैलंटाइनडे,स.सि.वअ.सि.यो. १२।३१तक K मेलाडूंगरपुर M श्रीमद्भागवतपाठारम्भ N रामचरणस्नेहीज.श्रीललिताज.,स.सि.यो.वअ.सि.यो.८।१३तक P मीनेभानुः२९।५६,वसन्तऋतुप्रा.(वि.मु.मघा),माघकविज,स्नानपूर्ण

माघशु.८शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.११फरवरी

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	०	९	९	११	८	५	८	२
अं.	२७	२४	२६	१७	९	१३	२२	६	६
क.	५३	२६	२८	१६	४६	४१	५९	६	६
वि.	१	२१	१२	३०	२८	२९	२३	४९	४९
गति	६० ४२	७४८ ५	४७ २२	९९ ०	१२ ३९	६१ १	१ ४२	३ ११	३ ११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	धनि. २	भर. ४	धनि. २	श्रव. ३	उभा. २	पूषा. २	हस्त. ४	मूल. २	मृग. ४
नाड़ी	अमृता	चण्डा	अमृता	अमृता	सौम्या	सौम्या	सौम्या	दहना	दहना

॥ फलम् ॥

मास में पांच शुक्रवार श्रेष्ठ हैं- शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥ के अनुसार विश्व में सौहार्दपूर्ण माहौल में शान्ति परिचर्चा होगी। प्रजा वृद्धि के साथ-साथ सुख शान्ति का अनुभव करेगी। मकर में बुध का फल- निशापतेश्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखं दुःखं तथैव च शुभाशुभम्॥ पश्चिम के देश तथा प्रदेशों में आन्तरिक कलह होगा। सीमातिक्रमण क्षोभ का कारण बनेगा। श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, म्यानमार तथा चीन के हालात नाजुक बन सकते हैं। राजनीति में अकल्पित उठापटक के योग बन रहे हैं। **बाजारभाव-** एकम् में चन्द्रदर्शनमु.१५ तेजीकारक है। ता.१३ में सूती कुम्भ संक्रांतिमु.४५ मन्दीकारक है। चालू मार्कीट के रुख में कोई खास परिवर्तन नहीं होगा। भूसुतः कुम्भराशिस्थःसर्वधान्य महर्घता। पक्षान्त में कुम्भ का मंगल अनाजों में तेजी करेगा। मकर संक्रांतिमु.१५ मुहूर्त्ती थी और यह ४५ है- पन्द्रह से पैंतालीस जाय। रतन भाव में अन्न बिकाय॥ के अनुसार अन्नादि के भाव बहुत बढ़ सकते हैं। सट्टा, सर्राफा तथा शेयर बाजार ऊँचे में कटेगा।

कु.ता.१८फरवरी माघशु.१५शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहा
१०	३	१०	९	११	८	५	८	२	रा.
४	२९	१	२९	११	२१	२२	५	५	अं.
५७	५३	५९	७	१६	४१	४५	४४	४४	क.
२१	४७	५०	१३	३३	६	२३	३४	३४	वि.
६० ३०	९०१ ३२	४७ २४	१०५ २	१३ ८	७५ ४१	२ २३	३ ११	३ ११	गति
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	स्थिति
उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
धनि. ४	आश्ले. ४	धनि. ३	धनि. २	उभा. ३	पूषा. ३	हस्त. ४	मूल. २	मृग. ४	नक्षत्रचरण
अमृता	अमृता	अमृता	अमृता	सौम्या	सौम्या	सौम्या	दहना	दहना	नाड़ी

मौसम- बुधास्त ग्रह राशिचारवसात् खराब होगा। मध्य क्षेत्र में मेघगर्जन, विद्युत्पात, तीव्रवायुवेग के साथ वर्षा होगी। किंवा तुषारपात, ओला पड़ने से खड़ी फसलों में क्षति होगी। माघ मँह बादर लाल धरै। तब सच जानो पथरा परै। **ग्रहदर्शन-** मंगल बुध अदृश्य रहेंगे। सायं पश्चिमनत् गुरु दृश्य रहेगा। प्रातः पूर्व में शुक्र तो पश्चिम में शनि को देखा जा सकेगा।

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४ — ता.१९ फर.से ४ मार्च सन् २०११ ई.तक।

वसन्तऋतु,रविउत्तरायणे,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गण:६८९४

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में हैं।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.मा	प्र.फा	मु.रउ	ई.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः५/३० रा.	अं.	क.	
१	श	८	३५	१०	२३	पूफा	४२	२	२३	४६	सु	४१	४७	२३	४०	कौ	८	३५	२८	०	६	५७	१८	९	३०	७	१५	19	कर२१।३	१०	५	५७	शतभिषायां रविः२२।१३, (वि.मु.उफा.)
२	श	५९	१५	३०	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	द्वितीयाक्षयः
३	र	५०	२०	२७	४	उफा	३४	५३	२०	५३	घृ	३१	१८	१९	२७	व	२४	४८	२८	५	६	५६	१८	१०	१	८	१६	20	कन्या	१०	६	५८	भ.१६।५१से२७।४तक, रा.फाल्गुनारंभ, (वि.मु.उफा.),स.A
४	चं	४२	१५	२३	४९	ह	२८	२२	१८	१६	शूल	२१	२२	१५	२८	बव	१६	१७	२८	१०	६	५५	१८	११	२	९	१७	21	तुर१।११	१०	७	५८	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय२१।४७, ईद-ए-मौलाद, (वि.मु.चित्रा)
५	मं	३५	२३	२१	३	चि	२३	०	१६	६	गंड	१२	१७	११	४९	कौ	८	५०	२८	१३	६	५४	१८	११	३	१०	१८	22	तुला	१०	८	५९	शतेबुधः११।२८, उषायांशुक्रः९।५७, (वि.मु.चित्रा), भागवतB
६	बु	३०	०	१८	५३	स्वा	१९	३	१४	३०	वृ	४/५७	२३/४२	८/२१	३८/५८	गर	२	४२	२८	१७	६	५३	१८	१२	४	११	१९	23	तुला	१०	९	५९	भ.१८।५३से३०।९तक, शतेभौमः:२७।२२, उर्समेलाहजरतC
७	गु	२६	२०	१७	२४	वि	१६	४७	१३	३५	व्या	५२	३०	२७	५२	बव	२६	२०	२८	२२	६	५२	१८	१३	५	१२	२०	24	वृ७।४९	१०	११	०	मकरमेंशुक्र३०।११, श्रीनाथजीपाटोत्सवः, (वि.मु.अनु.)D
८	शु	२४	२८	१६	३८	अनु	१६	१५	१३	२१	ह	४८	४३	२६	२०	कौ	२४	२८	२८	२५	६	५१	१८	१३	६	१३	२१	25	वृश्चिक	१०	१२	०	अष्टकाश्राद्ध,जानकीव्रत,चन्द्रशेखरपुण्यः,स.सि.यो.१३।२१तक
९	श	२४	२२	१६	३५	ज्ये	१७	२८	१३	४९	वज्र	४६	१५	२५	२०	गर	२४	२२	२८	३०	६	५०	१८	१४	७	१४	२२	26	ध१३।४९	१०	१३	०	भ.२८।५३से, गुरुरामदासनवमी
१०	र	२५	५०	१७	१०	मू	२०	१२	१४	५५	सि	४४	५५	२४	४८	वि	२५	५०	२८	३०	६	५०	१८	१४	८	१५	२३	27	धनु	१०	१४	१	भ.१७।१०तक, उभा.४गुरुः११।२, महर्षिदयानन्दज.,स.सि.E
११	चं	२८	४०	१८	१७	पूषा	२४	२०	१६	३३	व्य	४४	३८	२४	४०	बा	२८	४०	२८	३५	६	४९	१८	१५	९	१६	२४	28	मर३।४	१०	१५	१	विजयाएकादशीव्रत(सबका),रा.विज्ञानदिवस,राजेन्द्रप्रसादF
१२	मं	३२	३७	१९	५१	उषा	२९	३३	१८	३७	वरि	४५	७	२४	५१	कौ	०	४०	२८	४०	६	४८	१८	१६	१०	१७	२५	1	मकर	१०	१६	१	पूभायांबुधः१५।३६, मार्चमास३ता.३१, (वि.मु.श्रवण)
१३	बु	३७	२८	२१	४६	श्र	३५	३२	२१	०	परि	४६	१२	२५	१६	गर	५	२	२८	४५	६	४७	१८	१७	११	१८	२६	2	मकर	१०	१७	१	भ.२१।४६से, प्रदोषव्रत, महाशिवरात्रिव्रत, रूद्राभिषेकH
१४	गु	४२	५३	२३	५५	ध	४२	१०	२३	३८	शि	४७	४५	२५	५२	वि	१०	१०	२८	४७	६	४६	१८	१७	१२	१९	२७	3	कु२०।१९	१०	१८	२	भ.१०।५०तक, पंचकप्रारम्भ१०।१९, मेलाराठौड़ारामपुर
३०	शु	४८	४५	२६	१५	शत	४९	१३	२६	२६	सि	४९	३७	२६	३६	च	१५	५०	२८	५२	६	४५	१८	१८	१३	२०	२८	4	कुम्भ	१०	१९	२	अन्वा., देवपितृकार्येऽमा, पूभायांरविः२८।३०, मन्वादिः,K

A सि.यो., अ.सि.यो.२०।५३से — B भवनप्रतिष्ठादिवस मथुरा — C निजामुद्दीन,महाकालेश्वरपूजनारम्भः — D स.सि.यो.१३।३५से

E यो.१४।५५तक — F पुण्यतिथि — H ज्योतिर्लिङ्गपूजा, ऋषिबोधोत्सवः, वैद्यनाथजयंती — K शिवखप्परपूजा

फाल्गु.कृ.८शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कृ.ता.२५फरवरी

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	७	१०	१०	११	८	५	८	२
अं.	१२	१२	७	११	१२	२९	२२	५	५
क.	०	१७	३१	४१	४९	५७	२६	२२	२२
वि.	२५	१२	३४	४४	४३	५३	५०	१९	१९
गति	६०	७११	४७	१११	१३	७०	३	३	३
	२१	५९	२३	२४	३२	२९	१	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	शत. २	अनु. ३	शत. १	शत. २	उभा. ३	उषा. १	हस्त ४	मूल. २	मृग. ४
नाड़ी	जला	खण्डा	जला	जला	सौम्या	नीरा	सौम्या	दहना	दहना

गु.१२ | १० | ११ सू. मं. बु. | शु.९ रा. | १ | २ | ८ चं. | ३ के. | ५ | ७ | ४ | श.६

॥ फलम् ॥

फाल्गुन चैत्र में गुरु अतिचारी, वक्री शनि अतिनेष्ट है- अतिचार गते जीवे वक्री भूते शनैश्चरे। हा! हा!! भूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले॥ अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में युद्धमय व्याप्त रहेगा। भयातंक से दुःखित जनता भागती फिरेगी। किन्हीं देशों में रुण्ड-मुण्ड लुढ़कते नजर आयेंगे। अमेरिका, ग्रीनलैण्ड, आईसलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड आदि में भूकम्प, दिग्दाह, आंधी-तूफान की आशंका जाननी चाहिए। कश्मीर समस्या सिर चढ़कर बोलेगी। युद्ध के काले बादल मंढ़राने लगें तो आश्चर्य नहीं। एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥ महाशिवरात्रि के आसन्न दिनों में चौकसी बरतनी चाहिए। बाजारभाव- तिथियों की घटा-बढ़ी का फल- कृष्ण पक्ष की तिथि घटे, शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥ अच्छा होने से पदार्थों की वृद्धि होगी। भाव पड़े रहेंगे। मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाशकृत्। जायतेऽत्र महार्घाणि नात्र कार्या विचारणा। मकर का शुक्र खड़ी फसलों में क्षति करेगा, तब तो बाजार का रुख गर्म होगा। मेवा, मिष्ठान्न, वस्त्र, भवननिर्माण तथा श्रृंगार की वस्तुएं तेज होंगी। सर्राफा, शेयरों में उठा-पटक चलेगी। मौसम- कभी आकाश स्वच्छ तो कभी बादलों से घिरा रहेगा। यत्र-तत्र हल्की वर्षा होगी। पथरा पड़ने से ठंड बढ़ेगी। कोहरा छाने से यातायात में बाधा पड़ेगी। ग्रहदर्शन- सायंकाल पश्चिम में गुरु दृश्य रहेगा। प्रातः पूर्व में शुक्र तो पश्चिम में शनि देखा जा सकेगा।

कृ.ता.४ मार्च फाल्गुनकृ.३०शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

गु.१२ | शु.१० | सू. मं.११चं. बु. | ९ रा. | १ | २ | ८ | ३ के. | ५ | ७ | ४ | ६श.

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१०	१०	१०	११	९	५	८	२
अं.	१९	९	१३	२४	१४	८	२२	५	५
क.	२	३४	३	५७	२५	१२	४	०	०
वि.	२१	३०	११	०	३१	५१	१२	३	३
गति	६०	७१५	४७	११५	१३	७०	३	३	३
	१०	४२	२१	४२	५२	५९	३३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	शत. ४	शत. १	शत. २	पूभा. २	उभा. ४	उषा. ४	हस्त ४	मूल. २	मृग. ४
नाड़ी	जला	जला	जला	नीरा	सौम्या	नीरा	सौम्या	दहना	दहना

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ फाल्गुन शुक्लपक्ष २५ — ता. ५ से १९ मार्च सन् २०११ ई. तक।

वसन्तऋतु,रविउत्तरायणे,दक्षिणगोले। केतकीअहर्गणः६९०८

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टैं.टा.घं.मि.में हैं।

तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल
१	श	५५	०	२८	४३	पूभा	५६	३५	२९	२१	सा	५१	४५	२७	२५	कि	२१	५५
२	र	६०	०	–	–	उभा	६०	०	–	–	शुभ	५४	०	२८	१८	बा	२८	१०
२	चं	१	२३	७	१४	उभा	४	८	८	२०	शु	५६	१३	२९	१०	कौ	१	२३
३	मं	७	४०	९	४४	रे	११	३३	११	१७	ब्र	५८	१२	२९	५७	गर	७	४०
४	बु	१३	३७	१२	६	अ	१८	४०	१४	७	ऐं	५९	५०	३०	३५	वि	१३	३७
५	गु	१८	५५	१४	१२	भर	२५	७	१६	४१	वै	६०	०	–	–	बा	१८	५५
६	शु	२३	८	१५	५२	कृ	३०	३२	१८	५०	वै	०	४५	६	५५	तै	२३	८
७	श	२५	५५	१६	५८	रो	३४	२८	२०	२३	वि	०/५९	३७/१०	६/३०	५३/१६	व	२५	५५
८	र	२६	५०	१७	१९	मृग	३६	३७	२१	१४	आ	५६	१८	२९	६	बव	२६	५०
९	चं	२५	४५	१६	५२	आ	३६	४८	२१	१७	सौ	५१	४५	२७	१६	कौ	२५	४५
१०	मं	२२	३३	१५	३४	पुन	३४	५५	२०	३१	शो	४५	३३	२४	४६	गर	२२	३३
११	बु	१७	२२	१३	२९	पु	३१	८	१८	५९	अति	३७	५०	२१	४०	वि	१७	२२
१२	गु	१०	२७	१०	४२	श्ले	२५	३७	१६	४६	सु	२८	४७	१८	२	बा	१०	२७
१३	शु	२	८	७	२१	म	१८	५२	१४	३	धृ	१८	४३	१३	५९	तै	२	८
१४	शु	५२	४५	२७	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	श	४२	५५	२३	३९	पूफा	११	१७	११	०	शूल	७/५६	५५/४७	९/२९	३९/१२	वि	१७	५०

तिथि	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा. फा	प्र. फा	मु. रउ	तारीख मार्च	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५/३०) रा.	अं.	क.	विवरण
१	२८	५८	६	४३	१८	१८	१४	२१	२९	5	मी२२।३७	१०	२०	२	इष्टिः, श्रवणेशुक्रः१७।४२, ऐशवेशडे
२	२९	३	६	४२	१८	१९	१५	२२	३०	6	मीन	१०	२१	२	चन्द्रदर्शनमु.४५,फुलैरादूज,मीनमेंबुध२०।१९,(वि.मु.उभा)A
२	२९	७	६	४१	१८	२०	१६	२३	१	7	मीन	१०	२२	२	रविउस्सानी४, (वि.मु.रेवती)
३	२९	१०	६	४०	१८	२०	१७	२४	२	8	मे११।१७	१०	२३	२	भ.२२।५५से,पंचकस.११।१७,उभायांबुधः१३।५७,(वि.मु.B
४	२९	१२	६	३९	१८	२१	१८	२५	३	9	मेष	१०	२४	२	भ.१२।६तक, अविघ्नकरव्रत
५	२९	१८	६	३८	१८	२१	१९	२६	४	10	वृ२३।१३	१०	२५	२	C अष्टाह्निकाप्रा.,रोहिणीव्रत,स.सि.वअ.सि.यो.२०।२३तक
६	२९	२२	६	३७	१८	२२	२०	२७	५	11	वृष	१०	२६	२	बुधोदयःपश्चिमायां२०।३३, (वि.मु.रोहिणी)
७	२९	२५	६	३६	१८	२२	२१	२८	६	12	वृष	१०	२७	२	भ.१६।५८से२९।९तक,पूभायांभौमः२४।५९,(वि.मु.रोहि.)C
८	२९	३०	६	३५	१८	२३	२२	२९	७	13	मि८।४८	१०	२८	२	सन्तदादूदयालज., रेव.१गुरुः१९।४७, होलाष्टकप्रारम्भः
९	२९	३२	६	३४	१८	२३	२३	१	८	14	मिथुन	१०	२९	२	मीनमेंसूर्य२८।३२,संक्रांतिमु.४५,वङ्गवसौरचैत्रारम्भः,मीनखरD
१०	२९	३८	६	३३	१८	२४	२४	२	९	15	क२४।४३	११	०	२	भ.२६।३२से,रेवत्यांबुधः२२।२६,तेजीमन्दीसूचकांक२०८९E
११	२९	४०	६	३२	१८	२४	२५	३	१०	16	कर्क	११	१	२	भ.१३।२९तक,आमलाएकादशीव्रत(सबका),धनि.शुक्रःF
१२	२९	४५	६	३१	१८	२५	२६	४	११	17	सिं१६।०६	११	२	१	गोविन्दद्वादशी,प्रदोषव्रत,ग्यारहवींशरीफ,विश्वविकलांगदिवस
१३	२९	४७	६	३०	१८	२५	२७	५	१२	18	सिंह	११	३	१	भ.२७।३६से, उभायांरविः१२।५५, मुनिनाथूलालपुण्यः
१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	चतुर्दशीक्षयः E लट्ठमारहोली नन्दगांव
१५	२९	५३	६	२९	१८	२६	२८	६	१३	19	क२६।२२	११	४	१	भ.१३।३७तक,अन्वा.सत्यव्रतपूर्णिमा,होलिकादहन,नवान्नेष्टिG

A श्रीरामकृष्णपरमहंसज.,पातस्पर्शः१४।१२,मोक्षः१९।४४,स.सि.योग B अश्वि.),विश्वमहिलादिवस,पं.लेखरामवीरतृतीया,स.सि.यो.व अ.सि.यो.११।१७से D मासप्रा.,लट्ठमारहोली बरसाना F २२।५२,मे.खाटूश्याम,लट्ठमारहोलीमथुरा,रामचरणस्नेहीफूलडोलमे.शाहपुरामेवाड़ G दारुणरात्रिहुताशनी,चैतन्यमहाप्रभुजयंती,अष्टाह्निकास.,वायुपरीक्षा,मन्वादि,ज्वालानिष्कासनफालेनगांवमें

फाल्गुनशु.८रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१३मार्च

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१	१०	११	११	९	५	८	२
अं.	२८	२८	२०	१३	१६	१८	२१	४	४
क.	२	९	८	०	३१	५३	३०	३१	३१
वि.	३९	३१	५४	१६	४२	४४	१	२६	२६
गति	५९	७८१	४७	१०६	१४	७१	४	३	३
	५२	२०	१४	११	११	२८	६	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नाड़ी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ फलम् ॥

मास में पांच शनिवार नेष्ट हैं- शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भग्न.श्च वह्निदाहो महार्घता:॥ देश के पूर्वोत्तर सम्भागों में स्थिति चिन्ताजनक बनेगी। प्रादेशिक सरकार महानगर में क्षति सम्भव है। युद्धाग्नि भय व्याप्त रहेगा। उत्तरोत्तर महंगाई बढ़ेगी। अमेरिका गणराज्य, ग्रीनलैण्ड, आईसलैण्ड, मोरक्को, स्पेन, फ्रांस, ब्रिटेन, स्वीडन आदि देशों में प्राकृतिक महोत्पात की आशंका जाननी चाहिए। बाजारभाव- चन्द्रदर्शन मु.४५ मीन की सूती संक्रांतिमु.४५ तिथियों की घटा-बढ़ी महंगाई कम होने का संकेत है। मीन राशि गते भानौ सर्वधान्य महर्घता। लवणं तिल तैलं च महर्घं सम जायते॥ त्रिग्रही योग शनि से दृष्ट होने पर सभी अनाज, नमक, तिल, तेल में तेजी करता है। धातुएं, मैटीरियल, रंग-रोगन, घी, दूध, फल, फूल, हरी सब्जियाँ, पेयपदार्थ, खेलखिलौने, शेयर, सट्टा के भाव बढ़ सकते हैं। मौसम- बुधोदय का फल- नोत्पात परित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजोवज्रत्युदयम्। जलदहन पवनभय कृद्धान्यर्घ क्षयः विवृद्धयैर्वा॥ आंधी-तूफान, भारी मेघगर्जन, विद्युत्पात के साथ वर्षा होगी। बर्फ गिरने, ओले पड़ने से खेती में नुकसान होगा। होलिकापूजन- भद्रा का मुखकाल छोड़कर घं.१२ मि.४६ बजे के बाद करें। होलिकादहन- १९ मार्च शनिवार की रात्रि में प्रदोष के समय घं.२० मि.२० बजे के पश्चात् कभी भी कर सकते हैं। ग्रहदर्शन- सूर्योदय से पहले पूर्व में शुक्र तो पश्चिम में शनि को देखें। सायं पश्चिनत् गुरु दृश्य रहेगा। ता.११ में बुध उदय होगा।

कु.ता.१९मार्च फाल्गुनशु.१५शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	४	१०	११	११	९	५	८	२
अं.	४	२३	२४	२१	१७	२६	२१	४	४
क.	१	८	५१	४१	५७	३	४	१२	१२
वि.	१५	४	५८	५८	१३	११	४४	२२	२२
गति	५९	९२२	४७	८०	१४	११	४	३	३
	३८	५७	६	३९	२०	४४	२२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नाड़ी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीसम्वत् २०६७ शाके १९३२ चैत्र कृष्ण पक्ष २६																			दिनमान		स्टैण्डर्डटाइम सूर्योदयास्त				तारीखें				चन्द्र संचार	दैनिक रवि स्पष्ट			ता.२० मार्च से ३ अप्रैल सन् २०११ ई.तक। वसन्तऋतु,रविउत्तरायणे,उत्तरगोले। केतकीअहर्गण:६९२३
तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा. फा	प्र. चै.	मु. रउ	ग्रे.	स्टैं.टा. रा.घं.मि	प्रात:५/३० रा.	अं.	क.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है।
१	र	३३	५	१९	४२	उफा	३/५५	२२/३५	७/२८	४१/४२	वृ	४५	५०	२४	४८	बा	८	०	२९	५५	६	२८	१८	२६	२९	७	१४	20	कन्या	११	५	०	इष्टि:, वसन्तोत्सव१, छारेंडी,धूलिवदनं, अभ्यङ्गस्नानं, आम्रA
२	चं	२३	४२	१५	५६	चि	४८	३२	२५	५२	ध्रु	३५	२०	२०	३५	गर	२३	४२	३०	०	६	२७	१८	२७	३०	८	१५	21	तु१५।१७	११	६	०	भ.२६।१४से, श्रीरङ्ग.जीरथोत्सववृन्दावन, सन्ततुकारामज.B
३	मं	१५	१८	१२	३२	स्वा	४२	४०	२३	२९	व्या	२५	४५	१६	४३	वि	१५	१८	३०	५	६	२५	१८	२७	१	९	१६	22	तुला	११	७	०	भ..१२।३२तक,चतुर्थीव्रत,चन्द्रोदय२१।४०,कुम्भमेंशुक्रC
४	बु	८	१५	९	४२	वि	३८	२०	२१	४४	ह	१७	२०	१३	२०	बा	८	१५	३०	१०	६	२४	१८	२८	२	१०	१७	23	वृ१६।१०	११	७	५९	शहीददिवस,भक्तमीराबाईज.,स.सि.यो.व अ.सि.यो.२१।४४से
५	गु	२	५३	७	३२	अनु	३५	५०	२०	४३	वज्र	१०	२०	१०	३१	तै	२	५३	३०	१२	६	२३	१८	२८	३	११	१८	24	वृश्चिक	११	८	५९	भ.३०।९से, रंगपंचमी, भण्डाराछटीकरा, एकनाथषष्ठी
६	गु	५९	२५	३०	९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	षष्ठीक्षय: C १२।४१,रा.चैत्रारम्भ,कल्पादि,जलसंसाधनदि.
७	शु	५८	२	२९	३५	ज्ये	३५	२०	२०	३०	सि	४	५५	८	२०	वि	२८	४५	३०	१७	६	२२	१८	२९	४	१२	१९	25	ध२०।३०	११	९	५८	भ.१७।५२तक,शीतलापूजन(बासोडा),मीनमेंमंगल१८।३८D
८	श	५८	४३	२९	५०	मू	३६	५३	२१	६	व्य	३/५८	१०/५५	६/२१	४१/५५	बा	२८	२३	३०	२०	६	२१	१८	२९	५	१३	२०	26	धनु	११	१०	५८	शीतलाष्टमी,कालाष्टमी,अष्टकाश्राद्ध,रङ्ग.जीरथोत्सव:,ऋषभE
९	र	६०	०	-	-	पूषा	४०	१२	२२	२५	परि	५८	७	२९	३५	तै	२९	५५	३०	२५	६	२०	१८	३०	६	१४	२१	27	मर८।५४	११	११	५७	गुरुपश्चिमास्त:२२।१५,रेव.२गुरु:१७।५९,शते.शुक्र:२६।७F
९	चं	१	१०	६	४७	उषा	४५	५	२४	२१	शि	५८	३०	२९	४३	गर	१	१०	३०	२८	६	१९	१८	३०	७	१५	२२	28	मकर	११	१२	५६	भ.१९।३४से,अश्वि.मेषमेंबुध१९।३६,स.सि.यो.२४।२१से
१०	मं	५	७	८	२१	श्र	५१	१०	२६	४६	सि	५९	४२	३०	११	वि	५	७	३०	३३	६	१८	१८	३१	८	१६	२३	29	मकर	११	१३	५६	भ.८।२१तक,दशमाताव्रत,उभायांभौम:२४।५५ गुरुअस्त
११	बु	१०	१०	१०	२१	ध	५८	३	२९	३०	सा	६०	०	-	-	बा	१०	१०	३०	३७	६	१७	१८	३२	९	१७	२४	30	कु१६।८	११	१४	५५	पंचकप्रा.१६।८, पापमोचनीएकादशीव्रत(सबका)
१२	गु	१५	५८	१२	३८	शत	६०	०	-	-	सा	१	३७	६	५४	तै	१५	५८	३०	४२	६	१५	१८	३२	१०	१८	२५	31	कुम्भ	११	१५	५४	प्रदोषव्रत, रेवत्यांरवि:२३।४५, वक्रीबुध:६।२२
१३	शु	२२	७	१५	५	शत	५	२८	८	२५	शुभ	३	४८	७	४५	व	२२	७	३०	४५	६	१४	१८	३२	११	१९	२६	1	मी२८।३९	११	१६	५४	भ.१५।५से२८।२०तक,अप्रैल४ता.३०,रंगतेरस,वारुणीपर्वG
१४	श	२८	२२	१७	३४	पूभा	१२	५५	११	२३	शु	६	५	८	३९	श	२८	२२	३०	४८	६	१३	१८	३२	१२	२०	२७	2	मीन	११	१७	५३	व.रेवत्यां मीनमेंबुध१०।१२, वक्रीहस्त३शनि:१०।३९
३०	र	३४	३५	२०	२	उभा	२०	२२	१४	२१	ब्र	८	२३	९	३३	च	१	३	३०	५३	६	१२	१८	३३	१३	२१	२८	3	मीन	११	१८	५२	अन्वा.स्नानादिदेवपितृकार्येऽमा,सम्वत्समाप्त,मन्वादि,श्रीरस्तुH

A कुसुमप्राशनं,गणगौरपूजनारंभ:,सा.मेषेभानु:२८।५२,होलामे.आनन्दपुर(पं),पंखामे.झज्झर,स.सि.यो.२८।४२तक,अ.सि.यो.७।४९से२८।४२तक B वसन्तसम्पात,महाविषुवदिन,सूर्यकाउत्तरगोलमें प्रवेश,दिनरातबराबर, D मे.नाहरपुर एटा E देवज.केसरियामे.मेवाड़,मे.केलादेवीकरौली F नौचन्दीमे.मेरठप्रा.,स.सि.यो.२२।२५से G ८।२५तक,बुधास्त:पश्चि.२४।२३ H स.सि.यो.१४।२१तक

चैत्रकृ.८शनौ प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२६मार्च

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	८	११	११	११	१०	५	८	२
अं.	१०	४	०	२८	१९	४	२०	३	३
क.	५८	५४	२१	५१	३७	२६	३३	५०	५०
वि.	४	३३	१५	१६	५६	१०	२९	७	७
गति	५९ २६	७७३ २९	४६ ५८	३२ ५१	१४ २७	७२ १	४ ३५	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचरण	उभा.३	मूल२	पूभा.४	रेव.४	रेव.१	धनि.४	हस्त४	मूल२	मृग.४
नाड़ी	सौम्या	दहना	नीरा	दहना	दहना	अमृता	सौम्या	दहना	दहना

१ | सू. मं.१२ बु. गु | शु.११
२ | १०
३ के. | ९ चं. रा.
४ | ६ श. | ८
५ | ७

॥ फलम् ॥

मीन में चार-पांच ग्रह नेष्ट हैं- एक राशौ यदा यान्ति चत्वार:पंचखेचरा:। प्लावयन्ति महीसर्वांरुधिरेण जलेन वा॥ अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनावपूर्ण बनेगी। पश्चिम के देशों में युद्धभय, प्राकृतिक उत्पात, आतंकी कुकृत्य जानलेवा सिद्धि होंगे। रक्तरंजित धरा अकुलायेगी। चैत्र में पांच रविवार किसी राष्ट्र अथवा राजा के लिए नेष्ट होते हैं- चैत्रे वा श्रावणे मासि यदा पंचाऽर्क:भौमवासरा:। राजानष्टश्च क्षयं यान्ति मन्दा दुर्भिक्षकारका:॥ कश्मीर समस्या का समाधान सम्भव नहीं। खाड़ी के देशों में युद्धोत्पाती षड्यन्त्र रचा जायेगा। बारूद के ढ़ेर पर खड़ा जगत् कंपायमान होगा।

कु.ता.३अप्रैल चैत्रकृ.३०रवि प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

१ | सू. बु.१२ गु. चं. मं. | शु.११
२ | १०
३ के. | ९ रा.
४ | ६ श. | ८
५ | ७

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	११	११	११	१०	५	८	२
अं.	१८	१२	६	२९	२१	१४	१९	३	३
क.	५२	१६	३६	४६	३३	३	५६	२४	२४
वि.	३८	१२	११	६	५१	९	२५	४०	४०
गति	५९ ११	७१३ १२	४६ ४४	२४ ११	१४ ३१	७२ १४	४ ४०	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. अ.	मा. अ.	व. अ.	मा. अ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचरण	रेव.१	उभा.३	उभा.१	रेव.४	रेव.२	शत.३	हस्त३	मूल२	मृग.४
नाड़ी	दहना	सौम्या	सौम्या	दहना	दहना	नीरा	सौम्या	दहना	दहना

बाजारभाव- तिथि घटा-बढ़ी का फल- जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकें, महंगाई हट जाय॥ भाव पड़े रहेंगे। पक्ष के उत्तरार्ध में मेष का बुध चौपाये पशु, वाहन, मशीनरी, स्टेशनरी, मैटेरियल, पेयपदार्थ, फल-फूल, सब्जियों के भावों में इजाफा करेगा। सोने में समता बनाए रखेगा। यदा सौम्य: स्थितौ मेषे महर्घं च चतुष्पदाम्। सुवर्णं समतां याति नात्र कार्या विचारणा॥ शेयरों में अनिश्चितता रहेगी। मौसम- गुरु-बुध अस्त, ग्रहराशिचार, गतिपरिवर्तनवसात् धामाचौकड़ी सी चलेगी। मेघगर्जन, वायुवेग के साथ जहाँ-तहाँ उपलवृष्टि क्षति का कारण बनेगी। ग्रहदर्शन- मंगल अस्त है। ता.२७ में गुरु, ता.१में बुध अस्त हो जायेगा। प्रात:पूर्व में शुक्र को पश्चिम में शनि दृश्य रहेगा। कौशिक कर गहि लेखनी, सुमिरि सारदा माय। सम्वत यह पूरन भयो, श्री राधाकृष्ण सहाय॥ २४-५-२००९

जनवरी मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	८।५	९।४९	११।२८	१२।४५	१४।२२	१६।१९	१८।३३	२०।५१	२३।१९	१।२५	३।४४	६।१
२	८।१	९।४५	११।२४	१२।४१	१४।१८	१६।१५	१८।२९	२०।४७	२३।१५	१।२१	३।४०	५।५७
३	७।५७	९।४१	११।२०	१२।३७	१४।१४	१६।११	१८।२५	२०।४३	२३।११	१।१७	३।३६	५।५३
४	७।५३	९।३७	११।१६	१२।३३	१४।१०	१६।७	१८।२१	२०।३९	२२।५७	१।१३	३।३२	५।४९
५	७।४९	९।३३	११।१२	१२।२९	१४।६	१६।३	१८।१७	२०।३५	२२।५३	१।९	३।२८	५।४५
६	७।४६	९।३०	१०।५९	१२।२६	१४।३	१६।०	१८।१४	२०।३२	२२।५०	१।६	३।२५	५।४२
७	७।४२	९।२६	१०।५५	१२।२२	१३।५९	१५।५६	१८।१०	२०।२८	२२।४६	१।२	३।२१	५।३८
८	७।३८	९।२२	१०।५१	१२।१८	१३।५५	१५।५२	१८।६	२०।२४	२२।४२	०।५८	३।१७	५।३४
९	७।३४	९।१८	१०।४७	१२।१४	१३।५१	१५।४८	१८।२	२०।२०	२२।३८	०।५४	३।१३	५।३०
१०	७।३०	९।१४	१०।४३	१२।१०	१३।४७	१५।४४	१७।५८	२०।१६	२२।३४	०।५०	३।९	५।२६
११	७।२६	९।१०	१०।३९	१२।६	१३।४३	१५।४०	१७।५४	२०।१२	२२।३०	०।४६	३।५	५।२२
१२	७।२२	९।६	१०।३५	१२।२	१३।३९	१५।३६	१७।५०	२०।८	२२।२६	०।४२	३।१	५।१८
१३	७।१८	९।२	१०।३१	११।५८	१३।३५	१५।३२	१७।४६	२०।४	२२।२२	०।३८	२।५७	५।१४
१४	७।१४	८।५८	१०।२७	११।५४	१३।३१	१५।२८	१७।४२	२०।०	२२।१८	०।३४	२।५३	५।१०
१५	७।१०	८।५४	१०।२३	११।५०	१३।२७	१५।२४	१७।३८	१९।५६	२२।१४	०।३०	२।४९	५।६
१६	७।६	८।५०	१०।१९	११।४६	१३।२३	१५।२०	१७।३४	१९।५२	२२।१०	०।२६	२।४५	५।२
१७	७।२	८।४६	१०।१५	११।४२	१३।१९	१५।१६	१७।३०	१९।४८	२२।६	०।२२	२।४१	४।५८
१८	६।५९	८।४३	१०।१२	११।३९	१३।१६	१५।१३	१७।२७	१९।४५	२२।३	०।१९	२।३८	४।५५
१९	६।५५	८।३९	१०।८	११।३५	१३।१२	१५।९	१७।२३	१९।४१	२१।५९	०।१५	२।३४	४।५१
२०	६।५१	८।३५	१०।४	११।३१	१३।८	१५।५	१७।१९	१९।३७	२१।५५	०।११	२।३०	४।४७
२१	६।४७	८।३१	१०।०	११।२७	१३।४	१५।१	१७।१५	१९।३३	२१।५१	०।७	२।२६	४।४३
२२	६।४३	८।२७	९।५६	११।२३	१३।०	१४।५७	१७।११	१९।२९	२१।४७	०।३	२।२२	४।३९
२३	६।३९	८।२३	९।५२	११।१९	१२।५६	१४।५३	१७।७	१९।२५	२१।४३	२३।५९	२।१८	४।३५
२४	६।३५	८।१९	९।४८	११।१५	१२।५२	१४।४९	१७।३	१९।२१	२१।३९	२३।५५	२।१४	४।३१
२५	६।३१	८।१५	९।४४	११।११	१२।४८	१४।४५	१६।५९	१९।१७	२१।३५	२३।५१	२।१०	४।२७
२६	६।२७	८।११	९।४०	११।७	१२।४४	१४।४१	१६।५५	१९।१३	२१।३१	२३।४७	२।६	४।२३
२७	६।२३	८।७	९।३६	११।३	१२।४०	१४।३७	१६।५१	१९।९	२१।२७	२३।४३	२।२	४।१९
२८	६।२०	८।४	९।३३	११।०	१२।३७	१४।३४	१६।४८	१९।६	२१।२४	२३।४०	१।५९	४।१६
२९	६।१६	८।०	९।२९	१०।५६	१२।३३	१४।३०	१६।४४	१९।२	२१।२०	२३।३६	१।५५	४।१२
३०	६।१२	७।५६	९।२५	१०।५२	१२।२९	१४।२६	१६।४०	१८।५८	२१।१६	२३।३२	१।५१	४।८
३१	६।८	७।५२	९।२१	१०।४८	१२।२५	१४।२२	१६।३६	१८।५४	२१।१२	२३।२८	१।४७	४।४

दैनिक लग्न देखने की विधि:- जिस लग्नके नीचे जिस तारीख के सामने घं.मि. में जो समय लिखा हुआ है वह उस तारीख में उस लग्न का आरम्भ काल है। उसी समयको गत लग्नका समाप्तिकाल समझना चाहिए। जैसे- १ जनवरी को मकर लग्न के नीचे ८ घं. ५ मि. लिखा है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि प्रातः ८ बजकर ५ मिनट पर मकर लग्न शुरु हुई है। उसी समय मकर से पहली धनु लग्न समाप्त हो गई और देखिये १ जनवरी को वृष लग्नके नीचे १४ घं. २२ मि. लिखा है। अतः इससे यह सिद्ध हुआ कि दिन के २ बजकर २२ मिनट से वृष लग्न प्रारम्भ होगी। उसी समय मेष लग्न समाप्त हो जायेगी।

फरवरी मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।४७	९।१६	१०।४३	१२।२०	१४।१७	१६।३१	१८।४९	२१।७	२३।२३	१।४२	३।५९	६।३
२	७।४३	९।१२	१०।३९	१२।१६	१४।१३	१६।२७	१८।४५	२१।३	२३।२०	१।३७	३।५५	५।५९
३	७।३९	९।८	१०।३५	१२।१२	१४।९	१६।२३	१८।४१	२०।५९	२३।१७	१।३३	३।५१	५।५५
४	७।३५	९।४	१०।३१	१२।८	१४।५	१६।१९	१८।३७	२०।५५	२३।१३	१।२९	३।४७	५।५१
५	७।३१	९।०	१०।२७	१२।४	१४।१	१६।१५	१८।३३	२०।५१	२३।९	१।२५	३।४३	५।४७
६	७।२७	८।५६	१०।२३	१२।०	१३।५७	१६।११	१८।२९	२०।४७	२३।५	१।२१	३।३९	५।४३
७	७।२३	८।५२	१०।१९	११।५६	१३।५३	१६।७	१८।२५	२०।४३	२३।१	१।१७	३।३५	५।३९
८	७।१९	८।४८	१०।१५	११।५२	१३।४९	१६।३	१८।२१	२०।३९	२२।५७	१।१३	३।३१	५।३५
९	७।१५	८।४४	१०।११	११।४८	१३।४५	१५।५९	१८।१७	२०।३५	२२।५३	१।९	३।२७	५।३१
१०	७।११	८।४०	१०।७	११।४४	१३।४१	१५।५५	१८।१३	२०।३१	२२।४९	१।५	३।२३	५।२७
११	७।७	८।३६	१०।३	११।४०	१३।३७	१५।५१	१८।९	२०।२७	२२।४५	१।१	३।१९	५।२३
१२	७।३	८।३२	९।५९	११।३६	१३।३३	१५।४७	१८।५	२०।२३	२२।४१	०।५७	३।१५	५।१९
१३	६।५९	८।२८	९।५५	११।३२	१३।२९	१५।४३	१८।१	२०।१९	२२।३७	०।५३	३।११	५।१५
१४	६।५५	८।२४	९।५१	११।२८	१३।२५	१५।३९	१७।५७	२०।१५	२२।३३	०।५०	३।७	५।११
१५	६।५१	८।२०	९।४७	११।२४	१३।२१	१५।३५	१७।५३	२०।११	२२।२७	०।४६	३।३	५।७
१६	६।४७	८।१६	९।४३	११।२०	१३।१७	१५।३१	१७।४९	२०।७	२२।२३	०।४२	२।५९	५।३
१७	६।४३	८।१२	९।३९	११।१६	१३।१३	१५।२७	१७।४५	२०।३	२२।१९	०।३८	२।५५	४।५९
१८	६।३९	८।८	९।३५	११।१२	१३।९	१५।२३	१७।४१	१९।५९	२२।१५	०।३४	२।५१	४।५५
१९	६।३५	८।४	९।३१	११।८	१३।५	१५।१९	१७।३७	१९।५५	२२।११	०।३०	२।४७	४।५१
२०	६।३१	८।०	९।२७	११।४	१३।१	१५।१५	१७।३३	१९।५१	२२।७	०।२६	२।४३	४।४७
२१	६।२७	७।५६	९।२३	११।०	१२।५७	१५।११	१७।२९	१९।४७	२२।३	०।२२	२।३९	४।४३
२२	६।२४	७।५३	९।२०	१०।५७	१२।५४	१५।८	१७।२६	१९।४४	२२।०	०।१९	२।३६	४।४०
२३	६।२०	७।४९	९।१६	१०।५३	१२।५०	१५।४	१७।२२	१९।४०	२१।५६	०।१५	२।३२	४।३६
२४	६।१६	७।४५	९।१२	१०।४९	१२।४६	१५।०	१७।१८	१९।३६	२१।५२	०।११	२।२८	४।३२
२५	६।१२	७।४१	९।८	१०।४५	१२।४२	१४।५६	१७।१४	१९।३२	२१।४८	०।७	२।२४	४।२८
२६	६।९	७।३८	९।५	१०।४२	१२।३९	१४।५३	१७।११	१९।२९	२१।४५	०।४	२।२१	४।२५
२७	६।५	७।३४	९।१	१०।३८	१२।३५	१४।४९	१७।७	१९।२५	२१।४१	०।०	२।१७	४।२१
२८	६।२	७।३१	८।५८	१०।३५	१२।३२	१४।४६	१७।४	१९।२२	२१।३८	२३।५७	२।१४	४।१८

लग्न सारिणी में लिखे हुए घं.मि. अर्धरात्रोत्तर (रेलवे नियमानुसार) क्रमशः अर्धरात्रिपर्यन्त २४ घंटे तक लिखे गये हैं। जैसे- दिन के २ घं. २२ मि. को १४ घं. २२ मि. लिखा गया है। सायं ४ घं. १९ मि. को १६ घं. १९ मि. लिखा गया है। इसी प्रकार कन्या लग्नारम्भ रात्रि ११ घं. ९ मि. को २३ घं. ९ मि. लिखा गया है। स्टैण्डर्ड टाइम रेलवे नियमानुसार दिन के १ बजे को १३ व २ बजे को १४ बजे इत्यादि क्रमानुसार लिखा जाता है। नोट : विशेष जानकारी के लिए लग्न नाम के नीचे प्रातः, दिवा, सायं तथा रात्रि का संकेत रूप स्पष्ट लिख दिया गया है। प्रयोग करते समय वार्षिक संस्कार का भी ध्यान रखें, कोष्ठक पृष्ठ (८३) पर छपा है।

मार्च मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।२७	८।५४	१०।३१	१२।२८	१४।४२	१७।०	१९।१८	२१।३४	२३।५३	२।१०	४।१४	५।५८
२	७।२२	८।४९	१०।२६	१२।२३	१४।३७	१६।५५	१९।१३	२१।२९	२३।४८	२।५	४।९	५।५३
३	७।१८	८।४५	१०।२२	१२।१९	१४।३३	१६।५१	१९।९	२१।२५	२३।४४	२।१	४।५	५।४९
४	७।१४	८।४१	१०।१८	१२।१५	१४।२९	१६।४७	१९।५	२१।२१	२३।४०	१।५७	४।१	५।४५
५	७।१०	८।३७	१०।१४	१२।११	१४।२५	१६।४३	१९।१	२१।१७	२३।३६	१।५३	३।५७	५।४१
६	७।६	८।३३	१०।१०	१२।७	१४।२१	१६।३९	१८।५७	२१।१३	२३।३२	१।४९	३।५३	५।३७
७	७।२	८।२९	१०।६	१२।३	१४।१७	१६।३५	१८।५३	२१।९	२३।२८	१।४५	३।४९	५।३३
८	६।५८	८।२५	१०।२	११।५९	१४।१३	१६।३१	१८।४९	२१।५	२३।२४	१।४१	३।४५	५।२९
९	६।५४	८।२१	९।५८	११।५५	१४।९	१६।२७	१८।४५	२१।१	२३।२०	१।३७	३।४१	५।२५
१०	६।५०	८।१७	९।५४	११।५१	१४।५	१६।२३	१८।४१	२०।५७	२३।१६	१।३३	३।३७	५।२१
११	६।४६	८।१३	९।५०	११।४७	१४।१	१६।१९	१८।३७	२०।५३	२३।१२	१।२९	३।३३	५।१७
१२	६।४३	८।१०	९।४७	११।४४	१३।५८	१६;१६	१८।३४	२०।५०	२३।९	१।२६	३।३०	५।१४
१३	६।३९	८।६	९।४३	११।४०	१३।५४	१६।१२	१८।३०	२०।४६	२३।५	१।२२	३।२६	५।१०
१४	६।३५	८।२	९।३९	११।३६	१३।५०	१६।८	१८।२६	२०।४२	२३।१	१।१८	३।२२	५।६
१५	६।३१	७।५८	९।३५	११।३२	१३।४६	१६।४	१८।२२	२०।३८	२२।५७	१।१४	३।१८	५।२
१६	६।२७	७।५४	९।३१	११।२८	१३।४२	१६।०	१८।१८	२०।३४	२२।५३	१।१०	३।१४	४।५८
१७	६।२३	७।५०	९।२७	११।२४	१३।३८	१५।५६	१८।१४	२०।३०	२२।४९	१।६	३।१०	४।५४
१८	६।१९	७।४६	९।२३	११।२०	१३।३४	१५।५२	१८।१०	२०।२६	२२।४५	१।२	३।६	४।५०
१९	६।१५	७।४२	९।१९	११।१६	१३।३०	१५।४८	१८।६	२०।२२	२२।४१	०।५८	३।२	४।४६
२०	६।११	७।३८	९।१५	११।१२	१३।२६	१५।४४	१८।२	२०।१८	२२।३७	०।५४	२।५८	४।४२
२१	६।७	७।३४	९।११	११।८	१३।२२	१५।४०	१७।५८	२०।१४	२२।३३	०।५०	२।५४	४।३८
२२	६।३	७।३०	९।७	११।४	१३।१८	१५।३६	१७।५४	२०।१०	२२।२९	०।४६	२।५०	४।३४
२३	५।५९	७।२६	९।३	११।०	१३।१४	१५।३२	१७।५०	२०।६	२२।२५	०।४२	२।४६	४।३०
२४	५।५५	७।२२	८।५९	१०।५६	१३।१०	१५।२८	१७।४६	२०।२	२२।२१	०।३८	२।४२	४।२६
२५	५।५१	७।१८	८।५५	१०।५२	१३।६	१५।२४	१७।४२	१९।५८	२२।१७	०।३४	२।३८	४।२२
२६	५।४७	७।१४	८।५१	१०।४८	१३।२	१५।२०	१७।३८	१९।५४	२२।१३	०।३०	२।३४	४।१८
२७	५।४३	७।१०	८।४७	१०।४४	१२।५८	१५।१६	१७।३४	१९।५०	२२।९	०।२६	२।३०	४।१४
२८	५।३९	७।६	८।४३	१०।४०	१२।५४	१५।१२	१७।३०	१९।४६	२२।५	०।२२	२।२६	४।१०
२९	५।३५	७।२	८।३९	१०।३६	१२।५०	१५।८	१७।२६	१९।४२	२२।१	०।१८	२।२२	४।६
३०	५।३१	६।५८	८।३५	१०।३२	१२।४६	१५।४	१७।२२	१९।३८	२१।५७	०।१४	२।१८	४।२
३१	५।२७	६।५४	८।३१	१०।२८	१२।४२	१५।०	१७।१८	१९।३४	२१।५३	०।१०	२।१४	३।५८

अप्रैल मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।५०	८।२७	१०।२४	१२।३८	१४।५६	१७।१४	१९।३०	२१।४९	२।४।६	२।१०	३।५४	५।२३
२	६।४६	८।२३	१०।२०	१२।३४	१४।५२	१७।१०	१९।२६	२१।४५	२।४।२	२।६	३।५०	५।१९
३	६।४२	८।१९	१०।१६	१२।३०	१४।४८	१७।६	१९।२२	२१।४१	२३।५८	२।२	३।४६	५।१५
४	६।३८	८।१५	१०।१२	१२।२६	१४।४४	१७।२	१९।१८	२१।३७	२३।५४	१।५८	३।४२	५।११
५	६।३४	८।११	१०।८	१२।२२	१४।४०	१६।५८	१९।१४	२१।३३	२३।५०	१।५४	३।३८	५।७
६	६।३०	८।७	१०।४	१२।१८	१४।३६	१६।५४	१९।१०	२१।२९	२३।४६	१।५०	३।३४	५।३
७	६।२६	८।३	१०।०	१२।१४	१४।३२	१६।५०	१९।६	२१।२५	२३।४२	१।४६	३।३०	४।५९
८	६।२३	८।०	९।५७	१२।११	१४।२९	१६।४७	१९।२	२१।२२	२३।३९	१।४३	३।२७	४।५६
९	६।१९	७।५६	९।५३	१२।७	१४।२५	१६।४३	१८।५९	२१।१८	२३।३५	१।३९	३।२३	४।५२
१०	६।१५	७।५२	९।४९	१२।३	१४।२१	१६।३९	१८।५५	२१।१४	२३।३१	१।३५	३।१९	४।४८
११	६।११	७।४८	९।४५	११।५९	१४।१७	१६।३५	१८।५१	२१।१०	२३।२७	१।३१	३।१५	४।४४
१२	६।७	७।४४	९।४१	११।५५	१४।१३	१६।३१	१८।४७	२१।६	२३।२३	१।२७	३।११	४।४०
१३	६।३	७।४०	९।३७	११।५१	१४।९	१६।२७	१८।४३	२१।२	२३।१९	१।२३	३।७	४।३६
१४	५।५९	७।३६	९।३३	११।४७	१४।५	१६।२३	१८।३९	२०।५८	२३।१५	१।१९	३।३	४।३२
१५	५।५५	७।३२	९।२९	११।४३	१४।१	१६।१९	१८।३५	२०।५४	२३।११	१।१५	२।५९	४।२८
१६	५।५१	७।२८	९।२५	११।३९	१३।५७	१६।१५	१८।३१	२०।५०	२३।७	१।११	२।५५	४।२४
१७	५।४७	७।२४	९।२१	११।३५	१३।५३	१६।११	१८।२७	२०।४६	२३।३	१।७	२।५१	४।२०
१८	५।४३	७।२०	९।१७	११।३१	१३।४९	१६।७	१८।२३	२०।४२	२२।५९	१।३	२।४७	४।१६
१९	५।३९	७।१६	९।१३	११।२७	१३।४५	१६।३	१८।१९	२०।३८	२२।५५	०।५९	२।४३	४।१२
२०	५।३५	७।१२	९।९	११।२३	१३।४१	१५।५९	१८।१५	२०।३४	२२।५१	०।५५	२।३९	४।८
२१	५।३१	७।८	९।५	११।१९	१३।३७	१५।५५	१८।११	२०।३०	२२।४७	०।५१	२।३५	४।४
२२	५।२७	७।४	९।१	११।१५	१३।३३	१५।५१	१८।७	२०।२६	२२।४३	०।४७	२।३१	४।०
२३	५।२३	७।०	८।५७	११।११	१३।२९	१५।४७	१८।३	२०।२२	२२।३९	०।४३	२।२७	३।५६
२४	५।१९	६।५६	८।५३	११।७	१३।२५	१५।४३	१७।५९	२०।१८	२२।३५	०।३९	२।२३	३।५२
२५	५।१५	६।५२	८।४९	११।३	१३।२१	१५।३९	१७।५५	२०।१४	२२।३१	०।३५	२।१९	३।४८
२६	५।११	६।४८	८।४५	१०।५९	१३।१७	१५।३५	१७।५१	२०।१०	२२।२७	०।३१	२।१५	३।४४
२७	५।७	६।४४	८।४१	१०।५५	१३।१३	१५।३१	१७।४७	२०।६	२२।२३	०।२७	२।११	३।४०
२८	५।३	६।४०	८।३७	१०।५१	१३।९	१५।२७	१७।४३	२०।२	२२।१९	०।२३	२।७	३।३६
२९	४।५९	६।३६	८।३३	१०।४७	१३।५	१५।२३	१७।३९	१९।५८	२२।१५	०।१९	२।३	३।३२
३०	४।५३	६।३२	८।२७	१०।४१	१३।०	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।१०	०।१४	१।५८	३।२७

लग्न परिवर्तन विधि :- अन्य स्थान पर लग्न प्रवेश जानना हो तो "स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिका" (कालम सं. ५) में लिखित स्वस्थानीय मि. से. का विपरीत संस्कार (ऋण का धन और धन का ऋण) लग्न प्रवेश समयमें करने से स्वस्थानीय स्थूल लग्नप्रवेश (लग्न शुरू होने का समय) निकल आता है। सूक्ष्मता लानेके लिए अभीष्ट दिन रविक्रान्ति एवं अक्षांशतुल्य चरान्तर सारिणी से प्राप्त चरान्तर मिनटों का संस्कार स्थूल लग्नप्रवेश (लग्नारम्भ समय) में करने से शुद्ध सूक्ष्म (स्पष्ट) लग्नप्रवेशकाल निकलता है।

उदाहरण :- १ मार्च को मेष लग्न प्रवेश घं. ८ मि. ५४ है, तो दिल्ली में मेष लग्न कितने बजे शुरु होगी। "स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिका" में दिल्लीका देशान्तर सं. १ मि. ४८ से. ऋण का धन संस्कार किया तो ८ घं. ५५ मि. ४८ से. स्थूल लग्न प्रवेश काल हुआ। अक्षांश २८।३८ और रविक्रान्ति दक्षिण ७।४१ तुल्य चरान्तर १ मि. ऋण किया तो दिल्ली में मेष लग्न का प्रवेश (आरम्भ काल) घं. ८ मि. ५४ से. ४८ पर स्पष्ट हो गया।

मई मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।२६	८।२३	१०।३७	१२।५५	१५।१३	१७।२९	१९।४८	२२।५	०।९	१।५३	३।२२	४।४९
२	६।२२	८।१९	१०।३३	१२।५१	१५।९	१७।२५	१९।४४	२२।१	०।५	१।४९	३।१८	४।४५
३	६।१८	८।१५	१०।२९	१२।४७	१५।५	१७।२१	१९।४०	२१।५७	०।१	१।४५	३।१४	४।४१
४	६।१५	८।१२	१०।२६	१२।४४	१५।१	१७।१८	१९।३७	२१।५४	२३।५८	१।४२	३।११	४।३८
५	६।११	८।८	१०।२२	१२।४०	१४।५८	१७।१४	१९।३३	२१।५०	२३।५४	१।३८	३।७	४।३४
६	६।७	८।४	१०।१८	१२।३६	१४।५४	१७।१०	१९।२९	२१।४६	२३।५०	१।३४	३।३	४।३०
७	६।३	८।०	१०।१४	१२।३२	१४।५०	१७।६	१९।२५	२१।४२	२३।४६	१।३०	२।५९	४।२६
८	५।५९	७।५६	१०।१०	१२।२८	१४।४६	१७।२	१९।२१	२१।३८	२३।४२	१।२६	२।५५	४।२२
९	५।५५	७।५२	१०।६	१२।२४	१४।४२	१६।५८	१९।१७	२१।३४	२३।३८	१।२२	२।५१	४।१८
१०	५।५१	७।४८	१०।२	१२।२०	१४।३८	१६।५४	१९।१३	२१।३०	२३।३४	१।१८	२।४७	४।१४
११	५।४७	७।४४	९।५८	१२।१६	१४।३४	१६।५०	१९।९	२१।२६	२३।३०	१।१४	२।४३	४।१०
१२	५।४३	७।४०	९।५४	१२।१२	१४।३०	१६।४६	१९।५	२१।२२	२३।२६	१।१०	२।३९	४।६
१३	५।३९	७।३६	९।५०	१२।८	१४।२६	१६।४२	१९।१	२१।१९	२३।२२	१।६	२।३५	४।२
१४	५।३६	७।३३	९।४७	१२।५	१४।२३	१६।३९	१८।५८	२१।१५	२३।१९	१।३	२।३२	३।५९
१५	५।३२	७।२९	९।४३	१२।१	१४।१९	१६।३५	१८।५४	२१।११	२३।१५	०।५९	२।२८	३।५५
१६	५।२८	७।२५	९।३९	११।५७	१४।१५	१६।३१	१८।५०	२१।७	२३।११	०।५५	२।२४	३।५१
१७	५।२४	७।२१	९।३५	११।५३	१४।११	१६।२७	१८।४६	२१।३	२३।७	०।५१	२।२०	३।४७
१८	५।२०	७।१७	९।३१	११।४९	१४।७	१६।२३	१८।४२	२०।५९	२३।३	०।४७	२।१६	३।४३
१९	५।१६	७।१३	९।२७	११।४५	१४।३	१६।१९	१८।३८	२०।५५	२२।५९	०।४३	२।१२	३।३९
२०	५।१२	७।९	९।२३	११।४१	१३।५९	१६।१५	१८।३४	२०।५१	२२।५५	०।३९	२।८	३।३५
२१	५।८	७।५	९।१९	११।३७	१३।५५	१६।११	१८।३०	२०।४७	२२।५१	०।३५	२।४	३।३१
२२	५।४	७।१	९।१५	११।३३	१३।५१	१६।७	१८।२६	२०।४३	२२।४७	०।३१	२।०	३।२७
२३	५।०	६।५७	९।११	११।२९	१३।४७	१६।३	१८।२२	२०।३९	२२।४३	०।२७	१।५६	३।२३
२४	४।५६	६।५३	९।७	११।२५	१३।४३	१५।५९	१८।१८	२०।३५	२२।३९	०।२३	१।५२	३।१९
२५	४।५२	६।४९	९।३	११।२१	१३।३९	१५।५५	१८।१४	२०।३१	२२।३५	०।१९	१।४८	३।१५
२६	४।४८	६।४५	८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५१	१८।१०	२०।२७	२२।३१	०।१५	१।४४	३।११
२७	४।४४	६।४१	८।५५	११।१३	१३।३१	१५।४७	१८।६	२०।२३	२२।२७	०।११	१।४०	३।७
२८	४।४०	६।३७	८।५१	११।९	१३।२७	१५।४३	१८।२	२०।१९	२२।२३	०।७	१।३६	३।३
२९	४।३६	६।३३	८।४७	११।५	१३।२३	१५।३९	१७।५८	२०।१५	२२।१९	०।३	१।३२	२।५९
३०	४।३२	६।२९	८।४३	११।१	१३।१९	१५।३५	१७।५४	२०।११	२२।१५	२३।५९	१।२८	२।५५
३१	४।२८	६।२५	८।३९	१०।५७	१३।१५	१५।३१	१७।५०	२०।७	२२।११	२३।५५	१।२४	२।५१

जून मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।२१	८।३५	१०।५३	१३।११	१५।२७	१७।४६	२०।३	२२।७	२३।५१	१।२०	२।४७	४।२४
२	६।१७	८।३१	१०।४९	१३।७	१५।२३	१७।४२	१९।५९	२२।३	२३।४७	१।१६	२।४३	४।२०
३	६।१३	८।२७	१०।४५	१३।३	१५।१९	१७।३८	१९।५५	२१।५९	२३।४३	१।१२	२।३९	४।१६
४	६।९	८।२३	१०।४१	१२।५९	१५।१५	१७।३४	१९।५१	२१।५५	२३।३९	१।८	२।३५	४।१२
५	६।५	८।१९	१०।३७	१२।५५	१५।११	१७।३०	१९।४७	२१।५१	२३।३५	१।४	२।३१	४।८
६	६।१	८।१५	१०।३३	१२।५१	१५।७	१७।२६	१९।४३	२१।४७	२३।३१	१।०	२।२७	४।४
७	५।५७	८।११	१०।२९	१२।४७	१५।३	१७।२२	१९।३९	२१।४३	२३।२७	०।५६	२।२३	४।०
८	५।५३	८।७	१०।२५	१२।४३	१४।५९	१७।१८	१९।३५	२१।३९	२३।२३	०।५२	२।१९	३।५६
९	५।४९	८।३	१०।२१	१२।३९	१४।५५	१७।१४	१९।३१	२१।३५	२३।१९	०।४८	२।१५	३।५२
१०	५।४५	७।५९	१०।१७	१२।३५	१४।५१	१७।१०	१९।२७	२१।३१	२३।१५	०।४४	२।११	३।४८
११	५।४१	७।५५	१०।१३	१२।३१	१४।४७	१७।६	१९।२३	२१।२७	२३।११	०।४०	२।७	३।४४
१२	५।३८	७।५२	१०।१०	१२।२८	१४।४४	१७।२	१९।२०	२१।२४	२३।८	०।३७	२।४	३।४१
१३	५।३४	७।४८	१०।६	१२।२४	१४।४०	१६।५९	१९।१६	२१।२०	२३।४	०।३३	२।०	३।३७
१४	५।३०	७।४४	१०।२	१२।२०	१४।३६	१६।५५	१९।१२	२१।१६	२३।०	०।२९	१।५६	३।३३
१५	५।२६	७।४०	९।५८	१२।१६	१४।३२	१६।५१	१९।८	२१।१२	२२।५६	०।२५	१।५२	३।२९
१६	५।२२	७।३६	९।५४	१२।१२	१४।२८	१६।४७	१९।४	२१।८	२२।५२	०।२१	१।४८	३।२५
१७	५।१८	७।३२	९।५०	१२।८	१४।२४	१६।४३	१९।०	२१।४	२२।४८	०।१७	१।४४	३।२१
१८	५।१४	७।२८	९।४६	१२।४	१४।२०	१६।३९	१८।५६	२१।०	२२।४४	०।१३	१।४०	३।१७
१९	५।१०	७।२४	९।४२	१२।०	१४।१६	१६।३५	१८।५२	२०।५६	२२।४०	०।९	१।३६	३।१३
२०	५।६	७।२१	९।३९	११।५७	१४।१३	१६।३२	१८।४९	२०।५३	२२।३७	०।६	१।३३	३।१०
२१	५।३	७।१७	९।३५	११।५३	१४।९	१६।२८	१८।४५	२०।४९	२२।३३	०।२	१।२९	३।६
२२	४।५९	७।१३	९।३१	११।४९	१४।५	१६।२४	१८।४१	२०।४५	२२।२९	२३।५८	१।२५	३।२
२३	४।५५	७।९	९।२७	११।४५	१४।१	१६।२०	१८।३७	२०।४१	२२।२५	२३।५४	१।२१	२।५८
२४	४।५१	७।५	९।२३	११।४१	१३।५७	१६।१६	१८।३३	२०।३७	२२।२१	२३।५०	१।१७	२।५४
२५	४।४७	७।१	९।१९	११।३७	१३।५३	१६।१२	१८।२९	२०।३३	२२।१७	२३।४६	१।१३	२।५०
२६	४।४४	६।५८	९।१६	११।३४	१३।५०	१६।९	१८।२६	२०।३०	२२।१४	२३।४३	१।१०	२।४७
२७	४।४०	६।५४	९।१२	११।३०	१३।४६	१६।५	१८।२२	२०।२६	२२।१०	२३।३९	१।६	२।४३
२८	४।३६	६।५०	९।८	११।२६	१३।४२	१६।१	१८।१८	२०।२२	२२।६	२३।३५	१।२	२।३९
२९	४।३२	६।४६	९।४	११।२२	१३।३८	१५।५७	१८।१४	२०।१८	२२।२	२३।३१	०।५८	२।३५
३०	४।२८	६।४२	९।०	११।१८	१३।३४	१५।५३	१८।१०	२०।१४	२१।५८	२३।२७	०।५४	२।३१

लग्न क्या है? :- इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले इस विषयमें श्री ब्रजभूमि-पंचांग प्रेमी पाठकोंकी जानकारी हेतु कुछ विशेष महत्वपूर्ण विषयोंका ज्ञान कराना हम अपना परम कर्तव्य समझते है। अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर परिभ्रमण करने के साथ-साथ यह वसुन्धरा (पृथ्वी) ३६५ दिन ६ घं. ९ मि. में सूर्य के चारों ओर घूम जाती है। यह समय व्यवहारिक सौर वर्ष कहलाता है। ज्योतिषाचार्यो ने भ्रमणमार्ग, ग्रहकक्षा, (राशि पथ) को समान बारह भागोंमे विभाजित किया है; जोकि मेष, वृष आदि द्वादश राशियोंके नाम से प्रसिद्ध है। अश्विनी, भरणी, कृतिकादि २७ नक्षत्र राशिपथ के स्थिर बिन्दु हैं। अक्षपरिभ्रमण के कारण प्रति एक अहोरात्र (दिन-रात) में पृथ्वी सम्पूर्ण राशिपथ के सामने होकर घूम जाती है; अर्थात् ६० घटी या बराबर २४ घंटे में बारहों लग्नोंका उदय होता है। जिस समय सूर्य जिस राशिमें गतिशील होता है उस समय वही राशि (लग्न) प्रातः सूर्योदय के समय पूर्वक्षितिज में उदय होती है।

(शेष अग्रिम पृष्ठ पर)

जुलाई मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।३८	८।५६	११।१४	१३।३०	१५।४९	१८।६	२०।१०	२१।५४	२३।२३	०।५०	२।२७	४।२४
२	६।३४	८।५२	११।१०	१३।२६	१५।४५	१८।२	२०।६	२१।५०	२३।१९	०।४६	२।२३	४।२०
३	६।३०	८।४८	११।६	१३।२२	१५।४१	१७।५८	२०।२	२१।४६	२३।१५	०।४२	२।१९	४।१६
४	६।२६	८।४४	११।२	१३।१८	१५।३७	१७।५४	१९।५८	२१।४२	२३।११	०।३८	२।१५	४।१२
५	६।२२	८।४०	१०।५८	१३।१४	१५।३३	१७।५०	१९।५४	२१।३८	२३।७	०।३४	२।११	४।८
६	६।१८	८।३६	१०।५४	१३।१०	१५।२९	१७।४६	१९।५०	२१।३४	२३।३	०।३०	२।७	४।४
७	६।१४	८।३२	१०।५०	१३।६	१५।२५	१७।४२	१९।४६	२१।३०	२२।५९	०।२६	२।३	४।०
८	६।१०	८।२८	१०।४६	१३।२	१५।२१	१७।३८	१९।४२	२१।२६	२२।५५	०।२२	१।५९	३।५६
९	६।६	८।२४	१०।४२	१२।५८	१५।१७	१७।३४	१९।३८	२१।२२	२२।५१	०।१८	१।५५	३।५२
१०	६।२	८।२०	१०।३८	१२।५४	१५।१३	१७।३०	१९।३४	२१।१८	२२।४७	०।१४	१।५१	३।४८
११	५।५८	८।१६	१०।३४	१२।५०	१५।९	१७।२६	१९।३०	२१।१४	२२।४३	०।१०	१।४७	३।४४
१२	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।४७	१५।६	१७।२३	१९।२७	२१।११	२२।४०	०।७	१।४४	३।४१
१३	५।५१	८।९	१०।२७	१२।४३	१५।२	१७।१९	१९।२३	२१।७	२२।३६	०।३	१।४०	३।३७
१४	५।४७	८।५	१०।२३	१२।३९	१४।५८	१७।१५	१९।१९	२१।३	२२।३२	२३।५९	१।३६	३।३३
१५	५।४३	८।१	१०।१९	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।१५	२०।५९	२२।२८	२३।५५	१।३२	३।२९
१६	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३१	१४।५०	१७।७	१९।११	२०।५५	२२।२४	२३।५१	१।२८	३।२५
१७	५।३५	७।५३	१०।११	१२।२७	१४।४६	१७।३	१९।७	२०।५१	२२।२०	२३।४७	१।२४	३।२१
१८	५।३१	७।४९	१०।७	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।३	२०।४७	२२।१६	२३।४३	१।२०	३।१७
१९	५।२७	७।४५	१०।३	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१८।५९	२०।४३	२२।१२	२३।३९	१।१६	३।१३
२०	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१८।५५	२०।३९	२२।८	२३।३५	१।१२	३।९
२१	५।१९	७।३७	९।५५	१२।११	१४।३०	१६।४७	१८।५१	२०।३५	२२।४	२३।३१	१।८	३।५
२२	५।१६	७।३४	९।५२	१२।८	१४।२७	१६।४४	१८।४८	२०।३२	२२।१	२३।२८	१।५	३।२
२३	५।१२	७।३०	९।४८	१२।४	१४।२३	१६।४०	१८।४४	२०।२८	२१।५७	२३।२४	१।१	२।५८
२४	५।८	७।२६	९।४४	१२।०	१४।१९	१६।३६	१८।४०	२०।२४	२१।५३	२३।२०	०।५७	२।५४
२५	५।४	७।२२	९।४०	११।५६	१४।१५	१६।३२	१८।३६	२०।२०	२१।४९	२३।१६	०।५३	२।५०
२६	५।०	७।१८	९।३६	११।५२	१४।११	१६।२८	१८।३२	२०।१६	२१।४५	२३।१२	०।४९	२।४६
२७	४।५६	७।१४	९।३२	११।४८	१४।७	१६।२४	१८।२८	२०।१२	२१।४१	२३।८	०।४५	२।४२
२८	४।५२	७।१०	९।२८	११।४४	१४।३	१६।२०	१८।२४	२०।८	२१।३७	२३।४	०।४१	२।३८
२९	४।४८	७।६	९।२४	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।२०	२०।४	२१।३३	२३।०	०।३७	२।३४
३०	४।४४	७।२	९।२०	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।१६	२०।०	२१।२९	२२।५६	०।३३	२।३०
३१	४।४०	६।५८	९।१६	११।३२	१३।५१	१६।८	१८।१२	१९।५६	२१।२५	२२।५२	०।२९	२।२६

अगस्त मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।५५	९।१३	११।२९	१३।४८	१६।५	१८।९	१९।५३	२१।२२	२२।४९	०।२६	२।२३	४।३७
२	६।५१	९।९	११।२५	१३।४४	१६।१	१८।५	१९।४९	२१।१८	२२।४५	०।२२	२।१९	४।३३
३	६।४७	९।५	११।२१	१३।४०	१५।५७	१८।१	१९।४५	२१।१४	२२।४१	०।१८	२।१५	४।२९
४	६।४३	९।१	११।१७	१३।३६	१५।५३	१७।५७	१९।४१	२१।१०	२२।३७	०।१४	२।११	४।२५
५	६।३९	८।५७	११।१३	१३।३२	१५।४९	१७।५३	१९।३७	२१।६	२२।३३	०।१०	२।७	४।२१
६	६।३६	८।५४	११।१०	१३।२९	१५।४६	१७।५०	१९।३४	२१।३	२२।३०	०।७	२।४	४।१८
७	६।३२	८।५०	११।६	१३।२५	१५।४२	१७।४६	१९।३०	२०।५९	२२।२६	०।३	२।०	४।१४
८	६।२८	८।४६	११।२	१३।२१	१५।३८	१७।४२	१९।२६	२०।५५	२२।२२	२३।५९	१।५६	४।१०
९	६।२४	८।४२	१०।५८	१३।१७	१५।३४	१७।३८	१९।२२	२०।५१	२२।१८	२३।५५	१।५२	४।६
१०	६।२०	८।३८	१०।५४	१३।१३	१५।३०	१७।३४	१९।१८	२०।४७	२२।१४	२३।५१	१।४८	४।२
११	६।१६	८।३४	१०।५०	१३।९	१५।२६	१७।३०	१९।१४	२०।४३	२२।१०	२३।४७	१।४४	३।५८
१२	६।१२	८।३०	१०।४६	१३।५	१५।२२	१७।२६	१९।१०	२०।३९	२२।६	२३।४३	१।४०	३।५४
१३	६।८	८।२६	१०।४२	१३।१	१५।१८	१७।२२	१९।६	२०।३५	२२।२	२३।३९	१।३६	३।५०
१४	६।४	८।२२	१०।३८	१२।५७	१५।१४	१७।१८	१९।२	२०।३१	२१।५८	२३।३५	१।३२	३।४६
१५	६।०	८।१८	१०।३४	१२।५३	१५।१०	१७।१४	१८।५८	२०।२७	२१।५४	२३।३१	१।२८	३।४२
१६	५।५६	८।१४	१०।३०	१२।४९	१५।६	१७।१०	१८।५४	२०।२३	२१।५०	२३।२७	१।२४	३।३८
१७	५।५२	८।१०	१०।२६	१२।४५	१५।२	१७।६	१८।५०	२०।१९	२१।४६	२३।२३	१।२०	३।३४
१८	५।४९	८।७	१०।२३	१२।४२	१४।५९	१७।२	१८।४७	२०।१६	२१।४३	२३।२०	१।१७	३।३१
१९	५।४५	८।३	१०।१९	१२।३८	१४।५५	१६।५९	१८।४३	२०।१२	२१।३९	२३।१६	१।१३	३।२७
२०	५।४१	७।५९	१०।१५	१२।३४	१४।५१	१६।५५	१८।३९	२०।८	२१।३५	२३।१२	१।९	३।२३
२१	५।३७	७।५५	१०।११	१२।३०	१४।४७	१६।५१	१८।३५	२०।४	२१।३१	२३।८	१।५	३।१९
२२	५।३३	७।५१	१०।७	१२।२६	१४।४३	१६।४७	१८।३१	२०।०	२१।२७	२३।४	१।१	३।१५
२३	५।२९	७।४७	१०।३	१२।२२	१४।३९	१६।४३	१८।२७	१९।५६	२१।२३	२३।०	०।५७	३।११
२४	५।२५	७।४३	९।५९	१२।१८	१४।३५	१६।३९	१८।२३	१९।५२	२१।१९	२२।५६	०।५३	३।७
२५	५।२१	७।३९	९।५५	१२।१४	१४।३१	१६।३५	१८।१९	१९।४८	२१।१५	२२।५२	०।४९	३।३
२६	५।१७	७।३५	९।५१	१२।१०	१४।२७	१६।३१	१८।१५	१९।४४	२१।११	२२।४८	०।४५	२।५९
२७	५।१३	७।३१	९।४७	१२।६	१४।२३	१६।२७	१८।११	१९।४०	२१।७	२२।४४	०।४१	२।५५
२८	५।९	७।२७	९।४३	१२।२	१४।१९	१६।२३	१८।७	१९।३६	२१।३	२२।४०	०।३७	२।५१
२९	५।५	७।२३	९।३९	११।५८	१४।१५	१६।१९	१८।३	१९।३२	२०।५९	२२।३६	०।३३	२।४७
३०	५।१	७।१९	९।३५	११।५४	१४।११	१६।१५	१७।५९	१९।२८	२०।५५	२२।३२	०।२९	२।४३
३१	४।५७	७।१५	९।३१	११।५०	१४।७	१६।११	१७।५५	१९।२४	२०।५१	२२।२८	०।२५	२।३९

(गत पृष्ठ का शेष) :- मध्यान्हमें उदयकालीन लग्न से सदैव चौथा लग्न वर्तमान रहता है। सूर्यास्त के समय सातवाँ लग्न भोग करता है। इसी प्रकार रात्रिमें आगे जानना चाहिए। जिस दिन जिस राशिमें गतिशील सूर्य (संक्रान्ति) के जितने अंशभुक्त होंगे, उस दिन सूर्योदय पर संक्रान्तितुल्य लग्न के उतने ही अंश भुक्त होंगे; अर्थात् संक्रान्ति गतांशतुल्य लग्न सूर्योदय पर बीत जायेगी। जन्म कुण्डली आकाशीय गोचर ग्रहोंका नक्शा होती है। यद्यपि अपने इस सौर मण्डल में सूर्य स्थिर है। फिर भी सिद्धान्त शास्त्रियों ने पृथ्वी को स्थिर एवं सूर्यको चलित मानकर खगोल, भगोल और भूगोल से सम्बन्धित समस्त सिद्धान्त ग्रन्थों का निर्माण किया है। गणितमें इससे अन्तर नहीं आता है। पंचांगमें लिखा रहता है कि सूर्य अमुक राशिके अमुक अंश पर भोग कर रहा है, जिसका अभिप्राय यह है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती हुई उक्त राशिके उतने अंश पर पहुंच चुकी है।

सम्पादक :- **पं. कौशलकिशोर कौशिक ज्यो. बी.ए.,एल.एल.बी.**

सितम्बर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।११	९।२७	११।४६	१४।३	१६।७	१७।५१	१९।२०	२०।४७	२२।२४	०।२१	२।३५	४।५३
२	७।७	९।२३	११।४२	१३।५९	१६।३	१७।४७	१९।१६	२०।४३	२२।२०	०।१७	२।३१	४।४९
३	७।३	९।१९	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४३	१९।१२	२०।३९	२२।१६	०।१३	२।२७	४।४५
४	६।५९	९।१५	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३९	१९।८	२०।३५	२२।१२	०।९	२।२३	४।४१
५	६।५५	९।११	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३५	१९।४	२०।३१	२२।८	०।५	२।१९	४।३७
६	६।५२	९।८	११।२७	१३।४४	१५।४८	१७।३२	१९।१	२०।२८	२२।५	०।२	२।१६	४।३४
७	६।४८	९।४	११।२३	१३।४०	१५।४४	१७।२८	१८।५७	२०।२४	२२।१	२३।५८	२।१२	४।३०
८	६।४४	९।०	११।१९	१३।३६	१५।४०	१७।२४	१८।५३	२०।२०	२१।५७	२३।५४	२।८	४।२६
९	६।४०	८।५६	११।१५	१३।३२	१५।३६	१७।२०	१८।४९	२०।१६	२१।५३	२३।५०	२।४	४।२२
१०	६।३६	८।५२	११।११	१३।२८	१५।३२	१७।१६	१८।४५	२०।१२	२१।४९	२३।४६	२।०	४।१८
११	६।३२	८।४८	११।७	१३।२४	१५।२८	१७।१२	१८।४१	२०।८	२१।४५	२३।४२	१।५६	४।१४
१२	६।२८	८।४४	११।३	१३।२०	१५।२४	१७।८	१८।३७	२०।४	२१।४१	२३।३८	१।५२	४।१०
१३	६।२४	८।४०	१०।५९	१३।१६	१५।२०	१७।४	१८।३३	२०।०	२१।३७	२३।३४	१।४८	४।६
१४	६।२०	८।३६	१०।५५	१३।१२	१५।१६	१७।०	१८।२९	१९।५६	२१।३३	२३।३०	१।४४	४।२
१५	६।१६	८।३२	१०।५१	१३।८	१५।१२	१६।५६	१८।२५	१९।५२	२१।२९	२३।२६	१।४०	३।५८
१६	६।१२	८।२८	१०।४७	१३।४	१५।८	१६।५२	१८।२१	१९।४८	२१।२५	२३।२२	१।३६	३।५४
१७	६।८	८।२४	१०।४३	१३।०	१५।४	१६।४८	१८।१७	१९।४४	२१।२१	२३।१८	१।३२	३।५०
१८	६।४	८।२०	१०।३९	१२।५६	१५।०	१६।४४	१८।१३	१९।४०	२१।१७	२३।१४	१।२८	३।४६
१९	६।०	८।१६	१०।३५	१२।५२	१४।५६	१६।४०	१८।९	१९।३६	२१।१३	२३।१०	१।२४	३।४२
२०	५।५६	८।१२	१०।३१	१२।४८	१४।५२	१६।३६	१८।५	१९।३२	२१।९	२३।६	१।२०	३।३८
२१	५।५२	८।८	१०।२७	१२।४४	१४।४८	१६।३२	१८।१	१९।२८	२१।५	२३।२	१।१६	३।३४
२२	५।४८	८।४	१०।२३	१२।४०	१४।४४	१६।२८	१७।५७	१९।२४	२१।१	२२।५८	१।१२	३।३०
२३	५।४४	८।०	१०।१९	१२।३६	१४।४०	१६।२४	१७।५३	१९।२०	२०।५७	२२।५४	१।८	३।२६
२४	५।४०	७।५६	१०।१५	१२।३२	१४।३६	१६।२०	१७।४९	१९।१६	२०।५३	२२।५०	१।४	३।२२
२५	५।३६	७।५२	१०।११	१२।२८	१४।३२	१६।१६	१७।४५	१९।१२	२०।४९	२२।४६	१।०	३।१८
२६	५।३२	७।४८	१०।७	१२।२४	१४।२८	१६।१२	१७।४१	१९।८	२०।४५	२२।४२	०।५६	३।१४
२७	५।२८	७।४४	१०।३	१२।२०	१४।२४	१६।८	१७।३७	१९।४	२०।४१	२२।३८	०।५२	३।१०
२८	५।२४	७।४०	९।५९	१२।१६	१४।२०	१६।४	१७।३३	१९।०	२०।३७	२२।३४	०।४८	३।६
२९	५।२०	७।३६	९।५५	१२।१२	१४।१६	१६।०	१७।२९	१८।५६	२०।३३	२२।३०	०।४४	३।२
३०	५।१६	७।३२	९।५१	१२।८	१४।१२	१५।५६	१७।२५	१८।५२	२०।२९	२२।२६	०।४०	२।५८

अक्टूबर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।२८	९।४७	१२।४	१४।८	१५।५२	१७।२१	१८।४८	२०।२५	२२।२२	०।३६	२।५४	५।१२
२	७।२४	९।४३	१२।०	१४।४	१५।४८	१७।१७	१८।४४	२०।२१	२२।१८	०।३२	२।५०	५।८
३	७।२०	९।३९	११।५६	१४।०	१५।४४	१७।१३	१८।४०	२०।१७	२२।१४	०।२८	२।४६	५।४
४	७।१६	९।३५	११।५२	१३।५६	१५।४०	१७।९	१८।३६	२०।१३	२२।१०	०।२४	२।४२	५।०
५	७।१२	९।३१	११।४८	१३।५२	१५।३६	१७।५	१८।३२	२०।९	२२।६	०।२०	२।३८	४।५६
६	७।८	९।२७	११।४४	१३।४८	१५।३२	१७।१	१८।२८	२०।५	२२।२	०।१६	२।३४	४।५२
७	७।४	९।२३	११।४०	१३।४४	१५।२८	१६।५७	१८।२४	२०।१	२१।५८	०।१२	२।३०	४।४८
८	७।०	९।१९	११।३६	१३।४०	१५।२४	१६।५३	१८।२०	१९।५७	२१।५४	०।८	२।२६	४।४४
९	६।५६	९।१५	११।३२	१३।३६	१५।२०	१६।४९	१८।१६	१९।५३	२१।५०	०।४	२।२२	४।४०
१०	६।५२	९।११	११।२८	१३।३२	१५।१६	१६।४५	१८।१२	१९।४९	२१।४६	०।०	२।१८	४।३६
११	६।४८	९।७	११।२४	१३।२८	१५।१२	१६।४१	१८।८	१९।४५	२१।४२	२३।५६	२।१४	४।३२
१२	६।४४	९।३	११।२०	१३।२४	१५।८	१६।३७	१८।४	१९।४१	२१।३८	२३।५२	२।१०	४।२८
१३	६।४०	८।५९	११।१६	१३।२०	१५।४	१६।३३	१८।०	१९।३७	२१।३४	२३।४८	२।६	४।२४
१४	६।३७	८।५६	११।१३	१३।१७	१५।०	१६।३०	१७।५७	१९।३४	२१।३१	२३।४५	२।२	४।२१
१५	६।३३	८।५२	११।९	१३।१३	१४।५७	१६।२६	१७।५३	१९।३०	२१।२७	२३।४१	१।५९	४।१७
१६	६।२९	८।४८	११।५	१३।९	१४।५३	१६।२२	१७।४९	१९।२६	२१।२३	२३।३७	१।५५	४।१३
१७	६।२५	८।४४	११।१	१३।५	१४।४९	१६।१८	१७।४५	१९।२२	२१।१९	२३।३३	१।५१	४।९
१८	६।२१	८।४०	१०।५७	१३।१	१४।४५	१६।१४	१७।४१	१९।१८	२१।१५	२३।२९	१।४७	४।५
१९	६।१७	८।३६	१०।५३	१२।५७	१४।४१	१६।१०	१७।३७	१९।१४	२१।११	२३।२५	१।४३	४।१
२०	६।१३	८।३२	१०।४९	१२।५३	१४।३७	१६।६	१७।३३	१९।१०	२१।७	२३।२१	१।३९	३।५७
२१	६।९	८।२८	१०।४५	१२।४९	१४।३३	१६।२	१७।२९	१९।६	२१।३	२३।१७	१।३५	३।५३
२२	६।५	८।२४	१०।४१	१२।४५	१४।२९	१५।५८	१७।२५	१९।२	२०।५९	२३।१३	१।३१	३।४९
२३	६।१	८।२०	१०।३७	१२।४१	१४।२५	१५।५४	१७।२१	१८।५८	२०।५५	२३।९	१।२७	३।४५
२४	५।५७	८।१६	१०।३३	१२।३७	१४।२१	१५।५०	१७।१७	१८।५४	२०।५१	२३।५	१।२३	३।४१
२५	५।५३	८।१२	१०।२९	१२।३३	१४।१७	१५।४६	१७।१३	१८।५०	२०।४७	२३।१	१।१९	३।३७
२६	५।४९	८।८	१०।२५	१२।२९	१४।१३	१५।४२	१७।९	१८।४६	२०।४३	२२।५७	१।१५	३।३३
२७	५।४५	८।४	१०।२१	१२।२५	१४।९	१५।३८	१७।५	१८।४२	२०।३९	२२।५३	१।११	३।२९
२८	५।४१	८।०	१०।१७	१२।२१	१४।५	१५।३४	१७।१	१८।३८	२०।३५	२२।४९	१।७	३।२५
२९	५।३७	७।५६	१०।१३	१२।१७	१४।१	१५।३०	१६।५७	१८।३४	२०।३१	२२।४५	१।३	३।२१
३०	५।३३	७।५२	१०।९	१२।१३	१३।५७	१५।२६	१६।५३	१८।३०	२०।२७	२२।४१	०।५९	३।१७
३१	५।२९	७।४८	१०।५	१२।९	१३।५३	१५।२२	१६।४९	१८।२६	२०।२३	२२।३७	०।५५	३।१३

नवांश जानने की विधि :- लग्न के आरम्भ काल को अग्रिम लग्न प्रवेश समय में से घटाने पर कुल लग्न भोग (समय घं.मि.) सुनिश्चित होंगे। कुल समय के मिनट बना लें; मिनटोंको ९ से भाग करने पर लब्ध एक नवांश के मि. सै. होंगे। जो नवांश ज्ञात करना हो उससे गत नवांश संख्याका एक नवांश के मान को गुणा करें। गुणितफल के घंटा-मिनटोंको लग्नारम्भ में जोड़ने से उक्त नवांश का आरम्भकाल होगा, जिसमें एक नवांश के मिनट-सेकेण्ड युक्त करने पर अभीष्ट नवांशका समाप्तिकाल आ जायेगा।

मेष, सिंह तथा धनु लग्न में नवांश की गिनती मेष से शुरू होती है। अतः मेष लग्नमें प्रथम नवांश मेष का होगा, दूसरा वृष का ऐसा ही आगे जानें। वृष, कन्या और मकर लग्नमें नवांश की गणना मकर से की जाती है। मिथुन, तुला और कुम्भ में तुला से गिनती करें। इसी प्रकार कर्क, वृश्चिक एवं मीन लग्न में प्रथम नवांश कर्क का होता है। प्रत्येक लग्न (राशि) के ३० अंश होते हैं। तीस को ९ से विभाजित किया तो ३०÷९=३ अंश २० कला एक नवांश का मान सुनिश्चित हुआ।

नवम्बर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।४४	१०।११	१२।१५	१३।४९	१५।१८	१६।४५	१८।२२	२०।१९	२२।३३	०।५१	३।१९	५।२५
२	७।४०	९।५७	१२।११	१३।४५	१५।१४	१६।४१	१८।१८	२०।१५	२२।२९	०।४७	३।१५	५।२१
३	७।३६	९।५३	११।५७	१३।४१	१५।१०	१६।३७	१८।१४	२०।११	२२।२५	०।४३	३।११	५।१७
४	७।३२	९।४९	११।५३	१३।३७	१५।६	१६।३३	१८।१०	२०।७	२२।२१	०।३९	२।५७	५।१३
५	७।२८	९।४५	११।४९	१३।३३	१५।२	१६।२९	१८।६	२०।३	२२।१७	०।३५	२।५३	५।९
६	७।२४	९।४१	११।४५	१३।२९	१४।५८	१६।२५	१८।२	१९।५९	२२।१३	०।३१	२।४९	५।५
७	७।२०	९।३७	११।४१	१३।२५	१४।५४	१६।२१	१७।५८	१९।५५	२२।९	०।२७	२।४५	५।१
८	७।१६	९।३३	११।३७	१३।२१	१४।५०	१६।१७	१७।५४	१९।५१	२२।५	०।२३	२।४१	४।५७
९	७।१२	९।२९	११।३३	१३।१७	१४।४६	१६।१३	१७।५०	१९।४७	२२।१	०।१९	२।३७	४।५३
१०	७।८	९।२५	११।२९	१३।१३	१४।४२	१६।९	१७।४६	१९।४३	२१।५७	०।१५	२।३३	४।४९
११	७।४	९।२१	११।२५	१३।९	१४।३८	१६।५	१७।४२	१९।३९	२१।५३	०।११	२।२९	४।४५
१२	७।०	९।१७	११।२१	१३।५	१४।३४	१६।१	१७।३८	१९।३५	२१।४९	०।७	२।२५	४।४१
१३	६।५६	९।१३	११।१७	१३।१	१४।३०	१५।५७	१७।३४	१९।३१	२१।४५	०।३	२।२१	४।३७
१४	६।५२	९।९	११।१३	१२।५७	१४।२६	१५।५३	१७।३०	१९।२७	२१।४१	२३।५९	२।१७	४।३३
१५	६।४८	९।५	११।९	१२।५३	१४।२२	१५।४९	१७।२६	१९।२३	२१।३७	२३।५५	२।१३	४।२९
१६	६।४४	९।१	११।५	१२।४९	१४।१८	१५।४५	१७।२२	१९।१९	२१।३३	२३।५१	२।९	४।२५
१७	६।४०	८।५७	११।१	१२।४५	१४।१४	१५।४१	१७।१८	१९।१५	२१।२९	२३।४७	२।५	४।२१
१८	६।३७	८।५४	१०।५८	१२।४२	१४।११	१५।३८	१७।१५	१९।१२	२१।२६	२३।४४	२।२	४।१८
१९	६।३३	८।५०	१०।५४	१२।३८	१४।७	१५।३४	१७।११	१९।८	२१।२२	२३।४०	१।५८	४।१४
२०	६।२९	८।४६	१०।५०	१२।३४	१४।३	१५।३०	१७।७	१९।४	२१।१८	२३।३६	१।५४	४।१०
२१	६।२५	८।४२	१०।४६	१२।३०	१३।५९	१५।२६	१७।३	१९।०	२१।१४	२३।३२	१।५०	४।६
२२	६।२२	८।३९	१०।४३	१२।२७	१३।५६	१५।२३	१७।०	१८।५७	२१।११	२३।२९	१।४७	४।२
२३	६।१८	८।३५	१०।३९	१२।२३	१३।५२	१५।१९	१६।५६	१८।५३	२१।७	२३।२५	१।४३	३।५९
२४	६।१४	८।३१	१०।३५	१२।१९	१३।४८	१५।१५	१६।५२	१८।४९	२१।३	२३।२१	१।३९	३।५५
२५	६।१०	८।२७	१०।३१	१२।१५	१३।४४	१५।११	१६।४८	१८।४५	२०।५९	२३।१७	१।३५	३।५१
२६	६।६	८।२३	१०।२७	१२।११	१३।४०	१५।७	१६।४४	१८।४१	२०।५५	२३।१३	१।३१	३।४७
२७	६।२	८।१९	१०।२३	१२।७	१३।३६	१५।३	१६।४०	१८।३७	२०।५१	२३।९	१।२७	३।४३
२८	५।५८	८।१५	१०।१९	१२।३	१३।३२	१४।५९	१६।३६	१८।३३	२०।४७	२३।५	१।२३	३।३९
२९	५।५४	८।११	१०।१५	११।५९	१३।२८	१४।५५	१६।३२	१८।२९	२०।४३	२३।१	१।१९	३।३५
३०	५।५१	८।८	१०।१२	११।५६	१३।२५	१४।५२	१६।२९	१८।२६	२०।४०	२२।५८	१।१६	३।३२

दिसम्बर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	८।४	१०।१८	११।५२	१३।२१	१४।४८	१६।२५	१८।२२	२०।३६	२२।५४	१।१२	३।२८	५।४७
२	८।०	१०।१४	११।४८	१३।१७	१४।४४	१६।२१	१८।१८	२०।३२	२२।५०	१।८	३।२४	५।४३
३	७।५६	१०।१०	११।४४	१३।१३	१४।४०	१६।१७	१८।१४	२०।२८	२२।४६	१।४	३।२०	५।३९
४	७।५२	९।५६	११।४०	१३।९	१४।३६	१६।१३	१८।१०	२०।२४	२२।४२	१।०	३।१६	५।३५
५	७।४८	९।५२	११।३६	१३।५	१४।३२	१६।९	१८।६	२०।२०	२२।३८	०।५६	३।१२	५।३१
६	७।४४	९।४८	११।३२	१३।१	१४।२८	१६।५	१८।२	२०।१६	२२।३४	०।५२	३।८	५।२७
७	७।४०	९।४४	११।२८	१२।५७	१४।२४	१६।१	१७।५८	२०।१२	२२।३०	०।४८	३।४	५।२३
८	७।३७	९।४१	११।२५	१२।५४	१४।२१	१५।५८	१७।५५	२०।९	२२।२७	०।४५	३।१	५।२०
९	७।३३	९।३७	११।२१	१२।५०	१४।१७	१५।५४	१७।५१	२०।५	२२।२३	०।४१	२।५७	५।१६
१०	७।२९	९।३३	११।१७	१२।४६	१४।१३	१५।५२	१७।४७	२०।१	२२।१९	०।३७	२।५३	५।१२
११	७।२५	९।२९	११।१३	१२।४२	१४।९	१५।४८	१७।४३	१९।५७	२२।१५	०।३३	२।४९	५।८
१२	७।२१	९।२५	११।९	१२।३८	१४।५	१५।४४	१७।३९	१९।५३	२२।११	०।२९	२।४५	५।४
१३	७।१७	९।२१	११।५	१२।३४	१४।१	१५।४०	१७।३५	१९।४९	२२।७	०।२५	२।४१	५।०
१४	७।१३	९।१७	११।१	१२।३०	१३।५७	१५।३६	१७।३१	१९।४५	२२।३	०।२१	२।३७	४।५६
१५	७।९	९।१३	१०।५७	१२।२६	१३।५३	१५।३२	१७।२७	१९।४१	२१।५९	०।१७	२।३३	४।५२
१६	७।५	९।९	१०।५३	१२।२२	१३।४९	१५।२८	१७।२३	१९।३७	२१।५५	०।१३	२।२९	४।४८
१७	७।१	९।५	१०।४९	१२।१८	१३।४५	१५।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५१	०।९	२।२५	४।४४
१८	६।५७	९।१	१०।४५	१२।१४	१३।४१	१५।१९	१७।१५	१९।२९	२१।४७	०।५	२।२१	४।४०
१९	६।५३	८।५७	१०।४१	१२।१०	१३।३७	१५।१४	१७।११	१९।२५	२१।४३	०।१	२।१७	४।३६
२०	६।४९	८।५३	१०।३७	१२।६	१३।३३	१५।१०	१७।७	१९।२१	२१।३९	२३।५७	२।१३	४।३२
२१	६।४५	८।४९	१०।३३	१२।२	१३।२९	१५।६	१७।३	१९।१७	२१।३५	२३।५३	२।९	४।२८
२२	६।४२	८।४६	१०।३०	११।५९	१३।२६	१५।३	१७।०	१९।१४	२१।३२	२३।५०	२।६	४।२५
२३	६।३८	८।४२	१०।२६	११।५५	१३।२२	१४।५९	१६।५६	१९।१०	२१।२८	२३।४६	२।२	४।२१
२४	६।३४	८।३८	१०।२२	११।५१	१३।१८	१४।५५	१६।५२	१९।६	२१।२४	२३।४२	१।५८	४।१७
२५	६।३०	८।३४	१०।१८	११।४७	१३।१४	१४।५१	१६।४८	१९।२	२१।२०	२३।३८	१।५४	४।१३
२६	६।२६	८।३०	१०।१४	११।४३	१३।१०	१४।४७	१६।४४	१८।५८	२१।१६	२३।३४	१।५०	४।९
२७	६।२२	८।२६	१०।१०	११।३९	१३।६	१४।४३	१६।४०	१८।५४	२१।१२	२३।३०	१।४६	४।५
२८	६।१८	८।२२	१०।६	११।३५	१३।२	१४।३९	१६।३६	१८।५०	२१।८	२३।२७	१।४२	४।१
२९	६।१४	८।१८	१०।२	११।३१	१२।५८	१४।३५	१६।३२	१८।४६	२१।४	२३।२२	१।३८	३।५७
३०	६।१०	८।१४	९।५८	११।२७	१२।५४	१४।३१	१६।२८	१८।४२	२१।०	२३।१८	१।३४	३।५३
३१	६।६	८।१०	९।५४	११।२३	१२।५०	१४।२७	१६।२४	१८।३८	२०।५६	२३।१४	१।३०	३।४९

विशेष जानकारी :- भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मस्थली ब्रजभूमि 'मथुरा' का उत्तरअक्षांश २७।२८ तथा ग्रीनविच से पूर्वरेखांश ७७।४१ है। तदनुसार पलभा ६ अंगुल १४ व्यंगुल तुल्य चरखण्ड ६२।५०।२१ परित्वेन बना सायन मेषादि लग्नमान पलात्मक २१७।२४९।३०१।३४३।३४९।३४१।३४१।३४९।३४३।३०१।२४९।२१७ है। इसी के अनुसार पृष्ठ (७२) पर छपी लग्न सारिणी बनाई गई है।

अंग्रेजी तारीख मासानुसार दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी में प्रयुक्त मेषादि लग्नोंका निरियन मान घंटा-मिनटों में इस प्रकार है- मेष १।३७ वृष १।५७ मिथुन २।२४ कर्क २।२८ सिंह २।२८ कन्या २।२६ तुला २।२९ वृश्चिक २।२७ धनु २।४ मकर १।४४ कुम्भ १।२९ मीन १ घं. २७ मि.। नोट :- अक्षांश भेद से लग्नमान कम ज्यादा हो जाता है। निरक्ष देश (भूमध्य रेखा) लंकोदय मान मेष २७९ वृष २९९ मिथुन ३२२ कर्क ३२२ सिंह २९९ कन्या २७९ यही मान उत्क्रम से पलात्मक तुलादि ६ राशि का होता है। यथा-

लंकोदया विघटिका गजमानिगाङ्कवस्त्रा, त्रिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः।
हीनान्विताञ्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थे-मेषादितोघटत उत्क्रमतास्त्वमेस्युः॥

श्री ब्रजभूमि पंचांग से भारत के प्रसिद्ध नगरों का लग्न परिवर्तन तालिका

नगर नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अयोध्या	-१७	-१५	-१४	-१५	-१६	-१८	-१९	-२१	-२२	-२२	-२०	-१८
अलीगढ़	-१	-१	-०	-०	-१	-१	-२	-२	-३	-३	-२	-२
अजमेर	+१६	+१६	+१६	+१६	+१५	+१२	+१०	+१०	+१०	+८	+१०	+११
अकबरपुर	-१८	-१६	-१५	-१५	-१७	-१९	-२१	-२३	-२४	-२२	-२२	-२०
अलवर	+५	+५	+५	+५	+५	+४	+३	+३	+३	+३	+३	+४
अनूपशहर	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-३
अमृतसर	+९	+५	+४	+५	+७	+१०	+१४	+१७	+१९	+१८	+१५	+१२
अमेठी	-१५	-१३	-११	-११	-१३	-१६	-१८	-२१	-२२	-२१	-१९	-१७
अगरतला	-५१	-४७	-४४	-४५	-४८	-५३	-५७	-६२	-६४	-६३	-६०	-५५
आगरा	-०	+१	+२	+२	+१	-१	-३	-४	-५	-४	-३	-१
उन्नाव	-१०	-८	-७	-७	-९	-११	-१३	-१५	-१६	-१५	-१४	-१२
कलकत्ता	-३८	-३३	-३०	-३१	-३५	-४२	-४८	-५२	-५६	-५४	-५०	-४४
कानपुर	-९	-७	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११
कुल्लू	-१	-४	-६	-५	-२	+१	+५	+९	+११	+१०	+८	+३
कोटा	+९	+१३	+१५	+१४	+१२	+८	+५	+२	+०	+१	+३	+७
कोहिमा	-६४	-६१	-६०	-५९	-६२	-६५	-६८	-७०	-७२	-७१	-६९	-६६
गान्तोक	-४२	-४१	-४१	-४१	-४२	-४२	-४५	-४६	-४७	-४७	-४६	-४३
गाँधीनगर	+२४	+२९	+३१	+३०	+२६	+२१	+१६	+११	+८	+९	+१३	+१९
गुना	+४	+७	+९	+८	+६	+२	-२	-५	-७	-७	-४	-०
ग्वालियर	-०	+२	+३	+३	+१	+१	-४	-६	-७	-७	-५	-२
चण्डीगढ़	+१	-१	-३	-२	-०	+३	+४	+७	+९	+८	+६	+४
चित्तौड़गढ़	+१४	+१८	+१९	+१९	+१६	+१३	+९	+६	+४	+५	+७	+११
जयपुर	+९	+११	+११	+११	+९	+८	+६	+४	+३	+४	+५	+७
जम्मू	+७	+३	+०	+१	+५	+१०	+१५	+२०	+२२	+२१	+१७	+१२
जबलपुर	-५	-०	+३	+२	-३	-८	-१३	-१८	-२१	-२०	-१६	-१०
जालन्धर	+५	+४	+२	+४	+५	+८	+११	+१३	+१५	+१४	+११	+९
जैसलमेर	+२८	+३०	+३१	+३०	+२९	+२७	+२५	+२४	+२३	+२४	+२५	+२७
जोधपुर	+२०	+२२	+२४	+२३	+२१	+१९	+१६	+१४	+१३	+१४	+१५	+१८
झांसी	-१	+२	+३	+३	+१	-३	-६	-९	-११	-१०	-८	-४
तिरूअनंतपुर	+१५	+३१	+४०	+३७	+२३	+६	-१३	-२९	-३७	-३४	-२१	-३
दतिया	-१	+२	+३	+३	+१	-२	-५	-८	-९	-९	-७	-४
दमोह	-४	+१	+२	+२	-१	-६	-११	-१५	-१७	-१६	-१३	-८
दिल्ली	+१	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+३	+३	+३	+२	+२
दिसपुर	-५६	-५२	-५१	-५१	-५४	-५६	-६०	-६२	-६३	-६३	-६१	-५८
देहरादून	-४	-५	-५	-५	-४	-२	-०	+१	+२	+२	-१	-१

नगर नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
नागपुर	+११	+१८	+२१	+२०	+१५	+७	-०	-६	-१०	-८	-३	+५
नासिक	+२२	+२९	+३४	+३२	+२६	+१७	+९	+२	-३	-१	+५	+१४
पटना	-२८	-२५	-२४	-२४	-२६	-२९	-३२	-३५	-३६	-३६	-३३	-३०
पणजी	+२५	+३६	+४३	+३९	+३०	+१८	+५	-५	-११	-९	-०	+१२
मुम्बई	+२६	+३५	+४०	+३२	+३१	+२१	+११	+४	-१	+१	+७	+१७
बहरायच	-१५	-१५	-१४	-१४	-१५	-१६	-१७	-१७	-१८	-१८	-१७	-१६
बाढ़मेर	+२७	+३०	+३१	+३०	+२९	+२६	+२३	+२१	+२०	+२०	+२२	+२५
बरेली	-७	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-८	-८	-८	-७	-७
बीकानेर	+१९	+२०	+२०	+२०	+२०	+१९	+१८	+१८	+१८	+१८	+१८	+१९
बुलन्दशहर	-०	-०	-०	-०	-०	-१	-१	-२	-२	-२	-२	-१
बंगलूर	+१२	+२५	+३१	+२९	+१८	+४	-११	-२४	-३१	-२८	-१७	-३
भरतपुर	+२	+३	+४	+४	+३	+१	-०	-२	-३	-२	-१	-१
भुवनेश्वर	-२९	-१९	-१५	-१७	-२३	-३१	-४०	-४६	-५१	-५०	-४३	-३४
भोपाल	+५	+१०	+१२	+१२	+८	+२	-३	-८	-१०	-९	-५	-०
मद्रास	+१	+१३	+२०	+१८	+७	-७	-२२	-३४	-४२	-४०	-२८	-१४
मुरादाबाद	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-५	-५
मेरठ	-१	-१	-१	-१	-१	-०	+०	+०	+१	+१	+०	+०
मैनपुरी	-४	-३	-२	-२	-३	-५	-७	-८	-९	-९	-७	-५
रांची	-२७	-२२	-१९	-२०	-२४	-२९	-३५	-४०	-४२	-४१	-३७	-३२
रेवाड़ी	+४	+५	+५	+५	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४
रोहतक	+४	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+५	+५	+५	+४	+४
लखनऊ	-१२	-१०	-९	-१०	-११	-१३	-१४	-१६	-१७	-१६	-१५	-१३
लुधियाना	+६	+३	+१	+२	+४	+६	+९	+११	+१३	+१३	+१०	+८
वाराणसी	-१९	-१६	-१४	-१४	-१७	-२०	-२४	-२७	-२९	-२८	-२५	-२२
सहारनपुर	-१	-१	-२	-२	-१	+१	+२	+४	+५	+४	+३	+२
सिक्किम	-४३	-४१	-४०	-४०	-४२	-४३	-४५	-४७	-४७	-४७	-४६	-४४
हाथरस	-०	+२	+३	+३	+२	+१	-३	-५	-७	-६	-४	-२
हिसार	+७	+७	+७	+७	+७	+८	+८	+८	+९	+९	+८	+८

लग्न परिवर्तन तालिका में लिखे नगरों में लग्नारम्भ जानने के लिए इच्छित नगर तथा राशि के नीचे लिखे मिनटों का धन-ऋण चिह्नानुसार संस्कार इस पंचांग में लिखे लग्न प्रवेश काल में करने से उक्त नगर में लग्न प्रारम्भ होने का समय निकल आयेगा।

टिप्पणी:- उपरोक्त संस्कार से संस्कृत लग्नारम्भ स्थूल होता है। सूक्ष्मता लाने के लिये लग्नों में वार्षिक संस्कार करना पड़ता है। वार्षिक संस्कार कोष्ठक पृष्ठ ८२ पर छपा है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म लग्न तो साम्पातिक काल के माध्यम से स्पष्ट होता है। अन्यथा ज्या-कोटिज्या गणित करना पड़ता है।

❁ लग्न सारिणी ❁

ब्रजेश्वरि श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण जी की लीलास्थली ब्रजभूमि अक्षांश २७।२८ पलभा ६।१४।१९ चरखण्ड ६२।५०।२१ अयनांश २४

अंशाः-	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५३	०	८	१५	२२	२९	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४८
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२४	३५	४६	५८	१०
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३२	४३	५५
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	७	१८	३०	४१	५३	५	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
५	५२	३	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
६	३३	४५	५६	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५६	८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
७	२०	३२	४३	५४	६	१८	३०	४१	५३	४	१५	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	३	१४	२६	३७	४८	०	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२२	३०	३९	४७	५६	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	११	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३४	४२	५१	५९	७	१५	२३	३०	३७	४४	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१६	२३	३०	३७	४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८	५५	२	१०	१७	२४	३१	३९	४६

पलभा ज्ञान सारणी

अंश	पलभा	अंश	पलभा
१	०।१२।३६	३१	७।१२।३८
२	०।२५।८	३२	७।२९।५५
३	०।३७।४३	३३	७।४७।३४
४	०।५०।१९	३४	८।५।३८
५	१।३।१०	३५	८।२४।८
६	१।१५।४०	३६	८।४२।५६
७	१।२८।२४	३७	९।२।३५
८	१।४१।१०	३८	९।२२।३२
९	१।५४।२	३९	९।४३।३
१०	२।६।५६	४०	१०।४।९
११	२।१९।५८	४१	१०।२५।५३
१२	२।३३।४	४२	१०।४८।१७
१३	२।४६।१४	४३	११।११।२४
१४	२।५९।२९	४४	११।३५।१८
१५	३।१३।१५	४५	१२।०।०
१६	३।२६।२५	४६	१२।२५।३३
१७	३।४०।६	४७	१२।५२।७
१८	३।५३।५५	४८	१३।१९।३७
१९	४।७।५३	४९	१३।४८।२५
२०	४।२२।४	५०	१४।१८।५
२१	४।३६।२४	५१	१४।४९।७
२२	४।५०।५२	५२	१५।२१।३१
२३	५।५।३८	५३	१५।५५।२६
२४	५।२०।३२	५४	१६।३१।१०
२५	५।३५।४४	५५	१७।१५।२५
२६	५।५१।८	५६	१७।४७।२८
२७	६।६।५०	५७	१८।२८।४३
२८	६।२२।५०	५८	१९।१२।१२
२९	६।३९।५	५९	१९।५८।१७
३०	६।५५।४३	६०	२०।४७।६

इष्ट बनाने की नूतन विधि- जिस दिन जिस टाइम का इष्ट बनाना हो तत्कालीन स्टैं.टाइम घंटा-मिनट में से उसी दिन का सूर्योदय घटा दें; शेष घंटादि इष्ट काल होगा। जिसे ढ़ाई से गुणाकर घटी-पल बना लें। (लग्न सारणी में लिखे अंक भी घटी पल होते हैं।) **स्मरण रहे--** जिस स्थान का इष्ट बनाना हो उसी स्थान का सूर्योदय घटावें।

उदाहरण- १ जनवरी को दिन में २ बजकर २३ मि. पर किसी का जन्म हुआ या किसी की पदनियुक्ति फल ज्ञानार्थ इष्ट बनाना है तो दिन के २।२३ को स्टैं.टाइम के अनुसार १४ घंटा २३ मिनट लिखकर उनमेंसे उसी दिन का सूर्योदय ७ घं. १३ मि. घटाया तो शेष ७ घं. १० मि. इष्ट काल हुआ। इसको २॥ से गुणा किया तो १७ घटी ५५ पल शुद्ध इष्टकाल सिद्ध हुआ। नोट- मध्य रात्रि १२ बजे के बाद का इष्ट बनानेके लिए २४ में जोड़कर तब सूर्योदय घटायें। जैसे- रात्रि २ बजे को २६ लिखें, ४ बजे को २८ घंटा लिखें इत्यादि।

लग्न ज्ञात कीजिये- तद्दिने रविराश्यांश तुल्य लग्न सारिणी से घट्यादि अनुपात फल लेकर इष्टघटी पलों में जोड़ दें। (जोड़ यदि ६० से अधिक हो तो ६० घटी घटाकर शेष) कुल योग तुल्य लग्न सारिणी में जहां समानांक मिलें, उसके बाई ओर लिखी लग्न (राशि) के ऊपर उस लग्न के भुवनांश होंगे। जिन अंकों से लग्न मिला है वही कला-विकला हैं ऐसा जानें।

उपरोक्त सारिणी में १ से ६० अक्षांश की अंगुल, व्यंगुल, प्रतिव्यंगुल पलभा दी गई है। ज्ञानार्थसूत्र- मथुरा का अक्षांश २७।२८ है, इसलिए अंश २८ की पलभा ६।२२।५० में से २७ की पलभा ६।६।५० को घटाया तो शेष १६ व्यंगुल रहे। अर्थात् १ कला बराबर १६ प्रतिव्यंगुल सिद्ध हुए। १६x२८ = ४४८÷६०=७ व्यंगुल २८ प्रतिव्यंगुल को २७ अक्षांश की पलभा ६।६।५० में जोड़ा तो ६।१४।१८ हुआ।

भारत के प्रसिद्ध नगरों में (भा.स्टै.टा के अनुसार) सूर्योदयास्त

मास	ता.	अयोध्या		अलीगढ		अलमोडा		आगरा		अहमदाबाद		उरई (जालौन)		कुल्लू		कानपुर		कलकत्ता		कोटा		गौहाटी असम		चण्डीगढ		जयपुर		जोधपुर		जबलपुर		जालन्धर		जम्मूकश्मीर	
		उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
अप्रैल	१	५।५६	१८।१४	६।१२	१८।३२	६।५	१८।२६	६।१२	१८।३२	६।३६	१८।५१	६।७	१८।२६	६।१५	१८।३७	६।३	१८।२२	५।३३	१७।४८	६।२२	१८।३१	५।१८	१७।३६	६।१७	१८।३७	६।२०	१८।४१	६।३४	१८।५२	६।७	१८।२२	६।१९	१८।४१	६।२३	१८।४६
	६	५।५१	१८।१७	६।६	१८।३५	५।५९	१८।२९	६।७	१८।३४	६।३२	१८।५३	६।२	१८।२८	६।९	१८।४०	५।५८	१८।२५	५।२९	१७।५०	६।१७	१८।४१	५।१३	१७।३८	६।११	१८।४०	६।१५	१८।४४	६।२९	१८।५५	६।२	१८।२३	६।१३	१८।४३	६।१७	१८।५०
	११	५।४७	१८।१७	६।१	१८।३७	५।५३	१८।३२	६।१	१८।३७	६।२७	१८।५५	५।५६	१८।३१	६।२	१८।४३	५।५२	१८।२७	५।२४	१७।५२	६।१२	१८।४३	५।८	१७।४१	६।६	१८।४२	६।११	१८।४७	६।२३	१८।५७	५।५७	१८।२५	६।७	१८।४७	६।११	१८।५३
	१६	५।४३	१८।१९	५।५५	१८।४०	५।४७	१८।३५	५।५६	१८।४०	६।२२	१८।५७	५।५१	१८।३३	५।५६	१८।४७	५।४७	१८।३०	५।२०	१७।५४	६।८	१८।४५	५।३	१७।४३	५।५९	१८।४६	६।६	१८।४९	६।१८	१९।०	५।५२	१८।२७	६।१	१८।५०	६।५	१८।५६
	२१	५।३८	१८।२२	५।५०	१८।४३	५।४२	१८।३८	५।५१	१८।४२	६।१८	१८।५८	५।४६	१८।३६	५।५१	१८।५०	५।४२	१८।३२	५।१५	१७।५५	६।३	१८।४८	४।५८	१७।४५	५।५३	१८।४९	६।१	१८।५१	६।१४	१९।२	५।४९	१८।२९	५।५५	१८।५३	५।५९	१८।५९
	२६	५।३३	१८।२५	५।४५	१८।४६	५।३७	१८।४१	५।४६	१८।४५	६।१६	१९।०	५।४२	१८।३८	५।४५	१८।५४	५।३८	१८।३५	५।१२	१७।५७	५।५९	१८।५०	४।५४	१७।४८	५।४८	१८।५२	५।५६	१८।५४	६।१०	१९।४	५।४७	१८।३१	५।५०	१८।५६	५।५३	१९।३
मई	१	५।२७	१८।२९	५।४१	१८।४८	५।३३	१८।४४	५।४३	१८।४८	६।११	१९।३	५।३८	१८।४१	५।४०	१८।५७	५।३४	१८।३८	५।८	१७।५९	५।५५	१८।५२	४।५०	१७।५०	५।४४	१८।५६	५।५२	१८।५७	६।५	१९।७	५।४१	१८।३३	५।४५	१८।५९	५।४८	१९।६
	६	५।२३	१८।३३	५।३८	१८।५१	५।२९	१८।४७	५।३९	१८।५०	६।७	१९।५	५।३५	१८।४३	५।३६	१९।१	५।३०	१८।४०	५।५	१८।२	५।५१	१८।५५	४।४६	१७।५३	५।३९	१८।५९	५।४८	१८।५९	६।२	१९।१०	५।३८	१८।३६	५।४०	१९।३	५।४३	१९।९
	११	५।१९	१८।३५	५।३४	१८।५४	५।२५	१८।५०	५।३५	१८।५३	६।३	१९।९	५।३१	१८।४६	५।३३	१९।४	५।२७	१८।४३	५।३	१८।४	५।४८	१८।५८	४।४३	१७।५६	५।३५	१९।३	५।४५	१९।२	५।५८	१९।१२	५।३५	१८।३८	५।३६	१९।७	५।३९	१९।१३
	१६	५।१६	१८।३८	५।३१	१८।५७	५।२२	१८।५३	५।३३	१८।५६	६।१	१९।१२	५।२९	१८।४८	५।२८	१९।८	५।२४	१८।४५	५।०	१८।६	५।४६	१९।०	४।४०	१७।५९	५।३१	१९।७	५।४२	१९।५	५।५५	१९।१५	५।३३	१८।४०	५।३३	१९।१०	५।३६	१९।१६
	२१	५।१५	१८।४१	५।२९	१८।५९	५।२०	१८।५६	५।३१	१८।५८	५।५९	१९।१४	५।२७	१८।५१	५।२५	१९।११	५।२२	१८।४८	४।५८	१८।८	५।४४	१९।२	४।३८	१८।१	५।२८	१९।१०	५।३९	१९।८	५।५३	१९।१७	५।३१	१८।४२	५।३०	१९।१३	५।३३	१९।१९
	२६	५।१३	१८।४३	५।२८	१९।२	५।१८	१८।५८	५।२९	१९।१	५।५८	१९।१६	५।२५	१८।५३	५।२३	१९।१४	५।२१	१८।५०	४।५६	१८।११	५।४२	१९।५	४।३६	१८।४	५।२५	१९।१३	५।३७	१९।११	५।५२	१९।२०	५।३०	१८।४४	५।२८	१९।१६	५।३०	१९।२३
	३१	५।१२	१८।४६	५।२७	१९।४	५।१७	१९।१	५।२८	१९।३	५।५८	१९।१८	५।२४	१८।५५	५।२२	१९।१८	५।२०	१८।५३	४।५५	१८।१३	५।४१	१९।७	४।३५	१८।६	५।२३	१९।१६	५।३५	१९।१३	५।५०	१९।२२	५।२९	१८।४७	५।२७	१९।२०	५।२८	१९।२६
जून	५	५।१०	१८।४८	५।२६	१९।६	५।१६	१९।३	५।२७	१९।५	५।५८	१९।१८	५।२४	१८।५७	५।२०	१९।१९	५।१९	१८।५४	४।५५	१८।१५	५।४०	१९।९	४।३४	१८।८	५।२३	१९।१९	५।३५	१९।१५	५।५०	१९।२५	५।२८	१८।४९	५।२५	१९।२२	५।२७	१९।२९
	१०	५।१०	१८।५०	५।२५	१९।८	५।१६	१९।५	५।२७	१९।७	५।५७	१९।२०	५।२४	१८।५९	५।२०	१९।२१	५।१९	१८।५७	४।५५	१८।१७	५।४०	१९।११	४।३४	१८।११	५।२२	१९।२१	५।३५	१९।१८	५।५०	१९।२६	५।२८	१८।५०	५।२५	१९।२५	५।२७	१९।३२
	१५	५।११	१८।५१	५।२६	१९।१०	५।१६	१९।७	५।२७	१९।९	५।५८	१९।२१	५।२४	१९।१	५।२०	१९।२४	५।२०	१८।५८	४।५५	१८।१८	५।४१	१९।१३	४।३४	१८।१२	५।२३	१९।२३	५।३५	१९।२०	५।४९	१९।२९	५।२८	१८।५२	५।२५	१९।२६	५।२७	१९।३४
	२०	५।११	१८।५३	५।२७	१९।११	५।१७	१९।८	५।२८	१९।१०	५।५९	१९।२३	५।२५	१९।२	५।२०	१९।२५	५।२१	१८।५९	४।५६	१८।२०	५।४२	१९।१४	४।३५	१८।१४	५।२३	१९।२५	५।३६	१९।२१	५।४९	१९।३१	५।२९	१८।५४	५।२५	१९।२७	५।२८	१९।३५
	२५	५।१३	१८।५४	५।२८	१९।१२	५।१८	१९।९	५।२९	१९।११	६।०	१९।२४	५।२६	१९।३	५।२२	१९।२६	५।२१	१९।१	४।५७	१८।२१	५।४२	१९।१५	४।३६	१८।१५	५।२४	१९।२६	५।३७	१९।२२	५।५०	१९।३१	५।३०	१८।५४	५।२७	१९।२८	५।२९	१९।३६
	३०	५।१४	१८।५४	५।२९	१९।१३	५।२०	१९।१०	५।३१	१९।१२	६।१	१९।२४	५।२७	१९।४	५।२४	१९।२६	५।२५	१९।१	४।५८	१८।२१	५।४४	१९।१६	४।३८	१८।१५	५।२६	१९।२५	५।३८	१९।२२	५।५३	१९।३२	५।३२	१८।५५	५।२९	१९।२८	५।३१	१९।३६
जुलाई	५	५।१६	१८।५४	५।३१	१९।१३	५।२२	१९।१०	५।३३	१९।१२	६।५	१९।२४	५।३१	१९।४	५।२८	१९।२६	५।२७	१९।२	५।०	१८।२२	५।४६	१९।१६	४।३९	१८।१५	५।२८	१९।२६	५।४०	१९।२२	५।५५	१९।३१	५।३४	१८।५५	५।३०	१९।२८	५।३३	१९।३६
	१०	५।१८	१८।५४	५।३३	१९।१३	५।२४	१९।८	५।३५	१९।११	६।७	१९।२३	५।३३	१९।३	५।३१	१९।२४	५।२९	१९।१	५।२	१८।२२	५।४८	१९।१६	४।४२	१८।१५	५।३०	१९।२६	५।४२	१९।२१	५।५७	१९।३१	५।३६	१८।५५	५।३२	१९।२७	५।३५	१९।३५
	१५	५।२०	१८।५४	५।३६	१९।११	५।२६	१९।८	५।३७	१९।१०	६।९	१९।२२	५।३५	१९।१	५।३३	१९।२२	५।३१	१९।०	५।४	१८।२१	५।५०	१९।१५	४।४४	१८।१४	५।३३	१९।२४	५।४५	१९।२०	५।५९	१९।३०	५।३८	१८।५४	५।३४	१९।२६	५।३७	१९।३४
	२०	५।२३	१८।५२	५।३८	१९।१०	५।२९	१९।७	५।३९	१९।९	६।११	१९।२१	५।३६	१९।०	५।३७	१९।२०	५।३३	१८।५७	५।६	१८।१९	५।५२	१९।१४	४।४६	१८।१२	५।३६	१९।२२	५।४८	१९।१८	६।१	१९।२९	५।४०	१८।५३	५।३७	१९।२५	५।४०	१९।३२
	२५	५।२५	१८।४९	५।४१	१९।७	५।३१	१९।४	५।४२	१९।७	६।१३	१९।१८	५।४०	१८।५७	५।४०	१९।१६	५।३६	१८।५४	५।८	१८।१८	५।५४	१९।१२	४।४९	१८।१०	५।३९	१९।१९	५।५०	१९।१६	६।३	१९।२७	५।४२	१८।५१	५।४१	१९।२१	५।४३	१९।२९
	३०	५।२८	१८।४६	५।४३	१९।५	५।३४	१९।२	५।४४	१९।५	६।१५	१९।१६	५।४२	१८।५४	५।४३	१९।१३	५।३८	१८।५१	५।१०	१८।१५	५।५७	१९।९	४।५१	१८।८	५।४२	१९।१६	५।५३	१९।१३	६।६	१९।२४	५।४४	१८।४९	५।४५	१९।१९	५।४७	१९।२६
अगस्त	४	५।३०	१८।४४	५।४५	१९।३	५।३६	१८।५८	५।४६	१९।२	६।१७	१९।१३	५।४५	१८।५१	५।४६	१९।८	५।४१	१८।४८	५।१३	१८।१३	५।५९	१९।६	४।५३	१८।५	५।४६	१९।१२	५।५६	१९।१०	६।९	१९।२१	५।४६	१८।४७	५।४८	१९।१५	५।५०	१९।२२
	९	५।३३	१८।४१	५।४८	१८।५९	५।३९	१८।५५	५।४९	१८।५८	६।१९	१९।९	५।४७	१८।४७	५।५०	१९।३	५।४३	१८।४४	५।१४	१८।१०	६।१	१९।३	४।५६	१८।१	५।४९	१९।७	५।५८	१९।६	६।१२	१९।१८	५।४८	१८।४४	५।५१	१९।१२	५।५३	१९।१७
	१४	५।३५	१८।३७	५।५०	१८।५५	५।४२	१८।५०	५।५१	१८।५४	६।२१	१९।५	५।४९	१८।४३	५।५३	१८।५८	५।४५	१८।३९	५।१६	१८।६	६।४	१८।५९	४।५८	१७।५७	५।५२	१९।२	६।१	१९।२	६।१४	१९।१४	५।५०	१८।४०	५।५४	१९।६	५।५६	१९।१२
	१९	५।३८	१८।३२	५।५३	१८।५०	५।४५	१८।४५	५।५४	१८।५०	६।२३	१९।१	५।५१	१८।३८	५।५६	१८।५२	५।४८	१८।३५	५।१८	१८।२	६।६	१८।५५	५।१	१७।५३	५।५६	१८।५७	६।३	१८।५७	६।१६	१९।१०	५।५२	१८।३६	५।५६	१९।०	६।०	१९।६
	२४	५।४०	१८।२८	५।५५	१८।४५	५।४७	१८।४०	५।५६	१८।४५	६।२५	१८।५७	५।५४	१८।३३	५।५९	१८।४६	५।५०	१८।३०	५।२०	१७।५८	६।८	१८।५०	५।३	१७।४८	५।५९	१८।५१	६।५	१८।५३	६।१८	१९।६	५।५४	१८।३२	६।०	१८।५५	६।३	१९।१
	२९	५।४२	१८।२२	५।५८	१८।४०	५।५०	१८।३५	५।५९	१८।३९	६।२६	१८।५२	५।५६	१८।२८	६।२	१८।४०	५।५२	१८।२४	५।२१	१७।५४	६।१०	१८।४५	५।५	१७।४३	६।१	१८।४६	६।७	१८।४८	६।२०	१९।१	५।५५	१८।२७	६।३	१८।४९	६।६	१८।५६
सितम्बर	३	५।४५	१८।१७	६।०	१८।३४	५।५३	१८।२९	६।१	१८।३४	६।२८	१८।४७	५।५८	१८।२२	६।५	१८।३४	५।५४	१८।१९	५।२३	१७।४९	६।१२	१८।४०	५।७	१७।३८	६।४	१८।४०	६।९	१८।४२	६।२३	१८।५५	५।५७	१८।२३	६।५	१८।४३	६।९	१८।५०
	८	५।४७	१८।११	६।३	१८।२८	५।५५	१८।२३	६।३	१८।२८	६।२९	१८।४२	६।०	१८।१६	६।८	१८।२७	५।५७	१८।१३	५।२४	१७।४४	६।१४	१८।३५	५।९	१७।३३	६।७	१८।३४	६।१२	१८।३७	६।२५	१८।४९	५।५८	१८।१८	६।८	१८।३७	६।१२	१८।४४
	१३	५।४९	१८।५	६।५	१८।२२	५।५८	१८।१७	६।६	१८।२२	६।३१	१८।३७	६।३	१८।११	६।११	१८।२१	६।०	१८।८	५।२६	१७।४०	६।१५	१८।३०	५।११	१७।२७	६।१०	१८।२८	६।१४	१८।३१	६।२७	१८।४३	६।०	१८।१३	६।११	१८।३१	६।१५	१८।३७
	१८	५।५१	१७।५९	६।८	१८।१६	६।१	१८।१०	६।८	१८।१६	६।३२	१८।३२	६।५	१८।५	६।१४	१८।१४	६।१	१८।१	५।२७	१७।३४	६।१७	१८।२४	५।१३	१७।२२	६।१२	१८।२१	६।१७	१८।२६	६।३०	१८।३८	६।१	१८।८	६।१५	१८।२५	६।१८	१८।३०
	२३	५।५४	१७।५४	६।१०	१८।१०	६।४	१८।४	६।११	१८।११	६।३३	१८।२७	६।७	१८।०	६।१७	१८।८	६।४	१७।५५	५।२९	१७।२९	६।१९	१८।१९	५।१५	१७।१६	६।१५	१८।१५	६।१८	१८।२०	६।३३	१८।३२	६।३	१८।३	६।१८	१८।१८	६।२१	१८।२४
	२८	५।५५	१७।४९	६।१३	१८।४	६।७	१७।५८	६।१३	१८।५	६।३४	१८।२३	६।१०	१७।५५	६।२०	१८।३	६।७	१७।५०	५।३०	१७।२५	६।२१	१८।१४	५।१७	१७।११	६।१७	१८।१०	६।२०	१८।१४	६।३४	१८।२७	६।४	१७।५८	६।२१	१८।१२	६।२४	१८।१७

भारत के प्रसिद्ध नगरों में (भा.स्टै.टा के अनुसार) सूर्योदयास्त

मास	तारीख	अयोध्या अक्षांश २६।४८ रेखांश ८२।१४		अलीगढ़ अक्षांश २७।५४ रेखांश ७८। ५		अलमोड़ा अक्षांश २९।३७ रेखांश ७९।४०		आगरा अक्षांश २७।११ रेखांश ७८। २		अहमदाबाद अक्षांश २३। २ रेखांश ७२।३८		उरई(जालौन) अक्षांश २५।५९ रेखांश ७९।२७		कुल्लू अक्षांश ३१।५८ रेखांश ७७। ६		कानपुर अक्षांश २६।२७ रेखांश ८०।२१	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
अक्टूबर	३	५।५६	१७।४५	६।१६	१७।५८	६।१०	१७।५१	६।१५	१७।५९	६।३५	१८।२२	६। ९	१७।५३	६।२०	१८। १	६। ६	१७।५०
	८	६। १	१७।३७	६।१८	१७।५२	६।१३	१७।४५	६।१८	१७।५३	६।३७	१८।१८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५५	६। ९	१७।४४
	१३	६। ३	१७।३१	६।२१	१७।४७	६।१६	१७।४०	६।२१	१७।४७	६।३९	१८।१३	६।१५	१७।४३	६।२७	१७।४९	६।११	१७।३९
	१८	६। ६	१७।२६	६।२४	१७।४२	६।१९	१७।३४	६।२४	१७।४२	६।४२	१८। ९	६।१७	१७।३८	६।३१	१७।४३	६।१४	१७।३४
	२३	६।१०	१७।२२	६।२८	१७।३७	६।२३	१७।२९	६।२७	१७।३८	६।४३	१८। ५	६।२०	१७।३३	६।३४	१७।३८	६।१७	१७।२९
	२८	६।१२	१७।१८	६।३१	१७।३२	६।२६	१७।२४	६।३१	१७।३२	६।४६	१८। १	६।२३	१७।२९	६।३९	१७।३२	६।२०	१७।२५
नवम्बर	२	६।१६	१७।१४	६।३४	१७।२९	६।३०	१७।२०	६।३३	१७।२९	६।४९	१७।५८	६।२६	१७।२५	६।४२	१७।२८	६।२३	१७।२१
	७	६।१९	१७।११	६।३८	१७।२५	६।३३	१७।१७	६।३७	१७।२६	६।५२	१७।५५	६।३०	१७।२२	६।४७	१७।२४	६।२७	१७।१८
	१२	६।२२	१७। ८	६।४१	१७।२३	६।३७	१७।१४	६।४०	१७।२४	६।५५	१७।५३	६।३३	१७।२०	६।५१	१७।२१	६।३०	१७।१५
	१७	६।२६	१७। ६	६।४५	१७।२१	६।४१	१७।११	६।४४	१७।२२	६।५८	१७।५१	६।३७	१७।१८	६।५६	१७।१७	६।३४	१७।१४
	२२	६।३०	१७। ४	६।४९	१७।१९	६।४५	१७।१०	६।४८	१७।२०	७। १	१७।५०	६।४०	१७।१६	७। ०	१७।१५	६।३७	१७।१२
	२७	६।३४	१७। ४	६।५३	१७।१८	६।४९	१७। ९	६।५१	१७।२०	७। ४	१७।५०	६।४४	१७।१६	७। ५	१७।१४	६।४१	१७।१२
दिसम्बर	२	६।३७	१७। ३	६।५६	१७।१८	६।५३	१७। ९	६।५५	१७।२०	७। ८	१७।५०	६।४७	१७।१६	७। ९	१७।१३	६।४४	१७।११
	७	६।४२	१७। ३	७। ०	१७।१९	६।५६	१७। ९	६।५८	१७।२०	७।११	१७।५१	६।५१	१७।१७	७।१३	१७।१३	६।४८	१७।१२
	१२	६।४५	१७। ५	७। ३	१७।२०	७। ०	१७।१०	७। २	१७।२१	७।१४	१७।५२	६।५४	१७।१८	७।१६	१७।१४	६।५१	१७।१३
	१७	६।४८	१७। ६	७। ६	१७।२२	७। ३	१७।१२	७। ५	१७।२३	७।१७	१७।५४	६।५७	१७।२०	७।१९	१७।१६	६।५४	१७।१५
	२२	६।५१	१७। ७	७। ९	१७।२४	७। ५	१७।१४	७। ७	१७।२५	७।२०	१७।५६	६।५९	१७।२३	७।२२	१७।१८	६।५७	१७।१८
	२७	६।५३	१७।११	७।११	१७।२७	७। ८	१७।१७	७।१०	१७।२८	७।२२	१७।५९	७। २	१७।२५	७।२४	१७।२१	६।५९	१७।२०
जनवरी	१	६।५५	१७।१५	७।१३	१७।३०	७।१०	१७।२०	७।११	१७।३१	७।२४	१८। २	७। ४	१७।२८	७।२६	१७।२४	७। १	१७।२३
	६	६।५६	१७।१८	७।१४	१७।३३	७।१०	१७।२४	७।१३	१७।३५	७।२५	१८। ५	७। ५	१७।३१	७।२७	१७।२८	७। २	१७।२७
	११	६।५६	१७।२२	७।१४	१७।३७	७।११	१७।२७	७।१३	१७।३८	७।२६	१८। ९	७। ५	१७।३५	७।२७	१७।३२	७। ३	१७।३०
	१६	६।५६	१७।२६	७।१४	१७।४१	७।११	१७।३१	७।१३	१७।४२	७।२६	१८।१२	७। ५	१७।३८	७।२६	१७।३६	७। ३	१७।३४
	२१	६।५५	१७।२९	७।१३	१७।४५	७।१०	१७।३५	७।१३	१७।४६	७।२६	१८।१६	७। ५	१७।४२	७।२५	१७।४०	७। २	१७।३८
	२६	६।५४	१७।३४	७।१२	१७।४८	७। ८	१७।३९	७।११	१७।५०	७।२५	१८।१९	७। ३	१७।४६	७।२३	१७।४५	७। १	१७।४२
	३१	६।५१	१७।३७	७।१०	१७।५२	७। ६	१७।४३	७। ९	१७।५३	७।२४	१८।२२	७। २	१७।५०	७।२०	१७।५०	६।५९	१७।४५
फरवरी	५	६।४९	१७।४१	७। ७	१७।५६	७। ३	१७।४८	७। ७	१७।५७	७।२२	१८।२६	६।५९	१७।५३	७।१७	१७।५५	६।५७	१७।४९
	१०	६।४५	१७।४५	७। ४	१८। ०	७। ०	१७।५२	७। ४	१८। १	७।१९	१८।२९	६।५७	१७।५७	७।१२	१८। ०	६।५४	१७।५२
	१५	६।४२	१७।४८	७। ०	१८। ४	६।५६	१७।५५	७। १	१८। ४	७।१६	१८।३२	६।५३	१८। ०	७। ८	१८। ४	६।५०	१७।५६
	२०	६।३८	१७।५२	६।५६	१८। ७	६।५१	१७।५९	६।५६	१८। ८	७।१२	१८।३५	६।४९	१८। ३	७। ३	१८। ८	६।४६	१७।५९
	२५	६।३३	१७।५५	६।५१	१८।११	६।४६	१८। ३	६।५१	१८।११	७। ८	१८।३७	६।४४	१८। ६	६।५८	१८।१२	६।४२	१८। २
मार्च	२	६।२८	१७।५८	६।४६	१८।१४	६।४१	१८। ७	६।४६	१८।१४	७। ४	१८।४०	६।४०	१८। ९	६।५३	१८।१६	६।३६	१८। ६
	७	६।२३	१८। १	६।४१	१८।१७	६।३५	१८।१०	६।४१	१८।१८	७। ०	१८।४२	६।३५	१८।१२	६।४६	१८।२०	६।३१	१८। ८
	१२	६।१९	१८। ४	६।३५	१८।२०	६।२९	१८।१३	६।३५	१८।२२	६।५५	१८।४४	६।२९	१८।१५	६।४०	१८।२३	६।२६	१८।११
	१७	६।१३	१८। ७	६।३०	१८।२३	६।२३	१८।१७	६।३०	१८।२४	६।५०	१८।४६	६।२४	१८।१८	६।३४	१८।२७	६।२०	१८।१४
	२२	६। ७	१८। ९	६।२४	१८।२६	६।१७	१८।२०	६।२४	१८।२६	६।४६	१८।४८	६।१८	१८।२१	६।२८	१८।३१	६।१५	१८।१७
	२७	६। २	१८।१२	६।१९	१८।२९	६।११	१८।२३	६।१८	१८।२९	६।४१	१८।४९	६।१३	१८।२३	६।२२	१८।३३	६। ९	१८।१९

मास	तारीख	कलकत्ता अक्षांश २२।३४ रेखांश ८८।२३		कोटा अक्षांश २५।११ रेखांश ७५।५०		गोहाटीअसम अक्षांश २६।११ रेखांश ९१।४५		चण्डीगढ़ अक्षांश ३०।४४ रेखांश ७६।५२		जयपुर अक्षांश २६।५५ रेखांश ७५।५२		जोधपुर अक्षांश २६।१९ रेखांश ७३। ४		जबलपुर अक्षांश २३।१० रेखांश ७९।५९		जालन्धर अक्षांश ३१।१९ रेखांश ७५।३४		जम्मूकश्मीर अक्षांश ३२।४८ रेखांश ७४।५४	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
अक्टूबर	३	५।३२	१७।२०	६।२३	१८। ८	५।२०	१७। ५	६।२०	१८। ३	६।२३	१८। ९	६।३६	१८।२१	६। ६	१७।५३	६।२३	१८। ५	६।२८	१८।११
	८	५।३४	१७।१५	६।२५	१८। ३	५।२२	१७। ०	६।२४	१७।५७	६।२६	१८। ४	६।३८	१८।१५	६। ७	१७।४८	६।२६	१७।५९	६।३१	१८। ५
	१३	५।३५	१७।१०	६।२७	१७।५९	५।२४	१६।५५	६।२७	१७।५१	६।२८	१७।५८	६।४१	१८।१०	६। ९	१७।४४	६।३०	१७।५३	६।३४	१७।५९
	१८	५।३७	१७। ६	६।३०	१७।५४	५।२७	१६।५०	६।३०	१७।४५	६।३१	१७।५३	६।४४	१८। ५	६।१२	१७।३९	६।३४	१७।४९	६।३७	१७।५३
	२३	५।४०	१७। २	६।३२	१७।५०	५।३०	१६।४५	६।३४	१७।४०	६।३४	१७।४९	६।४७	१८। ०	६।१४	१७।३५	६।३७	१७।४३	६।४१	१७।४८
	२८	५।४२	१६।५९	६।३५	१७।४६	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।३५	६।३७	१७।४४	६।५०	१७।५७	६।१६	१७।३२	६।४१	१७।३६	६।४५	१७।४३
नवम्बर	२	५।४५	१६।५६	६।३८	१७।४३	५।३६	१६।३८	६।४१	१७।३१	६।४०	१७।४०	६।५३	१७।५३	६।१९	१७।२८	६।४५	१७।३४	६।४९	१७।३८
	७	५।४८	१६।५३	६।४२	१७।४०	५।३९	१६।३४	६।४५	१७।२७	६।४३	१७।३७	६।५६	१७।५०	६।२२	१७।२५	६।५०	१७।३०	६।५३	१७।३४
	१२	५।५१	१६।५१	६।४५	१७।३७	५।४३	१६।३२	६।५०	१७।२४	६।४७	१७।३४	७। ०	१७।४७	६।२५	१७।२३	६।५४	१७।२७	६।५८	१७।३०
	१७	५।५४	१६।४९	६।४८	१७।३५	५।४६	१६।३०	६।५४	१७।२१	६।५१	१७।३२	७। ४	१७।४५	६।२८	१७।२२	६।५८	१७।२४	७। ३	१७।२७
	२२	५।५७	१६।४८	६।५२	१७।३४	५।५०	१६।२८	७। ०	१७।१८	६।५५	१७।३१	७। ७	१७।४२	६।३१	१७।२१	७। २	१७।२२	७। ८	१७।२५
	२७	६। १	१६।४८	६।५५	१७।३३	५।५४	१६।२८	७। ४	१७।१६	६।५९	१७।३१	७।१०	१७।४२	६।३५	१७।२०	७। ७	१७।२१	७।१२	१७।२४
दिसम्बर	२	६। ४	१६।४८	६।५९	१७।३३	५।५७	१६।२७	७। ८	१७।१५	७। २	१७।३१	७।१३	१७।४२	६।३९	१७।२०	७।१०	१७।२१	७।१६	१७।२४
	७	६। ७	१६।४८	७। ४	१७।३३	६। १	१६।२८	७। २	१७।१६	७। ६	१७।३१	७।१७	१७।४३	६।४२	१७।२१	७।१४	१७।२१	७।२०	१७।२४
	१२	६।१०	१६।५०	७। ६	१७।३४	६। ४	१६।२९	७।१६	१७।१७	७। ९	१७।३२	७।२१	१७।४४	६।४५	१७।२३	७।१८	१७।२२	७।२३	१७।२५
	१७	६।१३	१६।५१	७। ९	१७।३६	६। ७	१६।३१	७।१९	१७।१९	७।१२	१७।३४	७।२५	१७।४५	६।४८	१७।२४	७।२२	१७।२४	७।२६	१७।२६
	२२	६।१६	१६।५४	७।१२	१७।३८	६।१०	१६।३२	७।२१	१७।२०	७।१५	१७।३६	७।२८	१७।४६	६।५०	१७।२७	७।२६	१७।२६	७।२९	१७।२८
	२७	६।१८	१६।५६	७।१४	१७।४१	६।१२	१६।३५	७।२३	१७।२३	७।१७	१७।३८	७।३०	१७।५०	६।५३	१७।२९	७।२८	१७।३०	७।३१	१७।३१
जनवरी	१	६।२०	१६।५९	७।१६	१७।४४	६।१४	१६।३९	७।२५	१७।२७	७।१९	१७।४१	७।३०	१७।५३	६।५५	१७।३३	७।२८	१७।३२	७।३३	१७।३४
	६	६।२२	१७। ३	७।१७	१७।४८	६।१४	१६।४२	७।२७	१७।३०	७।१९	१७।४४	७।३२	१७।५७	६।५६	१७।३६	७।२९	१७।३६	७।३४	१७।३७
	११	६।२२	१७। ६	७।१८	१७।५१	६।१४	१६।४६	७।२७	१७।३३	७।१९	१७।४८	७।३३	१८। १	६।५७	१७।३९	७।२९	१७।४०	७।३४	१७।४१
	१६	६।२२	१७।१०	७।१८	१७।५५	६।१४	१६।४९	७।२६	१७।३८	७।१९	१७।५४	७।३३	१८। ३	६।५७	१७।४३	७।२८	१७।४३	७।३३	१७।४६
	२१	६।२२	१७।१३	७।१७	१७।५९	६।१३	१६।५३	७।२५	१७।४३	७।१९	१७।५७	७।३३	१८। ७	६।५७	१७।४६	७।२७	१७।४८	७।३२	१७।५१
	२६	६।२१	१७।१६	७।१५	१८। ३	६।१३	१६।५७	७।२२	१७।४८	७।१८	१८। १	७।३१	१८।११	६।५५	१७।५०	७।२५	१७।५२	७।३०	१७।५६
	३१	६।२०	१७।२०	७।१४	१८। ६	६।१२	१७। १	७।१९	१७।५३	७।१६	१८। ५	७।२९	१८।१६	६।५४	१७।५३	७।२३	१७।५६	७।२७	१८। ०
फरवरी	५	६।१८	१७।२३	७।११	१८।१०	६। ९	१७। ५	७।१६	१७।५८	७।१३	१८। ९	७।२६	१८।१९	६।५२	१७।५६	७।२०	१८। ०	७।२४	१८। ५
	१०	६।१५	१७।२६	७। ८	१८।१३	६। ६	१७। ८	७।१२	१८। २	७।१०	१८।१३	७।२३	१८।२३	६।४९	१७।५९	७।१७	१८। ५	७।२०	१८।१०
	१५	६।१२	१७।२९	७। ५	१८।१६	६। ३	१७।१२	७। ७	१८। ६	७। ६	१८।१६	७।२०	१८।२६	६।४६	१८। २	७।१२	१८। ९	७।१६	१८।१४
	२०	६। ९	१७।३२	७। १	१८।२०	५।५९	१७।१५	७। २	१८।१०	७। २	१८।१९	७।१६	१८।३०	६।४३	१८। ५	७। ८	१८।१४	७।११	१८।१८
	२५	६। ५	१७।३४	६।५७	१८।२३	५।५५	१७।१८	६।५८	१८।१४	६।५८	१८।२२	७।१२	१८।३३	६।३९	१८। ७	७। २	१८।१७	७। ६	१८।२२
मार्च	२	६। १	१७।३७	६।५३	१८।२५	५।५०	१७।२१	६।५२	१८।१८	६।५४	१८।२५	७। ७	१८।३७	६।३५	१८।१०	६।५५	१८।१९	७। ०	१८।२६
	७	५।५७	१७।३९	६।४८	१८।२८	५।४५	१७।२४	६।४७	१८।२१	६।४९	१८।२८	७। २	१८।३९	६।३०	१८।१२	६।४८	१८।२२	६।५४	१८।२९
	१२	५।५२	१७।४२	६।४३	१८।३०	५।४०	१७।२६	६।४२	१८।२४	६।४४	१८।३१	६।५६	१८।४२	६।२६	१८।१५	६।४२	१८।२६	६।४८	१८।३१
	१७	५।४८	१७।४३	६।३८	१८।३२	५।३५	१७।२९	६।३५	१८।२८	६।३८	१८।३३	६।५१	१८।४५	६।२१	१८।१७	६।३६	१८।३०	६।४२	१८।३६
	२२	५।४३	१७।४४	६।३३	१८।३५	५।२९	१७।३१	६।२९	१८।३१	६।३२	१८।३६	६।४५	१८।४७	६।१६	१८।१८	६।३०	१८।३४	६।३६	१८।३९
	२७	५।३८	१७।४६	६।२८	१८।३८	५।२४	१७।३४	६।२३	१८।३४	६।२६	१८।३८	६।४०	१८।५०	६।१२	१८।२०	६।२४	१८।३७	६।२९	१८।४२

अथ दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी) अयनांश:२४

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५
०	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८
वृष	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११
१	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३
मिथुन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६
२	५५	६	१७	२८	३८	४८	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६
कर्क	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१
३	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३
सिंह	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६
४	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६
कन्या	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
५	४	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४
तुला	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५
६	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८
वृश्चि.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१
७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३
धनु	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
८	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६
मकर	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१
९	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६
१०	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१
११	४	१४	३३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
०	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृष	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
मिथुन	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९
२	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
कर्क	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
सिंह	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
४	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
कन्या	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३
५	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५३	५	१५	२४	३३
तुला	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८
६	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृश्चि.	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	१४	२५	४५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
धनु	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९
८	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
मकर	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५३	२	१२
कुम्भ	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
मीन	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
११	२३	२३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३४

दिनके नत बनानेकी विधि:- दिनार्ध(दिनका आधा)से कम इष्ट हो तो दिनार्ध में से इष्ट को हीन करने से पूर्व नत होता है। मध्याह्न पश्चात् का इष्ट हो तो जितना दिन शेष रहे, उसको दिनार्ध में से घटा दें, शेष पश्चिम नत होगा।

रात्रिके नत बनानेकी विधि- रात्र्यर्ध(रात्रिमान का आधा)के पूर्व का इष्ट हो तो गतरात्रि (सूर्यास्त के बाद इष्टकाल तक जितना समय बीते उसमें) दिनार्ध युक्त करने से पश्चिम नत होता है। रात्र्यर्ध के पश्चात् का इष्टकाल हो तो (इष्टकालके बाद अगले दिन सूर्योदय तक) शेष रात्रि में दिनार्ध युक्त करने से पूर्वनत होता है। नत को इष्ट मानकर लग्नवत् क्रिया करें। ध्यान रहे नत पश्चिम हो तो धन करना और नत पूर्व हो तो हीन करना, फिर उसे दशम सारणी में देखें। जिस कोष्ठक में समानांक मिलें उसके बांई ओर लिखी राशि दशम लग्न एवं ऊपर लग्नांश स्पष्ट होंगे। जिन अंकों से दशमलग्न सिद्ध हुआ वही कलाविकला है। पूर्वउदाहरण:- १जनवरी १९९३दिनके घं.२मि.२३बजे इष्ट घट्यादि १७।५५पर दशम लग्न जानने के लिए पहले नत बनाइये। मथुराका दिनमान २५।४६का आधा घटी१२ पल५३दिनार्ध हुआ। इष्टकाल मध्याह्नके बाद का है, इसलिए दिनमानमें से इष्ट १७।५५घटाया तो दिनशेष ७घं.५१पल रहा जिसे दिनार्ध १२।५३में बाद किया तो ५घटी २पल दिवानत पश्चिमसिद्ध हुआ। रविराश्यांशतुल्य लग्नसारणीसे प्राप्तांक ४९।३में नत ५।२ पश्चिम होनेके कारण जोड़ा तो कुलयोग ५४।५हुए। जिन्हें दशम सारणी में देखा तो दशम लग्न मकरके २८अंश पर सिद्ध हुई।

दशमलग्न- भावसाधनकी भारतमें चार पद्धतियाँ है। जिनमें सबसे सरलरीति लग्न (नतादि)द्वादशभाव समान रूपेण ३०अंश के होते है। लग्नस्पष्ट में १५अंश जोड़ने पर प्रथम भावकी संधि होगी। पुनः १५अंश जोड़ने पर दूसरा भाव स्पष्ट हो जायेगा। इसी प्रकार आगे जोड़ने से ससंधि द्वादश भाव स्पष्ट हो जायेंगे। महर्षि पराशरजीने भावलग्न और होरालग्नको पृथक-पृथक कहा है। यथा-''अथाहं संप्रवक्ष्यामि तवाग्रे द्विगसत्तम-भाव-होरा घटी संज्ञ लग्नानीति पृथक्-पृथक्॥'' **भावलग्न साधन प्रकार:-** इष्टकाल के घट्यादि को ६से गुणा करने पर गुणनफल अंशादि को उदयकालीन स्पष्ट सूर्यमें जोड़नेसे प्रथमभाव(लग्न) स्पष्ट होता है। इसमें उपरोक्त क्रिया करनेसे द्वादशभाव स्पष्ट करनेके प्रबल समर्थक अनेकों ज्योतिर्विद है। इनके अतिरिक्त त्रिकोणमिति से भी भाव सिद्ध हो जाते है, लेकिन वह कठिन है। मेरे विचारसे पहली विधि सर्वश्रेष्ठ है। देखें'मुहूर्त्त मार्तण्ड','ज्योतिष रहस्य','बृहज्ज्योतिषसार'आदि ग्रंथो में।

पंचांग परिवर्तन विधि

श्रीव्रजभूमि पंचांग से आप किसीभी स्थानका सूर्योदयास्त, दिनमान एवं तिथ्यादि पूर्ण शुद्ध पंचांग बना सकते है। **सूर्योदयास्त बनानेकी विधि:-** जिस नगर का सूर्योदयास्त बनाना हो उसी नगर के सामने (स्वदेशकाल-सुबोधिनी तालिका से) देशान्तर मिनट धन हो तो ऋण और यदि ऋण हो तो धन संस्कार मथुरा के सूर्योदय में करने से इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय प्राप्त हो जायेगा।

अभीष्ट दिन रविक्रान्ति व स्वस्थानीय अक्षांश तुल्य चरान्तर मिनटों का संस्कार मध्यम सूर्योदय में करने से स्पष्ट सूर्योदय होगा। चरान्तर मिनटों को ५से गुणाकर लब्ध पलों का विपरीत (धन को ऋण व ऋण को धन) संस्कार मथुरा के दिनमान में करने से इष्ट दिन, अभीष्ट स्थानीय (जहां का आप करना चाहते है।) स्पष्ट दिनमान हो जायेगा। दिनमानको ढ़ाईसे भागकर लब्धघंटादिको सूर्योदयमें जोड़नेसे सूर्यास्तकाल होता है।

तिथ्यादि साधनम्:- इष्ट नगरीय सूर्योदयान्तर मिनटोंके पल बनाकर(सूर्योदय पहलेका हो तो)इस पंचांगके तिथ्यादि मान(समाप्तिकाल)में जोड़ दें और यदि इष्टस्थान पर सूर्योदय बादमें हो तो घटाने पर इष्टनगरीय स्पष्ट तिथ्यादि मान हो जायेगा।

दूसरी विधियाँ:- स्थानीय अक्षांश व इष्ट दिन रवि क्रान्तितुल्य चरपल सारणी से चरपल लेकर उन्हें दूना करके घटीपल बना लें। दुगुणित चरपल(घटी-पलों) को उत्तर क्रान्ति (धन) हो तो ३०घटीमें जोड़ दें। रविक्रान्ति दक्षिण ऋण हो तो ३०में से घटाने पर स्पष्ट दिनमान होगा। दिनमान को पांच से भाग करने पर लब्ध स्थानीय सूर्यास्तकाल होगा। सूर्यास्तकालके घंटामिनटों को १२में घटानेपर सूर्योदय होगा। स्थानीय सूर्योदयास्तको भा.स्टै.टा में परिवर्तन करनेके लिए रेलवे मध्यान्तर(समयान्तर) मिनटादि **''देशकाल सुबोधिनी तालिका''** के कालम नं.४ से धन-ऋण चिह्नानुसार संस्कार करें, पुनःवेलान्तर संस्कार यथावत् करने पर भा.स्टै.टा के अनुसार अभीष्ट स्थानीय सूर्योदयास्तका समय स्पष्ट हो जायेगा।

तिथ्यादि साधनम्:- श्रीव्रजभूमि पंचांगमें उल्लिखित भा.स्टै.टा. के अनुसार तिथ्यादि समाप्तिकालमें स्वस्थानीय स्पष्ट सूर्योदय घटाकर ढ़ाई से गुणा करने पर तिथि, नक्षत्र योगादि का शुद्ध समाप्तिकाल घटीपलों में आ जायेगा। पाठकों की सुविधा के लिए ८ से ३६ उत्तर अक्षांश की चरपल सारणी पंचांग में पृ.७८ पर छपी है।

टिप्पणी- भारत से बाह्य देशों में सूर्योदयास्त जानने के लिए तद्देशीय (S.T.) का प्रयोग करें। तिथि, नक्षत्र योगादि में पूर्व की ओर चालन धन व पश्चिम दिशा में ऋण होता है। ग्रहों में इसके विपरीत जानना चाहिए।

ग्रहों की मध्यम गति:- दैनिक मध्यम गति ०.९८५६से राशिपथ पर सूर्य भ्रमण करता हुआ भगणों का भोग कर रहा है। चन्द्रादि अन्य ग्रहों की गति इस प्रकार से है- चन्द्र १३.१७६, मंगल ०.५२४०, बुध ४.०९२३, गुरु ०.०८३१, शुक्र १.६०२१, शनि ०.०३३५, राहु ०.०५३, हर्षल(वरुण) ०.०११७, नेपच्यून(इन्द्र) ०.००६०, अंश के बाद दशमलव संख्याओं को ६०से गुणा करने पर कला पुनः ६०से गुणा करने पर विकला आ जाती है।

ग्रहों का भगण काल:- सूर्य ३६५.२५६, चन्द्र २९दिन ३१ध५०.१ मंगल ६८६.९७९, बुध ८७.९६९ गुरु ४३३२.५८४, शुक्र २२४.७००, शनि १०७५९.२१९, राहु ६७९३.३९१, वरुण(हर्शल)३०६८६.६१४, इन्द्र (नेपच्यून)६०१८६.६३५

भारत के प्रसिद्ध नगरों में (भा.स्टै.टा के अनुसार) सूर्योदयास्त

मास	तिथि	दिल्ली अक्षांश २८।३८ रेखांश ७७।१४		नागपुर अक्षांश २१।९ रेखांश ७९।७		नरसिंहपुर अक्षांश २२।५७ रेखांश ८२।१४		पटना अक्षांश २५।३७ रेखांश ८५।१०		बम्बई अक्षांश १८।५७ रेखांश ७२।५०		बंगलौर अक्षांश १२।५८ रेखांश ७७।३५		बरेली अक्षांश २८।२२ रेखांश ७९।२७		मद्रास अक्षांश १३।५ रेखांश ८०।१७		मैनपुरी अक्षांश २७।१३ रेखांश ७९।१२		रतलाम अक्षांश २३।२० रेखांश ७५।६		लखनऊ अक्षांश २६।५१ रेखांश ८०।५५		वाराणसी अक्षांश २५।२० रेखांश ८३।०		बिलासपुर अक्षांश २२।५ रेखांश ८२।१३		हैदराबाद अक्षांश १७।१८ रेखांश ७८।३०		हरिद्वार अक्षांश २९।५८ रेखांश ७८।१०		हिसार अक्षांश २९।१४ रेखांश ७५।४४		भुवनेश्वर अक्षांश २०।१५ रेखांश ८५।५२	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
अक्टूबर	३	६।१९	१८। १	६। १	१७।५७	६। १	१७।५६	५।४६	१७।३१	६।३३	१८।२३	६।१३	१८। ५	६।१०	१७।५३	६। २	१७।५५	६।१२	१७।५५	६।२६	१८।१२	६। ४	१७।४७	५।५५	१७।३९	५।५६	१७।४४	६।१०	१८। १	६।१६	१७।५७	६।२५	१८। ८	५।४१	१७।३०
	८	६।२२	१७।५६	६।१०	१७।५३	६।१०	१७।५१	५।४८	१७।२६	६।३४	१८।१९	६।१३	१८। २	६।१३	१७।४७	६। २	१७।५२	६।१४	१७।४९	६।२७	१८। ८	६। ७	१७।४१	५।५८	१७।३४	५।५८	१७।४०	६।११	१७।५६	६।१९	१७।५१	६।२७	१८। २	५।४३	१७।२६
	१३	६।२५	१७।५०	६।१२	१७।४८	६।१२	१७।४७	५।५०	१७।२१	६।३५	१८।१५	६।१३	१७।५९	६।१६	१७।४१	६। २	१७।४८	६।१७	१७।४३	६।३०	१८। ४	६। ९	१७।३६	६। ०	१७।२९	६। ०	१७।३५	६।१२	१७।५३	६।२२	१७।४५	६।३०	१७।५७	५।४४	१७।२२
	१८	६।२८	१७।४५	६।१३	१७।४४	६।१५	१७।४२	५।५३	१७।१६	६।३७	१८।११	६।१४	१७।५६	६।१९	१७।३६	६। ३	१७।४६	६।२०	१७।३८	६।३२	१७।५९	६।१२	१७।३१	६। ३	१७।२४	६। २	१७।३१	६।१३	१७।४९	६।२६	१७।४०	६।३४	१७।५१	५।४६	१७।१८
	२३	६।३१	१७।४०	६।१६	१७।४१	६।१७	१७।३८	५।५५	१७।११	६।३९	१८। ८	६।१५	१७।५३	६।२२	१७।३१	६। ४	१७।४३	६।२३	१७।३४	६।३४	१७।५५	६।१५	१७।२६	६। ५	१७।१९	६। ४	१७।२७	६।१४	१७।४६	६।२९	१७।३५	६।३७	१७।४६	५।४८	१७।१४
	२८	६।३५	१७।३५	६।१८	१७।३७	६।१९	१७।३५	५।५९	१७। ७	६।४०	१८। ५	६।१६	१७।५१	६।२६	१७।२६	६। ५	१७।४१	६।२६	१७।२९	६।३६	१७।५१	६।१८	१७।२२	६। ८	१७।१५	६। ६	१७।२४	६।१६	१७।४४	६।३३	१७।३०	६।४०	१७।४२	५।५०	१७।११
नवम्बर	२	६।३८	१७।३२	६।२०	१७।३४	६।२२	१७।३१	६। २	१७। ३	६।४२	१८। २	६।१७	१७।५०	६।२९	१७।२२	६। ६	१७।३९	६।२९	१७।२५	६।३९	१७।४८	६।२२	१७।१८	६।११	१७।१२	६। ९	१७।२०	६।१८	१७।४१	६।३६	१७।२६	६।४४	१७।३७	५।५२	१७। ८
	७	६।४२	१७।२८	६।२३	१७।३२	६।२५	१७।२८	६। ५	१७। ०	६।४५	१८। ०	६।१८	१७।४८	६।३३	१७।१९	६। ८	१७।३८	६।३३	१७।२२	६।४२	१७।४४	६।२५	१७।१५	६।१५	१७। ९	६।१२	१७।१८	६।२०	१७।४०	६।४०	१७।२२	६।४८	१७।३४	५।५५	१७। ६
	१२	६।४५	१७।२५	६।२६	१७।३०	६।२८	१७।२६	६। ८	१६।५८	६।४७	१७।५८	६।२१	१७।४७	६।३६	१७।१७	६।१०	१७।३६	६।३६	१७।२०	६।४५	१७।४२	६।२८	१७।१२	६।१८	१७। ६	६।१५	१७।१६	६।२२	१७।३८	६।४४	१७।१९	६।५१	१७।३१	५।५७	१७। ४
	१७	६।४९	१७।२२	६।२९	१७।२९	६।३१	१७।२५	६।१२	१६।५६	६।५०	१७।५७	६।२३	१७।४७	६।४०	१७।१४	६।१२	१७।३६	६।४०	१७।१८	६।४८	१७।४१	६।३२	१७।१०	६।२१	१७। ५	६।१८	१७।१४	६।२५	१७।३७	६।४८	१७।१७	६।५५	१७।२८	६। ०	१७। ३
	२२	६।५४	१७।२१	६।३२	१७।२८	६।३४	१७।२४	६।१५	१६।५४	६।५३	१७।५७	६।२५	१७।४७	६।४४	१७।१३	६।१४	१७।३६	६।४४	१७।१६	६।५२	१७।४०	६।३६	१७। ९	६।२५	१७। ३	६।२१	१७।१४	६।२८	१७।३६	६।५२	१७।१५	६।५९	१७।२७	६। ३	१७। २
	२७	६।५७	१७।२०	६।३५	१७।२७	६।३८	१७।२३	६।१९	१६।५४	६।५६	१७।५७	६।२८	१७।४७	६।४८	१७।१२	६।१७	१७।३६	६।४७	१७।१५	६।५५	१७।३९	६।३९	१७। ८	६।२८	१७। ३	६।२४	१७।१३	६।३१	१७।३६	६।५५	१७।१४	७। ३	१७।२६	६। ६	१७। २
दिसम्बर	२	७। १	१७।२०	६।३८	१७।२८	६।४३	१७।२३	६।२३	१६।५३	६।५९	१७।५७	६।३०	१७।४८	६।५१	१७।१२	६।१९	१७।३७	६।५१	१७।१५	६।५९	१७।३९	६।४३	१७। ८	६।३२	१७। ३	६।२८	१७।१३	६।३४	१७।३६	६।५९	१७।१४	७। ७	१७।२५	६।१०	१७। २
	७	७। ५	१७।२०	६।४१	१७।२८	६।४५	१७।२४	६।२७	१६।५४	७। २	१७।५८	६।३३	१७।४९	६।५५	१७।१२	६।२२	१७।३८	६।५४	१७।१६	७। २	१७।४०	६।४६	१७। ९	६।३५	१७। ४	६।३१	१७।१४	६।३७	१७।३८	७। ३	१७।१५	७।११	१७।२६	६।१३	१७। ३
	१२	७। ८	१७।२१	६।४५	१७।३०	६।४८	१७।२५	६।३०	१६।५५	७। ५	१७।५९	६।३६	१७।५१	६।५८	१७।१३	६।२५	१७।४०	६।५८	१७।१७	७। ५	१७।४०	६।५०	१७।१०	६।३८	१७। ५	६।३४	१७।१५	६।४०	१७।३९	७। ७	१७।१६	७।१५	१७।२७	६।१६	१७। ५
	१७	७।११	१७।२३	६।४८	१७।३२	६।५१	१७।२७	६।३३	१६।५७	७। ८	१८। १	६।३८	१७।५३	७। १	१७।१५	६।२८	१७।४२	७। १	१७।२०	७। ८	१७।४२	६।५३	१७।१२	६।४१	१७। ७	६।३७	१७।१७	६।४३	१७।४१	७। ९	१७।१७	७।१८	१७।२८	६।१९	१७। ५
	२२	७।१४	१७।२५	६।५०	१७।३४	६।५४	१७।२९	६।३५	१६।५९	७।११	१८। ३	६।४१	१७।५५	७। ४	१७।१७	६।३०	१७।४४	७। ३	१७।२१	७।११	१७।४४	६।५५	१७।१४	६।४४	१७। ९	६।४०	१७।१९	६।४५	१७।४४	७।१२	१७।२०	७।२१	१७।३१	६।२१	१७। ९
	२७	७।१६	१७।२७	६।५२	१७।३६	६।५६	१७।३२	६।३८	१७। १	७।१३	१८। ६	६।४३	१७।५८	७। ६	१७।२०	६।३२	१७।४७	७। ६	१७।२४	७।१३	१७।४७	६।५८	१७।१७	६।४६	१७।१२	६।४२	१७।२२	६।४८	१७।४६	७।१४	१७।२२	७।२३	१७।३३	६।२४	१७।१२
जनवरी	१	७।१९	१७।३१	६।५४	१७।३९	६।५८	१७।३५	६।३९	१७। ५	७।१५	१८। ९	६।४२	१८। १	७। ८	१७।२४	६।३५	१७।५०	७। ८	१७।२७	७।१५	१७।५१	६।५९	१७।२१	६।४८	१७।१५	६।४४	१७।२५	६।५०	१७।५०	७।१६	१७।२६	७।२५	१७।३७	६।२६	१७।१५
	६	७।१९	१७।३५	६।५४	१७।४३	६।५९	१७।३९	६।४०	१७। ८	७।१७	१८।१२	६।४७	१८। ४	७। ९	१७।२७	६।३७	१७।५३	७। ९	१७।३१	७।१६	१७।५४	७। ०	१७।२४	६।४९	१७।१८	६।४५	१७।२८	६।५१	१७।५३	७।१७	१७।२९	७।२५	१७।४०	६।२७	१७।१७
	११	७।१८	१७।३९	६।५४	१७।४६	७। ०	१७।४२	६।४१	१७।१२	७।१८	१८।१५	६।४८	१८। ७	७।१०	१७।३०	६।३८	१७।५६	७। ९	१७।३४	७।१७	१७।५८	७। १	१७।२७	६।५०	१७।२१	६।४६	१७।३२	६।५२	१७।५६	७।१८	१७।३३	७।२६	१७।४४	६।२८	१७।२१
	१६	७।१८	१७।४३	६।५३	१७।४९	७। ०	१७।४६	६।४१	१७।१६	७।१८	१८।१८	६।५०	१८। ९	७। ९	१७।३४	६।३९	१७।५७	७। ९	१७।३८	७।१७	१८। २	७। १	१७।३१	६।५०	१७।२५	६।४६	१७।३५	६।५३	१७।५९	७।१७	१७।३७	७।२७	१७।४८	६।२८	१७।२४
	२१	७।१८	१७।४६	६।५३	१७।५२	७। ०	१७।४९	६।४०	१७।२०	७।१८	१८।२२	६।५०	१८।१२	७। ९	१७।३८	६।३९	१८। १	७। ९	१७।४२	७।१७	१८। ५	७। ०	१७।३५	६।५०	१७।२९	६।४६	१७।३९	६।५३	१८। १	७।१६	१७।४१	७।२६	१७।५२	६।२८	१७।२७
	२६	७।१६	१७।५१	६।५३	१७।५५	६।५८	१७।५३	६।३९	१७।२४	७।१८	१८।२४	६।५०	१८।१५	७। ७	१७।४२	६।३९	१८। ३	७। ७	१७।४६	७।१६	१८। ९	६।५९	१७।३८	६।४९	१७।३३	६।४५	१७।४२	६।५२	१८। ४	७।१५	१७।४५	७।२४	१७।५७	६।२७	१७।३१
	३१	७।१४	१७।५५	६।५२	१७।५९	६।५७	१७।५६	६।३७	१७।२८	७।१७	१८।२८	६।५०	१८।१६	७। ५	१७।४६	६।३९	१८। ६	७। ५	१७।४९	७।१४	१८।१२	६।५७	१७।४२	६।४७	१७।३६	६।४४	१७।४६	६।५१	१८। ७	७।१३	१७।४९	७।२१	१८। १	६।२६	१७।३४
फरवरी	५	७।११	१७।५९	६।५२	१८। २	६।५५	१७।५९	६।३५	१७।३१	७।१५	१८।३०	६।४९	१८।१९	७। ३	१७।५०	६।३८	१८। ८	७। ३	१७।५३	७।१२	१८।१५	६।५५	१७।४६	६।४५	१७।४०	६।४२	१७।४९	६।५०	१८।१०	७।१०	१७।५३	७।१८	१८। ५	६।२५	१७।३९
	१०	७। ८	१८। ३	६।५१	१८। ५	६।५२	१८। २	६।३२	१७।३५	७।१३	१८।३३	६।४८	१८।२०	६।५९	१७।५४	६।३७	१८।१०	७। ०	१७।५७	७। ९	१८।१९	६।५२	१७।५०	६।४२	१७।४३	६।३९	१७।५२	६।४९	१८।१२	७। ६	१७।५७	७।१४	१८। ९	६।२२	१७।४०
	१५	७। ४	१८। ७	६।४८	१८। ८	६।४९	१८। ५	६।२८	१७।३९	७।११	१८।३५	६।४६	१८।२२	६।५६	१७।५८	६।३५	१८।११	६।५६	१८। ०	७। ६	१८।२२	६।४८	१७।५३	६।३८	१७।४६	६।३६	१७।५५	६।४७	१८।१५	७। २	१८। १	७।१०	१८।१३	६।२०	१७।४२
	२०	६।५९	१८।१०	६।४५	१८।१०	६।४६	१८। ८	६।२४	१७।४१	७। ८	१८।३७	६।४४	१८।२३	६।५१	१८। १	६।३३	१८।१३	६।५२	१८। ४	७। ३	१८।२४	६।४४	१७।५७	६।३४	१७।५०	६।३३	१७।५७	६।४४	१८।१७	६।५८	१८। ५	७। ५	१८।१७	६।१६	१७।४४
	२५	६।५४	१८।१४	६।४१	१८।१३	६।४२	१८।११	६।२०	१७।४४	७। ५	१८।३९	६।४२	१८।२४	६।४६	१८। ५	६।३१	१८।१४	६।४७	१८। ७	६।५९	१८।२७	६।३९	१८। ०	६।३०	१७।५३	६।२९	१७।५९	६।४२	१८।१८	६।५३	१८। ९	७। १	१८।२०	६।१३	१७।४६
मार्च	२	६।४९	१८।१८	६।३८	१८।१५	६।३७	१८।१३	६।१५	१७।४८	७। १	१८।४१	६।३९	१८।२५	६।४१	१८। ८	६।२८	१८।१४	६।४२	१८।१०	६।५४	१८।३०	६।३४	१८। ३	६।२५	१७।५६	६।२५	१८। २	६।३७	१८।२०	६।४७	१८।१२	६।५५	१८।२३	६। ९	१७।४९
	७	६।४४	१८।२१	६।३३	१८।१६	६।३३	१८।१५	६।११	१७।५०	६।५८	१८।४३	६।३६	१८।२६	६।३६	१८।११	६।२५	१८।१५	६।३७	१८।१४	६।५०	१८।३२	६।२९	१८। ६	६।२०	१७।५८	६।२१	१८। ४	६।३४	१८।२१	६।४२	१८।१६	६।५०	१८।२६	६। ५	१७।५०
	१२	६।३८	१८।२४	६।२९	१८।१८	६।२९	१८।१७	६। ५	१७।५३	६।५४	१८।४४	६।३३	१८।२७	६।३०	१८।१५	६।२२	१८।१६	६।३१	१८।१७	६।४६	१८।३४	६।२४	१८। ९	६।१५	१८। १	६।१७	१८। ६	६।३०	१८।२२	६।३६	१८।१९	६।४४	१८।३०	६। १	१७।५२
	१७	६।३३	१८।२७	६।२५	१८।२०	६।२४	१८।१९	६। ०	१७।५५	६।५०	१८।४५	६।३०	१८।२७	६।२३	१८।१८	६।१९	१८।१६	६।२६	१८।२०	६।४१	१८।३६	६।१८	१८।१२	६।१०	१८। ४	६।१२	१८। ८	६।२६	१८।२३	६।२९	१८।२३	६।३८	१८।३३	५।५७	१७।५३
	२२	६।२६	१८।२९	६।२०	१८।२२	६।१९	१८।२२	५।५५	१७।५७	६।४५	१८।४७	६।२६	१८।२८	६।१८	१८।२१	६।१६	१८।१७	६।२०	१८।२२	६।३६	१८।३८	६।१२	१८।१५	६। ४	१८। ६	६। ६	१८। ९	६।२३	१८।२४	६।२३	१८।२६	६।३३	१८।३५	५।५३	१७।५५
	२७	६।२१	१८।३३	६।१५	१८।२३	६।१४	१८।२३	५।५०	१७।५९	६।४१	१८।४८	६।२३	१८।२८	६।१३	१८।२३	६।१३	१८।१७	६।१४	१८।२५	६।३१	१८।४०	६। ७	१८।१७	५।५९	१८। ८	६। ३	१८।११	६।१९	१८।२५	६।१७	१८।२९	६।२७	१८।३८	५।४९	१७।५६

अथ दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी) अयनांश:२४

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
०	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृष	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
मिथुन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९
२	५५	६	१७	२८	३८	४८	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
कर्क	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
सिंह	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
४	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
कन्या	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३
५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५३	५	१५	२४	३३
तुला	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८
६	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृश्चि.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	४५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
धनु	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९
८	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
मकर	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५३	२	१२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
११	४	१४	३३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	२३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३४

दिनके नत बनानेकी विधि:- दिनार्ध(दिनका आधा)से कम इष्ट हो तो दिनार्ध में से इष्ट को हीन करने से पूर्व नत होता है। मध्याह्न पश्चात् का इष्ट हो तो जितना दिन शेष रहे, उसको दिनार्ध में से घटा दें, शेष पश्चिम नत होगा।

रात्रिके नत बनानेकी विधि- रात्र्यर्ध(रात्रिमान का आधा)के पूर्व का इष्ट हो तो गतरात्रि (सूर्यास्त के बाद इष्टकाल तक जितना समय बीते उसमें) दिनार्ध युक्त करने से पश्चिम नत होता है। रात्र्यर्ध के पश्चात् का इष्टकाल हो तो (इष्टकालके बाद अगले दिन सूर्योदय तक) शेष रात्रि में दिनार्ध युक्त करने से पूर्वनत होता है। नत को इष्ट मानकर लग्नवत् क्रिया करें। **ध्यान रहे नत पश्चिम हो तो धन करना और नत पूर्व हो तो हीन करना,** फिर उसे दशम सारणी में देखें। जिस कोष्ठक में समानांक मिलें उसके बांई ओर लिखी राशि दशम लग्न एवं ऊपर लग्नांश स्पष्ट होंगे। जिन अंकों से दशमलग्न सिद्ध हुआ वही कलाविकला हैं। **पूर्वउदाहरण:-** १जनवरी १९९३दिनके घं.२मि.२३बजे इष्ट घट्यादि १७५५पर दशम लग्न जानने के लिए पहले नत बनाइये। मथुराका दिनमान २५।४६का आधा घटी१२ पल५३दिनार्ध हुआ। इष्टकाल मध्याह्नके बाद का है, इसलिए दिनमानमें से इष्ट १७।५५घटाया तो दिनशेष ७घं.५१पल रहा जिसे दिनार्ध १२।५३में बाद किया तो ५घटी २पल दिवानत पश्चिमसिद्ध हुआ। रविराश्यांशतुल्य लग्नसारणीसे प्राप्तांक ४९।३में नत ५।२ पश्चिम होनेके कारण जोड़ा तो कुलयोग ५४।५हुए। जिन्हें दशम सारणी में देखा तो दशम लग्न मकरके २८अंश पर सिद्ध हुई।

दशमलग्न- भावसाधनकी भारतमें चार पद्धतियाँ हैं। जिनमें सबसे सरलरीति लग्न (तनादि)द्वादशभाव समान रूपेण ३०अंश के होते हैं। लग्नस्पष्ट में १५अंश जोड़ने पर प्रथम भावकी संधि होगी। पुनः १५अंश जोड़ने पर दूसरा भाव स्पष्ट हो जायेगा। इसी प्रकार आगे जोड़ने से ससंधि द्वादश भाव स्पष्ट हो जायेंगे। महर्षि पराशरजीने भावलग्न और होरालग्नको पृथक-पृथक कहा है। यथा-''अथाहं संप्रवक्ष्यामि तवाग्रे द्विगसत्तम-भाव-होरा घटी संज्ञ लग्नानीति पृथक्-पृथक्।।'' **भावलग्न साधन प्रकार:-** इष्टकाल के घट्यादि को ६से गुणा करने पर गुणनफल अंशादि को उदयकालीन स्पष्ट सूर्यमें जोड़नेसे प्रथमभाव(लग्न) स्पष्ट होता है। इसमें उपरोक्त क्रिया करनेसे द्वादशभाव स्पष्ट करनेके प्रबल समर्थक अनेकों ज्योतिर्विद हैं। इनके अतिरिक्त त्रिकोणमिति से भी भाव सिद्ध हो जाते है, लेकिन वह कठिन है। मेरे विचारसे पहली विधि सर्वश्रेष्ठ है। देखें'मुहूर्त मार्तण्ड', 'ज्योतिष रहस्य', 'बृहज्ज्योतिषसार'आदि ग्रंथों में।

पंचांग परिवर्तन विधि

श्रीब्रजभूमि पंचांग से आप किसीभी स्थानका सूर्योदयास्त, दिनमान एवं तिथ्यादि पूर्ण शुद्ध पंचांग बना सकते हैं। **सूर्योदयास्त बनानेकी विधि:-** जिस नगर का सूर्योदयास्त बनाना हो उसी नगर के सामने (स्वदेशकाल-सुबोधिनी तालिका से) देशान्तर मिनट धन हो तो ऋण और यदि ऋण हो तो धन संस्कार मथुरा के सूर्योदय में करने से इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय प्राप्त हो जायेगा।

अभीष्ट दिन रविक्रान्ति व स्वस्थानीय अक्षांश तुल्य चरान्तर मिनटों का संस्कार मध्यम सूर्योदय में करने से स्पष्ट सूर्योदय होगा। चरान्तर मिनटों को ५से गुणाकर लब्ध पलों का विपरीत (धन को ऋण व ऋण को धन) संस्कार मथुरा के दिनमान में करने से इष्ट दिन, अभीष्ट स्थानीय (जहां का आप करना चाहते हैं।) स्पष्ट दिनमान हो जायेगा। दिनमानको ढ़ाईसे भागकर लब्धघंटादिको सूर्योदयमें जोड़नेसे सूर्यास्तकाल होता है।

तिथ्यादि साधनम्:- इष्ट नगरीय सूर्योदयान्तर मिनटोंके पल बनाकर(सूर्योदय पहलेका हो तो)इस पंचांगके तिथ्यादि मान(समाप्तिकाल)में जोड़ दें और यदि इष्टस्थान पर सूर्योदय बादमें हो तो घटाने पर इष्टनगरीय स्पष्ट तिथ्यादि मान हो जायेगा।

दूसरी विधियाँ:- स्थानीय अक्षांश व इष्ट दिन रवि क्रान्तितुल्य चरपल सारणी से चरपल लेकर उन्हें दूना करके घटीपल बना लें। दुगुणित चरपल(घटी-पलों) को उत्तर क्रान्ति (धन) हो तो ३०घटीमें जोड़ दें। रविक्रान्ति दक्षिण ऋण हो तो ३०में से घटाने पर स्पष्ट दिनमान होगा। दिनमान को पांच से भाग करने पर लब्ध स्थानीय सूर्यास्तकाल होगा। सूर्यास्तकालके घंटामिनटों को १२में घटानेपर सूर्योदय होगा। स्थानीय सूर्योदयास्तको भा.स्टै.टा में परिवर्तन करनेके लिए रेलवे मध्यान्तर(समयान्तर) मिनटादि **''देशकाल सुबोधिनी तालिका''** के कालम नं.४ से धन-ऋण चिह्नानुसार संस्कार करें, पुनःवेलान्तर संस्कार यथावत् करने पर भा.स्टै.टा.के अनुसार अभीष्ट स्थानीय सूर्योदयास्तका समय स्पष्ट हो जायेगा।

तिथ्यादि साधनम्:- श्रीब्रजभूमि पंचांगमें उल्लिखित भा.स्टै.टा. के अनुसार तिथ्यादि समाप्तिकालमें स्वस्थानीय स्पष्ट सूर्योदय घटाकर ढ़ाई से गुणा करने पर तिथि, नक्षत्र योगादि का शुद्ध समाप्तिकाल घटीपलों में आ जायेगा। पाठकों की सुविधा के लिए ८ से ३६ उत्तर अक्षांश की चरपल सारणी पंचांग में पृ.७८ पर छपी है।

टिप्पणी- भारत से बाह्य देशों में सूर्योदयास्त जानने के लिए तद्देशीय (S.T.) का प्रयोग करें। तिथि, नक्षत्र योगादि में पूर्व की ओर चालन धन व पश्चिम दिशा में ऋण होता है। ग्रहों में इसके विपरीत जानना चाहिए।

ग्रहों की मध्यम गति:- दैनिक मध्यम गति ०.९८५६से राशिपथ पर सूर्य भ्रमण करता हुआ भगणों का भोग कर रहा है। चन्द्रादि अन्य ग्रहों की गति इस प्रकार से है- चन्द्र १३.१७६, मंगल ०.५२४०, बुध ४.०९२३, गुरु ०.०८३१, शुक्र १.६०२१, शनि ०.०३३५, राहु ०.०५३, हर्षल(वरुण) ०.०११७, नेपच्यून(इन्द्र) ०.००६०, अंश के बाद दशमलव संख्याओं को ६०से गुणा करने पर कला पुनः ६०से गुणा करने पर विकला आ जाती है।

ग्रहों का भगण काल:- सूर्य ३६५.२५६, चन्द्र २९दिन ३१घ५०.१ मंगल ६८६.९७९, बुध ८७.९६९ गुरु ४३३२.५८४, शुक्र २२४.७००, शनि १०७५९. २१९, राहु ६७९३.३९१, वरुण(हर्शल)३०६८६.६१४, इन्द्र (नेपच्यून)६०१८६.६३५

चर संस्कार सारणी

अक्षांशा:→

क्रान्त्यंशाः	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल
१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७
२	३	३	४	४	४	५	५	५	५	६	६	७	७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४
३	४	४	५	६	७	७	७	८	८	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२
४	६	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२४	२६	२७	२८	२९
५	७	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३५	३७
६	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३९	४०	४२	४४
७	१०	११	१२	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९	३१	३२	३४	३५	३७	३९	४०	४२	४४	४५	४७	४९	५१
८	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२२	२३	२५	२६	२७	२९	३१	३२	३४	३६	३८	३९	४१	४३	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५९
९	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२६	२८	२९	३१	३३	३५	३७	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६१	६३	६७
१०	१५	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५६	५८	६१	६३	६५	६८	७०	७४
११	१६	१८	२०	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८	६१	६३	६७	६९	७२	७५	७७	८१
१२	१७	१९	२१	२३	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५१	५४	५७	५८	६१	६३	६७	७०	७३	७६	७८	८२	८५	८९
१३	१९	२१	२३	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४१	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५८	६२	६४	६७	७०	७३	७६	८१	८३	८६	८९	९३	९७
१४	२१	२३	२५	२८	३१	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६३	६७	७०	७३	७६	७९	८२	८६	८८	९२	९६	१००	१०५
१५	२२	२४	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७२	७५	७८	८१	८४	८८	९२	९६	१००	१०३	१०७	११३
१६	२४	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६४	६६	७०	७३	७७	८०	८३	८७	९१	९५	९९	१०३	१०६	१११	११५	१२१
१७	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७१	७५	७८	८२	८५	८७	९२	९७	१०१	१०६	११०	११३	११८	१२३	१२९
१८	२६	२९	३३	३६	४०	४३	४६	५०	५३	५७	६१	६४	६८	७२	७५	८०	८३	८७	९१	९४	९९	१०३	१०७	११२	११६	१२१	१२६	१३१	१३७
१९	२८	३१	३५	३८	४२	४५	४९	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८३	८८	९२	९६	१००	१०५	१०९	११४	११९	१२५	१२८	१३३	१३८	१४५
२०	३०	३३	३७	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४	८८	९३	९८	१०२	१०६	१११	११६	१२०	१२५	१३१	१३६	१४१	१४७	१५३
२१	३१	३५	३९	४२	४६	५१	५५	५९	६४	६८	७२	७६	८०	८४	८९	९३	९८	१०३	१०७	११२	११७	१२२	१२७	१३२	१३८	१४३	१४९	१५६	१६२
२२	३३	३७	४१	४४	४८	५३	५८	६२	६७	७१	७५	८०	८५	८९	९४	९८	१०३	१०९	११३	११८	१२३	१२८	१३३	१३९	१४५	१५१	१५७	१६३	१७१
२३	३४	३८	४३	४७	५१	५६	६१	६५	७०	७५	७९	८४	८९	९४	९९	१०३	१०९	११४	११९	१२४	१३०	१३५	१४१	१४७	१५२	१५८	१६५	१७२	१८०
२४	३६	४१	४५	५०	५४	५९	६४	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९	११४	१२०	१२५	१३०	१३६	१४२	१४८	१५५	१६१	१६७	१७३	१८०	१८९

चरान्तर सारणी

उत्तरअक्षांशा:चरान्तरमिनटा: — क्रांति दक्षिण हो तो धन, उत्तरमें ऋण

क्रान्त्यंशाः	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	६	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०

दिनमानज्ञानम्- उपरोक्त चर संस्कार सारिणी ८से३६अक्षांश तक है। बांई ओर खडो लाइन में १ से २४ तक क्रान्त्यांश दिये हैं। इष्टदिन रवि क्रान्ति व स्वस्थानीय अक्षांशतुल्य चर सारणीसे चरपल लेकर दूना कर लें। दुगुणित चरपलोंको सूर्यक्रान्ति उत्तर(२२मार्च से २३सितम्बर तक) हो तो ३०घटी में जोडें अथवा रविक्रान्ति दक्षिण(२४सितम्बर से २१मार्च तक) हो तो ३०घटी में घटाने पर स्पष्ट दिनमान होता है।

उदाहरण- १ अप्रैल सन् १९९५ई. बम्बई (मुम्बई) का दिनमान ज्ञात करना हो तो देखिये कि उक्त तारीखमें प्रातः५घं.५मि.३०बजे रविक्रान्ति उत्तर+४अंश२६कला है। मुम्बईका उत्तर अक्षांश १८।५७ है। रविक्रान्ति ४दं अक्षांश तुल्य साधित चरपल १६ को दूना करके ३० घटी में जोड़ दिया तो ३०घटी ३२पल स्पष्ट दिनमान हुआ। दिनमान को ५ से भाग करने पर ६घं.६मि.२४सं.स्थानीय सूर्यास्तकाल हुआ, जिसे १२ में घटाने पर ५घं. ५३मि.३६सं.सूर्योदय का यह समय (धूपघड़ी)के अनुसार सिद्ध हुआ। जिसमें स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिका के कालम नं ४ से मुम्बई स्टै.टा.का अन्तर(समयान्तर)३८।४०ऋण को धन किया, साथ ही १अप्रैल का वेलान्तर संस्कार ४मि.७सै.भी जोड़ दिया तो मुम्बई में स्टै.टा.सूर्योदय ६।३६।२३ तथा सूर्यास्त ६।४९।११ बजे हुआ।

स्टैण्डर्ड(रेलवे)टाईम को देशी (धूपघडी)के समयमें बदलनेकी विधि- जिस नगरका स्टैण्डर्ड अन्तर धन हो उसे ऋण अथवा ऋणको धन करके चालू समयमें संस्कार करने पर मध्यम समय होगा। उस मध्यम समयमें अभिष्ट मास तारीख के वेलान्तर मि.सै. का विपरीति (धन को ऋण और ऋण को धन)संस्कार करने पर स्पष्ट समय घण्टा-मिनट हो जायेगा।

समयभेद- इस समय समस्त भूमण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है, वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है। सभी देशोंने अपने-अपने यहाँ व्यवहारमें लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय/स्टैण्डर्ड टाइम चालू कर रखा है। इस समय भारतवर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है। जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३०×४=५घं.३०मि.का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

भा.स्टै.टा.पूरे देशमें एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भलीभांति समझकर जन्मपत्र आदि बनाएँ।

इस समय समस्त घडियाँ स्टै.टा. से चल रही है। प्रायः धूप घडी का प्रचलन समाप्तहो चुका है। धूपघडीसे बने पंचांगव उनमें छपी लग्नसारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूपघडी के अनुसार कोई भी अपने बच्चेका जन्मटाइम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवेटाइमको देशी (धूप घडी) टाइम में बदलनेकी विधि साथके कालममें लिख चुके हैं।

चरपल साधन विधि- इष्टस्थानीयाक्षांशाः। इष्ट तारिखायाः क्रान्तिः। अनयोर्गुणकारस्तस्य यःपंचमांशः।तदिष्टदिने पलात्मकं चरं भवति। तत क्रान्तिवद्धनर्णम्। तद्द्विगुणितं त्रिंशत् ३० घटीषु हीने युते वा दिनमानं भवति। उत्तरक्रान्तियुतं दक्षिण क्रान्तौ हीनं कार्यम्।

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

स्वदेशकाल (अक्षांशादि) सुबोधिनी तालिका

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें − अन्तर

उत्तर - प्रदेश

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	−०१।०४	+१८।१२
अलीगढ़	२७।५४	७८।०५	−१७।४०	+०१।३६
अमेठी	२६।०८	८१।४९	−०२।४४	+१६।३२
अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	−१६।२८	+०२।४८
अकबरपुर	२६।२६	८२।३३	+००।१२	+१९।२८
अछनेरा	२७।११	७७।४६	−१८।५६	+००।२०
अतरोली	२८।०२	७८।१७	−१६।५२	+०२।२४
आजमगढ़	२६।०५	८३।१२	+०२।४८	+२२।०४
आगरा	२७।११	७८।०२	−१७।५२	+०१।२४
इटावा	२६।४७	७९।०२	−१३।५२	+०५।२४
इगलास	२७।५०	७८।००	−१८।००	+०१।१६
उन्नाव	२६।३३	८०।३०	−०८।००	+११।१६
उतरौला	२७।१९	८२।२८	−००।०८	+१९।०८
उरई (जालौन)	२५।५९	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
एटा (कासगंज)	२७।३५	७८।४१	−१५।१६	+०४।००
कन्नौज	२७।०३	७९।५८	−१०।०८	+०९।०८
कानपुर नगर	२६।२७	८०।२१	−०८।३६	+१०।४०
कोसी	२७।४८	७७।२६	−२०।१६	−०१।००
खीरीलखीमपुर	२७।५७	८०।४९	−०६।४४	+१२।३२
खुर्जा जं.	२८।१४	७७।५०	−१८।४०	+००।३६
खैर	२७।५५	७७।५४	−१८।२४	+००।५२
गढ़मुक्तेश्वर	२८।४८	७८।०६	−१७।३६	+०१।४०
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२५	−२०।२०	−०१।०४
गाजीपुर	२५।३६	८३।३५	+०४।२५	+२३।३६
गोरखपुर	२६।४६	८३।२३	+०३।३२	+२२।४८
गोवर्धन	२७।३०	७७।२८	−२०।०८	−००।५२
गोंडा	२७।१०	८१।५८	−०२।०८	+१७।०८
चन्दौसी	२८।२७	७८।४७	−१४।५२	+०४।२४
चित्रकूट धाम	२५।१२	८०।५४	−०६।२४	+१२।५२
छाता	२७।४३	७७।३०	−२०।००	−००।४४
जेवर	२८।१०	७७।४०	−१९।००	−००।०४

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
जौनपुर	२५।४४	८२।४३	+००।५२	+२०।०८
झांसी	२५।२६	७८।३४	−१५।४४	+०३।३२
टप्पल	२८।०३	७७।३५	−१९।४०	−००।२४
टनकपुर	२९।०५	८०।०७	−०९।३२	+०९।४४
टूंडला जंक्शन	२७।१३	७८।१३	−१७।०८	+०२।०८
दिल्ली(राजधानी)	२८।३८	७७।१४	−२१।०४	−०१।४८
देवरिया	२६।३२	८३।४७	+०५।०८	+२४।२४
नोहझील	२७।४०	७७।३१	−१९।५६	−००।४०
पीलीभीत	२८।३८	७९।५०	−१०।४०	+०८।३६
प्रयागराज(इलाहाबाद)	२५।२८	८१।५४	−०२।२४	+१६।५२
प्रतापगढ़ बेल्हा	२५।५३	८१।५८	−०२।०८	+१७।०८
फतेहपुर	२५।५५	८०।५२	−०६।३२	+१२।४४
फतेहपुर(सीकरी)	२७।०६	७७।४०	−१९।२०	−००।०४
फतेहाबाद	२७।०१	७८।११	−१६।४४	+०२।३२
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	−११।३२	+०७।४४
फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	−०१।२८	+१७।४८
बरेली	२८।२२	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
बलिया	२४।४४	८४।०९	+०६।३६	+२५।५२
बस्ती	२६।४८	८२।४३	+००।५२	+२०।०८
बहरायच	२७।३४	८१।३७	−०३।३२	+१५।४४
बदायूं	२८।०२	७९।०८	−१३।२८	+०५।४८
बरसाना	२७।२५	७७।३८	−१९।२८	−००।१२
बाराबंकी	२६।५६	८१।१०	−०५।२०	+१३।५६
बाह	२६।५३	७८।३६	−१५।३६	+०३।४०
बांदा	२५।२८	८०।२१	−०८।३६	+१०।४०
बिजनौर	२९।२३	७८।११	−१७।१६	+०२।००
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५२	−१८।३२	+००।४४
मथुरा	२७।२८	७७।४१	−१९।१६	शून्याशून्य
मिर्जापुर(सोनभद्र)	२५।०८	८२।३७	+००।२८	+१९।४४
मुजफ्फरनगर	२९।२८	७७।४३	−१९।०८	+००।०८
मुगलसराय	२५।१८	८३।०७	+०२।२८	+२१।४४
मुरादाबाद	२८।५०	७८।५०	−१४।४०	+०४।३६
मेरठ	२९।००	७७।४५	−१९।००	+००।१६
मैनपुरी	२७।१३	७९।०२	−१३।५२	+०५।२४

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
रामपुर	२८।४७	७९।०२	−१३।५२	+०५।२४
रायबरेली	२६।१४	८१।१४	−०५।०४	+१४।१२
रेणुकूट	२४।०१	८३।१५	+०३।००	+२२।१६
लखनऊ(राजधा.)	२६।५१	८०।५५	−०६।२०	+१२।५६
ललितपुर	२४।४१	७८।२४	−१६।२४	+०२।५२
लखीमपुर(खीरी)	२७।५७	८०।४९	−०६।४४	+१२।३२
वाराणसी(काशी)	२५।२०	८३।००	+०२।००	+२१।१६
वृन्दावन	२७।३०	७७।४०	−१९।२०	−००।०८
शाहजहॉनपुर	२७।५४	७९।५७	−१०।१२	+०९।०४
सहारनपुर	२९।५९	७७।३३	−१९।४८	−००।३२
सम्भल	२८।३५	७८।३४	−१५।४४	+०३।३२
सीतापुर	२७।३५	८०।४०	−०७।२०	+११।५६
सुलतानपुर	२६।१५	८२।०४	−०१।४४	+१७।३२
हरदोई	२७।२३	८०।१०	−०९।२०	+०९।५६
हमीरपुर	२५।५८	८०।१०	−०९।२०	+०९।५६
हापुड़	२८।४५	७७।४६	−१८।५६	+००।२०
हाथरस(म.माया)	२७।३६	७८।०३	−१७।४८	+०१।२८

उत्तरांचल

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	−११।२०	+०७।५६
उत्तरकाशी	३०।४४	७८।२६	−१६।१६	+०३।००
गोपेश्वर(चमोली)	३०।२४	७९।२१	−१२।३६	+०६।४०
चम्पावत	२९।२०	८०।०६	−०९।३६	+०९।४०
गढ़वाल(टिहरी)	३०।२३	७८।३०	−१६।००	+०३।१६
देहरादून(राजधानी)	३०।१९	७८।०४	−१७।४४	+०१।३२
नैनीताल(वेधशाला)	२९।२३	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
पिथौरागढ़	२९।३५	८०।१३	−०९।०८	+१०।०८
पौड़ी(गढ़वाल)	३०।०९	७८।४७	−१४।५२	+०४।२४
केदारनाथ(बद्रीनाथ)	३०।४४	७९।३०	−१२।००	+०७।१६
बागेश्वर	२९।५२	७९।४२	−११।१२	+०८।०४
ऋषिकेश	३०।०७	७८।४२	−१५।१२	+०४।०४
उ.सिं.नगर(रुद्रपुर)	२८।५८	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
रुद्रप्रयाग	३०।१०	७९।११	−१३।१६	+०६।००
हरिद्वार	२९।५८	७८।१०	−१७।२०	+०१।५६

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

स्वदेशकाल (अक्षांशादि) सुबोधिनी तालिका

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें - अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
हरियाणा				
अम्बाला	३०।२२	७६।५२	-२२।३२	-०३।१६
करनाल	२९।४२	७७।०२	-२१।५२	-०२।३६
कुरुक्षेत्र	३०।००	७६।४८	-२२।४८	-०३।३२
कैथल	२९।४८	७६।२६	-२४।१६	-०५।००
चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	-२२।३२	-०३।१६
जींद	२९।१८	७६।२३	-२४।२८	-०५।१२
नरवाना	३०।०५	७५।४५	-२७।००	-०७।४४
नारनौल	२८।०२	७६।१४	-२५।०४	-०५।४८
नारायणगढ़	३०।५०	७७।३०	-२०।००	-००।४४
पटौदी	२८।१८	७६।४८	-२२।४८	-०३।३२
पलवल	२८।२१	७७।१०	-२१।२०	-०२।०४
पानीपत	२९।२७	७६।५९	-२२।०४	-०२।४८
फरीदाबाद	२८।२५	७७।२२	-२०।३२	-०१।१६
भिवानी	२८।४८	७६।१८	-२४।४८	-०५।३२
महेन्द्रगढ़	२८।१७	७६।१४	-२५।०४	-०५।४८
रेवाड़ी	२८।१३	७६।४०	-२३।२०	-०४।०४
रोहतक	२८।५४	७६।३८	-२३।२८	-०४।१२
लोहारु	२८।२६	७५।४७	-२६।५२	-०७।३६
सिरसा	२९।३१	७५।०५	-२९।४०	-१०।२४
सोनीपत	२९।०२	७६।४२	-२३।१२	-०३।५६
हाँसी	२९।०६	७६।००	-२६।००	-०६।४४
हिसार	२९।१४	७५।४४	-२७।०४	-०७।४८
राजस्थान				
अलवर	२७।३४	७६।३८	-२३।२८	-०४।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	-११।५६
अनूपगढ़	२९।०७	७३।०६	-३७।३६	-१८।२०
उदयपुर	२४।३५	७३।४२	-३५।१२	-१५।५६
किशनगढ़	२६।३६	७४।५२	-३०।३२	-११।१६
कोटा	२५।११	७५।५०	-२६।४०	-०७।२४
श्रीगंगानगर	२९।५०	७३।५१	-३४।३६	-१५।२०
गंगापुर(टोंक)	२६।२२	७६।४४	-२३।०४	-०२।४८
चीलो	२७।२३	७३।१६	-३६।५६	-१७।४०
चिड़ावा	२८।१५	७५।३८	-२७।२८	-०८।१२
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	-३१।१२	-११।५६
चुरु (शेखावटी)	२८।१९	७५।०२	-२९।५२	-१०।३६
जयपुर	२६।५५	७५।५२	-२६।३२	-०७।१६
जालौर	२५।२२	७२।३८	-३९।२८	-२०।१२
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	-४६।१२	-२६।५६
जोधपुर	२६।१९	७३।०४	-३७।४४	-१८।२८
झालावाड़	२४।३६	७६।०९	-२५।२४	-०६।०८
झुन्झुनू	२८।०७	७५।२५	-२८।२०	-०९।०४
टोंक	२६।११	७५।५०	-२६।४०	-०७।२४
डीग	२७।२८	७७।२०	-२०।४०	-०१।२४
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	-३५।०८	-१५।५२
देशनोक	२७।४८	७३।२०	-३६।४०	-१७।२४
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	-१८।२८	+००।४८
नवलगढ़	२७।५१	७५।१८	-२८।४८	-०९।३२
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	-३०।५६	-११।४०
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	-३४।३२	-१५।१६
नागौर	२७।११	७३।४४	-३५।०४	-१५।४८
पाली	२५।४६	७३।२०	-३६।४०	-१७।२४
पुष्कर	२६।२८	७४।३३	-३१।४८	-१२।३२
नोखा	२७।३५	७३।३०	-३६।००	-१६।४४
पिलानी	२८।२३	७५।३५	-२७।२८	-०८।२४
फलौदी(जोध)	२७।१०	७२।२२	-४०।३२	-२१।१६
फतेहपुर	२७।५२	७५।०२	-२९।५२	-१०।३६
फुलेरा	२६।५२	७५।१६	-२८।५६	-०९।४०
बाड़मेर	२५।४५	७१।२४	-४४।२४	-२५।०८
बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	-३२।२४	-१३।०८
बांदीकुई	२७।०३	७६।३४	-२३।४४	-०४।२८
बीकानेर	२८।०१	७३।२०	-३६।४०	-१७।२४
बूंदी	२५।२७	७५।४०	-२७।२०	-०८।०४
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	-२०।००	-००।४४
भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	-३१।२०	-१२।०४
मेड़तासिटी	२६।३२	७४।०४	-३३।४४	-१४।२८
रतनगढ़(चुरु)	२८।०५	७४।४०	-३१।२०	-१२।०४
राजगढ़	२८।४०	७५।२४	-२८।२४	-०९।०८
सवाईमाधोपुर	२५।५८	७६।२४	-२४।२४	-०५।०८
सिरोही	२४।५३	७२।५४	-३८।२४	-१९।०८
सीकर(शेखावटी)	२७।३६	७५।१०	-२९।२०	-१०।०४
सरदार शहर	२८।२७	७४।३०	-३२।००	-१२।४४
मध्यप्रदेश				
इन्दौर	२२।४४	७५।५१	-२६।३६	-०७।२०
इटारसी	२२।३७	७७।४६	-१८।५६	+००।२०
उज्जैन	२३।१०	७५।४४	-२७।०४	-०७।४८
खरगोन	२१।४९	७५।४०	-२७।२०	-०८।०४
खण्डवा	२१।५०	७६।२०	-२४।४०	-०५।२४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-१७।२०	+०१।५६
गुना	२४।४०	७७।३०	-२०।००	-०१।२४
छतरपुर	२४।५४	७९।३८	-११।२८	+०७।३६
छिन्दबाड़ा	२२।०३	७८।५७	-१४।१२	+०५।०४
जबलपुर	२३।१०	७९।५९	-१०।०४	+०९।१२
जनकपुर	२३।४२	८१।५१	-०२।३६	+१६।४०
झाबुआ	२२।४५	७४।३७	-३१।३२	-१२।१६
टीकमगढ़	२४।४५	७८।५१	-१४।३६	+०४।४०
दमोह	२३।५०	७९।२९	-१२।०४	+०७।१२
देवास	२२।५८	७६।०७	-२५।३२	-०६।१६
धार	२२।३६	७५।१९	-२८।४४	-०९।२८
नरसिंहपुर	२२।५७	७९।१४	-१३।०४	+०६।१२
नीमच	२४।२७	७४।५२	-३०।३२	-११।२०
पन्ना	२४।४४	८०।१३	-०९।०८	+१०।०८
बालाघाट	२१।४७	८०।१५	-०९।००	+१०।१६
बेतूल	२१।५१	७७।५३	-१८।२८	+००।४८
भोपाल(राज.)	२३।१६	७७।२३	-२०।२८	-०१।१२
मन्दसौर	२४।०४	७५।०५	-२९।४०	-१०।२४
मण्डला	२२।४०	८०।३५	-०७।४०	+१०।३६
भिण्ड (मुरैना)	२६।२६	७८।०४	-१७।४४	+०१।३२
रतलाम	२३।२०	७५।०६	-२९।३६	-१०।२०

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

स्वदेशकाल (अक्षांशादि) सुबोधिनी तालिका

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें - अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
मध्यप्रदेश				
राजगढ़	२४।००	७६।४०	-२३।२०	-०४।०४
रायसेन	२३।२०	७७।५०	-१८।४०	+००।३६
रीवा	२४।३१	८१।१९	-०४।४४	+१४।३२
विदिशा	२३।३३	७७।५१	-१८।३६	-००।४०
शहडोल	२३।२०	८१।२५	-०४।२०	+१४।५६
शिवपुरी	२५।४१	७७।४०	-१९।२०	-००।०४
सतना	२४।३४	८०।५५	-०६।२०	+१२।५६
सीहोर	२३।२९	८०।०९	-०९।२४	+०९।५२
सिंधी	२४।१८	८१।५०	-०२।४०	+१६।३६
छत्तीसगढ़				
अम्बिकापुरसरगुजा	२३।१०	८३।१०	+०२।४०	+२१।५६
कवारधा	२२।००	८१।१४	-०५।०४	+१४।१२
कांकेर	२०।१७	८१।२९	-०४।०४	+१५।१२
कोरबा	२२।२५	८२।५३	+०२।०८	+२२।३६
जशपुर नगर	२२।५३	८४।१०	+०६।४०	+२५।५६
जगदलपुर	१९।०५	८२।०२	-०१।५२	+१७।२४
बिलासपुर	२२।०५	८२।१३	-०१।०८	+१८।०८
रायपुर (राज.)	२१।१५	८१।४१	-०३।१६	+१६।००
राजनदगांव	२१।०७	८१।०२	-०५।५२	+१३।२४
रायगढ़	२१।५४	८३।२३	+३।३२	+२२।४८
पंजाब				
अमृतसर	३१।३७	७४।५५	-३०।२०	-११।२४
अबोहर(फिरोजपुर)	३०।०७	७४।२८	-३२।०८	-१२।५२
कपूरथला	३१।२२	७५।२४	-२८।२४	-०९।०८
गुरुदासपुर	३२।०३	७५।२७	-२८।१२	-०८।५६
चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	-२२।३२	-०३।१६
जालन्धर	३१।१९	७५।३४	-२७।४४	-०८।२८
डेराबाबा नगर	३२।०३	७५।०४	-२९।४४	-१०।२८
तलबन्डी(भटिंडा)	२९।५५	७५।१०	-२९।२०	-१०।०४
तरनतारन(अमृतसर)	३१।२८	७४।५६	-३०।१६	-११।०४
थानेश्वर	२९।५८	७६।५६	-२२।१६	-०३।००
नाभा	३०।२५	७६।०९	-२५।२४	-०६।०८
पटियाला	३०।२०	७६।२५	-२४।२०	-०५।०४
पठानकोट(गुरदासपुर)	३२।१८	७५।४२	-२७।१२	-०७।५६
फरीदकोट	३०।४०	७४।४२	-३१।१२	-११।५६
फाजिल्का	३०।२५	७४।०४	-३३।४४	-१४।२८
फगवाड़ा(कपूरथला)	३१।१४	७४।४६	-३०।५६	-११।४०
फिरोजपुर	३०।५६	७४।४०	-३१।२०	-१२।०४
बटाला(गुरदासपुर)	३१।४९	७५।१३	-२९।०८	-०९।५२
बरनाला(संगरुर)	३०।४०	७५।२५	-२८।२०	-०९।०४
भटिन्डा	३०।१२	७४।५९	-३०।०४	-१०।४८
रूपनगर	३१।१०	७६।२७	-२४।१२	-०४।५६
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	-२६।२४	-०७।०८
सरहिन्द(पटियाला)	३०।३८	७६।२५	-२४।२०	-०५।०४
संगरूर	३०।१४	७५।५१	-२६।३६	-०७।२०
होशियारपुर	३१।३२	७५।५६	-२६।१६	-०७।००
हिमाचल प्रदेश				
कल्पा	३१।३२	७८।१५	-१७।००	+०२।१६
कुल्लू	३१।५८	७७।०६	-२१।३६	-०२।२०
चम्बा	३२।२९	७६।१०	-२५।२०	-०६।०४
धर्मशाला	३२।१५	७६।२२	-२४।३२	-०५।१६
बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	-२२।००	-०३।२४
मण्डी	३१।४३	७६।५८	-२२।०८	-०२।५२
शिमला	३१।०६	७७।१३	-२१।०८	-०१।५२
सोलन	३०।५५	७७।०९	-२१।२४	-०२।०८
हमीरपुर	३१।४१	७६।३१	-२३।५६	-०४।४०
जम्मू और कश्मीर				
अनन्तनाग	३३।४३	७५।१७	-२८।५२	-०९।३६
कारगिल	३४।३०	७६।१३	-२५।०८	-०५।५२
जम्मू	३२।४४	७४।५४	-३०।२४	-११।०८
रियासी	३३।०५	७५।००	-३०।००	-१०।४४
लेह	३४।१०	७७।३८	-१९।२८	-००।१२
श्रीनगर	३४।०६	७४।५१	-३०।३६	-११।२०
गुजरात				
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३८	-३९।२८	-२०।१२
कच्छ(भुज)	२३।१६	६९।४४	-५१।०४	-३१।४८
गोधरा	२२।४८	७३।३५	-३५।४०	-१६।२४
जामनगर	२२।२७	७०।०६	-४९।३६	-३०।२०
जूनागढ़	२१।३२	७०।३६	-४७।३६	-२८।२०
द्वारिका	२२।१४	६९।०१	-५३।५६	-३४।४०
पालनपुर	२४।११	७२।२७	-४०।५२	-२०।५६
महेसाणा	२३।३५	७२।२४	-४०।२४	-२१।०८
राजकोट	२२।१८	७०।५०	-४६।४०	-२७।२४
बडोदरा	२२।१८	७३।१२	-३७।१२	-१७।५६
सूरत	२१।१२	७२।५०	-३८।४०	-१९।२४
महाराष्ट्र				
अमरावती	२०।५६	७७।४७	-१८।५२	+००।२४
औरंगाबाद	१९।५२	७५।१९	-२८।४४	-०९।२८
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१९	-३२।४४	-१३।२८
नागपुर	२१।०९	७९।०७	-१३।३२	+०५।४४
नासिक	२०।००	७३।४९	-३४।४४	-१५।२८
पूना(पुणे)	१८।३०	७३।५३	-३४।२८	-१५।१२
बम्बई(मुम्बई)	१८।५७	७२।५०	-३८।४०	-१९।२४
भण्डारा	२१।१५	७९।४५	-११।००	+०८।१६
शोलापुर	१७।४०	७५।५५	-२६।२०	-०७।०४
गोआ(पणजी)				
गोआ	१५।३०	७३।५५	-३४।२०	-१५।०४
कर्नाटक				
गुलबर्गा	१७।१९	७६।५०	-२२।४०	-०३।२४
चिकमंगलूर	१३।१९	७५।४७	-२६।५२	-०७।३६
चित्रदुर्गा	१४।१३	७६।२५	-२४।२०	-०५।०४
बिजापुर	१६।५०	७५।४४	-२७।०४	-०७।४८
बेंगलूर	१२।५८	७७।३५	-१९।४०	-००।२४
मैसूर	१२।१८	७६।३९	-२३।२४	-०४।०८
रायचूर	१६।१२	७७।२१	-२०।३६	-०१।२०

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

स्वदेशकाल (अक्षांशादि) सुबोधिनी तालिका

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें − अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
केरल				
कोट्टयम	०९।३६	७६।३१	−२३।५६	+०४।४०
तिरुअनन्तपुरम्	०८।४४	७७।२०	−२०।४०	−०१।२४
मलप्पुरम	११।००	७६।०५	−२५।४०	−०६।२४
तमिलनाडु				
कन्याकुमारी	०८।०४	७७।३६	−१९।३६	−००।२०
कोयंबुत्तूर	११।००	७७।००	−२२।००	−०२।४४
तिरुचिराप्पलि	११।००	७८।५५	−१४।२०	+०४।५६
धर्मपुरी	१२।०८	७८।११	−१७।१६	+०२।००
पाण्डिचेरी	११।५६	७९।५१	−१०।३६	+०८।४०
मदुरै	०९।५५	७८।०८	−१७।२८	+०१।४८
मद्रास(चैन्नई)	१३।०५	८०।१७	−०८।५२	+१०।२४
रामेश्वरम्	०९।१७	७९।१२	−१३।१२	+०६।०४
आन्ध्रप्रदेश				
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	−१५।५६	+०३।२०
ओंगोलु	१५।३१	८०।०६	−०९।३६	+०९।४०
अनन्तपुरम्	१४।४१	७७।३७	−१९।३२	−००।१६
चित्तूर	१३।१३	७९।०६	−१३।३६	+०५।४०
विशाखापटनम्	१७।४२	८३।२०	+०३।२०	+२२।३६
विजयवाड़ा	१६।३१	८०।३९	−०७।२४	+११।५२
हैदराबाद	१७।१८	७८।३०	−१६।००	+०३।१९
उड़ीसा				
कोरापुट	१९।०९	८२।१९	−०।४४	+१८।३२
बालेश्वर	२१।३०	८६।५४	+१७।३६	+३६।५२
भवानीपाटणा	१९।५८	८३।०७	+०२।२८	+२१।४४
भुवनेश्वर	२०।१५	८५।५२	+१३।२८	+३२।४४
राउरकेला	२२।१४	८४।५२	+०९।२८	+२८।४४
सम्बलपुर	२१।२८	८३।५९	+०५।५६	+२५।१२
बिहार				
औरंगाबाद	२४।४४	८४।२५	+०७।४०	+२६।५६
कटिहार	२५।३३	८७।३४	+२०।१६	+३९।३२
गया	२४।४९	८५।०१	+२०।०४	+२९।२०
चम्पारन(पूर्व)	२६।४०	८४।५६	+०९।४४	+२९।००
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८	+३३।०४
नालन्दा	२५।१०	८५।३०	+१२।००	+३१।१६
पटना	२५।३७	८५।१०	+१०।४०	+२९।५६
बेगूसराय	२५।२६	८६।०७	+१४।२८	+३३।४४
भागलपुर	२५।१४	८६।५९	+१७।५६	+३७।१२
मधेपुरा	२५।५७	८६।५७	+१७।४८	+३७।०४
वैशाली	२५।४०	८५।१२	+१०।४८	+३०।०४
साहिबगंज	२५।१४	८७।३९	+२०।३६	+३९।५२
सीतामढ़ी	२६।३५	८५।२९	+११।५६	+३१।१२
झारखण्ड				
गढ़वा	२४।१०	८३।५४	+०५।३६	+२४।५२
गुलमा	२३।०७	८४।४०	+०८।४०	+२७।५६
गोड्डा	२४।४०	८७।१०	+१८।४०	+३७।५६
चांईबासा	२२।३२	८५।५०	+०९।२०	+२८।३६
दुमका	२४।१८	८७।१४	+१८।५६	+३८।१२
धनबाद	२३।४७	८६।३०	+१६।००	+३५।१६
राची(राजधानी)	२३।२०	८५।२०	+११।२०	+३०।३६
लोहरदगा	२३।२७	८४।४२	+०८।४८	+२८।०४
हजारीवाग	२३।५९	८५।२४	+११।३६	+३०।५२
पश्चिमी बंगाल				
कलकत्ता(कोलकाता)	२२।३४	८८।२३	+२३।३२	+४२।४८
खडगपुर	२२।२०	८७।१०	+१८।४०	+३७।५६
जलपाई गुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५।०४	+४४।२०
बाकुंडा	२३।१४	८७।०५	+१८।२०	+३७।३६
अन्य शहर राज्य				
गान्तोक(सिक्किम)	२७।२०	८८।३८	+२४।३२	+४३।४८
डिब्रूगढ़(असम)	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+६९।००
दिसपुर (असम)	२६।२८	९१।५८	+३७।५२	+५७।०८
गुवाहाटी (अस.)	२६।११	९१।४५	+३७।००	+५६।१६
इटानगर (अरु.)	२६।५४	९३।३७	+४४।२८	+६३।४४
आलंग (अरु.)	२८।१०	९४।३०	+४८।००	+६७।१६
कोहिमा (नागा.)	२५।४१	९४।०७	+४६।२८	+६५।४४
इम्फाल (मणि.)	२४।४८	९३।५८	+४५।५२	+६५।०८
आईजोल (मिजो.)	२३।४६	९२।५२	+४१।२८	+६०।४४
अगरतला (त्रिपुरा)	२३।४९	९१।१८	+३५।१२	+५४।२८
शिलांग (मेघा.)	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५६।५२
ढाका (बांग्ला.)	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५०।५६
पोर्ट ब्लेअर	११।४०	९२।४६	+४१।०४	+८०।००
काठमाण्डू(नेपाल)	२७।४२	८५।१७	+११।०८	+३२।१८

उत्तरअक्षांश तथा पूर्वरेखांश एटलसके अनुसार लिये गये है। भूकेन्द्रीय अक्षांश लेनेपर किंचित अन्तर परिलक्षित होता है। ग्लोबपर भूमध्यरेखा से उत्तर तथा दक्षिणकी ओर खींचे हुए वृत्तोंको उत्तर एवं दक्षिण अक्षांशरेखा (वृत्त) कहते है। जोकि दोनो तरफ ९०-९० अंश समान होते है। ग्लोबपर उत्तरीध्रुवसे दक्षिणध्रुव तक खींची गई रेखाओंको देशान्तरेखा कहते है, जोकि ३६० होती है। जिनकी ग्रीनविच से पूर्वापर गणना की जाती है। ग्रीनविचको शून्य पर माना गया है। देशान्तरेखा अर्थात् एक से दूसरे देशका अन्तर ज्ञानार्थ रेखांश होता है।सूर्य को

ग्रीनविचमें जब दोपहरके १२ बजतेहै तब कहां कितने बजतेहै?

रेखांश		रेखांश	
३० पूर्व दिन के	२ बजते है।	३० पश्चिम प्रात:	१० बजते है।
६० पूर्व सायं के	४ बजते है।	६० पश्चिम प्रात:	८ बजते है।
९० पूर्व सायं के	६ बजते है।	९० पश्चिम प्रात:	६ बजते है।
१२० पूर्व रात्रि के	८ बजते है।	१२० पश्चिम रात्रि	४ बजते है।
१५० पूर्व रात्रि के	१० बजते है।	१५० पश्चिम रात्रि	२ बजते है।
१८० पूर्व रात्रि के	१२ बजते है।		

१ रेखा पार करने में ४ मि.का समय लगता है। ४ x ३६० बराबर २४ घंटे होते है। यही मानक समय है।

दैनिक लग्नोंमे वार्षिक संस्कार- लीप ईयर वर्ष में १ जनवरी से २८ फरवरी तक ३ मिनट धन संस्कार और २९ फरवरी से ३१ दिसम्बर तक १ मिनट ऋण संस्कार होता है। लीपईयर से आगे वाले वर्षमें संस्कार करने की जरूरत नही पड़ती है। लीपईयर से द्वितीय वर्षमें १ मिनट धन और तृतीय वर्षमे ३ मिनट धन संस्कार लग्नारम्भके समयमें करनेसे सूक्ष्मासन्न लग्न स्पष्ट हो जाता है। जैसे लीप ईयर सन् १९९२ था तो सन् ९३ मे कोई संस्कार नही, ९४ मे १ मिनट धन, ९५ मे २ मिनट धन और ९६ मे जन. फर.में ३ धन एवं २९ फर. से वर्षान्त तक १ मि. ऋण संस्कार करना होगा। जनवरी आदि मासोंमे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी पृष्ठ ६५ से ७० तक छपी है।

विदेश काल सुबोधिनी तालिका

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टे. टा.से स्था. समयान्तर	ग्रीनविच GMT से क्षे. स्टे.समयान्तर	भारतीय स्टे. टा.से क्षे.स्टे. टा. समयान्तर	मथुरासे पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय संस्कार
		अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.से.
वेलिंग्टन	न्यूजीलैड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	-२०।५६	+१२।००	+६।३०	+६।३०।०८
कानवेरा	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।०८पू.	-०३।२८	+१०।००	+४।३०	+४।४७।३६
आस्ट्रेलिया	दक्षिणी	३२।००द.	१४६।१७पू.	-१४।५२	+१०।००	+४।३०	+४।३६।१२
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+११।००	+०९।००	+३।३०	+४।१०।०४
सेउल	द.कोरिया	३७।४०उ.	१२७।००पू.	-३२।००	+०९।००	+३।३०	+३।११।०४
प्योंगयांग	उ.कोरिया	३९।००उ.	१२५।३०पू.	-३८।००	+०९।००	+३।३०	+३।१३।०४
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।१८उ.	१२१।३२पू.	-५३।५२	+०९।००	+३।३०	+२।५१।२४
फिजीदीप	फिजी	१८।००द.	१७९।००पू.	+०६।२६	+१२।००	+६।३०	+६।४७।०४
पेकिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	-१४।४०	+०८।००	+२।३०	+२।३६।२४
हांगकांग	हांगकांग	२५।१८उ.	११४।१०पू.	-२३।२०	+०८।००	+२।३०	+२।२७।४४
जाकार्ता	इण्डोनेशिया	०७।५७द.	११०।२०पू.	-०८।४०	+०७।३०	+२।००	+२।१२।२४
सिंगापुर	मलाया	०१।१६उ.	१०३।४७पू.	-३४।५२	+०७।३०	+२।३०	+१।४६।१२
वैंगकॉक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	-१८।००	+०७।००	+१।३०	+१।३३।०४
रंगून	वर्मा	१६।४८उ.	९६।०८पू.	-०५।२८	+०६।३०	+१।००	+१।१५।३६
मांडले	वर्मा	२२।००उ.	९६।०५पू.	-०५।४०	+०६।३०	+१।००	+१।१५।२४
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।०८पू.	+३४।३२	+०५।३०	-०।००	+०।५५।३६
ढाका	बांग्लादेश	४३।४३उ.	९०।२५पू.	+०१।४०	+०६।००	+०।३०	+०।५२।४४
काडी	सीलोनलंका	०७।११उ.	८०।३२पू.	-००।००	+०५।३०	-०।००	+०।२१।१२
राज.दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	-२१।०४	+०५।३०	-०।००	-०।०१।००
कावुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+०६।४८	+०४।३०	-१।००	-०।३२।०८
कराची	पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।००पू.	-३२।००	+०५।००	-०।३०	-०।४०।५६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	-०४।१२	+०३।३०	-२।००	-१।४३।०८
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।०१पू.	-००।०४	+०३।००	-२।३०	-२।०८।५२
बगदाद	इराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	-०२।००	+०३।००	-२।३०	-२।१०।५६
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।००पू.	-००।००	+०३।००	-२।३०	-२।०८।५६
रियाध	सऊदीअरव	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+०५।१२	+०३।००	-२।३०	-२।०३।४४
मास्को	रुस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	-३९।४०	+०३।००	-२।३०	-२।३८।३६
नाईरोवी	पूर्वीअफ्रीका	०१।२०द.	३६।४४पू.	-३३।०४	+०२।३०	-३।००	-२।४२।००
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	+०२।००	-३।३०	-२।४३।४४
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७पू.	+२३।४८	+०२।००	-३।३०	-२।४५।०८
जेरुसलेम	इजराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	+०२।००	-३।३०	-२।०८।०८
काहिरा	मिस्त्र	३०।०१उ.	३१।१३पू.	+०४।५२	+०२।००	-३।३०	-२।०४।०४

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टे. टा.से स्था. समयान्तर	ग्रीनविच GMT से क्षे. स्टे.समयान्तर	भारतीय स्टे. टा.से क्षे.स्टे. टा. समयान्तर	मथुरासे पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय संस्कार
		अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.से.
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	+२।०	-३।३०	-२।५७।००
ट्रांसवालय	द.अफ्रीका	२५।००द.	२९।००पू.	+०४।००	+२।०	-३।३०	-३।१२।५६
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	+२।०	-३।३०	-३।२३।४८
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	-२६।४०	+२।०	-३।३०	-३।३५।३६
वेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+१।०	-४।३०	-३।४६।२८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।०५पू.	+१६।२०	+१।०	-४।३०	-३।५२।३६
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	-०६।२४	+१।०	-४।३०	-४।१५।२०
ट्रिपोली	उ.अफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	-०७।००	+१।०	-४।३०	-४।१५।५६
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	-१०।०४	+१।०	-४।३०	-४।१९।००
वान	प.जर्मनी	५०।४३उ.	०७।०६पू.	-३१।३६	+१।०	-४।३०	-४।४०।३२
जेनेवा	स्वीट्जरलैण्ड	४६।४२उ.	०६।०९पू.	-३५।२५	+१।०	-४।३०	-४।४४।२०
बुसेल्स ★	वेल्जियम	५०।५१उ.	०४।२१पू.	-४२।२६	+१।०	-४।३०	-४।५१।३२
पेरिस ★	फ्रांस	४८।५०उ.	०२।२०पू.	-५०।४०	+१।०	-४।३०	-४।५९।३६
ग्रीनविच	इंग्लैण्ड	५१।२९उ.	रे.शून्य	-००।००	+०।०	-५।३०	-५।०८।५६
लन्दन	इंग्लैण्ड	५१।३२उ.	००।०५प.	-००।२०	-०।०	-५।३०	-५।०९।१६
मॉड्रिड ★	स्पेन	४०।२५उ.	०३।४५प.	-७५।००	+१।०	-४।३०	-५।२३।५६
जिब्राल्टर	जिब्राल्टर	३६।०७उ.	०५।२२प.	-८१।२८	+१।०	-४।३०	-५।३०।२४
लिस्बन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	०९।१०प.	-३६।४०	-०।०	-४।३०	-५।४५।३६
अर्जेण्टाइना	द.अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१।००	+५।०	-८।३०	-९।२७।५६
न्यूयार्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।००प.	+०४।००	+५।०	-१०।३०	-१०।०४।५६
ओटावा	कनाडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	-०२।४४	+५।०	-१०।३०	-१०।११।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।००प.	-०८।००	+५।०	-१०।३०	-१०।१६।५६
मैक्सिको	मैक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	-३७।०८	+६।०	-१०।३०	-११।४६।०४

नोट- भारत सरकार द्वारा प्रामाणिक एटलससे उपरोक्त तालिका बनाई गई है। किंचित कहीं अन्तर परिलक्षित हो तो विद्वान स्वयं सुधारलें। ★ यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) जनरल मीन टाइम भी व्यवहार में चालू है। विश्वके कुछ देशोंमें स्टे.टा.भी अलग चलता है। जैसे अमेरिका (U.S.A.) ईस्टर्नटाईम (E.T.)–१०।३० सैण्ट्रलटाईम (C.T.)–११।३० माउण्टेनटाईम(M.T.)–१२।३० और पैसिफिकटाईम (P.T.)–१३।३० भा.स्टे.टा. से अन्तर रहता है। कनाडा-९।०० एटलांटिकटाईम (A.T.)–९।३० ईस्टर्नटाईम(E.T.)–१०।३० सैन्ट्रलटाईम (C.T.) ११।३० माउण्टेनटाईम (M.T.)–१२।३० पैसिफिकटाईम (P.T.)–१३।३० का अन्तर भा.स्टे.टा.से रहता है। मैक्सिको-सैन्ट्रलटाईम (C.T.)–११।३० माउण्टेनटाईम (M.T.)–१२।३० पैसिफिकटाईम (P.T.)–१३।३० का अन्तर भा.स्टे.टा. से रहता है। कनाडा, क्यूबा, चेकोस्लावाकिया, मिश्र, आयरलैण्ड, इटली, पौलेण्ड, सीरिया, टर्की, इंग्लैण्ड, अमरीकादि कुछ देशोंमें ग्रीष्मकालभी प्रचलित है।अर्थात् गर्मियोंमे स्टे.टा.से ग्रीष्मकाल १ घं. आगे रहता है।

❀ देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारणी ❀

उपकरण-इष्ट साम्पतिक काल

अंश :-	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मेष ०	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४४	४७	५०	५३
	२८	२८	२८	२९	३१	३३	३६	४१	४६	५०	५८	६	१३	२४	३५	४५
वृष १	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
	४३	४७	५१	५४	५८	२	५	९	१२	१६	२०	२३	२७	३१	३५	३९
	५६	२९	२	३५	१२	४९	२५	६	४७	२८	१३	५८	४४	३४	२४	१४
मिथुन २	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
	३९	४४	४८	५२	५७	१	५	१०	१४	१८	२२	२६	३१	३५	३९	४५
	५७	१२	२७	४३	३	२३	३९	२	२५	४७	१३	३९	५	३५	३	३०
कर्क ३	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
	५४	५९	४	८	१२	१७	२२	२६	३१	३६	४०	४५	५०	५४	५९	४
	१२	५१	३०	९	४९	२८	७	४७	२७	६	४६	२६	६	४६	२६	६
सिंह ४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	१३	१८	२२	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५९	३	८	१३	१७	२२
	३९	१५	५१	२६	१	३६	११	४५	१९	५३	२६	५९	३३	५	३७	१०
कन्या ५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६
	२९	३४	३८	४३	४७	५२	५६	१	५	१०	१४	१९	२६	२८	३२	३६
	४५	१४	४३	१२	४१	१०	३८	७	३६	५	३४	३	३२	२	३२	५९
तुला ६	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	४४	४९	५३	५८	२	७	११	१६	२०	२५	३०	३४	३९	४४	४८	५३
	३८	११	४४	१०	४३	१६	५०	२५	०	४१	१६	५१	२७	३	३९	१६
वृश्चिक ७	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	२	७	११	१६	२१	२५	३०	३४	३९	४४	४९	५४	५८	३	८	१२
	५४	३४	१४	५४	३४	१४	५३	३३	१२	५२	३१	१०	५२	३०	८	४५
धनु ८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	२१	२५	३०	३४	३८	४३	४७	५२	५६	०	५	९	१३	१७	२२	२६
	१४	४१	८	३५	५९	२३	४७	८	२९	४९	६	२३	४१	५४	७	२१
मकर ९	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
	२६	३०	३४	३७	४१	४५	४९	५२	५६	०	३	७	१०	१४	१७	२१
	३३	१८	३	५६	३९	२२	५	४४	२३	२	३७	१२	४५	१६	४७	१७
कुम्भ १०	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४२	४५	४८	५१	५४	५७
	१	१०	१९	२९	३५	४१	४८	५२	५६	५९	०	१	३	२	१	०
मीन ११	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४०	४३	४६	४९	५२	५४	५७	०	३	६	९	१२	१५	१७	२०	२३
	४१	३३	२५	१७	८	५९	५१	४३	५	२६	१८	१०	१	५३	४५	३८

अंश :-	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
मेष ०	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	घं.
	५६	०	३	६	१०	१३	१६	१९	२३	२६	३०	३३	३६	४०	४३	मि.
	५९	३	२६	४३	०	१८	३८	५८	१९	४३	७	३१	५९	२७	५६	से.
वृष १	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	घं.
	४३	४७	५०	५४	५८	२	६	१०	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	मि.
	८	४	५६	५५	५४	५३	५६	५९	२	९	१६	२४	३५	४७	५७	से.
मिथुन २	२३	२३	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घं.
	५०	५५	५९	३	८	१२	१७	२१	२६	३१	३६	४०	४४	४९	५४	मि.
	१	३४	३	३६	९	४३	८	४३	२८	५	४२	२०	५७	३४	१२	से.
कर्क ३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	घं.
	८	१३	१८	२२	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५५	५९	४	९	१३	मि.
	४५	२५	४	४३	२२	१	३९	१७	५६	३३	१०	४८	२५	२	३९	से.
सिंह ४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	घं.
	२६	३१	३५	४०	४४	४९	५३	५८	२	७	११	१६	२०	२५	२९	मि.
	४१	१२	४४	१५	४६	१७	४७	१७	४८	१८	४८	१७	४६	१५	४५	से.
कन्या ५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	घं.
	४१	४५	५०	५४	५९	३	८	१२	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४४	मि.
	२९	५९	२८	५८	२८	५८	२८	५८	२९	०	२१	२	३४	६	३८	से.
तुला ६	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	घं.
	५७	२	७	११	१६	२१	२५	३०	३४	३९	४४	४८	५३	५८	२	मि.
	५३	३०	८	४६	२४	२	४०	१८	५७	३६	१५	५५	३५	१५	५४	से.
वृश्चिक ७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	घं.
	१३	१८	२६	२१	२५	४०	४४	४९	५४	५८	३	७	१२	१६	२१	मि.
	२३	१	३८	१४	५०	२५	५९	३३	८	४०	१२	४४	१४	४४	१४	से.
धनु ८	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	घं.
	३०	३४	३८	४२	४६	५५	५९	३	३	७	११	१४	१९	२२	२६	मि.
	३०	३९	४९	५४	५९	५	६	६	७	३	०	५६	४८	४०	३२	से.
मकर ९	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	घं.
	२४	२८	३१	३४	३८	४१	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	११	मि.
	४३	९	३६	५८	२०	४३	१	११	३८	५३	८	२४	३६	४८	१	से.
कुम्भ १०	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	घं.
	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३४	३७	४०	मि.
	५७	५४	५२	४८	४४	४०	३४	२८	२३	१६	९	३	५६	४९	४१	से.
मीन ११	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	घं.
	२६	२९	३२	३५	३८	४०	४३	४९	४९	५२	५५	५८	१	४	४	मि.
	३१	२४	१६	१०	४	५८	५३	४३	४३	४०	३७	३३	३१	२९	२८	से.

कोष्टक 'अ'

साम्पातिक काल गति ज्ञानार्थ कोष्टक(अ) गोमूत्रिका क्रम से जोड़कर ग्रहण करें।

घं.	मि.	से.	प्रसे	घं.	मि.	से.	प्रसे
	मि.	से.	प्रसे –		मि.	से.	प्रसे –
		से.	प्रसे – –			से.	प्रसे – –
१	०	९	५१	३१	५	५	३३
२	०	१९	४२	३२	५	१५	२४
३	०	२९	३४	३३	५	२५	१६
४	०	३९	२५	३४	५	३५	७
५	०	४९	१६	३५	५	४४	५९
६	०	५९	८	३६	५	५४	५०
७	१	९	०	३७	६	४	४१
८	१	१८	५१	३८	६	१४	३३
९	१	२८	४२	३९	६	२४	२४
१०	१	३८	३४	४०	६	३४	१५
११	१	४८	२५	४१	६	४४	७
१२	१	५८	१७	४२	६	५३	५८
१३	२	८	८	४३	७	३	५०
१४	२	१८	०	४४	७	१३	४१
१५	२	२७	५१	४५	७	२३	३२
१६	२	३७	४२	४६	७	३३	२४
१७	२	४७	३३	४७	७	४३	१५
१८	२	५७	२५	४८	७	५३	८
१९	३	७	१६	४९	८	२	५८
२०	३	१७	८	५०	८	१२	४९
२१	३	२६	५९	५१	८	२२	४१
२२	३	३६	५०	५२	८	३२	३२
२३	३	४६	४२	५३	८	४२	२३
२४	३	५६	३३	५४	८	५२	१५
२५	४	६	२५	५५	९	२	६
२६	४	१६	१६	५६	९	११	५८
२७	४	२६	७	५७	९	२१	४९
२८	४	३५	५९	५८	९	३१	४०
२९	४	४५	५०	५९	९	४१	३२
३०	४	५५	४२	६०	९	५१	२३

१. श्री ब्रजभूमि पंचांग में दैनिक मध्यरात्रि १२ बजे का साम्पातिक काल ग्रहस्पष्ट स्थितिके साथ घं. मि.से. मे दिया जाता है। अग्रिमपृष्ठ पर सन् १९४४ से २०११ तक के वर्षोंमे साम्पातिक काल ज्ञान सारिणी छपी है।

साम्पातिक द्वारा कुण्डली बनानेके लिये- जिस समयकी लग्न बनानी है उसी समयका इष्ट साम्पातिक पहले मथुरा के लिये बनायें।

२. मथुराके इष्ट साम्पातिककालमे आप किसी भी स्थानका देशान्तर संस्कार देशकाल सुबोधिनी तालिकाके कालम नं.५ से लेकर ऋण धन चिन्हानुसार यथावत् कर देंगे तो उसी समयका अभीष्ट स्थानीय स्पष्ट साम्पातिककाल बन जायेगा, जिस समयका आपने मथुराके लिए बनाया है।

३. जिस स्थानकी कुण्डली बनानी हो उसी स्थानका इष्ट साम्पातिक काल बनाकर उसे उसी स्थानके अक्षांशोंके आधार पर बनी देश विदेशकी लग्न सारणीमें देखने से जहां समानांक मिलें उसके बाईं ओर लिखी लग्न राशिके ऊपर लग्न भुक्तांश स्पष्ट होंगे।

४. साम्पातिककाल गति प्रति १ घंटा बराबर १० सेकेण्डके हिसाब से धन होती है। स्पष्ट ज्ञानार्थ कोष्टक(अ) साथमें दिया गया है।

५. साम्पातिककालके २४ घंटोंमें घड़ीका समयमान २३ घं. ५६ मि. ४.०९५४ सेकेण्ड बराबर ०.९९८७ दिन है।

★ उदाहरण- १ अप्रैल १९९५ दिन के २ बजकर ५८ मिनट (भा.स्टे.टा. १४घं.५८मि.) पर मथुरामे साम्पातिककाल द्वारा लग्न ज्ञात करनी है तो पहले स्टे.टा.१४।५८ को मथुराका लोकल टाइम बना लीजिये। ★ लोकलटाइम बनानेकी विधी- स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिकाके चौथे कालममें मथुराके सामने स्टे. अन्तर- १९मि.१६सें.को १४।५८ में से घटाया तो १४ घं. ३८मि. ४४ सै. यह मथुराका लोकल टाइम बना। स्थानीय समय लो.टा.१४।३८।४४ के अनुसार कोष्टक (अ) से साम्पा.समय संस्कार ज्ञात किया-

१४ घंटे के लिए चालन	+	०	घं.	२	मि.	१८	से.	०० प्र.से.	
३९ मिनटके लिए चालन	+	०	"	०	"	६	"	२४	
साम्पातिक काल संस्कार	+	०	"	२	"	२४	"	२४	सिद्धि हुआ
मथुराकालोकल टाइम	+	१४	"	३८	"	४४	"	००	जोड़ दिया
१अप्रैल९५का साम्पातिककाल	+	१२	"	१४	"	३८	"	००	जोड़ दिया
सबका एकीकरण घंटादि		२७	"	१५	"	४६	"	इष्ट सा.काल सिद्धहुआ	

शेष अग्रिम पृष्ठ पर देखें।

साम्पातिककालज्ञान सारिणी Sidereal Time

सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.
१९४४*	६।३७।१७	१९७८	६।४०।१९
१९४५	६।४०।१६	१९७९	६।३९।२२
१९४६	६।३९।१६	१९८०*	६।३८।२४
१९४७	६।३८।२२	१९८१	६।४१।२३
१९४८*	६।३७।२५	१९८२	६।४०।२६
१९४९	६।४०।२५	१९८३	६।३९।३८
१९५०	६।३९।२७	१९८४*	६।३८।३०
१९५१	६।३८।३०	१९८५	६।४१।३०
१९५२*	६।३७।३३	१९८६	६।४०।३२
१९५३	६।४०।३३	१९८७	६।३९।३४
१९५४	६।३९।३५	१९८८*	६।३८।३७
१९५५	६।३८।३८	१९८९	६।४१।३६
१९५६*	६।३७।४१	१९९०	६।४०।३९
१९५७	६।४०।४०	१९९१	६।३९।४२
१९५८	६।३९।४३	१९९२*	६।३८।४५
१९५९	६।३८।४५	१९९३	६।४१।४४
१९६०*	६।३७।४७	१९९४	६।४०।४८
१९६१	६।४०।४७	१९९५	६।३९।५१
१९६२	६।३९।५०	१९९६*	६।३८।५३
१९६३	६।३८।५३	१९९७	६।४१।५३
१९६४*	६।३७।५६	१९९८	६।४०।५६
१९६५	६।४०।५५	१९९९	६।३९।५८
१९६६	६।३९।५७	२०००*	६।३८।५८
१९६७	६।३९।००	२००१	६।४१।५८
१९६८*	६।३८।०३	२००२	६।४१।००
१९६९	६।४१।०२	२००३	६।४०।०३
१९७०	६।४०।०५	२००४*	६।३९।०६
१९७१	६।३९।०७	२००५	६।४२।०६
१९७२*	६।३८।१०	२००६	६।४१।०८
१९७३	६।४१।१०	२००७	६।४०।११
१९७४	६।४०।१२	२००८*	६।३९।१४
१९७५	६।३९।१५	२००९	६।४२।१३
१९७६*	६।३८।१७	२०१०	६।४१।१६
१९७७	६।४१।१६	२०११	६।४०।१८

प्रतिमासारम्भ साम्पा. काल संस्कार धन.

	घं. मि. से.
जनवरी +	००।००।००
फरवरी	०२।०२।१३
मार्च	०३।५२।३७
अप्रैल	०५।५४।५०
मई	०७।५३।०७
जून	०९।५५।२०
जुलाई	११।५३।३६
अगस्त	१३।५५।५०
सितम्बर	१५।५८।०३
अक्टूबर	१७।५६।२०
नवम्बर	१९।५८।३३
दिसम्बर	२१।५६।५०

लीप वर्ष जिस सन् में फरवरी २९ का हो सम्पा. काल संस्कार धन

	घं. मि. से.
जनवरी +	००।००।००
फरवरी	०२।०२।१३
मार्च	०३।५६।३३
अप्रैल	०५।५८।४७
मई	०७।५७।०३
जून	०९।५९।१६
जुलाई	११।५७।३३
अगस्त	१३।५९।४६
सितम्बर	१६।०२।००
अक्टूबर	१८।००।१६
नवम्बर	२०।०२।२९
दिसम्बर	२२।००।४६

ता.	घं.मि.से.
१	+०।०।१०
२	०।३।५७
३	०।७।५३
४	०।११।५०
५	०।१५।४६
६	०।१९।४३
७	०।२३।३९
८	०।२७।३६
९	०।३१।३२
१०	०।३५।३०
११	०।३९।२६
१२	०।४३।२३
१३	०।४७।१९
१४	०।५१।१६
१५	०।५५।१२
१६	०।५९।१८
१७	१।०३।१५
१८	१।०७।१२
१९	१।१०।५८
२०	१।१४।५५
२१	१।१८।५१
२२	१।२२।४८
२३	१।२६।४४
२४	१।३०।४१
२५	१।३४।३७
२६	१।३८।३४
२७	१।४२।३०
२८	१।४६।२७
२९	१।५०।२४
३०	१।५४।२७
३१	१।५८।१७

(शेष पृ. ८४ का) घंटे के स्थानमें २४ से अधिक हैं इसलिए २४ घटाकर शेष इष्ट साम्पातिककाल ३घं. १५ मि. ४६ से. को देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारिणीमें देखा तो सिंहलग्न के सामने ० अंश के नीचे ३ घं. १३ मि. ३९ से. और १ अंश के नीचे ३घं. १८ मि. १५ से. लिखा मिला अतः सिंह लग्न ० अंश २८ कला के लगभग स्पष्ट होती है। लग्न प्रवेश सारणीमें देखें सिंह लग्न का आरम्भ काल १४ घं. ५६ मि. लिखा है। देश-विदेशकी लग्न ज्ञान सारिणी २७।२८अक्षांश तुल्य बनाई गई है।

मथुरामें सिंह है तो फार्मोसामें क्या लग्न होगी? फार्मोसा का देशान्तर सं.घं. २ मि. ५५ से. २४ धन है इसलिये मथुराके इष्ट साम्पा. ३घं. १५ मि. ४६ से. में जोड़ा तो ६ घं. ११ मि. १० से. यह फार्मोसा का इष्ट साम्पातिककाल बना। देखिए देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारिणीमें कन्यालग्न ९ अंश के नीचे ६ घं. १० मि. ५ सै. छपा है इससे यह सिद्ध हुआ कि फार्मोसामें भा.स्टे.टा. १४।५८ बजे कन्यालग्न ९ अंशपर उदय हो रही होगी।

मास तारीखोंपरि = वेलान्तरम् = मिनट सेकेण्ड

तारीख	जनवरी मि.से.	फरवरी मि.से.	मार्च मि.से.	अप्रैल मि.से.	मई मि.से.	जून मि.से.	जुलाई मि.से.	अगस्त मि.से.	सितम्बर मि.से.	अक्टूबर मि.से.	नवम्बर मि.से.	दिसम्बर मि.से.
	+	+	+	+	−	−	+	+	+	−	−	−
१	३।४३	१३।३८	१२।३५	४।०७	२।५२	२।२५	३।३३	६।१५	+।०९	१०।०७	१६।२१	११।०३
२	३।५२	१३।४६	१२।२३	३।४९	३।००	२।१६	३।४५	६।११	−।१०	१०।२७	१६।२३	१०।४३
३	४।२०	१३।५४	१२।११	३।३२	३।०७	२।०७	३।५६	६।०७	०।२९	१०।४६	१६।२४	१०।१८
४	४।४८	१४।००	११।५९	३।१४	३।१३	१।५७	४।०८	६।०२	०।४८	११।०५	१६।२४	९।५३
५	५।१६	१४।०६	११।४६	२।५६	३।१९	१।४७	४।१८	५।५७	१।०८	११।२३	१६।२३	९।२८
६	५।४२	१४।१०	११।३२	२।३९	३।२४	१।३६	४।२८	५।५१	१।२८	११।४३	१६।२१	९।०३
७	६।०९	१४।१४	११।१८	२।२२	३।२९	१।२५	४।३८	५।४४	१।४८	११।५९	१६।१७	८।३७
८	६।३५	१४।१७	११।०४	२।०४	३।३३	१।१४	४।४८	५।३७	२।०९	१२।१६	१६।१४	८।११
९	७।००	१४।२०	१०।४९	१।४८	३।३६	१।०३	४।५८	५।२९	२।२९	१२।३३	१६।०९	७।४५
१०	७।२५	१४।२१	१०।३४	१।३१	३।३९	०।५२	५।०७	५।२१	२।५०	१२।४९	१६।०४	७।१८
११	७।४९	१४।२२	१०।१८	१।१५	३।४२	०।४०	५।१५	५।१२	३।११	१३।०५	१५।५८	६।५१
१२	८।१३	१४।२२	१०।०२	०।५९	३।४४	०।२८	५।२३	५।०३	३।३२	१३।२१	१५।५२	६।२३
१३	८।३६	१४।२१	०९।४६	०।४३	३।४५	०।११	५।३०	४।५३	३।५३	१३।३६	१५।४३	५।५५
१४	८।५८	१४।१९	०९।२९	०।२७	३।४६	−।०३	५।३७	४।५२	४।१४	१३।५०	१५।३४	५।२७
१५	९।२०	१४।१७	०९।१२	+।१२	३।४६	+।०९	५।४४	४।३१	४।३६	१४।०४	१५।२५	४।५८
१६	९।४१	१४।१४	०८।५५	−।०३	३।४६	०।२२	५।५०	४।२०	४।५७	१४।१७	१५।१५	४।२९
१७	१०।०१	१४।१०	०८।३८	०।१७	३।४५	०।३४	५।५६	४।०८	५।१८	१४।३०	१५।०४	४।००
१८	१०।२१	१४।०६	०८।२१	०।३१	३।४३	०।४८	६।०१	३।५५	५।४०	१४।४२	१४।५२	३।३१
१९	१०।४०	१४।०१	०८।०३	०।४५	३।४१	१।०१	६।०६	३।४२	६।०१	१४।५३	१४।३९	३।०२
२०	१०।५८	१३।५५	०७।४५	०।५७	३।३८	१।१४	६।१०	३।२८	६।२२	१५।०४	१४।२४	२।३२
२१	११।१५	१३।४८	०७।२८	१।११	३।३५	१।२७	६।१३	३।२४	६।४३	१५।१४	१४।१०	२।०२
२२	११।३२	१३।४१	०७।१०	१।२३	३।३१	१।४०	६।१६	२।५९	७।०४	१५।२४	१३।५५	१।३२
२३	११।४९	१३।३४	०६।५१	१।३५	३।२७	१।५३	६।१९	२।४४	७।२५	१५।३३	१३।३९	१।०२
२४	१२।०४	१३।२४	०६।३३	१।४६	३।२२	२।०६	६।२१	२।३०	७।४६	१५।४१	१३।२२	०।३२
२५	१२।१९	१३।१७	०६।१५	१।५७	३।१७	२।१९	६।२३	२।१३	८।०७	१५।४९	१३।०४	−०।१२
२६	१२।३२	१३।०७	०५।४७	२।०८	३।११	२।३२	६।२३	१।५६	८।२७	१५।५६	१२।४६	+।२८
२७	१२।४५	१२।५७	०५।३८	२।१८	३।०५	२।४४	६।२३	१।३९	८।४८	१६।०२	१२।२७	०।५८
२८	१२।५८	१२।४६	०५।२०	२।२७	२।५८	२।५७	६।२३	१।२२	९।०८	१६।०७	१२।०७	१।२८
२९	१३।०९		०५।०२	२।३६	२।५०	३।०९	६।२२	१।०४	९।२८	१६।१२	११।४६	१।५८
३०	१३।२०		०४।४४	२।४४	२।४२	३।२१	६।२०	०।४६	९।४७	१६।१६	११।२५	२।२७
३१	१३।२९		०४।२५		२।३४		६।१८	०।२८		१६।१९		२।५६
	+	+	+	−	−	+	+	+	−	−	−	+

उक्त समय किशनगढ़(राज.) में क्या लग्न होगी? मथुराके इष्ट साम्पा.३ घं. १५मि. ४६ से. में किशनगढ़ का देशान्तर सं. ऋण ११मि. १६से. घटाया तो ३घं. ४ मि. ३० से. यह किशनगढ़का इष्ट साम्पातिककाल दिन के १४ घं. ५८मि. का बना। इष्ट साम्पा. ३घं.४मि.३०से. को देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारिणी में देखा तो कर्क लग्नके सामने २८ अंश के नीचे ३।४।२५ लिखा मिला। इससे यह सिद्ध हुआ कि उक्त समय किशनगढ मे कर्कलग्न २८ अंश के आसन्न वर्तमान है।

एक ही समय पर किशनगढ़में कर्कलग्न २८ अंश पर उदय है। मथुरामें सिंह लग्नका एक अंशभी नहीं बीता है तो फार्मोसा में उक्त समयकन्यालग्नके ९ अंश भुक्त हो चुके हैं।

अल्प समय श्रममें साम्पातिककालके द्वारा आप चाहे जिस नगर अथवा अन्य किसी दूसरे देशकी लग्न निकाल सकते हैं। इतनी सरलसुबोध देश-विदेशकी लग्न ज्ञान सारिणी दिल्लीसे प्रकाशित श्रीराजधानी पंचांग में सर्वप्रथम सं. २०४२ में हमारे पिताजी ने प्रकाशित की थी। आशा है पाठक लाभान्वित होंगे।

षट्वर्ग विचार और कुण्डली रचना

जन्मकुण्डलीका विस्तारसहित फल जाननेके लिए तनादि द्वादश भाव स्पष्ट करके चलित कुण्डली बनाई जाती है तदनुसार भावविहित ग्रह योगायोगका अति सूक्ष्म विचार किया जाता है। इसके बाद फलित की अधिक गहराई में जानेके लिए होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश लग्नानुसार-पृथक् पृथक् छह कुण्डलियाँ बनाकर जातक के जीवन में होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का सहज ही ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है। आगे षट्वर्ग ज्ञानार्थचक्र दिया गया है जिसकी सहायता से घण्टों के काम को मिनटोंमें कर सकते हैं। पाठकोंकी विशेष जानकारी हेतु होरा आदि का उल्लेख करते हैं।

'राशेरर्धभवेद्धोरा' प्रत्येक राशि ३० अंशकी होती है। राशिके आधे भागको होरा कहते है। सम राशियाँ वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन में पहले १५ अंश तक चन्द्रमाका होरा होता है। आगे १६ से ३० तक सूर्यका होरा जानें। विषम राशियां मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भमें प्रथम १५ अंश तक सूर्यका, उपरान्त १६ से ३० तक चन्द्रमाकी होरा होती है।

द्रेष्काणज्ञानम्- प्रत्येक राशि (लग्न) में तीन द्रेष्काण होते है, अर्थात् १० अंशका द्रेष्काण होता है। पहला द्रेष्काण अपनी ही राशिके स्वामीका, दूसरा द्रेष्काण उससे पांचवीं राशिके स्वामीका तथा तीसरा द्रेष्काण उससे नवम राशिके स्वामीका होता है, अर्थात् मेष लग्न में १० अंश तक मंगल का, ११ से २० तक सिंहके स्वामी सूर्य का, इसी प्रकार २१ से ३० तक मेषसे नवींराशि धनुके स्वामी गुरु का द्रेष्काण मान्य होता है। यथा-

द्रेष्काण आद्योलग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च।
द्रेष्काण तृतीयस्तु, लग्नान्नवमराशिपः।।

सप्तमांशज्ञानम्- लग्न(राशि) का सातवां भाग ४ अंश १७ कला सप्तमांश कहलाता है। समान रुपेण सातभाग करके विषम मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियोंमें उन्हीं से गणना कर सप्तमांश लग्न स्वामी जानें। सम राशियाँ वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीनमें सप्तम राशि से गिनती करके सप्तमांशराशि एवं उसके स्वामी का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है।

नवमांशज्ञानम्- राशि(लग्न) के नवमें भाग ३ अंश २० कला को नवांश कहते हैं। अतः नव खण्ड कर नवांशकी गणना चर राशियों में उन्हीं राशियोंसे करें, स्थिर राशियोंमें नवमी राशि से गिनती करें और द्विस्वभाव राशियोंमें पांचवी राशिसे गिनती करके नवांश जान लिया जाता है। यथा-

नवांशकाश्चरे तस्मात्स्थिरे लग्नवमादितः।
उभये तत्पंच मादेरितिबौध्यं विचक्षणैः।।

द्वादशांशज्ञानम्- प्रत्येक राशि(लग्न) के बारह समान भाग करने पर २ अंश ३० कलाका एक द्वादशांश होता है। जिस लग्नमें द्वादशांश देखना हो उसी लग्नसे गिनती करके द्वादशांश जान लें जैसे- मेषमें २ अंश ३० कला तक मेषका द्वादशांश होता है। आगे ५ अंश तक वृष का होगा। द्वादशांशपति राशिके स्वामी ही जानें।

त्रिशांशज्ञानम्- मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ विषम राशि(लग्नों) में पहले ५ अंशतक मेषका त्रिशांश होता है ऐसेही आगे १० अंशतक कुम्भ का, आगे १८ तक धनुका, २५ अंश तक मिथुनका और आगे २६ से ३० अंश तक तुलाका त्रिशांश होता है।

वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन समलग्नों में पहले ५ अंश तक वृषका त्रिशांश होता है। आगे १२ अंशतक कन्या का, आगे २० अंश तक मीनका, आगे २५ अंश तक मकर का और आगे २६ से ३० अंश तक वृश्चिक का त्रिशांश माना जाता है।

घण्टोंके कामको मिनटोंमें कैसे करें?

होरादिषट्वर्ग ज्ञानार्थचक्र पर ध्यान दीजिये- इष्ट लग्न के सामने लग्न भुक्तांशोंके नीचे क्रमशः होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश लग्नांक जो मिलें उन्हें होरादि कुण्डलियोंके प्रथम कोष्टकों में रखकर कुण्डलियाँ बनालें। इस तरह मिनटोंमें छहों कुण्डलियाँ बनेगी।

उदाहरण- १ जनवरी सन् १९९३ ई. पूर्ववत् उदाहरण में वृषलग्न शून्य अशांदि १०।६।५८ पर स्पष्ट है। देखिये षट्वर्गसारिणीमें वृष लग्न ० अंशके नीचे क्रमशः ४।२।८।१०।२।२ अंक लिखे मिले। अतः यही होरादि कुण्डलियोंके लग्न सिद्धि हुए अर्थात् होरा में कर्क, द्रेष्काणमें वृष, सप्तमांशमें वृश्चिक, नवांशमें मकर, द्वादशांशमें वृष और त्रिशांश में भी वृष ही है। होरा में ४ कर्कलग्न,द्रेष्काण कुण्डलीमें २ वृष लग्नांक प्रथमभावमें रखा जायेगा, इसी प्रकार आगे जानें।

होरादि कुण्डलियोंमें ग्रह रखनेकी विधि- पूर्ववत् उदाहरणमें १ जनवरी १९९३ अपरान्ह घं.२ मि.२३ बजे रवि स्पष्ट ८।१७।११।५३ धनु राशि के १७ अंश ३० कलाके नीचे षट्वर्गचक्रमें ४।१।१।६।३।९ अंक लिखें हैं। होरादि कुण्डलियोंमें सूर्य इन्हीं लग्नांकों में लगाया जायेगा। अर्थात् होरामें सूर्य कर्कमें, द्रेष्कांण व सप्तमांश में, मेष में तथा नवांश कुण्डलीमें सूर्य कन्यामें द्वादशांशमें मिथुनमें और त्रिशांश कुण्डली में सूर्य धनुमें लगाया जायेगा। इसी प्रकार जन्मकालीन स्पष्टग्रहोंका षट्वर्गीकरण करके होरादि कुण्डलियोंमें लगादें, किस कुण्डलीसे किस विषयका ज्ञान किया जाता है संक्षेपमें यहां लिखते है; विशेष जातक ग्रन्थोंमें देखें।

❀ होरादि कुण्डली फलम् ❀

होराकुण्डली- होरालग्न सिंहमें सूर्य स्थित हों तो जातक रजोगुणी, पुरुषार्थी एवं उच्चपदाभिलाषी होता है। साथमें गुरु मंगल आदि मित्र ग्रह हों तो शूरवीर, राजकाजमें भाग लेने वाला, सम्पत्तिवान, सुखी, सर्वमान्य, शीलसम्पन्न,बहुप्रसिद्ध नेतृत्वकर्त्ता होता है।

'होरायांवै सम्पाद्यैसुखंच' यदि चन्द्रराशि कर्क होरालग्नमें हो और उसमें चन्द्र स्थितहो तो जातक शान्तस्वभाव, मातृभक्त, वंश परम्पराका अनुसरण करने वाला, जनसम्पर्कके कामोंमें रुचि रखने वाला होता है। चन्द्रमाके साथ शुभग्रह हो तो साधु स्वभाव, शीलसम्पन्न, धार्मिकप्रवृत्ति,ऐश्वर्य सम्पन्नसांसारिक सुखोंका भोग करनेवाला होताहै।

नोट- सूर्य अथवा चन्द्र एक दूसरेकी राशियोंमें पापग्रह युक्त अथवा दृष्ट हों तो प्रतिकूलफल होता है। सूर्यके साथ शनि, राहु व केतु या क्षीणचन्द्रमा हो तो जातक नीचप्रकृति वाला, मर्यादा रहित आचरण प्रिय निर्धन एवं दुःखी रहता है। चन्द्रके साथ पापग्रहोंका अशुभ योग बनने पर क्षीणकाय नीचमन अशान्त, माताके विरुद्ध आचरण करने वाला होता है। सूर्य चन्द्र तथा परस्पर शुभग्रह योग बनने पर जातक ज्ञानी, ध्यानी, शोधकर्ता, वैज्ञानिक या दार्शनिक बनताहै।

द्रेष्काणकुण्डली- से जातक से सहोदर(सगे) भाई बहनोंके सुख-दुःख का विचार किया जाता है। **द्रेष्काणेस्याद्भावजंभ्रातृसौख्यम्।** द्रेष्काण लग्न का स्वामी त्रक ६।८।१२ भावमें पाप दृष्ट अथवा युक्त पीड़ितहो और जन्मकुण्डलीके तीसरेभावका स्वामी ६।८।१२वें भावमे पड़ा हो तो जातकको भाई बहिनोंका सुख नहीं मिलता, अथवा वह उनसे दुःखी रहता है। द्रेष्काण लग्नाधिपति केन्द्रगत शुभ ग्रहोंके साथ एवं मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भाई भावजका पूर्ण प्यार मिलता है तथा सयुंक्त व्यवसायसे सौख्यसमृद्धि बढ़ती है।

स्यात्सप्तांशेसन्ततिःपुत्रपौत्री।। सप्तमांशलग्न से सन्तानका विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्नका स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातकको पुत्र अधिक होते हैं। स्त्रीग्रह हो तो कन्या अधिक होती हैं। लग्नका स्वामी ६।८।१२वें भागमें हो तो सन्तान क्षीण हो जाती हैं। सप्तमांशलग्नका स्वामी पापपीड़ित निर्बल हो तो सन्तान नीचकर्म करने वाली होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी शुभग्रह से दृष्ट अथवा युक्त हो तो सन्तति शुभाचरण प्रिय होती है। सन्तानके विषयमें निर्णय लेने से पहले जन्मकुण्डली के पांचवेंभावका गहन अध्ययन करना चाहिए।

रितु शुक्र, रेतज मंगलको न देखें तथा मंगल शुक्रको न देखें तब जातकको बहु विवाह करने पर भी सन्तान नहीं होती है। सप्तमांश चक्र तथा जन्मांगचक्रमें मंगल+शुक्र का संयुक्त योग न हो अथवा परस्पर किसी प्रकार का सम्बन्ध भी न हो तो जातक सन्तान हीन होता है। यह योग स्वयं परीक्षित है।

विशेषलक्षण- शुक्र, चन्द्र, मंगल तीनोंग्रह द्विस्वभाव राशिमें हों तो आयुके पूर्वार्द्धमें सन्तान होती है। यदि तीनोंग्रह धनु राशिमें रहे तो सन्तानका अभाव सा रहता है। लग्न शुभग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो बाल्यावस्थामें पुत्र सुख होता है। ऐसे ही दशमसे योवनावस्था में, चतुर्थ से वृद्धावस्थामें और सप्तम स्थानसे जीवनान्तमें जानना चाहिए। सप्तमांश लग्नपति लग्नसे ६।८।१२वें स्थानमें पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होता है। तीसरे भावमें रवि, गुरु अथवा मंगल पड़ा हों तो जातकको सत्यवक्ता, मनोवांछित धन प्राप्त करने वाला बना देते हैं।

नवांशकुण्डली- से घर गृहस्थमें होने वाले सुख-दुःख का विचार किया जाता है यथा- 'नूनंनवांशेतुकलत्रसौख्यम्' नवांश लग्नेश मंगल हो तो जातककी स्त्री क्रूर, कुलटा, लड़ाकू होती है। सूर्यहो तो पतिव्रता, तेज तरार होती है। चन्द्रमाहो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण तथा मिलनसार प्रकृति की होती है। बुध नवांश पति होने से स्त्री कला प्रवीण, सर्वांग सुन्दर, चतुर ज्ञानवान होती है। ऐसे ही शुक्र से श्रृंगारप्रिय, विलासी और शनि हो तो क्रूर स्वभाव अप्रिय दर्शन वाली, कुलविरुद्ध आचरणप्रिय नीचजातमन होती है। राहु व केतु के प्रभावमें नवांशलग्न हो तो दुराचारिणी जाननी चाहिए।

नवांशलग्नका स्वामी स्वराशिस्थ शुभ ग्रह केन्द्र व नव-पंचम में हो तो जातक दाम्पत्यजीवनका पूर्णसुख भोगता है। भाग्येशके साथ २।११वें भावमें नवांशलग्न का स्वामी उच्च का हो तो जातकको स्त्रियोंसे तथा सुसराल पक्ष से विशेष जायदाद आदिका सुख मिलता है। नवांश पति पापयुक्त व दृष्ट ६।८।१२वें भावमें हो तो स्त्रीका सुख नहीं मिलता अपितु पापग्रह संख्यातुल्य स्त्रियोंका नाश होता है।

नोट- स्त्री-पुरुष सम्बन्धी भावोंका फल जातक ग्रन्थोंमें तुल्य ही कहा है, परन्तु फिर भी स्त्रीके सौभाग्य (सुहाग, पतिके दीर्घजीवन, अच्छे-बुरे आचरण) का फल सप्तमभावसे और शरीरकी सुन्दरता आदि आकृतिका फल चन्द्र तथा लग्नसे विचार करना चाहिए, अर्थात् चन्द्र तथा लग्न सौम्य ग्रहोंसे युक्त हो तो सर्वदा सौभाग्यवती रहे। अतः वैधव्य न भोगनापड़े व पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होने पर दुर्भगा होवे यथा-

स्त्रीपुंसोर्जन्मफलं तुल्यं, किन्त्वत्र जन्मलग्नस्थ्।
तद्बलयोगाद्वपुराकृतिश्च, सौभाग्यमस्तमये।।

जन्मराशि(लग्न) के प्रथम नवांशमें जिसका जन्म हो वह चुगलखोर, चंचल, दुष्ट, धी पापकर्मरत, कुसंगप्रिय दूसरोंके शोकमें व्याकुल चोर होता है। इसी प्रकार द्वितीयनवांशमें जन्म होने पर भोगोंको भोगने वाला, रण विक्रमी, नाच गायन प्रिय तथा विषयासक्त बनता है। तृतीय नवांशकमें जन्म होनेपर जातक धर्मज्ञ, व्याधियोंसे युक्त, सारयुक्त बातोंका जाननेवाला, सर्वज्ञ देवभक्त होता है। चतुर्थ नवांशमें जन्म होनेपर दीक्षायुक्तमन्त्र ग्रहण करने वाला, गुरुभक्त, विधिके विधानानुरुप वस्तुओंको प्राप्त करता है। पंचम नवांश में जन्मेजातक विलक्षण, विख्यात, दीर्घायु तथा बहुत से पुत्र पौत्रों वाले होते हैं। इसी प्रकार छठेमें जन्म होने पर अनावश्यक प्रेमी, पुरुषत्वहीन, शुभलक्षण रहित, बाचाल, दरिद्रितायुक्तअ प्रभावी होता है। सप्तममें उत्पन्न व्यक्ति पराक्रमी सुबुद्धिमान परमोत्साही तथा सन्तोषी होते हैं। अष्टम नवांशमें जन्म होनेपर कृतध्नी, मदमत्त, क्रूर, भोगी, बहुत सी सन्तानोंसे युक्त एवं शुभफल के समयका त्याग करने वाला होता है। जिस जातक का जन्म विहित लग्नके अन्तिम नवांशमें होता है वह कला प्रवीन, चतुर, अपने कार्यमें दक्ष, संयमी, प्रतापी एवं नौकरचाकरोंसे युक्त होता है। यह वर्गोत्तम (लग्नरुप) नवांशको छोड़कर फल कहा-श्रीमान् भूदेव देखें जातक ग्रन्थोंमें।

द्वादशांशकुण्डली- से जातक के माता-पिताके विषयमें विचार किया जाता है यथा स्याद्द्वादशांशेपितृमातृसौख्यम्। द्वादशांश लग्नका स्वामी शुभग्रह हो तो माता-पिता शुभाचरण युक्त, पापग्रह हो तो पापाचरण प्रिय जानने चाहिए। लग्नका स्वामी पुरुषग्रह स्वगृही, मित्रक्षेत्री अथवा उच्च राशिस्थ(द्वादशांश कुण्डलीके) १।४।५।७।९।१०वें स्थानमें पड़ा हो तो पिताका पूर्णसुख और प्रतिकूल होने पर सुख न के बराबर मिलता है। द्वादशांश लग्नाधिपति स्त्री कारक ग्रह सौम्यहो और अपनी राशिका, मित्रराशि या उच्चराशिका होकर १।४।५।७।९।१०वें भावोंमें से किसीमें बैठा हो तो जातक को माताका पूर्णसुख होता है। यदि पाप पीड़ित पापदृष्ट ६।८।१२ व्रक भावोंमें पड़ जाय तो माता-पिता का सुख नही होता,युक्तियुक्त विचारकर फल कहना चाहिए।

'त्रिंशांशकेऽरिष्टफलंविचिन्त्यम्' त्रिंशांशकुण्डलीसे जीवनमें होने वाली शुभाशुभ घटनाओंका विचार किया जाता है। त्रिशांश लग्नका स्वामी पापग्रहोंके साथ ६।८।१२वें भावमें हो तो जातकका जीवनान्त अथवा दुर्घटना ग्रहानुकूल वस्तुविशेषके सम्पर्कसे होता है। यथा-सूर्य के साथ होने से उच्चस्थानसे गिरकर,चन्द्र हो तो जलमें, मंगलहो तो अस्त्र-शस्त्र से, बुध हो तो व्यापारिक झन्झट, गुरु हो तो वायु विकार, आंधीतूफान तथा धार्मिकविवाद, शुक्रके संसर्गसे विलासिता (अनावश्यक प्रेम) शनि हो तो वाहन एवं राहु केतु का सम्पर्क होने पर म्लेच्छकृत्य बुरे कर्मफल दुर्घटनादि से होती है।

अरिष्ट कब और क्यों?

ज्योतिषके माध्यमसे अरिष्ट कब होगा तो क्यों? जाननेके लिए फल कथन करने वालोंको विंशोत्तरीदशा अन्तरदशा तथा प्रत्यन्तर दशाओं का भली प्रकार संशोधन कर लेना चाहिए। फलितके सभी नियमोंका सम्यक् विचारकर फलकथन करनेवाले उपहासके पात्र नहीं बनते। पंचांग भी सूक्ष्म दृश्य गणितसे बना प्रयोग में लेना चाहिए। जैसे श्री ब्रजभूमि पंचांग व दिल्लीसे प्रकाशित श्रीराजधानी पंचांग जिनका गणित सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृग्गतुल्य है।

क्रूरग्रहदशायां च क्रूरस्यानतर्दशा यदा।
शत्रुयोगे भवेन्मृत्युमित्रयोगे च संशयः।।

क्रूर ग्रहोंकी दशामें अगर क्रूर ग्रहोंका ही अन्तर आ जाय और उसमें भी शत्रुग्रह का योग हो तो मृत्यु तथा मित्र योग हो तो भी मरण तुल्य शारीरिककष्ट निसन्देह जानना चाहिए।

अन्य अरिष्ट योग-

क्रूरराशौ स्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः।।

क्रूर ग्रहकी राशिका होता हुआ पापग्रह छटे या आठवें स्थानमें स्थित होकर शुक्र या सूर्यसे दृष्ट होतोवह अपनी दशामें मृत्युकारक होता है।

लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नष्यान्तर्दशागमः।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येणभाषितम्।।

लग्नाधिपतिका शत्रु लग्नमें बैठा हो और उसीकी अन्तर्दशा आ जाये तो अकस्मात मृत्युदायक होता है। यह सत्याचार्यजी का वाक्य है।

मंगलस्य दशायां च शनेरन्तर्दशा यदा।
प्रियतेऽत्र चिरंजीवी का कथा स्वल्प जीविनम्।।

मंगलके दशाकालमें यदि शनिका अन्तर आ जाय तो दीर्घायु वाला भी मर जाय, इसमें स्वल्पायुवालोंका हो तो कहना ही क्या है।

अथ दशारिष्ट भाग:

दशायां बलवान् खेटः शुभैर्वासनिरीक्षितः।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभंगो भवेत्तदा।।

जो दशा वर्तमानहो और उसमें बलवानग्रह हो और वह शुभग्रहावलोकित हो, अथवा सौम्यग्रहके अधिमित्रके वर्गमें तो उसकी दशा में अरिष्ट का भंग होता है।

मूलं दशाधिनाथस्य वाचस्पतिदशा यदा।
वली शुभोऽथविज्ञेयोऽरिष्टभंगस्तदा भवेत्।।

मूल दशाधिपतिकी दशामें अगर बृहस्पतिकी दशाहो तो उस शुभ ग्रह की दशा, होनेके कारण वह दशा बलवन्ती होती है, इस कारण उसमें अरिष्ट नाश हो जाता है।

शुभग्रहो ग्रहैर्योगे विजप्रीजायते सदा।
दशायां न भवेत्कष्टं स्वोच्चादिषु च संस्थिता।।

शुभग्रह अन्यग्रहोंके योग होने पर भी विजयी माना जाता है, और वही शुभग्रह स्वोच्चराशि स्थित हो तो भी वैसा ही है। अतः उसकी दशा में जातकको कष्ट नहीं होता है।

अथ होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश (षट्वर्ग) ज्ञानार्थ सारणी

राशि	अंश→	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
मेष ०	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सप्त	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वाद	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृष १	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सप्त	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वाद	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
मिथुन २	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सप्त	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वाद	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कर्क ३	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सप्त	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वाद	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
सिंह ४	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सप्त	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वाद	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कन्या ५	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सप्त	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वाद	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	अंश→	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
तुला ६	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सप्त	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	५	२	३	३
	द्वाद	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	२	५	५	६
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृश्चिक ७	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सप्त	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वाद	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
धनु ८	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सप्त	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वाद	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मकर ९	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सप्त	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वाद	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
कुम्भ १०	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सप्त	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वाद	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मीन ११	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सप्त	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वाद	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

❀ अथ सूर्यादि ग्रहों की विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा जानने का चक्र ❀

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृतिका उ.फा.उ.षा. अन्तरदशा				रोहिणी हस्त श्रवण अन्तरदशा				मृग.चित्रा धनिष्ठा अन्तरदशा			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं.	०	१०	०	म	०	४	२७
चं	०	६	०	म	०	७	०	रां	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	१	०	०	र	०	६	०	चं.	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा.स्वाती शतभिषा अन्तरदशा				पुन.विशा. पूभा. अन्तरदशा				पुष्य.अनुराधा उभा अन्तरदशा			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	कें	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	च	१	७	०
र	०	१०	२४	च	१	४	०	म	१	१	९
च	१	६	०	म	०	११	६	रा	२	१०	६
म	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
आश्ले.ज्ये. रेवती अन्तरदशा				मघा मूल अश्वनी अन्तरदशा				पूफा. पूषा. भरणी अन्तरदशा			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
च	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
म	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन-सारणी

(जन्म चन्द्र-राश्यंश से विंशोत्तरीदशा भुक्तवर्ष,मास,दिन बोधक सारणी)

	मेष,सिंह व धनु राशिस्थ चन्द्र				वृष कन्या व मकर राशिस्थ चन्द्र				मिथुन तुला व कुम्भ राशिस्थ चन्द्र				कर्क,वृश्चिक व मीन राशिस्थ चन्द्र				
अंश	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	अंश
१	के.	०	६	९	सू.	१	११	१२	मं.	४	०	९	बृ.	१३	२	१२	१
२		१	०	१८		२	४	२४		४	६	१८		१४	४	२४	२
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६	३
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श.	०	११	१२	४
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५	५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८	६
७		३	८	३		४	७	२४	रा.	०	५	१२		५	२	२१	७
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४	८
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७	९
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०	१०
११		५	९	९	चं.	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३	११
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६	१२
१३		६	९	२७		२	३	०		८	६	१८		१३	९	९	१३
१४	शु.	१	०	०		३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२	१४
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	७	१५	१५
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८	१६
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२	बु.	०	५	३	१७
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८		१	८	१२	१८
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१	१९
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०	२०
२१		११	६	०		८	३	०	बृ.	१	२	१२		५	६	९	२१
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८	२२
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७	२३
२४		१६	०	०	मं.	०	४	६		४	९	१८		९	४	६	२४
२५		१७	६	०		०	१०	१५		६	०	०		१०	७	१५	२५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४	२६
२७	सू.	०	१	२४		१	११	३		८	४	२४		१३	२	३	२७
२८		०	७	६		२	५	१२		९	७	६		१४	५	१२	२८
२९		१	०	१८		२	११	२१		१०	९	१८		१५	८	२१	२९
३०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०		१७	०	०	३०

विंशोत्तरी दशा भुक्त भोग्य ज्ञानम्- १ अप्रैल सन् १९९३ ई. प्रातः घं. ५मि.३०बजे राश्यादि स्पष्ट चन्द्र २।२७।५४।४५ है तो उपरोक्त सारिणी में देखिये पहले मिथुनराशि २७ अंश के सामने गुरु दशाके भुक्त वर्ष ८ मास ४ दिन २४ मिले जिनमें अग्रिम सारिणी से ५४ कला का मान १२ मास २८ दिन ४८ घटी और ४५ विकलाका मान ५ दिन २४ घटी ०० पल ग्रहण कर जोडने से कुल योग भुक्त वर्षादि ९।५।२८।१२ हुए, जिन्हें गुरुदशाके कुल वर्ष १६में से घटानेपर भोग्य वर्षादि ६।६।१।४८रहे।(ज्योतिष रहस्य से साभार)

॥ अथ योगिनी दशाऽन्तर्दशा ज्ञानाय चक्रमिदम ॥

मंगला व.१ श्र.आर्द्रा चित्रा			पिंगला व.२ ध.पुनर्वसु स्वाती			धान्या व.३ श. पुष्य विशा.			भ्रामरी व.४ अश्वि.अश्ले. अनु.पूभा.			भद्रिका व.५ भर.मघा. ज्ये.उ.भा.			उल्का व.६ कृ.पूफा. मूल रे.			सिद्धा व.७ रो.उफा. पूषा.			संकटा व.८ मृग.हस्त. उषा.		
द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.
म.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	स.	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	स.	१३	१०	म.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	स.	१०	२०	म.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	स.	८	०	म.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	स.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

विंशोत्तरी दशा परिलेख-

महर्षिपरासरजीके मतसे पुनर्जन्मार्जित शुभाशुभकर्मानुसार प्राणी अच्छे व बुरे ग्रहोंकीविंशोत्तरी महादशामें जन्म लेता है। उपरोक्त चक्रमें कृतिकादि नक्षत्रानुसार सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहोंकी महादशायान्तर्दशा का विवरण दिया गया है। किसीका जन्म कृ.उफा. या उषा. में हुआ है तो उसका जन्म सूर्यकी महादशामें हुआ है ऐसा जानें। अन्य नक्षत्रोंके विषयमें इसी प्रकार समझना चाहिए। कृतिकादि २७ नक्षत्रोंको तीन आवृत्तियों में विभाजित करके विंशोत्तरी दशाओं का चयन(आ.चं.भौ.रा.जी.श.बु.के.शु.) ग्रहानुसार किया गया है।यानी उस समय कुल १२० वर्ष आयु मानी गई थी।

भुक्तभोग्य जाननेकी विधि-

जन्म नक्षत्रके कुल घट्यादि मानको भगोग(सर्वक्ष:) कहतेहैं और जन्म समय तक नक्षत्रके बीते हुए घट्यादि मान को भयात् (गतर्क्ष:) कहते है। भगोग और भयात् के पृथक् पृथक् पल बना लें। भयात् पलोंको दशाके वर्षों से गुणाकर भगोगके सर्वपलोंसे भाग दें, लब्धांक वर्ष होंगे। शेषांशको १२ से गुणाकर दुबारा भगोग पलोंसे भाग दें, लब्ध फल मास व्याप्त होंगे। शेषांकको पुनः ३० से गुणाकर भगोगके पलोंसे भाग करने पर लब्धांक दिन होंगे। इसी प्रकार आगे ६० से गुणाकर पूर्ववत् क्रिया करनेसे घटी-पल आ जाते है। जोकि दशाके भुक्त वर्षादि होते है जिन्हें दशाके कुलमान में से घटाने पर शेष दशाके योग्य वर्षादि निकलते हैं। नोट- इसी प्रकार योगिनी दशाकाभुक्त भोग्य निकालें। भयात् भभोग बनाने कीविधि नामकरण के सन्दर्भ में लिखी है।

योगिनी दशा विवरण- मंगलादि योगिनी दशाओं के क्रमशः स्वामी चन्द्र, सूर्य, गुरु, भौम, बुध शनि और शुक्र होते है। संकटा दशा के पूर्वार्ध १ से ४ वर्ष तक राहु और उत्तरार्ध ५ से ८ वर्ष तक केतू स्वामी होता है। शुभदशाएं मंगला,धान्या,भद्रिका व सिद्धा अशुभ दशाएं पिंगला,भ्रामरी,उल्का व संकटा जाननी चाहिए।

क्र.सं.	केतु व मंगलदशा वर्ष७						शुक्र दशावर्ष२०				सूर्य दशा वर्ष ६						चन्द्र दशा वर्ष १०					
	कला			विकला			कला		विकला		कला			विकला			कला			विकला		
	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	दिन	घटी	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल
१	०	३	९	०	३	९	०	९	०	९	०	२	४२	०	२	४२	०	४	३०	०	४	३०
२	०	६	१८	०	६	१८	०	१८	०	१८	०	५	२४	०	५	२४	०	९	०	०	९	०
३	०	९	२७	०	९	२७	०	२७	०	२७	०	८	६	०	८	६	०	१३	३०	०	१३	३०
४	०	१२	३६	०	१२	३६	१	६	०	३६	०	१०	४८	०	१०	४८	०	१८	०	०	१८	०
५	०	१५	४५	०	१५	४५	१	१५	०	४५	०	१३	३०	०	१३	३०	०	२२	३०	०	२२	३०
६	०	१८	५४	०	१८	५४	१	२४	०	५४	०	१६	१२	०	१६	१२	०	२७	०	०	२७	०
७	०	२२	३	०	२२	३	२	३	१	३	०	१८	५४	०	१८	५४	१	१	३०	०	३१	३०
८	०	२५	१२	०	२५	१२	२	१२	१	१२	०	२१	३६	०	२१	३६	१	६	०	०	३६	०
९	०	२८	२१	०	२८	२१	२	२१	१	२१	०	२४	१८	०	२४	१८	१	१०	३०	०	४०	३०
१०	१	१	३०	०	३१	३०	३	०	१	३०	०	२७	०	०	२७	०	१	१५	०	०	४५	०
११	१	४	३९	०	३४	३९	३	९	१	३९	०	२९	४२	०	२९	४२	१	१९	३०	०	४९	३०
१२	१	७	४८	०	३७	४८	३	१८	१	४८	१	२	२४	०	३२	२४	१	२४	०	०	५४	०
१३	१	१०	५७	०	४०	५७	३	२७	१	५७	१	५	६	०	३५	६	१	२८	३०	०	५८	३०
१४	१	१४	६	०	४४	६	४	६	२	६	१	७	४८	०	३७	४८	२	३	०	१	३	०
१५	१	१७	१५	०	४७	१५	४	१५	२	१५	१	१०	३०	०	४०	३०	२	७	३०	१	७	३०
१६	१	२०	२४	०	५०	२४	४	२४	२	२४	१	१३	१२	०	४३	१२	२	१२	०	१	१२	०
१७	१	२३	३३	०	५३	३३	५	३	२	३३	१	१५	५४	०	४५	५४	२	१६	३०	१	१६	३०
१८	१	२६	४२	०	५६	४२	५	१२	२	४२	१	१८	३६	०	४८	३६	२	२१	०	१	२१	०
१९	१	२९	५१	०	५९	५१	५	२१	२	५१	१	२१	१८	०	५१	१८	२	२५	३०	१	२५	३०
२०	२	३	०	१	३	०	६	०	३	०	१	२४	०	०	५४	०	३	०	०	१	३०	०
२१	२	६	९	१	६	९	६	९	३	९	१	२६	४२	०	५६	४२	३	४	३०	१	३४	३०
२२	२	९	१८	१	९	१८	६	१८	३	१८	१	२९	२४	०	५९	२४	३	९	०	१	३९	०
२३	२	१२	२७	१	१२	२७	६	२७	३	२७	२	२	६	१	२	६	३	१३	३०	१	४३	३०
२४	२	१५	३६	१	१५	३६	७	६	३	३६	२	४	४८	१	४	४८	३	१८	०	१	४८	०
२५	२	१८	४५	१	१८	४५	७	१५	३	४५	२	७	३०	१	७	३०	३	२२	३०	१	५२	३०
२६	२	२१	५४	१	२१	५४	७	२४	३	५४	२	१०	१२	१	१०	१२	३	२७	०	१	५७	०
२७	२	२५	३	१	२५	३	८	३	४	३	२	१२	५४	१	१२	५४	४	१	३०	२	१	३०
२८	२	२८	१२	१	२८	१२	८	१२	४	१२	२	१५	३६	१	१५	३६	४	६	०	२	६	०
२९	३	१	२१	१	३१	२१	८	२१	४	२१	२	१८	१८	१	१८	१८	४	१०	३०	२	१०	३०
३०	३	४	३०	१	३४	३०	९	०	४	३०	२	२१	०	१	२१	०	४	१५	०	२	१५	०
३१	३	७	३९	१	३७	३९	९	९	४	३९	२	२३	४२	१	२३	४२	४	१९	३०	२	१९	३०
३२	३	१०	४८	१	४०	४८	९	१८	४	४८	२	२६	२४	१	२६	२४	४	२४	०	२	२४	०
३३	३	१३	५७	१	४३	५७	९	२७	४	५७	२	२९	६	१	२९	६	४	२८	३०	२	२८	३०
३४	३	१७	६	१	४७	६	१०	६	५	६	३	१	४८	१	३१	४८	५	३	०	२	३३	०
३५	३	२०	१५	१	५०	१५	१०	१५	५	१५	३	४	३०	१	३४	३०	५	७	३०	२	३७	३०
३६	३	२३	२४	१	५३	२४	१०	२४	५	२४	३	७	१२	१	३७	१२	५	१२	०	२	४२	०
३७	३	२६	३३	१	५६	३३	११	३	५	३३	३	९	५४	१	३९	५४	५	१६	३०	२	४६	३०
३८	३	२९	४२	१	५९	४२	११	१२	५	४२	३	१२	३६	१	४२	३६	५	२१	०	२	५१	०
३९	४	२	५१	२	२	५१	११	२१	५	५१	३	१५	१८	१	४५	१८	५	२५	३०	२	५५	३०
४०	४	६	०	२	६	०	१२	०	६	०	३	१८	०	१	४८	०	६	०	०	३	०	०
४१	४	९	९	२	९	९	१२	९	६	९	३	२०	४२	१	५०	४२	६	४	३०	३	४	३०
४२	४	१२	१८	२	१२	१८	१२	१८	६	१८	३	२३	२४	१	५३	२४	६	९	०	३	९	०
४३	४	१५	२७	२	१५	२७	१२	२७	६	२७	३	२६	६	१	५६	६	६	१३	३०	३	१३	३०
४४	४	१८	३६	२	१८	३६	१३	६	६	३६	३	२८	४८	१	५८	४८	६	१८	०	३	१८	०
४५	४	२१	४५	२	२१	४५	१३	१५	६	४५	४	१	३०	२	१	३०	६	२२	३०	३	२२	३०
४६	४	२४	५४	२	२४	५४	१३	२४	६	५४	४	४	१२	२	४	१२	६	२७	०	३	२७	०
४७	४	२८	३	२	२८	३	१४	३	७	३	४	६	५४	२	६	५४	७	१	३०	३	३१	३०
४८	५	१	१२	२	३१	१२	१४	१२	७	१२	४	९	३६	२	९	३६	७	६	०	३	३६	०
४९	५	४	२१	२	३४	२१	१४	२१	७	२१	४	१२	१८	२	१२	१८	७	१०	३०	३	४०	३०
५०	५	७	३०	२	३७	३०	१५	०	७	३०	४	१५	०	२	१५	०	७	१५	०	३	४५	०
५१	५	१०	३९	२	४०	३९	१५	९	७	३९	४	१७	४२	२	१७	४२	७	१९	३०	३	४९	३०
५२	५	१३	४८	२	४३	४८	१५	१८	७	४८	४	२०	२४	२	२०	२४	७	२४	०	३	५४	०
५३	५	१६	५७	२	४६	५७	१५	२७	७	५७	४	२३	६	२	२३	६	७	२८	३०	३	५८	३०
५४	५	२०	६	२	५०	६	१६	६	८	६	४	२५	४८	२	२५	४८	८	३	०	४	३	०
५५	५	२३	१५	२	५३	१५	१६	१५	८	१५	४	२८	३०	२	२८	३०	८	७	३०	४	७	३०
५६	५	२६	२४	२	५६	२४	१६	२४	८	२४	५	१	१२	२	३१	१२	८	१२	०	४	१२	०
५७	५	२९	३३	२	५९	३३	१७	३	८	३३	५	३	५४	२	३३	५४	८	१६	३०	४	१६	३०
५८	६	२	४२	३	२	४२	१७	१२	८	४२	५	६	३६	२	३६	३६	८	२१	०	४	२१	०
५९	६	५	५१	३	५	५१	१७	२१	८	५१	५	९	१८	२	३९	१८	८	२५	३०	४	२५	३०
६०	६	९	०	३	९	०	१८	०	९	०	५	१२	०	२	४२	०	९	०	०	४	३०	०

क्र.सं.	राहु दशा वर्ष १८						गुरु दशा वर्ष १६						शनि दशा वर्ष १९						बुध दशा वर्ष १७					
	कला			विकला			कला			विकला			कला			विकला			कला			विकला		
	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	घटी	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल
१	०	८	६	०	८	६	०	७	१२	०	७	१२	०	८	३३	०	८	३३	०	७	३९	०	७	३९
२	०	१६	१२	०	१६	१२	०	१४	२४	०	१४	२४	०	१७	६	०	१७	६	०	१५	१८	०	१५	१८
३	०	२४	१८	०	२४	१८	०	२१	३६	०	२१	३६	०	२५	३९	०	२५	३९	०	२२	५७	०	२२	५७
४	१	२	२४	०	३२	२४	०	२८	४८	०	२८	४८	१	४	१२	०	३४	१२	१	०	३६	०	३०	३६
५	१	१०	३०	०	४०	३०	१	६	०	०	३६	०	१	१२	४५	०	४२	४५	१	८	१५	०	३८	१५
६	१	१८	३६	०	४८	३६	१	१३	१२	०	४३	१२	१	२१	१८	०	५१	१८	१	१५	५४	०	४५	५४
७	१	२६	४२	०	५६	४२	१	२०	२४	०	५०	२४	१	२९	५१	०	५९	५१	१	२३	३३	०	५३	३३
८	२	४	४८	१	४	४८	१	२७	३६	०	५७	३६	२	८	२४	१	८	२४	२	१	१२	१	१	१२
९	२	१२	५४	१	१२	५४	२	४	४८	१	४	४८	२	१६	५७	१	१६	५७	२	८	५१	१	८	५१
१०	२	२१	०	१	२१	०	२	१२	०	१	१२	०	२	२५	३०	१	२५	३०	२	१६	३०	१	१६	३०
११	२	२९	६	१	२९	६	२	१९	१२	१	१९	१२	३	४	३	१	३४	३	२	२४	९	१	२४	९
१२	३	७	१२	१	३७	१२	२	२६	२४	१	२६	२४	३	१२	३६	१	४२	३६	३	१	४८	१	३१	४८
१३	३	१५	१८	१	४५	१८	३	३	३६	१	३३	३६	३	२१	९	१	५१	९	३	९	२७	१	३९	२७
१४	३	२३	२४	१	५३	२४	३	१०	४८	१	४०	४८	३	२९	४२	१	५९	४२	३	१७	६	१	४७	६
१५	४	१	३०	२	१	३०	३	१८	०	१	४८	०	४	८	१५	२	८	१५	३	२४	४५	१	५४	४५
१६	४	९	३६	२	९	३६	३	२५	१२	१	५५	१२	४	१६	४८	२	१६	४८	४	२	२४	२	२	२४
१७	४	१७	४२	२	१७	४२	४	२	२४	२	२	२४	४	२५	२१	२	२५	२१	४	१०	३	२	१०	३
१८	४	२५	४८	२	२५	४८	४	९	३६	२	९	३६	५	३	५४	२	३३	५४	४	१७	४२	२	१७	४२
१९	५	३	५४	२	३३	५४	४	१६	४८	२	१६	४८	५	१२	२७	२	४२	२७	४	२५	२१	२	२५	२१
२०	५	१२	०	२	४२	०	४	२४	०	२	२४	०	५	२१	०	२	५१	०	५	३	०	२	३३	०
२१	५	२०	६	२	५०	६	५	१	१२	२	३१	१२	५	२९	३३	२	५९	३३	५	१०	३९	२	४०	३९
२२	५	२८	१२	२	५८	१२	५	८	२४	२	३८	२४	६	८	६	३	८	६	५	१८	१८	२	४८	१८
२३	६	६	१८	३	६	१८	५	१५	३६	२	४५	३६	६	१६	३९	३	१६	३९	५	२५	५७	२	५५	५७
२४	६	१४	२४	३	१४	२४	५	२२	४८	२	५२	४८	६	२५	१२	३	२५	१२	६	३	३६	३	३	३६
२५	६	२२	३०	३	२२	३०	६	०	०	३	०	०	७	३	४५	३	३३	४५	६	११	१५	३	११	१५
२६	७	०	३६	३	३०	३६	६	७	१२	३	७	१२	७	१२	१८	३	४२	१८	६	१८	५४	३	१८	५४
२७	७	८	४२	३	३८	४२	६	१४	२४	३	१४	२४	७	२०	५१	३	५०	५१	६	२६	३३	३	२६	३३
२८	७	१६	४८	३	४६	४८	६	२१	३६	३	२१	३६	७	२९	२४	३	५९	२४	७	४	१२	३	३४	१२
२९	७	२४	५४	३	५४	५४	६	२८	४८	३	२८	४८	८	७	५७	४	७	५७	७	११	५१	३	४१	५१
३०	८	३	०	४	३	०	७	६	०	३	३६	०	८	१६	३०	४	१६	३०	७	१९	३०	३	४९	३०
३१	८	११	६	४	११	६	७	१३	१२	३	४३	१२	८	२५	३	४	२५	३	७	२७	९	३	५७	९
३२	८	१९	१२	४	१९	१२	७	२०	२४	३	५०	२४	९	३	३६	४	३३	३६	८	४	४८	४	४	४८
३३	८	२७	१८	४	२७	१८	७	२७	३६	३	५७	३६	९	१२	९	४	४२	९	८	१२	२७	४	१२	२७
३४	९	५	२४	४	३५	२४	८	४	४८	४	४	४८	९	२०	४२	४	५०	४२	८	२०	६	४	२०	६
३५	९	१३	३०	४	४३	३०	८	१२	०	४	१२	०	९	२९	१५	४	५९	१५	८	२७	४५	४	२७	४५
३६	९	२१	३६	४	५१	३६	८	१९	१२	४	१९	१२	१०	७	४८	५	७	४८	९	५	२४	४	३५	२४
३७	९	२९	४२	४	५९	४२	८	२६	२४	४	२६	२४	१०	१६	२१	५	१६	२१	९	१३	३	४	४३	३
३८	१०	७	४८	५	७	४८	९	३	३६	४	३३	३६	१०	२४	५४	५	२४	५४	९	२०	४२	४	५०	४२
३९	१०	१५	५४	५	१५	५४	९	१०	४८	४	४०	४८	११	३	२७	५	३३	२७	९	२८	२१	४	५८	२१
४०	१०	२४	०	५	२४	०	९	१८	०	४	४८	०	११	१२	०	५	४२	०	१०	६	०	५	६	०
४१	११	२	६	५	३२	६	९	२५	१२	४	५५	१२	११	२०	३३	५	५०	३३	१०	१३	३९	५	१३	३९
४२	११	१०	१२	५	४०	१२	१०	२	२४	५	२	२४	११	२९	६	५	५९	६	१०	२१	१८	५	२१	१८
४३	११	१८	१८	५	४८	१८	१०	९	३६	५	९	३६	१२	७	३९	६	७	३९	१०	२८	५७	५	२८	५७
४४	११	२६	२४	५	५६	२४	१०	१६	४८	५	१६	४८	१२	१६	१२	६	१६	१२	११	६	३६	५	३६	३६
४५	१२	४	३०	६	४	३०	१०	२४	०	५	२४	०	१२	२४	४५	६	२४	४५	११	१४	१५	५	४४	१५
४६	१२	१२	३६	६	१२	३६	११	१	१२	५	३१	१२	१३	३	१८	६	३३	१८	११	२१	५४	५	५१	५४
४७	१२	२०	४२	६	२०	४२	११	८	२४	५	३८	२४	१३	११	५१	६	४१	५१	११	२९	३३	५	५९	३३
४८	१२	२८	४८	६	२८	४८	११	१५	३६	५	४५	३६	१३	२०	२४	६	५०	२४	१२	७	१२	६	७	१२
४९	१३	६	५४	६	३६	५४	११	२२	४८	५	५२	४८	१३	२८	५७	६	५८	५७	१२	१४	५१	६	१४	५१
५०	१३	१५	०	६	४५	०	१२	०	०	६	०	०	१४	७	३०	७	७	३०	१२	२२	३०	६	२२	३०
५१	१३	२३	६	६	५३	६	१२	७	१२	६	७	१२	१४	१६	३	७	१६	३	१३	०	९	६	३०	९
५२	१४	१	१२	७	१	१२	१२	१४	२४	६	१४	२४	१४	२४	३६	७	२४	३६	१३	७	४८	६	३७	४८
५३	१४	९	१८	७	९	१८	१२	२१	३६	६	२१	३६	१५	३	९	७	३३	९	१३	१५	२७	६	४५	२७
५४	१४	१७	२४	७	१७	२४	१२	२८	४८	६	२८	४८	१५	११	४२	७	४१	४२	१३	२३	६	६	५३	६
५५	१४	२५	३०	७	२५	३०	१३	६	०	६	३६	०	१५	२०	१५	७	५०	१५	१४	०	४५	७	०	४५
५६	१५	३	३६	७	३३	३६	१३	१३	१२	६	४३	१२	१५	२८	४८	७	५८	४८	१४	८	२४	७	८	२४
५७	१५	११	४२	७	४१	४२	१३	२०	२४	६	५०	२४	१६	७	२१	८	७	२१	१४	१६	३	७	१६	३
५८	१५	१९	४८	७	४९	४८	१३	२७	३६	६	५७	३६	१६	१५	५४	८	१५	५४	१४	२३	४२	७	२३	४२
५९	१५	२७	५४	७	५७	५४	१४	४	४८	७	४	४८	१६	२४	२७	८	२४	२७	१५	१	२१	७	३१	२१
६०	१६	६	०	८	६	०	१४	१२	०	७	१२	०	१७	३	०	८	३३	०	१५	९	०	७	३९	०

लाघवांक (LOGARITHAM) कोष्ठक

(घंटा) कलाक अथवा अंश, मिनट अथवा कला:

मि.	क. ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३क	मि.
००	—	१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	००
०१	३.१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७९५	३३८२	३००४	२६५७	२३३६	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७७	०३७५	०१८२	०१
०२	२.८५७३	१.३६६०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९७	५३३०	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	०२
०३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	४२३६	३७८०	३३६८	२९९२	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	०३
०४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२	२९८६	२६४०	२३२०	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	०४
०५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१४	८९१२	७६९२	६७४१	५९६१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	०५
०६	२.३८०२	१.३३८८	१.०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२८९	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	०६
०७	२.३१३२	१.३३२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६६	०५५६	०३५५	०१६३	०७
०८	२.२५५३	१.३२५८	१.०५११	८८४२	७६३९	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	०८
०९	२.२०४१	१.३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९०	४१८८	३७३७	३३२९	२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४६०	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	०९
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३०	३३२३	२९५०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५३	१०
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२	३७२३	३३१६	२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	८७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०	२९३८	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६६	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	०९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४	१३
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५३५	६६१४	५८५५	५२०९	४६४६	४१४८	३७०२	३२९७	२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४२	०५३२	०३३२	०१४१	१४
१५	१.९८२३	१.२८३३	१.०२८०	८६८३	७५१८	६६००	५८४३	५१९९	४६३८	४१४१	३६९५	३२९१	२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११८९	०९५८	०७३८	०५२९	०३२९	०१३८	१५
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८५	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	३२७८	२९०९	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	८६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	४६११	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४१०९	३६६७	३२६५	२८९७	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२५	१९
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४५९४	४१०२	३६६०	३२५८	२८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५११	०३१३	०१२२	२०
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१७	०५०८	०३०९	०११९	२१
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२५४२	२२२९	१९३६	१६६६३	१४०५	११६२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.००३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७	२८६२	२५२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९३	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२५२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१८	६४३८	५७०६	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०२	६४२४	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१३८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८५	०२८७	००९८	२८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८६	६४११	५६८४	५०६१	४५१६	४०३२	३५९७	३२०१	२८३९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०५	०६८८	०४८१	०२८३	००९४	२९
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२६	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
३२	१.६५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१९	१३६३	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३९९४	३५६३	३१७०	२८१०	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७०	०४६४	०२६७	००७९	३४

लाघवांक (LOGARITHAM) कोष्ठक

(घंटा) कलाक अथवा अंश, मिनट अथवा कला:

मि.	क. ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३क	मि.
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
३६	१.६०२०	१.१७६१	०.९६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५७	२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६४	०४५८	०२६१	००७३	३६
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	९२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६८	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३९
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९२	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१	४०
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४९४७	४४१५	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२७	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०४३७	०२४२	००५५	४२
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०१	३११४	२७५८	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३५	००४८	४४
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६२	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४६	०६३२	०४२८	०२३२	००४५	४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२९	०४२४	०२२९	००४२	४६
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२१	०४१८	०२२३	००३६	४८
४९	१.४६८२	१.१२०९	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१	२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१४	०४११	०२१६	००३०	५०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२४	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३५	४८४४	४३२४	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३७	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८	५४
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
५७	१.४०२५	१.०९०२	०.९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	२३५६	२०५६	१७७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

तत्काल ग्रह स्पष्ट करने की विधि :- श्री ब्रजभूमि पंचांग में प्रतिदिन सुबह घं.५ मि. ३० बजे के लिए सूर्य चन्द्रादि सभी ग्रह रा. अं. क. वि. पर्यन्त स्पष्ट करके छाप दिये जाते हैं। जिस समय के लिए ग्रह स्पष्ट करने हों, उस समय में से ५ घं. ३० मि. घटा दें; शेष घं. मि. चालन धन होगा। चालन तुल्य लाघवांक कोष्ठक से दशमलव सहित लाघवांक प्राप्त करें। पुनः ग्रह गति के अनुसार लाघवांक लेकर पूर्व प्राप्त लाघवांक में जोड़ दें। कुल योग को लाघवांक कोष्ठक में देखे जहाँ समानांक मिले, उनके ऊपर कला व बाईं ओर विकलादि प्राप्त फल को प्रात:कालीन स्पष्ट ग्रह मे जोड़ने से और यदि वक्री ग्रह हो तो घटने से तत्काल ग्रह स्पष्ट हो जायेगा।

स्मरण रहे-अधिक गति से भ्रमण करने वाले (चन्द्र, बुध शुक्र) ग्रहो का चालन तुल्य फल अं. क. वि. भी हो सकता है। युक्तियुक्त विचार कर काम लेना चाहिए।

उदाहरण- १ अप्रैल सन् १९९८ ई. मे दिन के २ बजकर ५७ मिनट में पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है तो १४ घं. ५७ मि. से ५ घं. ३० मि. घटाये शेष ९ घं. २७ मि. चालन बना। चालन तुल्य दशमलव सहित .४०४८ लाघवांक प्राप्त किये।

१ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट ११११११७ को २ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट ११२५।१५।० में से घटाया तो अंशादि १४।३।५३ गति सिद्धि हुई, जिसके अनुसार अनुपात से लाघवांक .२३२१ ग्रहण करके पूर्व प्राप्त लाघवांक में जोड़ा तो कुल योग ६३६९ हुआ। कुल योग को पुनः लाघवांक कोष्ठक मं देखा तो ५ अं. के नीचे ३२ क. के सामने ६३७२ लिखा मिला और ३३ क. के सामने .६३५९ है। अनुपात से ५ अं. ३२ क. १४ वि. ग्रहण करके १ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट ११११११७ मे जोड़ दिया तो १।१६।४३।२१ यह तत्काल चन्द्रस्पष्ट हुआ। यानी १४ घं. ५७ मि. बजे का चन्द्रमा स्पष्ट हो गया।

अथ सूर्यादि ग्रहाणां अष्टकवर्ग चक्रम्

रवि रेखा ४८ दि.३घ.४५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	६	१	३	५	६	१	३
२	३	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्र रेखा ४९ दि.१६।५१

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

भौम रेखा ३९ दि.५।३।३९

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

बुध रेखा ५४ दि.३।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

गुरु रेखा ५६ मा.१।१८।५४

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

शुक्र रेखा ५२ दि.५।५२।५१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	११				१०		११
	१२				११		

शनि रेखा ३९ मा.३।२२।२२

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

लग्न रेखा ४९

सू.	च.	म.	बु	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११	१२	११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

निसर्ग मैत्री चक्रम्

ग्रह	सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्राणि	च. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श	बु. शु.
समाः	बु.	शु. गु. मं. श.	शु. श	मं. गु. श.	श	मं. गु.	गु.
शत्रवः	शु. श		बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

कष्टःस्यादेकरेखायांद्वाभ्यामर्थक्षयो भवेत्। त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिस्समतांवदेत्।। पंचभिश्चवदेत्सौख्यं षट्भिश्चैव धनागमः। सप्तभिःपरमानंदमष्टभिस्सर्वसंपदाम्।। जिस ग्रह का बल देखना हो उसकी रेखा जन्मकुण्डली लिखके लगाएँ। फिर विचारणीय राशिमें कितनी रेखा पायी हैं। यदि १से३ तक पाएं तो निर्बली ग्रह हुआ, ४पाएं तो सम, ५से ८पायें तो बली। ऐसे ही विचार विवाह जनेऊ आदि कर्ममें करें। सब ग्रहोंकी रेखा एक जगह करने से आयु का निर्णय भी ठीक हो जाता है।

अवस्थाच.

विषमे		समे.
मृतावस्था	३०	बालावस्था
वृद्धावस्था	२४	कुमारावस्था
युवावस्था	१८	युवावस्था
कुमारावस्था	१२	वृद्धावस्था
बालावस्था	६	मृतावस्था

अवस्थाजाग्रत

विषमे		समे.
सुसुप्त	३०	जाग्र.
सुप्ता.	२०	सुप्ता.
जाग्र.	१०	सुसुप्त
वि.	अ.	स.

तात्कालिक मैत्री

मित्राणि	शत्रवः
२	१
३	५
४	६
१०	७
११	८
१२	९

पंचधामैत्री सप्तकवर्गीफलम्

१सप्तक वर्गमें स्वगृही	३०	०	०
२मित्रमित्रको अतिमित्रता	२२	३०	०
३मित्रसमको मित्र होय	१५	०	०
४मित्रशत्रुको सम होय	७	३०	०
५समशत्रुको शत्रु होय	३	४५	०
६शत्रुशत्रुकोअतिशत्रुहोय	१	५२	३०

दिनके सहम ऊपरसे और रात्रिके सहम नीचेसे गणना करें

सहम	एतऊ	एतेभ्य	एतयुक्त	सहम	ऐहनक	इनमेक	एतेयु
पुण्यं	सूर्य	चंद्रात्	तनु	प्रसूति	बुधं	गुरुतः	तनु
गुरुः	चन्द्र	सूर्यात्	तनु	जाड्य	शनि	भौमात्	बुध
यश	पुण्यं	जीवात्	तनु	जलप	चंद्रं	शनैः	लग्न
मित्र	पुण्यं	गरुस	शुक्र	शत्रु	शनि	भौमात्	लग्न
महा.	भौमं	पुण्या	तनु	दरिद्र	बुधं	पुण्यात्	बुध
आशा	शुक्रं	शनितः	तनु	शास्त्र	शनि	गुरुतः	बुध
राज	सूर्य	शनैः	तनु	वंदक	बुधं	चन्द्रात्	तनु
माता	शुक्रं	चंद्रात्	तनु	बंधन	शनि	पुण्यात्	तनु
उपाय	गुरुं	शनैः	तनु	अश्व	सूर्ये	पुण्यात्	लाभ
कर्म	बुधं	भौम	तनु	अन्यक	शनि	चन्द्रात्	तनु
कली	भौम	गुरुतः	तनु	बुद्धि	सूर्ये	जीवात्	तनु
चतुष्पद	६ भाव	१२भाव	तनु	अंग	शनि	भौमात्	तनु
रात्रौ	शोधक	शोध्य	विभे	रात्रिमें	शोधक	शोध्य	

गुरु सहम के समान ही ज्ञान-विद्या ज्ञाती होते हैं। ऐसे ही यशःके समान बल देह और महात्म के सम शौर्य धैर्य, माता के समान अंबू, जीवित के समान उपाय, विवाह समस्त्री कलीसोही क्षमायात्रा के समान परदेशमार्ग होते हैं और शोध्य से शोध तक लग्न बीच में नहीं आवे तो सहम में १ राशि और जोड देनी चाहिए अन्यथा नहीं।

।। ग्रहाणांमुच्चनीचदीप्तांशहर्षस्थानानि।।

	ग्रहाः	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
परमोच्च	रा.	०	१	९	५	३	११	६
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	रा.	६	७	२	११	५	५	०
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
दीप्तांशाः	रा.	१५	१२	८	७	९	७	९
	अं.							
हर्ष स्थानानि	रा.	९	३	६	१	११	५	१२
	अं.							

अथ ग्रहाणां विविध विषयोपयोगी गुण-धर्म ज्ञानार्थ चक्रम्

ग्रहाः →	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सितारा	आफ ताब	माह ताब	मिरीख	उता. रुद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास	जनव.
प्लेनेट	सन	मून	मार्स	मरकरी	जुपीटर	वीनस	सेटर्न	ड्रेगनहेड	ड्रेगनटेल
ग्रहाणां१ पाद दृष्टि	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०		३।१०	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९	५।९	५।९	५।९		५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८	४।८		४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७
भाग्योदय वर्षाणि	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनं	हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	पीली वस्तुएँ	गोरक्षा	मृत्युंजय जप	भुजंग दान	ध्वजा दान
ग्रहाणां एक राशि भुक्तप्रमाणम्	मास १	दिन २।	मास १॥	मास १	मास १३	मास १	मास ३०	मास १८	मास १८
रत्नानि	माणिक्य	मोती	प्रवाल	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मित्रग्रहाः	चं.मं. गु.	सू.बु.	सू.गु. चं.	सू.रा. शु.	सू.चं. मं.	बु.रा. श.	बु.रा. शु.	बु.श. शु.	बु.
समग्रहाः	बु.	मं.शु. गु.श.	शु.श. रा.	मं.श. गु.	श.रा.	मं.गु.	गु.	गु.	
शत्रुग्रहाः	श.रा. शु.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं. मं.	सू.चं. मं.	
ग्रहाणांउच्चराशियाँ	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु
परमोच्चांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
ग्रहाणांनीचराशियाँ	तुला	वश्चिक.	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन
अति नीचांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५

सूर्य	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
स्वगृहाणि	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक.	कन्या मिथुन	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मीन
मूलत्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर
ग्रहों के वर्ण	क्षत्रीय	वैश्य	क्षत्रीय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निखाद	निखाद	निखाद
पुरुष-स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	पुरुष	पुरुष
आकार	चतुरस्त्र	स्थूल	चतुरस्त्र	वृत	वृत	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
समय	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
धातु	सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	हीरसु	रौप्य	लोहा	लोहा	लोहा
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
सौम्यादि	उग्र	शुभाशुभ	उग्र	शुभाशुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
गुण	सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम
चरादि	स्थिर	चर	चर	द्विस्व	स्थिर	चर	पक्षीस्थिर	चर	पक्षी
रस	तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय
भूमि	पशु प्राय:	जलभू	दुग्ध	शमशान	वाणी सुराल	जलभू	उत्कर	उषर	उषर
ग्रहों की प्रकृति	पित्त	श्लेष्म	पित्त	सम धातु	सम धातु	कफ शुक्र	वायु	वायु	वायु
ग्रहों की अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
ग्रहों के रंग	पाटल	गौरश्वे	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र,
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
ग्रहों के स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर

पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दावली

अ.= अश्विनीनक्षत्र, अक्षांश=भूमध्यरेखा से उत्तर दक्षिण व्रत ९०-९० डिग्री अग.= अगस्त मास, अं.= अंश, अंग्रेजी मास तारीख, अक्टू.= अक्टूबरमास, अति.= अतिगण्डयोग, अर्धाल्प=आधे से कम ग्रास, अनु.= अनुराधा नक्षत्र, अ.पं.= अग्निवाण, अप्रै.= अप्रैलमास, अ.सि.यो.= अमृसिद्धियोग, अस्त= ग्रह का दिखाई न देना, आ.= आर्द्रा, आश्लेषानक्षत्र, आयुष्मान, आनन्दयोग, आषाढ़, आश्विनमास, आव.= आवश्यकता, आं.प्र.= आंध्रप्रदेश, इं.= इंगलिश तारीख

उ.=उदय, उत्तरदिशा, उपरान्त, उ.गो.= उत्तरगोल, उ.खं.= उत्तराखण्ड, उड़ी.= उड़ीसा, उप.= उपरान्त, उप्र.= उत्तरप्रदेश, उषा.= उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, उभा.= उत्तराभाद्रपदनक्षत्र, उफा.= उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र, ऐं.= ऐन्द्रयोग,

क.= करण, कला, कन्याराशि - कर्क राशि (लग्न), कश्मीर, कल्पादि:= कल्प के आरम्भ की तिथि, का.= कार्तिकमास, काल.= समय, कालदण्डयोग, क्रां.सा.= क्रांतिसाम्य (महापात), कंकण.= कंगन की आकृति में ग्रहण होना, किं= किंस्तुघ्न करण, कु.= कुण्डली, कुम्भराशि, कौ.= कौलवकरण, कोष्ठक, कृ.= कृत्तिकानक्षत्र, कृष्णपक्ष, के= केतुग्रह, केरलराज्य खग्रास= बिम्ब का टोटल ग्रास, खण्डग्रास= कुछ हिस्सा ग्रसना,

ग.= गरकरण, गं.= गण्डयोग, गं.मू.= गण्डमूलनक्षत्र, गु.=गुरुवार, गुरुग्रह, गु.दा.= गुरुग्रहकादान, गो.दा.= गऊ का दान, गुज.= गुजरात, गोधू.= गोधूलि सायंकालीन विवाहलग्न,

घ.= घटी (घड़ी), घं.= घण्टा, (कलाक), घ.उ.= घटी उपरान्त

च.= चतुष्पाद करण, चि.= चित्रानक्षत्र, चै.= चैत्रमास, चो.= चोरवान, चौघ.= चौघड़िया मुहूर्त्त, चं.= चन्द्रवार, चन्द्रग्रह, चंसं.= चन्द्रसंचार, छ.ग.= छत्तीसगढ़,

ज.= जनवरीमास, जयन्ती, ज.उ.= जमादिउस्सानी, जमादिउलअव्वल, जु.= जुलाईमास, जू.= जूनमास, ज्ये.= ज्येष्ठानक्षत्र, ज्येष्ठमास, जि.द.= जिल्कादमुस., जि.हि.= जिलहिजमुस., झा.खं.= झारखण्ड (राज्य),

तंदुल= चावल, ता.= तारीख, ति.= तिथि, तिथ्यिांक नाम- १=प्रतिपदा, २=द्वितीया, ३=तृतीया, ४=चतुर्थी, ५=पंचमी, ६=षष्ठी, ७=सप्तमी, ८=अष्टमी, ९=नवमी, १०=दशमी, ११=एकादशी, १२=द्वादशी, १३=त्रयोदशी, १४=चतुर्दशी, १५=पूर्णिमा, ३०=अमावस्या, तु.= तुलाराशि, तै.= तैतिलकरण, तीज.= प्रत्येकपक्ष की तीसरी तिथि, त्रयोदशी.= प्रत्येकपक्षकी तेरहवीं तिथि, तेरस,

द.= दक्षिणदिशा, द.गो.= दक्षिणगोल (भूमध्यरेखा से दक्षिण का भाग), दा.= दानपूजन, दि.= दिन, दिशा, दि.मा.= दिनमान, दि.ल.= दिनका लग्न, देशान्तर= वह रेखाएं जो एक दूसरे देश की दूरी का ज्ञान कराती हों, ध.= धनिष्ठा नक्षत्र, धनुराशि, धूलिमु.= गोधूलिलग्न, धाता= ब्रह्मा, धातायोग, ध्रु.=ध्रुश्चैवयोग, धृ.= धृतियोग, धूम्र.= धूम्रयोग,

न.= नक्षत्र, ना.= नागकरण, ने.= नेपच्यून ग्रह, निम्बा.=निम्बार्क सम्प्रदाय, नृप.= नृपबानदोष (नृपपंचक),

प.= पल, परिघयोग, पहल, पं.= पंजाब, पंक्ति, पंचक, प.दि.= पश्चिमदिशा, प्र.= प्रवेश, प्रबोध, प्रविष्टा (पंजाबी तारीख), प्रा.= प्रारम्भ, प्री.= प्रीतियोग, पु.= पुष्यनक्षत्र, पु.का.= पुण्यकाल, पुन.= पुनर्वसु नक्षत्र, पूफा.= पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र, पूषा.= पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, पूभा.= पूर्वाभाद्रपदनक्षत्र, प्लू.= प्लूटो (यम) ग्रह फाल्गु.= फाल्गुन मास,

ब.= बवकरण, बं.= बंगाल, बा.=बालवकरण, ब्र.= ब्रह्मयोग, बृ.= बृहस्पतिवार, बु.= बुधवार, बुधग्रह, बि.= बिहार, बं.= बवकरण, बं.= बंगाल, बा.= बालवकरण, भ.= भद्रा, भरणीनक्षत्र, भाद्र.= भाद्रपदमास (भादों),

म.= मईमास, मघानक्षत्र, मकरराशि, मन्वादि= मन्वन्तर शुरु होने की तिथि, मणि.= मणिपुर, माद्यग्रहण= वास्तवमें ग्रहण न होना, मा.= मार्गशीर्षमास, माघ, मार्चमास, मार्गीग्रह, मं.= मंगलग्रह, मंगलवार, मि.= मिनट, मिति, मिथुनराशि(लग्न), मी.= मीनराशि, मु.= मुहूर्त्त मुस्लिम तारीख, मुहर्रम, मू.= मूलनक्षत्र, मे.= मेषराशि, मृ.= मृगशिरनक्षत्र, मृत्युपंचक (बाणदोष)

या.= यावत (तब तक), यो.= योग, युगादि:= युग प्रारम्भ होने की तिथि,

र.= रविवार, रविग्रह, रज्जब मुसलिममास, र.अ..= रविअस्त, र.उ.= रविउदय, र.क्रां.= रविक्रांति, र.यो.= रवियोग, रा.= राष्ट्रीयमिती, राहुग्रह, रात्रि, राशि, राज.= राजस्थान, रम.= रमजान, रा.सं.= राशि सञ्चार, रे.= रेवतीनक्षत्र, रेखाशुद्धि, र.उ.अ.= रविउलअवल, रवि उस्सानी, रो.= रोगपंचक (बाण), रोहिणी नक्षत्र, ल.=लग्नराशि,

व.= वज्रयोग, वरियानयोग, वणिजकरण, वक्री (उल्टीगति), वणिक, वा= वार, वि.= विकला, विष्टिकरण(भद्रा), विष्कुम्भयोग, विशाखानक्षत्र, वि.मु.= विवाहमुहूर्त्त, व्य.= व्यतीपातयोग, व्या.= व्याघात योग, वृ.= वृद्धियोग, वृष, वृश्चिक राशि, वै.=वैशाखमास, वैधृतियोग, वैष्णवसम्प्रदाय, वैकल्पिक व्यवस्था, व्र.= व्रत, व्र.स.= व्रत सभी सम्प्रदाय वालों के लिए, सर्वे.= व्रतसबका,

श.= शतभिषा नक्षत्र, शकुनिकरण, शकसम्वत्, शनिवार, शनिग्रह, शि.= शिवयोग, श्ले.= श्लेषानक्षत्र, शु.= शुभयोग, शुक्रवार, शुक्रग्रह, शुक्लपक्ष, शुक्लयोग, शू.= शूलयोग, शो.= शोभनयोग

श्र.= श्रवण नक्षत्र, श्रा.= श्रावणमास, श्राद्ध,

स.= समाप्त, स.व्र.= सत्यनारायणव्रत, स.सि.= सर्वार्थसिद्धियोग, सा.= साध्ययोग, सायन संक्रान्ति, सा.का.= साम्पातिक काल, स्मा.= स्मार्त्तजन, सफ.= सफर सं.= संक्रान्ति, स्वा.= स्वातीनक्षत्र, सि.= सितम्बर मास, सि.यो= सिद्धियोग, सिं.=सिंह राशि, सिंह लग्न, सु.= सुक्रमायोग, सू.= सूर्यग्रह, सू.अ.= सूर्यअस्त, सू.उ.= सूर्यउदय, सू.क्रा.= सूर्यक्रान्ति, स्टै.टा.= देश में प्रसारित मानक समय, सै.= सैकेण्ड, सो.= सोमवार, सौ.= सौभाग्ययोग, सौम्य.= सौम्ययोग

ह.= हस्तनक्षत्र, हर्षणयोग, हर्षलग्रह, हरि.= हरियाणा, हि.= हिन्दीमास (सायन संक्रान्ति के अनुसार), हिन्दी की तारीख (राष्ट्रीयमिती), हिमा.= हिमाचल,

जातक प्रकरण

जन्म लेने वाले सभी प्राणी जातक कहलाते है। जीवनके सभी क्रिया कलाप आयु पर ही निर्भर करते है, इसीलिए ज्योतिषियोंको सर्वप्रथम जातककी आयुका विचार करना चाहिए। उपरान्त अन्य विषयोंके सन्दर्भमें सोचना शास्त्रोक्त दृष्टि से उत्तम है। फलित ज्योतिषमें आयु निर्धारणकी कई विधियां विद्वानोंने बतलाई है। महर्षि जैमिनीप्रोक्त आयुर्दाय गणितपद्धति की सर्वोपरीय मान्यता है।

॥ अथ आयुर्दाय निर्णायक चक्रम् ॥

दीर्घायु	मध्यमायु	अल्पायु
एक चर राशिमें	एक द्विस्वभाव राशिमें	एक स्थिर राशि में
दूसरा चर राशिमें	दूसरा द्विस्वभाव राशिमें	दूसरा स्थिर राशिमें
एक स्थिर राशिमें	एक चर राशि में	एक चर राशि में
दूसराद्विस्वभावराशिमें	दूसरा स्थिर राशि में	दूसरा द्विस्वभाव राशिमें

महर्षि जैमिनीके मत से आयुर्दाय (उम्र) के तीन भेद होते है यथा-१. दीर्घायु २. मध्यमायु ३. अल्पायु प्रत्येक खण्डका निर्णय भी तीन प्रकार से पृथक्-पृथक् किया जाता है। **१. लग्नेश एवं अष्टमेश, २. शनि एवं चन्द्रमा, ३. लग्न एवं होरा लग्न।**

प्रत्येक प्रकार के दो-दो अधिनायकोंमें से दोनों चरराशिमेंहो, या कोई एक द्विस्वभावमें,दूसरा स्थिरराशिमेंहो तो जातककीदीर्घायु जाननी चाहिए।

यदि दोनों द्विस्वभाव राशिमें हो अथवा एक कोई चर राशिमें, दूसरा स्थिरराशिमें हो तो मध्यमायु जानें। इसी प्रकार यदि दोनों स्थिरराशिमें हो अथवा एक चर राशिमें, दूसरा द्विस्वभाव राशिमें हो तो जातककी अल्पायु होती है।

नोट- तीनों प्रकार से दीर्घायु निकले तो १२० वर्ष, दो प्रकार से निकले तो १०८ वर्ष और यदि एक प्रकार से दीर्घायुका प्रमाण मिले तो ९६ वर्ष जानें। तीनों प्रकार से मध्यमायु निकले तो ८० वर्ष, दो प्रकार से निकले तो ७२ वर्ष और यदि एक प्रकार से मध्यमायुका प्रमाण मिले तो ६४ वर्षजानें। इसी प्रकारअल्पायुका विचार करें अर्थात् तीनोंतरह से अल्पायु निकले तो ३२ वर्ष, दो प्रकारसे अल्पायुका योग हो तो ३६ वर्ष और एक प्रकार से अल्पायुका प्रमाण मिले तो उम्र ४० वर्ष जाननी चाहिये। इसमें ग्रहकक्षा ह्रास-वृद्धि तथा जन्मांगचक्रमें बननेवाले शुभाशुभ ग्रहयोगोंके फलस्वरुप घटा-बढ़ीहो जाती है। राश्यारम्भ में ग्रह अधिक आयु देते है तो राश्यान्तमें पहुँचनेपर क्षीण कर देते हैं। लग्नेश दशमेश व अष्टमेश जन्मकुण्डली के ४।५।९।११ भावमें रहे और केन्द्र १।४।७।१० में जितने ग्रह हों वे दीर्घायु देते हैं। तीसरे तथा चौथे में जो पाप ग्रह ३।६।११ के स्वामी होकर रहें तथा २।५।८।११वें घर में जितने ग्रह रहें वे मध्यमायु देते है और पापग्रह आपोक्लिम् ३।६।९।१२में रहें वे सब अल्पायु देते है।

आयु सुनिश्चित नहीं- गणितोपलब्ध आयुर्दाय पूर्वजन्मार्जित कर्मफल बोधक ग्रहोंके योग से बना है जिसमें केवल जन्म समये ग्रहस्थिति शनि, चन्द्र तथा गुरु वसात् ह्रास वृद्धि ही नहीं, बल्कि वर्त्तमान जन्म में स्वयं मानवकृत शुभाशुभकर्म जन्य न्यूनाधिक होना भी निसर्गसिद्ध एवं शास्त्र सम्मत है, अन्यथा धर्मग्रन्थोंमें वर्णित नैतिकता तथा सदाचारके समस्त उपदेश और श्रुतिवाक्य **शतायुर्वैपुरुषः। पश्येमशरदःशतम्, जीवेम शरदःशतम्।** इत्यादि व्यर्थ होंगे। जन्मकुण्डलीमें सूर्यआत्मा, चन्द्रमामन, गुरुज्ञान, शनिदुःख आदिके निर्णायक है। विशेषतः चन्द्र संयोगसे बने अच्छे बुरे योग अन्य ग्रह वसात् बने योगोंके फलका नाशकर अपना फल देनेमें सशक्त होते हैं क्योंकि 'चन्द्रमा मनसोजातः' वेद का सिद्धान्त है, इसलिये ज्योतिषाचार्यों ने लिखा है-

अन्ययोगफलं हन्ति चन्द्रयोगो विशेषतः।
स्वफलं प्रददातीति बुधो यत्नाद् विचिन्तयेत्।।

प्रसंगवश अब अनुभव सिद्ध दीर्घायु, मध्यमायु अल्पायु सम्बन्धी शुभाशुभ योगोंका उल्लेख करते है। जन्मकुण्डली में पड़ेग्रहोंका शुभाशुभ प्रभाव प्राणीमात्रके शरीर पर पड़ता है। कर्मफल विभाजनहेतु प्रभुने ग्रहोंको बनाया और उन्हें फलदेनेका अधिकार प्रदान किया, क्योंकि कालके कर्त्ता सूर्यादि ग्रह ही है और काल ही समस्त ब्रह्माण्डका नियमायक है।

दीर्घायुयोग-

तनु पति गुरु केन्द्रालय राजै। कोणभवन मह पाप समाजै।।
वर्ष एक सौ बीस प्रमाना। आयुर्बल तेहि केरि बखाना।।
रहै जीव तनु कर्कट रासी। शुक्र वीर्ययुत केन्द्र निवासी।।
जीवै सो मानव शत वर्षा। सुत सम्पतियुत सदा सहर्षा।।
कर्क लग्न तनुगत वागीशा। निजगृह केन्द्रे सौम्य कवीशा।।
राहु शनैश्चर थिर त्रिषडाया। जीवन तासु वर्ष शत गाया।।
नवम भवन निवसै जो मंदा। वीर्यवात तनु-मन्दिर चन्दा।।
रहै चन्द्र बाला भवधर्मा। सो जीवै शत वर्ष सुकर्मा।।
लग्न चन्द्र ते अष्टम भावा। होइ खेट को बास अभावा।।
कवि गुरु केन्द्र रहै बलवन्ता। कहि पूर्णायु तासु मतिमन्ता।।

दोहा- **शुभ ग्रह, पञ्चम नवम गृह, सुर गुरु लग्न कुलीर।।**
असी वर्ष सो जन जियै, कहै देव चित धीर।।

मध्यमायु योग

चन्द्र रहै निज भवन मँह, तनु मद सौम्य न भोग।
साठ वर्ष सो जन जिये, यह भाषैं बुध लोग।।
रहै लग्नपति बहुबली, शुभ खेचर से दृष्ट।
साठ वर्ष सो जीवई, मेटै सर्व अरिष्ट।।
तनु ते शशि ते पूर्ण शशि, बुध गुरु भार्गव केन्द्र।
रहै लग्नगुरु सो जियै, सत्तर वर्ष नरेन्द्र।।
लहै निधनगुरु सौम्य ग्रह, सौम्य चतुष्टय बासि।
चत्वारिंशत वर्ष सो, नर जीवै सुखमासि।।
खल ग्रह हीन लग्न औ चन्दा, लग्ने गुरु त्रिषडाय गमन्दा।
खग विहीन मृतुगृह शुभ केन्द्रा, सत्तरि वर्ष आयु कहि ज्ञेन्द्रा।।

अल्पायु योग

इन्दु रहै आपोक्लिम ग्रामी। आपोक्लिम गृह मँह तनु स्वामी।
लग्न चन्द्र को देखै पापा। जीवै बत्तीस वर्ष सतापा।।
रहै चन्द सुत बहु बली, शुभ खग कण्डक माँहि।
खेटहीन अष्टम भवन, जीवै त्रिंश समाहिं।।
अष्टमपति तनु मँह रहै, तनु पति अष्टम भाव।
क्रूर दृष्ट चौबिस वरष, तासु आयुर्दा भाव।।
लग्नाष्टम-पति-मृतु-भवन, क्रूर विलोकति होइ।
वर्ष सताइस जीवनी, तासु कहै सब कोइ।।
खलयुतगुरु तनु शशि बलहीना। अष्टम गृह मंह पाप मलीना।।
आर्युबल द्वाविंशति साला। भाषै ताको बुद्धि विशाला।।
गुरु व्यय कंकट पाप समाजा। तनु-पति नव रिपु सहज विराजा।।
तीन वर्ष आर्युबल ताको। रक्षक मृत्युञ्जय जप वाको।।

अन्य अरिष्टकारक योग- राहु युक्त चन्द्रमा पापग्रहके साथ लग्नमें बैठाहो और जन्मकुण्डलीके आठवें भावमें मंगलहो तो जातकके सहित माताकी मृत्यु होती है। चन्द्रमाके समान सूर्य ग्रह हो तो, अस्त्र-शस्त्र आदि से मृत्यु होती है।

जन्मांगचक्रमें छठे आठवें पड़े चन्द्रमाको पापग्रह देखें तो जातककी मृत्यु होती है। शुभग्रह देखेंतो आठ वर्ष और यदि शुभाशुभ ग्रहोंके समान प्रभावमें शशि हो तो बच्चेकी चार वर्षमें मृत्यु जाननी चाहिए। यदि दशा अरिष्टकारक न हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

किसस्थानसे किसका विचार करें? जन्मकुण्डलीमें सूर्य जहां हो, उससे नवां स्थान पिताका होता है। चन्द्रमासे चौथाघर माता का, गुरु से पांचवां घर सन्तान का होता है। इसी प्रकार शुक्रसे सप्तमभावमें पति पत्नीके परस्पर सम्बन्धोंका विचार किया जाता है।

जन्मकुण्डलीके बारहवें तथा छठे स्थानमें पड़े पापग्रह माताके लिए, चौथे-दशमें भाव में पड़े अशुभग्रह पिताके लिए नेष्ट होते हैं। उपरोक्त प्रकारसे भी विचार करना चाहिए, जैसे- सूर्य से ९ तथा चन्द्र से ४ घर पाप पीडित हो, तो महा अरिष्ट होता है। ग्रहोंके बलाबलको विचार कर मृत्यु या कष्ट कहना चाहिए।

तृतीय स्थानमें पड़े सूर्य अग्रज (बड़े भाई बहिनोंको) नष्ट करते हैं। शनि पृष्टज (पीछे) छोटे बहिन भाइयोंको नष्ट करते हैं। तृतीय स्थानमें मंगल अग्रज तथा पुष्टज दोनोंको नष्ट करता है।

जन्मलग्न से आठवें चन्द्रमा हो और केन्द्र १।४।७।१० में पापग्रह तथा चौथे स्थानमें राहु के रहनेसे जातक एक वर्ष जीता है।वक्री शनि मंगलकी राशि १।८ में रहे या केन्द्र १।४।७।१०वें हो या आठवें रहे,जिसे बलीमंगल देखताहो,तो दो वर्ष तक अरिष्ट होताहै। शनि,राहु व मंगल युक्त चन्द्रमा जन्म कुण्डली के ७ व ९ वें घर में हो, तो जातक को ७ दिन ७ महीने या ७ वर्षमें अरिष्ट होता है। शनिकी राशि १०।११ में सूर्य और सूर्यकी राशि ५ में शनि जन्म समय में हो, तो बारहवें वर्ष में अरिष्ट होता है।

जिसके जन्मलग्न में सूर्य हो, चन्द्रमा पंचममें पड़ा हो और पापग्रह अष्टममें स्थित हो, तो वह बालक नहीं जीता है।

शनिसे युक्तमंगल यदि लग्नमें,याछठे,आठवें व सप्तममें हो और शुभग्रहोंसे देखा जाता हो,तो निःसन्देह उस बालककीमृत्यु होती है। जिस नक्षत्रपर केतु उदय हो वह रौद्र मुहूर्त्त कहलाता है। उस मुहूर्त्तमें जिसका जन्म हो, वह शीघ्र मरण को प्राप्त होता है।

जिसके जन्म लग्नाधिपति ग्रह छठे आठवें या बारहवें भावमें स्थित हो तो, राशिकी संख्यातुल्य वर्षोंमें अरिष्ट होता है।

> शुक्ल पक्षे निशायां च कृष्णे जातौ दिवा यदा।
> षष्ठाष्टमगतश्चंद्रो न शिशुर्हन्ति तातवत्।।

शुक्ल पक्षमें रात्रिका जन्म हो, कृष्णपक्षमें दिनका और जन्मकुण्डलीमे चन्द्रमा छठे या आठवें स्थानमें हो, तो बालककी मृत्यु नहीं करता अपितु पिताकी तरह रक्षा करता है।

अनन्त सम्पत्ति योग-

> चन्द्रेण मंगलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
> तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीनेव विमुञ्चति।।

इष्ट बनाने की नूतन विधि-

जन्म समयमें से सूर्योदय हीन करने पर शेष इष्ट घंटा-मिनट होता है। घण्टा-मिनट को ढाई से गुणा करने पर इष्ट घटी पल बन जाता है। **स्मरण रहे-** जिस जगह बच्चेका जन्म हुआ हो उसी स्थानका सूर्योदय घटाना चाहिए। सूर्योदय भी भा.स्टै.टा. के अनुसार होना चाहिए क्योंकि विश्वमें समस्त घड़ियां इस समय स्टै.टा. से ही चल रही हैं।

नाम रखने की विधि-

प्रथम परिस्थिति- इष्ट दिन पंचांगमें नक्षत्रका मान (नक्षत्र समाप्त होनेका समय घटी पल एवं घंटा मिनट में जो हर रोज लिखा जाता है) इष्टकालसे अधिक हो, तो उसी नक्षत्रमें शिशु जन्म हुआ है ऐसा जानें। इस परिस्थितिमें विगतदिन गत नक्षत्रके घट्यादि मानको ६० में से घटा दें, बचे हुए अंकोंमें इष्टकालके घटी पल जोड़ने से भयात् (गतर्क्षः) होता है। बचे हुए अंकों में इष्ट दिन वर्तमान नक्षत्रका मान घटी पल जोड़ने पर भभोग(सर्वक्षः) अर्थात् नक्षत्रका कुलमान होता है। **दूसरी परिस्थिति-** इष्टकाल से नक्षत्रका मान कम हो, तो अग्रिम नक्षत्रमें जन्म हुआ है ऐसा जानना चाहिए। इस परिस्थितिमें इष्टकालमें से नक्षत्रका मान घटादें, शेष भयात् (गतर्क्षः) होगा। इष्ट दिन नक्षत्रमान को ६० घटी में से घटाकर शेष घटी पलोंको अग्रिम दिनके नक्षत्रमान में जोड़ देने पर भभोग (सर्वक्षः) होगा। कुल नक्षत्रमान के चार भाग करके देखें, भयात् किस चरण तुल्य बना है। नक्षत्र चरणाक्षर तुल्य जातकका सुन्दर सा नाम रख दें।

नक्षत्रमान घटना-बढ़ना- चन्द्रमाकी दैनिक गति पर निर्भर करता है। कोई भी नक्षत्र कभी भी कम से कम ५२ घटी और अधिक से अधिक ६८ घटी तक हो सकता है। वृद्धि होने पर तीनों दिनका नक्षत्रमान जोड़कर भभोग बनाना चाहिए। अभीष्ट दिन यदि नक्षत्र क्षय हो और इष्ट प्रातःकालीन भोग नक्षत्रमान से अधिक हो तो इष्ट में से नक्षत्रका मान घटानेपर भयात् बनेगा और समाहृत नक्षत्रके अन्तिमकालमें से प्रातःकालीन नक्षत्रकामान घटानेपर क्षय होनेवाले नक्षत्रका भभोग बनेगा। **नोट-** इष्ट बनानेकी अत्यन्त सरल सुबोध नूतन विधि लग्नसारिणी के नीचे लिखी है। नक्षत्र चरणाक्षरोंका विवरण देखिए अ व क हा डा चक्र में। हम अपने पंचांगके पाठकोंकी सुविधाहेतु इसी प्रकरणमें नक्षत्र चरणाक्षरों पर बनने वाले आधुनिक सुन्दर नाम दे रहे हैं।

छठीपूजन- जन्मदिन से गणना कर छठे दिन प्रदोषकाल में करना चाहिए। सपरिवार देशकाल संकीर्तन, संकल्पकर, षष्ठीदेवी वैमाता (परमेश्वर की योगमाया) सहित विधिका सविधि पूजनकर त्रय तापोंसे शिशुकी रक्षा हेतु प्रार्थना करें-

> अथाहिवरदे देवि महाषष्ठीति विश्रुते।
> शक्तिभिः सह बालं मे रक्ष जागरवासरे।।
> शक्तिस्त्वं सर्वदेवां लोकानां हितकारिणी।
> मातर्वालमिमं रक्षमहाषष्ठिनमोस्तु ते।।
> लम्बोदर महाभाग सर्वोपद्रवनाशनं।
> त्वत्प्रसादादविघ्नेश चिरंजीवतुबालकः।।
> जननी सर्वभूतानां बालानां च विशेषतः।
> नारायणी स्वरूपेण बालमेरक्ष सर्वदा।।

जातकर्मसंस्कार- जन्म से १० या ११ दिन नामकरण (दसोठन) होना चाहिए। अन्य आचार्य १२ वें दिन को भी शुभ कहते हैं अन्यथा कुलाचरणके अनुसार शुभ वार में रिक्ता व अमावस्या तिथियोंको छोड़कर अश्वि.रो मृ पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. उफा. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. नक्षत्र तथा शुभ लग्न में यज्ञानुष्ठान कर बच्चेका नाम रख, दक्षिण कान में ३ बार राम कहें।

मूल संज्ञक नक्षत्र अश्विनी, श्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती में जन्मे जातकोंका मूल शान्तिविधान २७वें दिन के लगभग उसी नक्षत्रमें होता है, जिसमें बच्चा जन्म लेता है।

ज्ञानवृद्धि संस्कार- स्वर्णयुक्त अनामिका अंगुली से शुद्ध गोघृत तथा शहद मिलाकर ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वास्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः त्वयि दधामि, इन चारों मन्त्रोंको बोलते हुए नवजात शिशुको थोड़ा-थोड़ा मधु अथवा घृत चटाने से ज्ञानकी वृद्धि होकर जातक यशस्वी होता है।

कुआँ पूजन मुहूर्त्त- मंगल,शनि व रविवार रिक्ता तिथि (४।९।१४।३०) मलमास, पितृपक्ष तथा गुरु शुक्रास्तकाल को छोड़कर शुभ योग एवं मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु, मूल तथा श्रवण नक्षत्र एवं शुभलग्न चन्द्र बल देखकर प्रसूता कूप का पूजन करें।

प्रसूतास्नान मुहूर्त्त- अश्विनी, रो. मृ. उफा. ह. स्वा. अनु. उषा. उभा. नक्षत्रोंमें, कुयोग, क्रूर पाप वार तथा रिक्ता ४।९।१४।३० तिथियोंको छोड़कर प्रसूता स्त्रीको स्नान करवाना शुभ है। जल में अजवायन उबाल लेने से ग्रह दोष तथा रोग नाश होता है।

पिता घर मे थे या नहीं? चन्द्रमा जन्मलग्नको न देखता हो अथवा बुध-शुक्र के मध्य बैठा हो, या मंगल ही सातवें स्थानमें बैठा हो, एवं लग्नमें शनि बैठा हो तो बच्चेका जन्म पिताकी अनुपस्थितिमें हुआ है, ऐसा जानें। कुण्डलीके ८।९।११।१२ वें स्थानमें सूर्य चर राशिका हो तो पिता जन्मसमय दूर दराजके देशमें थे, अगर सूर्य स्थिर राशिका हो तो पिता स्वदेशमें ही थे। उक्त स्थानोंमें सूर्य द्विस्वभाव राशिका हो तो मार्गमें कहनाचाहिए।यदि चन्द्रमा लग्नको देखता होतो पिताघर पर थे।

उप-सूतिकाज्ञानम्- जन्मकुण्डलीमें लग्न और चन्द्रमाके मध्य जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकाएं जननीके पास थीं। लग्न व लग्नेशके साथ व इनके २।१२ स्थानमें कुलग्रह संख्यांक तुल्य उपसूतिका जानें।

द्वितीयप्रकार- लग्नसे सप्तम (अदृश्यचक्रार्ध) तक ग्रह हों तो उपसूतिका जननीके कक्षमें थी और यदि सप्तमसे लग्नपर्यन्त (दृश्यचक्रार्धमें) ग्रह हो तो उपसूतिकाएं प्रसूतिस्थान से बाहर थीं ऐसा जानें। प्रजनन प्रसंगमें सहायक दाई,नर्स,लेडी व पुरुष डाक्टर अथवा परिवारियजनोंका वर्ण, जाति अवस्था रंग रुप आकृति स्वभावादि ग्रहोंके अनुसार जानना चाहिए। जितनेग्रह उच्चकेहों या वक्री हों, उनकी संख्यांक ३ गुणा, अपनी राशि, अपने नवांशमें पड़े ग्रह २ गुणा, उपसूतिकाओंके परिचायक होते है। नीच अस्तगत ग्रह संख्याको आधा करके उपसूतिका कहनी चाहिए। लग्नेशका संयोग जैसे ग्रह के साथ होगा तत्काल वैसा ही संस्कार बनेगा।

तृतीयप्रकार- मीन व मेष लग्नमें जन्म होने पर दो उपसूतिका होती हैं। वृष-कुम्भ में ४,कन्या-तुला में ७,कर्क-धनु में ५,मिथुन-सिंह में ५, वृश्चिक में ८ और मकरमें जन्महोनेपर ३ उपसूतिकायें होती है।

छागे सिंहवृषे लग्ने जायते नालवेष्टितः।
वामभागे च नारीणं पुरुषाणां च दक्षिणे॥

मेष सिंह और वृष लग्न में लड़के का जन्म हो तो नाल दाहिने भागके प्रत्यंगमें लिपटा था। उक्त लग्नोंमें कन्या जन्मे तो नाल बामभाग में लिपटा हुआ था ऐसा जानना।

बच्चा रोया था या नही?- जन्मलग्न मेष, वृष, सिंह, मकर और तुला हो तो बच्चा उत्पन्न होते ही रोया था ऐसा कहें। कुम्भ-कन्या लग्नमें कम रोते है, अन्य लग्नोंमें रोते ही नहींहैं।

जन्म परिज्ञानम्- ३।५।६।७।८।११ ये शीर्षोदय राशियां हैं। अर्थात् जन्म समय इन राशियोंका नवांशलग्नमें हो तो शिरके बल जन्म हुआ जानें। १।२।४।९।१० ये पृष्ठोदय राशियां हैं। इनका नवांश जन्म समय में हो तो पैरोंके बल जन्म हुआ जानें और मीनका नवांश लग्नमें होने पर हाथोंके बल जन्म होता है।

प्रसूतागृह द्वार ज्ञानम्- जन्म लग्न ४।७।८।११ में प्रसूता कक्ष का द्वार पूर्व में होता है। इसी प्रकार ३।६।९।१२ में उत्तर दिशामें २ में पश्चिममें और १।५।१० में मुख्य द्वार दक्षिण दिशामें जानना चाहिए।

द्वितीयप्रकार- केन्द्रगत ग्रह स्थितिके अनुसार सूतिका ग्रहका द्वार जानना चाहिए अर्थात् सर्वाधिकबली ग्रहकी जो दिशा हो उस ओर दरवाजा कहें। केन्द्रमें ग्रहाभाव होनेपर लग्न या लग्नेशकी दिशामें दरवाजा समझें।

सूर्यशुक्रो भौमराहु शनिचन्द्रौ बुधो गुरुः।
पूर्वादीनां क्रमादेते दिशानाथाः प्रकीर्तिताः॥

सूर्य, शुक्र, भौम, राहु, शनि, चन्द्र, बुध और गुरु ये क्रमशः पूर्व, आग्नेय, दक्षिणादि दिशाओंके स्वामी माने गये है।

जन्म समय जातक रोया था या नहीं? मेष, मिथुन, सिंह और धनु में जन्म होने पर बच्चा शीघ्र रोया ऐसा कहें। कन्या, तुला और कुम्भलग्न में जातक कम रोता है। शेष वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन लग्नोंमें बच्चे देरी से रोते हैं।

जन्म भूमि पर हुआ या शय्या पर? इस प्रश्नका उत्तर युक्तिसंगत विचारकर देना चाहिए। वर्तमान समयमें अधिकतर बच्चोंकाजन्म नर्सिग होम या अस्पतालोंमें होता है जोकि बहुमंजिले बने होते है। जन्मलग्न यदि ४।५।६।७।९।१२ हो तो जन्म शय्या जमीनसे उच्चस्थानमें हुआ जानें। अन्य लग्नोंमें भूमिपर कहें। मीनलग्नमें द्वितीय या तृतीय मंजिल पर समझें।

मेषादि राशियोंका अंग विभाग- कालपुरुष के शिर में मेष राशिका स्थान है, मुँखमें वृषका, दोनों भुजाओंमें मिथुनका, हृदयमें कर्कका, उदरमें सिंहका, कमरमें कन्याका, बस्ति (मूत्राशयगुप्तेन्द्रिय) में तुला तथा वृश्चिकका, उरु (दोनोंजंघाओं) में, धनुका, दोनों घुटनोंमें, मकरका, पिण्डलियोंमें, कुम्भका और मीनराशिका दोनों पैरोंमें, स्थान होता है।

अन्य आचार्य जन्मकुण्डलीके १२ भावोंमें अंगोंकी कल्पना इस प्रकार करते है यथा- प्रथमभावमें शिर, २ में मुख, ३ में भुजा, ४ हृदय, ५ में उदर, ६ में कमर, ७ में मूत्राशय, ८ गुप्तेंद्रीय, ९ में जंघा, १० में जानु, ११ में घुटने तथा १२वें भावमें पाद का विचार करना चाहिए। जो राशि कालपुरुषके अंग स्थित शुभाशुभ ग्रह से प्रभावित हो तथा जन्मांगचक्र अंगविभागका ध्यान कर ग्रह स्थितिके अनुसार अच्छा बुरा फल कहें।

चिन्ह ज्ञानम्-

षट् त्रिकोण वा लग्न रवि, बुध भाखै धरि ध्यान।
वामे कछु लहसन कहै, गर्ग-वचन परमान॥
भानु तथा सौरी तनु, धन कुज कंटक चन्द।
बालक को षट् अंगली, भाषत कविकुल वृन्द॥
तनु स्थान मैंहसुक्रहोय, अष्टम जावै राहु।
वाम कर्ण वा मस्तकै, अवस चिन्ह दरसाहु॥
सुहृद भाव मैंह कवि तमस, भौम सौरि वा लग्न।
वामपाद के चिन्ह कौ, भाषत ज्योतिषमग्न॥
नौमे पांचे भृगु वसे, तनु वा चौथे मन्द।
मृत्यु मैंह जावै बुध गुरु, उदरे चिन्ह भणद॥

काणयोग ज्ञानम्-

तनु धन व्यय पतियुक्त भृगु, आइ वसै त्रिक धाम।
वा ससिधन कवि पापयुत, ताहि नेत्र बेकाम॥
सा ऽर्क सुक्र तनु-नाथयुत, भवन वसै त्रिक् जाय।
जन्म अन्ध यहि जोग है, भाषत बुध समुदाय॥
तात मात भ्राता तनय, मातुल त्रिय घर-नाथ।
चन्द्र भौम जो द्वादसै, वाम नैन की हानि॥
भानु राहु दाहिनो नयन, बुध जन कहत बखानि॥

अंगोंमें ग्रहोंका अधिकार- शिर व मुखमें सूर्यका अधिकार है ऐसे ही वक्षस्थल तथा गलेमें चन्द्रका, पीठ व उदरमें मंगलका, हस्त एवं पैरोंमें बुधका, कटिप्रदेश व जांघोंमें गुरुका, गुप्तेन्द्रियोंमें शुक्रका, जंघा व उरुप्रदेशमें शनिका अधिकार होता है। जन्मसमय अथवा प्रश्नसमय जब जैसे ग्रह जिन अंगोंके जिन-जिन भागोंमें गतिशील होते हैं उन अंग प्रत्यंगोंमें वैसे ही दुख-सुख उपस्थित हुआ करते हैं।

सूर्य, भौम और गुरु पुरुष ग्रह हैं, शुक्र, चन्द्र स्त्री ग्रह है तथा बुध और शनि नपुंसक हैं। पुरुषोंके जन्म समयमें पुरुषग्रह तथा स्त्रियोंके जन्म समयमें स्त्रीकारकग्रह व नपुसंकोंको नपुसंकग्रह उत्तम फल देते हैं।

मासोंमें प्रसव दोष- चैत्रमें कुतिया, वैशाखमें ऊँटनी, ज्येष्ठमें बिल्ली, श्रावणमें गधी व घोड़ी, भाद्रपदमें गौ,कार्तिकमें स्त्री, मार्गशीर्षमें हथिनी, पौषमें बकरी और माघमें भैंस प्रसूता हो तो पिता या घरके मालिक को ६ मास तक अरिष्ट रहता है। श्रावणमें दिनको घोड़ी तथा माघमें बुधवारको भैंस प्रसूता हो तो संरक्षकको महाभय जानें। शान्त्यर्थ प्रसूता गौ भैंस आदिका दानकर योग्य आचार्यसे यज्ञानुष्ठान,शान्तिपाठ करें॥

बालकष्टावली चक्रम

दिन-मास-वर्ष परित्वेन नन्दादिमातृकाग्रसितरोगोपद्रव एवं स्वरक्षितोपायादि 'रावणकृतकुमारतन्त्र-चक्रदत्त-उल्लिखितं प्रदर्शितम्'।

पूतना ग्रहण का समय	पूतना ग्रसित रोग लक्षण	मूर्ति निर्माण हेतु उपयोगी पदार्थ	पूजन सामग्री वस्तुनाम(द्रव्य)	धूप तथा बलि दें	धूनी हेतु वस्तुएं उपल - अग्नि	दिन	रोगीकेसिरकेऊपरसे७ बारबलिनिःसारण मन्त्र	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र व सबके लिए औषधि	शरीर में मर्दन करने हेतु विभिन्न पदार्थ
नन्दा मातृका प्र.दिन,प्र.मास व प्र.वर्ष में	अधिक रुदन, तीव्र ज्वर, मूर्च्छा बेहोशी निद्राभंग	नदी या तालाब के दोनों किनारों की मृत्तिका	चावल,श्वतफूल, ध्वजा, दीपक, पान, सराई	गन्ध, धूप, मांस, मद्य, चौमार्ग पर	सरसों,मेढ़ासिंगी, नीम के पत्ते, शिव निर्माल्य धतूरादि	४	ॐनमोभगवते रावणाय हन हन,मुञ्चमुञ्चस्वाहा। नन्दामातृकायै नमः।।	ॐब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तुत्वरितं बालं मुञ्चमुञ्च कुमारकम्।। सर्वौषधि	नीमकी छाल, खेर छाल, काहू छाल पकाकर मर्दन करें।
शुभदामातृका द्वि.दिन, मास व वर्ष में	ज्वर, कंपन, अति प्रलाप, निद्राभंग, निश्चेष्ट होना	सवाकिलोचावलका आटा, गङ्गाजल, घी से मूर्ति बनाना	दही, मद्य, तिल, मछली का मांस	अगर, तगर, माषान्न, रोली चौराहे पर	शिवनिर्माल्य,खश, बिल्ली के बाल, घी, दूध	३	ॐनमो रावणाय हन हन मुञ्चमुञ्चफट्फट् स्वाहा। शुभदामातृकायै नमः।।	लाजवन्ती, कूट, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, लोध क्वाथ	गो या बकरी के मूत्र में देवदारु, नागरमोथ, चन्दन पकाकर मर्दन करें।
पूतनामातृका तृ.दिन, मास व वर्ष में	आकाश निरीक्षण मुष्टिका बंधन, कंपन, चिल्लाना	नदी या तालाब के दोनों तटोंकी मिट्टी का पुतला बनाना	पान, लाल पुष्प, चन्दन, ध्वजा, दीपक, भात	भात, मांस, मद्यदक्षिणमें चौराहे पर	गूगल,सरसों,नीम के पत्ते, मेढ़ासिंगी, शि. नि.	३	ॐनमो रावणाय नमःहन हनमुञ्चमुञ्च,त्रासयत्रासय स्वाहा।पूतनामातृकायैनमः।।	नीम की छाल, विष्णुकान्ता, कपास पेड़ के क्वाथ से	विदारीकंद, श्वेतदाख, हरताल, मैनसिल, राल, कूकट तेल घीमें पकाकर मर्दन करें
मुखमण्डिकामा. चतुर्थ दिन मास व वर्षमें	ज्वर, ग्रीवा न झुके मुट्ठी बांधे, रोता रहे, अधिक सोवे	नदी किनारे की मृत्तिका,चारस्थानों का जल लेना	कमलपुष्प,श्वेत पुष्प, गन्ध, ताम्बूल,चार दीये	१३पूए,मद्य, मछली,मांस, छाछउत्तरमें	केसर, लोहबान, काली मिर्च,	३	ॐनमो रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा। मुखमण्डिकायै नमः।।	कैथ, बेल, अरण्य, अडूसा, कूट और श्वेत अरण्ड क्वाथ	भगरे का रस और वच को तेल में पकाकर मर्दन करें।
शीतपूतनामातृका पंचम दिन, मास व वर्ष में	ज्वराधिक्य, कंपन भाषण न करे, मुट्ठी बांधे रहे	कुम्हारके चाककी मिट्टी से पूतना रूपीपुतला बनाना	ताम्बूल,मीठेचावल, श्वेतपुष्प, ध्वजा, पांच दीपक	५बड़े, गोघृत सुपारी लौंग ईशानमें	सांप की कांचली, नीम के पत्ते, घी, शि. नि.	३	ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय स्वाहा। शीतपूतनायै नमः।।	गोमूत्र, अजामूत्र, देवदारु, नागरमोथा, चन्दनादि क्वाथ	कुटकी, नीमछाल, खैरछाल, पलास, काहूछाल को घृत में पकाकर मर्दन करें।
शकुनिमातृका छःदिन, मास व वर्ष में	ऊपर को देखे, ज्वर, प्रलाप कंपन हो, क्लेश करे	सवाकिलो गेहूँके आटे का सतीर्थो-दक जलसे बनावें	श्वेत-पीत-लालपुष्प, १०दीये,१०ध्वजा दही के बड़े	मद्य,मांस,घी लौंगइलायची आग्नेयदिशा	शि.नि.घृतलहसन गूगल,सरसों,सांपकी कांचली,नीम	२	ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा।। शकुनि मातृकायै नमः।।	केतकी, आम की, जरु की और कैथ वृक्ष की जड़ के क्वाथ	झाऊ,महुआ, खस, गोरीसर, कमलनाल, पद्मकाष्ठ, प्रियंगु मजीठ, गेरु जलयुक्त मर्दन।
शुष्करेवती मा. सप्तम दिन, मास व वर्ष में	ज्वर, गात्रकंप, मुष्टिबंधन,अधिक रुदन करे या हंसे	नदी या तालाब तल की मिट्टी का पुतला बनावें	लालपुष्प,चावल, ताम्बूल,खिचड़ी, १० दीये	मद्य, केसर, केवड़ा,सिंदूर पश्चिमदिशा	शि.नि.सरसों, मेंढ़ा सिंगी, खस, घृत	३	ॐनमो रावणाय तत्तेजसे हनहनमुञ्चमुञ्चस्वाहा। शुष्करेवतीमातृकायै नमः।।	सतीर्थोदक जलम्। सर्वौषधि स्नानम्।।	प्रियंगु पुष्प, सौंफ, चित्रक, गोमूत्र, दही और कांजी क्वाथ मिलाकर मर्दन करें।
नानामातृका अष्टम दिन मास व वर्ष में	दुर्गंधयुक्त ज्वर, गात्रकंप आहार तथा निद्रानाश	गेरु मिट्टी का गंगाजल से सुन्दर पुतला बनावें	ध्वजा, लाल चन्दन,पीपली,लाल फूल, दूध घी	दूध, मांस, ध्वजा, चंदन प्रातःकाल	चन्दन, मद्य, लोहबान, लोंग	४	ॐनमोरावणायत्रैलोक्यविद्रावणाय चतुर्दशयोक्षणाय। ज्वरहनहनॐफट्स्वाहा।।	बेलछाल, अरण्डी, जड़ और कणगच की जड़ का क्वाथ	प्रियंगु पुष्प, जवासा, सौंफ, चित्रक छाल,गोमूत्र,दही कांजी तेलमें पकाकर मर्दन करें।
सूतिकामातृका नवम दिन, मास व वर्ष में	ज्वर, शरीरपीड़ा, वमन करे, बेहोशी हो जाये, सिरदर्द	नदी या तालाब के दोनों किनारों की मिट्टी लें	श्वेतवस्त्र, गन्ध, १३ दीये, १३ ध्वजा, घी	गूगल,नीम पत्ती,गौसींग सरसों,उ.दि	गूगल, लोंग, सूतिका बाल	३	ॐ नमो रावणाय हन हन स्वाहा। सूतिका मातृकायै नमः।।	शुभदामातृका विधानोक्त जानें।	शुभदामातृका विधानोक्त मर्दन करें।
क्रियामातृका दशम् दिन, मास व वर्ष में	ज्वरातिसार, बहु रुदन, हड़फूटन, स्वांस-कास	पवित्र नदीके दोनों किनारोंकीमृत्तिकासे क्रिया पुतलाबनावें	ताम्बूल,लालफूल, रक्तचन्दन५ध्वजा ५दीपक,मालपुआ	मद्य,मालपुआ ताम्बूल,घी, वायव्यकोण	काकविष्टा,गौका सींग,नीम पत्ती, बिल्लीके बाल,घी	४	ॐ नमो चर्णित हस्ताये मुञ्च मुञ्च स्वाहा। क्रिया मातृकायै नमः।।	नीम छाल, विष्णुकांता वन वृक्ष का क्वाथ	नीम की छाल, गोखरु, हर्र को तेल में पकाकर मर्दन करें।
पिपिलिकामातृका एकादश दिन मास व वर्ष में	तीव्रज्वर, अरुचि, अफारा, वमन, कम्पन, मूर्च्छा	सवा किलो गेंहूँ चूर्णका देवस्थान जलसे बनावें	रक्तचन्दन, पीत पुष्प,दूध,ताम्बूल ७ दीपक	गंध,पूआ,मांस मद्य,पीलासिंदूर पूर्व दिशा	शि.नि. गूगल, गौका सींग, सांप की कांचली, घृत	३	ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च स्वाहा। पिपिल मातृकायै नमः।।	नीम, पटोल, कटयाली, गिलोय और अडूसा का क्वाथ	कैथ, बेल, अग्नि मंथ, अडूसा, कूटकांगनी क्वाथ से मर्दन करें।
कामुकामातृका द्वादश दिन, मास व वर्ष में	अनावश्यक हंसी, ज्वर,कम्पन,श्याम वर्ण, चिल्लाए	सवा किलो गेंहूँ चूर्णकानदी-सरोवर जलसेपुतला बनायें	ताम्बूल, गन्ध, श्वेतपुष्प,७पुआ, ७ध्वजा,गङ्गाजल	लोंग,केसर जायफल,काली मिर्चचौराहेपर	शि.नि. गूगल, सरसों, घृत, लोंग	३	ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा। कामुक मातृकायै नमः।।	पीपल, पीपला मूल, कटहरी के क्वाथ में गोघृत पकाकर	तिल, तेल, गिलोय व अडूसा क्वाथ से मर्दन करें।

विवरण:- कौनसी पूतना किस दिन, किस मास, किस वर्षमें ग्रसती(परेशान)करती है। उससे बचने के उपाय इस चक्र में वर्णित हैं। प्रत्येक मन्त्रको २१बार पढ़कर बलिको सात बार रोगीके सिर से नीचे उतार कर उल्लिखित स्थान पर रखें। रोगी रोगमुक्त होकर स्वस्थ हो जायेगा। १सहस्त्र=१००० **अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे):-** यदि दुष्ट दृष्टि(नजरादिदोषों)के कारण बालकके शरीरमें कोई रोग कष्टहो तो-**ॐ नमो वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतित्वरित बाल मुञ्चमुञ्च कुमारकम्।।१।। कृष्ण!रक्ष शिशु- शङ्ख- मधुकैटभ-मर्दन।। प्रातःसङ्गममध्याह्ने सायाह्ने शुचिसन्ध्ययोः।।२।। महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिषूदनः।। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।।३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्।। त्राहि त्राहि हरे नित्य त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।।** इन चार मन्त्रोंसे अभिमन्त्रित हुई गौके गोबरकी शुद्ध भस्मको बालकके मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगोंमें लगाने से बालक का कष्ट सुनिश्चित दूर हो जाता है।

नोट:-एकसहस्त्र=१०००घृत आहुति गायत्रीमन्त्र से देने पर सम्पूर्ण ज्वरों एवं व्याधियों का शमन हो जाता है।

अथ नक्षत्र कष्टावली

अश्विन्यादि नक्षत्राणां रोगोत्पन्न कष्टदिनसंख्या, कष्टलक्षण, शान्त्यर्थ जपसंख्या, वेदोक्त मन्त्राः एवं गंधादि पदार्थानाम् ज्ञानायचक्रम्

नक्षत्र व अंकेस्वामी	कष्ट दिन	नक्षत्रचरणानुसार कष्टदिनसंख्या प्र.	द्वि.	तृ.	च.	साध्यासाध्य ज्वरादि रोग कष्ट के लक्षण	जपसंख्या	जपनीयवेदोक्तमन्त्राः	गन्धादि पदार्थ (वस्तुनाम)	शान्त्यर्थ धारण करें	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	दान वस्तुएं और दान करने का समय
अश्विनी (दस्रौ)	९ दिन	९	११	१०	२०	वातज्वर, गात्र तथांग पीडा निद्राभंग, बुद्धि भ्रम, अरुचि	५ सहस्त्र	ॐअश्विना तेजसा चक्षुःप्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः।	श्वेतचन्दन, कमलपुष्प, घृत, गुग्गल, धूप, घृतदीप, क्षीर, गुड़, मिष्ठान्न	अपामार्ग मूलम्	खांड, यव, घृत मेवा	गुडोदन तिल	घृतकुम्भ, सुवर्ण, तुलादान प्रातःकाल दान करें
भरणी (यम)	११ दिन	०	८०	४०	११	उल्टी दस्त, तीव्रज्वर रोग आलस्यप्रमाद, अन्यरोग	१० सहस्त्र	ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्यते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय नमः।।	अगरगन्ध, कनेरपुष्प, घृत, दीप, गुग्गल, धूप, घृत, गुड, मिष्ठान्न	अगस्त मूलम्	घृत, मधु, तिलाक्षत	मिपरान्न (खिचड़ी)	छायापात्र, दीप, गा, भैंस, घृत युक्त शक्कर, सायंकाल में
कृत्तिका (अग्नि)	९ दिन	९	११	१६	२८	नेत्रविकार, अनिद्रा, भय, अति दाह, उरुशूल, पित्तप्रकोप	१० सहस्त्र	ॐअग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्। अपाᳬ रेताᳬ सि जिन्वति।। ॐ अग्नये नमः।।	श्वेतचन्दन, जूहीपुष्प, घृतदीप, गुग्गलधूप, तिलमाषान्ननैवेद्य	कर्पास मूलम्	तिल, यव, घृत, शर्करा	पायसघृत मोदक	सुवर्ण, गोदुग्ध, दही, चावल प्रदोपकाल में
रोहिणी (ब्रह्मा)	७ दिन	७	९	१८	३०	शिरपीड़ा, ज्वरप्रकोप, कुक्षिशूल, प्रलाप, मोह	५ सहस्त्र	ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ ब्रह्मणे नमः।।	श्वेतचन्दन, कमलपुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य भोग	अपामार्ग मूलम्	तिलाज्य घृत, यव	मध्वाज्य क्षौद्र शाख्यान्नक्षीर	सप्तधान्य, कृष्णगाय, कमण्डल, कन्या भोजन, मध्याह्न में
मृगशिर (चन्द्रमा)	एक मास	९	५	७	१०	त्रिदोषजन्य महाकष्ट, अर्धगात्रपीड़ा, शीतप्रकोप	१० सहस्त्र	ॐइमन्देवाअसपत्नᳬसुबध्वंमहते क्षत्रायमहते ज्यैष्ठ्यायमहते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियायइमममुष्य पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविश एष वोऽमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬ राजा।। ॐचन्द्रमसेनमः।।	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, पायस, अपूपमध्योदन, नैवेद्य	जयन्ती मूलम्	दधि, मीठा पायस, घी	दधि, शर्करा, शाल्यान्न	चावल, दधि बूरा, सवत्सा गोदान, चन्द्रमुखे रात्रि में
आर्द्रा (शिव)	मृत्यु तुल्य	०	१८	०	०	त्रिदोषजन्य, तीव्रज्वर, सर्वाङ्गपीडा, अनिद्रा	१० सहस्त्र	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ रुद्राय नमः।।	श्वेतचंदन, सौरभपुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, पायसौदन, नैवेद्य	सचन्दनाश्वत्व मूलम्	घृत, मधु, शर्करा	दध्योदन मध्वाज्य	श्यामा बछड़ा, ऊनी वस्त्र, समस्त मेवा, विजिया, दिनमें
पुनर्वसु (अदिति)	७ दिन	७	१४	२	२१	ज्वरातिसार, शिरपीड़ा, कटिप्रदेश, पीड़ाव्यथा	१० सहस्त्र	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिःपञ्चजना अदितिर्जनित्वम्।। ॐ अदितये नमः।।	हरिद्रा, कुंकुमगंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्टगंधधूप, घृतदीप, घृताक्तपीतवर्णान्ने, नैवेद्य	अर्कवृक्ष मूलम्	घृत, दूध, तण्डुल	साज्य पीत तण्डुल	वस्त्राभूषण, कमलपुष्प, पांच कन्याओं को भोजन, मध्याह्न में
पुष्य (गुरु)	७ दिन	६	७	१०	२१	ज्वराधिक्य, उदरशूल, महाकष्ट, वायुप्रधानरोग	१० सहस्त्र	ॐवृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ॐ वृहस्पतये नमः।।	कुमकुमगन्ध, कमलपुष्प, घृत, गुग्गल, घृतदीप, घृतपायस, शर्करा नैवेद्य	अपामार्ग मूलम्	घृत, बूरा, पायस	समण्डक मोदक	गो, स्वर्ण, पीतवस्त्र, गुरु सम्मान, दिन में
आश्लेषा (सर्प)	मृत्यु तुल्य	०	०	४१	०	सर्वाङ्गपीड़ा, पादरोगोत्पात विषभय, मृत्युतुल्यकष्ट	१० सहस्त्र	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।।	कुंकुम, अगरगन्ध, अगस्तपुष्प, घृत गुग्गल, धूपघृतदीप, घृतक्षीर, नैवेद्य	पद्मावती मूलम्	शर्करा, मेवा घृत, बड़दूध	हवि, दध्योदन	सवत्सा, श्यामा गो, छायापात्र, मीठा दूध, तारों की छाया में
मघा (पितर)	२० दिन	१५	७	१७	२०	शिररोग, अन्य उपद्रव अर्धगात्रपीड़ा, सन्ताप	१० सहस्त्र	ॐपितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःप्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्नमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरःपितरःशुन्धध्वम्।। ॐ पितरेभ्यो नमः।।	श्वेतचन्दन, चम्पकपुष्प, घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतयुक्तमिष्ठान्न, यव	भृंगराज मूलम्	तिल, घृत, तण्डुल	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिल गुड़, दही, तस्मई गोवत्सा गाय, मध्याह्न में
पू.फा. (भग)	मृत्यु तुल्य	०	१५	०	३०	गात्रव्यथा, ज्वरप्रकोप, शिर पीडा, अन्य असाध्यरोग	१० सहस्त्र	ॐभग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्नः। भग प्रणोजनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तःस्याम्।। ॐभगाय नमः।।	श्वेतचन्दन, मालतीपुष्प, घृतविल्व, धूप, घृतदीप, अपूपोदन, मोदक	कटहरी मूलम्	मालकांगनी तिल, घृत	घृतोदन पायस	पित्तल, यव, माषान्न, सुवर्ण, गोदान, दिन में
उ.फा. (अर्यमा)	७ दिन	७	१४	७	६०	कुक्षिशूल, ज्वरातिसार शिरपीड़ा, अतिकष्टसाध्य	१० सहस्त्र	ॐदेवावध्वर्युश्चागतं रथेन सूर्यत्वधा मध्वायणᳬ समंजायेतंप्रत्नथायं वेनश्चित्रं वानाम्।। ॐ अर्यमाये नमः।।	कर्पूर, केसरगन्ध, अर्कपुष्प, घृत, गुग्गल, घृतदीप	पद्मावती मूलम्	मेवा, तिल, घृत, शर्करा	घृत, शर्करा शाल्यन्न	वस्त्राभूषण, गोदान, अन्नादि दान, दिन में
हस्त (सूर्य)	१५ दिन	१५	१७	१५	०	उरुशूल, अफरा, दस्त, सर्वाङ्गपीड़ा, प्रस्वेदरोग	५ सहस्त्र	ॐविभ्राड्वृहत्पिबतु सोम्य मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम्। वातजूतोयो अभिरक्षतित्मना प्रजाःपुपोष पुरुधा विराजति।। ॐ सवित्रे नमः।।	रक्तचन्दन, केशरगन्ध, कमल पुष्प, घृतगुग्गल, घृतदीप, घृत पायस, नैवेद्य	जाति मूलम	दधि, मेवा, घृत, मीठा	मिष्ठान्न पायस	दूध वाली गो, सुवर्ण, गेहूँ, गुड़, घी, अरुणोदय समये
चित्रा (त्वष्टा)	११ दिन	११	९	२	१६	अनेक रोगोपद्रव, कष्ट [illegible], सामायुक्त	१० सहस्त्र	ॐत्वष्टा तुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धनम्। द्विपदा छन्दइन्द्रियमुक्षा गोत्रवयोदधः।। ॐ विश्वकर्मणे नमः।।	केसर गंध, विचित्र वर्ण पुष्प, घृत, गुग्गल, धूप, घृत, दीप,	मलयज मूलम	तिलाज्य घृततण्डुल	विचित्रान्न, घृत	तिलगुड़, छायापात्र, मेवा, सब्जी, मध्याह्न में

अथ नक्षत्र कष्टावली

अश्विन्यादि नक्षत्राणां रोगोत्पन्न कष्टदिनसंख्या,कष्टलक्षण,शान्त्यर्थ जपसंख्या,वेदोक्त मन्त्राः एवं गंधादि पदार्थानाम् ज्ञानायचक्रम्

नक्षत्र व अकेस्वामी	कष्ट दिन	नक्षत्रचरणानुसार कष्टदिन संख्या प्र.	द्वि.	तृ.	च.	साध्यासाध्य ज्वरादि रोग कष्ट के लक्षण	जप संख्या	जपनीयवेदोक्तमन्त्राः	गन्धादि पदार्थ (वस्तुनाम)	शान्त्यर्थ धारण करें	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	दान वस्तुएं और दान करने का समय
स्वाती (पवन)	मृत्यु तुल्य	६०	१७	३०	०	नानाकष्ट,वातव्याधि,तीव्र वातज्वर,सर्वाङ्गपीड़ा,भ्रम	१० सहस्त्र	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्ते त्रिरागहि नियुत्वाय सोमपीतये॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध(दमनकपुष्प)अगर,धूप, गुग्गल,घृतदीप,नैवेद्य,घृतपायस	जाति मूलम्	तिल, यव घृत,शक्कर	घृत, पायस	स्वर्ण, रक्तधेनु, पक्वान्न, दान सन्ध्याकाल
विशाखा (इन्द्राग्नि)	१५ दिन	१५	०	४	१३	सर्वाङ्गशोथ, अतिदाह, ज्वरातिसार, कुक्षिशूल	१० सहस्त्र	ॐ इन्द्राग्नि आगत ७ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः॥	चन्दन, केशरगन्ध, कमलपुष्प, देवदारु,घृतदीप,घृतपायस, नैवेद्य	गुञ्जा मूलम्	आज्य,पायस इन्द्रजौं,घी	सहवि चित्रान्न	रक्त-पीत वस्त्र, कृष्णवृषभ, छायापात्र, दान प्रातः
अनुराधा (मित्र)	स्थिर रोग	६०	१२	३६	३०	शिरपीड़ा,तीव्रज्वर, शिरो रोग, आधाशीशी	१० सहस्त्र	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदृत ७ सपर्यत। दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत॥ ॐ मित्राय नमः॥	केशरगन्ध, कमलपुष्प, चन्दन, धूप, घृत,पायस, नैवेद्य, घृतदीप	सुपुष्प मूलम्	यव,मीठा घृत,आज्य	मध्वाज्य,गुड माषान्न	स्वर्ण, गौ, छायापात्र दान, अभिजिन्मुहूर्त्त समये
ज्येष्ठा (इन्द्र)	मृत्यु तुल्य	६९	९	६	४	पित्तविकार, कंपन, व्याकुलता, दांतपीसना	५ सहस्त्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम ह्वयामि। शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥	श्वेतचन्दन, गन्ध, चम्पकपुष्प, सुगंधधूप, चित्रान्न, नैवेद्य	अपामार्ग मूलम्	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन, सुपुष्प	स्वर्ण, तिल, नीलवस्त्र, दान दिवासमये
मूल (राक्षस)	९ दिन	०	९	१५	६	मुख तथा उदर रोगोत्पात बेहोशी, भय, दुःस्वप्न	५ सहस्त्र	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमाण ७ स्वे योनावभारुखा। तां विश्वेदेवैर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥	अगरगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृत दीप, कृष्णागरुधूप, माषमिश्रान्न, नैवेद्य	मदार मूलम्	कन्द-मूल, घृत,आज्य	सहवि,माषान्न	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा, दान प्रातःकाल
पू.षा. (जल)	मृत्यु तुल्य	०	१५	२४	१०	शिरपीड़ा,कम्पन,अन्यान्य महाकष्टअसाध्यरोगोत्पात	५ सहस्त्र	ॐ अपाघमप किल्बिषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्ग त्वमस्मद दुःस्वप्न्य ७ सुव॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	श्वेतचंदनगंध,कमलपुष्प,घृतदीप घृतगुग्गलधूप,घृतपायसान्न,नैवेद्य	कर्पास मूलम्	तिल, घृत तंडुल,मीठा	घृत, पायस, मिष्ठान्न,हवि	स्वर्ण, वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ, गोदान, मध्याह्न
उ.षा. (विश्वेदेव)	एक मास	३०	२४	२६	१६	कटिपीड़ा, उदरशूल, प्रलाप, वातव्याधि, ज्वरवेग	१० सहस्त्र	ॐविश्वेदेवाःशृणुतेमं ७ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्या स्मिन्वर्हिषि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः॥	श्वेतचंदनगंध, कमलपुष्प, घृत दीप, घृतगुग्गल, धूप, घृत पायसान्न, नैवेद्य	कर्पास मूलम्	तिल,आज्य यव,मेवा	सहवि, पायस, तिलाज्य	आमान्न, स्वर्णदान, शुभलग्न मुहूर्त्त समये
श्रवण (श्रीविष्णु)	११ दिन	६०	२४	६	९	सर्वाङ्गपीड़ा, त्रिदोष भय, अतिसार, पक्षाघात, शोथ	१० सहस्त्र	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ॐ विष्णवे नमः॥	श्वेतचन्दन, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गल, धूप, घृतदीप, षड्रस, शाल्यन्न, नैवेद्य	अपामार्ग मूलम्	तिल,आज्य यव,शर्करा	सहवि, पायस	स्वर्ण, गौ, छायापात्रदान, शुभलग्न मुहूर्त्त समये
धनिष्ठा (वसु)	१५ दिन	१५	४	२०	२१	ज्वर,कंपन,रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ तथा अन्यरोग	१० सहस्त्र	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोःपवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः॥ ॐ वसुभ्यो नमः॥	श्वेतचन्दन,गन्ध,कमलपुष्प,धूप, गुग्गल, घृत, दीपक, घृतपायस, नैवेद्य	भृगराज मूलम्	तिल,आज्य पायस,घी	पायस,मोदक, पुष्प,तिलपिष्ट	छत्रोपानत, अश्व, स्वर्ण, गोदानादि प्रातःकाल
शतभिषा (वरुण)	११ दिन		४	४५	३	२२ वातज्वर, सन्निपातजन्य कष्ट, कफ के विकार	१० सहस्त्र	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥ ॐ वरुणाय नमः॥	केशर, अगरगन्ध, कमलपुष्प, कर्पूर, चन्दन, धूप, घृतदीपक, घृतपीलिका, नैवेद्य	कमल मूलम्	आज्य, घी दध्योदन	घृत, गुड़, चित्रान्न	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र दान रात्रि
पू.भा. (अजपाद)	मृत्यु तुल्य	०	१२	२१	३९	वमन, व्याकुलता, शरीर पीड़ा, त्रिदोषजन्यान्य असाध्य रोग	१० सहस्त्र	ॐ उत नोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः॥ विश्वेदेवाऽऋतावृधो हुवाना स्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	चन्दनगन्ध,केसर, श्वेतार्कपुष्प, शतौषधि,मिश्रितपुष्प,घृतदीपक, दधिपायस, नैवेद्य	भृगराज मूलम्	क्षीर,आज्य सर्करा,घी	दध्योदन, पायस	स्वर्ण, रजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्र दान प्रातःकाल
उ.भा. (अहिर्बु.)	७ दिन	१०	३	९	१५	अतिसार,उदरशूल,शोथ, हड़फूटन, अकारण भय	१० सहस्त्र	ॐशिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि ७ सीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायराय स्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्यःनमः॥	चन्दन, कर्पूरगन्ध, कमलपुष्प, बिल्वपत्र, गुग्गल, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य	अश्वत्थ मूलम्	तिल,आज्य यव,शर्करा	तिल, घृत, मुद्ग माष	स्वर्ण, रजत, तिल, कृष्णवस्त्र, दान शुभलग्न मुहुर्त्त
रेवती (पूषा)	स्थिर रोग	१८	१०	९	२०	वात-पित्त जन्य ज्वर, उदर शूल, चित्तभय, विषाद	५ सहस्त्र	ॐ पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तव स्मसि॥ ॐ पूष्णे नमः॥	रक्तचन्दन, गन्ध, मन्दार पुष्प, गुग्गल, घृत, पायस, घृतदीप, नैवेद्य	अश्वत्थ मूलम्	तिल,आज्य तंडुल,घी	सहवि, दध्यन्न	रजत व पीतल पात्र, वस्त्र, वृषभ, छायापात्र दान प्रातःकाल

एक नक्षत्र जन्म दोष- पिता-पुत्र, माता-पुत्र व कन्या अथवा दो सहोदर भाइयोंका जन्मनक्षत्र एक ही हो तो दोनोंमें से एक की मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट हो, शान्त्यर्थ गौ, वस्त्र, सुवर्ण दान तजन्य नक्षत्र मन्त्रका जाप यज्ञादि से अरिष्ट निवारण होता है।

त्रिखल जन्म दोष- तीन पुत्रोंके बाद कन्या अथवा तीन कन्याओंके बाद पुत्रका जन्म हो तो 'त्रिखल' दोष माना जाता है। पुत्र पिताको, पुत्री माताको नेष्ट होती है। शान्तिहेतु नामकरण तक भूमिशयन तीनअन्न,तीनबर्तन, तीनवस्त्र, तीन प्रकार की मेवाएं तथा तीन प्रकारके फलादिदान, महामृत्युञ्जयजप यथाशक्ति करानेसे शान्ति होती है।

दांत निकलने का फल- बच्चेके जन्म से ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिताको अरिष्ट होता है। ऊपरकी पंक्तिमें दांत होने से अधिक दुःखदाई होते हैं। प्रथम मासमें दांत निकलें तो स्वयं जातक को नेष्ट, दूसरेमें छोटे भाई, तीसरेमें बहिन, चौथेमें कुटुम्बी भ्राता और पांचवें मासमें दांत निकले तो मातुल (मामा) पक्षको नेष्ट होता है।

अशुभफलशान्त्यर्थ मां गंगाकी गोदमें पार्थिव पूजन, नाना परिवारकी ओरसे मामा शिशुके लिए वस्त्राभूषण, सप्तधान्य देकर बिना किसीके साक्षात्कार किए उल्टेपांव लौट जाय, ऐसा करनेसे भय नहीं होता है। छटे, सातवें आदि मासोंमें दांत निकलना श्रेष्ठ है।

गण्ड मूल विचार- रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठाकी अन्तिम दो-दो घटी और अश्वि., मघा, मूल के आरम्भकी दो-दो घटीका समय गण्डमूल होता है। अन्य आचार्य श्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रकी अन्तिम १६ घटी और मघा, मूल, अश्वि. के प्रथम चरणको गण्डान्त कहते हैं। कुछ विद्वानोंके मत से रे. अ. श्ले. म. ज्ये. और मूल नक्षत्रका मध्यभाग चार घड़ी गण्डान्तकाल होता है।

तिथ्यादि गण्डान्त विचार- ५।१०।१५ तिथियोंकी अन्तिम और १।६।११वीं तिथियोंके आरम्भमें एक-एक घटी गण्डान्तकाल होता है।

कर्क-सिंह, वृश्चि.-धनु, मीन-मेष इन लग्नोंकी सन्धिरुप एक घटी को लग्न गण्डान्त कहते हैं। गण्डयोगमें जन्मे जातकके लिए पूर्वाचार्योंका आदेश इस प्रकार है-सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो विधीयते। वर्जयेद्दर्शनं तावत्तच्च षाण्मासिकं भवेत्।। तिथि गण्डे त्वनड्वाहं नक्षत्रे धेनु रुच्यते। काञ्चनं लग्नगण्डे तु गण्डदोषो विनश्यति।।

अशुभ फल

तिथ्यर्ज्ञगण्डे पितृमात्रनाशो लग्ने तु संधौतनयस्य नाशः।
सर्वेषु नो जीवति हन्तिबन्धून् जीवन्पुनः स्याद्गहवारणाश्चः।।

अन्य मत

अश्विनीमघमूलादौ त्रिषट्कनवनाडिकाः।
रेवतीसार्पशाक्रान्ते मासाश्च ऋतुसायकाः।।
अश्विनीमघमूलादौ नाडिकाद्वितयंतथा।
अश्विनी मघमूलानां पूर्वार्ध बाध्यते पिता।।
पूषाहिशक्रपश्चार्द्धे जननीबाध्यते शिशौः।
पितृहा तु दिवाजातो रात्रिजातस्तु मातृहा।।
आत्मघ्नक् सध्ययोर्जातो नास्ति गण्डो निरामयः।

मूल नक्षत्रके कुल मानको आठसे विभाजितकर चार भाग मूल वृक्ष की जड़ में रखें, आगे चतुर्भागमें सातवां भाग और मिलाकर मूलवृक्षके स्तम्भमें रखकर यथाक्रम फलका विचार निम्नलिखित चक्रानुसार करें।

श्लेषा वृक्ष विभाग फलम्		मूल वृक्ष विभाग फलम्	
विभाग	हिस्सा फलम्	विभाग	हिस्सा फलम्
१ मूल (जड़)	४ मूल नाश	१ मूल (जड़)	७ मूलनाश
२ स्तम्भ	७ धन हानि	२ स्तम्भ	८ स्वयंहानि
३ त्वचा	१० भाई कष्ट	३ त्वचा	१० माताहानि
४ शाखा	८ माता कष्ट	४ शाखा	११ मामाकष्ट
५ पत्र	९ परिवारक्षयः	५ पत्र	१२ राज्यलाभ
६ पुष्प	५ मन्त्रीक्षयः	६ पुष्प	५ मन्त्रीलाभ
७ फल	६ अधिकलाभ	७ फल	४ धन लाभ
८ शिखा	११ आयु कम	८ शिखा	३ अल्पायु

❀ अथ पुरुष जन्म मूल विचार ❀

स्थान	शीर्षे	मुखे	स्कन्धे	वाह्वो	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्य	जानुह्वि	पादे
घटयः	५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६
फलम्	राज्य लाभ	पिता हानि	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	भोगी	बुद्धि-मान	बुद्धि-मान

❀ अथ कन्या जन्म मूल विचार ❀

स्थान	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	वाह्वो	हस्ते	गुह्य	जंघे	जानुह्वि	पादे
घटयः	४	६	५	५	१०	८	४	४	४	१०
फलम्	पशु नाश	धन हानि	धन लाभ	कुटिल हृदय	धन लाभ	दया-वान	कामिनी	मामा कष्ट	भ्रातृ कष्ट	वैध. कष्ट

❀ अथ मूल निवास ज्ञानार्थ चक्रम् ❀

जन्म मासानुसारेण	वै.ज्ये.मार्ग. फाल्गु	चैत्रश्राव.का.पौष	आषा.भाद्र.आ.माघ
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल का निवास	पाताल में	भूमि में	स्वर्ग में
और फल	धनैश्वर्य वृद्धिः	परिवार में हानिः	राज्य सुख प्राप्तिः

फलम्- स्वर्गे मूले भवेद्राज्यं पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा मूलं तदा शून्यं समादिशेत्।।

❀ अथ आश्लेषा विभाग फलम् ❀

स्थानम्	शिर	मुख	नेत्र	ग्रीवा	स्कन्ध	हस्त	हृदय	नाभी	गुदा	पाद
विभागम्	५	७	२	३	४	८	११	६	९	५
फलम्	राज्य प्राप्त	पिता हानि	माता हानि	नाना भोग	पितृ भक्त	बली हो	हिंसक	चोरी भ्रम	त्याग	धनैश्वर्य हानि

❀ अथ आश्लेषा वृक्षविभाग फलम् ❀

स्थानम्	फल	पुष्प	दल	शाखा	त्वचा	लता	स्कन्ध
विभागम्	१०	५	९	७	१३	१२	४
फलम्	धनैश्वर्य	धन वृद्धि	राजभय	धनहानि	मातृ हानि	पितृ हानि	अल्पायु

❀ अथ ज्येष्ठा जन्म द्वादश भाग फलम् ❀

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	५७	६०
विमाता कष्ट	नाना कष्ट	मामा कष्ट	माता कष्ट	स्वयं कष्ट	गोत्र हानि	दोनो कुल हानि	बड़े भाई हानि	श्वसुर कुल हानि	परि-वार कष्ट	लघु भाई कष्ट	श्वशुर कष्ट

गण्डान्तफलम्- सन्ध्यारात्रिदिवाभागे गण्डयोगेध्रुवं शिशुः।
आत्मानं मातरं तातं विनिहन्ति यथाक्रमम्।।

कृष्णाचतुर्दशी जन्मफलम्- चतुर्दशीविहित कालको ६ से विभाजित करके प्रत्येक भागका फल-प्रथमभागमें जन्म हो तो शुभ, द्वितीयमें पिता, तृतीयमें माता, चतुर्थमें मातुलपक्ष, पंचममें कुलके व्यक्ति सुहृदय महानुभाव कष्ट पाते हैं। छठे भागमें जन्म होनेपर धनकी हानि होती है।

नोट- गण्ड शान्ति विधान शान्ति प्रकरण में देखना चाहिए।

अथ अमावस्याके भेद- जिसमें चन्द्रमाकी कला दृश्य हो वह सिनीवाली और जिसमें कला अदृश्य रहे उसे कुहूवाली अमावस्या कहते हैं।

सिनिअमावस्या जन्मफल- स्त्री,हथिनी,घोड़ी,भैंस,गौ,पालतूपक्षी,मृगी या दासीशिशुजन्में तो धन ऐश्वर्यहानि,व्यर्थकलंकअपयशका भय होताहै। **कुहूअमावस्यामें** प्रजनन समस्त दोषोंको करने वाला है। घरधनीकी आयुक्षय होती है। धन घटता है। शास्त्रकारोंने कल्याणकी इच्छासे शिशुका त्याग लिखा है। सविधि शान्ति यज्ञादि होने पर शुभमाना है।

अन्यकुयोगजन्मफलम्-

कुमार जन्मकाले तु व्यतीपातश्च वैधृतिः।
संक्रान्तिश्च रवेस्तत्र जातो दारिद्र्य कारकः॥
अम्रियं मृत्युमाप्नोति नात्रकार्या विचारणा।
स्त्रीणाञ्च शोकोदुःखञ्च सर्वनाशकरं भवेत्॥

स्त्री-दासी-गौ आदि पशु-यमल जन्मफलम्-

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामहि।
सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एकलिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ।
पित्रोर्विघ्नकरौज्ञेयौ तत्र शांतिर्विधीयते॥

मूल नक्षत्र चारचरण जन्मफलबोधक चक्र

अश्विनी चार चरण फल		आश्लेषा चार चरण फल	
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. पिता को अशुभ	पिता को नेष्ट	१.शान्ति से शुभ	सुखसमृद्धि
२. धनैश्वर्य वृद्धि	धन लाभ	२.धनैश्वर्य नाश	सास नेष्ट
३. मन्त्रि पदासीन	राजकाजमें नि	३.माता को नेष्ट	सास नेष्ट
४. राज्य सम्मान	मान सम्मान	४.पिता को नेष्ट	सास नेष्ट
मघा चार चरण फल		**ज्येष्ठा चार चरण फल**	
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. माता को कष्ट	माता-विमाता ने.	१.बड़ेभाई को ने.	जेठ को नेष्ट
२. पिता को कष्ट	पिता श्वसुर ने.	२.लघुभ्राता को ने	लघु भगिनी व देवर नेष्ट
३. सुख समृद्धि	धन वृद्धिः	३.जननी को नेष्ट	उभय कुल माता कष्ट
४. धनायु सुखस.	धनैश्वर्य वृद्धिः	४.स्वयं को नेष्ट	देवरको श्रेष्ठ
मूल चार चरण फल		**रेवती चार चरण फल**	
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. पिता को नेष्ट	श्वसुर को नेष्ट	१.राजकार्य रत	राजकाज में नि.
२. जननी को नेष्ट	सास को नेष्ट	२.मंत्रित्व प्राप्ति	मंत्रित्व प्राप्ति
३. धनैश्वर्य हानि	दोऊ कुल दोष	३.धनैश्वर्य वृद्धि	ऐश्वर्य वृद्धिः
४. शान्ति से शुभ	शान्ति से शुभ	४.स्वयं को नेष्ट	स्वयं को कष्ट

ॐ चन्द्रमा से पाया जानना ॐ

जन्मकुण्डलीके १,६,११ वें स्थानमें चन्द्रमा हो तो स्वर्णपाद, २,५,९ में चांदी, ३,७,१० में तांबा और ४,८,१२ भावमें हो तो लोहेके पायासे जन्म हुआ है ऐसाजानें यह मत सर्वमान्य है।

नक्षत्रसे पाया विचार- **आर्द्रादि दशकं रूप्यं विशाखादि युगलोहकम्।**
पूषादि सप्तताम्रश्च रेवती षष्ठ स्वर्णकम्॥

आर्द्रादि १० नक्षत्र चांदीके पाया। विशा., से ४ में लोहपाद। पूषा. से ७ तक ताम्रपाद और रेवती से ६, नक्षत्रोंमें जन्म हो तो स्वर्णपाद से जानना चाहिए। तांबा, चांदी श्रेष्ठ, लोहा और स्वर्णपाद फल नेष्ट होता है।

द्वितीय मत- **आर्द्रा दशरूप्याणां विशाखा नव ताम्रकम्।**
रेवती षट् स्वर्णश्च शेषा लोहाः प्रकीर्तिताः॥

आर्द्रादि १० नक्षत्रों में जन्म हो तो चांदी के पाया। विशाखादि ९ में तांबे के पाया, रेवत्यादि ६ में सोनाके पाया। पूषा.उभा.में जन्म होने पर लोके पायाजानना। दोनोंमत परस्पर भिन्न होने के कारण सर्वमान्य नहीं।

अथ मेषादि जन्मलग्न शुभाशुभ फलम्

मेषे लग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः।
सुधीः स्वजनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः॥

मेष लग्नमें जिसका जन्म होता है वह उग्र स्वभाव, अभिमानी, गुस्साखोर, सुबुद्धिमान अपने बान्धवोंका हनन करने वाला, पराक्रमी तथा दूसरोंका प्यारा होता है। नेष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८ विशेष दान, पुण्य परित्वेन पूर्णआयु को भोगता है। लगभग १०० वर्ष होती है।

प्रसूता गृह पुराना, निकास पूर्वमें, जननीका शिरभी पूर्वमें, वस्त्रादि जो धारण किये वह लाल प्रजननसे पहले मीठा कुछ खाया हो, कष्ट अधिक हुआ हो, निम्नस्थल पर जन्मा बच्चा तत्काल रोया हो, उपसूतिका ३ या ६, बच्चेके मुखका रंग गेहुंआ, नेत्र श्वेत सुन्दर, प्रकृति-वात-श्लेष्म, कदसामान्य, शरीरदृढ़, वाणीचंचल, जन्म पैरोंके बल हुआ जानें।

वृष लग्न भवो लोके गुण भक्तः प्रियंवदः।
गुणी कृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजन प्रियः॥

वृषलग्नमें जिसका जन्म होता है वह जातक लौकिक गुणोंमें प्रेम करने वाला, प्रिय बोलने वाला गुणी, धनी, लोभी, वीर, समस्त जन समुदायका प्यारा होता है। नेष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१ अन्न वस्त्रादि दान, प्रिय भोज्य, महामृत्युञ्जय जपोपरान्त आयु ९० वर्ष के निकट होती है।

प्रसूति स्थान नया, निकास दक्षिणमें, मुख्य द्वार पश्चिममें माताका शिर दक्षिणमें, प्रसवकालके वस्त्र श्वेत, माताने शुष्क अन्नादि खाया, जातक उच्च स्वर से रोया, जननीको सामान्य कष्ट हुआ, रंग गोरा, मुखमण्डल गोल, लालिमायुक्त, प्रकृति-रक्तपित्त, कद लम्बा, ढीला शरीर कहें, वृषलग्नमें अधोमुख प्रसव पाद से हुआ जानें, उपसूतिका ३ या ४, प्रकाश उत्तर दिशामें होता है।

मिथुनोदयसञ्जातो मानी स्वजनवत्सलः।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्ररिमर्दकः॥

जिसका जन्म मिथुन लग्नमें होता है वह व्यक्ति मानी, स्वजनोंका प्यारा, स्वल्प त्यागी, भोगी, धनाढ्य कामी दीर्घसूत्री-चिरक्रिय (बड़ी देर से काम करने वाला) शत्रुओंका मानमर्दन करने वाला होता है। नेष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५७ देवार्चन गौ दानादि परित्वेन पूर्णायु।

प्रसूति स्थान नया, गृहद्वार पश्चिममें, मुख्य द्वार उत्तरमें, माता का शिर पश्चिममें, वस्त्र पीले कुछ पुराने, प्रसव समयसे पहले, नमकीन खाया हो, दाहिने अंगमें चिन्ह, ज्वरादि कष्ट अधिक, जन्मस्थान जमीन से ऊपर, बच्चेने शीघ्र रुदन किया, उपसूतिका ३ या ५ जानें। सुन्दर रुपवान, नेत्ररोगयुक्त, प्रकृति बल्गामी, स्वभाव चंचल, सामान्य कद, मन्दबुद्धि विलक्षण, जन्म शिरके बल हुआ जानें। महामृत्युञ्जय जपोपरान्त आयु ८६ वर्ष के करीब होती है।

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मी जनप्रियः।
मिष्टान्न पान भोगी च सुभाग्यः स्वजनप्रियः॥

जिसजातकका जन्म कर्कलग्नमें होता है वह भोगी, धर्मात्मा, स्वजनप्रिय, मिष्टान्न पान भोगी, सुयश भाग्य वाला तथा कुटुम्बीजनों का प्यारा होता है। नोट- भारतकी जनता कर्क लग्नमें जन्म लेने वालोंसे बहुत स्नेह करती है। नेष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ जन्म कुण्डलीमें शुभाशुभ योगानुसार जप दानोपरान्त पूर्णायु होती है।

प्रसूतिस्थान नया, द्वार उत्तरकी ओर, प्रमुखद्वार पूर्वमें, माताका शिर उत्तरमें प्रजनन समय वस्त्र पुराने कुछ सफेद कुछ लाल, माता ने मधुर सुपाच्य शीतल भोजनादि किया हो, प्रसूतिकष्ट अधिक, जन्मभूमि पर तत्काल पिता परेशानीमें रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५ बालकका रंग गोरा, कद लम्बा, कोमलांग, आंखें चंचल, प्रकृति बात-श्लेष्म, वाणी मीठी, बामांगमें चिन्ह, जन्म पैरोंके बल हुआ जानें। मृत संजीवनी जपोपरान्त आयु १०० वर्षके लगभग होती है।

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः॥

सिंह लग्नमें जन्मे जातक भोगी, शत्रुओंका मानमर्दन करने वाले, कृशोदर, स्वल्पपुत्रवान, उत्साही संग्राममें पराक्रम दिखाने वाले होते हैं। नेष्ट वर्ष ५।१३।२८।३६।४८ भास्कर पूजन, विशेष दानपुण्य दुर्गार्चनोपरान्त आयु ८३ वर्ष के करीब होती है।

प्रसूतागृहद्वार पूर्वको, मुख्यद्वार दक्षिण दिशामें, मकाननया, माता का शिर पूर्वमें, वस्त्र कुछ लाल चित्र-विचित्र, प्रजननसे पहले भोजन शाकयुक्त खट्टा खाया हो, पीड़ाअधिक, भूमिपर जन्म, शिशु रोया अधिक, उपसूतिका ३ या ५, रंग गोरा, केश घने, पीठपर चिन्ह चेहरालम्बा छोटा कद प्रतिभापूर्ण, शरीरकोमल, नेत्र चंचल, निडर, प्रकृतिकफ-पित्त, वाणीकर्कश, जन्म शिरके बल हुआ जानें। आदित्य-हृदय स्त्रोत्रका पाठ, अपूपान्नदान परम आवश्यक है।

कन्यालग्नभवो बालो नानाशास्त्र विशारदः।
सौभाग्यगुणसम्पन्नः सुन्दरः सुरत प्रियः।।

जिसकाजन्म कन्या लग्नमें होता है, वह अनेक शास्त्रोंमें चतुर, सामान्य सौभाग्यगुण वाला, विषयाशक्त होता है। नेष्ट वर्ष ४।१६।२३।३६।५५ छायापात्र दान, गौदान, महामृत्युञ्जय जपोपरान्त पूर्णायु।

प्रसूता निवास पुराना, प्रसव हुआ घरके दक्षिण भागमें, गृहद्वार उत्तर दिशामें, जननी का शिरभी उत्तरमें पहनेहुए वस्त्र जीर्ण पाण्डु रंग युक्तहो, प्रजननसे पहले मिष्ठान्नखाया, कष्ट सामान्य हुआ, जन्म उच्चस्थान पर हुआ, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५ भुजामें चिन्ह, जातकका रंग गोरा, गला व जंघामें चिन्ह, दृष्टि उत्तम, प्रकृति वात-कफ कद सामान्य, सर्वांग सुन्दर, सुडोल शरीर, जन्म शिरके बल पैदा हुआ जानें।

तुला लग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्मजीवनः।
विद्वान्सर्वकला भिज्ञो धनाढ्यो नरपूजितः।।

तुला लग्नमें जन्मेजातक सुबुद्धिमान, सत्कर्ममें जीवन निर्वाह करने वाले,विद्वान् सर्वकलाप्रवीण विद्वानोंसे पूजित होते हैं। नेष्ट वर्ष ३।८।१५।३१।३५।४६।६२।६४ मेंशान्ति करानेसे जातककी पूर्णायु होती है।

प्रसूतास्थान नूतन प्रसूतिकक्ष पश्चिम भागमें, द्वार पूर्वमें, माताका शिर पश्चिममें, श्वेतवस्त्र प्रजननसे पहले माता ने कुछ खाकर ठण्डापानी पिया, प्रसवकष्ट अधिक, घरमें कुछ झंझटभी हुआ, भूमिसमतल जगह जन्म, रोदन धीमा, उपसूतिकाएं ३ या ५ जिनमें एक कन्याभी हो, रंग कुछ पीला, शरीर कमजोर, कद छोटा, वर्ण विकृतसा, नेत्र चंचल, वाणीकर्कश, जन्म शिरके बल हुआ। गोदान तुला दानसे सुखशान्ति रहे आयुपूर्ण होवे।

वृश्चिकोदयसंजातः शौर्यवानति दुष्ट्धीः।
विज्ञानज्ञानसम्पन्नः सुखी सद्विग्रहः सुधीः।।

जिस जातकका जन्म वृश्चिकलग्नमें होता है, वह पराक्रमी, दुष्ट बुद्धिवाला, ज्ञान-विज्ञानसे सम्पन्न सुखी दिव्यदेह वाला, सुविज्ञ होता है। नेष्ट वर्ष ३।११।२८।३८।५२।६२ अरिष्ट निवारण हेतु छायादान, महामृत्युञ्जयजाप, ब्रह्मभोजनादि परित्वेन, जातककी दीर्घायु होती है।

प्रसूतिस्थान जीर्ण, द्वार उत्तरमें, मुख्य द्वार पूर्वकी ओर, माता का शिर उत्तर या दक्षिणमें पुराने वस्त्र लाल या दग्ध, साधारणभोजन कुछ क्रोधपूर्ण, प्रसवमें कष्ट अधिक, जन्म हुआ भूमि पर रोया कुछ कम ही था, उपूसतिकाएं ४ या ५, पिता कुछ झंझटमें था, चिन्ह पीठ पर, केश लम्बे, काले घुंघराले, गलेमें पीड़ा, रंग श्याम, प्रकृति रक्त-पित्त, कद सामान्य, वाणी चंचल, जन्मशिरके बल हुआ ऐसा जानें।

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्धर्मवान्सुधी।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः।।

धनु लग्नमें जिसकी उत्पत्ति होती है वह नीतिवान, धर्मवान तीव्र बुद्धिवाला, अपने कुलमें श्रेष्ठ विद्वान, सबका पोषण करने वाला होता है। नेष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२ इनमें देवार्चन भौम पूजनादि अच्छा होता है। स्वल्पायु होती है।

प्रसूता स्थान नया, जन्म दक्षिण कोणमें, गृहद्वार पूर्व दिशामें द्वितीय उत्तरमें, माताका शिर पूर्वमें, जननीके वस्त्र मिश्रितरंग के लाल वसन्ती, पकवान भोजनकर जल पिया हो, प्रजननमें कष्ट अधिक, जन्म उच्च स्थान द्वितीय तृतीय मंजिल पर, बच्चेने रोदन अति दीर्घ स्वरमें किया, उपसूतिकाएं १ या ५, बच्चेका रंग गोरा, सुन्दराकृति, बड़े नेत्र, शिर ऊँचा, वक्षस्थलपर चिन्ह, प्रकृति पित्तोष्ण, कद सामान्य, वाणी मधुर, जन्म पाद से हुआ हो।

मकरोदयसंजातो नीचकर्मा बहुप्रजः।
लुब्धोऽलसो विनष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः।।

जिसका जन्म मकर लग्नमें होता है वह जातक नीचकर्म करने वाला, बहु सन्तानवान, लोभी, आलसी, होनेसे अपने कार्यको नष्ट करता है। नेष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७ छायापात्र, मापान्न स्वर्ण तेलादि दान, रुद्राभिषेकोपरान्त पूर्णायु होती है।

प्रसूता भवन पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिणमें, जन्म पश्चिम कोण में, जननीका शिर पश्चिममें वस्त्र मैले पुराने द्विरंग मिश्रित, प्रजननसे पहले शाक युक्त नमकीन कुछ खाया, जल पिया हो, कष्ट सामान्य, जन्म भूमि पर, कुछ समय बाद बालक अर्द्ध स्वर से रोया, उपसूतिकाएं १ या ५, बच्चेका रंग श्याम, केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, कद सामान्य, अंग सुन्दर, जन्म पैरोंके बल हुआ, ऐसा समझें।

कुम्भलग्नोदये जातश्चंचलचित्तोऽतिसौहृदः।
परदाररतोनित्यं मृदुकायो महासुखी।।

कुम्भ लग्नमें उत्पन्न जातक चंचलचित्त, बहुमित्र, परस्त्रीविषयाशक्त, कोमल देह वाले, महासुखी होते है। नेष्ट वर्ष २।१०।२८।३३।४८।६४ विशेष दानपुण्य परित्वेन पूर्णायु को भोगता है।

प्रसूता गृह कुछ जीर्ण कुछ नया हो, प्रजजन स्थान दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्व या उत्तरमें माताका शिर पश्चिममें काले मैले वस्त्र कम्बलादि, प्रजननसे पहले कषैला चटपटा कुछ खाया हो, पिता घर पर न हो, प्रजननमें कष्ट कम, जन्म भूमि पर, कुछ समय बीतने पर बच्चा रोया, उपसूतिकाएं ३ या ४ कहें, नाटा कद, नेत्र चंचल, मस्तक लम्बा, होंठ मोटे, वाणीमधुर, बच्चेका शिरके बल जन्म हुआ जानें।

मीनलग्नोदये जातो रत्नकाञ्चनपूरितः।
अल्पकामोऽतिदौर्बल्यः दीर्घकालविचिंतकः।।

मीन लग्नमें जन्मे जातक रत्न कांचनोंमें परिपूर्ण, स्वल्पकामी कृशतन, दीर्घकालीन चिन्तन करने वाले होते हैं। नेष्ट वर्ष १।८।१८।२५।४८ गुरु पूजन देवार्चनादि से पूर्णायु होती है।

प्रसूता भवन कुछ नया कुछ पुराना, प्रसूता कक्ष उत्तरमें द्वार दक्षिणमें, प्रमुख द्वार उत्तरमें, जननीका शिर उत्तरमें, वस्त्र वसन्ती कुछ मलिन, पिता घरमें था, जल ठण्डा पिया जन्म ऊंचे स्थान पर कष्ट से हुआ। जातक देर से रोया। उपसूतिकाएं २।३ या ५ जानें, पलंग का कुछ हिस्सा टूटा था, बच्चेका रंग गोरा, नाक चपटी, आंखें भूरी, बाल कपिल, ऊँचा माथा, प्रकृति वात-कफ, जन्म हाथके बल हुआ ऐसा जानें। शान्तिके उपाय मोदकान्नदान, गोदान, महामृत्युञ्जय जाप।

संक्षिप्त जन्म लग्न फलम्

मेषे दीनो वृषे मानी पटुबुद्धिश्च मन्मथे।
क्रूरः कर्के धृति सिंहे कन्यायां बहुमायिता।।
जूके स्त्रीत्वमली मानी चापे पापाशयो नरः।
मुखरो मकरे कुम्भे चतुरः स्थिरधीर्झषे।।

सूचना-समय का यदि किसी कारणवश सही ज्ञान न हो तो आसन्न लग्नानुसार कुण्डली बनाएं। जिस लग्नके लक्षण सही मिलें,वही लग्न जातककी मानें। बहुधा देहातोंमें अभीभी सहीसमय नोटनहीं करपाते हैं।

अथ मेषादि जन्म राशि शुभाशुभ फलम्

मेष- राशिमें जन्मे जातक साहसी, वीर विपत्तियोंमें न घबराने वाले निडर होते हैं। जो निर्णय लेना होता है उसे वे स्वयं ही ले डालते हैं, अपने लक्ष्यके प्रति सतत जागरुक रहते हुए अत्यन्त खेल प्रिय होते हैं, प्रेमसे अघाते नहीं, मेष अग्नितत्व राशि होनेके कारण जातक प्रतिभाशाली ओजपूर्ण होते हैं। अन्य व्यक्ति सदैव इनसे प्रभावित होते रहते हैं।

वृष- राशिमें जन्म लेने वाले अधिकांश जातक हृष्टपुष्ट होते हैं। परिश्रमी प्रतिकूल परिस्थितियोंको अनुकूल बनाने वाले, सहनशील, धैर्यशाली, हृदयंगम, गृहस्थजीवनको सफलतापूर्वक चलाने वाले कमखर्चीले, समव्यवहार, ईमानदार, ख्याति प्राप्त होते हैं, अनुशासन प्रेमी, मानसिक दृढ़ता स्मरण शक्ति तेज होती है।

मिथुन- वायु तत्व प्रधान राशिमें जन्मे जातक सौभाग्यशाली, बुद्धिजीवी वाक्चातुर्य गुणोंसे सम्पन्न अपनेको परिस्थितिके अनुसार बदल लेते हैं, अर्थात् ये स्थिर बुद्धिके नहीं होते, विषयाशक्त, बाल्यकाल उत्तम नहीं कहा जा सकता, ३० वर्षकी आयुके बाद निजी व्यवसायसे धनी बनते हैं। योजनाबद्धकार्य करते हुए सफलता प्राप्त करते हैं। बेईमानीसे धन कमाना इन्हें पसन्द नहीं, इसी से समाजमें सम्मान प्राप्त करते हैं।

कर्क- जलतत्व चर राशिमें जन्मे जातक भावुकताप्रिय, बुद्धिजीवी, अपनी बुद्धिकी प्रबलताके कारण कठिन से कठिन कार्यको भी सहज कर लेते हैं। अपने मित्रोंकी राय इन्हें अधिक पसन्द होती है, जिसके फलस्वरुप समय-समय पर धोखाभी खाते रहते हैं, इनमें लीडरीके गुण हृदयंगम् होते हैं और समय पाकर उभर आते हैं।

सिंह- राशिमें जन्मे जातक निडर, साहसी, विघ्नबाधाओंपर विजय प्राप्त करने वाले, परिस्थितियोंके अनुकूल अपनेको ढालने वाले १४-१५ घण्टे काम करने पर भी न थकने वाले होते हैं। अपनी सिंह रुपी गर्जना व वाक पटुतासे दूसरोंको प्रभावित करते रहते हैं। अल्पभाषी निजीकार्यमें व्यस्त रहते हैं।

कन्या- राशिमें जन्मे जातक परिश्रमी अत्यन्त विषयाशक्त विघ्न-बाधाओं पर हंस-हंसकर विजय प्राप्त करने वाले होते हैं। व्यक्तित्वपूर्ण, इनकी थाह पाना आसान नहीं। परिवार वालोंकी मदद भरपूर करते हैं, इनका ध्येय होता है पढ़ना पढ़ाना मनन करना और धनोपार्जनकर सुख प्राप्त करना, कुशल प्रशासक मैनेजर, वकील, जज, साहित्यकार और व्यापारमें इनके प्रयत्न सराहनीय होते हैं।

तुला- राश्यान्तर्गत जन्मे जातक ईमानदार, कटुसत्य प्रिय, न्यायकारी, प्रलोभन परित्यागी, परिश्रममें विश्वास करने वाले, शान्तिप्रिय प्रेमीजनोंसे घनिष्ठप्रेम करने वाले, हर एक विषयकी तुलना करने वाले, शत्रुओंसे घिरा जीवन अस्त-व्यस्त होता है। यह विरोधपूर्ण बातें कटु व्यवहार टालकर अपनी कूटनीतिसे अपने सामूहिक व्यवहारमें रद्दोबदल करते हुए सफलताकी सीमा पर पहुँच जाते हैं।

वृश्चिक- राशिमें जन्मेजातक कठोर परिश्रमी, चरित्रवान, ईमानदार अपनी कही हुई बातसे न मुकरने वाले, हठी होते हैं। विपरीत परिस्थितियोंको अनुकूल बनानेमें चतुर, प्रारम्भिक जीवनमें कम सुख लगभग २५वर्षकी आयुके उपरान्त सफलताओंकी ओरअग्रसर होतेहैं। इनमें स्वतन्त्र चिन्तनका विशेषगुण होता है जिसके फलस्वरुप विशेष शोधपूर्ण कार्यरत डाक्टर,सर्जन,इंजीनियर आदि पाए जाते हैं। गम्भीरता पूर्वक सोचविचार कर कदम बढ़ानेवाले राष्ट्रभक्त स्वाभिमानी होते हैं।

धनु- राशिमें जन्म लेने वाले व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट सर्वांग सुन्दर आकर्षक होते हैं। ये अपने पास आने वाले व्यक्तिके भावको तुरन्त हृदयंगम् कर समयानुकूल उचित उत्तर देते हैं। घनिष्ट सम्बन्ध कायम करनेमें चतुर, नाच गानेमें भी अधिक बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं। शारीरिक श्रमकी अपेक्षा बुद्धिजीवी होते हैं। विपत्तिमें भी हंसना, खाओ मौज उड़ाओ ऐसी भावनाके होते हैं।

मकर- राश्यान्तर्गत जन्मे जातकोंमें सामाजिकगुण अधिक पाए जाते हैं। ये कभीदूसरोंको अहित करनेमें हिचकिचाते नहीं, जिद्दी नम्बर एक के होते हैं। दाम्पत्य सुखोपभोगके साधन इन्हें पूर्ण प्राप्त होते हैं। गुप्तारम्भी, षड्यन्त्र मलेच्छावृत्ति वाले अट्टहासमे रुचि रखते हैं।

कुम्भ- राशि वायुतत्व प्रधान होनेसे वात कफ प्रकृति युक्त जातक होते हैं, मानसिकचिन्तन अथक पराक्रमी दूरदर्शी चंचल प्रवृत्ति ओजपूर्ण साहसी, अपने लक्ष्यके प्रति निरन्तर बढ़ने वाले दृढ़ निश्चयी अत्यन्तकामी होते हैं। कुंभ राशि में जन्मे व्यक्ति अपने कार्य को कल पर छोड़ देते हैं।

मीन- राश्यान्तर्गत जन्म लेने वाले जातक जल प्रवासी स्वच्छ हृदय, एकांकी होते हैं। नूतन लक्ष्यकी पूर्तिहेतु नितनई योजनाओंमें उलझे रहते हैं। दाम्पत्य सुख न्यून ही कहा जा सकता है, नेतागिरी के गुण समय पाकर उभर आते हैं। सम राशिमें जन्म लेनेके कारण जातक आवश्यकतासे अधिक भार नहीं उठाते, दोस्तों से जीवनमें कई बार हानि उठानी पड़ती है, कई बार तो इतने सहनशील हो जाते हैं कि दुश्मन इनका सर्वश्व हरण कर लेते हैं।

नामकरण संस्कार

जन्मसे १०।११।१२ दिन अथवा परिस्थिति वसात् १५।१६।२१।२७ एवं ३७वें दिन शुभवार में १।४।६।९।१४ तिथि रहित शुभनक्षत्र- अश्वि.,रोहि.,मृग.,पुन.,पुष्य.,उफा.,हस्त, चित्रा. स्वाती,अनु.उषा. श्रव.धनि.शत.उभा.और रेवती तथा शुभ लग्नमें वर्ण व्यवस्थानुसार विद्वानोंको नामकरण संस्कार करनेकी अनुमति देनी चाहिए।

देवतानाम मासनाम नक्षत्रनाम व्यावहारिकनामेति।
तत्रामुकदेवताभक्तं इत्वाकारकं देवतानाम प्रथमम्।।

नाम चार प्रकारके होते है यथा- देवतानाम, मासनाम, नक्षत्र नाम तथा व्यवहारिकनाम यथा- श्रीकृष्णदास, रामसहाय, रामसेवक इत्यादि देवतानाम। बैकुण्ठ, जनार्दन, उपेन्द्र, यज्ञपुरुष, वासदेव, हरिकिशन, योगीश, पुण्डरीकाक्ष, कृष्ण, अनन्त, अच्युत, चक्रधर ये मास नाम चैत्रादि मासानुसार कहे हैं। नक्षत्रनाम नक्षत्र चरणाक्षर तुल्य रखे जाते है और परिवारमें अन्य किसीका नाम न हो ऐसा मुंह बोला नाम अपने कुलाचार देशाचारानुसार भी रख लिया जाता है। जो बोलते-बोलते सिद्धि हो जाता है।

प्रतिष्ठाकी कामनाविहित दो अक्षरोंका नाम, ब्रह्म तेजकी वृद्धि वाला चार अक्षरोंका नाम जिसके अन्तमें रेफ लकार न हो, आपस्तम्भ और हिरण्यकेशी सूत्रमें तो यह कहा है कि ऐसा नाम रखना चाहिए, जिसके उच्चारणमें आत्मशान्ति मिले, किसी विशेषताकी झलक हो, जिससे श्रीवृद्धि यशकीर्तिका विस्तार हो, वर्णानुसार शर्मा, वर्मा, गुप्ता तथा दासोऽहम्का सम्बोधन होता हो। वर्तमानमें केवल नक्षत्र चार चरणानुसार नाम रखनेकी परम्परा है। इसलिये प्रस्तुत है अ व क ह डा चक्रांकित अक्षरतुल्य नाम तालिका जिसमें देखकर अपने बच्चोंका सुन्दरनाम रख सकते हैं।

(देखें आग्रिम पृष्ठों पर)

शंका समाधान

ज्ञानचन्द, द्वारिकाप्रसाद, क्षेमचन्द, त्रिलोकबाबू, ग्यारसीलाल, घालारामकी जन्मराशि व नक्षत्रचरण शास्त्रीय दृष्टि से क्या मान्य होगा? और यदि हस्त नक्षत्रके तृतीय चरण(ण) पर किसी बच्चेका जन्म हो तो उसका क्या नाम रखा जाय? इस सन्दर्भमें शंकासमाधान हेतु हमारे यहां पंचांगकार्यालयमें प्रतिवर्ष पत्र आते रहते हैं। अ,व,क,ह,डाचक्रानुसार अश्विन्यादि नक्षत्र चरणाद्याक्षरानुसार सुन्दर नाम क्या रख सकते हैं, इस विषय में हमारा प्रथम प्रयास है। पाठकोंको लाभ होगा तो मै अपने परिश्रमको सफल समझूंगा। आर्द्रा का तृतीय चरणाक्षर (ङ) हस्तका तृतीय (ण) और उभा.के चतुर्थचरण (ञ) पर किसीका नामहो अतः ये अक्षर नामके आदिमें पाये गये हों ऐसा आजतक नहीं सुना। पाठकोंके विचार शतप्रतिशत सत्य है। शतपथ चक्रानुसार यदि ङ,ण,ञ इन तीनों वर्णों में से कोई वर्ण जातकके जन्म नक्षत्रका चरण आ पड़े तो उस परिस्थिति में क्रमशः घ,ठ,झ पर नाम रखना चाहिए। यथा-

नामादौ नावलोक्यन्ते वर्णास्तु ङ- ञ- णाः क्वचित्।
तदेतेषु क्रमान्नाम धर्तव्यं घ- झ- ठाक्षरैः॥

अर्थ- आर्द्रा के तीसरे चरणमें जन्म हो तो घनश्याम-घनानन्द आदि नाम रखें। हस्तके तृतीय भागमें जन्म होने पर ठाकुरदास ठाकुरदत्त आदि नाम रखें और उभाके चौथे चरणमें जन्माक्षर आन पड़े तो झम्मनलाल-झब्बूलाल आदि नाम रखना चाहिए।

नामका प्रथमअक्षर जिस नक्षत्रके जिस चरणमें हो वही उसका नक्षत्र और विहित राशि जाननी चाहिए यथा-चन्द्रप्रभाकी मीन राशि होगी-

यन्नामाद्याक्षरं यस्य नक्षत्रस्य पदे भवेत्।
तदेव तस्य नक्षत्रं विज्ञेयं गणकोत्तमैः॥

यदि नामके आदि में संयुक्ताक्षर हो तो उनमें प्रथम वर्णका ग्रहण करना चाहिए यथा-

यदि नामिन् भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले॥

जैसे- श्रीपति नाम के आदि में संयुक्त वर्ण 'श्र' के प्रथम वर्ण 'श' कार है, वह शतभिषाके द्वितीय चरणमें है इसलिये श्रीपति या श्रीचन्द का जन्म नक्षत्र शततारका हुआ।

शतपथ चक्रमें ऋकार नहीं कहा गया है, इसलिए ऋकार के स्थानमें रेफ (र) ग्रहण करना चाहिए। अर्थात् किसीका नाम ऋद्धिनाथ या ऋषिकुमार है तो उसका चित्राका तीसराचरण एवं तुला राशि होगी। प्रमाणवाक्य-

अनुक्तत्वादृकारस्य रेफो ग्राह्यो विचक्षणैः।
ऋद्धिनाथस्य नक्षत्रं यथा चित्राख्यमेव हि॥

दीर्घ- ह्रस्व स्वर परस्पर समान

शतपद चक्रमें अकार और आकार तथा इकार और ईकार, उकार और ऊकार तथा ऐकार एवं ओकार और औकार परस्पर तुल्य समझे जाते है, इसी प्रकार व और ब एवं श और स ये दो-दो अक्षर समान माने गये हैं। जैसे- अमरनाथ, आनन्दस्वरुप दोनोंका एक ही कृतिक नक्षत्रका प्रथम चरण हुआ। ऐसे ही शक्तिधर और सविनयकुमार की शतभिषानक्षत्र द्वितीयाचरणमें विहित कुम्भराशि हुई। हस्तके द्वितीय चरणमें अक्षर (ष) को इसमें न मिलावें। ऐसा करने से राशि व नक्षत्र पृथक् हो जायेगा। अतः ष अक्षरके स्थान पर पुष्पेन्द्र, पुनीत, पूरन इत्यादि नाम रखने से राशि, नक्षत्र वही रहेगा, न मेलापकगुणोंमें अन्तर आयेगा। शास्त्र वाक्य-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, द्वौ मिथः रामौ।
व, बौ, श, सौ, तथैवात्र, ज्ञेयौ, देवविदा सदा॥

संयुक्ताक्षर राशि ज्ञानम्

संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यतत्रादिमाक्षरम् के अनुसार जिस नामके आदिमें संयुक्त अक्षर हो उसका आदि वर्ण ग्रहण करके ही राशिविचार करना चाहिए। जैसे- ज्ञानचन्द नामके आदि 'ज्ञ' शब्दकी उत्पत्ति पाणिनि व्याकरण भाषासूत्रके अनुसार (ज ञ ज्ञः) ज+ञ से यह अक्षर बना है, इसलिए ज्ञान का नक्षत्र उषा. तृतीय चरण व मकर राशि होती है। इसी प्रकार क्ष (क,ष,संयोगाद् क्षः) होने से क्षेमचन्दकी राशिमिथुन व मृगशिरका तीसरा चरण होगा। (त+र त्रः) बराबर 'त्र' अक्षर है, इसलिये त्रिलोकचन्द की राशितुला और नक्षत्र विशाखा मान्य होगा। (द् व् अ द्वा) द्वारिकामें दकार ही प्रधान है अतः राशि कुम्भ और नक्षत्र पूभा. मान्य है।

द्रौपदी, प्रियकान्त, प्रेमदत्त, क्षेत्रपाल आदि में व्यवहित मध्य अक्षरको छोड़कर स्वर सहित आद्यक्षर से ही नक्षत्र माननीय होगा। इनमें क्रमशः द, पी, प, क अक्षर की प्रधानता है। द्रुपदकुमार का उभा. नक्षत्रका पहला चरण और मीन राशि मानी जायेगी।

नोट- अ, व, क, ह, डा चक्रमें कुछ और भी अक्षर ऐसे हैं, जिन पर नाम नहीं रखा जा सकता। जैसे (थ) पर लड़की का नाम क्या रखें इस परिस्थितिमें ज्योतिषी स्वतन्त्र चिन्तनकर नाम आगे व पीछेके अक्षर पर रख सकता है, ध्यानरहे नक्षत्र व राशि पृथक् न हो जाय।

राशि की प्रधानता

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे।
जन्म राशेः प्रधानत्वं नाम राशि न चिन्तयेत्॥

विवाहादि समस्त मंगलकार्य, विशेष मुहूर्त यात्रा ग्रह दशा, ग्रहोंकी गणना दिनदशा देखनेके लिए जन्म राशिकी प्रधानता मानी गई है।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्॥

देश ग्राम नगर या घर निवास, युद्ध व्यवसाय, दैनिक व्यवहार, कोर्ट-कचहरी, न्यायालय, रजिस्ट्रीकरण, लेन-देन, आगम प्राप्तिसे सम्बन्धित सभीकार्योमें नामराशि मान्य है, जन्मराशिका महत्व नहीं।

कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते।
सर्वाण्यन्यानिकर्म्माणि नामराशौ बलान्विते॥

अर्थ-गर्भाधानादि षोडस संस्कार सुसम्पन्नताहेतु जन्मराशिस्थ चन्द्रबल का विचार करना चाहिए। अन्यसभी कामोंमें नामराशि देखनी चाहिए।

विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्।
नामभाषिन्तुयेत्सर्वः जन्मन ज्ञायते यदा॥

अर्थ- यदि जन्मराशि ज्ञात न हो तो नामराशि नक्षत्रसे ही विवाहादि सम्पादनमें लग्न ग्रहबलका विचार कर लेने चाहिए।

स्त्रीणांचन्द्रबलविशेष-

स्त्रीणांविधोर्बलमुशंति विवाह गर्भसंस्कारयोरितर कर्मसु भर्तुरेव। बाहवाँचन्द्रमाशुभहोताहै यथा- पाणिग्रहे स्त्रीसुरतेऽभिषेके यात्रात्रमाशे व्रतबंधने च। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैः शुभोद्वादशयो हिमांशुः॥

परन्तु स्त्री हेतु १२ वाँ चन्द्र निषेध है-

सर्वेषु शुभ कर्मेषु चन्द्रोद्वादशगः शुभः।
नारीणां द्वादशश्चन्द्रः मृत्युहानिकरस्तदा॥

अवकहडाचक्र | **राशिस्वामिवर्णवश्यादिज्ञानचक्रम्**

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युञ्जा	हंसक तत्व
अश्विनी भरणी कृत्तिका	चू चे चो ला ली लू ले लो अ ० ० ०	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व गज मेष	देव मनुष्य राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	पूर्व पूर्व पूर्व	अग्नि
कृत्तिका रोहिणी मृगशिरा	० इ उ ए ओ वा वि वु वे वो ० ०	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	मेष सर्प सर्प	राक्षस मनुष्य देव	अन्त्य अन्त्य मध्य	पूर्व पूर्व पूर्व	पृथ्वी
मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु	० ० क की कु घ ङ छ के को हा ०	मिथुन	बुध	शूद्र	मानव	सर्प श्वान मार्जार	देव मनुष्य देव	मध्य आदि आदि	पूर्व मध्या मध्या	वायु
पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा	० ० ० ही हू हे हो डा डी डू डे डो	कर्क	चन्द्रमा	विप्र	जलचर	मार्जार मेष मार्जार	देव देव राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	मध्या मध्या मध्या	जल
मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी	मा मी मू मे मो टा टी टू टे ० ० ०	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	वनचर	मूषक मूषक गौ	राक्षस मनुष्य मनुष्य	अन्त्य मध्य आदि	मध्या मध्या मध्या	अग्नि
उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा	० टो पा पी पू ष ण ठ पे पो ० ०	कन्या	बुध	वैश्य	मानव	गौ महिष व्याघ्र	मनुष्य देव राक्षस	आदि आदि मध्य	मध्या मध्या मध्या	पृथ्वी
चित्रा स्वाती विशाखा	० ० रा री रु रे रो ता ती तू ते ० ०	तुला	शुक्र	शूद्र	मानव	व्याघ्र महिष व्याघ्र	राक्षस देव राक्षस	मध्य अन्त्य अन्त्य	मध्या मध्या मध्या	वायु
विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा	० ० ० तो ना नी नू ने नो या यी यू	वृश्चि.	मंगल	विप्र	कीट	व्याघ्र मृग मृग	राक्षस देव राक्षस	अन्त्य मध्य आदि	मध्या मध्या अन्त्या	जल
मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा	ये यो भा भी भू धा फा ढा भे ० ० ०	धनु	गुरु	क्षत्रिय	मानव / चतुष्पद	श्वान वानर नकुल	राक्षस मनुष्य मनुष्य	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	अग्नि
उत्तराषाढ़ा श्रवण धनिष्ठा	० भो ज जी खी खू खे खो गा गी ० ०	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद / जलचर	नकुल वानर सिंह	मनुष्य देव राक्षस	अन्त्य अन्त्य मध्य	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	पृथ्वी
धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा	० ० गू गे गो सा सी सू से सो द ०	कुम्भ	शनि	शूद्र	मानव	सिंह अश्व सिंह	राक्षस राक्षस मनुष्य	मध्य आदि आदि	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	वायु
पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती	० ० ० दी दू थ झ ञ दे दो चा ची	मीन	गुरु	विप्र	जलचर	सिंह गौ गज	मनुष्य मनुष्य देव	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्या अन्त्या पूर्व	जल

मासतिथ्यादिघातज्ञानचक्रम्

	ति.	वार	नक्षत्र	योग	करण	प्र.	पुरुष घात	स्त्री घात	लग्न
कार्तिक	१ ६ ११	रवि	मघा	विष्कुंभ	बव	१	चन्द्र मेष	चन्द्र मेष	१
मार्गशीर्ष	५ १० १५	शनि	हस्त	शुक्ल	शकुनि	४	कन्या	धनु	२
आषाढ़	२ ७ १२	सोम	स्वाती	परिघ	कौलव	३	कुम्भ	धनु	४
पौष	२ ७ १२	बुध	अनुराधा	व्याघात	नाग	१	सिंह	मीन	७
ज्येष्ठ	३ ८ १३	शनि	मूल	धृति	बव	१	मकर	वृश्चिक	१०
भाद्रपद	५ १० १५	शनि	श्रवण	शूल	कौलव	१	मिथुन	वृश्चिक	१२
माघ	४ ९ १४	गुरु	शतभिषा	शुक्ल	तैतिल	४	धनु	मीन	६
आश्विन	१ ६ ११	शुक्र	रेवती	व्यतिपात	गर	१	वृष	धनु	८
श्रावण	३ ८ १३	शुक्र	भरणी	वज्र	तैतिल	१	मीन	कन्या	९
वैशाख	४ ९ १४	मंगल	रोहिणी	वैधृति	शकुनि	४	सिंह	वृश्चिक	११
चैत्र	३ ८ १३	गुरु	आर्द्रा.	गंड	किंस्तुघ्न	३	धनु	मिथुन	३
फाल्गुन	५ १० १५	शुक्र	आश्ले.	वज्र	चतुष्पाद	४	कुम्भ	कुम्भ	५

नक्षत्राणांस्वामिस्वरूपादिज्ञानम्

स्वामी	स्वरूप	संज्ञा	मुखं	घ उ
अश्विनीकु. यम अग्नि	घोड़ा भग छुरी	क्षिप्र लघु उग्र क्रूर मिश्र साधा	तिर्यक् अधो: अधो:	५० २४ ३०
अग्नि ब्रह्मा चन्द्र	छुरी गाड़ी हरिण	मिश्र साधा ध्रुव स्थिर मृदु मैत्र	अधो: ऊर्ध्व तिर्यक्	३० ४० १४
चन्द्र शिव अदिति	हरिण मणि भवन	मृदु मैत्र तीक्ष्णदारुण चर चलं	तिर्यक् ऊर्ध्व तिर्यक्	१४ २१ ३०
अदिति गुरु सर्प	भवन बाण चक्र	चर चलं छिप्र लघु तीक्ष दारु	तिर्यक् ऊर्ध्व अधो:	३० २० ३२
पितर भग अर्यमा	मकान मचान शय्या	उग्र क्रूर उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर	अधो: अधो: ऊर्ध्व	३० २० १८
अर्यमा रवि त्वष्टा	शय्या हाथ मोती	ध्रुव स्थिर क्षिप्र लघु मृदु मैत्र	ऊर्ध्व तिर्यक् तिर्यक्	२८ २१ २०
त्वष्टा वायु इन्द्राग्नि	मोती मूंगा तोरण	मृदु मैत्र चर चल मिश्र साधा	तिर्यक् अधो: अधो:	२० १४ १४
इन्द्राग्नि मित्र इन्द्र	तोरण भात कुण्डल	मिश्र साधा मृदु मैत्र तीक्ष्.दारु.	अधो: तिर्यक् तिर्यक्	१४ १० १४
राक्षस जल विश्वेदेव	सिंहपु. हाथीदां. मचान	तीक्ष्.दारु. उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर	अधो: अधो: ऊर्ध्व	५६ २४ १०
विश्वेदेव विष्णु वसु	मचान वामन मृदंग	ध्रुव स्थिर चर चल चर चल	ऊर्ध्व ऊर्ध्व ऊर्ध्व	१० १० १०
वसु वरुण अजपाद	मृदंग वृत्त मंच	चर चल चर चल उग्र क्रूर	ऊर्ध्व ऊर्ध्व ऊर्ध्व:	१० १८ १६
अजपाद अहिर्बुध्न्य पूषा	मंच यमल मृदंग	उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर मृदु मैत्र	ऊर्ध्व: ऊर्ध्व तिर्यक्	१६ २४ १०

नामाक्षर तुल्य वर्ग कोष्टक - अपने वर्ग से पंचम शत्रु, चौथा मित्र और तीसरा उदासीन (सम) होता है।

अ ई उ ए ओ १	क ख ग घ ङ २	च छ ज झ ञ ३	ट ठ ड ढ ण ४	त थ द ध न ५	प फ ब भ म ६	य र ल व ७	श ष स ह ८
गरुड़ दिशा पूर्व	मार्जार दि. अग्नेय	सिंह दि. दक्षिण	श्वान दि. नैऋ	सर्प दि. पश्चिम	मूषक दि वायव्य	मृग दि उत्तर	मेढ़ा दि. ईशान

कांकिणी-परित्वेन विचार- सर्वप्रथम साधक व साध्यके नाम के प्रथमाक्षर तुल्य वर्ग कोष्टक से वर्ग संख्या स्वामी व दिशा ज्ञातकरलें। प्रत्येक वर्गसे पांचवाँ वर्ग उसका बैरी और उस पांचवे वर्गकी दिशाभी उसके लिए नेष्ट होती है। अत: उस (पाँचवे) वर्गके अक्षरों से जिसकानाम शुरु होता है, उस नगर ग्राम, व्यक्ति, वस्तुं, या दिशासे उसका सम्बन्ध सुखद नही रहता; उनकी ओरसे इसको झगड़ा झन्झट अथवा नुकसान या कुछ न कुछ परेशानियाँ उपस्थित होती ही रहती है। अतएव उनसे सम्बंध होनेपर साधकको बहुत सावधानी वर्तनी चाहिए। विस्तार सहित विवरण फलितसे सम्बन्धित ग्रंथोंमे देखना चाहिए।

राशियोंमें विहित नक्षत्र चार चरणाक्षर तुल्य रखिए आप अपने बच्चोंके अत्यन्त सुन्दर नाम

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- मेष	अश्विनी	चू- चुन्नीलाल, चूड़ामणि	चुनमुन, चुन्नी
		चे- चेतन, चेतन्यस्वरूप,✽	चेतना,चैतन्या, चेताली
		चो- चोखेलाल,	चौमुखी
		ला- लालमणि,ललित	लता, ललिता, लवली, लक्ष्मी, लाजवंती,
	भरणी	ली- लीलाधर	लीलावती, लिपिका, लीना
		लू- लूकेश ★ लक्ष्मण,लक्ष्मीकांत	लूसी
		ले- लेखराज ✽ चेतराम	लेखा
		लो- लोकेन्द्र, लोकेश, लोचन	लोपाद्रुमा, लोलिता,
	कृत्तिका	अ- अनुराग, अमित, अनिल, अवनीश,आमोद अरूण, अभिषेक, अजय, अंकुर,अनुज	आशु, अन्नपूर्णा, अमृता, अनुपमा, अलका अंकिता, अंगूरी, आरती, आशारानी, अंजली
राशि- वृष		इ- इन्दुकान्त, इन्दुशेखर, ईश्वरदत्त, इन्द्रजीत	इन्दुप्रभा, इन्दिरा, इन्दुकांता, ईला, इन्दुमती
		उ- उमेश, उभयकुमार, उर्मीतकुमार, उत्तम, उमाशंकर,	उर्मिला, ऊषा, उल्का, उत्प्रेच्छा,उमा,उर्वशी
		ए- ऐश्वर्य कुमार, ऐदल सिंह	ऐश्वर्यप्रभा, ऐनी, एकतारानी
	रोहिणी	ओ- ओमवीर, ओमप्रकाश, ओंकार	ओमवती, ओमजा, ओजस्विनी
		वा- वालेन्दु, व्रजेश, वालमुकुन्द, बहुलकान्त, वकुलेश,वरूण,वंशीलाल, व्रजमोहन	वन्दना, ववीता, वसुधा, वाला, वर्षारानी
		वि- विनयप्रकाश, विन्दुसार, विवेक, विमल विपिनकुमार, वीरवल, विनोद	वीना, विन्देश्वरि, विन्नी, विमला, विनीता विभा, विद्या
		वु- वुधेन्द्र, वुधसैन, वुधराज	वुधेन्दी, वुलवुल
	मृगशिर	वे- वेदप्रकाश, वेदवीर, वेदराम	वेवी, वैजयन्ती, वेला, वैदेही
		वो- वोधराज, वोधासिंह,	वोधवती
राशि- मिथुन		क- कमल, कान्तीप्रसाद, कलानिधि, कन्हैया, कनिष्क, कपिल, क्षेमचन्द, कृष्णकांत	कविता, कल्पना, कामिनी, करुणारानी, कृति कमलेश, कमला, कांती
		की- कीर्तिप्रिय, किंशुक. किसलय,किशोरीलाल	कीर्तिलता, कीर्ति, किरणप्रभा, किमी
	आर्द्रा	कु- कुमुदकांत कुलानन्द, कुलदीप, कुलश्रेष्ठ, कुशाग्र, कुन्दनलाल	कुमकुम, कुसुमलता, कुसुम
		घ- घनश्याम, घनानन्द	घनाक्षरी, घनश्यामा
		ङ- (घ) घनश्याम, घनानन्द	घनाक्षरी, घनश्यामा
		छ- छायांक, छविकान्त, छत्रपति, छत्रपाल	छाया, छवि, छटा, छत्रेश्वरी, छिप्रा
	पुनर्वसु	के- केतनशंकर, कैलाशचन्द, केसरी, केहर	कैरवी, कैलाशी, केतकी
		को- कौशलकिशोर, कोमलप्रसाद, कोविद	कोमिला, कोमलांग, कोविदरानी
		ह- हंसराज, हरकेश, हरीशकुमार, हरीशंकर, हरवीर, हरिप्रसाद, हरिओम	हर्षप्रभा, हनी, हरदेई, हसैन्द्री

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- कर्क	पुन.	ही- हिमांशु, हीरालाल, हिमकर, हीरामणि	हिनादेवी, हिमिका,★
	पुष्य	हु- हुकमचन्द	हुवली,
		हे- हेमन्तकुमार, हेमगिरि, हेमाद्रि	हेमवती, हेमलता,✽
		हो- होरीलाल, होतीलाल	
		डा- डालचन्द, डब्बू	डालिमा, डाली
	आश्लेषा	डी- डिव्रहन	डिम्पल, डिव्रादेई ★ हिमन्द्रा, हिमांशी,
		डू- डूंगरमल, डूब्रू	डुरमिलारानी ✽ हेमाद्री, हेलन
		डे- डेविड	डेमिला, डेजी
		डो- डोरीलाल, डोनी	डोली, ड्रोलिमा
राशि- सिंह	मघा	मा- मनोज, मधुकर, मधुसूदन, महेन्द्र, मनीष, मणिकांत, मयंक, मंगलेश, मदन	मंजु,मनोरमा,माधुरी,माधवी,मंजुला,मधु,ममता, माया, मृदुला
		मी- मिन्टू, मिश्रीलाल, मिठ्ठन	मीना, मीनाक्षी, मीनू, मिथिलेश
		मु- मुकेश, मुदितकुमार, मुकुल, मुंन्नालाल मुरलीधर	मुक्ति, मुन्नी, मुनमुन, मुग्धा, मुकुरप्रभा,मुदिता
		मे- मैत्रेय, मेधावी, मेनपाल, मेघराज	मेधा, मैत्रेयी, मेनका, मेधना
	पूर्वाफाल्गुनी	मो- मोनू, मोहन,मोहनीश,मोहनलाल,मोतीलाल	मोहिनी, मोनिका, मोहनीशा, मोना,
		टा- टारजन, ट्रावेन्द्र	टम्मीरानी
		टी- टिकू, टीनू, टीकमसिंह	टीना, टिन्नी, टिवंकल, टिवकलिना
		टू- टूकेजकुमार, टूकीराम	टेकी
	उत्तराफाल्गुनी	टे- टेकचन्द	टेकी, टेविका
राशि- कन्या		टो- टोनी	टोनिका
		पा- पंकज, प्रतीक, प्रशान्त, परवीन, प्रदीप, पवन, परवेश, प्रवीणकुमार, प्रणय, प्रमोद	पारूल, प्रभा, प्रमिला, प्रज्ञा, प्राची, प्रतिमा, पामेला, प्रखर, प्रगति, प्रज्ञावती
		पी- प्रियव्रत, प्रियकांत, प्रियांशु, प्रीतमसिंह	प्रियंका, पिंकी, प्रीतिलता
	हस्त	पू- पुनीत, पुष्पेन्द्र, पूर्णेन्दु, पुण्यवीर, पूरनचन्द	पूनम, पूजा, पुष्पा, पुनीता, पूर्णिमा
		ष- पुनीत, पुष्पेन्द्र, पूर्णेन्दु, पुण्यवीर, पूरनचन्द	पूनम, पूजा, पुष्पा, पुनीता, पूर्णिमा
		ण- (ठा) ठाकुरदास	
		ठा- ठाकुरदास, ठाकुरप्रसाद	
	चित्रा	पे- प्रेमपाल, प्रेमसागर, प्रेमशंकर, प्रेमराज	प्रेमलता, प्रेरणा, प्रेमा,
		पो- प्रोवेशचन्द	प्रोमिला

नोट: अ व क हा डा चक्र ज्योतिषकी वर्णमाला में कुछ अक्षर ऐसे भी है जिनपर कोई नाम नहीं होता या बोलनेमें अच्छा नही लगता वहां ज्योतिषी आगे पीछेके अक्षरपर नाम रखनेमें स्वतन्त्र होता है।

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- तुला	चित्रा	रा- राकेश, राजीव, राहुल, रमेश, रंजन, रवि रत्नाकर, ऋषिकुमार, ऋतुराज, ऋषिराज	राखी, राधा, रंजना, रतिका, रत्नप्रभा, रमा रश्मि, रजनी, रसना, रत्ना
		री- रीतेश, रिंकू, रिपुदमन, रिशांक	रीता, रीना, रिचा, रीतू, रिद्धिमा
	स्वाती	रू- रूपकिशोर, रुद्रदेव, रुद्रदत्त, रूपेश	रूबी, रूकमणी, रूचिता, रूपशिखा, रूपा
		रे- रेवतीप्रसाद, रैवतसिंह	रेनू, रेखा, रेशमा
		रो- रोहित, रोमेश, रोबिन, रोबट	रोजी, रोहिणी, रोशनी, रोचिता
		ता- तन्मय, तरूणकुमार, तपन, तनु, तपेश	ताप्ती, तृष्णा, तनुप्रिया, तरूलता, त्रैयम्बिका
	विशाखा	ती- त्रलोकचन्द, त्रिदेवकुमार	तिलोत्तमा, त्रियनयना, तीक्षा, त्रिशला
		तू- तुहिनांशु, तुहिनचन्द, तुलसीराम, तुलाराम	तूलिका, तुलसी
		ते- तेजप्रताप, तेजासिंह, तेजपाल	तेजसी, तेजस्वनी
राशि- वृश्चिक		तो- तोयद, तोताराम	तोयशी
	अनुराधा	ना- नवीन, नवनेन्दु, नवनीत, नागार्जुन, नगेन्द्र	नम्रता, नवमल्लिका, नवनीता, नंदिनी
		नी- नीरज, निर्मल, निवेश, निर्भय, नीलकांत निपुणेश, नितीश, निशान्त	नीलम, नीतू, निशा, नीरू, निर्मला, निरूपमा
		नू- नूतन	नूतन, नुपूर, नूरी
		ने- नेमिचन्द, नेतराम, नेत्रपाल	नेहा, नेमवती, नेहलिया
	ज्येष्ठा	नो- नोरत्न, नोवेश, नोहवतशरण	
		या- यादवेन्द्र, यज्ञदत्त, यशोमणि, यज्ञसैन यशपाल, यशवंत, यदुवीर	यशोधरा, यशवती, यशोदा, यतिका, यामिनी
		यी	
		यू- धूकेश, युगलकिशोर, यूपेन्द्र	युगेन्द्री, युगलेशकुमारी
राशि- धनु	मूल	ये-	
		यो- योगेन्द्र, योगेश	योगिता, योगेश्वरी, योकिला
		भा- भारतेन्दु, भानुप्रताप, भगवत, भद्रसैन, भागीरथ, भास्कर, भगवती प्रसाद	भावना, भानुप्रिया, भास्वती, भानुमती, भानवी भानुरेखा
		भी- भीमसैन, भीष्म, भीकमसिंह	भीनूरानी
	पूर्वाषाढ़ा	भू- भूपेन्द्र, भुवनेश, भूषण, भुजवीर	भूदेवी, भूषिता, भूमिजा, भूमिका
		धा- धर्मेन्द्र, धर्मांशु, धरणीधर, धीरज, धर्मदत्त धवलकांत, धर्मेश, ध्रुव	धनवती, धनेन्द्री, धनैश्वरि, धवली, धात्री धृति
		फा- फणीन्द्र, फतेहचन्द, फनीशकुमार	फनी, फरहा, फूलन, फूलवती
		ढा- ढिल्लोराम	ढिल्लोरानी
	उषा.	भे- भेदिव्यांश	भेव्यारानी

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- मकर	उषा.	भो- भोजराज,	भोजवती
		जा- जानकीदास, जगप्रवेश, जतिन, जयपाल, जसवन्त, जयवीर, ज्ञानचन्द्र	ज्योति, जयप्रभा, जाग्रती, * जीनियां, जिप्रू, जिज्ञासा, ★
		जी- जीवाराम, जीवेश, जितेन्द्र, जीयालाल, ज्वाला प्रसाद	जूली,
	अभि.	जू जे- जुगलकिशोर, जून्यादेव, जैपालभारती	खग्रारानी, खजानी, ख्याति
		जो खा- जोगेन्द्र, खगेश, खगेन्द्र, जोगिन्दर	खिस्त्रादेवी
	श्रवण	खी- खिलाड़ीराम	खुमानीदेवी *ज्योत्सना, ज्योतिबाला
		खू- खूबीराम	खेलप्रिया ★ज्ञानवती
		खे- खेरातीलाल, खेमचन्द	
		खो-	गार्गी, गतिका, गरिमा, गायत्री, गाथारानी
	धनिष्ठा	गा- गवनीश, ग्यारसीलाल, गंगाशरन	गीता, गीतांजली, गीतिका, गिरिनन्दिनी
		गी- गीतम, गिरधर, गिरीशकुमार, गिरिराज	
राशि- कुम्भ		गु- गुणवर्धन, गुटलू, गुल्लू, गुरूप्रीति	गुड्डो, गुरमीत, गुंजन, गुंजिता, गुणवती
		गे- गेंदालाल, गेग्रीयलाल	
	शतभिषा	गो- गौरव, गोविन्द, गौरीशंकर, गोविल, गोरेशचन्द	गौरांगना, गौरी
		सा- संजय, सचिन, सतेन्द्र, सर्वेश, शरदचन्द शशिकांत, शशिभूषण, संदीप, सत्यव्रत	साधना, सरोज, सरिता, सारिका, सविता, सन्ध्या, शशी, साक्षी, स्वाती, संगीता
		सी- श्रीकांत, श्रीधर, शीतांशु, शीतलचन्द, शिवराज, शिवेन्दु, सिद्धार्थ, श्रीयांशु, श्रीचन्द्र	सीमा, श्रीप्रभा, शिक्षा, शिविका, शीला शिखा, शीला
		सु- सुकेश, सुधाकर, सुमित, सुरेश, सुरेन्द्र	सुभद्रा, शुचि, शुचिप्रभा, श्रुतिकीर्ति, सुमित्रा, सुधा
		से- शैलेन्द्र, सेवाराम, सेवकराम	शैलजा, शैलेन्द्री, सेव्यावती,
	पूर्वाभाद्रपद	सो- सौरभ, सोमेश, सोमदत्त, सोरनसिंह, शोभन	सोनिया, शोभा, शोभना, श्रोतिभा, शोभांगना
		दा- दामोदर, द्रुपद, द्वारिकप्रसाद, दलवीर, दयानिधि, दयानन्द, दयाराम	दयावती, दुधिसुता
राशि- मीन		दी- दिनेश, दिनकर, दीपक, दीपेश, दीपांशु दीपेन्द्र, दिवस्पति, दिवेन्दु, दिलीप	दिव्यावती, दीपिका, दीप्ति, दीपशिखा
	उत्तराभाद्रपद	दु- दुलीचन्द, दुष्यन्त	दुलारी, दुर्गादेवी
		थ- थानसिंह	थानेश्वरी
		झ- झम्मनलाल	झिलमिली, झुन्झुन
		ञ- झम्मनलाल	झिलमिली, झुन्झुन
	रेवती	दे- देवेन्द्र, देवस्वरूप, देवराज, देवकीनन्दन, देवमणि, देवदास, देवीलाल, देवव्रत	देवप्रभा, देवकी, देवप्रिया, देवांगना, देवज्योति
		दो- दौलतराम	द्रौपदी द्युति
		च- चन्द्रकान्त, चन्द्रेश, चन्द्रमणि, चन्द्रभूषण	चन्द्रकान्ता, चंचल, चन्द्रिका, चारू, चन्द्रकेला,
		ची- चीनू, चिन्टू, चित्रेश, चित्रक	चित्रलेखा, चित्रप्रभा, चित्रांगदा, चित्रा

मेषादि राशियों की संज्ञादि ज्ञानार्थ चक्रम्

संज्ञा	पु.-स्त्री	चरादि	तत्त्व	पुष्टकृश	पाद	वर्ण	गुण	धातु	शब्द	स्थान	क्रूरादि	बलस	विषमसम	दिशा	स्त्रीसंग	कान्ति	जाति	उदय	ऋतु	बुरज	साइन	राशि
मेष	पुरुष	चर	अग्नि	दृढ़	चतुष्पद	पाटलरक्त	तप्तदेह	पित्त	अतिरव	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्रीय	पृष्ठोदय	वसन्त	हमल	एरिस	मेष
वृष	स्त्री	स्थिर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्पद	श्वेत	शीत	वायु	अतिरव	समभूमि	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	मध्य	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	ग्रीष्म	सूर	टॉरस	वृष
मिथुन	पुरुष	द्विस्वभाव	वायु	मृदु	द्विपद	हरित	तप्त	समधा	दीर्घशब्द	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	ग्रीष्म	जोंझा	जेमिनी	मिथुन
कर्क	स्त्री	चर	जल	मृदु	अपद	पाटल	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	पृष्ठोदय	वर्षा	सर्तान्	केन्सर	कर्क
सिंह	पुरुष	स्थिर	अग्नि	दृढ़	चतुष्पद	धूम्र	उष्ण	पित्त	दीर्घशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्रीय	शीर्षोदय	वर्षा	असद	लिओ	सिंह
कन्या	स्त्री	द्विस्वभाव	पृथ्वी	कृश	द्विपद	पांडुरंग	शीत	वायु	अर्धशब्द	समभूमि	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	शीर्षोदय	शरत्	सबुला	विरगो	कन्या
तुला	पुरुष	चर	वायु	दृढ़	द्विपद	विचित्र	उष्ण	समधा	शब्दहीन	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	अल्प	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	शरत्	मीझान	लिब्रा	तुला
वृश्चिक	स्त्री	स्थिर	जल	कृश	बहुपद	श्वेत	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	शीर्षोदय	हेमन्त	अकव	स्कोर्पिओ	वृश्चिक
धनु	पुरुष	द्विस्वभाव	अग्नि	दृढ़	द्विपद	सुवर्ण	उष्ण	पित्त	अतिशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्रीय	पृष्ठोदय	हेमन्त	कांस	सेजिटेरिस	धनु
मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्पद	पीत	शीत	वायु	अतिशब्द	वनचर	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	शिशिर	जदी	केपरिकोर्न	मकर
कुम्भ	पुरुष	स्थिर	वायु	दृढ़	अपद	कर्बुर	उष्ण	समधा	खंडशब्द	भूमि	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	शिशिर	दलु	एक्वारीस	कुम्भ
मीन	स्त्री	द्विस्वभाव	जल	दृढ़	अपद	धूम्र	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	उभयोदय	वसन्त	हूत	पीसिस	मीन

अथ जन्मकुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रहाणां फलानि

ग्रहाः	तनु१	धन २	भ्राता३	सुख४	पुत्र५	शत्रु६	स्त्री७	मृत्यु८	धर्म९	कर्म१०	लाभ११	व्यय१२
सूर्य	शूर	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्र	बली	स्त्रीजित	अल्पायु	सुखी	शूर	धनी	पतित
चन्द्र	जड़	कुटुम्बी	क्रूर	सुशील	पुत्रवान	अल्पायु	ईर्ष्यालु	रोगी	सुभग	धीर	ख्यातः	हीनांग
भौम	व्रणी	कुटिल	विक्रमी	पीड़ित	अपुत्र	शत्रुजित	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य	पतित
बुध	विद्वान्	धनी	दुर्जन	सुखी	मन्त्री	दुशील	धर्मज्ञ	गुणी	पुत्रवान	विक्रमी	धनी	जड़
गुरु	चिरायु	धनी	कृपण	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध	अल्पायु	पुत्रवान	सुकृति	धनी	दरिद्र
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच	प्रतापी	सुमति	धनाढ्य	खल
शनि	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्र	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहु	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भाग	बली	अशुचि	गतायु	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतित
केतु	अल्पायु	धर्महा.	शूर	दुःखी	अपुत्र	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन

अथ स्त्रियाणां जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्य ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनु१	धन२	भ्राता३	सुख४	पुत्र५	शत्रु६	पति७	मृत्यु८	धर्म९	कर्म१०	लाभ११	व्यय१२
सूर्य	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र	अल्पायु	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रिय	दुखार्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगा
भौम	दुःखार्ता	बन्ध्या	अभ्रतृक्ता	दुखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुध	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्ध	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु	सती	सधना	भ्रातृमती	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरुपा	सद्व्यया
शुक्र	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रिय	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि	बन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्ता	बन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	क्लेशिनी	बन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु	दुःखार्ता	शोकार्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावों में गोचर फल

ग्रहाः	भाव१	भाव२	भाव३	भाव४	भाव५	भाव६	भाव७	भाव८	भाव९	भाव१०	भाव११	भाव१२
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्री	मानभंग	दैन्य	विजय	मार्गभ्रम	पीड़ा	सुकृतना.	सिद्धि	धनलाभ	धननाश
चन्द्र	धनलाभ	सन्तोष	सुख	रोग	ज्ञानवृद्धि	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सौख्य	धनलाभ	धननाश
भौम	शत्रुनाश	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभी.	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	सुख	धनलाभ	शत्रुभी.	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्य	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	हानि	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभी	पुत्रकष्ट	धननाश	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्री	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रु

अथ पुरुष जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	भाव१	भाव२	भाव३	भाव४	भाव५	भाव६	भाव७	भाव८	भाव९	भाव१०	भाव११	भाव१२
सूर्य	चिन्ता	राजभय	धनलाभ	हानि	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाशं	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	वृणा	धनलाभ	जय	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सौख्य	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	रोग
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनला.	पुत्रप्राप्ति	कष्टम्	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनलाभ	कीर्तिला	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभय	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	क्षेमलाभ	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभय	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगी	कष्ट	धर्महानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थ	पुष्टि	दुःखम्	सुखप्राप्ति	कष्टम्	व्यसनं	दुःख	भाग्योदय	राजयोग	लाभ	कष्ट

❀ अथशान्तिप्रकरणम् ❀

गुरुगायत्रीमंत्र- ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अशुभ ग्रहोंकी शान्तिहेतु ऋषि-महर्षि, ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानोंने (जो ग्रह जिस समय अशुभ फल दे रहा हो उसी ग्रह से सम्बन्धित) मन्त्र जप, यज्ञानुष्ठान, दान, पुण्यार्जन एवं ग्रह दोष शमन यन्त्र, तदनुसार रत्न-उपरत्न धारण का विधान बतलाया है। साथ ही यह भी कहा है कि गुरुजनोंका आशीर्वाद, भूदेव द्विजोंकी वन्दना, धर्मशास्त्रोंका चिन्तन-मनन तथा सत्संग साधु सेवासे अशुभ फलकारी ग्रहकी पीड़ा शान्त होती है। श्री ब्रजभूमि पंचांगके पाठकोंकी विशेष सुविधा हेतु सूर्यादिग्रहोंसे सम्बन्धित यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, जपसंख्या और समय, दान, हौम सामग्री आदिकी जानकारी दे रहे हैं, ताकि अनिष्टसे बचा जा सके। समय पर होने वाले दानादिका फल कल्याणकारी होता है। **प्रगट चारि पद धर्मके, कलि महुँ एक प्रधान।**

जेनकेनविधि दीन्हे, दान करइ कल्यान।। उ.दो.१०३ख।।

सूर्यका ध्यान- पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।
सप्ताश्वःसप्तरज्जुश्च द्विभुजःस्यात् सदारविः।।

वैदिकमंत्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। यजु ३४।३१

६	१	८
७	५	३
२	९	४

जपनीय तान्त्रिक मन्त्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। **एकाक्षरी बीज मन्त्र-** ॐ घृणिः सूर्याय नमः। **प्रार्थना करें-** ग्रहाणामादिरादित्यो लोकलक्षणकारकः।विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः।।

जपसंख्या- ७००० कलियुगमें २८०००। **हवन समिधा-** मदार लाल चन्दन। **दान वस्तुएँ-** माणिक, गोधूम, लाल सवत्साधेनु, लाल वस्त्र, गुड़, सुवर्ण, तांबा, लालचन्दन, लालफूल, गेहूँ, घी, केशर। **दान का समय-** अरूणोदय(सूर्योदय-काल)। **धारण हेतु रत्न-** माणिक्य मानिक चुन्नी(Ruby) याकूत। ५ या कम से कम ३ रत्ती का सोनेकी अँगूठी में रविपुष्यामृत योगमें, धारण करें। साधारणजन १५ चावल वजन का माणिक भी धारण कर सकते हैं। **उपरत्न-** विद्रुम, सूर्यमणि(लालड़ी) जिसे फारसीमें लाल भी कहते हैं कंटकिज (Spinal) तामड़ा या चुनड़ी (Garnet) **जड़ी-** बिल्व वृक्षका मूल। **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधिस्नानम्-** मनः शिला, इलायची, देवदारू, कुंकुम, मुलहटी, शहद, कमल फूल, लालकनेरके फूल ग्रहण करें।

चन्द्रका ध्यान- श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्त्तव्यो वरदः शशी।।

वैदिकमंत्र- ॐ इमंदेवाऽअसपत्न ॅ सुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ॅ राजा।। यजु.अ.१०मं.१८

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः। **एकाक्षरी बीजमन्त्र-**ॐसों सोमाय नमः। **लघुमन्त्र-** ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।
प्रार्थना करें- रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे विधुः।।

जप संख्या- ११ हजार कलियुगमें ४४ हजार। **हवन समिधा-** पलास। **दानवस्तुयें-** मोती, सोना, चांदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेदचन्दन, घी से भरा घड़ा। **दान का समय-** सन्ध्याकाल। **धारण हेतु रत्न-** मुक्ता (मोती Pearl, मुखारीद) २।४।६ अथवा ११ रत्तीका धारण करें, ७ या ८ रत्तीका न पहने। चांदी या सोनेकी अंगूठीमें शुक्ल पक्ष के सोमवारको रोहिणी नक्षत्र योगकालमें धारण करना चाहिए। **उपरत्न-** चन्द्रकांत Moon Stone निमरु मोतीकी सीपकी पूंछ (जड़) में मोतीकी सी आभा होती है, यह भी मोतीकी तरह खूब गुणकारी होती है। **जड़ी-**क्षीरणी (खिरनी) मूल। **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधि स्नानम्-** पञ्चगव्य, गजमद, शंख सीपी, श्वेत चन्दन, स्फटिक लेना चाहिए।

मंगल का ध्यान- रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः।।

वैदिकमन्त्र-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्। अपा ॅ रेता ॅ सिजिन्वति।। यजु.अ.३मं.१२

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। **एकाक्षरीबीजमन्त्र-** ॐ अं अङ्गारकाय नमः। **लघुमन्त्र-** ॐ हुँ श्री मंगलाय नमः। **प्रार्थना करें-** भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा।वृष्टिकृद-वृष्टिहर्ता च पीड़ां दहतु मे कुजः।।

जपसंख्या- १०हजार, कलियुगमें जपसंख्या ४० हजार। **हवनसमिधा-** खदिर। **दानवस्तुयें-** मूंगा, सोना, तांबा, मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन, **दानका समय-** सुबह-सुबह २ घटी=४८ मिनट तक। **धारणकरने हेतु रत्न-** विद्रुममणि या प्रवाल (मूंगा Coral मिरजान) ८ रत्ती वजन का सोनेकी अंगूठीमें मंगलवारको अनुराधा नक्षत्रमें पहने। ५ या १४ रत्ती का न हो। **उपरत्न-** विद्रुममूल या संगमूली, ज्योतिरस, Blood Stone **जड़ी-** नागजिह्वा (अनन्त) मूल धारण करें। **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधि स्नानम्-**विल्व छाल, चम्पक, बालछड़ लालफूल, हींग, जटामासी, बकुल, लालचन्दन तथा सिंगरफ लेना चाहिए।

बुधका ध्यान- पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः।।

वैदिक मन्त्र- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ॅ सृजेथा मयं च। अस्मिन्सधस्थे। अध्युत्तरस्मिन् विश्वैदेवा यजमानश्च सीदत।। यजु. अ.१५मं.५४

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र-ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौ सः बुधाय नमः। **एकाक्षरी बीजमन्त्र-**ॐ बुं बुधाय नमः। **लघुमन्त्र-**ॐ ऐं स्त्रीं श्री बुधाय नमः। **प्रार्थना करें-** उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान्पीडां दहतुमे बुधः।।

जपसंख्या- ९ हजार; कलियुगमें जप-संख्या ३६ हजार। **समिधा-**अपामार्ग। **दानवस्तुयें-** पन्ना, सोना, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, मिलेजुले फूल, हाथीदांत, कर्पूर, शस्त्र, फल तथा गारूत्मक, दासी, **दानका समय-** सुबह २ घण्टे तक। **धारण हेतु रत्न-** मरकतमणि पन्ना (Emerald जमरुद) ६ या ३ रत्ती का सोनेकी अंगूठीमें बुधवारको उफा नक्षत्रमें धारण करें। **उपरत्न-** हरित नीलमणि (Aquamarine) शिलामणि (Agate सुलेमानी पत्थर) टोडा और देरुजसंग। **जड़ी-**वृद्धदारू-मूल (विधारा वृक्ष की जड़) **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधिस्नानम्-** गोबर, अक्षत, फल, गोरोचन, मधु, मोती, कमलपुष्प, शहद, सीपी, नवमूल तथा स्वर्ण मिश्रित जल लेना चाहिए।

गुरुका ध्यान- देवदैत्यगुरु तद्वत् पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्रकमण्डलू।।

वैदिकमन्त्र- ॐ बृहस्पते अति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा।।यजु.अ.२६मं.३

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः। एकाक्षरी बीज मंत्र- ॐ बृं बृहस्पतये नमः।लघुमंत्र- ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।
प्रार्थना करें - देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहितेरतः।
अनेकशिष्यैः सम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः।।

जपसंख्या- १९ हजार, कलियुग में जपसंख्या ७६ हजार होती है। हवनसमिधा- पीपल, अश्वत्थ। दानवस्तुयें- पुखराज, सोना, कांसी, चनेकीदाल, खांड, घी, पीला कपड़ा, पीले फूल, हाथी, पुस्तक, घोड़ा, पीले फल, हल्दी तथा मेवायें। दानका समय- सन्ध्याकाल। धारण हेतु रत्न- पुष्पराग (पुखराज Topaz) ९ रत्ती वजन का गुरुपुष्यामृत योगमें धारण करें; ९ रत्ती के अभावमें १२ चावल वजन अथवा ३।। रत्ती का भी पीतल या सोने की अंगूठीमें पहना जा सकता है। स्मरण रहे ६।११।१५ रत्तीका नहीं पहनना चाहिए। उपरत्न-Emerald संग सोनेला, संग सोनामाखी आदि। जड़ी- भारंगी या केलेका मूल (जड़) लेनी चाहिए।
पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थ जलोषधिस्नानम्- मालती पुष्प, चम्पा पल्लव, सरसोंपीली, शहद मिश्रित जल मुलहट्ठी लेना चाहिए।

शुक्रका ध्यान- श्वेतवर्णादण्डायुधा दानवादि पुरोहिता।
अग्निवर्णाश्चम्व्युत रथारूढ़ सुशोभिता।।

वैदिक मंत्र- ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिन्य मिदं पयोऽमृतम्मधु।। यजु. अ. १९मं. ७५जपनीयतान्त्रिकमंत्र- ॐद्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। एकाक्षरीबीजमंत्रः ॐ शुं शुक्राय नमः। लघुमन्त्र- ॐ ह्रीं श्री शुक्राय नमः। प्रार्थना करें-दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महाद्युतिः।प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीड़ा दहतु मे भृगुः।।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

जपसंख्या- १६ हजार, कलियुगमें ६४ हजार। हवनसमिधा उदम्बर। दानवस्तुएं- हीरा, सोना, चांदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद चित्रितवस्त्र, सफेद फूल, सुगन्धितद्रव्य, दही, सफेद घोड़ा, सफेदचन्दन, वज्रमणी, गाय तथा परिमल। दानका समय- अरुणोदय-काल (सूर्योदय के समय) धारण हेतु रत्न- वज्रमणि (हीरा Diamond अल्मास) ७ रत्ती का शुक्रवार को मृगशिर नक्षत्रमें पहनना चाहिए। ७ रत्ती की सामर्थ्य न हो तो २ रत्ती का धारण करें, चांदीकी अंगूठी में। उपरत्न- संगदतला, संगतुरमुली Amethyst या Zircon अथवा चांदी में जड़ा हुआ मोती पहनें। जड़ी-सिंहपुच्छ का मूल धारण करें। पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थजलोषधिस्नानम्- मनःशिला, इलायची, वृक्षोंकी जड़, कुंकुमयुक्त जलमें केशर मिलाकर प्रयोग करें।

शनि का ध्यान- इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः।
बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा।।

वैदिक मन्त्र- ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शन्योरभिस्त्रवन्तु नः।। यजु.अ.३६।१२

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

जपनीय तान्त्रिक मन्त्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः। एकाक्षरीमन्त्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः। लघुमन्त्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीशनैश्चराय नमः।
प्रार्थना करें- सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः।।

जपसंख्या- २३ हजार, कलियुगमें ९२ हजार होती है। हवनसमिधा- शमी। दानकी वस्तुएं- नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, कड़वा तेल, कालावस्त्र, कालाफूल, कस्तूरी, सवत्सा कालीगो, भैंस,भैंसा,खडाऊँ तथा इन्द्रनीलमणि। दानका समय- मध्यान्ह काल अथवा सन्ध्यासमय। धारणहेतु रत्न- नीलमणि (नीलम Saphire याकूत) १०।७।६।३ रत्तीका शनिवारको श्रवण नक्षत्रके योगमें धारणकरें। कम से कम ११ चावलके वजनका भी पहना जा सकता है। लोहेकी अंगूठी या सप्तधातु अथवा जस्तमें धारण कर सकते है। उपरत्न- पन्ना Crysolite संगलीली, संग जमुनिमा। जड़ी-विच्छोल की लेनी चाहिए। पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थ जलोषधिस्नानम्- काले तिल, अंजन, लोहवान, लाज्जवती, सौंफ, मुत्थरा खिल्ला, पुष्पयुक्त जल ग्रहण करें।

राहु का ध्यान- करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते।।

वैदिक मन्त्र- ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। यजु.अ.२७।३९

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। एकाक्षरीमन्त्र- ॐ रां राहवे नमः। लघुमन्त्र- ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः। प्रार्थना करें- अनेक रुपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः। उत्पातरुपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिरवी।।

जपसंख्या- १८ हजार, कलियुगमें ७२ हजार। हवनसमिधा-दूर्वा। दानकी वस्तुएं- गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों, तेल, नीलावस्त्र, कालेफूल, कम्बल, घोड़ा, सूप, तलवार, नारियल तथा सप्त धान्य। दानका समय- रात्रिमें। धारण हेतु रत्न- गोमेद (गोमेद Zircon जरकूनिया या जारगुन) ६रत्ती का बुधवार उफा.नक्षत्र में धारण करें। अंगूठी, लोहा, शीशा या रांग की होनी चाहिए। उपरत्न- लाजवर्त, Sardonyx संगतुरसावा, संगसाफी, जड़ी-श्वेत चन्दन। पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थजलोषधिस्नानम्- लोध, तिल, सुथरामोती, हाथीमद, कस्तूरी युक्त जल लेना चाहिए।

केतुका ध्यान- धूम्रा द्विवाहवःसर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।।

वैदिक यन्त्र- ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः।। यजु.अ.२९।३७

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः। एकाक्षरीबीजमन्त्र- ॐ कें केतवे नमः। लघुमन्त्र- ॐ ह्रीं केतवे नमः। प्रार्थना करें- अनेक रुपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः। उत्पातरुपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी।।

जपसंख्या- १८ हजार, कलियुगमें ७२ हजार। हवन समिधा- कुशा। दानवस्तुएं- लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, ऋतु फल, फूल, नारियल कम्बल, बकरा, खोया,ध्वजा और शस्त्र। दानकासमय- रात्रि। धारण हेतु रत्न- वैदूर्य (लहसुनिया Cat's-Eye फिरोजा) ६ रत्ती का गुरुपुष्य योगमें धारण करें। अंगूठी, लोहा, शीशा, जस्ता की पहनें। गोमेद और

लहसुनिया ३ रत्ती का भी ले सकते हैं। २।४।११।१३ रत्ती का वर्जित है। उपरत्न- लाजवर्त Turqaise संगमूसा, संगगोदन्ती आदि। जड़ी- असगंध की जड़ धारण करें। पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधिस्नानम्- लोबान, तिलपत्र, मुत्थरा, हाथीमद, बकरी मूत्र से युक्त जल ग्रहण करें।

ग्रहोंके दोष शान्त्यर्थ सामान्य औषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई), कूट, खिल्ला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारू, हल्दी, लोध, जटामासी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक और नागरमोथा इन सब औषधियुक्त गङ्गादि सतीर्थोदक जल से स्नान करने पर सब ग्रहोंकी पीड़ा शान्त होती है। ऊपर लिखे अनुसार सूर्यादि ग्रहोंके सम्बन्धमें वर्णित मन्त्रजप यज्ञानुष्ठानादि करने से अशुभ स्थानमें भी ग्रह पीड़ा नहीं देते हैं।

ग्रह औषधि, जल, वायु और वस्त्र- ये सब संग और कुसंग पाकर संसारमें बुरे और भले पदार्थ हो जाते हैं। चतुर एवं विचारशील पुरुषही बातको जान पाते है, जैसाकि गोस्वामी श्रीतुलसीदासने लिखा है-

ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग।।

ध्यान रहे- नग में बाल, रेखा बिन्दु न हो, वह टूटा-फूटा न हो, रंग में रंग मिश्रित न हो। नग लेने की सामर्थ्य न हो तो उपरत्न- यन्त्र एवं शास्त्रोक्त नियमानुसार जड़ी धारण करना भी कम उपयोगी नहीं होता है। जिस प्रकार मूर्तिकी प्रतिष्ठा मन्त्रों द्वारा की जाती है उसी प्रकार जिस ग्रहका नग हो उसी ग्रह मन्त्रका १००० जाप दशांश हवन करके नग धारण करें।

ग्रहयन्त्र पंचांगशुद्धि देखकर अष्टगन्धकी स्याही और अनारकी कलमसे भोजपत्र पर लिखकर सोने, चांदी या तांबेके ताबीजमें ग्रहानुसार धागेमें पिरोकर पुरुष दाहिनी भुजामें, स्त्री व बच्चे गलेमें पहनें। प्रत्येक ग्रह की जड़ी पुष्यार्कयोग में ग्रहण करें। मासान्तर्गत लाभ हो तो ठीक अन्यथा बदल लेना चाहिए।

समस्तविश्व देवताओं (देदीप्तमानज्योतियों) के आधीन है। देवता मन्त्रोंके अधीन रहते हैं तथा मन्त्र भूदेव ब्राह्मणोंके अधीन होते है, इसलिए मन्त्रदृष्टा विद्वान ही सर्वसाधारणके लिये देवता है जहां तक सम्भव हो सके विद्वान से ही जपादि करवाना चाहिए-

देवाधीनं जगत् सर्वम् मन्त्राधीनश्च देवता।
ते मन्त्र ब्राह्मणाधीनः तस्मात् ब्राह्मण देवता भवेत।।

ग्रह किसपाद से आया है- ग्रह जिस समय राशि बदले उस समय चन्द्रमा जिस राशि पर हो, वह राशि जन्म राशि से १।६।११वें हो तो ग्रह स्वर्णपाद से गतिशील रहेगा ऐसा जानें, फल अनावश्यक चिन्ता व्याप्त रहे। ऐसे ही २।५।९वें हो तो चांदीके पायासे, फल- धन प्राप्ति हो, ३।७।१०वें हो तो **ताम्रपाद फल-** लक्ष्मी प्राप्ति और यदि ४।८।१२वें हो तो लोहपादमें ग्रह फल दुःख होता है। मतान्तर- शनि, राहु, केतु का लोहपाद, गुरुका स्वर्णपाद और मंगलका ताम्रपाद फल शुभ होता है।

शनिकी साढेसाती लगनेसे- १०० दिन मुख पर रहता है फल हानि करता है। ऐसे ही ४०० दिन दक्षिण भुजा पर विजय दिलाता है। ६०० दिन चरणोंमें यत्र-तत्र भ्रमण करता है। ४०० दिन वाम भुजामें दुःख देता है। ५०० दिन उदर में लाभ देता है। ३०० दिन मस्तक पर राजलाभ करता है। २०० दिन नेत्रोंमें सुखद होता है और २०० दिन गुह्य प्रदेशमें रहकर दुःख देता है। इस प्रकार शनि की साढेसाती २७०० दिन भोग करती है।

शनि वाहन फल- शनिसंचार दिन के तिथि, वार, नक्षत्र संख्या में नामाक्षर जोड़कर ९ का भाग दे शेष १ बचे तो शनि वाहन गदर्भ, २ अश्व, ३ हस्ति, ४ महिष, ५ जम्बूक, ६ सिंह, ७ काक, ८ मयूर, ० शेष में हंस वाहन होता है **द्वितीय मत-** जन्म नक्षत्र से जिस दिन शनि राशि बदले उस दिनके नक्षत्र तक गिनकर ९ से भाग करने पर उपरोक्त क्रम से वाहन जानें। फल-गदर्भ से कलह, अश्व से मरण भ्रम, गज से लाभ, महिष से व्याधि, जम्बूक से भय, सिंह से विजय, काक से चिन्ता, मयूर व हंस से जय सौख्य समृद्धि होती है।

श्रीदशरथजी कृत-शनि स्तोत्र

दशरथजी ने माता सरस्वती और गणेशजीका स्मरण करके निम्नलिखित स्तोत्रकी रचना करके शनिदेव की सविधि पूजनार्चनाकी जिससे संतुष्ट होकर शनि ने वरदान मांगने को कहा। तब महाराजा ने वरदान में मांगा- 'भगवन् देवता, मानव, पशु-पक्षी' किसी को आप कष्ट न दें। शनि ने एक शर्त के साथ यह वरदान भी दे दिया।

शर्त यह थी- कि यदि किसीकी जन्मकुण्डलीके मृत्युस्थान ८ जन्मलग्नस्थान १ अथवा चतुर्थसुखस्थान ४ में मैं बैठा हूं एवं गोचरमें जब कभी भ्रमण कर रहा हूं तब मैं उसे मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट दे सकता हूं, किन्तु यदि वह मेरी प्रतिमाकी पूजाकर तुम्हारे द्वारा रचित स्तोत्रका नित्य पाठ करेगा तो उसे मैं कभी पीड़ा नहीं दूंगा। अपितु उपासककी रक्षा करूँगा।

दशरथजी रचित शनि-स्तोत्र

नमःकृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमःकालाग्निरुपायकृतान्ताय च वै नमः।।
नमो निर्मांसदेहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदरभयाकृते।।
नमःपुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नमः।
नमोदीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने।।
नमस्ते सर्वभक्षाय बलीमुख नमोऽस्तु ते।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च।।
अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तु ते।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तु ते।।
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः।।
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः।।
प्रसादं कुरु मे देव वरार्होऽहमुपागतः।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।।

पद्मपु.उत्त.३४।२७।३६

ग्रह गायत्री मन्त्र

जन्म भूर्गोत्रमनिश्च वर्णः स्थानं मुखानि च।
योऽज्ञात्वा कुरुते शान्ति ग्रहास्तेनावमानिताः।।

ग्रह शान्तिके सन्दर्भों में अध्ययन करने पर निर्विवाद रूप से यह स्वीकार किया जा सकता है कि ४।८।१२ स्थानोंमें रहने वाले, ग्रहोंके कुप्रभावको न्यूनाधिक मात्रामें अनुकूल करनेके लिए ग्रह शान्तिका विशेष महत्व है। यही कारण है कि ग्रह गणिताचार्यो ने न केवल ग्रहोंके प्रभावोंका ही निर्देश किया अपितु उनकी अनुकूलताके लिए 'ग्रहशान्ति' जैसे साधारण एवं सुसाध्य उपायोंका विश्लेषणात्मक अध्ययन भी किया। प्राचीन मन्त्रदृष्टा ऋषियोंने जप के लिए ग्रहोंकी गायत्रीका भी निर्देश किया है यथा-

सूर्य-ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।
चन्द्र-ॐअमृताङ्गाय विद्महे कलारूपायधीमहितन्नःसोमः प्रचोदयात्।
भौम-ॐअंगारकाय विद्महे शक्तिहस्तायधीमहितन्नोभौमः प्रचोदयात्।
बुध-ॐसौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहितन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।
गुरु-ॐआंगिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहितन्नोजीवः प्रचोदयात्।
शुक्र-ॐभृगुसुताय विद्महे दिव्देशाय धीमहितन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।
शनि-ॐसूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहितन्नो सौरिः प्रचोदयात्।
राहु-ॐशिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहितन्नो राहुः प्रचोदयात्।
केतु-ॐगदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहितन्नो केतुः प्रचोदयात्।।

प्रसव कष्ट शान्ति

प्रजननमें विलम्ब हो, प्रसूता अधिक कष्टमें हो तो निम्नलिखित ऋचा तथा सूक्त द्वारा गंगाजल अभिमन्त्रित करके गर्भिणीको पिलानेसे बच्चा सुखपूर्वक हो जाता है-

प्रथमदिने प्रसूयन्त्यां जपेद् गर्भविमोचनीम्।
इन्द्रं च मनसा ध्यायेन्नारी गर्भ विमुञ्चति।।
वि जिहीष्व वनस्पतये योनिः सूष्यन्त्या इव।
श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रि मुञ्चतम्।।

शीघ्र प्रसव होने का मन्त्र- 'ॐ क्षीं ॐ स्वाहा' इस मन्त्रको पढ़ता हुआ तिल तैल को सौ या हजार बार अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्रीको किंचित्मात्र पिलादें तथा प्रजननमार्ग पर अच्छी प्रकार लेप करनेसे शीघ्र ही प्रसव हो जाता है। हिमवतीके उत्तर पार्श्वमें एक सुरथा नाम राक्षसी है, जिसके स्मरण मात्र से शीघ्रता-शीघ्र प्रजनन होकर प्रसूता निर्दुःख हो जाती है यथा-

हिमवत्युत्तरे पार्श्वे सुरथा नाम यक्षिणी।
तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्यागर्भिणी भवेत्।।

औषधिप्रयोग- बांस व नीमकी छाल, तुलसीकी जड़, कपित्थ(कैत) के पत्ते, करवीरकेबीज इन सबको बराबर लेकर भैंसके दूधमें पीसें, तिल तेलमें मिलाय योनिमार्गपर लेप करनेसे शीघ्र प्रसवहो जाता है।

प्रजननके लिए अशुभ समय- कार्तिकमें स्त्री, पौषमें बकरी, माघमें भैंस, चैत्रमें कुतिया, वैशाखमें ऊँटनी, ज्येष्ठमें बिल्ली, श्रावणमें गधी व घोड़ी, भाद्रपदमें गौ, मार्गशीर्षमें हथिनी बच्चा जन्मे तो पिता एवं घरधनी को छः मासान्तर्गत अरिष्ट होता है। शान्त्यर्थ प्रसूता गौ आदि का दान करें, घरमें हवन, शान्तिपाठ, पुण्यहवाचन, श्वेतसर्षप हवन, व्याहृति मन्त्रोंसे यज्ञानुष्ठान करवाना चाहिए, जिससे शान्ति रहे।

त्रिखल जन्म शान्ति विधान

सुतत्रये सुता चेत्स्यात्तत्रये वा सुतो यदि।
मातापित्रोः कुलस्यापि तदाऽनिष्टं महद्भवेत्।।

तीनपुत्रोंके बाद कन्या या तीन कन्याओके बाद पुत्रका जन्म हो तो त्रिखलदोष होता है। पुत्रीमाताके लिये और पुत्र पिताके लिये नेष्ट होता है। परिवारमें अनिष्टकी आशंका बनी रहती है।

शान्त्यर्थ- भूशयन्, तीनअन्न, तीनपात्र, तीन प्रकारके वस्त्राभूषणादि दान तथा महामृत्युञ्जयजप व ब्रह्मा, विष्णु, महेश,इन्द्रके सूक्तोंका पाठ, उक्त देवोंके मन्त्रोंसे १८००आहुति हवन, गुरुजनोंके आशीर्वादसे अरिष्ट विलीनहो जाताहै। विस्तृत विवरण देखें। नि.सि.तृ.प.पृ.५०८

एक नक्षत्र जन्म दोष

पिता-पुत्र,माता-पुत्र व कन्या, दो सहोदर भाइयोंका जन्म एक ही नक्षत्रमें हो तो दोनोंमें से किसी को कष्ट होताहै। दोषशान्त्यर्थ गौ, सुवर्ण एवं छायापात्रका दान,उत्तम सामग्रीसे हवनादि करना चाहिए।

उल्टे दांत जन्म हो तो महाअशुभ- पहले मासमें यदि बच्चेके दांत निकलें तो स्वयंके लिए, दूसरेमें छोटे भाईको, तीसरेमें बहिनको, चौथेमें पारिवारिक भाताको, पांचवेमें बड़े भाई को नेष्ट होता है। जन्म से ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिता अथवा अपने लिये महाअशुभ होता है। यदि बच्चेके उल्टे (ऊपर की पंक्तिमें) पहले दांत निकलें तो दैवज्ञोंने मातुलपक्ष अर्थात् मामा-मामी आदिके लिए नेष्ट कहा है। दोष निवृत्तिहेतु सुवर्ण, चांदी, तांबा या कांसीके पात्रमें दही और भात भरकर मामा भान्जे, या भान्जीके हाथमें देते समय निम्न मन्त्रोच्चारणके साथ अवलोकन करें-

रक्ष मां भागिनेय! त्वं रक्ष मे सकलं कुलम्।
गृहीत्वा भाजनं सान्नं प्रसन्नो भव मे सदा।।

हाथीकी पीठ या नौकापर बच्चेको बैठाकर सर्वोषधि, सर्वगन्ध बीज, पुष्प, फल, पंचगव्य, रत्न तथा पत्ता मिश्रित जलसे स्नान करावे, तदनन्तर थालीपाक से ब्रह्माका ७ दिन तक पूजन करे, और ब्राह्मणको भोजन करावे। आठवें दिन स्वर्ण या अन्य धातुसे बने आसनपर बैठकर वृक्ष, जड़, मृत्तिका, रितुफल सर्वोषधि, सर्वगन्ध तथा बीजयुक्त जल से स्नान करावे। अग्नि, सोम, वायु, प्रसिद्ध पर्वत तथा भगवान् केशवके निमित्त अग्निमें हवन, गौ ब्राह्मणपूजन दानमानसे सम्मानित करने पर दोषकी निवृत्ति होती है।

निर्विघ्नं कुरु कल्याणं निर्विघ्नं च मातरम्।
मय्यात्मानमधिष्ठाप्य चिरंजीव मया सह।।

अशुभसमय-भद्रा,व्यतिपात,कुलिंग,यमघण्ट,सूर्यचन्द्रग्रहण,दोनों संध्या,वैधृतिपात,भूमिकम्पन,अन्यान्य महोत्पात या गण्डमूल नक्षत्रादिमें किसीका जन्म हो तो आचार्य युक्तियुक्त विचार कर शान्ति करावे।

अङ्गभंग-जन्महोना,शक्लयोनि विकृतहो, अद्भुतरूप पैदा हो, मनुष्य, गौ,बकरी,घोड़ी,मृग अन्यान्य पशु,पक्षी,सदन्तजन्मे,बहुशिर, बिनाशिर बहुकान, बिनाकान, एकसींग, तीनसींग, तीनपाव,पांचपांव, बड़ेकान पैदाहों तो महोत्पात जाने। जहां जन्म हुआ हो , वहां विनाश होता है। इसलिए ग्राम प्रधान द्वारा अथवा राजकीय शान्ति होनी चाहिए।

मूलशान्तिविधान-

गण्डेऽरिष्टं चन्दनं च कुष्ठं गोरोचनं तथा।
घृतेन मिश्रितं कृत्वा चतुर्भिः कलशैस्ततः।।
सहस्त्रशीर्षामन्त्रेण बालकं स्नापयेद्बुधः।
पितृयुक्तं दिवाजातं मातृयुक्तं च रात्रिकम्।।
स्नापयेत्पितृमातृभ्यां सन्ध्ययोरुभयोरपि।
कांस्यपात्रं घृतैः पूर्णं दद्याद्गण्डोपशान्तये।।
कृष्णां धेनु सुवर्णं च ग्रहजाप्यं च कारयेत्।
आश्लेषायां च मूलेऽपि शान्तिरेवं विधीयते।।

मूल-गण्डमूल शुभाशुभ नक्षत्रोंका विस्तारसहित विवरण देखें जातक प्रकरणमें, यहां केवल शान्तिपरिचर्चा पाठकोंके विचाराधीन है।

मूलमें जन्मे बच्चेका नामकरण संस्कार(शान्तिविधान) पुनः जन्म(मूल) नक्षत्र आनेपर २७वें दिनके आसन्न लग्नशुद्धि देख करना चाहिए।

सर्वे दोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।।

मूल जपके लिए वेदोक्त मन्त्र- पृष्ठ १०० पर अथ नक्षत्र कष्टावलीचक्रमें देखने चाहिए। अश्विनी,आश्लेषा,मघा, मूल,रेवतीके मन्त्र जप ५ हजार और आश्लेषा मघाके १०हजार जप करने चाहिए। कलियुगमें चौगुना जाप फलदायक होता है।

आहुति किस ग्रह के मुख में जानी चाहिए?

सूर्याश्रित नक्षत्र से हवन दिन नक्षत्र तक गिनें; तीन-तीन में क्रमशः सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मंगल, गुरु, राहु और केतु के मुख में आहुति होती है। जन्मराशि स्वामीग्रहके मुखमें आहुति पड़नी चाहिए। स्मरण रहे यह मत केवल जन्म नक्षत्र मूल शान्ति सन्दर्भमें है अन्य यज्ञोंमें शुभग्रह के मुखमें आहुति पड़नेसे कल्याण होता है।

अग्निका निवास कहां शुभ होता है?

हवन दिन तिथि संख्यामें वार संख्या जोड़कर १ और मिलायें। ८का भाग दें शेष ३।० बचे तो अग्निका वास पृथ्वीपर शुभ जानें। १ शेषमें अग्निवास आकाशमें प्राणनाशक होता है। २ शेषमें पातालमें अग्नि धनैश्वर्य हानिकारक होती है।

सप्त अग्नियोंके नाम- बहुरूपा, हिरण्या, कनका, रक्ता, कृष्ण, सुप्रभा और जिव्हा। **सप्तजिव्हानाम-** ॐ भुं स्वाप्त,स्तुं स्वाहा, ॐव्रुं स्वाहा,ॐपुं स्वाहा,ॐ ड्डुं स्वाहा,ॐ द्रुं स्वाहा, ॐ क्षुं स्वाहा। **मुन्था-** जिस वर्ष वर्षफलमें जीवसाक्षिणी देहधारी प्रधानग्रह मुन्था पाप ग्रह से युक्त, दृष्ट या संपुट होकर त्रिक भवनमें स्थित होती है; उस वर्ष मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट, त्रय तापोंकी वृद्धि होती है। शान्त्यार्थ दान-मोती, तन्दुलान्न, सुवर्ण, कांस्यपात्र, घृत, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, कर्पूर, मिश्री, श्वेत चन्दन, हाथी दांत, वर्ण और दक्षिणा, रत्न-लहसुनिया(वैदूर्यमणि) धारण करना चाहिए। दानकासमय, जप मन्त्र संख्या और समिधा मुन्थेवत्। सप्तधान्योंमें जौ, उड़द, मूंग, गेहूँ,चावल,चना और कांगनी है। कूट, जटामासी, दोनोंहल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक और नागरमोथा ये दस द्रव्य सर्वौषधिके हैं। **अष्टगन्धकेद्रव्य-**अगर,तगर, छबीला, केशर,गौरोचन, कस्तरी,कुमकुम तथा दोनों चन्दन हैं।

पंचकोंमें मृत्यु हो जाये तो क्या करें?

आदौ कृत्वा धनिष्ठार्धमेतन्नक्षत्रपञ्चकम्।
रेवत्यन्तं सदा दूष्यमशुभं दाहकर्मणि।।

धनिष्ठाके उत्तरार्ध से रेवती पर्यन्त ५ नक्षत्र पंचक कहलाते हैं। पंचकों में किसीकी मृत्यु हो जाये तो महाअशुभ होती है। सम्भवहो तो पंचकों में दाहसंस्कार न करें। पंचांगके पक्षोंमें पंचक, भद्रा, त्रिपुष्कर, व्यतिपात, भरणी आदि कुयोगोंका स्पष्ट उल्लेख होता है। अशुभ योगमें मरने पर प्राणी प्रेतात्माको प्राप्त होकर वंशजोंका हनन करता है। उसकी ऊर्ध्वगति(स्वर्गारोहण) नहीं होता। मृतक छोटा हो या बड़ा नियम सब पर समान लागू होता है।

कुम्भमीनस्थिते चन्द्रे मरणं यस्य जायते।
न तस्योर्ध्वगतिर्दृष्टा सन्ततो न शुभं भवेत्।।

कुशाकी पांच प्रतिमा बनाकर ऊन से लपेट कर जौ के आटे से अनुलेपन करें। फिर संस्कारकर्त्ता अपने हाथ में गंगाजल अक्षत सहित लेकर अमुकगोत्रस्य अमुकनामकस्य पंचकमरणजनितवंशानिष्ट परिहारार्थ पंचकविधि करिष्ये ओम्। संकल्प कर पुतलों पर छोड दें। पुनः गन्ध पुष्पादि से पांचों पुतलोंका उनके नाम तथा मन्त्रों द्वारा अर्चन करे यथा- १. प्रेतवाहनाय नमः २. प्रेतसखाय नमः ३. प्रेतपाय नमः ४. प्रेतभूमिपायेन नमः ६. प्रेतहर्त्रे नमः और निम्न मन्त्रोंसे पिण्डदान करें यथा- १. **ज्मया अत्र वसवो रन्त देवाः उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः। अर्वाक् पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य।। (ऋ. ७।३९।३) २. तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेलमानो वरुणेह। बोध्युरुशंसमान आमुः प्रमोषीः।। (ऋ.१।२४।११) ३.उत नोऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपात् पृथ्वी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधे हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु।। (ऋ.६।५०।१४) ४. कद् रुद्राय प्रचेतसे मीलहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे।। (ऋ.१।४३।१) ५. पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः। पूषा वाजं सनोतु।। (ऋ.६।५४।५)**

कुशाओंकी पूजित प्रतिमाओंको क्रम से प्रेतात्माके एक शिर में, दूसरी नेत्रोंमें, तीसरी बाईं कुक्षीमें, चौथी नाभिमें तथा पांचवीं पैरों पर रखकर काष्ठकी चिता पर मुर्दे को रखें; फिर पूर्वोक्त नाम मन्त्रोंसे ही स्थापन क्रम से घृताहुति देकर अग्नि प्रदान करें। चिता में अग्नि प्रज्वलित होने पर बोलें-'**प्रेहि प्रेहि मे पथिभिः पूर्वेभिः**' अर्थात् जिस मार्गसे अन्य पूर्वज गये हैं, उसी मार्ग से तुम भी जाओ।

पञ्चकके पहले मरने पर पञ्चकमें दाह करें तो पुत्तल विधान ही करे। शान्ति न करें। पञ्चकमें मरने पर पञ्चक के बाद दाहसंस्कार करने पर शान्ति का ही विधान है; पुत्तलकी विधि आवश्यक नहीं। यह धर्मसिन्धु का मत है। पञ्चकोंमें वर्जित अन्य कर्म-

धनिष्ठापञ्चकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे।
त्याज्या दक्षिणादिग्यात्रा गृहाच्छादनमेव च।।

पञ्चक शान्ति कथन

शान्ति कर्त्ता देशकाल वंशानुगतस्मत्पित्रादेर्धनिष्ठादिपञ्चकदुर्मरण जनितदोषोपशान्त्यर्थ मम गृहे सर्वेषां बालादीनां दीर्घायुरारोग्यंसुख प्राप्त्यर्थ ब्रह्माण्डपुराणोक्तां पंचकनिधनशान्ति करिष्ये। इस प्रकार संकल्प कर गणेशादि समस्त देवताओंका आवाहन तथा पूजन करें। उत्तरादि चारों दिशाओंमें ४ कलश जलसे भरकर रखें उनके मन्त्र- **वसुभ्यो नमः। वरुणाय नमः। अजैकपादे नमः। अहिर्बुध्न्याय नमः** और पांचवां कलश मध्यमें रखें **मन्त्र-पूष्णेनमः।** स्वर्णादि ५ धातुओं की धनिष्ठादि ५नक्षत्रोंकी मूर्ति बनवाकर उन कलशों पर स्थापित प्राणप्रतिष्ठा विधि से करें।

यज्ञस्थलके निकट यमादि देवताओंको स्थापित करे। यथा- **यमाय नमः। धर्मराजायनमः। मृत्यवे नमः। अन्तकाय नमः। वैवस्वताय नमः। कालाय नमः। सर्वभूतक्षयाय नमः। औदुम्बराय नमः। दध्नाय नमः। नीलाय नमः। परमेष्ठिने नमः। वृकोदराय नमः। चित्राय नमः। चित्रगुप्ताय नमः। मृत्युञ्जयाय नमः।**

५ कलशोंके सूक्त जप के लिए ५ ब्राह्मणोंका वरण करें। ब्राह्मण ब्रह्मा,विष्णु,महेश,इन्द्र और वरुण सूक्तोंका जाप निरन्तर करें। छाया पात्रका दान देवें। सोना दानमें देवें। लक्षहोम ब्राह्मणपूजन व षष्ट्यंश दान करनेसे शान्ति होतीहै। नि.सि.का आशौच प्र.देखना चाहिए। पञ्चकोंमें कृतकार्य की पांच गुणी वृद्धि होती है। हानि भी पांच गुनीहो जातीहै।

कन्या रजस्वला दोष-शान्ति

स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधि।
युञ्जानामाहुति हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्।।

विवाह समये कदाचित कन्या रजस्वला हो जाय तो फेरा होम करने से पहले स्नान कराकर निम्नलिखित शु.यजु.११।१मंत्र से युञ्जनी

की आहुति अग्निमे दिलाकर संस्कार करनेमें दोष नहीं होता है-

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्।।

भद्रा- श्रीपतिने कहा है कि देव-दानव संग्राममें जब देवगण परास्त हुए तो भगवान् शिवने क्रोध से संतप्त अपने शरीर को देखा, जिससे गर्दन मुखवाली,पूंछयुक्ता,तीन,पांव,सात भुजा तथा सिंहके समान गर्दन वाली प्रेत वाहिनी 'देवी' प्रकट हुई जिसने अपने विकराल मुख से सम्पूर्ण राक्षसों का संहार कर देवताओं का भद्र (भला) किया। इसलिए प्रसन्न हुए देवताओं ने इसे भद्रा नाम से सम्मानित किया और कर्णो के मध्य स्थान दे दिया। भद्राकाल के ३० भाग करनेपर छटे भागतक नेष्ट भद्रा मुख जानें। अन्तिम ३ के भागके समयको विद्वानोंने विष्टिपुच्छ विजयप्रद शुभकहा है। भद्रावास तीनों लोकोंमें बतलाया है यथा-मेष,वृष,मिथुन तथा वृश्चिकके चन्द्रमामें भद्रा स्वर्गमें रहती है। कन्या,तुला,धनु और मकरके चन्द्रमामें भद्रापातालग्सी होती है और कर्क सिंह कुम्भ व मीन में चन्द्रमा होने पर मृत्युलोक निवासिनी भद्राके (मुख) विहितकालमें पृथ्वी वासियोंको विष्टि कष्ट देती है।

स्वर्गे भद्रा शुभम् कार्ये पाताले च धनागमः।
मृत्यु लोके यदा विष्टिः सर्वकार्य विनाशनः।।

'विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्द्धजा' दिनमें तिथिके उत्तरार्धकी व रात्रिमें तिथिके पूर्वार्धकी भद्रा शुभ होती है। विशेषरूप से भद्राओंमें श्रावणीकर्म रक्षाबन्धन,होलिका दहन निषेध है। यथा-

भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।

प्रदक्षिणा विचार-

एका चंड्या रवोः सप्त तिस्त्र कार्या विनायके।
हरेश्चतस्त्रः कर्त्तव्याः शिवस्यार्द्ध प्रदक्षिणा।।

दीप निपदर्पिणादि दोष-

नैव निर्वापयेद्दीपं देवार्थ मुपकल्पितम्।
दीपहर्ता भवेदन्ध काणो निवार्पको भवेत्।।

यज्ञानुष्ठान- हवनके सम्बन्धमें आचार्योंने जिन सिद्धान्तोंका प्रतिपादन किया है, उसमें मण्डपकी लम्बाई चौड़ाई ऊँचाई तथा गहराई आदि का उल्लेख करनेके साथ-साथ अग्निकी प्रज्वलिताका विशेष रूप से ध्यान रखनाहै। हवनमें 'स्वाहा' संख्या मुख्य अनुष्ठान पर निर्भर करती है। इस सम्बन्धमें सामान्यतया आचार्योंने तद्दशांश हवन, तद्दशांश तर्पण, एवं तद्दशांश मार्जन आदि का भी विधान किया है। आचार्योंका मानना है कि अग्निकी अप्रज्वलिताके परिणाम स्वरूप यजमान तथा देश पर संकटकी आशंका रहती है। यथा- **वधिराय कर्ण होने जातदेवसः।** शान्ति प्रकरणकी पूर्ति करनेसे पूर्वमें आशा करताहूँ कि पाठकोंके ज्ञानार्जनमें शान्तिप्रकरण सहयोग करेगा। सुयशके भागीदार बनेंगेतो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा।

अद्भुत शान्ति कथनम्- यात्रारम्भ करते ही कोई कह दे, कहां जा रहे हो? ठहर जाओ या फिर वस्त्र ही किसी में उलझ जायतो यात्रा अति नेष्ट होती है। अगर अचानक गिद्ध, उल्लू आदि सिरपर बैठ जाय, छिपकली गिरजाय, कौआ स्पर्श करके अद्भुत शब्द करे, अशुभ अंग फड़क उठे, घरमें चमगादड़ आदि घुसना शुरू कर दें, दुस्वप्न आना प्रारम्भ हो जाय। अपने या परिवारमें किसीके मृत लक्षण दिखलाई पड़े तो अपने कुलगुरु अथवा योग्य आचार्य के परामार्शानुसार शान्ति करानी चाहिए। धर्मका अनुसरण करना चाहिए, क्योंकि धर्मही व्याधियोंका शमनकर्त्ता है, धर्मही ग्रह दोषोंका नाश कर्त्ता है और धर्मही शत्रुओंपर विजय दिलानेमें समर्थ है।

धर्मेण हन्यते व्याधि, धर्मेण हन्यते ग्रहाः।
धर्मेण हन्यते शत्रु, यतोधर्मस्ततोजयः।।

असम्भव को भी सम्भव करनेमें समर्थ सर्वशक्तिमान आशुतोष भगवान शिवजीहैं- जैसाकि नारदजीने अपने श्रीमुखसे कहा है-

जौ तपु करै कुमारि तुम्हारी। भाविऊ मेटि सकहिं त्रपुरारी।।

तपकी प्रशंसा जगत्जननि मातापार्वतीजी ने स्वयं इस प्रकार की है-

करहि जाइ तपु सैल कुमारी। नारद कहा सो सत्य विचारी।।

कलियुगमें गंगाजी का महत्व-

कृतयुगे पुष्कराणि त्रैतायां नैमिषिं स्मृतम्।
द्वापरे च कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गासमाश्रयेत्।।
अग्निनादह्यते तूलं तृणं शुष्कं क्षणाद् यथा।
तथा गङ्गाजलस्पर्शातपुसां पापं दह्यते क्षणात।।

देवताओंकोअतिप्रिय-शंकरस्यविल्वपत्रम्। विष्णोस्वतुलसीदलम्।
गणेशस्य दूर्वांकुरा। अम्बायां नानाविधपुष्पाणि। सूर्यस्य रक्तकनीर पुष्पम्।।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल-

पुरुषोंके दक्षिणअंग से और स्त्रियोंके वामांगसे विचार करना, पुरुषोंके वामभागमें और स्त्रियोंके दक्षिण भागमें विपरीत भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपातका कहा जाता है; वही सरट(गिरगिट) के चढ़नेका जाने। सरटके गिरनेका व पल्लीके चढ़नेका फल वृथा होताहै।

।। अथाङ्ग-विभागेछिपकलीकोढ़किरली पतनफलम्।।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशःकष्ट
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्टे	ऐश्वर्यलाभ
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	सौभाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्य
जनद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्यलाभः	वाममणिधे	कान्तिनाशः	नाभो	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुख	मिष्ठान्नला.
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्ति	पादान्ते	मृत्युःकष्ट
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणकष्ट
जंघयो	शुभम्	स्कन्धयो	विजयः	नखेषु	धान्य लाभ
दःमणिबन्धे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षागृष्ठे	धन लाभ

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यर्क्षाणि- यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियोंमें तथा चं.बु.गु.शु. इन वारोंमें गिरे तो शुभ फल देती है। पुष्य अश्वि रो.मू.पुनःउफा.ह.चि.स्वा.ध.रे. अनु.श. ये नक्षत्र शुभ दायक है। **अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।**

पल्ली-पाते कर्त्तव्यकर्म- पल्ली(किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करे। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रह युक्त लग्नमें तथा अष्टम चन्द्रमामें पल्ली आदि के स्पर्श होनेसे अनिष्ट होता है। उसकी शान्तिके लिए हौम, महामृत्युञ्जय मन्त्रका जप वा तिल, स्वर्ण दान पञ्चगव्यसे स्नान तथा घृतका छाया पात्र दान करना भी उत्तम है।

दिवा रात्रौ भूकम्प फलम्

दिन प्र.प्रहर	दिन द्वि.प्रहर	दिनतृ.प्रहर	दिन च.प्रहर
नृप मरण	मन्त्रीभय	पशु भय	अन्न नाश
रात्रौ प्र.प्रहर	रात्रौ द्वि.प्रहर	रात्रौ तृ.प्रहर	रात्रौ च.प्रहर
अन्न वृद्धि	राजमें भय	प्रजामें पीड़ा	राजमें युद्ध भय

अथ तिथि, करण, नक्षत्र, योग एवम् एकादशी नाम सख्यादि ज्ञानाय चक्रम्

तिथि संख्या	नाम	चन्द्र-रवि भोग्यांश	तिथियों में विहित करण नाम पूर्वार्धे	उत्तरार्धे
शुक्ल पक्ष				
१	प्रतिपदा	१२	किंस्तुघ्न	बव
२	द्वितीया	२४	बालव	कौलव
३	तृतीया	३६	तैतिल	गर
४	चतुर्थी	४८	वणिज	विष्टि(भद्रा)
५	पञ्चमी	६०	बव	बालव
६	षष्टी	७२	कौलव	तैतिल
७	सप्तमी	८४	गर	वणिज
८	अष्टमी	९६	विष्टि(भद्रा)	बव
९	नवमी	१०८	बालव	कौलव
१०	दशमी	१२०	तैतिल	गर
११	एकादशी	१३२	वणिज	विष्टि(भद्रा)
१२	द्वादशी	१४४	बव	बालव
१३	त्रयोदशी	१५६	कौलव	तैतिल
१४	चतुर्दशी	१६८	गर	वणिज
१५	पूर्णिमा	१८०	विष्टि(भद्रा)	बव
कृष्ण पक्ष			पूर्वार्धे	उत्तरार्धे
१६	प्रतिपदा	१९२	बालव	कौलव
१७	द्वितीया	२०४	तैतिल	गर
१८	तृतीया	२१६	वणिज	विष्टि(भद्रा)
१९	चतुर्थी	२२८	बव	बालव
२०	पञ्चमी	२४०	कौलव	तैतिल
२१	षष्टी	२५२	गर	वणिज
२२	सप्तमी	२६४	विष्टि(भद्रा)	बव
२३	अष्टमी	२७६	बालव	कौलव
२४	नवमी	२८८	तैतिल	गर
२५	दशमी	३००	वणिज	विष्टि(भद्रा)
२६	एकादशी	३१२	बव	बालव
२७	द्वादशी	३२४	कौलव	तैतिल
२८	त्रयोदशी	३३६	गर	वणिज
२९	चतुर्दशी	३४८	विष्टि(भद्रा)	शकुनि
३०	अमावस्या	३६०	चतुष्पद	नाग

नक्षत्र योग सं.	नक्षत्र नाम	भोग्यांश अं० क०	योग नाम	शुभाशुभ फल
१	अश्विनी	१३|२०	विष्कुम्भ	अशुभ
२	भरणी	२६|४०	प्रीति	उत्तम
३	कृत्तिका	४०|०	आयुष्मान	सौख्य
४	रोहिणी	५३|२०	सौभाग्य	समृद्धि
५	मृगशिरा	६६|४०	शोभन	शुभ
६	आर्द्रा	८०| ०	अतिगण्ड	नेष्ट
७	पुनर्वसु	९३|२०	सुकर्मा	श्रेष्ठ
८	पुष्य	१०६|४०	धृति	श्रेष्ठ
९	आश्लेषा	१२०|०	शूल	नेष्ट
१०	मघा	१३३|२०	गण्ड	नेष्ट
११	पूर्वाफाल्गुनी	१४६|४०	वृद्धि	सौख्य
१२	उत्तराफाल्गुनी	१६०| ०	ध्रुव	मध्यम
१३	हस्त	१७३|२०	व्याघात	नेष्ट
१४	चित्रा	१८६|४०	हर्षण	शुभ
१५	स्वाती	२००| ०	वज्र	अशुभ
१६	विशाखा	२१३|२०	सिद्धि	सौख्य
१७	अनुराधा	२२६|४०	व्यतीपात	नेष्ट
१८	ज्येष्ठा	२४०| ०	वरियान	मध्यम
१९	मूल	२५३|२०	परिघ	अशुभ
२०	पूर्वाषाढ़ा	२६६|४०	शिव	शुभ
२१	उत्तराषाढ़ा	२८०| ०	सिद्ध	सौख्य
२२	श्रवण	२९३|२०	साध्य	मध्यम
२३	धनिष्ठा	३०६|४०	शुभ	श्रेष्ठ
२४	शतभिषा	३२०| ०	शुक्ल	शुभ
२५	पूर्वाभाद्रपदा	३३३|२०	ब्रह्म	श्रेष्ठ
२६	उत्तरभाद्रपदा	३४६|४०	ऐन्द्र	मध्यम
२७	रेवती	३६०| ०	वैधृति	नेष्ट

संख्या	वार+नक्षत्र संयोगाः	शुभाशुभ फल
१	आनन्द	सिद्धि
२	कालदण्ड	मृत्यु
३	धूम्र	असुख
४	धाता	सौभाग्य
५	सौम्य	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	धनक्षय
७	केतु	मध्यम
८	श्रीवत्स	सौख्य
९	वज्र	क्षय
१०	मुद्गर	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	राजसम्मान
१२	मित्र	पुष्टि
१३	मानस	सौभाग्य
१४	पद्म	धनागमन
१५	लुम्ब	धनक्षय
१६	उत्पात	प्राणनाश
१७	मृत्यु	मृत्यु
१८	काण	क्लेश
१९	सिद्धि	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	कल्याण
२१	अमृत	राजसम्मान
२२	मूसल	धनक्षय
२३	गद	अक्षयविद्या
२४	मातङ्ग	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	अभिवृद्धि
२६	चर	कार्यसिद्धि
२७	सुस्थिर	गृहसुख
२८	प्रवर्द्धमान	विवाहसुख

एकादशी नाम चैत्र शुक्लादि	
१	कामदा
२	वरुथिनी
३	मोहिनी
४	अपरा
५	निर्जला
६	योगिनी
७	देवशयनी
८	कामिका
९	पुत्रदा
१०	अजा
११	पद्मा
१२	इन्दिरा
१३	पापाङ्कुशा
१४	रमा
१५	प्रबोधिनी
१६	उत्पत्ति
१७	मोक्षदा
१८	सफला
१९	पुत्रदा
२०	षट्तिला
२१	जया
२२	विजया
२३	आमला
२४	पापमोचनी
अधिक मास में उभय पक्ष	
१	कमला पु.
२	पुरुषोत्तमा

नोट : राशि आदि के विचार में अभिजित् नक्षत्र की गणना नहीं की जाती है। राशि चक्र में जिसका मान ९ रा. ६ अं. ४० क. से ९ राशि १० अं. ५३ क. २०वि. तक विहित है।

एकादश्यां दिने योऽन्नं भुङ्क्ते पापं भुनक्ति सः।
इह लोके च चाण्डालो मृतः प्राप्नोति दुर्गतिम्॥

प्रमुख अवस्थाएँ तीन होती है:- जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। सजग रहते हुए क्रियाशील होने को जागृत अवस्था कहते है। सोने अर्थात् गहरी निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था ही स्वप्न कहलाती है। स्वप्न कई प्रकार के होते हैं। जैसे- अच्छे फलवाले, अशुभ समय का पूर्वाभास कराने वाले, तो कुछ निष्फल भी होते है। स्वप्न का वर्णन वेद तथा ब्रह्मवैवर्त पुराणादि में भी पाया जाता है।

प्राणी जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन मनन करता है, जिन-जिन वस्तुओं को देखता है अथवा किसी घटना विशेष के विषय में सुनता है। केवल यही जन्म नहीं, अपितु विज्ञानात्मा को पूर्व जन्म-जन्मान्तरों का चिन्तन बना रहता है, उन्हीं से सम्बन्धित अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार के स्वप्न देखता है। अतःकैसा भी असम्भव(असामंजस्य) युक्त स्वप्न क्यों न हो, सब ठीक ही माना जाता है। यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्नोंका फल ठीक नहीं बैठता, फिर भी निरर्थक नहीं कहा जा सकता। स्वप्नलोक कुछ ऐसा ही है, जहाँ हमें अपनी इच्छा के विरुद्ध भी जाना पड़ता है। फ्रायड के मतानुसार स्वप्न दबी हुई इच्छाओं का प्रकाश मात्र है। विशेषतया हमारी वे इच्छाएँ जो समाज के भय से जागृत अवस्था में पूर्ण नहीं होतीं, वह स्वप्न में चरितार्थ होकर मानसिक तृप्ति देती है। काम वासनाएँ इनमें मुख्य हैं। हृदय में दबी हुई प्रत्येक वासना स्वप्न में मूर्तिमान होकर अपने अनेक करतब दिखलाती है। यह तो रही भौतिकतावादियों की बात। अध्यात्मिक ज्ञान के भण्डार भारतीय मनीषियों से लेकर साधारण जनों ने भी बहुत से ऐसे स्वप्न देखे है, जिनका सम्बन्ध भावी घटनाओं से शत-प्रतिशत सही था। ऐसे स्वप्न आज भी देखते हैं और भविष्यमें भी देखते रहेंगे। मेरे पिताजीने स्वप्नसे प्रेरणा प्राप्तकर श्रीराजधानीपंचांगकी रचना की है।

चिन्ताव्याधि समायुक्तो नर स्वप्नञ्च पश्यति।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्वेन न संशयः।।

किसी विशेष प्रकार की चिन्ता, व्याधि, रोगसे ग्रसित नर जो स्वप्न देखता है, वह सब निष्फल होता है। हे तात! इसमें संशय नहीं करना चाहिए।

जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुलः।
दिगम्वरो मुक्तकेशो न लभते स्वप्नजं फलं।।

जड़ बुद्धि वाला, मूत्र, पुरीशवेग से दबा, पीड़ित (दुःखित) किसी विशेष प्रकार के भय से व्याकुल, बाल खुले हों या अचानक वस्त्र खुल जायं अथवा निर्वस्त्र सोने वालेको स्वप्नफल नहीं मिलता है।

स्वप्न फल विचार

दृष्टवास्वप्नञ्च निद्रःलुर्यदि निद्रांप्रयाति च।
धातु विकारेणानुजं न लभेत स्वप्नजं फलम्।।
उक्तवाकाश्यपगौत्राय विपत्ति लभते ध्रुवम्।
प्रकाशयेन्न सुस्वप्नः पण्डिते काश्यपान्वये।।

अर्थात् स्वप्नदृष्टा यदि स्वप्नान्त में सो जाये या शरीरस्थ रस-रक्तादि धातुओं में किसी तरह का विकार हो तो स्वप्न निष्फल जानना चाहिए। कश्यप ऋषि गोत्रोत्पन्न द्विजमात्र से स्वप्न का वर्णन किया जाय और हृदय की बात प्रकटकर शास्त्रविहित शान्ति विधान करवा लिया जाए तो दुःस्वप्न का कुप्रभाव भी नष्ट हो जाता है। अन्य महर्षियों का मत है कि अच्छे कुलोत्पन्न वेदपाठी ब्राह्मण के आशीर्वाद से सभी पापों का क्षयः हो जाता है। अब अनुभव सिद्धि अच्छे-बुरे स्वप्नों की सूची दे रहे है:-

अच्छे स्वप्नों की सूची

१. स्वयंको खड़ी फसलके बीच देखें तो धनी होंगे। २. साथी अकेला छोड़कर चला जाय, तो नई योजना बडी कठिनाई से पूरी होती है। ३. इम्तिहान में फेल हो जायें तो सफलता मिलेगी। ४. जलती आग देखें तो समस्या पर विजय मिलेगी। ५. जलता दीपक देखना आशा पूरी करता है।

६. आग बुझाते देखें तो रिश्ता टूट जायेगा। ७. अपने घर में आग लगी देखना कार्यपूर्ति का सूचक है। धूआँ देखना महाअशुभ होता है। ८. निर्मल आकाशमें चमकीला देखना बहुत बड़ी उन्नतिका सूचक है। ९. उड़ना, दीवार पर चढ़ना, पेड़ से सहज कूद जाना आदि संकटों को आसानी से पार करना है। १०. दौड़ता हाथी देखना सुख-समृद्धि का सूचक है।

११.स्वप्न में दूसरे का चश्मा लगानेका अर्थ है, दूसरे की रायसे प्रभावित होना। काला चश्मा या टेढ़ा चश्मा लगाना गलत रायका सूचक है। १२. ऊँट देखें तो विवेक से काम लेने पर लाभ होगा। १३. दांत उखड़ना प्रेम कम होने का प्रतीक है। १४. स्वयं दांत उखाड़ें तो नया प्रेम होगा। १५. जलते चूल्हे पर रोटी बनाना शुभ समाचार का सूचक है।

१६. पर्दा लगा देखना अप्रिय जन मिलन का सूचक है। १७. स्वप्नमें बस या ट्रक चलाना देखें तो समझें कि बहुत बड़ा अवसर मिलने वाला है। १८. मिट्टी खोदना शुभ है किन्तु वह गीली न हो। १९. स्वप्नमें खोई वस्तु ढूंढना प्रेमी का प्रेम करना है। २०. वस्तु मिल जाए तो प्रेम साकार होना माना जाता है।

२१. गलीचा देखना, स्वयं या किसी अन्य को गरीबी में देखना शुभ माना गया है। २२. गाय, मधुमक्खी व मोर देखना भौतिकसमृद्धि मिलनेका सूचक है। २३. खेलमें गेंद निकट आना शुभ, दूर चली जाना अशुभ है। २४. स्वप्नमें घड़ीका टिकटिकाना बताता है कि जिस काममें आप लग रहे हैं वह व्यर्थ है। घण्टा ध्वनि किसी फैसले की सूचक है। २५. चिट्ठी का स्वप्न प्रेमसे सम्बन्ध रखता है। अविवाहिता के लिए यह अच्छा-बुरा जैसा प्रतीत हो, वैसाही फल दायक प्रतीत होता हैं। चिट्ठी पाना उत्तम, फेंक देना नेष्ट है।

२६. छज्जे से झांकना आपके किसी निकट सम्बन्धी के विवाहित प्रेम की सूचना है। कुमारी-कुमार छज्जा देखें तो शुभ है। २७. चिड़िया आत्मा या विचार की स्वरूप हैं। स्वप्नमें घायल चिड़िया देखना आन्तरिक दुःख की सूचक है। कमरे में बन्द चिड़िया दिखे तो समझो कि वायदा खिलाफी से आप बच नहीं सकते। कौआ दर्शन महाअशुभ होता है, उसे उड़ाना मुसीबत से छूट जाना है। २८. स्वप्न में चेचक निकले तो आपको धन मिलेगा, यदि दूसरों के निकली देखें तो शुभ समाचार मिलेगा। २९. खरहा, घोड़ा व सांड देखना शुभ है। घोड़े से गिरना अशुभ है। कुत्ता शुभ यदि डर जाये तो अशुभ है। शेर का दर्शन प्रबल शत्रु का सूचक है। कटघरे में शेर देखना दुश्मन से बचना है। ३०. झण्डा लहराना शत्रु पर विजय का प्रतीक है। यदि झण्डा फटा-पुराना, कीचड़से सना हो तो समस्या का सामना करना पड़ेगा।

३१. तम्बू देखें तो नया काम बनेगा, ढ़ोल बजाना स्वप्नमें देखें तो सफलता मिलेगी, लम्बी यात्रा होगी। ३२. डरना या घबराना शुभ सूचक होता है। यदि कोई स्वप्नमें आपके पीछे पड़े तो समझौता होगा। तीर चलाने पर निशाना ठीक लगे तो प्रत्येक काममें सफलता मिलेगी। ताला लगा देखें तो काम बन्द, यदि खुला हो तो नया रोजगार मिलेगा। ३३. ताश खेलना इच्छापूर्ति का सूचक है। ३४. मछली पकड़ें, किसीको पकड़ते देखें तो व्यापारिक सफलता मिलेगी। ३५. बूढ़े लोग देखना, भीख पाना और देना शुभ है। भीड़ लगी

देखना परिवार-मित्र वृद्धिकी सूचना है। भोजनयुक्त थाल शुभ, खाली हो तो अशुभ।

३६. दौड़में जीतना शुभ, हारना अशुभ किन्तु स्वप्नमें साथी साथ दौड़े तो साझीदारसे सावधान रहें। ३७. धन पाना शुभ, खोना अशुभ, चांदीके बजाय तांबेका सिक्का पाना अधिक शुभ माना गया है। ३८. अनेक वस्तुओंकी नीलामी देखना शुभ, बोली लगाना अति शुभ, वस्तु खरीदकर पश्चाताप करना घाटे का सूचक है। ३९. नंगे पांव चलना मुसीबत में पड़ना होता है, किन्तु इसे कुछ आचार्य रोग निवृत्ति मानते हैं। पानी या ओस पर चलना सफलता का प्रतीक है। पत्थर या कांटों पर चलना जोखिममें पड़ना बताता है। किसी अन्यको नंगे पांव चलता देखें तो समझिए कि वह आपकी सहायता चाहता है। ४०. प्रेम, व्यापार या इम्तिहान में फेल होना पास होनेका लक्षण है।

४१. प्राकृतिक दृश्य आकर्षक हो, धूप निकल रही हो या स्वप्नमें आप अजीब घटना देखकर आनन्दित हो रहे हों तो सुयश मिलेगा। बादल छायें देखें तो चिन्ताग्रस्त होंगे। ४२. पिंजड़े में पक्षी आपके गुण गा रहा हो तो सुयश बढ़ेगा। तोता देखना चुगली का परिचायक होता है। खुद को पिंजड़े में बन्द देखना केसमें फंसना होता है। ४३. वाद्यधुन एवं गीत सुनना पारिवारिक सुख, सारंगी धुन प्रेमका प्रतीक मानें, स्वयं बजायें तो प्रेम टूट जाएगा, ऐसा जानें। ४४. डाक्टरसे वार्तालाप रोग निवृत्तिका सूचक है। कड़वी दवा पीना रुकावट डालती है। ४५. भोजन पकाना शुभ समाचार पाना है। दूसरे के साथ खाना अच्छे सम्पर्क का प्रतीक है। भोजन न मिलना परेशानियों का परिचायक है।

४६. यदि स्वप्नमें कोई मार्ग रोके, आगे बढ़ने ही न दे तो आप मित्रोंकी बात मानकर चलें। चाँदनी रात्रिमें अवरुद्ध मार्ग घाटेकी सूचना देता है। ४७. कोई स्वयं को माला जपते देखे तो तत्काल भाग्योदय होगा। ४८. मक्खन(घी) खाने का स्वप्न आरोग्य होने का सूचक होता है। मन्दिर या मूर्ति देखना धर्म में आस्था को प्रकट करता है। ४९. स्वप्न में सड़क पर चलते हुए अच्छा-बुरा जैसा देखें वैसा ही जीवन के लिए फलदायक समझें। चौड़ी सीधी सड़क सफलता की सूचक है, टेढ़ी-मेढ़ी या दलदली असफलता बताती है। ५०. स्वप्न में कोई विदेशी भाषा बोले या सुने तो लम्बी यात्रा का सुयोग बनता है। घर से दूर उस आदमी का भाग्योदय होता है।

मृत्युसूचक दुःस्वप्न

१. अत्यन्त वृद्धा, काले शरीर वाली या नंगी स्त्रीका नाच देखना मृत्युसूचक होता है। २. जो व्यक्ति लाल, श्वेतरस अथवा विष्ठा-मूत्र की वमन होते देखे तो उसकी आयु दस महीने समझनी चाहिए। ३. खुले केश वाली शूद्रा या विधवाका लाल या श्वेतवस्त्र पहने हंसते हुए अपनी ओर आते देखना मृत्युसूचक है। ४. सिर या छाती पर ताड़ अथवा अन्य प्रकारके काले फलों का गिरना भी मृत्युसूचक होता है। ५. नंग-धड़ंग फकीर को नाचते,गाते,हंसते,अपनी ओर क्रूर दृष्टिसे निहारते हुए देखना शीघ्र मृत्यु का सूचक माना है।

६. वृक्ष की डालियाँ पर्वत-श्रृंग, सूर्य-चन्द्र मण्डल या तारे टूटते दिखाई देना परिवारमें किसी की मृत्यु का सूचक होता है। ७. काले वस्त्रोंसे अलंकृत लोहे का डंडा हाथमें लिए किसी को देखना तीन मासमें मृत्युका संदेश होता है। ८. राखके ढ़ेर या जलते दीपकके ऊपर अपने को खड़ा देखें तो आठ महीनेमें ही जीवनकाल समाप्त समझें। ९. भस्मयुक्त सूखा तालाब,जली मछली,लोहा,दावानल से जलकर सूखा खड़ा वन देखना, प्रमुख व्यक्तिकी मृत्यु तथा पारिवारिक घोर आपत्ति का कारण होता है। १०. श्रृगाल,कुक्कर,शूकर,शकुनि, राक्षस,असुर,पिशाच,भूत-प्रेत,पतंग,कुरंग अथवा श्येनपक्षीमें से किसी को खाते हुए दर्शन करना वर्षमें निश्चित यमपुरी जाना होता है। ११. हाथसे दर्पण, दण्डादि का गिरकर टूटना बहुत स्नेहीजनका यमलोक जाना होता है। १२. बन्दरकी पीठ पर सवार हो पूर्व में जाना प्रतीत हो तो पांच दिन जीवन शेष जानें और यदि गधे या भैंस की पीठ पर चढ़कर दक्षिण दिशामें जायें तो अपनी मृत्यु सन्निकट समझनी चाहिए। १३. अंगार,भस्म या रक्तकी वर्षा स्वप्नमें देखना या वानर,कौआ,कुत्ता,भालू,सूअर,गदहा,बैल,भैंस,गीध,कंक,घड़ियाल, सियार को देखना विपत्तिका सूचक है। १४. अपने शरीरमें किसीका तेल लगाना, नृत्य गीतयुक्त विवाहोत्सवको देखना कार्य की विफलता का सूचक है। १५. गलेका हार या मालाका टूटना साथीका बिछुड़ना माना गया है। काले वस्त्रयुक्त किसीको अपना आलिंगन करते देखना विपत्तिमें फंसना है। कालीप्रतिमा या आगसे जला स्थान देखना अशुभ होता है। १६. भस्म,पुञ्ज,हड्डियाँ,ताड़वृक्ष,केश,नाखून,कौड़िया, कबाइत,बुझेअंगार(कोयला),मरघटमें चिता पर रखा हुआ मुरदा, कुम्हारका चाक, तेलीका कोल्हू,अधजला काठ,कुश, तृण,मुरदेका चिल्लता हुआ मस्तक देखना महाविपत्तिका सूचक माना गया है।

१७. सर्वज्ञ मुनिवर कहते हैं कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया (बिम्ब) दक्षिण की ओर फटी दिखाई दे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दिखे तो तीन मास, उत्तर की ओर कटी दिखे तो दो मास और पूर्व की ओर कटी दिखे तो वह प्राणी एक मास जीता है। बिम्बके बीचमें छिद्र दिखें तो दस दिन आयु भोगता है, इसी प्रकार छाया यदि धूँए के वर्ण की दिखाई दे तो तत्काल (उसी दिन) मृत्यु हो जाती है।

१८. अपने नेत्रों का तारा स्वयं देखनेमें नहीं आता जिसे देखने के लिए विद्वानों ने एक सरल उपाय बताया है। **यथा-** नेत्र बन्द करके नेत्र के कोरों को किसी भी अंगुली से किंचित(मामूली) दबाओ तो जिस कोने को दबाया जायेगा उसकी विपरीत दिशामें आंखों के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योतिमण्डल दिखलाई पड़ेगा, जिसे मात्र मण्डल कहते हैं। उपरोक्त क्रिया करने पर सदैव दिखाई देता है। जब मृत्यु निकट होती है, तब दीखना बन्द हो जाता है।

१९. **मार्जार संकेत:-** रात्रिमें सोते समय किसी मनुष्यके ऊपर बिल्ली आ गिरे अथवा चांटा मारे तो छःमासान्तर्गत उसकी मृत्यु हो जाती है। २०. तिलक करने अथवा सौभाग्यके लिए प्रतिदिन दर्पण देखना चाहिए। जिस दिन दर्पणमें अपना मस्तक धड़रहित दिखाई दे, उस दिनसे पन्द्रह दिनके भीतर मृत्यु जाननी चाहिए। २१. दिनमें चमकते तारे एवं चन्द्रमाकी ज्योति और रात्रिमें धधकता सूर्य दिखाई देने लगे अथवा चन्द्रमण्डल सूर्य के समान और सूर्यमण्डल चन्द्रमण्डलके समान दिखाई दे तो मृत्यु निकट भविष्यमें शीघ्र हो जाती है। २२. जिस मनुष्यकी अंगुलियाँ चटकाने पर भी न चटकें तो उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिए। २३. कबूतर, कौआ, गिद्ध या उल्लू आदि पक्षी जिस मनुष्यके मस्तक पर मांसका टुकड़ा लेकर बैठ जायें, उसकी मृत्यु छःमासके भीतर जाननी चाहिए। २४. जिसके मस्तक की तीन रेखाएँ नष्ट हो जाएं उसकी मृत्यु तीन मासमें हो जाती है। २५. जो मनुष्य दीपक बुझने पर उसकी गन्ध अनुभव नहीं करता तथा रात्रिमें अग्निसे भयभीत हो जाए वह छःमाससे अधिक जीवित नहीं रह सकता।

२६. दाहिने हाथ की मुट्ठी बन्द करके, नाक की सीध में भौंहों के बीच लाकर कलाई को देखने पर बहुत पतली दिखाई पड़ती है, यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु से छः मास पहले ही टूटी हुई कलाई अलग दिखाई देने लगती है।

अथ विवाह संस्कार

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, वपनक्रिया(चौल), कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, विवाहाग्नि परिग्रह और अन्त्येष्टि ये सोलहसंस्कार ब्राहसंस्कार कहलाते है। इनके अतिरिक्त यज्ञानुष्ठानादि ३२ संस्कार देवसंस्कार कहलाते है। कुल मिलाकर हिन्दुओंके ४८ संस्कार धर्मशास्त्रोंमें बताये गये है। इस प्रकरणमें परिचर्चा केवल विवाहके विषयमें ही करेंगें। मनुस्मृति २/२७ में १२ संस्कारोंका उल्लेख मिलता है।

याज्ञवल्क्यादि स्मृतियोंमें विवाह ८ प्रकारके कहे है यथा- **ब्राह्मविवाह-** वर को अपने निवासस्थान पर सम्मानपूर्वक बुलाकर यथाशक्ति वस्त्राभूषणादि से अलंकृत कन्या दी जाती है। **देवविवाह-** यज्ञानुष्ठानके समय ऋत्विजको (यथाशक्ति अलंकृत करके) कन्या दी जाय वह देवविवाह कहलाता है। **आर्षविवाह-** दो गायें लेकर कन्या-वर को दी जाए वह आर्ष विवाह होता है। **प्रजापत्य विवाह-** साथ रहकर धर्मका आचरण करो। ऐसा कहकर कन्या विवाहेच्छु वरको प्रदानकी जाती है, उसे प्रजापत्य विवाह कहते हैं। **असुर विवाह-** धन लेकर कन्या दी जाय वह असुर विवाह कहलाता है। **गन्धर्वविवाह-** परस्पर प्रेम बन्धनमें जो विवाह स्वेच्छासे किया जाय। **राक्षसविवाह-** युद्धमें हरण की गई कन्यासे विवाह राक्षस कहलाता है; दूसरे आचार्य इसे विजयविवाह भी कहते है। **पैशाच विवाह-** कन्याको छलपूर्वक बहला-फुसलाकर या जबरदस्ती से किया गया विवाह पैशाच विवाह कहलाता है।

ब्राह्म, देव आर्ष और प्रजापत्य ये चार प्रकारके विवाह श्रेष्ठ विवाह कहे जाते है। श्रेष्ठ विवाहोंके लिये पंचांगमें उत्तम मुहूर्त्त लगाये जाते है। शेष पशु प्रवृत्तिके विवाह एहिलोक और परलोकमें भी निन्दनीय है। सरकारी रजिस्टर्ड विवाह गन्धर्वविवाहोंमें गिने जाते हैं। विवाहको सर्वश्रेष्ठ संस्कार माना गया है। उत्तमविवाह विधिवत् सम्पन्न होने पर जीवात्मा मनुष्यजीवनके सर्वोपरीयउद्देश्य(धर्म,अर्थ,काम) का यथावत् पालन करते हुए मोक्षको प्राप्त कर सकता है।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास चारों आश्रमोंमें गृहस्थ आश्रमका मुख्य आधार है विवाह। स्त्रीको मुख्य रूप से धर्म, अर्थ, कामकी प्रदात्री माननेके साथ-साथ सन्तानसिद्धिका मुख्य साधन तथा जीवनकी सार्थकताका सच्चास्वरूप माना गया है। समित ऽ संकल्पेथा ऽ संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। इषमूर्जमभि संवसानौ।। यजु० १२।५७।। जो स्त्री-पुरुष सर्वथा विरोध त्यागकर परस्पर प्रीतिमें तत्पर, विद्यावत् अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषणोंसे अलंकृत रहते है; वहां मंगल होता है; आरोग्य बढ़ता है और जहां विरोध होता है वहां दुःख का सागर उमड़ पड़ता है। स्त्री-पुरुष (प्रकृति-पुरुष) दोनों परस्पर अधूरे माने गये है। दोनोंके मिलनेसे ही प्रकृति कुछ करनेमें समर्थ होती है; या यों कहिए कि संसार चक्रको चलानेके लिए ईश्वरने आत्मस्वरूपके दो रूप बना दिये है। श्रीरामने द्वितीय विवाहके प्रस्तावका परित्याग करते हुए कहा था- **अर्पण जिसको वर दिया मैने आधा अंग। उसे छोड़ कैसे करुँ ब्याह किसी के संग।।** सीताका रुप धारण कर लेनेके कारण आशुतोष भगवान शंकर जी ने सतीके शरीरसे भेंट नहीं की थी, लेकिन मनसे परित्याग फिर भी नहीं किया था। विवाहके लिए समय शुद्धि का विशेष विचार किया जाता है-

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता शीलंशुभंभवति लग्न वर्षेन तस्याः।
तस्माद्विवाहसमयःपरिचिन्त्यन्ते हि सन्निहनतामुपगताः सुतशीलधर्माः।।
'राम दैवज्ञ'

आदिकालसे अनेकमहापुरुष ऋषि-महर्षि विज्ञानियोंने विवाह विषय पर गहनअध्ययन चिन्तनमनन करनेके साथ-साथ सूर्यादि ग्रहोंके शुभाशुभ प्रभावका सही आकलनकर कुछ नियम निश्चित किये है। यथा-विद्याध्ययन काल पूरा होने पर जब लड़की व लड़काकी उम्र विवाहके योग्य हो जाय अर्थात् रस रक्तादि धातुऐं परिपक्व हो जाय,यौवनके चिन्ह दिखाई देने लगें,तब माता-पिता वंशानुकूल परम्परानुसार अपने गुरु आचार्य से विचारविमर्श करके सुयोग्य वरकोटीका(वाग्दान) करें। टीका चढ़ाने से पहले वर-कन्याकी जन्मकुन्डलीमिलान सही सुयोग्य आचार्य, ज्योतिषके जानने वाले से करवा लेना चाहिए।

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाडी चैत्रे गुणाधिका:।।

आगे अष्टकूटोंके पृथक्-पृथक चक्र दिये है; जिससे पाठक आसानी से गुणोंका मिलान कर सके। राशि, स्वामी, वर्ण, योनि, गण और नाडी के ज्ञानके लिए (अ, व, क, ह, डा) चक्र जातक प्रकरण में पृष्ठ १०७ पर छपा है।

वर्णगुण बोधक चक्र (१)

वर → ↓ कन्या	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्यगुण बोधक चक्र (२)

वर → ↓ कन्या	चतुष्पाद	कीट	वनचर	द्विपाद	जलचर
चतुष्पाद	२	१	॥	०	१
कीट	१	२	१	०	१
वनचर	॥	१	२	१	१
द्विपाद	०	०	१	२	०
जलचर	१	१	१	०	२

वर्ण विचार- वर और कन्या का एक वर्ण हो अथवा कन्या से वर का वर्ण उत्तम हो तो १ गुण, हीन वर्ण वर का हो तो ० गुण होता है। समान वर्णमें १, कई आचार्य आधा गुण भी कहते हैं।

वश्य विचार- सिंहको छोड़कर सब राशियाँ नर राशिके वश्य होती हैं; और जलचर राशि भक्ष्य है, तथा वृश्चिकको छोड़कर सभी राशियां सिंहके वश में हैं। अतः अन्य राशियोंके वश्यावश्यको निजी अनुभवसे समझना चाहिए।

तारागुण विचारणीय चक्र (३)

वर → ↓ कन्या			अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पुन	पु	आ
			म	पूफा	उफा	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये
			मू	पूषा	उषा	श्रव	ध	श	पूभा	उभा	रेव
अ	म	मू	३	३	१ १/२	३	१ १/२	३	१ १/२	३	३
भ	पूफा	पूषा	३	३	१ १/२	३	१ १/२	३	१ १/२	३	३
कृ	उफा	उषा	१ १/२	१ १/२	०	१ १/२	०	१ १/२	०	१ १/२	१ १/२
रो	हस्त	श्रव	३	३	१ १/२	३	१ १/२	३	१ १/२	३	३
मृ	चि.	ध.	१ १/२	१ १/२	०	१ १/२	०	१ १/२	०	१ १/२	१ १/२
आ	स्वा	श	३	३	१ १/२	३	१ १/२	३	१ १/२	३	३
पुन	वि	पूभा	१ १/२	१ १/२	०	१ १/२	०	१ १/२	०	१ १/२	१ १/२
पु	अनु	उभा	३	३	१ १/२	३	१ १/२	३	१ १/२	३	३
आ	ज्ये	रेव	३	३	१ १/२	३	१ १/२	३	१ १/२	३	३

ताराविचार- कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्र तक और वरके नक्षत्रसे कन्याके नक्षत्र तक (अभिजित् रहित) गिने, उसमें ९ का भाग देने से १ बचे तो तारानाम 'जन्म' का फल शुभ जानें, इसी प्रकार आगे समझें। यथा- २ शेषमें सम्पत्, ३ में विपत्, ४ में क्षेम, ५ में प्रत्यरि, ६ में साधक, ७ में वध, ८ में मित्र और ० शेषमें तारा नाम 'परममित्र' होता है। विपत्, प्रत्यरि और वध अशुभ फलदायक माने गये हैं। **दुष्ट तारा शान्ति हेतु-** पूर्वाचार्योंने इस प्रकार लिखा है, प्रत्यरि तारामें लवण(नमक) दान, जन्ममें शाक ऋतुफल, विपतमें गुड और वध तारामें तिल, सुवर्णका दान करने से शान्ति होती है।

तारापवाद- पर्याय प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः।
द्वितीये त्वशंका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः॥
आद्यांशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरणोऽशुभः।
वधस्त्याज्यस्तृतीयांशः शेषा अंशास्तु शोभनाः॥

❀ अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम् ❀

कर्ता के जन्मनक्षत्र से कार्य दिन (दैनिक चान्द्र) नक्षत्र तक गिनें, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभाशुभ फल समझें।

11019	21120	31221	41322	51423	01524	71625	81726	91827
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

तारागुणज्ञानम्- एक से शुभ तथा दूसरे से अशुभ हो तो डेढ गुण दोनोंसे शुभ हो तो ३ गुण और यदि दोनोंसे अशुभ हो तो ० गुण समझना चाहिए। नोट- अन्य सभी शुभ कर्मोंमें भी शुभाशुभ तारा का विचार किया जाता है।

योनि विचार- अश्व-महिषमें परस्पर महावैर रहता है। ऐसे ही घोड़ा भैसमें, सिंह-हाथीमें, मेढा-वानरमें, नेवला-सर्प में, मृग-श्वान में, मार्ज़ार-मूषक में और व्याघ्र-गौ में वैर जानना। परस्पर महावैर में ० सामान्य वैर में १, सम में २, मैत्री में ३, अतिमैत्री में ४ गुण ग्राह्य होते है।

योनिगुण बोधक चक्र (४)

वर → / ↓ कन्या	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	२	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	१	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	२	२	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गौ	२	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	३
मृग	३	३	३	२	०	३	३	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

राशीशमैत्री गुण चक्र (५)

वर → / ↓ कन्या	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	½	½
मंगल	५	४	५	½	५	३	½
बुध	४	१	½	५	½	५	४
गुरु	५	४	५	½	५	½	३
शुक्र	०	½	३	५	½	५	५
शनि	०	½	½	४	३	५	५

ग्रहमैत्रीविचार- वर-कन्याकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह हो अथवा राशियोंके स्वामियों में परस्पर मैत्री हो तो ५ गुण, सममित्रतामें ४ गुण, समतामें ३ गुण, मित्र शत्रुत्व में १, सम शत्रुत्व में आधा, परस्पर शत्रु होने पर ० गुण माना गया है। मित्रादि होने पर भी नीच परिस्थितिमें होने से १ गुण कम करके ग्रहण किया जाता है।

गणगुण चक्र (६)

वर → / ↓ कन्या	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

नाडीगुण चक्र (८)

वर → / ↓ कन्या	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

गणकूटविचार- परस्पर समान गुण में ६ गुण, देव-नर में ५, देव-राक्षस में ० (कोई आचार्य १ गुण कहते हैं) नर-राक्षसमें ० गुण होता है। **गणदोषविचार-** राशियोंमें मैत्री हो अथवा अंशके स्वामीमें मैत्री हो तो गणादि दुष्ट (दोष) रहने पर भी विवाह (पुत्र पौत्रादि को बढ़ाने वाला) शुभ होता है। **राशिकूट-** वर-कन्याकी राशियां परस्पर गिनने पर ६।८ हो तो मृत्युभय ९।५ हो तो सन्तान हानि और यदि २।१२ होंतो दरिद्रताकी प्रतीक मानी जाती है। **यथा-मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे। द्विर्द्वादशे दरिद्रत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत्॥** लेकिन ऐसी बात नहीं है ६।८ राशियाँ भी परस्पर शुभ होती है जैसे- मेष-वृश्चिक, मिथुन-मकर इत्यादि। **दुष्टभकूटपरिहार-** वर-कन्याकी राशियों के स्वामी एक ही ग्रह हों अथवा दोनों राशियों में मैत्रीत्व हो और नाडी नक्षत्र शुद्ध रहे तो दुष्ट भकूट में भी विवाह शुभ होता है। यथा-

एकाधिपत्ये राशीशमैत्र्यां दुष्टभकूटके।
नाडी नक्षत्रशुद्धिश्चेद्विवाहः शुभदस्तदा॥

भकूटगुण चक्र (४)

वर → / ↓ कन्या	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाडी विचार- वर-कन्या की एकं नाडी हो तो विवाह अशुभ होता है। मध्य नाडीमें महाअशुभ मृत्युप्रद माना गया है। एक नाडी में ० गुण और भिन्न नाडी में ८ गुण माने जाते हैं। वर्णभेद से दोष भी अलग-अलग मान्य है। जैसे-

नाडीदोषोऽस्ति विप्राणां वर्णदोषोऽस्ति भूभुजाम्।
वैश्यानां गणदोषः स्यात् शूद्राणां योनिदूषणम्।।

ब्राह्मणोंको नाडी दोष, क्षत्रियोंको वर्ण दोष, वैश्योंको गण दोष और शूद्रोंको योनि दोष विशेषकर वर्जित है। एक नाडी होने पर दोनोंमें से एक की मृत्यु होगी ऐसा भय प्रदर्शित कर दिया जाता है; जबकि यह नियम केवल ब्राह्मणों पर ही लागू होता है। परिहार वाक्यभी मिलते हैं। यथा-

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाडीदोषो नो गणानां न दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।।

वर-कन्या की एक राशि हो और नक्षत्र-भिन्न-भिन्न हो अथवा नक्षत्र एक और राशियां अलग-अलग हों तो नाडी दोष और गणदोष नहीं होता है। अतः एक नक्षत्रमें चरण भेद से शुभ माना गया है।

नाडीपरिहार- रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवणरेवती। अहिर्बुध्न्यर्क्षमितेषां नाडीदोषो न विद्यते। शुक्रेजीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वयो यदि। नाडीदोषो न वक्तव्य सर्वथा यत्नतो बुधैः।। **वर्णपहिार-** हीनवर्णो यदाराशीराशीशो वर्ण उत्तमः। तदाराशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिनैव चिन्तयेत्।। **योनिपरिहार-** सति सद्राशिकेऽपि योनिवैरं न दोषकृत्। यदि स्यादबला योनिः पुंसो योनिर्बलो। **गणपरिहार-** सद्भकूटयोनि शुद्धिः ग्रहसंख्य गुणत्रयम्। एष्वेकतमसदभ वे नारीरक्षोगणा शुभा।। **ज्येष्ठनक्षत्रापवाद-** एकराशौ पृथकधिष्णे एकर्क्षे भिन्नराशिगः। एकाधिपत्ये मैत्रेवा द्वितीयं स्वामिशुभम्। एकराशौ पृथक्धिष्ण्ये अन्त्यांत्यौ चरणौ यदा। अतीव शोभनः प्रोक्तो द्वितीयस्थो न दोषकृत्।। अन्यान्यविषय वाक्यानां पंचाँगराजथानौ विलोक्यन्ताम्।

लग्ने विश्वादाग्रहाः

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	२	३	१	१	१	३	३
६	३	६	२	२	२	६	६
११	११	११	३	३	३	११	११
			४	४	४		
			५	५	५		
			६	६	९		
			९	९	१०		
			१०	१०	११		
			११	११			

विवाह लग्न के इष्ट ग्रह

बु.शु.गु.चं.
राके रमबुचगु श
बु.शु.गु.
सर्व.
बु.शु.गु.
बु.शु.गु.
बु.शु.गु.
बु.शु.गु.
श.मं. गु.रा.के.बु.सू.
र.श.रा.के.

विवाह लग्न के नेष्ट ग्रह

चं.
श.
शु.
पापग्रह
रा
मं.
सर्वग्रह
च.शु.ले
मंशुभग्रच.

राशियों के परस्पर शुभाशुभ योग

शुभ नव-पंचम		मध्यम नव-पंचम		श्रेष्ठ द्विर्द्वादश		अशुभ द्विर्द्वादश		प्रीति षडाष्टक		शत्रु षडाष्टक		अशुभ केन्द्र	
९	५	९	५	२	१२	२	१२	६	८	६	८	४	१०
मेष	सिंह	कुम्भ	मिथुन	मेष	मीन	तुला	वृश्चिक	मेष	वृश्चिक	वृष	धनु	मेष	कर्क
वृष	कन्या	मीन	कर्क	वृष	मिथुन	धनु	मकर	मिथुन	मकर	कर्क	कुम्भ	वृष	सिंह
मिथुन	तुला	कर्क	वृश्चिक	कर्क	सिंह	कुम्भ	मीन	सिंह	मीन	कन्या	मेष	कर्क	तुला
सिंह	धनु	कन्या	मकर	कन्या	तुला	मेष	वृष	तुला	वृष	वृश्चिक	मिथुन	कन्या	धनु
तुला	कुम्भ	अशुभ		वृश्चिक	धनु	मिथुन	कर्क	धनु	कर्क	मकर	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ
वृश्चिक	मीन	सम-सप्तक		मकर	कुम्भ			कुम्भ	कन्या	मीन	तुला	मकर	कर्क
धनु	मेष	कर्क	मकर	अपवाद								मीन	मिथुन
मकर	वृष	सिंह	कुम्भ	सिंह	कन्या								

टिप्पणी- तृतीय एकादश सम्बन्ध किन्हीं भी राशियोंका शुभ ही होता है, किन्तु सम-सप्तक (राशि-प्रतियोग) तथा केन्द्र (चतुर्थ-दशम) सम्बन्ध उपर्युक्त अशुभ समसप्तक तथा अशुभ केन्द्र की राशियोंके अलावा शेष राशियोंका ही शुभ होता है।

वर्गकूट- ज्योतिषानुसार हिन्दी देवनागरी लिपिके स्वर तथा व्यंजनों को अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग इत्यादि आठ वर्गोंमें बांटा गया है। स्वामी आदि का ज्ञान वर्गचक्र से प्राप्त करें। अपने से पांचवाँवर्ग शत्रु का, चौथा मित्र तथा तीसरा उदासीन होता है। वर-कन्याके नामका प्रथम अक्षर यदि एक वर्ग में हो तो अत्यन्तप्रीति होती है। मित्र वर्गमें उत्तमप्रीति, उदासीनमें बहुत कम प्रीति होती है। परस्पर शत्रु वर्गमें हानि जाननी चाहिए।

नोट- उपरोक्त चक्रांकित राशियों के परस्पर शुभ योग ९,५,२, १२, ६,८ एक दूसरी राशि के अनुकूल ही शुभ होती है। अशुभ केन्द्र गत ४।१० वीं राशियां सीधे हाथ की ओर लिखी गई हैं।

न वर्ग वर्णो गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा राशीशमैत्री शुभदो विवाहे।।

वर्ग, वर्ण, गण, योनि, अशुभ द्विर्द्वादश, षडाष्टक योग राशि, तारा विरुद्ध और परस्पर अशुभ नव-पंचम राशियोंके विवाह भी शुभ होते हैं; अगर राशियोंके स्वामी ग्रह परस्पर एक दूसरे के मित्र हों तो।

वर-कन्या के ग्रह मिलते है या नही?

उत्तर देने से पहले जन्माङ्ग चक्रमें पड़े ग्रहोंका अच्छी प्रकार चिन्तन करना चाहिए। जातकग्रन्थोंमें दोनोंके लिए ग्रहोंका समान फल है।

कुण्डली में बनने वाले वैधव्य विषाख्य योग

लग्नाच्चन्द्रादन्यमतः पापाः सप्तमेऽष्टमे वा विधवा।। भौमराहौ सप्तमेऽष्टमे व्यये वा विधवा।। द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्त्ता।। द्यूनेऽङ्के पापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्दे विधवा।। लग्नेन्दू पापान्तरगौ शुभैरदृष्टौ कुलद्वयघ्नी। षष्टेऽष्टमे पापाः चन्द्रेऽष्टमाब्दे रण्डा। सप्तमे रन्ध्रेशे पापदृष्टे नवोढा रण्डा। षष्टाष्टमेशो षष्ठगतौ व्यये पापास्तेनापि विधवा। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा।। कुजेऽष्टमे कुलटा मन्देऽष्टमे पतिरोगवती। सूर्येऽष्टमे पापयुक्ता भवति।। रन्ध्रे राहौ कुलद्वयघ्नी। लग्नतुर्याष्टमान्त्य संस्थाः पापास्तदा पतिं त्यक्त्वा परासक्ता च भवति।। सप्तमेशोऽष्टमे यस्य सप्तमे निधनाधिपः। पापग्रययुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्ताष्टमपतौ षष्ठे व्यये वा पाप पीडितौ। तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः।। निशाकरात् सप्तमभाव-संस्था महीजमंदागुदिवाकराश्चेत्। तनोऽरिभे जन्मनि नैधने वा दिशन्ति वैधव्यमलं मदेवः।।

दोनों के लिये मंगली दोष- लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्याभर्तुः विनाशाय भर्ता पत्नीविनाशकृत्।। इदं लग्नेन्दुभ्यां विचार्यम्।।

विषाख्य योग

मन्दाश्लेषाद्वितीयायां जाता विषाख्या। सूर्यवारुणद्वादश्यां जाता विषाख्या।। कुज विशाखा सप्तम्यां जाता विषाख्या। पापेगेसशुभ पापावारगौ जाता विषाख्यां। पुत्रेऽर्के मन्देऽङ्के भौमेऽङ्के विषाख्या।। इन पांचों योगोंमें जन्म लेने वाले विषाख्या कहलाते हैं। अर्थात् किसी न किसी प्रकारसे असत्कर्म करके निन्दाके पात्र बनते हैं।

पत्नी विनाशक योग

शुक्रः खलांतरगतः सखला सिताद्वा पापाः सुखास्तमृतिगा रमणीहराः स्युः। जायाधीशः कुटुम्बाधिपतिरपि युतश्चेत्त्रिके गर्हिताख्यैर्यावदभिशुक्रयुक्तैर्नियतमिह भवेत्तावतीनां विरामः।। बुधशुक्रौर्द्यूनस्थौ पत्नीहीनो जायते विपुत्रश्च पापे नोदयगे रवौ। रविसुते मीनस्थिते दारहा पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेर्यच्छति।।

कौन सा ग्रह किस ग्रहके प्रभावको नष्ट कर देता है?

लग्नाद्व्ययेर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूनस्थितौ हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च।। भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्र पौत्रदः।। जामित्रे च यदा सौरिर्लग्नेवाहिंयुतेऽथवा।। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।शनिभौमोऽथवा। कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।। अजे लग्ने व्यये चापि पाताले वृश्चिके स्थिते। वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते। सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपि वाऽथवा भौमे। वक्रिणिनीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः।। केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा।।

मंगल अमंगल ही नहीं शुभकर्ता भी है- भूदेव द्विजमात्र विद्वानोंको पक्षपातरहित बुद्धि से विचार करना चाहिए। क्या मंगल कुण्डलीके १।४।७।८।१२ स्थानमें होने पर अशुभ फल ही करता है अगर यह सुनिश्चित होता तो पूर्वाचार्य अजे लग्ने व्यये चापे....... कदापि न लिखते अर्थात् मेष का मंगल लग्नमें, धनुका बारहवें भाव में, वृश्चिकका चौथे घर में, वृषका सातवें घरमें और कुम्भका अष्टम भावमें हो तो दोष नहीं होता है। मकर, मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशिके मंगलको शुभ माना है तथा केन्द्र त्रिकोणपति होने से कर्क, सिंह लग्नमें मंगल को योग कारक माना है। 'सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः।' महर्षि पराशरजीके वचनानुसार ५।९ का स्वामी होने पर मंगल ग्रह अशुभ फलदायक नहीं होता है। अन्य आचार्यों के मतानुसार परस्पर वर-कन्याकी कुण्डलियोंमें भौम एक-दूसरेके तुल्य हो अथवा उक्त स्थानोंमें शनि पड़ा हो अथवा गुरु ग्रह का शुभ प्रभाव हो तोमंगल दोषके साथ-साथ अन्य अशुभ ग्रहोंका दुष्प्रभावभी नष्ट होता है।

अथ ग्रह मेलापक विचार- वरस्य लग्नशुक्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेषु पापग्रहा अशुभकराः। चन्द्रतोऽपि सप्तमस्थानस्य पापखेचरोऽनिष्ट सूचक एव।। कन्याया लग्न-चन्द्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेष्वस्थिता पापखेचरा अनिष्टदाः। उक्तस्थानेषु कन्यापापग्रहापेक्षया वरक्रूरग्रहा अधिका अपि न दोषावहाः।। जन्मांगचक्रे सूर्यात् ९ पिता, भौमात् ३ भ्राता, चन्द्रात् ७ पतिः एवं कन्यायाः सप्तमेषशुक्रादि सौम्यग्रहाणां शुभस्थानस्थित्यादिना सौभाग्ययोगश्च विचार्यः।

कुण्डली के द्वितीयभाव में चन्द्र, शुक्र स्थित हो, मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तथा केन्द्रगत राहु भौम की युति हो तो मंगली दोष नहीं होता ऐसा 'मुहूर्त्त दीपक' में लिखा है, साथ ही यह भी कहा है कि केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह ३।६।११वें भाव में स्वग्रही सप्तमेश भौमदोष को नष्ट करता है तथा राशीश की मित्रता, गण की ऐक्यता और मेलापक चक्र में गुणों की बाहुल्यता होने पर मंगली दोष नहीं होता- न मंगली चन्द्रभृगुद्वितीये न मंगली पश्यति यस्य जीवः। न मंगली केन्द्रगते च राहु न मंगली मंगलराहुयोगे। केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदन-पस्तथा। राशिमैत्र यदायाति गणैक्य वा यदा भवेत्। अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

टिप्पणी- जन्मकुण्डली सूक्ष्म दृश्य (कम्प्यूटर) गणित से बनी होनी चाहिए। आपके करकमलों में ग्राह्य श्री राजधानी पंचांग का प्रकाशन वि. सम्वत् २०३९ से हम करते आ रहे हैं; जिसकी लोकप्रियता से पाठक परिचित हैं। हमारे यहां शुद्ध गणित से जन्मपत्र बनाये जाते हैं। योगों का निर्णय चलित चक्र से करके फल लिख दिया जाता है।

किसी की कुण्डली में एक से अधिक कुयोगों द्वारा प्रबल वैधव्य योग जान पड़ें तथा किसी भी प्रकार से परिहार न होता हो तो उसका विवाह सविधि (गोदान, वस्त्राभूषण, दानजप, पूजन, यज्ञानुष्ठान) शालिग्राम से, पिप्पलवृक्ष से, अर्कवृक्ष से अथवा कुम्भ से करके पुनः सुयोग्य वर से विवाह करने पर कन्या सौभाग्य सम्पन्न पुत्र, धन से युक्त होती है ऐसा श्री रामाचार्य ने लिखा है- जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतम्, सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुताया दद्यादिमा वा रहः। सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटे कृत्वा विवाहं स्फुटम्, दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः।।

आगे अष्ट कूटों के संयोग से निर्मित वर-कन्या गुण मेलापक सारिणी अंकित है। गुण योग १८ से अल्प हो तो अशुभ, अधिक हो तो शुभ और यदि २७ से अधिक हों तो अत्यन्त शुभ जानें। अर्धाधिक्य गुण मिलने पर यदि कोई दोष रहे तो उसका परिहार्य भी उसीमें होजाता है-

> अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत् शुभोऽष्टादशतोधिकः।
> शुभोऽतिगुणयोगश्चेत्सप्त विंशतितोऽधिकः।।

राशि की प्रधानता-

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्। कांकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूतेज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।। विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहज बलम्।। नामभात् चिन्तयेत् सर्वजन्म न ज्ञायते यदा। विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्।। कुर्यात्षोडश-कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। अर्थात् विवाह, यात्रा, ग्रह गोचर अन्य मंगल कार्य (षोडश) संस्कारविषये जन्मराशि की प्रधानता मानी गई है। यदि लड़का-लड़की की जन्मराशि ज्ञात न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम नक्षत्र से विचार करना चाहिए। एक का जन्म तथा दूसरे का प्रसिद्ध नाम ऐसा कदापि न लें, अन्यथा दाम्पत्य जीवन में निर्धनता बढ़ती है यथा- जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निर्धनप्रदम्।।

क्या कन्या का नाम बदला जा सकता है?- यह प्रश्न बहुत ही गम्भीर विचारणीय है। कुछ पंचांगोंमें यह लिखा मिलता है कि वर-कन्या की जन्मकुण्डली न हो तथा प्रसिद्ध नामोंका मिलान ठीक न बैठता हो तो कन्याका नाम बदलकर विवाह कर दें। ऐसा नाम रखें जहां गुण ज्यादा मिलते हों; वर का नाम नहीं बदलना चाहिए तो क्यों? इसका उत्तर उनके पास कुछ नहीं है। शास्त्रानभिज्ञ धूर्तों की अपनी कोरी कल्पना है। ज्योतिष के किसी भी ग्रंथ में ऐसा आदेश नहीं है। इस सन्दर्भ में केवल यह कहा जा सकता है कि स्त्री के प्रति उनका घोर अन्याय है। स्त्री-पुरुष का जीवन मेरे विचार से समान उपयोगी है। गृहलक्ष्मी के चले जाने या अपंग हो जाने के दुःख को तो भुक्तभोगी ही जानता है, अन्य कोई उसका अनुमान नहीं कर सकता। हिन्दू धर्म शास्त्रों में तो जननी को देवी मानकर पूजा जाता है।

> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।
> सन्तुष्टोभार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
> यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या ↓	वर →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण →		४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
	↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
मेष	४	अ.	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ –४	२२॥ –४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३५	११ ३६	९ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ –२	२२॥	१८॥ –६	२५॥ –६	१४ ३६	१३॥ ३५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२४॥ +४	२६॥ +४	अ.
	४	भ.	३४	२८ ३	२९ ०१	११ ०४१	२१॥ –४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५–	१८ ३५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२१॥ –२	१७॥ –१६	१७॥ ३६	१९॥ –१६	२० –१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० –१	२४ –२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	२६॥ +४	भ.
	१	कृ.	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	२०॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ –६	२५॥ –६	२४॥ +५	१८ १२५	१२ ३२५	१३॥ १३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४	कृ.
वृष	३	कृ.	१८॥ –४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० ०१३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ –६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृ.
	४	रो.	२३॥ –४	२३॥ ४	११ ३४२	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५–	१९ १६	१५॥ ३६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५–	२४॥ –१	२४॥ –१	३०॥	२७	२७	१९ ३	रो.
	२	मृ.	२३॥ –४	१४॥ ३४	१८॥ –४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ –६	१८॥ –६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७	मृ.
मिथुन	२	मृ.	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ –४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० –२६	२३॥ –६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥	मृ.
	४	आ.	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० –४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२७ –१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ –६	२३ –६	१७॥ –१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥	आ.
	३	पुन.	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४–	२२॥ ०४	१७ –४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ –६	२३ –६	१७॥ –६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥	पुन.
कर्क	१	पुन	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ –६	२१ –६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५	पुन
	४	पुष्य	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ –५	१८ ३५	२१ –५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ –२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	पुष्य
	४	श्ले.	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० –५	२६ –५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५–	२१ १५	१३ ३५	श्ले.
सिंह	४	मघा	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ –२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६–	१९॥ १६–	१३ ३६	मघा
	४	पूफा	२६ +५	१८ ३५	२० १५–	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ –२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० –१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ –१	२३॥ ३	२५॥ –१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ –६	१७॥ ३६	२५॥ –६	पूफा
	१	उफा	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५–	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४–	२७॥ –१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ –१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ –६	२५॥ –६	उफा
कन्या	३	उफा	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२६–	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ –६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥	उफा
	४	हस्त	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥	हस्त
	२	चि.	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ –६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥	चि.
		नक्षत्र →	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

वर्णवश्य आदि के संयोगसे निर्मित यह गुण-दोष मेलापक सारणी है। जिसमें ऊपरकी पंक्तिमें वर के नक्षत्र, तिरछीपंक्ति खडी लाइनमें कन्याके नक्षत्र लिखे है, सम्पात कोष्ठकोंके ऊपरी भागमें गुण, संख्या तथा नीचे महादोषोंके चिन्ह दिए है। चिन्होंका अभिप्राय है, एकनाड़ी दोषकी जगह (३) गण महादोष (मनुष्य राक्षस)के स्थानमें (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) मे (६), नवपंचममें (५), द्विर्द्वादशमें (४), वैर योनिमें (२), लिखे है

प्रस्तुत है संशोधित परिवर्धित गुण मेलापक सारणी

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

भाग २

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या ↓		वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
		चरण →	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
	↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	चि.
तुला	२	चि.	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२२ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६	स्वा.
	४	स्वा.	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ —६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६	वि.
	३	वि.	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ --६	१९॥ +५	२० १५	२२ +५	२२	२२	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६	वि.
वृश्चिक	१	वि.	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ —५	१८ —५	१५॥ —५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	अनु.
	४	अनु.	२४॥ —६	१५॥ ३६	१९॥ —६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ —५	१८ ३५	२१ —५	२४॥	२०॥ ३	२१॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	ज्ये.
	४	ज्ये.	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ —६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३६६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ —५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४	२९॥ ४	१८॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	मूल.
धनु	४	मूल.	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ २४+	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥	पूषा.
	४	पूषा.	२६ +५	१८ ३५	१८ —२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ —१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४—	१५॥ ३४	१७॥ १४—	२८ +२	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१	उषा.
	१	उषा.	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	१६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ —१४	२६॥ —१	३४	२८ ३	२६॥ ३४	२४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३	उषा.
मकर	३	उषा.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ —६	२२ —६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२२ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ —१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ ४+	३०॥	३०॥	२२॥ ३	श्र.
	४	श्र.	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ —६	२२ —६	२२ —६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३	ध.
	२	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ —६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३६१	१६ ६१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध.
कुम्भ	२	ध.	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० —५	२४॥ —५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२	शत
	४	शत	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४	पूभा.
	३	पूभा.	१८ ३	२५ +२	२० —१	२४॥ —१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५+	२६ +५	२० —१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० —१४	२८॥ —१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२	पूभा.
मीन	१	पूभा.	२४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ —१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ —१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	२२॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५—	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२	उभा.
	४	उभा.	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ —१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ —१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	३॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२२ —१५	२४ —१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०	रेव.
	४	रेव.	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ —२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	
		नक्षत्र →	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहां (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह है वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है, और जिस जगह वरके नक्षत्रसे पूर्व वधू का नक्षत्र है (इसका भी महादोष है) वहां ० शून्य का चिन्ह है और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखे है। जैसे अश्विनी वर का नक्षत्र और भरणी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में केवल ३४ गुण ही लिखे है।

प्रस्तुत है संशोधित परिवर्धित गुण मेलापक सारणी

वरस्य भास्करबलम् कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत्।।

वर को सूर्यबल, कन्या को गुरुबल तथा दोनोंका चन्द्रबल देखना चाहिए। उपनयनमें लड़केकी राशिसे गुरु और चन्द्रबल देखा जाता है। अन्य सभी कार्योंमें केवल चन्द्रबलकी प्रधानता है।

❀ त्रिबल शुद्धिचक्रम् ❀

	श्रेष्ठ	पूजा से शुभ	नेष्ट
राशि से सूर्य	३।६।१०।११	१।२।५।७।९	४।८।१२ अशुभ जानें
राशि से गुरु	२।५।७।९।११ वां	१।३।६।१०	उच्च, मित्र, स्वग्रही गुरु,४।८।१२वां भी ग्राह्य माना गया है।
राशि से चन्द्र	३।६।७।१० ११ वां	१।२।५।९ १२ वां	४,८वांनेष्टनोट-शुक्ल पक्ष में२।५।९ वां तथा कृष्णपक्षमें १२वां चन्द्र ग्राह्य माना है।

द्वादशचन्द्रोग्राह्य-

पाणिग्रहे स्त्री सुरतोऽभिषेके यात्रान्नप्राशे व्रतबन्धने च।
व्रतोपवासादिषु गर्ग पूर्वैः प्रोक्तः शुभो द्वादशगो हिमांशुः।।

विशेष- गुरु व-सूर्य स्वोच्च, स्वमित्र, स्वराशि, स्वनवांश वर्गोत्तमे ४।८।१२वें नेष्ट स्थान में होने पर भी शुभ माने जाते है।

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।
रिःफाष्टतुर्यगोऽप्यष्टनीचराशिस्थः शुभोऽप्यसत्।। रामदैवज्ञ

गुरु-सूर्य नीच या शत्रु राशिस्थ हों तो शुभ होने पर भी अशुभ फलप्रद होते हैं। सूर्य के लिए परिहार वाक्य- **'दैवज्ञ कल्पद्रुम'-**

स्वोच्चे स्वमित्रे सदने स्वगृहे स्ववर्गे। स्वांशे ततश्च निधनव्ययतुर्यगोऽपि। श्रेयस्तनोति अरिनीचगतोऽप्यनिष्टम्।तुल्यं फलं निगदितं रविजीवयोश्च।।

तुला राशि वालों के लिए २,५,९वें सूर्य शुभ फलप्रद होते है, पूजा की आवश्यकता नहीं। यथा प्रमाण-

धर्मधीधनगतो दिवाकरतौलिराशिजनितस्य शोभनः।

अन्य राशि वालों के लिए २,५,९वें सूर्य १३ अंश बीतने पर शुभ होते है। अर्थात् पूज्य नहीं होते। यथा-

भृग्वंगिऽरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति।
द्वितीयपंचांगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः।।

त्रिज्येष्ठ विचार-

प्रथम गर्भ वाले लड़का-लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होना चाहिए क्योंकि त्रिज्येष्ठ का दोष होता है। एक ज्येष्ठ का विवाह ज्येष्ठ में मध्यम लिखा है। अतएव सूर्यको कृतिका नक्षत्र भोगने (२५ मई) के बाद विवाह करने में हानि नहीं होती है।

काल उत्तरोत्तर बली कैसे मान्य होता है?

कार्य सुसम्पादन के लिए सब प्रकार से समय अनुकूल नहीं हो सकता है। अतएव अधिकांश शुभ (सुयोग) मिलते हों तो कार्यारम्भ कर लेना चाहिए। अथार्ष वचन-

अयोगश्च सुयोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र सुयोगश्च प्रवर्तते।।

शुभाशुभ फल देने में समय के पांच अंग- वर्ष, मास, दिन(तिथि), लग्न और मुहूर्त्त उत्तरोत्तर बली माने गये है अर्थात् वर्ष अशुभ हो तो वह मास की शुद्धि से शुद्ध होता है एवं तिथि(दिन) की शुद्धि से अशुद्ध मास व वर्ष भी शुद्ध हो जाते है, और लग्न व मुहूर्त्त शुद्ध संशोधन होने पर दिन, मास तथा वर्ष भी शुद्ध माने जाते हैं। इसलिए पूर्वाचार्यो ने कहा है- **'सर्वे दोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।'**

लग्न के विषय में बहुत कुछ जातक प्रकरण में लिखा है। अभीष्ट लग्न कर्त्ता की राशि से ३।६।१०।११वीं हो तो अति उत्तम, ४।८।१२ नेष्ट तथा बाकी लग्न की राशियां मध्यम मानी गई है।

मुहूर्त्तो घटिकाद्वयम्- प्रत्येक मुहूर्त २ घटी बराबर ४८ मिनट का मान्य होता है। लग्न मुहूर्त से ७।८।१२वां स्थान ग्रह रहित हो, लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो और चन्द्रमा लग्न से ३।६।१०।११वें भाव में हो तो कार्य की सिद्धि होती है। यह नियम विवाह (कन्यादान समय) पर लागू नहीं होता क्योंकि विवाह में विहित लग्न इष्टग्रह रेखा (अधिक) तथा जायाभाव शुद्धि पर आधारित होती है। शास्त्र के मर्म को न समझने वाले द्विज वितण्डावाद में अधिक रुचि लेते है।

साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त- १ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तीज), ३ आश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी), ४ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (गुजराती नववर्षारम्भ) ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त कहलाते है। इनमें चौथा अर्धबली होने से इनको साढ़े तीन मुहूर्त्त कहते है। इनमें कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है; पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं। देव **प्रबोधिनी एकादशी** और **फुलेरा दौज** भी अनबूझ मुहूर्तों में माने जाते है। बड़ी ही श्रद्धा के साथ पूर्वज इन मुहूर्तों को अपनाते आये है तथा शतप्रतिशत सफल भी होते देखे गये है।

शुभकार्य में त्यागने योग्य- व्यतिपात, वैधृति, अमावस्या, संक्रांति, तिथिक्षय, भद्रामुख, कृष्णाष्टमी, चतुर्दशी, जन्मनक्षत्र, ग्रहणनक्षत्र, क्षय, तथा मलमास, गुरु-शुक्रास्त का समय सिंह के गुरुवर्षारम्भ चार मास, तेरह दिन का पक्ष, ४।९।१४ तिथि, पापवार,अशुभ योग, ग्रहणभात, श्राद्ध दिन तथा अन्य दुर्दिन त्यागकर स्त्रोत-स्मार्त कर्म करने चाहिए।

रवियोग- का स्पष्ट उल्लेख पाठकोंकी सुविधा के लिये अन्ययोगोंके साथ कर दिया जाता है। रवियोग त्रयोदश(चर,क्रकच,दग्धा तिथि व नक्षत्र, मृत्युदातिथि, उत्पात, मृत्यु, काण, कुलिंग, यमदृष्ट, यमघण्ट, मूसल, वज्र) कुयोगों का नाशक माना गया है। मुहूर्त्त निश्चित करते समय अन्य शास्त्रोक्त परिहार्य वचनों पर भी ध्यान देना युक्तियुक्त है यथा- **विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतिपातश्च वैधृतिः। प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्यान्हात्परतः शुभम्।।** वचन विशेष से भद्रा व्यतिपात, वैधृति, जन्मनक्षत्रादि विविध दोष दोपहर बाद न्यून होते हैं।

नौमी तिथि मधुमास पुनीता। सुकल पक्ष अभिजित् हरिप्रीता।
मध्य दिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक विश्रामा।।

जो भगवान हरि को अत्यन्त प्रिय है; जिसमें काल भी लोकोपकारार्थ कुछ क्षण के लिये विश्राम करता है। इसी अभिजिन्मुहूर्त्त नौमी तिथि चैत्र मास में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अवतरित हुये थे। अभिजित् मुहूर्त्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है। अतः कोई शुभ मुहूर्त लग्न न बनता हो तो जातकादि सभी शुभ कार्य अभिजित् मुहूर्त्त में किये जा सकते हैं। परन्तु बुधवार के दिन इनका निषेध है।

❀ कन्या वरण मुहूर्त्त ❀

अ. रो. मृग. मघा. उफा. हस्त. चित्रा. स्वा. अनु. मूल. उषा. श्र. ध. उभा. रे. नक्षत्र, शुभवार, शुभ तिथि में अच्छा समय देखकर वस्त्राभूषण, पुष्प मिष्ठान्न फलादि से कन्या वरण (गोद भरें) करें।

नोट- मांग में सिंदूर भरने का अधिकार सप्तपदी के पश्चात् वर को ही है अन्य किसी को नहीं। देखें (ऋ.मं. १० सूक्त ८५)

❀ वर वरण मुहूर्त्त ❀

उपरोक्त नक्षत्र तथा शुभ मुहूर्त्त में आचार्य या पुरोहित अथवा कुलगुरु कन्या के पिता, भ्राता एवं अभिभावक सहित वर से पहले गणेशादि पूजन करवाकर कुमकुम केशर आदि से वर का तिलक करें। मोली बांधें, मिष्ठान्न खिलावें, तदन्तर वस्त्राभूषण गोद में रखकर सम्मानित करें, उपरान्त माला पहनावें, न्यौछावर करें। वर जाने से पहले गुरुजनों के सहित बुजुर्गों का आर्शीवाद प्राप्त करे, सामान जननी की गोद में धरे। वर के चौकी पर से जाने से पूर्व कन्या पक्ष की ओर से पठनीय मन्त्र इस प्रकार है-

तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणो।
अव्यगेऽपंडितेऽक्लीबे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति।।

विवाह से पूर्व चिन्तनीय विषय-

दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से न करें, और दो बहिनों का विवाह एक वर से न करें। पृथक् माता से उत्पन्न बहिनों का विवाह मण्डप तथा आचार्य भेद से करें। यमल (जोड़े) से उत्पन्न दो का विवाह एक मण्डप में कर सकते है। संस्कारान्त ६ मास होना चाहिए। सम्वत्सर भेद हो तो पहले करने में भी दोष नहीं।

विवाह में शौचादि की सम्भावना हो तो १० दिन पहले नान्दीश्राद्ध कर लेना चाहिए। दैववशात् यदि अशौच हो जाय तो माता-पिता तथा कर्त्ता को अशौच नहीं लगता। बड़ा विनायक स्थापन के बाद यदि किसी की मृत्यु हो जाय तो अशौच नही लगता, निश्चित समय पर विवाहादि मंगल कार्य सम्पन्न कर लेना चाहिए। फिर भी मंगल की कामना हेतु कूष्माण्ड हवन, गो-दान तथा पंचगव्य प्राशन, स्वस्तिवाचन ग्रह शान्ति करनी चाहिए। जनाना शौच में श्री शान्ति से एवं अशौच से पूर्व अन्नादि का संकल्प कर लेने से किसी को अशौच नहीं लगता, संकल्पित अन्न को सब प्रयोग कर सकते है।

आचार्य का समयोचित आदर सम्मान कर विवाह के लिए शुभ मुहूर्त निकलवाना चाहिए। उभय पक्ष में मान्य मुहूर्त के अनुसार विवाह से सवा दो मास या सवा महीना अथवा २१ दिन पहले पीली चिट्ठी (षट्कर्म लग्न, तेल-वान, हल्दात, नेग करण और फेरादि) की सूचना देनी चाहिए। लग्न- विवाह दिन से ५।७।९ व ११ दिन की सुविधानुसार लिखवा कर भेजनी चाहिए।

मेषादि राशियों के लिए तेलादि लेपन दिन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
तेलसं.	७	५	५	७	५	७	७	५	५	५	५	७

नोट- अब बच्चों के विवाह बड़ी उम्रमें होने लगे है, इसलिए तेलों की संख्या कम करके लिखनी चाहिए। यह प्रामाणिक विषयभी नहीं है। देशकाल, परिस्थितियोंके अनुसार विद्वानोंके कई मत पाये जाते है। समयाभावको ध्यानमें रखते हुए विद्वान् न्यूनाधिक् करके स्वयं लिखेंगे, ऐसी हमें आशा है।

तेल चढ़ाने के लिए शुभ दिन- सोम, बुध और शनिवार माने गये हैं। अन्य वारों में तेल चढ़ाना हो तो रवि को पुष्प, गुरु को दूर्वा, मंगल को गंगारज और शुक्र को गाय का गोबर मिलाने से तेल के दोष नष्ट हो जाते है।

तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम्।।

अर्के पुष्पं गुरौ दूर्वा [illegible] रजस्तथा।
भार्गवे गोमयं दद्यात् तैलाभ्यङ्गो न दूषिता।।

विवाह में विहित नक्षत्र- रोहिणी, मृग., मघा, उफा, हस्तश्च स्वाती नक्षत्रकाः। अनु.मूल.,उषा,उभा,रेवत्यां शुभदो विवाहे।। ये ग्यारह नक्षत्र विवाह के लिए सर्वमान्य शुभ हैं। यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य कात्यायन सूत्र वाले सूत्रोक्त आर्ष वचन- 'त्रिषु त्रिषुत्तरादिषु' अर्थात् तीनोंउत्तराओं से तीसरे पड़ने वाले नक्षत्र चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा और अश्विनी ये विवाहके लिये शुभ है। अन्य प्रमाण- "चित्राश्रवणधनिष्ठाऽ श्विनीनक्षत्रं यजुर्वेदिविषयम्" इन नक्षत्रोंको धर्मसिन्धु, सत्यकृत्य मुक्तावलीमें भी शुभ माना गया है। ध्यान रहे ऋग्वेदीय और सामवेदियोंके लिए ग्राह्य नहीं है। देशाचार, कुलाचार तथा जात्याचार का अपना विशेष महत्व होता है- देशाचारः कुलाचारः जात्याचारो विशेषतः। कर्त्तव्यो विदुषा तत्र सारासारं विचार्य च।।

विवाह के लिए ग्राह्य मास- वैशाख, ज्येष्ठ, त्रिभाग आषाढ़ (मिथुनार्क में) आगे प्रबोधिनी एकादशीके बाद (वृश्चिकके सूर्यमें) कार्तिक व मार्गशीर्ष (मकरके सूर्यमें) माघ और (कुम्भ संक्रान्ति में) फाल्गुन मात्र शुभ माना गया है। देशाचारकी प्रधानता से चैत्र, पौष को छोड़कर अन्य सभी मासोंमें विवाह होते हैं।

अथ विवाह मुहूर्त्तोंमें रेखाओं का महत्व

द्विजातियोंके विवाह मुहूर्त्तोंमें ८१ दोष शास्त्रोंमें बतलाये गये है; किन्तु उनमें दस महादोष मुख्य है यथा- लता, पात, युति, वेध, जामित्र, वाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य महापात और दग्धा तिथि। इनका मुख्यतः विचार किया जाता है। वेध, मृत्युवाण, क्रान्तिसाम्य ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाहमें सर्वत्र सर्वथा वर्जित हैं। नोट- वेध दोष चरण गत मान्य होता है।

श्रीव्रजभूमिपंचांग के विवाह मुहूर्तों में लतादि जो कोई दोष जहां आता है उसे (ऽ) ऐसी वक्ररेखा द्वारा लिख दिया जाता है। मुहूर्तों में लगी (।) खड़ी रेखाएं शुद्धताकी परिचायक हैं। इस विषय का शास्त्रसम्मत निर्णय लेना पंचांगकर्त्ताका परमकर्त्तव्य है। दोषोंका संक्षेपमें वर्णन करते है-

लता-दोषज्ञानाय चक्रम्

ग्रहाणां	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नक्षत्र सं. आगे-पीछे	१२ आगे	२२ पीछे	३ आगे	७ पीछे	६ आगे	५ पीछे	८ आगे	९ पीछे	९ पीछे
फलम्	धन हानि	भय	अति कष्ट	भय	भाई कष्ट	कार्य हानि	वंश हानि	मरण	मरण

अपने आश्रित नक्षत्रसे आगे वाले बारहवें नक्षत्रको सूर्य लतादोष से दूषित बनाता है तो चन्द्र पीछे वाले २२वें नक्षत्र को दूषित करता है। अन्य ग्रह लतादोष एवं फल चक्र से ज्ञात करें।

२. **पातदोष-** हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योग काअन्त जिस नक्षत्रमें हो वह नक्षत्र पातदोषसे दूषित समझा जाता है।

३. **युतिदोष-** जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह चल रहा है तो उस ग्रहकी युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र, स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, अपितु श्रेष्ठ होता है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्रकी युति विशेषतः वर्जित है।

४. वेध चक्रम्- पञ्चशलाका चक्र- | **४. वेध चक्रम्- सप्तशलाकाचक्र-**
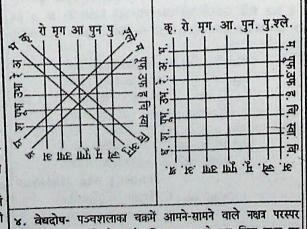
४. **वेधदोष-** पञ्चशलाका चक्रमें आमने-सामने वाले नक्षत्र परस्पर ग्रह वेधके माने जाते है अर्थात् जिस समय जो ग्रह जिस नक्षत्र पर गतिशील होता है वह अपने से शलाकाविद्ध नक्षत्रका वेध करता है।

५. **जामित्रदोष-** विवाह कालीन लग्न या चन्द्रराशि से सप्तमस्थ ग्रह होने पर उक्त ग्रहका जामित्रदोष समझा जाता है। पापी ग्रह का जामित्र दोष विशेष वर्ज्य है। लग्न या चन्द्र से ५५ वें नवांश यानी उससे सातवीं राशिके उतने ही अंश पर कोई ग्रह हो तो सूक्ष्म जामित्र दोष होता है जो विशेष वर्जनीय माना गया है।

६. बाणदोष ज्ञानाय चक्रम्-

बाण नाम	सूर्य के गतांश	वर्ज्य ५ कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	८।१७।२६	उपनयन में	रविवार	रात्रि में वर्ज्य
अग्नि	२।११।२०।२९	गृहारम्भ में	भौमवार	सदैव वर्ज्य
राज	४।१३।२२	राजकाज में	शनिवार	दिन में वर्ज्य
चोर	६।१५।२४	यात्रा मे	भौमवार	रात्रि में वर्ज्य
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाह में	बुधवार	सन्ध्याकाल वर्ज्य

रोगादि पांचों बाणों का सम्बन्ध सूर्य के जिन भुक्तांशों से होता है, उससे विगत अंश रोगादि पांचों बाणों के सामने चक्र में लिखे हैं। विवाह में बुध-पञ्चक(यानी पांचों बाणों) के समय त्याज्य माने गये है, किन्तु मृत्युबाण का समय सब देशों के लिये वर्जित है। प्रत्येक बाण का समय अपने ही वर्ज्य वार, समय तथा कर्म में नेष्ट होता है।

७. एकार्गल दोष- व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुंभ, शूल, वैधृति वज्र, परिघ, अतिगण्ड इन अशुभ योगों में सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने पर विषम संख्यांक हो तो एकार्गल दोष होता है जो कि कश्मीर देश में वर्ज्य है।

८. उपग्रह दोष- सूर्याश्रित नक्षत्र से वैवाहिक नक्षत्र संख्याँक ५।७।८।१०।१४।१५।१८।१९।२१।२२।२३।२४।२५ हो तो उपग्रह दोष होता है। गणना अभिजित् रहित होती है।

९. क्रान्तिसाम्यदोषचक्रम्-

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
सिंह	मकर	धनु	वृश्चिक	मेष	मीन	कुंभ	कर्क	मिथुन	वृष	तुला	कन्या

उपरोक्त चक्र में ऊपर नीचे लिखी किसी एक राशि पर सूर्य तथा दूसरी राशि पर चन्द्रमा हो तो क्रान्तिसाम्य दोष कहलाता है जोकि मंगल कार्य में अशुभ होता है। यह स्थूल मत है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणित से सिद्ध होता है। श्री ब्रजभूमि पंचांग के विवाह मुहूर्त्तों में गणित सिद्ध सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य दोष ही लगाया जाता है।

१०. दग्धातिथिदोष ज्ञानाय चक्रम्-

संक्रांति	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
द.ति.	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

मेषादि संक्रांतियों में लिखित तिथियां दग्ध कहलाती है चाहे वह कृष्ण पक्ष की हो या शुक्ल पक्ष की। दग्ध तिथि मध्यदेश के विवाह मुहूर्तों में दोषप्रद मानी जाती है।

कौनसा दोष किस प्रदेश में वर्जित है?

लता मालवके देशे पातश्च कुरुजांगले।
एकार्गलं च कश्मीरे वेधः सर्वत्र वर्जयेत्॥

लता दोष मालवा प्रान्त(उज्जैन), पातदोष कुरुक्षेत्र वांगर फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त, एकार्गलदोष(कश्मीर) के आसन्न क्षेत्रमें वर्जित होता है तथा वेध सर्वत्र वर्जनीय है।

उपग्रहर्क्षकुरुवाल्हीकेषु कलिंगवंगेषु च पातितभयम्।
सौराष्ट्रशाल्वदेषु च पतितं त्यजेतु विद्धं किल सर्वदेशे॥

उपग्रहदोष- कश्मीर से पश्चिम हिमालय तक तथा हिमाचल प्रदेश एवं पंजाब तक और आगरा प्रान्त बलखबुखारा तक मान्य है। पातदोष-उड़ीसा के दक्षिण और मद्रास के उत्तर तीरवर्ती कलिंग (वर्तमान भुवनेश्वर) तथा समस्त बंगाल में मान्य होता है। लतादोष-अहमदाबाद से सोमनाथ तक तथा सूरत नाम से प्रसिद्ध (सौराष्ट्र) एवं शाल्व देश (उज्जैन प्रान्त में) मान्य होता है। वेध नक्षत्र सब देशों में त्याज्य माना जाता है।

युतिदोषो भवेद् गौडे जामित्रस्य च यामुने।
मासदग्धा च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

युतिदोष- बंगाल में ढाका, मुर्शिदाबाद मालवा के आसन्न मान्य है। जामित्रदोष-मथुरा प्रान्तासन्न माना जाता है और दग्धा-तिथि दोष मध्यदेश (उज्जैन,भोपाल, नरसिंहपुर और जबलपुर)के आसन्न क्षेत्रोंमें माना जाताहै।

चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः।
पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः॥

चित्रा में बना पात दोष विचित्र देश में (अज्ञात कोई प्रान्त), अनु, और मघा में बना पात दोष उज्जैन में। रेवती, श्रवण में बना पात उत्तर दिशा में सुदूर पर्वतीय प्रदेश में वर्जित होता है। भुजंग पात (रवि-शशि क्रान्ति साम्य) सर्वत्र वर्जनीय है।

भुजंगक्रान्तिसाम्यं च बाणवेधं तथैव च।
लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत्॥

भुजंग क्रान्तिसाम्य, बाण और वेध दोषपूर्ण (विवाह मुहूर्त्त) बलहीन लग्न का विवाह कलियुग में वर्जित है। आगे युति वेध और जामित्र दोष परिहारार्थ ऋषि-महर्षियों के वचन प्रस्तुत है-

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे सदा॥

विवाहकाल में चन्द्रमा स्वक्षेत्रीय हो, उच्च का हो अथवा मित्र क्षेत्री हो तो युति दोष का नाश करता है। दाम्पत्य जीवन सुखी बनता है। सदा अच्छा श्रेय मिलता है।

पादमेव शुभैर्विद्धम् शुभैर्नैव कृत्स्नतः।
अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्॥ नारदः॥
तृतीयगो द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम्।
भिनत्तिवेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात्॥ वशिष्ठः॥

वास्तव में एक नक्षत्र के प्रथम चरण में ग्रह हो तो दूसरे का चतुर्थ चरण और चतुर्थ चरण में ग्रह हो तो दूसरे का प्रथम चरण विद्ध होता है एवं द्वितीय और तृतीय चरण में परस्पर वेध होता है; जोकि अवश्य वर्जनीय है।

भुक्त भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च।
शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥

अस्यापवाद मुहूर्त्त चिन्तामणौ-

ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च।
भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभऋक्षाणि प्रचक्षते॥

क्रूर ग्रह से विद्ध और क्रूर ग्रह से भुक्त या भोग्य नक्षत्र और पापग्रह युक्त एवं पापाक्रान्त होने वाले नक्षत्रों को यदि चन्द्रमा भोगकर अग्रिम नक्षत्र पर पहुंच गया हो तो वह नक्षत्र शुभ होते हैं।

स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे।
हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्॥

व्यवहार समुच्चय॥

चन्द्रमा उच्च का हो, शुभग्रह की राशि में हो, अपने वर्ग या मित्र के वर्ग में हो तो जामित्र दोष का हरण कर अत्यन्त सुख देता है। पति-पत्नी सुखोपभोग करते हैं।

अन्य मत-

एकार्गलोपग्रहपातलता जामित्रकर्तर्यदयास्तदोषाः।
नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

ज्योतिषशास्त्र के अविष्कारकर्त्ता पूर्वाचार्यों ने जहां दोषों का वर्णन किया है वहां यह भी बतलाया है कि कौन-सा दोष कहां मान्य होता है और किस दोष का क्या परिहार्य है। पंचांग किसी एक प्रान्त-प्रदेश या एक देश के लिये अथवा एक सम्प्रदाय एवं वर्ग विशेष के लिये नहीं बनता बल्कि वह सार्वभौम होता है। अनन्त शास्त्रों का सार अनन्त विज्ञान का भंडार गूढ़ रहस्यमय अंकों से ओत-प्रोत, पांचों अंगों से परिपूर्ण होता है। अपने अपने प्रयोग में आने वाले विशुद्ध ज्ञान को ग्रहण करना चाहिए।

अनन्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्॥

कर्त्तरी दोष- लग्नस्यपृष्ठाग्रयोरसाव्वोः|सा कर्त्तरी स्याद्युक्वक्रगत्योः।। तावेव शीघ्रो यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः।" "इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या।" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:-पापौ कर्त्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी। दोषौ नैव सितेऽरिनीच गृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमौ दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न।।

दोषापवादा ज्योतिर्निबन्धे- दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणै सह। अपवादान्तरम्- उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थे सितौ वापि पन्नगानगरुडो यथा। मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी।। अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये सर्वग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलयं नयेत्।। बलवान केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् चूनं विहाय दैत्येज्य सहस्त्रं लक्ष्मंगिराः।।

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र(१।४।१०) ही ग्रहण करना है।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः	मुहूर्त्तगणपतौ
३ ६ ८ १	२ ३ ११	३ ६ ११	१।२ ३।४ ५।६ ९ १० ११	२।१ ३।४ ६।५ ९ १० ११	१।२ ४।५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभ विवाहे स्याद्दशविंशो-पकाधिकम्
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकाबल

अथ गोधूलिलग्नविचार- लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्। लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते।। गोधूलिं त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे। ग्रीष्मेऽर्धास्तमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यतां, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः।।

गोधूलिके त्याज्यदोषाः- कुलिक क्रान्तिसाम्यं च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैस्तु दूषितः।। अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः।। "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के।" अर्थात् वृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे(क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्यास्त से पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्त्ताः- कृष्णे पक्षे भानुभौमा र्कजानां वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः।

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फल

अन्यच्च- सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यांकसाभिजिद् भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।।

वधू प्रवेश-द्विरागमन विचार

पाणिगृहीत वधू पिता गृह से जब पतिगृह में प्रवेश करती है, उस समय को वधू प्रवेश कहते हैं जिसमें यात्रा सम्बन्धी विचार नहीं होता क्योंकि विवाह काल को ही यात्रा समय कहते है। वधू प्रवेश में सम्मुख शुक्रदोष भी मान्य नहीं-

स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विप्लवे तथोद्वाहे।
नववध्वा गृहगमने प्रतिशुक्रविचारणा नास्ति।। लल्लाचार्य
न शुक्रदोषो न सुरेज्य दोषो ताराबलं न योज्यम्।
उद्वाहिताया नवकन्यकाया दीपोत्सवे शोभनमङ्गलानि।। भास्कराचार्य

कहीं-कहीं विवाह के बाद वधू अपने पति के घर नहीं जाती तो उसके बाद वधू प्रवेश का लोप करके उसी (वधू प्रवेश ही) को द्विरागमन मानकर उसमें शुक्र शुद्धि का विचार करते हैं; परन्तु यह वहाँ की (विशेष समाज-सम्प्रदाय) की अपनी लोक परम्परा है, जिसका शास्त्रों में कोई प्रमाण नहीं।

मुहूर्त-मार्तण्ड के ४०वें श्लोक में लिखा है कि इस परिस्थिति में विवाह दिन से १६ दिन तक सम दिनों में ६।८।१०।१२।१४।१६ और विषम ५।७।९ में तारों की रोशनी में प्रवेश शुभ है।

१६ दिन के बाद मास पर्यन्त विषम दिन में, १ मास के बाद वर्ष भीतर विषम मास में तथा १ वर्ष के बाद विषम वर्ष में वधू प्रवेश शुभ है। मेष, वृश्चिक तथा कुम्भ सौर मास एवं शुक्ल पक्ष हो तो अति उत्तम होता है। तृतीयादि वर्षों में यात्रा विचार भी करना चाहिए।

द्विरागमन विचार- नव विवाहिता (वधू प्रवेश) के बाद पिता गृह जाती है। पुनः पिता गृह से विदा होकर पति घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। जिसमें यात्रा सम्बन्धी सभी नियमों का विचार किया जाता है।

विहित नक्षत्रमासादि- अश्विनी, रोहि., मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, उफा, अनु, मूल, उषा, श्रव, धनि, शत, उभा और रेवती नक्षत्र, मेष, वृश्चिक, कुम्भ सौर मास अर्थात् वैशाख, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघोत्तर, फाल्गुन विषम वर्ष, शनि, मंगल छोड़कर श्रेष्ठ लग्न में द्विरागमन शुभ की इच्छा से करें। गुरु-शुक्र अस्त हो, गुरु अंश रहित हों, शुक्र यदि सम्मुख हो अथवा दक्षिण हो तो गर्भिणी या बालक के सहित नव विवाहिता का गौना द्विरागमन न करें।

शुक्र का विशेष विचार-

रेवत्यादि मृगान्तञ्च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः।
तावच्छुको भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः।।

रेवती से मृगशिर पर्यन्त जब तक चन्द्रमा रहते हैं तब तक शुक्र अन्धा रहता है; तब सम्मुख दक्षिण दोष मान्य नहीं। अन्य आचार्य वर्ष भीतर द्विरागमन (गौना) को गुरु शुक्रास्त काल में भी शुभ कहते हैं-

अस्तेऽथवा शिशुत्वे वा बालत्वे गुरुशुक्रयोः।
शुभो द्विरागमा यावद् वर्षमेकं विवाहतः।।

अन्य परिहार वाक्य

नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः।
नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्न हि।।
पित्र्येगृहे चेत्कुचपुष्पसम्भव स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसम्भवः।
भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपा त्रीणां भारद्वाजमुनेः कुले तथा।।

शुक्र सम्मुख है या दक्षिण?- इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर किसी भी ज्योतिष ग्रन्थ में नहीं है। अपनी कक्षा में गतिशील शुक्र ग्रह जब मेष, सिंह व धनु राशि में होता है तब वह पूर्व दिशा में सम्मुख और उत्तर दिशा में दक्षिण माना जाता है। इसी प्रकार वृष, कन्या, मकर दक्षिण में, मिथुन तुला, कुम्भ, पश्चिम और कर्क, वृश्चिक और मीन में गतिशील शुक्र को उत्तर दिशा में सम्मुख जानना चाहिए। यात्रा प्रकरण में कालराहुवास, योगिनीवास दिशाशूल आदि का विस्तार सहित विवरण दिया गया है।

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
मत्तमार्तंगयूथानां शतं हन्ति च केशरी।।
व्रजभूमिपंचांगस्य विवाहप्रकरणमन्तमगात् व्रजेश्वरिप्रसादात्।

❀ यात्रा प्रकरणम् ❀

गो. तुलसीदास जी के वचनामृत

दोहा- रामु लखन कौसिक सहित, सुमिरहु करहु पयान।
लक्षि लाभ जय जगत जसु, मंगल सगुन प्रमान।।
भरत सत्रुसूदन लखन, सहित सुमिरि रघुनाथ।
करहु काज सुभ साज सब, मिलिहि सुमंगल साथ।।

श्रीविश्वामित्रजीसहित श्रीराम-लक्ष्मणका स्मरण करके यात्रारम्भ करनेसे लक्ष्मीप्राप्तिके साथ-साथ जगतमें विजय सुयश प्राप्त होता है। यह शकुन सच्चा मंगलमय है। भरत,शत्रुघ्न,लक्ष्मण और श्रीरघुनाथजीका स्मरणकर सब शुभ साधनोंके सहित अपने कार्य करोगे तो सफल होगें, यश भी मिलेगा।

दोहा- नकुल सुदरसन, दरसनी, क्षेमकरी चक चाष।
दसदिसि देखत सगुन सुभ, पूजहिं मन-अभिलाष।।
सुधा, साधु, सुरतरु सुमन, सुफल सुहावनि बात।
'तुलसी' सीतापति भगति, सगुन सुमंगल सात।।

नेवला मछली,-दर्पण, क्षेमकरीचिड़िया(चील), चकवा और नीलकण्ठ इन्हें दसों दिशाओंमें कहीं भी देखना शुभ शकुन है और ये मनकी अभिलाषा पूर्ण करते हैं। गो. तुलसीदास जी कहते हैं कि अमृत, साधु, कल्पवृक्ष, सुन्दर पुष्प, अच्छेफल, सुहावनीबात और श्रीसीताराम की भक्ति ये सात सुन्दर शकुन है।

❀ शुभ शकुन ❀

चलत समय नेउरा मिल जाय। बाम भाग चारा चखु[1] खाय।।
काग दाहिने खेत सुहाय। सफल मनोरथ समजहु भाय।।
लोमा[2] फिर-फिर दरस दिखावै। बांयें से दहिने मृग आवै।।
मृग बाये से दाहिने, जो आवै तत्काल।
अन-धन-लक्ष्मी बहु मिलै, चलते प्रात:काल।।
भड्डरिकवि यह सगुन बतावैं। सगरेकाज सिद्ध होइ जावै।।
नारि सुहागिन जलघट लावै। दधिमछली जो सनमुख आवै।।
सनमुख धेनु पियावै बाछा। यही सगुन है सब ते आछा।।

कोयलशकुन- कोयल हरियल आम के, तरु पर बैठी होय।
गमनत में ताको दरश, करे बटोही कोय।।
करे बटोही जोइ, लाभ धन उसको होगा।
कौशिक करौ विचार, जन्म घर शिशु संजोगा।।

1 नीलकंठ
2 लोमड़ी

❀ अशुभ शकुन ❀

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।।
एक शूद्र दो बैस असार। तीन बिप्र औ छत्रीचार।
सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार।।
स्वान धुनै जो अङ्ग, अथवा लोटै भूमि पर।
तो निज कारज भङ्ग, अतिहि कुसगुन जानिये।।
वैस पाँच षट् स्वान, एक बैल एक बकरा जान।
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलै मति करौ पयान।।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि से दूरि, निकट ते निकट, समझौ फल भरपूर।।

यात्रारम्भे बिल्लियोंका युद्ध, रजस्वला स्त्रीका सामने आना, जननीका तिरस्कार, अकालोतिवृष्टि और परिवारीय मृतसूतकोंमें शुभकी इच्छा चाहने वाले यात्रा न करें। यथा-

मार्जारयुद्धे कलहे प्रवच्छे रजस्वलाम्स्त्री जननी निषेध।
अकालवृष्टो मृतसूतके चं किञ्चित् न गमनं चाहस्य जीवनं।।

❀ छींक-विचार ❀

सर्दी जुकामसे आने वाली छींक या शराब,शीरादि गन्ध,मिर्च, नोसादर आदि की भस लगनेसे आने वाली छींक प्रायः सभी निष्फल होतीहै।

छींक सूंघनी छलकरि लीनी। सज्जन जानो सो फल हीनी।।

कन्या, बांझस्त्री, विधवास्त्री, रजस्वलास्त्री, वैश्या, मालिन, धोबिन, पशु तथा कुरुपाङ्ग मनुष्यकी छींक अशुभ होती है।

सम्मुख छीक लड़ाई भावै। छीक दाहिनी द्रव्य विनाशै।।
ऊँची छीक होय जयकारी। नीची छीक होय भयकारी।।

छीक भी शुभ होती है-

आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने।
वामाङ्गे पृष्टतश्चैव षट् छिक्का च शुभावहा:।।
एक नाक दो छीक, काम बनै सब ठीक।
छीकत खड़ये, छीकत नहिये, छीकत पराये घर ना जइये।।
अपनी छीक महादु:खदाई। ऐसे छीक विचारो भाई।।

विशेष- उपरोक्त आवश्यक विचारोंके साथ-साथ मनोत्साह तथा गुरुजन ब्राह्मणादिके सद्वाक्योंका यात्रामें अपना विशेष महत्व होता है।

शकुनकेविषयमें- यहां तक कहा जाताहै, कि संचितकर्मका फल परिपक्व होकर यात्राके समय शुभाशुभ शकुनोंका प्रतिपादन करता है अर्थात् आभासरूप पूर्व सूचना देता है। मनकीशुद्धता एवं निर्बलताका कारण बनताहै। अतः यात्रामें मनोत्साहकी उपयोगिता सर्वोपरि है।

❀ पन्था-राहु चक्रांकित नक्षत्र और उनके फल ❀

धर्मपक्ष के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	आश्ले	विशा.	अनु.	धनि.	शत.
अर्थपक्ष के नक्षत्र	भरणी.	पुन.	मघा	स्वाती	ज्ये.	श्रव.	पूभा.
कामपक्ष के नक्षत्र	कृति.	आर्द्रा	पूफा.	चित्रा	मूल	अभि.	उभा.
मोक्षपक्ष के नक्षत्र	रोहि.	मृग.	उफा.	हस्त	पूषा.	उषा.	रेवती

प्रस्थानके समय सूर्य धर्म नक्षत्रमें और चन्द्रमा अर्थ या मोक्षके नक्षत्रोंमें हो तो यात्रा शुभ होती है। इसीप्रकार सूर्य अर्थ में और चन्द्रमा धर्म या मोक्षमें हो तो शुभ जानें। सूर्य काममें और चन्द्र धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर शुभद होता है। सूर्य मोक्षमें और चन्द्रमा धर्ममें शुभद् माना जाता है। इनसे अन्यथा सूर्य चन्द्र की स्थितियां अशुभ होती है। यात्रारम्भे इष्टदेवता और दिक्पतिको प्रणाम करके यह श्लोक पढ़ें-

मंगलंभगवान्विष्णु:मंगलंगरुड़ध्वज:।
मंगलंपुण्डरीकाक्षमंगलायतनो हरि:।।

श्येन-पक्षी

सूर्याश्रित नक्षत्रको श्येन पक्षीकी चोंचके अग्रभावमें माने। इसी प्रकार आगे ३ नक्षत्र छाती,३ शिर,३ ग्रीवा,४ दायां पैर,४ बायां पैर,४ पीठ और ६ नक्षत्र उदर पर रख कर विचार करें नामनक्षत्र यदि पक्षीकी चोंचमें आ पड़े तो बन्धन जानें,छाती,शिर व ग्रीवामें धनलाभ और यदि पैर उदर या पीठपर हो तो नेष्ट रहता है।

आजकादिन कैसा बीतेगा?- यह जाननेके लिए कालदंष्ट्रा चक्रांकित अंकोंके स्थान पर दैनिक नक्षत्रसे अग्रिमनक्षत्रोंको स्थापित करें; अर्थात् १ अंक के स्थानपर आजकानक्षत्र जो भी हो उसे रखें। **यथा फलम्-** कालदंष्ट्रा चक्रमें मध्यके ३ स्थान कालमुखके माने गये है, और दोनों ओर के २-२ स्थान कालदंष्ट्राके दाड़ माने गये हैं। जन्म या नामनक्षत्र मुखमें आ पड़ें तो मृत्यु या कष्ट होता है। और दाड़ स्थानगत होनेपर ज्वर आदि व्याधि जाननी चाहिये।

मुखदंष्ट्रगते मृत्यु: शुभमन्यत्र संस्थिते।
ज्वरितेनष्टदष्टे च विवाहे विग्रहे रणे।।
कालदंष्ट्रस्यगेनामपस्यतस्य महभ्दयम्।

ऐसे अशुभ संयोगमें रोग उत्पन्नहो, कुत्ता,सर्प,चूहा आदि काट ले,या व्यक्ति हमलाग्रस्त हो जाय, विषादिका सेवन कर ले,अग्नि आदि से जल जाय तो जीवन प्राय:समाप्त ही समझना चाहिए।

चन्द्रवासज्ञानाय चक्रम्

उत्तर
कर्क वृश्चिक मीन

चन्द्र वास चक्रम्

योगिनीवासज्ञानाय चक्रम्

वायव्य उत्तर ईशान
७।१५ ति. २।१० ८।३०

योगिनी चक्रम्

अथ योगिनी विचार

तिथियोंके अनुसार योगिनी निवास कहा गया है जैसे- द्वितीया और दशमीको योगिनी उत्तरमें रहती है। तिथि चाहे शुक्ल पक्षकी हो या कृष्ण पक्षकी। समस्त दिशाओंमें योगिनीवास ज्ञान चक्र से प्राप्त करें। योगिनी निवास फल-

योगिनी सुखदा वामे, पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च, सम्मुखे मरणप्रदा।।

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों या मारकेशकी दशा हो तो अच्छे मुहूर्त में दूर दराजकी यात्रा न करें; प्रथम तीर्थयात्रा या देव दर्शन गुरु-शुक्रास्त में वर्जित है। अन्तरिक्षयात्रा- तिथि को ५ से गुणाकर १ जोड़कर ३ से भाग दें १ शेष में स्वर्ग, २ में भूमि और ० शेष में राशिका निवास पातालमें होता है, यात्रा तुल्य विचार करें।

दिशाशूलज्ञानाय चक्रम्

उत्तर
बुध मंगल

दिशाशूल चक्रम्

कालराहुवासज्ञानाय चक्रम्

वायव्य उत्तर ईशान
चन्द्र रवि रवि

कालपास प्रतिकूलदिशाएं

लाभालाभ विचार

सम्मुखे चार्थलाभः स्याद् दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षयः।।

यात्रा में सम्मुख चन्द्रमा विशेष लाभदायक होता है, दाहिनी ओर रहे तो सुख सम्पत्ति मिलती है। पीठ पीछे शोक सन्ताप और बांई ओर रहे तो धन की क्षति होती है। राशि से गिनने पर चौथे चन्द्रमा कलह कारक,आठवें प्राणसंशय और बारहवें हानिकारक माने गये हैं।

युद्ध में, विवाद में, कुमारी पूजन में, राजसेवा में तथा वाहनासे यात्रादि में घात चन्द्र वर्जित है अन्य कार्योंमें नहीं; देखें पृष्ठ (१०७) पर।

यथा- युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा।
राजसेवावाहनादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत्।।
दिशाशूल ले जाओ बायें,राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लच्छमी लूट।।

यात्रा समये लग्न विचार

दहिने सम्मुख लग्न जो, होई सिद्धि सब काज।
बांयें मध्यम जानिये, पृष्ठे महा अकाज।।
जौन लग्न में रवि तपै, ताकौ यहै विचार।
पूर्व अग्नि तामे चलै सो, है अतिहि ख्वार।।

जिन राशियोंमें चन्द्रमा जिस दिशामें रहता है, उन्हीं राशियोंका लग्न भी उसी दिशामें रहता है। लग्नमें सूर्य हो तो पूर्व एवं अग्निकोणकी दिशामें यात्रा नहीं करनी चाहिए।

आग्नेय कोण (विदिशा)की गिनती पूर्व में होती है; इसी प्रकार नैऋत्य की दक्षिणमें,वायव्यकी पश्चिममें और ईशानको उत्तरमें मानकर गिना जाताहै।

सोम सनीचर पूरब ना चालू। मंगल बुध उत्तरदिसि कालू।।
रबी शुक्र जो पच्छिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय।।
बीफे दक्खिन करे पयाना। फिर नही समझे ताको आना।।

दिकशूलमें यात्रा भय, कष्ट और अनर्थप्रद होती है। इसलिए दिशाशूल वर्जित करना ही चाहिए। किन्तु जहां एक ही दिनमें यात्रा करके गन्तव्य स्थानमें पहुँचना सम्भव हो, वहां दिशाशूल योगिनी आदि के विचार की आवश्यकता नहीं रहती है।

काल राहु विचार

उपरोक्त चक्रसे आप सहज जान सकते हैं कि किस दिन कालराहुका वास किस दिशामें रहेगा। यात्रा की दिशामें सम्मुख कालराहु नेष्ट होता है, कालपास- दिनमें कालराहुवास के सम्मुख दिशामें पास रहता है, और रात्रिमें विपरीत चक्र लगाता है। दोनों कालराहु एवं पास त्याज्य है।

दिशा ज्ञानम्

उदित सूर्य के सम्मुख, खड़े हो जाओ सीना ताने।
कौशिक जी के वचन से, सुगम दिशा पहचाने।
सम्मुख दिशा होय सो पूरब। बाईं ओर दिशा कहि उत्तर।
दहिनी ओर दिशा कहि दक्खिन। पश्चिम पीठस जानहु प्रियजन।।

चार मध्यवर्ती आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य और ईशान तथा नीचे ऊपर वाली दो दिशा मिलाने से दश दिशाएँ कहलाती हैं।

नक्षत्रशूलज्ञानाय चक्रम्

उत्तर
पूफा.उफा.हस्त.विशा

समयशूलज्ञानाय चक्रम्

उत्तर
मध्य रात्रि

पश्चिम गोधूलिवेला

समयशूल तथा परिहार वाक्यानि

उषाः (प्रातः) काल में पूर्व, गोधूलि में पश्चिम, अर्धरात्रि में उत्तर और मध्यान्ह काल में दक्षिण दिशा को नहीं जाना चाहिए।

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः।
अंगिरा च मनोत्साहः ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः।।

चौघड़िया वर्जितचक्रम्

उत्तर
लाभ, रोग

लग्नभङ्गीग्रहस्थिति

चं श शु चं

गोरख पतरा (यात्रा मुहूर्त्त) ॥ श्री गोरखनाथ जी का वचनामृत ॥

पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	मासों की तिथियों का फल	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिश	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र.ला
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय जीवहानि पछतावा हो, Z सहित घर आवे।	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्ध व अर्थपूर्ण हो, Y कुशल घर आवे	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुःख	इष्टलाभ	धनप्रा.
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे।	क्लेश	लाभ	क्लेश	बिनाश	लाभ	सुख	मंगल	श्रीप्रा.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ हो, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धनप्रा.	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट हो, कदाचित घरआवे।	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थला.
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्नादिZ	विलम्ब	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीव नाश हो।	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशा पूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो,बहुत दिन लगे किन्तु स Y	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्रीप्रा.
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो,जीव हानि नहीं,सौभाग्य पावे नहीं।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यला	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि,मित्र मिलें,विघ्न मिटे,धन लाभ।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक

श्री गोरखनाथके पूछने पर गुरू मत्स्येन्द्रनाथने कहा था कि जो व्यक्ति इस चक्रोक्त यात्रा मुहूर्त के अनुसार यात्रा करेगा, वह कुशल पावेगा। यह मुहूर्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोगका दोष नहीं होगा, यह स्वयं सत्यसिद्ध भी है। मैने स्वयं अपने जीवनकालमें इसी यात्रा मुहूर्त से अनेक मुहूर्त बनाए हैं। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्ध हुए है। पंचांगप्रेमी पाठकोंकी विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यह यहाँ प्रकाशित किया जाता है। इसमें प्रत्येक माह की, प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहरमें हर एक दिशाकी यात्राका फल निर्दिष्ट किया गया है। पौषादि मासोंके नीचे दी गई तिथियोंको उस मासके कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनोंकी समझनी चाहिए। इसमें १३।१४।१५ और ३० तिथियोंका उल्लेख नहीं है। सो १३ तिथि का फल ३ तीज तिथिके समान, १४ का फल ४ तिथिके समान और १५ का फल ५ तिथिके समान समझना चाहिए। ३० (अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह १से ४ तक के प्रहरोंके दिन और रात दोनोंके लिए समान समझे।

नोट:- दिनमानका चतुर्थांश दिनके एक प्रहर का मान होता है। तथा रात्रिमानका चतुर्थांश रात्रिके एक प्रहर का मान होता है। प्रत्येक प्रहर लगभग तीन घन्टें का होता है।

दिन के चौघड़िया							रात के चौघड़िया						
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	शु	च	का	उ	अ	रो	ला
च	का	उ	अ	रो	ला	शु	अ	रो	ला	शु	च	का	उ
ला	शु	च	का	उ	अ	रो	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ल	शु	च	का	उ	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	च	का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	च	का	उ	अ	रो	ला	ला	शु	च	का	उ	अ	रो
रो	ला	शु	च	का	उ	अ	उ	अ	रो	ला	शु	च	का
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	शु	च	का	उ	अ	रो	ला

चौघड़ियाविवरण- उ. से उद्वेग, च से चर, ला से लाभ, अ से अमृत, का से काल, शु से शुभ, और रो से रोग का चौघड़िया मुहूर्त जानना चाहिए। चौघड़ियामुहूर्त्तोंके स्वामी उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र, काल का शनि, शुभ का गुरु और रोग का स्वामी भौम है, श्रेष्ठसमय शुभ, चर अमृत और लाभके चौघड़ियाका होता है। अशुभ समय उद्वेग, रोग और कालका होता है। दिनमानको ८ से भाग करनेपर लब्ध १ चौघड़िया मुहूर्तका मान होता है, उसके घण्टा-मिनट बनाकर सूर्योदयमें जोड़नेसे उस चौघड़िया मुहूर्तका समाप्तिकाल निकलताहै। इसीप्रकार दिनके ८ चौघड़ियामुहूर्त्तोंका समय जान सकते हैं। रात्रिके चौघड़ियोंका समय जाननेके लिए रात्रिमानको ८ से भागकर लब्ध फलघट्यादि के घं.मि. बनाकर सूर्यास्तमें जोड़नेसे रात्रिके प्रथम चौघड़ियाका समाप्ति काल आ जायेगा। सभी आवश्यक कार्योंमें चौघड़िया मुहूर्तोंका बहुत ही उपयोग हो रहा है। किन्तु यात्रा में इनके स्वामीका सूक्ष्म विचार कर लेना आवश्यक है। यात्री उक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़ियोंमें किसीभी दिशाकी यात्रा कर लेतेहैं, किन्तु फल कभी-कभी उल्टा यानी अशुभ होता है। इसका कारण यह है कि यदि किसीको पूर्वमें जाना है और 'अमृत' के चौघड़ियामें चला गया तो उसका स्वामी चन्द्र होनेके कारण पूर्व दिशाके लिए वह चन्द्रदिशाशूलदोष कारक होगा- 'सौम शनीचर पूरब ना चालू तो फल श्रेष्ठ की बजाय नेष्ट होना सम्भव है।

प्रस्थानविधान- यदि कहीं जरूरी कारणोंसे यात्रा मुहूर्त्त में न जा सकें तो उसी मुहूर्त्तमें ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद-घी, शूद्र फलको अपने वस्त्रमें बांधकर किसीके घर में व नगर से बाहर जानेकी दिशामें प्रस्थान कर रख दें। उपर्युक्त चीजोंके बजाय मनकी सबसे प्यारी वस्तु को भी रख सकते हैं। **यात्राके पहले त्याज्य वस्तुएँ-** यात्रा के ३दिन पहले दूध, ५दिन हजामत, ३दिन पहले तेल, ७दिन पहले मैथुन त्याग देना चाहिए। यदि इतना न हो सके तो कम से कम एक दिन पहले तो त्याज्य वस्तुओंको अवश्य ही छोड़ देना चाहिए। **नोट-**जन्म राश्येश, जन्म लग्नेश,वर्तमान दशापति व शुक्रके अस्त रहने पर यात्रा नकरें,गुरु-शुक्रके अस्तमें पहली तीर्थयात्रा नही करनी चाहिए। **यात्रा के लिए शुभ तिथि-** भद्रादि दोषरहित २,३,५,७,१०,११,१३ तथा कृष्ण पक्षमें प्रतिपदा श्रेष्ठ मानी गई है। **यात्राके लिए शुभ नक्षत्र-**अश्वि.,मृग., पुन, पुष्य,हस्त,अनु,श्रव.धनि.,रेवती, मध्यमनक्षत्र रोहि. ,उ.फा.,उ.षा.,उ.भा.,पू.फा.,पू.षा.,पू.भा.ज्येष्ठा, मूल और शतभिषा। **श्रेष्ठ चौघड़िया-** अमृत, चर, लाभ और शुभ। **होरा** चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र की शुभ होती है।

जन्म राशिसे शुभाशुभ चन्द्र

दूजे, तीजे, पांचवें, सप्तम, दशवें जोई।
एकादश ये शुभ कहे, मध्यम नेष्ट सुनोई॥
षष्ठ जन्म अरु नवम जो मध्यम आनहु मीत।
अष्टम, चौथे, बारहवें सब राशिन को भीत॥
सगुन शुभाशुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि ते दूरि, निकट ते निकट, समझो फल भरपूर॥

यात्रा के पहले ग्राह्य वस्तुयें-

रविको पान सोम को दर्पण। मंगलको गुड़ करिये अर्पण॥
बुधे धनियां बीफे जीर। शुक्र कहे मोहि दधि की पीर॥
कहै शनीमै अरदख पावौ। सुख-सम्पत्ति निश्चयघर लावौ॥
वस्तुग्राह्य करि जो जहाँ जावै,सिद्धिकाज करि घर नर आवै॥

❀ प्रश्न प्रकरणम् ❀

मेरा अमुक कार्य कब पूरा होगा? मेरी पुत्री अथवा पुत्रका विवाह कब तक हो जायेगा? मेरे पास धन क्यों नहीं रुकता? मैं कौन सा काम करुँ जिसमें सफलता मिले? मेरा परीक्षा परिणाम कैसा निकलेगा? ऐसे अनेक प्रश्न प्रतिदिन ज्योतिषियोंसे होते रहते हैं। अपने-अपने अर्जित ज्ञानानुसार ज्योतिर्विद् उत्तर देकर प्रश्न कर्त्ताओं को सन्तुष्ट भी करते रहते हैं। इस प्रकरणमें हम निजी अनुभव सिद्धि प्रश्नोत्तर शैली लिखनेके साथ-साथ पूर्वाचार्योंके विचार भी लिखेगें, जिससे पाठक लाभ उठा सकें।

ज्यौतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम्॥

ज्योतिषज्ञान इस लोकमें सबसे उत्तम है, जिसके द्वारा शुभ-अशुभ भूत-भविष्य-वर्त्तमान का ज्ञान तो होता ही है, यह आत्मकल्याणकारी भी माना गया है। कालका यथार्थ ज्ञान भी ज्योतिषके द्वारा ही होता है-जोकि सबका कर्त्ता, संहर्त्ता और पालनकर्त्ता है। काल अन्तरात्मा सर्वदर्शी शुभाशुभ फलका सूचक है, जिसे व्यवहार, स्पर्श, चेष्टादि के द्वारा तत्वदर्शी प्रश्नोत्तर समयमें जाननेकी चेष्टा करें, ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

कालोऽन्तरात्मा सर्वदा सर्वदर्शी शुभाशुभः फलसूचकैः सविशेषेण।
प्राणीनांपराह्नेषुस्पर्शव्यवहारेङ्गितचेष्टादिभिर्निमित्तैःफलमभिदर्शयति॥

उपहासमें कभी किसीसे प्रश्न नहीं करना चाहिए। प्रश्नोत्तरचक्र **'श्रीरामशलाका प्रश्नावली'** हो या केरलप्रश्नोत्तरमाला या अन्य कोई भी किसी विद्वान् द्वारा निर्मित प्रश्नफलबोधक कोष्टक हो अपनी-अपनी जगह सभी मान्य होते हैं। श्रद्धाभावानुसार फल भी देते हैं। उत्तर देनेसे पहले प्रश्नकर्त्ताके हावभाव, चेष्टा, दृष्टि आदि का विचार कर लेना चाहिए। श्रद्धाविहीन प्रश्नका उत्तर ठीक नहीं बैठता। अतः उलटे उपहासका पात्र बनना पड़ता है।

'चन्द्रमामनसोजातः' वेद में चन्द्रमाको मन कहा गया है। अतः प्रश्न कुण्डलीमें चन्द्रमा जिस भाव तथा जिस लग्न, राशिमें एवं जैसी अवस्थामें होगा तदनुसार प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करेगा।

❀ चन्द्र की बारह अवस्थाएँ ❀

१.प्रवास, २.नाश, ३.मरण, ४.जय, ५.हास्य, ६.रति, ७.क्रीड़ा, ८.सुप्त, ९.भुक्त, १०.ज्वर, ११.कम्प और १२.स्थिर ये बारह अवस्थाएं चन्द्रमा की बताई गई हैं। अर्थात् मेषमें प्रवेश करने पर शशि जितने समयमें राशिका बारहवांभाग २ अंश ३० कला का भोग करेगा तब तक उसकी प्रवास अवस्था रहेगी, आगे ५ अंश भोग्यकाल तक नाश अवस्था, आगे ७ अंश ३० कला तक मरण, आगे १० अंश तक जय इसी प्रकार आगे जानें।

गणनाक्रम-मेषमें पहले प्रवास अवस्था, वृषमें पहले नाश, मिथुनमें मरण, कर्क में जय, सिंह में हास्य, कन्यामें रति, तुलामें क्रीड़ा, वृश्चिकमें सुप्त, धनुमें भुक्त, मकरमें ज्वर, कुम्भमें कम्प और मीन राशिमें प्रथम अवस्था स्थिर होती है। एक राशिमें गतिशील चन्द्र संचारके समयको समान बारह भाग करने पर स्पष्ट एक अवस्था का समय निकल आता है।

फल-यदि कोई मेषलग्नमें प्रश्न करता है। चन्द्रमाभी तत्काल मेष में है और यदि अवस्थाभी प्रवास हो तो चिन्ता अपने घनिष्ट संबंधीकी जानें (जो दूर देश या परदेश में रह रहा है) लग्नके चन्द्रकी दृष्टि सप्तम पर होगी (वह भाव दाम्पत्यजीवन से सम्बन्धित है) इसमें विहित मिलता जुलताही प्रश्न होगा। चन्द्रमा यदि नाश या मरणावस्था में हो तो प्रश्नकर्त्ता प्रश्न दुःख-सुखके विषयमें करेगा।

❀ मेषादिलग्नोपरि प्रश्नफलचक्रम् ❀

	मनश्चिन्ता प्रश्न	रोगिणां प्रश्न	संज्ञाएँ
मेष	मानवीय जीव चिन्ता	देवी या कुल देव दोष	धातु-चर
वृष	गाय भैंस आदि पशु	पितृ अतृप्ति दोष	मूल-स्थिर
मिथुन	गर्भ विषये चिन्ता	शंकिनी डंकिनी दोष	जीव-द्विस्वभाव
कर्क	व्यवसाय नौकरी चिन्ता	भूत-पिशाचादि दोष	धातु-चर
सिंह	जीव मात्र की चिन्ता	स्वकुलीय मात्र दोष	मूल-स्थिर
कन्या	दाम्पत्य सुख-दुःख "	अपने देवता का दोष	जीव-द्विस्वभाव
तुला	गुप्त धन चिन्ता	कुपित चण्डिका दोष	धातु-चर
वृश्चि.	सांसारिक व्याधि "	मृत्वत्सा नारी दोष	मूल-स्थिर
धनु	आगम धनप्राप्ति "	यक्षिणी-पिशाचिनीदोष	जीव-द्विस्वभाव
मकर	शत्रु जय-पराजय "	स्थान एवं ग्राम दोष	धातु-चर
कुम्भ	अपनी जायदाद "	अपुत्र स्त्री कुदृष्टि दोष	मूल-स्थिर
मीन	देव,भूतपिशाचादि "	कुपित वायु ग्रहरश्मिदोष	जीव-द्विस्वभाव

अन्धसंज्ञकनक्षत्र- रोहि.,पुष्य,उफा,विशा.,पूषा,धनि और रेवती हैं। इनमें यदि कोई वस्तु गुम हो जाय या किसीको दे दी जाय तो वह शीघ्र मिल जाती है। पूर्व दिशा में जाती है।

कमदृष्टिसंज्ञकनक्षत्र-अश्वि.,मृग.,श्लेषा,हस्त,अनु.,उषा.और शत है इनमें खोनेवाली वस्तु दक्षिणमें जातीहै बहुतयत्न करनेपर मिलती है।

मध्यसंज्ञकनक्षत्र-भर.,आर्द्रा,मघा,चित्रा,ज्ये.,अभि.और पूभा.है,इनमें चोरी गई वस्तु पश्चिममें जाती है।कुछ दिनमें केवल सूचना मिलती है।

सुलोचनसंज्ञकनक्षत्र-कृति,पुन.,पूफा.,स्वाती,मूल,श्रव.और उभा है। इनमें गुमहोने वाली वस्तु उत्तरमेंजातीहै न प्राप्त होती है न खबर मिलती है।

वारोंकीमान्य दिशाएँ- रविवारकी पूर्व, चन्द्र की वायव्य,मंगल की दक्षिण, बुध की उत्तर,गुरू की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम होती है। किस नक्षत्रका किस वार से सम्बन्ध कैसा बना है सो विचार कर उत्तर देना चाहिए।

कोई घर से चला गया है? इस प्रश्नोत्तरके समय नक्षत्र,वार,चौघड़िया और तत्कालीन लग्न संशोधन से जाना जा सकता है,कि वह कहां किस परिस्थितिमें है। मिलेगा या नहीं, नहीं तो उत्तर विवेकपूर्ण ढंग से दें,जिससे पूछने वालेको बुरा भी न लगे और बात भी पूरी हो।

गर्भसम्बन्धी प्रश्न- कुण्डलीके तृतीय,सप्तम,नवम,पंचम स्थानमें रवि भौम या गुरु पुरुष ग्रह स्थिति हो तो पुत्र और यदि उक्त स्थानोंमें अन्य ग्रह पड़ें हों तो कन्या जन्म कहना चाहिए।

नष्टवस्तु प्रश्न- प्रश्नकालीन तिथि,वार,नक्षत्र और लग्नांक में तीन मिलाकर ५ का भाग दें, शेष १ बचे तो पृथ्वीमें, २ बचे तो जलमें परन्तु मिले नहीं। ३शेषमें ऊँची जगह पर, ४शेष में वस्तुको राज्यखजानेमें जानें और ० शेष में गई हुई वस्तु हवामें नष्टप्रायः जानें फल शोक सन्ताप कहें।

कार्य पूरा होगा या नहीं?- प्रश्नदिन, वार, तिथि, नक्षत्र और प्रहर संख्या मिलाकर ३ से भाग करें। यदि शेष १ बचे तो प्रश्न सत्वगुण सम्पन्न जाने, फल कार्य शीघ्र सिद्ध होगा। २ शेष में प्रश्न रजतत्व प्रधान हुआ फल-कार्यमें विलंब होगा और यदि ० बचे तो तमप्रधान प्रश्न का फल-निष्फल जानना चाहिए।

पथिकागमन प्रश्न- तिथि,वार,नक्षत्र और प्रहर संयुक्त संख्यांक को ७ से भाग देकर फल विचार करें। दूसरी विधि-कृतिका से प्रश्न दिन नक्षत्र तक गिने ७ से भाग करें, १ शेष से स्थान में जानें, २ से मार्ग में, ३ अर्धमार्ग में, ४ से ग्राम में, ५ से आ रहा था लौट गया, ६ से रोगी है और यदि ० शेष बचे तो फल महाअशुभ जानें।

कार्यसिद्ध होगा या नही?- प्रश्नकर्त्ताकी सम्मुख दिशा, प्रहर, वार और नक्षत्र संख्यांक जोड़ में ८ का भाग दें। १।५ शेषमें शीघ्र कार्य सिद्ध होगा, ६।४ बचने पर तीन दिनमें, ३।७ में विलम्ब से काम बनेगा। २।० शेषमें कार्यपूर्तिमें सन्देह है, परेशानी हो सकती है।

अंक प्रश्न- परमात्माके एक सौ आठ नामांकोंमें से किसी एक का नाम कहलवायें अर्थात् १०८ संख्यांक में से कोई भी संख्या प्रश्न पूछने वाला कहे उसको १२ से भाग करें। १।७।९ बचे तो काम पूरा होने में देर लगेगी, ३।० बचने पर काम शीघ्र पूरा होगा, २।६।११ से सिद्धि मिलेगी, ४,५,८,१० बचनेसे कार्य हानि सम्भव है।

पशु खोये जानेका प्रश्न- सूर्याश्रित नक्षत्र से पशु (सफेद या लाल) खोये गये दिन नक्षत्र तक गिनें। ९ नक्षत्र संख्या तक पशुको जंगलमें भ्रमता जानें,१५तक निजस्थानके समीप,२२ तक शीघ्र मिलेगा,२४ तक मिलनेकी आशा नहीं और यदि आगे संख्या हो तो नष्टप्राय जानें खबर नहीं मिलेगी। काले पशु,भैंस,बकरी,कुत्तादि खो गया हो तो शनि जिस नक्षत्र पर चल रहा हो उससे गिनती करके फल ऊपर कहे अनुसार जानें।

पथिकागमन विचार- प्रश्नाक्षरोंको द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें। जो शेष बचे उसका फल इस प्रकार बतायें- १.आने की सोच रहा है। २.चल पड़ा है। ३.रास्तेमें है। ४.शीघ्र आ जायेगा। ५.ठहर के आयेगा। ६.अस्वस्थ है। ७.नहीं आएगा। मृत्यु या कष्ट में है ऐसा कहें।

देशान्तरसे सूचना मिलेगी या नही?- प्रश्नलग्न चर राशिका हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हों तो पत्र जल्दी आयेगा,मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से मिलेगा। प्रश्न लग्नमें चन्द्र हो व शुभग्रह देखें तो पत्रआयेगा। द्विस्वभावलग्न हो तो उत्तरनहीं मिलेगा।

पुत्र लाभ होगा या नही?- प्रश्नकालीन तिथिसंख्याको ४ से गुणाकर, १ जोड़ना तदन्तर वार तथा योगकी संख्या युक्त करके २ से भाग देना, जो लब्धि आये उसको ३से गुणाकरके ४ से भाग देना। जो १ शेष बचे तो विलम्ब से पुत्र सन्तान होगी। चिरंजीविताके लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए। शेष २ बचे तो पूर्व जन्मके पापके कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंशपुराणका नवाह्न सुनने तथा सन्तान गोपालके सवालक्ष जपसे सम्भव है, ईश्वर कृपा करें। ३ शेष रहे तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीबकी कन्याका विवाह कर दें, या उसके विवाह में गुप्तदान से मदद करें। ऐसा करनेसे पुत्रका पूर्णसुख होगा। ०शेषमें सन्तान शीघ्र होगी।

टिप्पणी- दिनमान को ४ से भाग करने पर एक प्रहरका मान होता है। वार की गिनती रवि से होती है। तिथि की गिनती शुक्ल प्रतिपदा से, नक्षत्रकी अश्विनी से और दिशाओंकी गिनती पूर्वको एक मानकर की जाती है।

विवाह होगा या नही?- प्रश्नकालीन कुण्डली में २।३।६।७।१०।११वें भाव में पड़े चन्द्रमाको बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायेगा। १।३।५।६।७।११वें भावस्थिति चन्द्रमापर सूर्य, बुध, गुरु, का प्रभाव हो अथवा व्ययेश सप्तम में और सप्तमेश लग्नमें या २।४।७ इन राशियोंमें से किसी एक राशि में चन्द्र या शुक्र हो तो विवाह अवश्य हो जायेगा। चन्द्रमाके साथ पापीग्रह होने पर कठिनाई होती है।

विवाह कितनी उम्र में होगा?- जन्मकुण्डली में सप्तमेश सूर्य हो तो २६, चन्द्र हो तो २२, मंगल हो तो १८, बुध हो तो १५ गुरु हो तो २४, शुक्र हो तो २०, शनि हो तो २८वें वर्ष में विवाह होगा। सप्तमेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो अवधि कम तथा अशुभ ग्रह संयोगात और भी विलम्ब होता है। गोचरमें शुभ गुरु या शुक्र ५।७।९।१०।११ भावमें आते हैं तब विवाहका संयोग बनता है।

विवाह किस दिशामें होगा?- इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले कुण्डलीमें सप्तमेशका ध्यान कीजिये। सप्तमेशसे सप्तम भावेश और सप्तमेशकी दिशामें विवाह होता है।

दाम्पत्यजीवन कैसा बनेगा?- कुण्डलीके चतुर्थ और सप्तम घर में शुभ ग्रह हो या इन स्थानोंके भावेश शुभ हो तो घर गृहस्थीका पूर्णसुख मिलता है। सप्तमेश सूर्य भौम गुरु शुक्र होने से कन्याका पति सर्विस वाला होता है। बुध चन्द्रसे शान्त स्वभाव निजी व्यवसायरत। मंगलसे उच्चपदासीन क्रोधी। शनि हो तो जिद्दी स्वभाव सांवला कदलम्बा दुबला पतला होता है।

फल परिणाम प्रश्नोत्तर- प्रश्नकर्त्ता इच्छित फल फूल लेकर ज्योतिषी के पास आये तदनुसार ज्योतिषी फल कथन करें। फल-फूल नाम और प्रश्नकर्त्ता नामाक्षर जोड़कर ९ का भाग दें, जो शेष बचे उसका फल कहें। यदि १।३।५।७।० शेष रहे तो तत्काल कार्यसिद्ध होगा। २।४ से विलम्ब से काम बनेगा और यदि ६।८ बचे तो कार्य हानि, दुःख-शोकादि, परेशानी जानें।

प्रश्नकर्त्ता- द्वारा लाये गये फल फूल संख्यांक तुल्य दिन वर्ष मासमें फलका परिपक्व होता है। फलोंका रंग रूप आकृति देखकर सहजही सुख दुःख का अहसास किया जा सकता है, लाये हुये फल रस युक्त है या शुष्क यह भी ध्यान देने योग्य है।

जय-पराजय प्रश्न- यदि तीसरे भावसे लेकर आठवेंभावतक शुभग्रह अधिक बलवान हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान हो तो मुद्दई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्नमें बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा,परन्तु वहां पापग्रह नीच राशिमें हो या अस्त हो या शत्रु राशिके घर में हो तो हार जायेगा।

❀ मुकद्दमा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर ❀

वादी उसको जानिए केस चलावै जोइ।
जाके ऊपर केस है, प्रतिवादी है सोइ॥
प्रतिवादी है सोई प्रश्न कोई पूछन आवै।
उसी वक्त का लग्न पूरि परिणाम बतावै॥
द्विज पूरन समझाय लग्न को मानो वादी।
दसवां न्यायाधीश, सातवां घर प्रतिवादी॥१॥

शुभ राशिमें लग्नहो, शुभग्रह देखत होय।
पापी क्रूर सप्तम परै, वादी विजयी होय॥
वादी विजयी होय, यदि घर सप्तम शुभ हो।
लग्न पाप युत परै, जीत प्रतिवादी की हो॥
भाषत पूरनचन्द लग्न-सातवें दोऊ पापी।
द्वन्द्व बढ़ै बहु काल होएगी आपा धापी॥२

एक, सात, छः भाव के, स्वामी होवें मित्र।
सन्धी जरुर होएगी, ईश्वर गती विचित्र॥
ईश्वरगती विचित्र, बली दशमेश शनीचर।
रिश्वत लेकर न्यायं करैगो, जज्ज फटीचर॥
भाषत पूरनचन्द, कर्मक्षेत्र में दिनकर आवै।
जुर्माना करै अंवश्य, साथ में सजा सुनावै॥३

❀ चोरी से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर ❀

चोरीमें गये मालकी दिशा प्रश्न लग्नेश ग्रहकी दिशा समझनी चाहिए। यदि केन्द्र में दो या दो अधिक ग्रह हों तो सबसे बली ग्रह की दिशामें धन गया जानना चाहिए। सप्तमेश व चन्द्रमा सूर्य के साथ हों तो चोरीमें गया सामान मिलता नहीं। प्रश्नलग्न से ३।५।७।११वें स्थान शुभग्रह हो तो धन मिल जाता है।

प्रश्नलग्न प्रथम द्रेष्काणमें हो तो चोरी गया सामान चोर ने द्वार के पास रखा है। द्वितीय द्रेष्काण में घर के मध्य तथा तृतीय द्रेष्काण में सामान पीछे के भाग में रखा है, ऐसा जानना चाहिए।

❀ लग्नगत गये मालकी दिशा आदि ज्ञानार्थचक्रम् ❀

प्रश्न लग्न	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
गये मालकीदिशा	पू.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	प.	प.	वा.	उ.	उ.	ई.
चोर का वर्ण	उच्च	क्षत्रिय	वैश्य	अन्त्य.	अन्त्य.	स्त्री.	पुत्रमि.	नौकर	स्त्रीभा.	वैश्य	अनभि	स्वयं
माल कहां रखाहै?	जमीन	पशुस्थ	सहवा	जलमें	जंगल	ओख.	निजक्षे	गुप्तज.	अलग	जलमें	घरमें	भूलहुई
नामाक्षर	सअक्ष	मकार	ककार	तकार	नकार	मकार	भकार	सकार	सकार	सकार	चकार	चकार

जन्मलग्नज्ञानम्- प्रश्नकालिक लग्नस्थ द्रेष्काण से सूर्य जितनी संख्याके द्रेष्काणमें हो उतनी ही संख्यामें सूर्य से जो राशिहो उसी को जन्मलग्न समझना चाहिए।

द्वितीय प्रकार- प्रश्नकर्त्ता खड़ा होकर जिस लग्नमें प्रश्न करे, वही उसकी जन्म लग्न होती है। इसी प्रकार लेटा हुआ प्रश्न करे तो तत् कालीन लग्नसे चौथीलग्न जन्मलग्न होती है। यदि बैठा हुआ प्रश्न करे तो प्रश्नलग्नसे सप्तम राशि जन्मलग्न होती है, और यदि यकायक उठकर प्रश्न करने लग जाय तो प्रश्नकालीन से दसवीं राशि ही जन्मकी लग्न होती है।

तृतीय प्रकार- यदि प्रश्नकालिक लग्नमें ग्रह हो तो राश्यादि स्पष्ट ग्रह की कला बनाकर, यदि प्रश्नलग्नमें कई ग्रह हों तो उनमें जो सब से बली हो उसकी कला बनाकर, प्रश्नस्थानकी पलभासे गुणा करके बारह से भाग करने पर जो शेष हो वही जन्मलग्न प्रश्नकर्त्ताकी होती है। ऐसा निःशङ्क कहना चाहिए।

जन्मनक्षत्र ज्ञानम्- प्रश्नकर्त्ताके जन्मनामकी मात्राओंको २ से गुणा करके उनमें जन्मस्थानीय पलभा जोड़कर २७ से भाग करने पर जो शेष बचे वह धनिष्ठादि गिनती करके जन्मनक्षत्र जानें। जन्मनाम के आद्य अक्षरानुसार नक्षत्र होता है।

यन्त्र

४	३	८
९	५	१
२	७	६

अभीष्ट स्मरण करके यन्त्र के किसी एक कोष्ठक पर अनामिका अंगुली रखें। तत्तुल्य अंक में १३ जोड़कर ९ का भाग दें। शेष एक बचे तो धनवृद्धि, २ से धनहानि, ३ से आरोग्यता, ४ से आदिव्याधि, ५ से दाम्पत्यलाभ, ६ से बन्धुकष्ट, ७ से कार्यसिद्धि, ८ से जीवहानि और ०शेष बचे तो राज्य-समाज से लाभ होता है।

कालास्यपुखदंष्ट्रा ज्ञानम्- रोगदिन नक्षत्रसे रोगीके नामनक्षत्र तक गिनने पर ५।१४।२३ संख्या हो तो कालका मुख होता है। इसी प्रकार ९।१०।१८।१९वां नक्षत्र दंष्ट्रा(दाढ़ा) होती है। कालमुख या दाढ़में जिसदिन गोचरमें नक्षत्र प्राप्त हो उसदिन अत्यन्त रोगग्रस्त व्यक्तिकी मृत्युतुल्य हालत होती है। रोगोत्पत्ति,सर्पादि दर्शन, गिद्धादिके स्पर्श, विग्रह तथा युद्धमें जाते समय मुखदंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो महाअशुभ होता है।

कालांगचक्र शुभाशुभ फलम्- व्यक्ति विशेष अंगादि में पीड़ा,कष्ट, घाव,फोड़ा,केन्सर आदि चर्मविकार हो तो तत्काल प्रश्नकुण्डलीमें कालांग चक्रानुसार उस पीड़ित भाव को देखें। अतः उसभावमें अशुभ ग्रह हो या वहभाव पापदृष्ट हो, उसमें नीच ग्रह शुभ प्रभाव रहित हो तो उसमें अधिक कष्ट सम्भव है। शान्ति-हेतु उस ग्रह से सम्बन्धित विवरण शान्ति प्रकारण में देखें।

❀ कालपुरुष के अङ्गों में राशियों का स्थान ❀

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंङ्ग	शिर	मुख	भुजायें	हृदय	उदर	कटिभाग	मूत्राशय वस्ति	गुप्ताङ्ग	जंघायें	घुटने	पिंडलियाँ	अंगुलियाँ पैर

नोट- कुछ दैवज्ञ भावोंके स्थान पर मेषादि द्वादश राशियोंकी कल्पना करके इसी प्रकार विचार करते हैं।

❀ रोग त्रिनाड़ी चक्रम् ❀

आर्द्रा.	पूफा.	उफा.	अनु.	ज्येष्ठा	धनि.	शत.	भरणी	कृति.	आदि
पुन.	मघा.	हस्त	विशा	मूल.	श्रव.	पूभा.	अश्वि.	रोहि.	मध्य
पुष्य.	अश्ले.	चित्रा	स्वा.	पूषा.	उषा.	उभा.	रेव.	मृग.	अन्त्य

सूर्यनक्षत्र, दिननक्षत्र और जन्मनक्षत्र या नामनक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्रमें एक नाड़ीपर हों तो रोगीकी मृत्यु होती है। प्रतिदिन देखनेसे जिसदिन यह त्रियोग मिले, उसदिन रोगीकी मृत्यु या विशेष कष्ट जानें। यह रोग त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा युद्धके समयभी वर्जित है।

तिथि कष्टावली चक्रम्

ति.	तिथीशाः	कष्ट दिन	बलि-वस्तु	दान-वस्तु
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि	घृत अन्न दान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि	भोजन दान
३	गौरी	७	घृतान्न बलि	रक्तवस्त्र दान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि	मूंगा दान
५	सर्प	२१	पायस बलि	दुग्ध दान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्न बलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायस बलि	ताम्रपत्र दान
८	शिव	१३	नानाभक्ष्य बलि	पीतवस्त्र दान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्न बलि	रक्तवस्त्र दान
१०	यम	२५	कृशरान्न बलि	नीलवस्त्र दान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्न बलि	पीतवस्त्र दान
१२	विष्णु	७	मोदकान्न बलि	श्वेतवस्त्र दान
१३	काम	१०	दधिशर्करा बलि	सुवर्ण दान
१४	महादेव	६०	मिष्ठान्न बलि	क्षीरशाक विजिया
१५	चन्द्र	३	दध्यादिन बलि	रौप्य (चांदी)दान
३०	पितर	१८	पकान्न बलि	उत्तमान्न भोजन

❀ रोगोत्पत्तौ कुयोगाः ❀

रोगके शुरू होने वाले दिनमें रोगीकी राशि, जन्मनक्षत्र एवं जन्म लग्न से चौथे, आठवें चन्द्रमा या लग्नेश आदि अन्य ग्रह पड़े हों, अथवा यमघण्ट,यमदंष्ट्रा,मृत्युदादि कुयोग हो तो रोगका निदान कठिन होता। यद्यपि प्रतिवर्ष निकृष्ट योगोंका उल्लेख हम अपने पंचांगमें कर देते हैं। फिरभी पाठकोंकी सुविधा हेतु वार, नक्षत्रादिसे बनने वाले कुयोगोंके विषयमें लिख रहे हैं।

रविवारको भरणी, मघा, अनु., धनि. नक्षत्र, द्वादशी तिथि हो।
सोममें आर्द्रा,विशा,मूल,उषा नक्षत्र एवं भद्रा२।७।१२ तिथियां हों।
मंगलको भर.,कृति.,मघा व शत. नक्षत्र नन्दा तिथियां १।६।११ हों।
बुधवारमें अश्वि.,पुन.,चित्रा,विशा.,मूल,पूषा.नक्षत्र जया ३।८।१३ तिथियाँ हों।
गुरुवारको मृग.,मघा,ज्येष्ठा,उषा.नक्षत्र रिक्ता ४।९।१४तिथियां हों।
शुक्रवारमें रोहि,श्लेषा,श्रव.,धनि नक्षत्र भद्रा २।७।१२ तिथियां हों।
शनिको हस्त,श्रव.,शत.,पूभा नक्षत्र पूर्णा५।१०।१५।३०तिथियां हों।
सूर्य मंगल शनिवार में ६।९।१२।१४।३० तिथि,भर.,कृति., आर्द्रा, आश्ले. तीनोंपूर्वा विशा.,ज्येष्ठा,धनि.,शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है। यह रोगोत्पत्ति दिनका विचार है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेशका भी विचार कर लेना चाहिये क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां ऐसे कुयोगोंमें कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। बताये गये कुयोगोंमें से किसी भी कुयोगमें रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा महामृत्युञ्जय जप करना कल्याणकारी है।

वारकष्टावली चक्रम्

वार	वारेश	कष्ट दिन	बलि एवं दानादि
रवि	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चन्द्र	गौरी	८	नानाभक्ष्य बलि चन्द्रदान
मंगल	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बुध	विष्णु	७	मृद्गान्नबलि बुधदान
बृहस्पति	ब्रह्मा	५	घृतपक्वान्नबलि गुरुदान
शुक्र	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
शनि	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

❀ तेजी-मन्दी परिज्ञानम् ❀

श्रीब्रजभूमिपंचांगके पक्षोंमें गोवर्धन पद्धत्यानुसार मास,तिथि,वार,नक्षत्र, योग और मेषादि संक्रान्तियोंके ध्रुवाङ्क जोड़कर लिख दिये जाते है। जिन्हें तेजी-मन्दी सूचकांक कहते है। बीचके कालम में वस्तु ध्रुवाङ्क(सूचकांक) लिखे है। जिस मासमें जिस वस्तुकी तेजी-मन्दी ज्ञात करनी हो उसी मास के तेजी-मन्दी सूचकांकोंमें वस्तु ध्रुवांक जोड़कर तीन से भाग देने पर एक बचे तो मन्दीहो, २ बचे तो भाव समान रहें और यदि ० शेष बचे तो वह वस्तु तेज होगी,ऐसा जानें।

भाव कितने बढ़ेंगे या घटेंगे?

चन्द्रदर्शन एवं सूर्य संक्रान्ति के मुहूर्त्तो का चालू मार्किट के रुख पर बहुत ही प्रभाव पड़ता है। इसलिए चन्द्रमा एवं संक्रान्ति का मुहूर्त्त कितना है। यह प्रत्येक पक्ष में लिखा रहता है। सामान्यतः संक्रान्ति व चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त, १५ तेजी के, ३० समभाव के और ४५ मन्दी के सूचक होते है।

नक्षत्र ग्रह वेध, नक्षत्र दृष्टि तथा ग्रहोंका नक्षत्र व राशिचार, उदयास्त तथा वक्री-मार्गी होनेका बहुतभारी प्रभाव चालूमार्किट पर पड़ता है। सस्यजातकमें अर्ध से सम्बन्धित अनेक योगोंका वर्णन मिलता है। पंचांगके पाक्षिक फलमें अनेक विषयोंका खुलासा हम करते रहते है। अन्तरिक्षमें बननेवाले शुभाशुभ योगोंको ध्यानमें रखते हुए फलका निश्चय करना चाहिए। ज्योतिषशास्त्र अथाह सागर है अतः किसीभी नियमको **'इदमित्थं'** नहीं कहा जा सकता।

संक्रान्तिकालीन कुण्डलीमें सूर्य शुभ ग्रहोंसे युत या दृष्ट हो तो सूर्याश्रित राशिके प्रभावान्तर्गत आने वाली वस्तुओंका बाजार भाव बढ़ जाताहै। अशुभ ग्रहोंसे दृष्ट या युत होने पर भाव घट जाते है।

अमावस्या अथवा पूर्णिमाको चन्द्रमा शुभ ग्रहोंसे युत या दृष्ट हो तो चन्द्राश्रित नक्षत्राधीन वस्तुओंके भाव बढ़ जाते हैं। अशुभ ग्रह युत या दृष्ट होने पर भाव घटा करते है। सूर्य चन्द्र ग्रह संयोगात् के अभावमें मुहूर्त्तदर्शनका प्रभाव परिलक्षित होता है। सूर्य, चन्द्र व बुध से जिस समय जैसे ग्रहका वेध लगेगा। वैसी ही प्रतिक्रिया व्यापार जगत् में होगी। जैसे- सूर्य, चन्द्र, बुध का वेध होने पर सरकार व्यापारका निरीक्षण करने लगती है। छापे पड़ते हैं या आयात निर्यात् सम्बन्धी विचार विमर्श होने लगता है।

❀ वस्तुध्रुवाङ्क(वस्तुनाम) तेजी-मन्दी सूचकांक ❀

अफीम ८८४	अजमोद १७१	आँवला ७७४	अश्व ८७१	अगर १२	इलायची २१
ऊन १५०	ऊँट ४८४	कस्तूरी २८४	कसुंबी ४६२	कपास ३५	करडी १२५
कांगनी २३४	काष्ठ ८१	कांसा १०१	कांगड़ी ८१	कथीर १८२	कटु २२४
कांच २८७	कंकुम ९५	कुलथी ३३	कुरी ७७	कलाय २७४	कूट १०५
उड़द १४३	केसर २२७	खजूर १२६	गरी १७६	गुडाल ८२	गेहूँ २८५
कपूर ९२	केशव १०१	खली ६२	गधा २७४	गोंद २३५	ग्वार ९१
कपड़ा ४८	कोदव १०९	खांड २४७	गाय २८३	गुड़ ६६	घृत ४४५
चना २४२	जीरा ७७३	पश्मीना ५२	मसूर २८३	लकड़ी २२४	सार ८७२
चावल ३७२	तम्बाखू २८३	पारा ६२७	मटर ४८	लाख ८८	सुहागा ६७
चांदी १२८	तांबा ८९	पीपल १२८	मिर्च ६३०	लोध ८३०	सुपारी १०८
चिरौंजी ७७८	तिल १८	पीतल १०२	मुरदाशंख ९४	लोहा २७८	सोना ६८
चिरायता २३०	तीसी १०८	वच ७३	मूंग ३५२	लौंग २७	सोड़ा ९१
चीनी १२८	तुवर ५५७	बादाम ७६०	मूंज २१	शाली ३२	हल्दी ५४
चोला ७२	तृण ७३५	दुशाला २८	मूंगफली २१२	सौंचर १२	हरड़ ८४७
चन्दन १२६	तेल ५४७	वहेड़ा ७८४	मैथी ३६	सरसों ८४०	हरताल ७२५
चंदनलाल ११५	दाख ३२०	बकरी ३२१	मोठ ६८२	सन ८८२	हाथी ४८२
जस्ता ७८६	दाना ६२	बाण १२५	मोती ८०	रूपा ८८	हिंगलू ८२७
यव ७७२	धनिया ४४२	बाजरा ७१८	राई ४४१	लहशुन १०१	हींग २४
ज्वारी ७७७	नारियल ३०४	रेशम ५०	सज्जी ८८४	बैल १४४	भैंस ६८४
जायफल २३	नील ५३१	रूई १७३	शाक ८८४	किसमिश २४०	सट्टा २०५

❀ शुभाशुभ नक्षत्र ❀

श्रुति गुन कर गुन यु जुग मृग हय रेवती सखाउ।
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुं न जाइहि काउ।।

गो.तुलसीदासजी के मतानुसार शुभनक्षत्र-अश्वि.,मृग.,पुन.,पुष्य,हस्त, चित्रा,स्वाती,अनु.,श्रव.,धनि.,शत. और रेवती हैं। जिनमें जमीन जायदाद सम्बन्धी लेनदेन में व्यय होने पर या बहुलाभकारी योजनामें लगाया जाने पर धन जाता हुआ प्रतीत होने पर भी नहीं जायेगा, अर्थात् नुकसान नहीं होगा।

ऊ गुन पू गुन वि अज कृ म आ भ आ मू गुनु साथ।
हरो धरो गाड़ो दियो धन फिर चढ़ह न हाथ।।

अशुभनक्षत्र- भर.,कृति.,रोहि.,आर्द्रा,आश्ले.,मघा,पूफा,उफा,विशा, मूल,पूषा,उषा,पूभा और उभा हैं। इन १४नक्षत्रोंमें हरा हुआ(चोरीगया हुआ) धरोहर रखा हुआ, गाड़ा गया या कारोबारमें लगाया हुआ तथा उधार दिया हुआ धन फिर लौट कर हाथ नहीं लगता।

टिप्पणी- इन नक्षत्रोंके अलावा भद्रा तथा व्यतिपात योगमें जो द्रव्य किसीको दिया जाय, पृथ्वीमें गाड़ा जाए या किसी व्यवहार में लगाया जाए या बैंकमें जमा किया जाए, अथवा चोरी आदिमें चला जाए तो वह फिर प्राप्त नहीं होता। यथा-

तीक्ष्ण मिश्र ध्रुवोग्रैर्यद् द्रव्यं दत्तं निवेशितम्।
प्रयुक्तं च विनिष्टं च विष्ट्या पाते च नाप्यते।।

मुहूर्त्त चिन्तामणिके इस श्लोकमें केवल एक नक्षत्र ज्येष्ठाके अलावा अन्य सब निषिद्ध नक्षत्र वही है जो गोस्वामीजी ने बताए हैं। मघाके बजाय ज्येष्ठाको अशुभ माना है। अतः मघाको द्रव्य प्रयोगमें न अशुभ न शुभ, बल्कि मध्यम समझना चाहिए और आवश्यकता में तत्परक तिथि,वार शुभ होनेपर ही उसे उपयोगमें लेना चाहिए।

लेनदेन के लिए वर्जित समय- रविवार,मंगलवार,संक्रान्ति दिन वृद्धि-योग और हस्तनक्षत्रमें यदि ऋण लें तो कभी मुक्त न हो। बुधवारको द्रव्य अनावश्यक देना नहीं चाहिए।

श्रीकाशीनाथके मतानुसार क्रय-विक्रय-मुहूर्त्त- पुष्य,श्लेषा,मघा,उफा, हस्त,स्वाती,अनु.,उषा.,श्रवण,पूभा,उभा,रेवती,**ऐषुत्रेषुसत्तिथौ शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय-विक्रय कार्यम्।**यह १२नक्षत्र शुभदिन शुभशकुन मिलनेपर व्यापारसम्बन्धीप्रत्येक कार्यमें सफलता मिलती है।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र- अश्वि.,चित्रा,स्वाती,श्रव.,शत.,रेव. वारोंमें बुध,रवि सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं।

वस्तु बेचनेके नक्षत्र- भर.,कृति.,श्लेषा,पूफा,विशा.,पूषा और पूभा, ये ७ नक्षत्र और गुरु, सोमवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

खरीदनेके नक्षत्रोंमें बेचना और बेचनेके नक्षत्र वारादिमें खरीदना सुनिश्चित रुप से घाटेका सौदा जानना चाहिए। जो वस्तु, पशु, धन जिस ग्रहके कारकतत्वमें आता है उसे उससे सम्बन्धित ग्रहके नक्षत्र, वार में युक्तियुक्त विचार कर बेचा या खरीदा जा सकता है।

कौनसी वस्तु किस ग्रहके अधीन है?

सूर्य- माणिक्य,स्वर्ण,पीतल,गुड़,खांड,चना,भूसा,हल्दी,सरसों,मुनक्का, सभी औषधियाँ,शर्बत,लालपीला रंग,रंगीन वस्त्र,सरकारी ऋणपत्र, पशु, वृक्षादि।

चन्द्र- मोती,चन्द्रकान्त(मून स्टोन)कल्चर्ड मोती,चांदी,पारा,दूध,दही,मक्खन,दूध से बने पदार्थ,मछली,सर्वौषधि,फल-फूल,रसदार पदार्थ,सोडा वाटर,बर्फ, शीशा।

मंगल- मूंगा,अकीक सुर्ख, सोना, तांबा, गन्ना, गुड़, मुनक्का, आसवारिष्ट, किसमिश, छुहारा,लौंग,किराना,कैडियम,हिल,गेहूँ,चना,मसूर,मोठ, लालसरसों, सुपारी, हल्दी, धनिया, लालमिर्च, शराब, चाय, काफी,चमड़ा,लाख, लालरंग, बारीक लालऊन, बारदाना, धातुपदार्थ, मशीनरी सामान, विभिन्न शेयर्स।

बुध- पन्ना, जबरजद हरा पत्थर, अकीक, विभिन्न रंगोंका फीरोजा, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ, मूंग, मटर, ग्वार, अरहर, काली खेसारी, सौंफ, सर्वरस, सर्वधान्य, हरी उड़द, पीली सरसों, घी, कपास, अलसी(तीसी), एरण्डा(अण्डी), बिनौला(काकड़ा), मूंगफली(सींगदाना), हैसियन, जूट, पाट, सफेद बारदाना, रेशम, टैक्सटाइल, न्यूजप्रिंट कागज, पेपर मिल्स के शेयर्स।

गुरु- पुखराज, सुनेला पत्थर, बुलियान, नमक, जमीन से पैदा होने वाले कन्द, मूल, आलू, प्याज, अदरक आदि सब्जियाँ, नकली सिल्क, पाट(कुष्टा), रबड़, तम्बाकू, बैंक शेयर्स खरड़ जवाहरात, समुद्री पदार्थ, हाइड्रो खाद।

शुक्र- हीरा,वैकान्त,ओपल,सफेद गेहूँ, चावल,चीनी,अरहर(तुअर),रुई,रेशम, हैसियन,सिल्क,फैन्सीगुड्स,श्रृंगारप्रसाधन की चीजें, अत्तारोंकी दवाएँ, टैक्स टाइल्स शेयर्स, देशी अंग्रेजी दवाएँ।

शनि- नीलम,लाजवर्त,कसौटी,तिलहन, खनिज आदि सर्व तेल, काले तिल, उड़द, तोरिया, कालीमिर्च,कालाऊन,काले रंग,बारदाना,कालीधारी भैंस, लोहा, वाहन,जस्ता,टीन,रांगा,सीसा,कांसी,संगमरमर,चमड़ा व चमड़े की चीजें,कोलतार, आयल शेयर्स, कोयलाकी खानोंके शेयर्स, कलपुर्जे तथा वाहनादि।

राहु-केतु- वैदूर्यमणि(लहसुनियाँ), दुआ(तारामीरा), संगमूसा, गोमेद, फीरोजा, वायरलैस, टेलीफोन, तार, बिजलीके सामान, एल्युमीनियम आदि मिश्रित धातुएँ दोनों ग्रहोंके अधीन है।

व्यापारिक अमूल्य चुटकुले- यदि कोई वस्तु सामयक भाव को देखते एकदम मन्दी हो जाए तो निश्चय १०० दिनके भीतर उसका भाव बहुत बढ़ जाता है। यदि तेज हो जाए उक्त अवधिमें काफी मन्दीका झटका लगता है।

भावबढ़ने पर विक्रय वाले नक्षत्रोंमें बेचना तथा भाव घटनेपर क्रय वाले नक्षत्रोंमें खरीदना चाहिए।

गुरुवारके बने भाव मामूली हेरफेर से अगले गुरुवारको वही होते हैं। मंगलको तेजी होकर यदि शनिवारको भी तेजी हो तो अगले मंगलवार तक तेजी ही चलती है। यदि शनिवारको मन्दी आ जाए तो तेजीकी लाइन रुकी रहेगी, ऐसा जानें।

किसीभी ग्रह के वक्री, अस्त, युतिकालमें जो भाव किसी वस्तु के बनें, उससे उलटा रुख उक्त ग्रहके मार्गी,उदय या युति छूटनेके बाद प्रायःहो जाता है। संक्रान्तिके पूर्वदिन का भाव संक्रान्तिके दिन मन्दा रहे तो आगे तेजीका रुख एक मास तक चलेगा। यदि तेज रहे तो मास पर्यन्त मन्दा जानें।

ग्रहगति अन्तर अपने अधीन वस्तुओं को बहुत ही प्रभावित करता है। चालूमार्किट रुखको पलट देता है। सर्वतोभद्र चक्रमें जहां जिस स्थानपर ग्रहवेध हो वहां सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

यद्यपि बुधग्रह सबसे छोटा ग्रह है लेकिन व्यापारका कर्ता होने से इसका बहुत तीव्र प्रभाव चालूमार्केट पर पड़ता है। बुध का सूर्य के साथ युति या प्रतियोग होने पर पृथ्वी पर शासनतन्त्र व्यापार पर नियन्त्रण करने लगता है या सरकार खुदही रेट घटाती-बढ़ाती है। शुभग्रह योग होने पर मंहगाई बढती है तो क्रूर पापग्रह संयोगात् मंहगाई घटती जाती है।

अन्तिम कालम में उल्लिखित मेषादि राश्याधीन वस्तुनाम ग्रह संचार तथा वेधादि के कारण विशेष प्रतिक्रिया हुआ करती है। उत्पात से विनाश होता है भाव बहुत बढ़ जाते हैं।

मण्डलं नगरं ग्रामो दुर्ग देवालयं पुरम्।
क्रूरैरुभयतो विद्धं विनश्यति न संशयः॥

अपनीसामर्थ्य और सम्पत्तिके अनुसारही व्यापार करना चाहिए। ज्योतिषसे लाभ उठाने वालोंको योग्य ज्योतिषी द्वारा अपने शुभाशुभ समयका ज्ञान करवा लेना चाहिए। अशुभ समय (बुरे दिनोंके फेर से) कभी-कभी भारी घाटा लग जाता है। भाग्यका कर्त्ता समय सर्वोपरि है। कालकी सत्ताको सभी नमन करते हैं। खोटेग्रहों के दुष्प्रभावको विनष्ट करनेमें धर्मसर्वोपरि है।

धर्मेणहन्यते व्याधि, धर्मेणहन्यते ग्रहाः।
धर्मेणहन्यते शत्रु, यतो धर्मस्ततो जय॥

राश्याधीन वस्तुएँ, देश तथा स्थान विशेष

मेष- चावल, तृण, सर्वधान्य, तुषधान्य, वस्त्र,घी, मिर्च, युगंधरी, सर्वौषधि। खच्चर, ऊँट। **देश-** इग्लैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, पोलैण्ड, सीरिया।

वृष- सर्वरस, चावल, जौ, सर्वधान्य, सर्वधातु, तिल, ऊनी वस्त्र, रत्न, मणि, हीरा। घोड़े, गाय, भैंस, गर्दभ। **देश-** आयरलैण्ड, फारस, साईप्रस, अर्धभाग रुस और हालैण्ड। दिल्ली, मध्य प्रदेश तथा केन्द्रशासित प्रदेश।

मिथुन- ज्वार, बाजरा, कोंदोधान्य, तुअर, तेल, लवण, सर्वक्षार रस, सुगन्धित द्रव्य, लाख, सोना, रुपा, शेयर्स। **देश-** यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका, (U.S.A.) बेल्जियम, इजिप्ट।

कर्क- गेहूँ आदि धान्य, चावल, गुड़, खांड, चीनी, मजीठ, सेलडी, सुण्ठी, कोंदो, सरसों,सब्जी,तेल,हींग, सौंचरनमक,कपास,रेशमी,वस्त्र,वर्फ, घी, सोना, रुपा **देश-** अफ्रीका, न्यूजीलैण्ड, हालैण्ड, स्काटलैण्ड। राजस्थान।

सिंह- चना, गुड़, मसूर, उड़द, मूंग, तिल, तेल, धृत, प्रवाल, कम्बल, ऊन, अलसी, कांगुनी, रुपा, युगन्धरी। **देश-** फ्रांस, इटली, सिसली, केलिफोर्निया, आल्पस, रोम, बम्बई।

कन्या- चावल, कोंदो, लहसन, सब्जी, चन्दन, कपूर, देवदारु, अगर तगर, कन्दमूल, पन्ना, सोना। **देश-** टर्की, स्विटजरलैण्ड, वेस्टइण्डीज, यूनान, येरुसलम, लासऐंजिल्स, पेरिस, बगदाद पाकिस्तान।

तुला- सुपारी, मिर्च, सरसों, तेल, राई, हींग, खजूर, मूँग, जौ, चावल, गेहूँ, मसूर मोठ। घोड़ा वाहन। **देश-** पश्चिमोत्तरीय भारत, इण्डोचाइना, आस्ट्रिया, तिब्बत,चीन,वर्मा, अर्जेन्टाइना, वियना, लिस्बन और जापान। कश्मीर, राजस्थान।

वृश्चिक- सभी अन्न, चावल, गुड़, हींग, मोठ, गुग्गल, लाख, कपूर, पारा, हिंगुल। **देश-** स्वीडन,ब्राजील, नार्वे, सीरिया, अल्जीरिया, वाशिंगटन, हैलीफेक्स, डोबर, लिवरपूल, न्यूफाउण्डलैण्ड, फ्रेंकफर्ट।

धनु- चावल,धृत, कन्दमूल, तुषधान्य, अनाज, सेंचर, सेंधा नमक, श्वेतवस्तु, रस। सुरमा, कपास, लवण। **देश-** अरब, इजरायल, आस्ट्रेलिया, हंगरी, स्पेन, मैडागास्कर। उत्तरप्रदेश।

मकर- दाख, खजूर, धृत, अखरोट, चिरौंजी, पिप्पली, सुपारी, इलायची, मूंग, जायफल। लोहादिस्याह धातु। **देश-** भारत, सीरिया, अफगानिस्तान, बल्गेरिया, मेक्सिको, लिथुनिया।

कुम्भ- मद्यादि अर्क, नशेड़ी वस्तुएँ, प्रियंगु, मूल, जवित्री, देवदारु, तेल, सर्वधान्य, सर्वधातु, सर्वौषधि कोंदो। भैंस,वाहन। मणि, मोती, नीलम आदि रत्न। **देश-** अर्धाल्प अरब, रुस, अबीसनिया, स्वीडन।

मीन- गुड़, खांड, शक्कर,चावल,धृत,नारियल,सुपारी,त्वली, किराना। मणि, मोती **देश-** पुर्तगाल,सहारा,रेगिस्तान,अलैक्जेंड्रिया,पंजाब,हिमाचल हरियाणा।

वर्षफल बनाने की विधि

वर्ष शुभाशुभ फलित हित, जो सम्वत् आमाब्द।
जन्म का सम्वत् हीन करि, जो बचे वर्ष शेषाब्द।।

वर्षका शुभाशुभ फल जाननेके लिए वर्तमान सम्वत् में से जन्मका सम्वत् घटा दें, जो शेष बचे उन्हें शेषाब्द (गताब्दाः एवं ध्रुवाङ्काः) भी कहते हैं। शेषाब्द संख्यांकतुल्य वर्षप्रवेशसारणीमें जो वारादि अंक मिलें, उन्हें जन्मके वारादि इष्ट घट्यादि में जोड़नेसे वर्षप्रवेशका वारादि इष्टकाल होगा। उसी इष्ट परिमित लग्नवत् क्रिया करने से वर्षलग्न सिद्ध हो जाएगा।

नोट- जन्म वारादि इष्ट घटी-पल और सारणीसे प्राप्त वारादि घटी-पलोंका जोड़ ६० से अधिक हो तो ६० से भागकर शेष ग्रहण करें, और वार के स्थान पर एक बढ़ा दें। वार संख्या ७ से अधिक हो तो ७ से भागकर शेषांकको रविवार से गिनती करें। ध्यान रहे- प्रतिवर्ष जन्मकालीन तारीख मासके आसन्नही वर्षेष्ट सिद्ध होता है। **वर्षारम्भ कुण्डलीमें** तत्कालीन गोचरग्रह यथावत् रखे जाते है अर्थात् वर्षप्रवेश समये(पंचांगमें उल्लिखित) जो ग्रह जिस राशिपर चल रहा हो उसे उसी राशिमें रख देते हैं। वर्षप्रवेश कुण्डलीमें प्रधान ग्रह मुन्था (जीवसाक्षिणी) मानी जाती है।

मुन्था लगानेकी विधि-

जन्म लग्न मे मुन्था, जन्म समय बलवान।
भोग एक राशि वर्ष, कौशिक वचन प्रमान।।

कौशिकजीके वचनानुसार जन्म समयमें मुन्था जन्मलग्नमें स्वस्थबलवन्ती होती है। प्रतिवर्ष प्रति एक राशिका भोग करती हुई पुनः(१३) तेरहवें वर्ष में जन्म लग्नांक राशिमें मुन्था आ जाती है।

वर्षारम्भ कुण्डलीमें मुन्था लगानेकीविधि- गताब्द संख्यामें जन्म लग्नांक जोड़कर १२ का भाग दें; शेषांकतुल्य(राशि) में मुन्था लगा दें।

दूसरी विधि- गताब्द संख्यामें १ जोड़कर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे, जन्म लग्न से उतनी संख्यांक राशिसे मुन्था होती है। मुन्था प्रतिदिन ४.९३१५ कला चलती है।

वर्षमध्ये मुद्दादशा-ज्ञानायचक्रम्

ग्रहाः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दादशा जाननेकी विधि- जन्मनक्षत्र संख्यामें गताब्द संख्या जोड़कर २ घटा दें। ९से भाग करनेपर जो शेष बचे उसी नम्बरकी मुद्दादशा वर्षारम्भ में होती है। यथा १ शेष बचे तो सूर्य की, २ शेष में चन्द्रमा की, ३ में मंगल ४ में राहु, ५ में गुरु, ६ में शनि, ७ में बुध, ८ में केतु और ० शेष रहनेपर शुक्रकी दशा जाननी चाहिए। नक्षत्र गणना अश्विनीको १ मानकर अभिजित रहितकी जाती है। वर्षारम्भे दशा सुनिश्चित समयानुसार भोग करती हुई चक्र (वर्ष) पूरा करती है।

त्रिराशिपति ज्ञानार्थचक्रम्

वर्षलग्नम्	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	च.	बु.	म.	श.	म.	गु.	च.
रात्रौ	गु.	चं.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

दिनमें वर्षप्रवेश हो तो मेषादि राशियोंके क्रमशः सूर्य, शुक्र, शनि आदि ग्रह त्रिराशिपति होते हैं और यदि रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो गुरु, चन्द्र, बुधादि ग्रह त्रिराशिपति माने जाते हैं।

स्वोच्चबल- वर्ष कुण्डलीमे सू.१।५ चं.२।४ मं.१।८।१० बु.३।६ गु.४।९।१२ शु.२।७।१२ श.७।१०।११ इन स्थानोंमें होने पर ५ बल देते हैं। **पुरुष-स्त्री बल-** स्त्रीसंज्ञकग्रह (चं बु.शु.श) १।२।३।७।८।९ और पुरुषसंज्ञकग्रह (सू. मं.गु.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानोंमें बैठने पर ५ बल देते हैं। **दिन-रात्रि बल-** दिनके वर्षेष्ट में पुरुषग्रह और रात्रिके इष्टमें स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

अथ वर्षेषाधिकारी

१जन्म लग्नेश, २वर्ष लग्नेश, ३मुन्थेश, ४त्रिराशिपति तथा ५दिनमें वर्षप्रवेश हो तो सूर्याश्रित राशिकास्वामी और यदि रात्रिमें वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्राश्रित राशिकास्वामी इनका बल विचार कर जो सबसे बलीहो और लग्नको देखता हो वह वर्षेश होता है। यदि लग्नको न देखताहो तो वह वर्षेश नहीं होता। यदि दो ग्रह समान बली हों तो लग्नपर जिसकी दृष्टि विशेष हो वही वर्षेश होता है। बल, दृष्टि एवम् अधिकार दो या दो से अधिक ग्रहोंका हो तो मुन्थेश ही वर्षेश होता है।

वर्षकुण्डलीमें स्थित ग्रहदृष्टि ज्ञान और फल- जो ग्रह जिस भावमें पड़ा हो उससे ५।९वें को प्रत्यक्ष मित्रदृष्टि से देखता है। **फल-** कार्यमें शीघ्र सफलता, सुत प्राप्ति, स्नेह वृद्धि, सौख्य-समृद्धि और विरोधियोंसे सौहार्दपूर्ण मैत्री लाभ मिलता है। ३।११वें गुप्त मित्र दृष्टिसे देखता है **फल-** प्रत्यक्षकार्य में सफलता कठिनाई से बने, गुप्त रूप से सफलता मिले। आगम धनप्राप्तिकी रुपरेखा बने। १।७वें प्रत्यक्ष शत्रुभाव पूर्ण दृष्टि होती है। **फल-** अनावश्यक शत्रुता बढे। मित्र विरोधी कार्यवाही करने लगें। धनैश्वर्य अभिवृद्धि। चालू काममें गतिरोध हो जाए आदि खराब फल होते रहते हैं। ४।१० गुप्त शत्रुदृष्टि से ग्रह देखता है **फल-** सोचे हुए कामोंमें कठिनाई से सफलता मिले, ना भी मिले। गुप्त शत्रु नुकसान पहुंचावें। रोगऋणका सन्ताप बढे। परस्पर २।६।८ और १२वें भावमें पड़े ग्रह एक-दूसरे को समदृष्टि से देखते हैं। भाव-भावेशके साथ ग्रह योगायोगका विचार कर फलका निश्चय करना चाहिए।

❀ वेधसिद्ध सूक्ष्मातिसूक्ष्म नवीन मानानुसार वर्ष-प्रवेश सारणी ❀

गताब्दा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	०	२३	४६	९	३२
वि.	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०

गताब्दा	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९
पल	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५
वि.	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

गताब्दा	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३
घटी	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३
पल	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४५	८	३१	५४	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	५	२८	५१	१४	३७
वि.	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०

गताब्दा	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६
घटी	२९	४४	५९	१५	३०	४५	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४८	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८
पल	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२४	४७	१०
वि.	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

त्रिपताकी चक्रम्
लग्न

ग्रहवेधविचार- त्रिपताकी चक्रमध्ये बीच वाली खड़ी रेखाके ऊपरी भागमें वर्ष लग्नाङ्क लिखकर कुण्डलीक्रमसे राशियां लिख दी जातीहैं।

ग्रहलगानेकी विधि- गताब्द वर्ष संख्या में १ जोड़कर ९ का भाग देने से जो शेष बचे जन्मकालीन चन्द्राश्रित राशि अर्थात्(चन्द्रमा जन्म समय जिस राशि पर था) से उतनी संख्यामें जो राशिहो उसी राशिमें चन्द्रमाको लिखें तथा उसी सैक(गताब्द वर्ष संख्या+एक) में ४ का भाग देने से जो शेष बचे **"जन्मकालीन ग्रहाश्रित राशि से"** उतनी संख्यामें जो राशि हो उसमें अन्य सभी ग्रहोंको लिखें। राहु और केतु को उल्टा गिनकर रखा जाता है।

ग्रहवेध फल- इस प्रकार त्रिपताकीचक्र में सूर्यादि ग्रहोंके न्यास करने पर जहां चन्द्रमा स्थित हो उस रेखा के दूसरे सिरे पर जो ग्रह बैठा हो उससे चन्द्रमाको विद्ध समझना चाहिए। चन्द्रमा शुभ ग्रहविद्ध या युक्त हो तो वर्षमें शारीरिक सुख मिलेगा। मन प्रफुल्लित रहेगा। सौख्य-समृद्धिका प्रादुर्भाव होगा, ऐसा जानना चाहिए। यदि चन्द्रमा पापग्रह से विद्ध हो तो वर्षमें आधिव्याधि समायुक्तेनमें भौतिक परेशानियां बढ़ सकती हैं।

भौतिक सुख-समृद्धि योग- जिसवर्ष वर्षप्रवेश कुण्डलीमें प्रधानग्रह मुन्था शुभग्रह दृष्ट अथवा युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोणमें आ जाए तो उस वर्षमें भौतिक सुख-समृद्धिका प्रादुर्भाव होता है। नित नवीनताका अनुभव होता रहता है।

जमीन-जायदाद प्राप्ति योग- मुन्थाका वर्षेशसे शुभ सम्बन्ध बनने पर पदोन्नतिका योग बनता है। चतुर्थेश से योग होनेपर जमीन-जायदादका सुख मिलता है। सप्तमेशके योग से दाम्पत्य सुख होता है। इसी प्रकार अन्य सभी भावोंका विचार करना चाहिए।

तबदीलीका योग- वर्षलग्नेश तृतीयेश, चतुर्थेश या नवमेश ६।८।१२ स्थान छोड़कर किसी एक घरमें हों या एक-दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो वर्षमें सुनिश्चित तबदीली होती है। यदिवर्ष लग्नेश वक्री हो, घनिष्ठ मित्र से दृष्ट हो तो भी उक्त फल जानें। अन्य अपनी बुद्धिबल से पहिचानें।

अरिष्ट योग- यदि जन्मलग्न ही वर्षलग्न हो और जन्मनक्षत्रभी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है, वर्षमें गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ, कष्ट, भयप्रद होता है। वर्षमें गुरु चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होते हैं।

मुन्था जिसवर्ष वर्षकुण्डलीके छठे भावमें पड़ती है तो रोग होता है। यदि ८।१२वें भाव में हो तो सामाजिक उपद्रव, मुकद्मादि झंझटों में धनका अपव्यय परेशानियां बढ़ती हैं। मुन्थाके साथ ग्रह युति या शुभाशुभ दृष्टिबल विचार कर फल का निश्चय करना चाहिए।

जन्मपत्री न हो तो वर्षफल कैसे बनायें?

स्पष्ट प्रश्नलग्नकी राशिको छोड़कर अंशादिकी कला करना, फिर उसमें १५० का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवें उसकी राशिके अंक में प्रश्नलग्नकी राशि अंक मिलाना, यह मुन्थाका स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्नसे चतुर्थ राशिका स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियोंमें जन्मलग्नपति के स्थानमें प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशिका स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्नलग्न पर वर्षफल बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सब रीति पूर्ववत्ही जानें।

वर्षकुण्डलीमें वर्षेश और भाग्येशके बलवान् होनेपर सभी तरहका लाभ मिलता है। निर्बलतासे हीन फलोंका प्रादुर्भाव होता है। वर्षेश ६।८।१२वें भावगत होने पर दैहिक-दैविक तथा भौतिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। **सूर्यवर्षेश** हो तो वर्ष में यशोपलब्धि राजकीय मान-सम्मान। **चन्द्रवर्षेश** हो तो सांसारिक सुखोपभोग, लम्बीयात्रा एवं पदोन्नति होती है। **मंगल वर्षेश** हो तो विजयोपलब्धि होती है। शरीरमें रक्तविकार होते हैं। धोखा भी सम्भव है। **बुधवर्षेश** हो तो संगीत कलामें दक्षता, मान-सम्मान, व्यवसाय वृद्धि, जमीन वाहनादि सुख मिलता है। **गुरुवर्षेश** हो तो धनैश्वर्य वृद्धि, सन्तति सुखोपभोग, राजसमाजमें मान-सम्मान मिले। निरोगता बनी रहे। **शुक्रवर्षेश** हो तो विलासिता परिपूर्ण वैभव बढ़े। विजयलाभ हो। **शनिवर्षेश** हो तो भूमि वाहनके उपयोग होते रहें। विचाराधीन उद्योग संचालनमें सफलता भी मिले। पदोन्नति हो। लम्बीयात्राका संयोग बने। यह फल ग्रहोंके पूर्ण हर्षबल प्राप्त होनेके हैं। निर्बल ग्रहोंका फल प्रतिकूल समझना चाहिए। विस्तृत विवरण ताजिक ग्रन्थोंमें देखें।

नोट :- पंचांगमें लिखित मेषार्क वार, घटी, पलमें इच्छित अब्दके वार, घटी, पल, विपल जोड़ने पर अभीष्ट सम्वत्में मेषार्क काल सुनिश्चित हो जाता है। **स्मरणरहे** इस समय ९० प्रतिशत पंचांग नवीन मानानुसार बनाये जाते हैं। वेधसिद्ध शुद्ध वर्षमान प्राचीन सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमानसे ८।। पल के लगभग कम है।

वेधसिद्ध सूक्ष्मातिसूक्ष्म नवीन मानानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी केतकी ज्योतिर्गणित द्वारा बनाई गई है। ज्योतिर्गणित भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसी को देश-विदेशके सभी विद्वान् दैनिक प्रयोगमें लाते है। शुद्धमानसे शताब्दि वर्षप्रवेशसारणी छापनेका अच्छा प्रयास है।

❀ प्राचीन (सूर्यसिद्धान्तीय) मानानुसार वर्षप्रवेश सारणी ❀

गताब्दा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१
घटी	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	३	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मेषादि राशियोंके लिये मासदशा देखने की सारिणी

जन्मनिविंशतिःसूर्येतृतीये दशचन्द्रमा। चतुर्थे चाष्टमेभौमःषष्ठे वेद बुधस्तथा।। सप्तमे दश मन्दस्य नवमेष्ट वृहस्पतेः। दशमे विंशतीराहौःशेषा भृगुदशा भवेत्।।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.१३अप्रैल से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१४मई से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.३ अप्रैल से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२२मार्च से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२२अप्रैलसे राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२४मार्च से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१८मार्च से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.१७अप्रैल से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२२मार्च से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२४मार्च से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२३अप्रैल से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.३अप्रैल से चन्द्र दशा ५० दिन तक
ता.४ मई से चन्द्रदशा ५० दिन तक	ता. ४ जून से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१५ जून से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.४ मई से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.४जून से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२२मई से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२३अप्रैल से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२५ मई से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१८मई से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२१ अप्रैल से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२२ मई से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२५ मई से मंगल दशा २८ दिन तक
ता.२५ जून से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२७जुलाई से मंगल दशा २८ दिन तक	ता. ६ जुलाई से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१६जुलाई से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१६अगस्त से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.६जुलाई से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२४ जून से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५जुलाई से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५जून से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१९ जून से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२०जुलाई से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२४जून से बुध दशा ५६ दिन तक
ता. २५ जुलाई से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२५अगस्त से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२७अगस्त से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.६अगस्त से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.६सितम्बर से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१७सितम्बर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.६अगस्त से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.६सितम्बर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२५अगस्त से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२७जुलाई से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२७अगस्त से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२१अगस्त से शनि दशा ३६ दिन तक
ता.२१सितम्बर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२१अक्टूबर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२५ सित. से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२७ सित. से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२७अक्टू. से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.७अक्टूबर से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१७अक्टूबर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१६नवम्बर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.७अक्टूबर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२५सितम्बर से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५अक्टूबर से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२७सितम्बर से गुरु दशा ५८ दिन तक
ता.२७अक्टू. से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२६नवम्बर से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२०नवम्बर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२५अक्टू. से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२४नवम्बर से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२६नवम्बर से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.६नवम्बर से चन्द्र दशा५० दिन तक	ता.६दिस.से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१५ दिसम्बर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.६नवम्बर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.६दिसम्बर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२४नवम्बर से राहु दशा ४२ दिन तक
ता.२४ दिस. से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२२जनवरी से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५दिसम्बर से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१९दिसम्बर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.१८जनवरी से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२३दिसम्बर से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२५ दिस. से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२४जनवरी से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.४जनवरी से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१४ जनवरी से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१२फरवरी से सूर्य दशा २० दिनतक	ता.१४ जनवरी से शुक्र दशा ७० दिन तक
ता.२फरवरी से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.४ मार्च से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२०फरवरी से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२४ जनवरी से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२२ फरवरी से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१७फरवरी से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२२ जनवरी से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२०फरवरी से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२२फरवरी से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२ फरवरी से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता. ४ मार्च से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.२४ मार्च से सूर्य दशा २० दिन तक

ग्रहोंसे सम्बन्धित जानकारी- हमारे इस सौर परिवार के मध्यस्थ भुवनभास्कर भगवान् सूर्य के इर्द-गिर्द परिक्रमा करने वाले ग्रहों में सबसे नजदीक बुध ग्रह है, द्वितीय कक्षा में शुक्र, तृतीय में पृथ्वी, चतुर्थ में मंगल, पंचम में बृहस्पति, छठी में शनि, सातवी में हर्शल(यूरेनस), आठवी में नेपच्यून और नवमी कक्षा में प्लूटो(यम) निर्बाध गति से प्रदक्षिणा करता रहता है। पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा को मिलाकर ११ सदस्यों से शोभायमान आकाश गंगा सहित अनेक तारा समूहों से सुशोभित अन्तरिक्ष बहुत ही सुहावना लगता है।

पृथ्वी से ग्रहोंकी दूरी(कि.मी.)- चन्द्रमा ३८,००,०००; शुक्र ४,१४,००,०००; बुध ९,१७,००,०००; सूर्य १४,९६,००,०००; मंगल ७,८३,००,०००; गुरु ६२,८७,००,०००; शनि १,२७,७४,००,०००; यूरेनस २,७२,०४,००,०००; नेपच्यून ४,४४,४४,००,०००;प्लूटो ५,७५,०४,००,०००।

ग्रहोंकापरिभ्रमणकाल-पृथ्वी२३.५६; चन्द्रमा २७.३२; बुध ५८.६५; शुक्र २४३; मंगल १.०२; गुरु ०.४१; शनि ०.४४, हर्शल ०.६५; नेपच्यून ०.७७; प्लूटो ६.३८।

ग्रहोंका परिक्रमा काल- दिवस दशमलव में पृथ्वी ३६५.२५६३६, चन्द्रमा २७.२५६३०, बुध ८७.९६२६, शुक्र २२४.७००८, मंगल ६८६.९७९८२, गुरु ४३३२.५८८९६, शनि १०७५९.२२६२०, हर्शल ३०६८८.४४१७५, नेपच्यून ६०१८१.२७९११, प्लूटो ९०७३६.०५६४० है।

ग्रहोंके उपग्रह अर्थात् अब तक (सन् १९९५) प्राप्त जानकारी के अनुसार किस ग्रह के इर्द-गिर्द कितने चन्द्रमा चक्कर लगाते हैं। यथा- पृथ्वी का प्यारा चन्द्रमा १, इसी प्रकार मंगल के २, बृहस्पति के १६, शनि के २०, हर्शल के १५, नेपच्यून के ८ और यम(प्लूटो) का १ चन्द्रमा है। प्लूटो के उपग्रहके विषय में सभी खगोलविद् अभी एकमत नहीं है।

अनन्त ब्रह्माण्डमें व्याप्त तारोंकी दूरी- ज्ञात करने के लिए विद्वानों ने जो विधि निकाली, वह है प्रकाश वर्ष। अर्थात् सब से तेज गति प्रकाश की है। सूर्य की किरणें ८ मिनट में करीब १४,९६,००,००० कि.मी. की दूरी पार करके पृथ्वी तक पहुँच जाती हैं। इसीलिए कहा जाता है कि पृथ्वी और सूर्य के मध्य की दूरी ८ प्रकाश मिनट है। प्रति एक वर्ष में प्रकाश करीब ९४,६३,००,००,००० कि.मी. चलता है। पृथ्वी से ध्रुवतारा ८०० प्रकाश वर्ष दूर है, तो हमारी आकाश गंगा की लम्बाई १,००,००० चौड़ाई २०,००० प्रकाश वर्ष है। हमारा सबसे नजदीकी तारा प्रोक्जीमा सेंटोरी ४.२२ प्रकाश वर्ष दूर है। आकाश में अरबों मन्दाकिनियाँ तथा असंख्य विशालकाय तारापुञ्ज हैं। आकाश गंगा के जुड़वाँ तारों की संख्या बहुत अधिक है। हर तीसरा तारा जुड़वा है। हमारे सूर्य का कोई साथी तारा नहीं है। कुछ तारा समूह तो २४,००० प्रकाश वर्ष दूर है। जैसे हरक्यूलीज, जिसमें १०,००,००० सूर्य होने का अनुमान है। इतनी खोजबीन होने के बाद भी अन्तरिक्ष की अनेकों अनसुलझी पहेलियाँ मानव को बरबस नित नये अनुसंधान करते रहने के लिए प्रेरित कर रही है।

ग्रहों के इर्द गिर्द वलय

अन्तरिक्षमें गतिमान ग्रह गुरु, शनि, हर्शल और नेपच्यून के चारों ओर वलय है, जिनके कारण ये ग्रह बहुत ही सुन्दर लगते है। श्रीब्रजभूमिपंचांगके मुखपृष्ठ पर बने मानचित्रसे आप भलीभांति समझ सकते है।

अयनांश- पृथ्वीका अक्ष खगोलमें कदम्बके चारों ओर परम क्रांतितुल्य व्यासार्धके वृत्तमें घूमता है और वह करीब २६,००० वर्षोंके बाद अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है जैसा कि मुञ्जालने कहा है- **उत्तरतो याम्यदिशं याम्यान्तात् तदनु सौम्यदिग्भागम्। परिसरतां गगनसदा चलनं किञ्चिद्भवेदपमे।** इस तरह पृथ्वी में कुलाल चक्रवत् और रथचक्रवत् इन दो गतियोंके अलावा अक्ष भ्रमणरूपी यह तीसरी गति उत्पन्न होती है। इसी अक्ष भ्रमणरुपी तीसरी गति के कारण अयन चलन होता है। अयन चलन का नाम ही अयनांश है। अर्थात् सायन वसन्त व शरत् संपात बिन्दु प्रतिवर्ष ५०% विकलाकी गति से पीछे को खिसक जाते है। वही अयनांश की बढ़ती गति है। भारतीय ज्योतिर्गणितीय भचक्रका आदि निरयण बिन्दु स्थिर है, जिसकी स्थिति चित्रा तारा के ठीक सामने १८० अंश पर है। सायन व निरयण बिन्दुओंके अन्तर का नाम ही चित्रापक्षीय अयनांश है।

अयनांशके विषयमें ज्योतिर्विद एकमत नहीं है। प्रस्तुत पंचांगमें केतकी चित्रापक्षीय अयनांशके आधारपर गणित तैयार किया जाता है। किंचित् संशोधन परिलेन चित्रापक्षीय अयनांश ही भारत सरकार द्वारा स्वीकृत है।

ग्रहदर्शन- सूर्याश्रित राशिमें पहुँचने पर ग्रह निर्लोप हो जाते है। शीघ्रगामी ग्रह बुध शुक्र मार्गी होने पर पूर्वास्त होकर पश्चिममें उद हुआ करते है। वक्री होनेपर पश्चिमास्त होकर पूर्वमें उदय हो जाते है। मन्दगामी ग्रह मंगल बृहस्पति, शनि, सदैव पश्चिमास्त होकर पूर्व में उदय हुआ करते हैं।

मध्यम मान से- चन्द्रमा १२, मंगल १७, बुध १३, गुरु ११, शुक्र ९, शनि का १५ अंश उदयास्त कालांश मान्य है।

तारीख वार निकालनेकी विधि- अभीष्ट ईस्वी सन् संख्यामें ४००का भाग दें,जो शेष बचे उसमें १००का भाग दें,इसी प्रकार १०० के शेष में २८ का और २८के शेष में ४का भाग दें। १००और ४की लब्धियोंके जोड़(योगफल) को ५ से गुणा करें। गुणनफल में अन्तिम ४ के शेषको जोड़ने से साधारण ईस्वी सन् के आरम्भ(१जनवरी) का वार (वारांक)होता है। अभीष्ट सन् अधिक वर्ष (लीप ईयर) हो तो वाराङ्क में १ घटाकर शेष ग्रहण करें। वाराङ्क संख्या ७ से अधिक हो तो ७ का भाग देकर शेषकी सोमवार से गणना करें। मासाङ्क संख्या (साधारण वर्ष) जनवरी ०, फरवरी ३,मार्च ३, अप्रैल ६, मई १, जून ४, जुलाई ६, अगस्त २, सितम्बर ५, अक्टूबर ०, नवम्बर ३, दिसम्बर ५ जानें। मासाङ्कसंख्या (अधिकवर्ष, लीपईयर) जनवरी आदि क्रमशः ०,३,४,०,२,५,०,३,६,१,४,६ ईस्वी सन् के आरम्भ वाराङ्क में अभीष्ट मासाङ्क जोड़ने पर मासारम्भ का वारांक निकल आयेगा। आगामी **२१वीं** शताब्दी का अन्तिम वर्ष कुछ विद्वानोंके अनुसार (लीपईयर) नहीं माना जायेगा। अन्यथा इस विषय में विश्वके समस्त विद्वानोंका निर्णय मान्य होगा।

संसारके प्रसिद्ध संवत्सरोंका उत्पत्तिकाल- यहूदी सन् ईसा पूर्व ७अक्टूबर ३७६१, कलियुगाब्द १८फरवरी ३१०२, रोमी सन् २१ अप्रैल ७५३, आसुरी बाबुली सन् २६ फरवरी ७४७, विक्रमाब्द संवत् २३ फरवरी सन् ५७ ईसा पूर्व शुरू हुआ था।

ईस्वीके बाद जिन सनोंका प्रचलन हुआ- शकाब्द ३ मार्च ईसा पश्चात् ७८, आरमेनीस ९ जुलाई ५५२ ई., हिजरी सन् १६ जुलाई ६२२ ई., पारसीसन् १० जून ६३२ ई. में शुरू हुआ।

शक और संवत् का पारस्परिक परिवर्तन- संवत् में से १३५ घटा देने से शकाब्द और शकाब्द में १३५ जोड़ने सं संवत् के वर्ष आ जाते है। सम्वत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे और शक वर्षारम्भ सायन मेषऽर्क दिनसे शुरू हो जाता है। राष्ट्रीय चैत्रारम्भके साथ ही शकसंवत् शुरु होता है। जोकि प्रतिवर्ष २१ मार्च के आसन्न पड़ता है।

सन्१५८२ में रोम के १३वें पोप ग्रेगरी ने ५वीं अक्टूबर को १५ अक्टूबर किया था, तब से इस संशोधित सन् में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस समय विश्वके लगभग सभी देशोंमें ईसवी सन् तारीखोंका प्रचार है। दो शताब्दी बाद कुछ संशोधनकी आवश्यकता परिलक्षित होगी।

समयका ध्यान रखें- द्वितीय विश्वयुद्ध(३सितम्बर १९३९ से ९ मई १९४५ई.) के कारण १ सितम्बर १९४२ ई. सं. १५ अक्टूबर सन् १९४५ ई. तक अंग्रेजी हुकूमत(सरकार ने) चालाकीसे घड़ियां एक घण्टा आगे कर दीं थीं। इसकी सर्वसाधारण भोली-भाली जनता को जानकारी नहीं थी। अतः इन दिनों घड़ियों द्वारा नोट किये गये टाइम में से १ घण्टा घटाकर उसे भा.स्टै.टा. समझना चाहिए।

१सितम्बर सन्१९४२ से १५ अक्टूबर सन्१९४५ ई. (कुल अवधि ३ वर्ष १।मास) के अन्तर्गत यदि दिन के २ बजकर १५ मिनट पर किसी का जन्म टाइम नोट किया गया है, तो उसे दिन के घं.१मि.१५ बजे यानी १३।१५ बजे मानकर जन्मपत्र बनाने के लिए इष्ट साधनार्थ प्रयोग किया जाएगा। तभी आप शुद्ध इष्ट संशोधन कर यथार्थ फलित के परिणाम प्राप्त कर सकेंगें।

वरुण(हर्शल) यूरेनशका संक्षिप्तविवरण

हर्शल को सूर्यकी एक परिक्रमा करनेमें ८४ वर्ष ८ दिनका समय लगता है। यह एकराशिमें लगभग ७वर्ष तक रहता है। एकदिनमें ४२ प्रतिविकलाकी गतिसे चलता हुआ भगणों का भोग करता है। परिक्रमामार्ग में शनिके बाद इसका नम्बर आता है, जैसाकि श्रीब्रजभूमि पंचांगके मुख पृष्ठ पर दर्शाया गया है। यह ग्रह अत्यन्त खल बलिष्ठ तमोगुणी जलतत्वप्रधान अशुभ है। भारतीय मान्यतानुसार इसका नाम वरुण है। आकस्मिक घटना, रोगोत्पात, बैर-विरोध, वियोग, स्थान त्यागप्रिय तथा विज्ञानके क्षेत्रमें भौतिक तरक्की कारक है। इसकी प्रभाव राशि कुम्भ मानी जाती है। यह वृत्ति को चंचल बनाता है। हर्शल मिथुन, तुला एवं कुम्भमें अत्यन्त बलवान समझा जाता है। मेष व वृश्चिक राशिमें घातक फल देता है। इसके फल पर संशोधन जारी है। विद्वान किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाये है।

इन्द्र (नेपच्यून) का संक्षिप्त विवरण

नेपच्यून को सूर्यकी एक प्रदक्षिणा करनेमें १६४ वर्ष २८५ दिनका समय लगता है। अतः यह एक राशिमें १३वर्ष ९ मास के लगभग रहता है। एकदिनमें २१ प्रतिविकला की गति से भगणोंका भोग करता हुआ चक्र पूरा करता है। सूर्य के इर्द-गिर्द परिक्रमा मार्ग हर्शलके बाद इसका है। जैसाकि श्रीब्रजभूमिपंचांगके आवरण पृष्ठ पर दिखाया गया है। इसके भारतीय नाम इन्द्र से बोध होता है कि नेपच्यून जलतत्व प्रधान ग्रह है। अतः मीन इसकी प्रभाव राशि है। मीन में यह स्वगृही माना जाता है। यह सात्विक प्रवृत्ति वाला ग्रह है। यह १।५।९ वें स्थान में सत्त्वप्रधान। २।४।६।८।१२ में तम प्रधान तथा ३।७।१०।११वाँ होने पर रजप्रधान फल का प्रतीक होता है। इसका वास्तवमें भूमण्डल पर प्रभाव पड़ रहा है। इस पर रिसर्च हो रही है। पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों में काफी मतभेद है।

यम(प्लूटो) का संक्षिप्त विवरण

प्लूटो को सूर्य की परिक्रमा करने में सर्वाधिक समय लगता है, अर्थात् २४८वर्ष के लगभग समयमें भगणोंका भोग करता है। ९०७३६.०५६४० दिन लगते हैं। यह एक राशि में २० वर्ष ७ मास के लगभग रहता है। इसके भा.नामानुसार अनुमान लगाया जा सकता है कि यह शनि से भी कहीं अधिक तामसी खल प्रकृतिका ग्रह है। उपरोक्ततीनोंग्रह वरुण, इन्द्र और यम पृथ्वी से बहुत दूर होनेके कारण नंगी आखों से दिखाई नहीं पड़ते अतः अस्तोदय कालांश सुनिश्चित कर पाना कठिन है। **भूभ्रमणजन्यउदयास्त-** प्रतिदिन सभीग्रह पूर्वदिशामें उदय होकर लगभग १२ घंटे बाद पश्चिममें अस्त होते है। प्राणियोंको दृश्य तभी होते है जब उदयास्त कालांश से बाहर होते है।

काल उत्तरोत्तर बली कैसे माना जाता है?

किसी भी कार्यके लिए सब प्रकारसे समय अनुकूल नहीं हो सकता। अतः अधिकांशशुभ सुयोग हों तो कार्यका शुभारम्भ कर देना चाहिए,क्योंकि अच्छे योग कुयोगोंके दुष्प्रभावका नाशकर शुभफल देनेमें समर्थ होते हैं। यथार्षवचन-

अयोगश्च सुयोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र सुयोगश्च प्रवर्तते।।

शुभाशुभ फल देनेमें समयके ५ अङ्ग प्रधान माने गये है। यथा- वर्ष, मास, दिन (तिथि), लग्न और मुहूर्त। किसी कार्यमें पांचों शुद्ध मिल जायें तो कार्यकी सिद्धि प्रायः सुनिश्चित होती है। उपरोक्त पांचोंकाल उत्तरोत्तर बली होतेहैं। जैसे- वर्ष अशुद्ध हो तो मासकी शुद्धि से वह शुद्ध हो जाता है, एवं तिथि(दिन) की शुद्धि से अशुद्ध मासभी शुद्ध समझा जाता है, तथैव लग्नकी शुद्धिसे तिथि(दिन) भी शुद्ध हो जाता है, इसलिए कहा है कि- **सर्वेदोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।**

इष्टलग्न कर्त्ताकी राशिसे ३।६।१०।११वीं हो तो अति श्रेष्ठ, चौथी मध्यम और ८।१२वीं लग्न राशि नेष्ट होती है। ऐसा लग्न देखना चाहिए जिससे ८।१२ स्थानमें कोई भी ग्रह न हो और लग्न शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तथा चन्द्रमा लग्न से ३।६।१०।११ में से किसी भी स्थानमें हो तो कार्यकी सिद्धि होती ही है। **'मुहूर्त्तोघटिकाद्वयम्'** एक मुहूर्त २ घटी का होता है। अर्थात् प्रत्येक मुहूर्त ४८ मिनट तक रहता है।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म विभेद-

यदि किसी दिन आवश्यककार्य सुसम्पादन हेतु स्थूल तिथि, नक्षत्र एवं वार उपयुक्त न हो तो सूक्ष्मतिथि, सूक्ष्म(क्षण) नक्षत्र एवं क्षण वार का चिन्तनकर विद्वज्जन कामको व्यवस्थित ढंग से करा सकते है, ऐसा ज्योतिषके प्रणेताओंका मत है। अतः गृह्यसूत्रादि में कहा गया है। यथा- **विवाहेसर्वकालःशुभः।**

सिद्धि होरा मुहूर्त-

यस्य ग्रहस्य वारेयत् कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम्।
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते।।

सूर्यकी होरा- टैण्डर देने, नौकरी व राजकार्य का चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है। नामांकन फार्म भरनेमें सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।
चन्द्रमाकी होरा- सब कार्योंके लिए शुभ है। विजय मिलती है।
मंगलकी होरा- युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा-सोसायटीमें जाना, मुकद्मा, अस्त्र-शस्त्र बनाना आदि कार्योंमें उत्तम होती है।
बुधकी होरा- विद्या(कलाकाव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेखन, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करनेके लिए शुभ होती है।
गुरुकी होरा- विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ोंसे मिलन, कोष-संग्रह, नवीन काव्यलेखन, प्रकाशन, ज्ञानार्जन आदि अनेक कार्योंके लिए शुभ है।
शुक्रकी होरा- लम्बी यात्रा, वस्त्राभूषण धारण, सौभाग्यवर्धक कार्य, सिनेमा शूटिंग, भूमि वाहनादिके लिए शुभ।
शनिकी होरा- द्रव्य संग्रह, भूमि-मकानकी नीव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्योंके लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धिके लिए ज्योतिषशास्त्रमें होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सातग्रह वार नामकी सात होरा होती है। प्रत्येक वार को एक घण्टेकी सूर्योदयके समय उसी वार की पहली होरा होती है। दिन-रात के २४ घण्टोंमें २४ होरे व्यतीत होनेसे अगले वार के सूर्योदयके समय उसी वार के स्वामीकी होरा आ जाती है। **होराका समय ढाई घटी यानी एक घण्टा होता है।** दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे-छठे वार के क्रम से स्वामीकी होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घण्टेकी होरा समझनी चाहिए।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्तिको स्वराशिके स्वामीग्रह के शत्रु ग्रहोंकी होरामें यात्रा-विवाहादि तथा शुभ कार्योंका त्याग कर देना चाहिए अन्यथा अशुभ फल मिलेगा। स्वराशिके मित्र ग्रहोंकी होरामें कार्यारम्भ श्रेयष्कर रहेगा। निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी भी समयमें अभीष्टकार्य सिद्धियर्थ होरा देखनी हो, सहजमें ज्ञात हो सकेगी।

क्षणवार जानने का चक्र

वार	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
सू.	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु
चं.	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
मं.	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
बु.	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
गु.	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू
शु.	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं
श.	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं

उदाहरण- कल्पना करो कि आज मंगलवार है। आपको कार्य सिद्धयर्थ किसी बड़े अधिकारीसे मिलना है, तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियोंमें गुरुकी होरा उत्तम होती है, ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरुकी होरा मालूम करनी है जोकि किस-किस समय पर होती है। उपरोक्त चक्रमें मंगलके सामने देखा तो उस दिन ७।१४।२१वें भागमें गुरुकी होरा मिली। अतः मंगलवारको स्थानीय सूर्योदयसे ६।१३।२०वें घण्टेके बाद एक-एक घण्टे तक गुरु की होरामें जाना चाहिए।
नोट- होरा मुहूर्त गणनानुसार ही सप्तवारोंके नाम निश्चय किए गए हैं। जैसे रविवार को पच्चीसवां होरामुहूर्त चन्द्रमाका होने से रविवार के बाद वार गणनामें चन्द्रवार आता है।

सूक्ष्मतिथि- प्रत्येकतिथि के आरम्भ से ४-४ घटी उसी तिथि से आरम्भ कर क्रमशः १५ तिथियां बीतती हैं। जैसे प्रतिपदारम्भ से ४ घटी=१घं.३६मि. तक प्रतिपदा, उसके बाद ४ घटी तक द्वितीया इत्यादि। अतः प्रतिपदामें ४ घटीके बाद ८ घटी पर्यन्त द्वितीयाका फल मिलेगा, प्रतिपदाका नहीं। वस्तुतः तिथिभोग घटीमानका पञ्चदशांश तुल्य क्षण तिथि होती है। यथा-

तिथेः पञ्चदशो भागः क्रमात् प्रतिपदादितः।
क्षणसंज्ञा तिथिः प्रोक्ता शुभाशुभ फलप्रदाः।।

सूक्ष्म(क्षण) नक्षत्र- प्रतिदिन सूर्योदयके बाद अहोरात्र में २-२घटी के क्रमशः आर्द्रा, आश्लेषा, अनु., मघा, धनि., पूषा., उषा., अभि.,रोहि., ज्येष्ठा, विशा., मूल, शत, उफा, पूफा, आर्द्रा, पूभा, उभा, रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोहि., मृग., पुन., पुष्य, श्रव., हस्त, चित्रा और स्वाती नक्षत्र भोग करते हैं। ये मुहूर्त कहलाते है। दैनिक चान्द्रनक्षत्र यदि श्रेष्ठ न हो तो क्षण नक्षत्रमें कार्यकी सिद्धि प्रायः सुनिश्चित होती है।

योगस्य सप्तविंशांशो सूक्ष्मयोगो भवेदिति।
एकस्मिन्नपि योगे च सर्वेयोगा भवन्ति हि।।

एक-एक विष्कुम्भादि योगमें- उसी-उसी योगसे प्रारम्भ करके २७ योगोंके भोग होते है, जो सूक्ष्मयोग कहलाते है। स्थूल योगके पूर्णमान का २७वां भाग सूक्ष्मयोग होता है। अभीष्ट फल देनेमें वही समर्थ माना जाता है।

सावन दिन सात है-

वाराः सप्त रविः सोमो मंगलश्च बुधस्तथा।
बृहस्पतिश्च शुक्रश्च शनिश्चैव यथाक्रमम्।।

जैसे रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु शुक्र और शनिवार ये यथा-क्रमशः भोगते है। सूर्योदय से वार का शुभारंभ माना जाता है। अंग्रेजी तारीख ग्रीनविचवेधशाला दृश्योदयकाल से बदल दी जाती है। स्मरणरहे-ता.के साथ वार नहींबदलता।

शुभाशुभ अन्यान्य संज्ञा-

सोम, बुध, गुरु और शुक्र ये वार सभी कार्योंमें सिद्धिप्रद होते हैं। रवि, मंगल और शनि अग्रिम पृष्ठ पर वर्णित कार्योंमें ही प्रशस्त है।
रवि स्थिर संज्ञक है, ऐसे ही सोम चर, मंगल उग्र, बुध मिश्र, गुरु लघु, शुक्र मृदु और शनिवार तीक्ष्ण संज्ञक है। संज्ञा तत्तुल्यकार्य सम्पादनमें सिद्धि प्रायः सुनिश्चित होती है। क्षणवारका अपना विशेष महत्त्व है, क्योंकि पूर्वाचार्योंने स्थूलसे सूक्ष्मको अत्यन्त प्रबल होनेमें कारण प्रधान माना है।

❀ रविवारमें कृत्य ❀

राज्याभिषेक, उत्सव(गाना बजाना) नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धीकर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधिनिर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार(युद्धादि), सोना-तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध, व्यापार और न्यायसे सम्बन्धित सभी कार्य रविवार में करने चाहिए।

❀ सोमवार में कृत्य ❀

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्रीप्रसंग, वृक्ष(बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना,नल लगाना,तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षराम्भ(विद्याध्ययन) आदि अन्यान्य सभी कार्य सोमवारमें करने चाहिए।

❀ मंगलवार में कृत्य ❀

चुगलखोरी, जासूसीकार्य, चोरी, विष, अग्निसम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम(लड़ाई शुरु), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेनासम्बन्धी, कर्जदेना, खान, धातु, सोना, मूंगा आदि ये सभीकार्य मंगलवार में करने चाहिए।

❀ बुधवार में कृत्य ❀

ट्रेनिंग,व्यापार,अध्ययन,कलाकौशल,शिल्प,खेलकूद,चित्रकारी,बहीखाता, हिसाब-किताब,नोटिस देना,धातुसम्बन्धी सोना,कांसा,पीतल,सन्धि समझौता, व्यायाम,वाद-विवाद,नौकरी प्रवेशादि अन्यसभीशुभकार्य बुधवारमें करने चाहिए।

❀ गुरुवार में कृत्य ❀

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धीकार्य, औषधि-आभूषणोंका निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

❀ शुक्रवार में कृत्य ❀

स्त्री-सम्बन्धी, गुप्तवार्ता, छायाचित्र, फिल्मकार्य, नाटक, संगीत सीखना, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध, वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषिकर्म, जमीन, जायदाद व भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभीकार्य अन्यान्यशुभ कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

❀ शनिवार में कृत्य ❀

लोहा, पत्थर, सीसा, गंगा सम्बन्धीकर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पापकर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विपाकतकर्म, आसव-निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथीको बांधना, अन्य पशुको सिखाना, दीक्षा(मन्त्रग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

तिथियों के स्वामी संज्ञादि ज्ञानाय चक्रम्

तिथि	१ प्रतिपदा	२ द्वितीया	३ तृतीया	४ चतुर्थी	५ पञ्चमी	६ षष्ठी	७ सप्तमी	८ अष्टमी	९ नवमी	१० दशमी	११ एका.	१२ द्वा.	१३ त्र.	१४ चतु.	१५ पूर्णिमा	३० अमा.
स्वामी	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	कार्तिकेय	सूर्य	शिव	दुर्गा	यमराज	विश्वेदेव	विष्णु	कामदेव	महादेव	चन्द्रमा	पितर
संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	रिक्ता
सत् असत्	सत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत्	असत्	असत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत्	असत्

❀ नन्दादि तिथियोंमे कर्त्तव्य ❀

नन्दातिथिमें चित्रकर्म, उत्सव, वास्तु(भूमि) पूजन, तन्त्र, खेती, नाच तमाशा, विवाह, वाहनोंका प्रयोग शुभ है। भद्रामें उपरोक्त वर्णित सभीकार्य और पौष्टिक बलवीर्य पुरुषार्थ को बढ़ाने वाला कर्म शुभ होता है। जयामें संग्रामके लिए उपयोगीकार्य सिद्ध होते हैं, तथा रिक्तामें वध, बन्धन आदि, विष, अग्नि सम्बन्धी और बनाए हुए शस्त्र शुभ होते है। पूर्णातिथिमें विवाहअन्यान्य मंगलोत्सव, यात्रा तथा पौष्टिक सहित शान्तिकर्म शुभ होते हैं। नोट-अमावस्यामें केवल पितृकर्म होते हैं। जिस अमावस्यामे चन्द्र काल दृष्ट हो तो वह सिनीवाली और कला नष्ट रहे वह कुहूवाली कही जाती है।

❀ पाँच पर्व दिन ❀

अमावस्या, अष्टमी, पूर्णिमा, चतुर्दशी और रविसंक्रान्तिका दिन, ये ५ पर्व दिन कहलाते हैं। ये द्विगर्तीय देशवालोंको विशेष शुभ फलदायक हैं।

❀ पंचक-विवेचन ❀

धनिष्ठाके उत्तरार्ध से रेवतीपर्यन्त पांच नक्षत्र पंचक कहलाते हैं। इनमें प्रेतका दाहकर्म, दक्षिण दिशाकी यात्रा, चारपाई, पलंग कुर्सी मेज आदि बनवाना, भवननिर्माण हेतु तथा जलानेके लिए काष्ठ, कोयला, गैसका संग्रह करना, छत डालना वर्जित है। परिहार- शत.के मध्यकी, पूभाके आदि की, उभाके अन्तकी केवल पांच-पांच घटी त्याज्य है और रेवती सम्पूर्ण त्याज्य माना गया है।

❀ भद्रा-विवेचन ❀

भद्रा- श्रीपतिने कहा है कि देव-दानव संग्राममें जब देवगण परास्त हुए तो भगवान् शिवने क्रोधसे संतप्त अपने शरीरको देखा, जिससे गदर्भ मुखवाली, पूंछयुक्ता, तीनपांव, सातभुजा तथा सिंहके समान गर्दनवाली प्रेतवाहिनी 'देवी' प्रकट हुई जिसने अपने विकराल मुखसे सम्पूर्ण राक्षसोंका संहारकर देवताओंका भद्र(भला) किया। इसलिए प्रसन्न हुए देवताओंने इसे भद्रा नाम से सम्मानित किया और पंचांगमें कर्णोंके मध्य स्थान दे दिया। भद्राको छाया से उत्पन्न सूर्यपुत्रीभी कहा गया है यथा-

छायासूर्यसुते देवि विष्टिरिष्टार्थदायिनि।
पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्र प्रदा भव॥

भद्रा मुख-पुच्छ ज्ञानाय चक्रम्

भद्रातिथियाँ	भद्राके मुख का समय	भद्राके पुच्छ का समय
शुक्ल ४	१ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	४ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल ८	२ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	१ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल ११	३ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	२ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल १५	४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	३ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण ३	४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	३ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण ७	३ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	२ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण १०	२ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	१ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण १४	१ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य	४ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य

छाया एवं सूर्यपुत्री भद्रा यथाशक्ति पूजनार्चन मात्रसे सभी अरिष्ट निवारणकर जगतीतलवासी प्राणियोंका मंगल करतीहै। रोगोपद्रव निवृत्ति विघ्नबाधा शान्तिके साथ-साथ युद्ध, मुकद्दमा, द्यूत तथा राजकाजमें विजय दिलवाती है। भद्राके द्वादश नामोंकाविवरण- धन्या,दधिमुखी,भद्रा,महामारी, खरानना, कालरात्रि, महारुद्रा, विष्टि, कुलपुत्रिका, भैरवी, महाकाली, असुरक्षयकरी।

भद्रा मुख-पुच्छ ज्ञानम्- भद्रा विहित(कुलसमय) को तीन स्थानोंमें रखकर पृथक-पृथक क्रमशः ४।६।१० से भाग करने पर प्रहर, षष्ठ्यंश और दशमांश का मान निकल आता है। उपरोक्त चक्रमें शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथिमें जो भद्रा लिखी गई है उसके प्रथम प्रहर (यानि भद्रा के शुरु में) षष्ठ्यंश तुल्य भद्रा का मुख होता है और चतुर्थ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य भद्राका पुच्छकाल माना जाता है। प्रहर का मतलब भाग से है।

उदाहरण- सं.२०५९ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार(राखी) के दिन भद्राकी व्याप्ति व्यवधान कारक है। अतः भद्राके मुखका समय सभी शुभकृत्योंमें वर्जित है। उक्तदिन भद्रा विहितकाल १२घं.४०मि. को ४ से भाग करने पर ३घं.१०मि. प्रत्येक प्रहर का मान हुआ। पुनः १२।४० को ६ से भाग दिया तो २घं.७मि. षष्ठ्यंश हुआ। इसीप्रकार १० से भाग करनेपर दशमांश १घं. १६मि. सुनिश्चित हुआ।

पूर्णिमाके ४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ठ्यंश तुल्य भद्राका मुख होता है, सो ज्ञात कीजिये- प्रत्येकप्रहर ३।१०×३=९।३०जमा भद्रारम्भकाल २६।३९=३६।९-२४ शेष पूर्णिमा दिन १२घं.९मि. से चौथा प्रहर शुरू भद्रामुखारम्भ का समय प्रारंभ हुआ, जिसमें षष्ठ्यंश २।७ जमा किया तो १४घं.१६मि. तक का समय सुनिश्चित हुआ। जोकि राखी बांधने के लिये उपयुक्त नहीं है। तीसरे प्रहरके अन्त १२।९ से दशमांश १।१६ घटाया तो १०।५३ से भद्राका पुच्छकाल १२।९बजे तक रहेगा, जिसे प्रत्येक काममें शुभ माना गया है।

पृथिव्यां यानि कर्माणि शुभान्यशुभानि च।
तानि सर्वाणि सिद्ध्यन्ति विष्टि पुच्छे न संशय॥

भद्रावास- १.२.३ और ८ राशिमें चन्द्रमा हो तो भद्रावास स्वर्गमें होता है। ऐसे ही ४.५.११.१२ राशिस्थ चन्द्र में भद्रा मर्त्य(मनुष्य) लोकमें विचरण करती है और ६.७.९ एवं १० के चन्द्रमामें भद्रा पातालवासिनी कही गई है। जहां रहती है वहीं फल है। भूलोकस्था सदात्याज्या स्वर्ग-पातालगा शुभा। भद्रा दिनमें तिथिके उत्तरार्धको व रात्रिमें पूर्वार्धकी शुभ होती है। (मु.चिन्तामणि)

स्वर्गेभद्राशुभम् कार्ये पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्य विनाशिनी॥

भद्रामें मुख्य रूपसे रक्षाबन्धन,होलिकादहन वर्जित तथा असत्कर्म ग्राह्यहै।

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतीपातश्च वैधृतिः।
प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतः शुभम्॥

विष्टि, अंगारक, क्रकच, दग्धादि योग, व्यतिपात, वैधृति, दुष्टतारा कुयोग दोपहर के बाद सभी शुभ होते हैं।

कालकी परिभाषा

प्रतिदिन प्रत्येक स्थानका दिनमान न्यूनाधिक होता रहता है। अभीष्ट दिनके दिनमानको पांचसे विभाजित करनेपर प्रत्येक भागको जिस नामसे जाना जाता है उसका विवरण-१ प्रातःकाल २ संगवकाल या पूर्वाह्नकाल, ३ मध्याह्नकाल, ४ अपराह्नकाल और ५ सायंकाल कहलाता है। सूर्योदय से गणना शुरु होती है। दिनमानके १५ भाग करनेपर ८वां भाग अभिजित् मुहूर्त कहलाता है। और १०वाँ भाग विजयमुहूर्तके नामसे जाना जाता है। रात्रिमानके १५ भाग करने पर ३ भागतक प्रदोषवेला ८ वां भाग महानिशीथकाल, १३ वां भाग ब्रह्ममुहूर्त, १४ वां भाग उषाःकाल और १५ वां भाग अरूणोदयकाल कहलाता है। प्रातः सन्ध्या सूर्योदय उपरान्त ७२मि. तक और सायंसन्ध्या सूर्यास्तके पश्चात् ७२ मि. तक होती है।

विशेष जानकारी

६० पल बराबर १ घड़ी, दण्ड व घटी
६० घटी बराबर १ दिन अहोरात्र
३६५ दिन ६ घंटा ९ मिनटका १ सौरवर्ष
२९ दिन १२ घंटा ४४ मिनटका एक चान्द्रमास
३५४ दिन ८ घंटा ४८ मिनटका एक चान्द्रवर्ष
२½ पल बराबर १ मिनट, १घटी बराबर२४ मि.
२½ घटी बराबर १ घंटा होता है।
६० घटी बराबर २४ घंटा (एक दिन रात-अहोरात्र)

अधिमास सम्वत् में दिन संख्या लगभग ३८४ होती है। सं.२०२०, २०३९ में क्षयः मास हो चुका है। आगे २१८० में होगा।क्षयमास वर्ष में दो अधिमास होते हैं।

नक्षत्रोंकी संज्ञा-विहितकर्म ज्ञानम्

ध्रुव-स्थिर नक्षत्र- रोहिणी, उफा, उषा, उभा तथा रविवार ध्रुव और स्थिर संज्ञक है। इनमें स्थिर कार्य बीजबोना, बगीचा लगाना, गीत, वाद्योत्सव, विवाहोत्सव, वस्त्राभूषण धारण तथा निर्माण करना, शान्तिकर्म, गृहारम्भ, नृत्यकला सीखना, मैत्री, सन्धिविचार, पदभार संभालने हेतु शपथग्रहण करना और खेलकूदका आरम्भ तथा प्रतिष्ठाकर्म शुभ होता है।

चर-चल नक्षत्र- पुन.स्वाती,श्रवण,धनि.,शत. तथा सोमवार। इनमें साईकल,स्कूटर, कार, बस, ट्रक, घोड़ा आदि वाहनों का लेनदेन एवं उपयोग करना, लम्बी यात्रा, क्रय-विक्रय, दुकान खोलना, चित्रकारी, शिक्षा ज्ञान, रतिक्रीड़ा शुभ है। जलोत्पन्न कर्म भी शुभ है।

उग्र-क्रूर नक्षत्र- भर., मघा, पूफा, पूषा, पूभा तथा मंगलवार। इनमें दुष्ट(घात) कर्म, तस्करी, लाटरी सट्टा आदि धन्धे विषाग्नि तथा शस्त्रकर्म (बनाना चलाना) और पशु ज्ञानार्जन, पालन पोषण तथा चुगलपन श्रेष्ठ होता है।

मिश्र-साधारण नक्षत्र- कृति, विशा, तथा बुधवार। इनमें अग्नि सम्बन्धी कर्म, कई वस्तु विशेषके संयोगसे बनने वाले कार्य, वृषोत्सर्ग (सांड छोड़ना), घातकर्म, अग्निदाह, शठता, विष एवं शस्त्र सम्बन्धीकर्म शुभ होते हैं। कई आचार्य मांगलिककर्म, व्यापार एवम् उद्योगसम्बन्धीकर्म भी शुभ मानते हैं।

क्षिप्र-लघु नक्षत्र-अश्वि.,पुष्य,हस्त,अभि. तथा गुरुवार। इनमें दुकान,रतिकर्म, ज्ञानार्जन,शिल्प व चित्रकला,वाहन लेनदेन,दूर-समीपकी यात्रा,क्रय-विक्रय शुभ होता है।

मृदु-मैत्र नक्षत्र- मृग,चित्रा,अनु.,रेव तथा शुक्रवार। इनमें गीत विवाहादि मंगलोत्सव तथान्य क्रीड़ा, मैत्री-कार्य, वस्त्राभूषण निर्माण तथा धारण करना, बीजबोना, बागबगीचा लगाना, शान्ति कर्म, गृहारम्भ, नृत्यसीखना, गोपनीयताकी शपथ लेना, खेल खेलना शुभ होता है। जलोत्पन्नकर्म भी शुभ कहे हैं।

तीक्ष्ण-दारुण नक्षत्र- आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा, मूल तथा शनिवार इनमें अभिचार घातलगाना, पापकर्म, चुगलपन, पशुशिक्षा, बन्धन, तस्करी, लाटरी, सट्टा आदि धन्धे, विषाग्निकर्म तथा अस्त्र-शस्त्र निर्माण और प्रयोग शुभ होता है।

टिप्पणी- वार की गिनती रविवारको एक मानकर की जाती है। तिथिकीगणना शुक्ल प्रतिपदा से होती है। कृष्णपक्षकी प्रतिपदा सोलहवीं तिथि गिनी जाती है। नक्षत्रकी गिनती अश्विनी आदि मानकर की जाती है। नक्षत्रोंकी संख्या२७ प्रसिद्ध है। उषा. के अन्तिम चतुर्थांश एवं श्रवणके आदि पंचमदशांश भाग(९रा. ६ अं. ४०क. से ९ रा.१०अं ५३ क.२०वि. तक) अभिजित् नक्षत्र माना जाता है। **सूर्यभादगणना, भौमभादगणना-** आदि से तात्पर्य यह है कि सूर्यादि ग्रह कर्मकाल समये जिस नक्षत्र पर चल रहे हों उसी नक्षत्र से दैनिक चन्द्र नक्षत्र तक गिनतीकर फल प्रसंगके अनुसार जानना चाहिए।

साढ़ेतीन स्वयंसिद्धि मुहूर्त्त

१.चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २.वैशाखशुक्ल तृतीया(अक्षयतीज) ३.आश्विन शुक्ल दशमी(विजयादशमी) ४.कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा तथा दीपावली प्रदोषवेला चार स्वयं सिद्धि मुहूर्त है। इनमें किसी भी कार्यको करने के लिए पंचांगशुद्धि देखनेकी आवश्यकता नहीं है। इनमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण त्रली तथा चौथा अर्धत्रली होनेसे इन्हें साढ़ेतीनमुहूर्त्त कहते हैं।

लोकप्रसिद्ध मुहूर्त्त

आषाढ़ शुक्ल नवमी, कार्तिक शुक्ल एकादशी, माघ शुक्ल वसन्त पञ्चमी (श्री सरस्वती जयन्ती), फाल्गुन शुक्ल द्वितीया(फुलेरा दौज)- ये मुहूर्त्त लोकव्यवहारमें सिद्धि माने जाते हैं। कार्तिकशुक्लप्रतिपदा को उत्तरवासी मान्यता नहीं देते हैं। ये प्रत्येककर्ममें बड़ी ही श्रद्धाके साथ अपनाए जाते हैं। इन्हें 'अनपूछा' मुहूर्त्त कहा जाता है।

अभिजित् मुहूर्त्त

दिनमानके १५ भागकरने पर आठवां भाग अभिजित् मुहूर्त कहलाता है। इसमें अनेकदोष निवारणकी शक्ति है। अतः कोई शुभ लग्न मुहूर्त न बनता हो तो जातकादि सभी शुभकार्य अभिजित् मुहूर्तमें किये जा सकते हैं, परन्तु बुधवार के दिन इसका निषेध है। भगवानको अत्यन्त प्रिय यही पावनकाल सबको शान्ति देने वाला होता है।

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। शुक्ल पच्छ अभिजित्हरिप्रीता॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक विश्रामा॥

आनन्दादि योगोंका विवरण

वार एवं नक्षत्रके संयोगसे आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष, केतु श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब,उत्पात,मृत्यु,काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मूसल, गद्, मातङ्ग, राक्षस, चर, सुस्थिर और प्रवर्धमान- ये २८ योग बनते हैं, जोकि जन्त्री, पंचांगमें लिखे जाते हैं। गणनाक्रम- रविवारमें अश्विनी से, सोम में मृग.से, भौममें श्लेषासे, बुधमें हस्तसे, गुरुमें अनु. से, शुक्रमें उषा.से और शनिवारमें शत.से गिनती करने पर जाने जा सकते हैं।

आनन्दादि योगफल

धूम्र योगारम्भ की १ घटी, ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर की ५ घटी नेष्ट होती है। ऐसे ही पद्म, लुम्ब की ४, गद् की ७, काण और मूसल की २ घटी अशुभ मानी गई है। काल, उत्पात, मृत्यु और राक्षस सम्पूर्ण त्याज्य माना गया है। अन्य सभी योग श्रेष्ठ फलदायक है।

दोषसमूह नाशक रवियोग सूर्याश्रित नक्षत्रसे चन्द्राश्रित नक्षत्र तक गिननेपर संख्या ४।६।९।१०।१३।२० हो तो रवियोग होता है। जोकि त्रयोदश कुयोगोंके दुष्प्रभावको समाप्त कर देता है। प्रतिवर्ष हम अपने पंचांगोंमें सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धि आदि सुयोग अन्यान्य कुयोग किस दिन कितने समय तक रहेंगे यह लिख देते हैं। अच्छे समयमें किये कार्य सफल होते हैं।

वार, तिथि एवं नक्षत्रके संयोग से बनने वाले शुभाशुभ योग

शुभाशुभ योग	रविवार	चन्द्रवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
अमृत सिद्धि योग	हस्त	मृगशिर	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
विषयोग तिथि	५	६	७	८	९	१०	११
सर्वार्थसिद्धि योग	अश्वि.पुष्य.उफा.	रोहि,मृग.पुष्य	अश्वि.कृति.	कृति.रोहि.मृग.	अश्वि.पुन.	अश्वि.पुन.	रोहि.,स्वाती
एवं	हस्त,मूलउषाउभा	अनु.,श्रवण	श्लेषा,उभा.	हस्त.अनु.	पुष्य,अनु.	अनु.श्रवण	श्रवण
दुष्ट तिथि	१,३(७संवर्त)	२,११	३,९,१२	७,९,११	रेवती	रेवती	११,१३
सिद्धियोग नक्षत्र	मूल	श्रवण	उभा	कृतिका	पुनर्वसु ३०	पूफा	स्वाती
सिद्धियोग तिथि	०	०	३*,८**,१३	२,७*,१२	५,१०*,१५**	१,६,११**	४**,९,१४*
दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उषा	धनिष्ठा	उफा	ज्येष्ठा	रेवती
दग्ध तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२(१संवर्त)	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
क्रकच(अधम)योग	१२	११	१०	९	८	७	६
ज्वालाकूट योग	८**,१३	१	४**,१४*	५,१०*,१५**	२,७*,१२	५,१५**	३*,८**.
मृत्युद तिथि	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
यमदंष्ट्रा	मघा धनि.	विशा, मूल	भर.कृति.	पुन.रेवती	अश्वि.उषा.	रोहि.अनु.	श्रव.शत.
कालयोग	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.
वज्र योग	श्लेषा	हस्त	अनु.	उषा.	शतभि.	अश्वि.	मृगशिर
लुम्बक योग	स्वाती	मूल	श्रवण	उभा.	कृतिका	पुनर्वसु	पूफा.
उत्पात योग	विशाखा	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफा.
मृत्यु योग	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उषा.
यमघण्ट योग	मघा	विशा.	आर्द्रा	मूल	कृति.	रोहिणी	हस्त
याम(प्रहर)	४प्रहर	७ प्रहर	२ प्रहर	५ प्रहर	८ प्रहर	३ प्रहर	६ प्रहर
घटी	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।
कुलिक मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कण्टक मुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	८
कालबेला मुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
अर्धयाम मुहूर्त	७	९	३	९	१५	५	१
यमघण्ट मुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	१२
दुष्टक्षण मुहूर्त	७।१४	१३।१४	४।६	८।९।१०	१५।१६	४।५।६।९	१।२
विष घटी	२० घटी	२ घटी	१२ घटी	१० घटी	७ घटी	५ घटी	२५ घटी

* कृष्णपक्ष के तिथियर्ध में भद्रा होती है।

** शुक्ल पक्ष के तिथियर्ध में भद्रा रहेगी।

अयोग सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धि तनोति।
परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वञ्च शस्तम्।।

यदि यमदृष्टा, कालयोग, अन्यान्य कुयोगमें सुयोग आ जाए तो अयोगके (बुरेफल) का नाश कर शुभ फल ही देता है। अतः उसमें कार्य सम्पादन कर सकते हैं।

अन्य आचार्योंके मत से तत्काल लग्नशुद्धि समस्त अशुभयोगों के फल का नाश कर शुभफल देनेमें समर्थ होती है। यथा-

यत्रलग्नं विना किञ्चित् क्रियते शुभ संज्ञकम्। तत्र तेषामयोगानां प्रभावाज्जायते फलम्।।

अतः कार्य-भेद से लग्नशुद्धि का विचार सुविज्ञजन स्वयं करें। सामान्यतः लग्न से ४।८।१२ वें स्थान शुद्ध हों, अपनी राशि से ३।६।१०।११वीं लग्न राशि होनी चाहिए। राशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा नहीं होना चाहिए। कुछ आचार्य १२ वां चन्द्रमा नेष्ट नहीं मानते है।

देशभेदसे दुष्ट योगोंका परिहार

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः। हूणवंगखशेष्वेव ज्यांस्त्रितयजास्तथा।।

तिथि और वार से उत्पन्न। तिथि और नक्षत्र से उत्पन्न। दिन और नक्षत्र से उत्पन्न एवं वार, तिथि, नक्षत्र इन तीनोंसे उत्पन्न कुयोग क्रमशः हूण(मध्य एशिया) वंग(बंगाल), खश(नेपाल) क्षेत्र में ही त्याज्य है, अन्य स्थानों पर दोष माननेकी आवश्यकता नहीं। **मुहूर्त्त चिन्तामणि पृ. १३**

नोट- विषाख्य कुलिक और संवर्त योग की अवशिष्ट तथा वार-दग्ध, हुताशन, की सर्वतिथियोंका समावेश चक्र में वार-क्रम से अन्यान्य अशुभ तिथियों में हो गया है। इसलिए इन कुयोगोंके खाने अलग से नहीं दिए गए है।

एक दिन में अमृतयोग और सिद्धियोग-तिथि दोनों एक साथ ही पड़ जायें तो वह दिन दुष्ट हो जाता है, जैसे मधु और घृत समभाग मिलने पर विष बन जाता है।

अमृत सिद्धियोग च यद्येकस्मिन्दिने भवेत्। तक्ष च तद्दिनं दुष्टं मधु सर्पिविष यथा।।

चक्रांकित रविवार में हस्त नक्षत्र और पंचमी तिथि एक साथ आ जाए तो 'त्रितयज' कुयोग होता है जो सभी शुभ कार्यों में त्याज्य माना गया है, ऐसे ही अन्य सभी वारों में जानना चाहिए।

कालबेला मुहूर्त्त

रविवार को आठवाँ सोम को छठा, भौम को चौथा, बुध को दूसरा, गुरु को चौदहवां, शुक्र को बारहवाँ और शनि को दशवां कालवेला नामक मुहूर्त्त महाअशुभ माना जाता है। **ज्ञातकरनेकी विधि-** अभीष्टदिन दिनमान का १५वां भाग प्रत्येक मुहूर्तका मान होता है। कालबेला मुहूर्तसे पूर्व मुहूर्त्त संख्यांक से मुहूर्त्त मान को गुणाकर दें। गुणनफल (कुलमान) को सूर्योदयमें जोड़नेपर कालबेल मुहूर्त्तारम्भका समय ज्ञात हो जाएगा। दक्षिण भारतमें इस मुहूर्त्तमें कोई भी शुभकार्य नहीं करते हैं। त्रयोदश कुयोगनाशक रवियोग होता है। जिसका उल्लेख प्रतिवर्ष हम अपने पंचांगों मे कर देते हैं।

❀ होमाहुति शुभाशुभग्रहे मुखज्ञानम् ❀

रवि नक्षत्रसे दैनिक चान्द्रनक्षत्र तक गिने ३ संख्या तक आहुति सूर्य के मुख में जाती है, तदुपरान्त ६ तक बुधके मुखमें। इसी प्रकार आगे निम्नलिखित चक्र से जान लें।

❀ ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम् ❀

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	राहु	केतु	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

शुभग्रह के मुखमें पड़नेसे यज्ञाहुति मंगलकारी होती है। नोट- ग्रह दोष शान्त्यर्थ आहुतियोंका विचार प्रसंगवश करना चाहिए। अर्थात् जिस ग्रहकी शान्तिहेतु हवन किया जाय, आहुतियाँ उसीग्रहके मुख में पड़नी चाहिए।

❀ होमसमये अग्निवास ज्ञानम् ❀

हवनदिन तिथि संख्यामें 'वार' संख्या जोड़कर १ और मिलावें ४ से भाग दें,यदि शेष ३।० बचे तो अग्निकावास भूमिपर होता है, सो यज्ञकर्ममें श्रेष्ठ माना जाता है। १बचे तो अग्निका वास स्वर्गमें प्राणनाशक, और २शेषमें अग्निकावास पातालमें धनैश्वर्य अभिवृद्धि कारक होताहै।

नोट-दैवज्ञरंजनमें अग्निवास स्वर्गमें शुभ कहा है। नित्य नैमित्तिक कार्योंमें अग्निवासेका विचार नहीं करना चाहिए। यथा-यात्रा-विवाह-व्रत गोचरेषु **चौलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्त राहुणां। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।।**

❀ शिववासज्ञानम् ❀

हवनदिन तिथि संख्याको दूना करके ५ और मिलावें, ७ से भाग करने पर १शेष बचे तो शिवजीका वास कैलाशपर श्रेष्ठ, २ शेष में गौरी पार्श्वे श्रेष्ठ, ३शेषमें वृषारुढ़ श्रेष्ठ,४शेषमें सभायां सन्ताप, ५ शेष में ज्ञावेलायां पीड़ा,६शेष में क्रीड़ायां दुःख शोक और ०शेष अर्थात् भाग पूरा लगने पर शिववास शमसानभूमिमें होता है जिसकाफल मृत्यु कहा गया है।

❀ शिववास शुभ तिथि ❀

शुक्लपक्ष की तिथियाँ	२	५	६	९	१२	१३
कृष्णपक्ष की तिथियाँ	१	४	५	८	११	१२

हवनमें शाकल्यविचार- यथाशक्ति ली गई सामग्रीमें तिल का आधा भाग चावल, चावलका आधा यव (जौ), यव का आधा शर्करा और सबके अनुपातमें घृत लेना चाहिए। तिल सफेद लेने चाहिये, क्योंकि काले तिलोंमें अधिकांशतः कीड़े पाये जाते हैं।

❀ गृहनिर्माण मुहूर्त्त ❀

शेषकी चालका विचार- सिंह, कन्या और तुलाकी संक्रांतियोंमें शेषनाग का मुख ईशानमें रहता है तब भवन निर्माणार्थ नीमरखने, भूमिपूजन करने, के लिये जमीनको आग्नेयकोण (पूर्व दक्षिण के मध्य) खुदवाना चाहिये। ऐसे ही सभी संक्रांतियोंके लिये निम्नचक्र से दिशाओंका ज्ञान प्राप्त कर सकते है। जिसमें विवाह, देवालय, स्कूल आदि निर्जीवभवन गृहारम्भ और जलाशय बनवाने के लिये जमीन किस दिशामें खोदी जाय यह लिखा है।

❀ अथ खात (भूमि खोदना) चक्रम् ❀

सूर्य	विवाहे	देवालये	गृहारम्भे	जलाशये	शुभस्थान
सूर्य	२।३।४	१२।१।२	५।६।७	१०।११।१२	आग्नेय दिशा
सूर्य	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	७।८।९	नैर्ऋत्य दिशा
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	४।५।६	वायव्य दिशा
सूर्य	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	१।२।३	ईशान दिशा

❀ गृहारम्भे शेषनाग फलम् ❀

फन दावै त्रिरिया डंशे, पूंछ दवै भरतार।
जो कोई दावै मध्य में, होय कुटुम्ब संहार।।

अर्थ- जो कोई शेष नागके फन (मुख) पर से भवन निर्माणहेतु नीम रखवाकर विनाई शुरू करादे तो उस भवनके मालिककी स्त्री नहीं बचती, इसीतरह पूँछसे स्वयं गृहकर्ता और मध्यसे कुटुम्बकी हानि होती है। इसलिए शेषकी चाल बचाकर मुहूर्त्त करना चाहिए।

❀ गृहारम्भ मुहूर्त्त शिल्पशास्त्र ❀

चार वेद तिथि दुगुनि करि, नाम के अक्षर जोड़।
शिव के नैना(३) भाग दे, विश्वकर्मा ईंट चहोड़।।
एक बचे लख्खेश्वरि, दोय बचे धनवान।
शून्य बचे जीवे नहीं, शिल्प वचन प्रमान।।

❀ चन्द्रमा विचार ❀

मेष मकर वृष कर्कट सोते, कार्य समय ऐसे शशि होते।
कन्या मिथुन तुला धनु ठाडे, कुम्भ मीन सिंह वृश्चिक बैठे।।
सोते कूप खुदाइये, बैठि बसइये ग्राम।
ठाडे कटक सिंधारिये, शिल्पशास्त्र प्रमाण।।

अग्निवाण-जिस किसीभी राशिमें गतिशील सूर्यके भुक्तांश २।११।२०। २९ होने पर अग्निमांश का समय अग्निवाणदोष से युक्त होता है। जोकि गृहकार्यमें सर्वथा वर्जित है। मंगलवार में अतिनेष्ट हो जाता है।

पृथ्वीशयन- सूर्यसंक्रांति से ५।७।९।१०।२१।२४ इतनेदिन धरती सोती है। **द्वितीयमत-** सूर्यनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ भूमिशयन करती है। इन नक्षत्रोंमे भी क्रमशः ४।८।५।३।६।७ घटी कलांश भूशयन होता है। शेषकाल वर्जित नहीं। नोट- भूमिशयन ज्योतिषके सन्दर्भ में अनसुलझी पहेली है। अधिकतर विद्वान निम्नलिखित दोहा के समर्थक है। यथा-

संक्रांति मिति दिन पञ्चम, सप्तम नवमे जोय।
दस इक्कीस चौबीसवें, षट् दिन पृथ्वी सोय।।

❀ शुभाशुभ विचार ❀

जहां निवास करनाहो उस भूमिपर एकहाथ समकोण गड्डा बनावें, उसको पानी से भरें, अग्रिम दिन प्रातःकाल में देखें यदि जल परिपूर्णहो तो शुभ, अर्धजलयुक्त मध्यम, तथा निर्जल छिन्नभिन्न हो तो उसे अशुभ जानें। किसीनगर, ग्रामादि में स्थायी निवास बनाने अथवा कोई कारोबार या उसकी शाखा स्थापित करने,कोई भागीदार,प्रबन्धक या कर्मचारी नियुक्त करने,किसी से व्यापारिक या आर्थिक स्थायी सम्बन्ध स्थापित करने,'वस्तु' विशेषके उत्पादन या व्यापार करने आदि के समय यह स्वाभाविक प्रश्न उपस्थित होता है कि उस नगर ग्राम या व्यक्ति और 'वस्तु'के कार्य-व्यापारसे उसके कर्त्ताको लाभ होगा या नहीं? ज्योतिषशास्त्र दृष्ट्या इसका निश्चय करनेके लिए वास्तु प्रकरणमें तीन विधियां बताई हैं। १.राशिपरित्वेन २. नक्षत्रपरित्वेन और ३. काकिणीपरित्वेन

व्यवहारकर्ता व्यक्तिकी संज्ञा 'साधक' और जिससे व्यवहार करना है उस नगर,व्यक्ति या वस्तु आदिकी संज्ञा'साध्य'समझनी चाहिए। इस सन्दर्भमें पुकारने वाले नाम,राशि,नक्षत्रका ही उपयोग श्रेष्ठ रहता है। यथा-

काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च, वादे द्यूते स्वरोदये।
मन्त्रे पुनर्भ वरणे, नामराशेः प्रधानतः।।

❀ राशि परित्वेन विचार ❀

साधक की राशिसे साध्य (नगर, ग्राम, व्यक्ति विशेष या वस्तु आदि) की राशि २।५।११वीं हो तो विशेष शुभ, ९।१० होने पर अल्पशुभ तथा १।३।४।६।७।८।१२वीं हो तो अशुभ समझनी चाहिए। साधक से साध्य की राशि १।७ होने पर शत्रुता, ३।६ से हानि, ४।८।१२वीं होने पर रोगोत्पात(विपत्ति) कारक होती है।

नक्षत्रपरित्वेन विचार- साध्यके नक्षत्रसे साधकके नक्षत्र तक साभिजित् गणना करें। ७ तक धनैश्वर्य वृद्धि मान-सम्मान, ८ से १४ तक धन हानि, १५ से २१ तक सुखोपभोग सम्पत्ति लाभ। आगे २२ से २८ तक अतिनेष्ट जानें।

काकिणी परित्वेन विचार

वर्ग वर्गसंख्या	अ वर्ग (१)	क वर्ग (२)	च वर्ग (३)	ट वर्ग (४)	त वर्ग (५)	प वर्ग (६)	य वर्ग (७)	श वर्ग (८)
वर्गाक्षर	अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
स्वामी	गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा
शत्रु	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा	गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान
दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
स्वरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२

काकिणी विचार

निवास करने वालेकी वर्ग संख्याको दूना करके स्थानकी वर्ग संख्या जोड़कर ८ से भाग दें, जो शेष बचे वह प्रवासी की काकिणी होती है। और स्थान की वर्ग संख्या दूनी करके प्रवासीके वर्ग की संख्या जोड़कर ८ का भाग देने पर ग्रामकी काकिणी होती है। बसने वालेकी काकिणी अधिक हो तो उत्तम लाभप्रद जानें। यह श्रीनारदजी के मतानुसार है सो यह सही है। रामाचार्य जी का मत इसके भिन्न है।

काकिणीसंख्या, लाभालाभ ज्ञानायचक्रम्

नगरकाकिणी	अवर्ग (१)	कवर्ग (२)	चवर्ग (३)	टवर्ग (४)	तवर्ग (५)	पवर्ग (६)	यवर्ग (७)	शवर्ग (८)	काकिणी
	व्यक्ति का वर्ग								
अवर्ग (१)	३ ३ सम	५ ४ लाभ	७ ५ लाभ	१ ६ हानि	३ ७ हानि	५ ० लाभ	७ १ लाभ	१ २ हानि	व्यक्ति नगर
कवर्ग (२)	४ ५ हानि	६ ६ सम	० ७ हानि	२ ० लाभ	४ १ लाभ	६ २ लाभ	० ३ हानि	२ ४ हानि	व्यक्ति नगर
चवर्ग (३)	५ ७ हानि	७ ० लाभ	१ १ सम	३ २ लाभ	५ ३ लाभ	७ ४ लाभ	१ ५ हानि	३ ६ हानि	व्यक्ति नगर
टवर्ग (४)	६ १ लाभ	० २ हानि	२ ३ हानि	४ ४ सम	६ ५ लाभ	० ६ हानि	२ ७ हानि	४ ० लाभ	व्यक्ति नगर
तवर्ग (५)	७ ३ लाभ	१ ४ हानि	३ ५ हानि	५ ६ हानि	७ ७ सम	१ ० लाभ	३ १ लाभ	५ २ लाभ	व्यक्ति नगर
पवर्ग (६)	० ५ हानि	२ ६ हानि	४ ७ हानि	६ ० लाभ	० १ हानि	२ २ सम	४ ३ लाभ	६ ४ लाभ	व्यक्ति नगर
यवर्ग (७)	१ ७ हानि	३ ० लाभ	५ १ लाभ	७ २ लाभ	१ ३ हानि	३ ४ हानि	५ ५ सम	७ ६ लाभ	व्यक्ति नगर
शवर्ग (८)	२ १ लाभ	४ २ लाभ	६ ३ लाभ	० ४ हानि	२ ५ हानि	४ ६ हानि	६ ७ हानि	० ० सम	व्यक्ति नगर

नोट :- व्यक्ति और नगर के सामने (कोष्ठकमें) बाई ओर लिखी संख्याएं व्यक्ति और नगर की काकिणी संख्याएं है। साथ ही लाभ, हानि और सम रहने का संकेत है।

काकिणी विचार- निवासके लिये तो करते ही है, इसको अन्य और भी कामों में विचारा जाता है जैसे- किसी को किसीके साथ फर्म आदि चालू करनेके लिये समझौता करना हो। कोई कहे कि मैं अमुक वस्तु विशेष का उत्पादन करना चाहता हूँ या दुकान खोलना चाहता हूँ। फायदे में रहूँगा। या नहीं? कौन ऋणी और कौन धनी होगा? इसका उत्तर काकिणीपरित्वेन सहज प्राप्त कर सकते हैं। पहले शहरके नाम का विचार कर, फिर मोहल्ला-नगरका पुनः ब्लाक का अथवा सेक्टर का नाम देखकर निर्णय लेना चाहिए। इसीसे वाहन, पशु नौकर चाकर के शुभाशुभ का सहज ज्ञान सम्भव है।

गृहारम्भमें- शुभमास वै.,आ.,श्रा.,का.,मार्ग.,माघ और फाल्गु.

शुभनक्षत्र- अ.रो.मृ.पु.पु.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.उषा.श्र.ध.श.उभा. रेव. श्रेष्ठ। ४।६।८।९।१४।३० तिथि,रवि भौम को छोड़कर शेष दिन गुरु शुक्रके उदयमें शुभ जानें। अग्निबान का समय त्याज्य है।

सूर्यभात् वृषभ चक्रम्

शिर	अग्रपाद	पृ.पाद	पृष्ठ	द.कु.	पुच्छ	वा.कु.	मुख	वृषभाङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिर	धन	लाभ	क्षय	दारिद्रय	पीड़ा	फलम्

गृहारम्भ लग्नमें उच्चका शुक्र हो या उच्च का गुरु चतुर्थ भाव में हो अथवा एकादश भाव में उच्च का शनि हो तो वह घर बहुत काल तक लक्ष्मी से युक्त रहता है।

रोहिणी चक्रम्

१	५	५	३	२	४	३	४	नक्षत्र
बहुजल	सुसिद्धि	अभंगद	रुज	असिद्धि	यथार्थ	प्रसिद्धि	जलभंग	फलम्

रोहिणी नक्षत्रसे नलकूप कार्य दिन नक्षत्र तक गिने फल रोहिणी चक्रसे जानलें।

गृहप्रवेश- रिक्ता तिथि ४।९।१४ व अमावस्या रवि भौमवार त्यागकर अश्विनी,रोहिणी,मृग.,आर्द्रा,पुन.,पुष्य,उफा., हस्त, चित्रा, स्वाती,अनु.,ज्येष्ठा,मूल,उषा,श्रवण,धनि.,शत.,उभा. और रेवती नक्षत्र शुभ है। यदि सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धि आदि योग बन जाए तो रविवार भी मान्य है।

शुभ लग्न- वृष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुम्भ और मीन।

सूर्यभाद्गणना-शुभाशुभनक्षत्र

५तक	१३तक	२१तक	२५तक	२८तक	नक्षत्रसंख्या
नेष्ट	शुभ	अशुभ	श्रेष्ठ	मध्यम	फलम्

वास्तु पूजन

जिस भूमि पर मनुष्यादिप्राणी वास करते है, उसे वास्तु कहा जाता है। वास्तु की शुभाशुभ परीक्षा पूजनादि सौख्य समृद्धि हेतु आवश्यक है। मत्स्यपुराण अ.२५१ में लिखा है कि अन्धकासुरके वधके समय भगवान शंकरके ललाटसे पृथ्वी पर जो स्वेदबिन्दु गिरे उनसे एक भंयकराकृतिवाला, पुरुष प्रकट हुआ। जिसने अन्धकगणों का रक्तपान किया फिरभी अतृप्त हो त्रिलोकीको भक्षण करनेके लिए उद्यत हो गया। जिसे महदेवादि देवोंने पृथ्वी पर सुलाकर वास्तुदेवताके रुपमें प्रतिष्ठितकिया और उसके शरीरमें सभी देवताओंने वास किया, इसीलिए वह वास्तुपुरुष या वास्तुदेवता कहलाने लगा। देवताओंने वास्तुको गृहनिर्माणके वैश्वदेव बलिके तथा पूजन, यज्ञ, यागादिके समय पूजित होनेका वर देकर कहाकि वापी, कूप तड़ाग गृह, मन्दिर, बाग बगीचा जीर्णोद्धार यज्ञ मण्डप निर्माणादि के समय जो तुम्हारी पूजा प्रतिष्ठा अर्चना करेगें, उन्हें सभी प्रकारकी सौख्यसमृद्धि मिलेगी। वास्तुदेवताका मूल मन्त्र- **वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवान:। यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्वशंनो भव द्विपदेशं चतुष्पदे।।**

मकानमें कहाँ क्या बनावें?

स्नानागार दिशि प्राच्यां आग्नेय्यां त महानसम्। याम्यायां शयनागार नैर्ऋत्यां वस्त्रमन्दिरम्।। वारुण्यां भोजनगृहं वायव्यां पशुमन्दिरम्। भण्डारं वेश्मोत्तरस्यां ऐशान्यां देवतालयम्।। एनान्युक्तानि शस्तानि स्वस्वये स्वरूप क्षिवपि।

वायव्य — उत्तर — ईशान

धान्य संग्रह आभूषण कक्ष	रति कक्ष	शयन कक्ष	रोगी कक्ष	पूजा गृह
सन्तान कक्ष				स्टोर
भोजन कक्ष		आंगन		मुख्य द्वार
अध्ययन कक्ष				स्नान घर पानी(जल)
शौचालय अस्त्रशस्त्रकक्ष	स्वामी कक्ष	बेड रूम	स्टोर कक्ष	पाक गृह

पश्चिम (बाईं ओर) — पूर्व (दाईं ओर)

नैऋत्य — दक्षिण — अग्नि

घरसे किस दिशामें कौनसा वृक्ष शुभ और कौनसा अशुभ होता है

पूर्वमें-वट,आम,बरगद, शुभ व पीपल अशुभ रहताहै। आग्नेयमें-अनार शुभ व वट,पीपल,पाकर,गूलर,सेमर अशुभ होता है। दक्षिणमें-मूलर शुभ व पाकर, तुलसीके पेड़ नेष्ट होते है। नैर्ऋत्यमे-इमली,नींबू,सेमरगद्दा,छोंकर वृक्ष शुभ होताहै। पश्चिममें-पीपल,चन्दन,बेला,गुलाब शुभ व वटवृक्ष को अशुभ होताहै। वायव्यमें-बेल,आमला,अशोक वृक्ष शुभ रहताहै। उत्तरमें-पाकर कैथ और शमीवृक्ष को शुभ जानें। ईशानमें- आँवला, चन्दन वृक्ष शुभ माना गया है।

❀ आवश्यक मुहूर्त्ताः ❀

मुहूर्त्ताः	तिथिः	वाराः	नक्षत्रलग्नमासादिकम्
प्र.रजोदर्शनि	सत्	चं. बु. गु. शु.	अ.रो.मृ.पुष्य.उफा.ह. चि. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. नक्षत्र। वै. ज्ये. श्रा. आश्वि.मार्ग. माघ. फाल्गु.। शु.प.,शु.ल.दिनमें शुभ है।
रजःस्नानम् गर्भाधानं	सत्	चं. बु. गु. शु.	अ.रो.मृ.उफा.ह.स्वा.अनु.उषा.श्र.ध.श.उभा.रे.श्रेष्ठः। रवि,भौम,शनिवार,भद्रा व्यतीपातादि कुयोगरहित दिन उपरोक्त मासादि में शुभः। रजोदर्शनान्तर ४ से १६ रात्रिपर्यन्त पुत्रेक्षुकसमरात्रिस्त्रीसमागमकर्त्तव्यम्।
पुंसवन सीमंतकर्म	सत्	र. मं. वृहस्पति	मृ.पुन.पुष्य.हस्त.मू.श्र.रेव.शुक्लपक्षे,मासेश्वरे सबले। तृतीयमासे पुंसवन, छटे-आठवें सीमन्त एवं श्रीविष्णुसहित श्रीपूजनार्चनम् कर्त्तव्म्।
सूतिकास्नान मुहूर्त्तः	सत्	र. चं. बु.गु.शु.	अश्वि.रो.मृग.उफा.हस्त.चि.स्वा.अनु.उषा.उभा.रेव.। सद्भानि, पञ्चमशुद्धिः लग्ने। यत्नेनचिन्तयेत्बुधः।
जातकर्म (नामकरण)	सत्	र. चं. बु.गु.शु.	अ.रो.मृ.पु.पुष्य.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.उषा.श्रव.ध.श.उभा.रे.जन्मतः १०।११।१२।१५।१६वेंदिने अथवा सवा महीनेमें नामकरणसंस्कारशुभः। **आश्विन्याश्लेषामघाश्च ज्येष्ठामूलरेवत्याम्। मूलसंज्ञकषट्भानिजन्म तत् नामकरणम्।। पुनरावृत्तिजन्मनक्षत्रः तद्दिनेशुभमभूयात्।**
जलपूजन (कुआँपूजन)	सत्	चं. बु. गु. शु.	मृ.पुन.पुष्य.हस्त.चि.अनु.मू.श्रव.रेव.सद्भानिश्रेष्ठः। चैत्र,पौष,मलमास, मासान्त,कुयोगदिन एवं गुरुशुक्रास्तकाल वर्ज्यः। शेष कुलाचारानुसारेण
जातकानाम् अन्नप्राशनं	२।३।५ ७।८।१० १३।१५	चं. बु. गु. शु.	**बालानां षष्ठादिसममासेषु कन्यायां पञ्चमादिविषमासेषु शुभः।** अ.रो.मृ.पुन.पु.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.उषा.श्र.ध.श.उभा.रेव. सद्भानिग्राह्यः। मीन वृश्चिक मेष लग्नानि। जन्मर्क्ष च वर्ज्यम् १०में शुद्धे।
निष्क्रमणमु.	सत्	शुभ	चतुर्थमासे यात्रोक्त तिथिवार नक्षत्रेषु अथवा द्वादशदिने गद्योत्सव संगे।
कर्णवेध चूड़ाकरण मुण्डन संस्कार	१।२।३ ५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५	चं. बु. गु. शु. शुभयोगमें रवि	जन्मादिभात् १२ वा १६दिन वा ६।७।८ मासेषु वा विषमवर्षेशुभानि अश्वि.मृ.पुन.पुष्य.हस्त.चि.स्वा.अनु.अभि.श्रव.ध.श.रेव.भेषुचन्दः। ऽर्कबले अष्टमशुद्धलग्ने।। वर्ज्याः चैत्र पौष हरिशयनं जन्ममासं तथा ताराविरुद्धं च। रोगवानं मृत्युवानं हानिप्रदायकाः।। ज्येष्ठसुते च ज्येष्ठमासे विवर्जिताः।।
उपनयन सं. (यज्ञोपवीत) ब्राह्मण वैश्य और क्षत्रियों के लिए	२।३।५ १०।११।१२ वर्जित पौ.१मा.१२ आ.०ज्ये.२	सू.चं.बु गु.शु. रविपुष्य गुरुपुष्या-मृत शुभः।	अ.रो.मृ.आ.पुन.पु.श्ले.पूफा.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.पूषा.उषा.श्र.ध.श.पूभा. उभा.रेवतीनक्षत्रे उभयपक्षे ग्राह्यः वैशा.ज्ये.आषा.माघ फाल्गु. मासाः। लग्न २,३,५,६,९ शुभःचिन्तनीयम्। त्याज्याः- रोगवन्तः मृत्युवन्तःअन्यान्य योगाः कष्टकारकाः। वसन्त ग्रीष्म शरद् शिशिर ऋतु ग्राह्याः द्विजमात्रेण यज्ञोपवीतम्।। सामवेदीयशाखा वालोंके लिए भौमवार भी शुभः।
विद्यारम्भः वेदारम्भः	२।३।५ ६।१० ११।१२	चं. बु. गु. शु.	३या५वर्षे, अश्वि.रो.मृ.आर्द्रा.पुन.पु.पूफा.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.पूषा.उषा श्रव.ध.श.पूभा.उभा.रे.सद्भानि अनध्यायवर्जितदिने(उत्तरायणे) ३पू.३उ. सर्वमान्य नहीं। श्रीगणेश,सरस्वती,लक्ष्म्यादिपूजनोपरान्त ज्ञानार्जनं शुभमभूयात।
स्त्रीणां चोटी जूड़ा करणम्	सत्	र. चं. गु. शु.	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.उषा.श्रव.उभा.रे.नक्षत्र। तथा २।३।४।५।१२ लग्न श्रेष्ठ।
चूड़ा पहरना	सत्	र. बु. गु. शु.	अश्वि.हस्त.चित्रा.स्वा.अनु.धनि.रे. नक्षत्र शुभः। सूर्यभाद्गणना ८नेष्ट, ३श्रेष्ठ, २नेष्ट, ७श्रेष्ठ, २नेष्ट, ४श्रेष्ठ, १नेष्ट जानें।
रोगमुक्त स्नानम्	असत्	र.मं.बु. गु. श.	अश्वि.भ.कृ.मृग.आ.पुष्य.पूफा.ह.चि.वि.अनु.ज्ये.मू.पूषा.श्र.ध.श.पूभा ये नक्षत्र और चर लग्न और अशुभचन्द्र ४।८।१२ में स्नान करें।
वधू प्रवेश मुहूर्त्त	सत्	सभी वार शुभ	विवाहसे २।४।५।६।७।८।१०।१२।१४।१६ दिनोंमें इसके पीछे विषममास विषमवर्षमें। अ.रो.मृ.पुष्य.म.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.श्र.ध.उषा.उभा.रे. और स्थिरलग्नमें शुभः।कुछविद्वान तारोंकी छायामें विशेष शुभमानते है।
द्विरागमन गौना (मुकलावा)	सत्	शुभ वार	मेष वृश्चिके मकर कुम्भस्थोरवौ,अ.रो.मृ.पुन.पु.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू. उषा.श्र.ध.श.उभा.रे.सौम्ययुक्तादृष्टे २।३।६।७।१०।१२ लग्नेषु रवीज्य शुद्धियोगेसति। सम्मुखदक्षिणेविवर्जितेभृगौसत्। वर्षाभ्यन्तरे दोषाऽभावः।
गन्धर्वविवाह	सत्	र.मं.श.	अ.कृ.आर्द्रा.पुन.श्ले.ज्ये.ध.शत.इन नक्षत्रोंमें शुभः।
द्वारशाखा	५।७ ८।९	चं. बु. गु. शु.	रविभाद्गणना ४श्रेष्ठ,८नेष्ट,८श्रेष्ठ,३नेष्ट,४श्रेष्ठ,काष्ठशा.अ.ह.पुष्य.रो. मृ.उत्तरा३,स्वा.श्र.पाषाणे ध.श.पूभा.रे.। लग्न७।१०द्वारखाखा रोपण श्रेष्ठ
चूल्हा भट्टी	सत्	शुभ वार	पूर्वा३ रो. पुष्य.उत्तरा.३,अ.आर्द्रा.रविभाद्गणना। ६श्रेष्ठ,४नेष्ट,८श्रेष्ठ, ५नेष्ट,२श्रेष्ठ,२नेष्ट चन्द्रबले सति शुभं भूयात्।
क्रयनक्षत्र मुहूर्त्त	सत्	चं.बु.गु शु. श.	अ.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.श्रव.ध.श.रे.बुधमें अपना द्रव्य देना नहीं, हस्तमें द्रव्य कर्ज लेना नहीं चाहिए।
विक्रय नक्षत्र मुहूर्त्त	शुभ तिथि	सभी वार	भ.कृ.रो.आ.श्ले.म.पूफा.उफा.वि.मू.पूषा.उषा.पूभा.उभा.नक्षत्र शुभदा,सभी वार शुभ जानें। रिक्ता व अमावस्या तिथि एवं कुम्भलग्न निषेधः।
ऋण का लेन देन कब करें			रविवार,मंगल,संक्रांतिदिन, वृद्धियोग, द्विपुष्कर त्रिपुष्करयोग और हस्त नक्षत्रमें ऋण ले तो मुक्ति न मिले। बुधवारमें अपना द्रव्य देना नहीं भौमवार में प्रदोषव्रत रखकर कर्जाचुकावें तो तुरन्त मुक्त हो जाएँ।

नोट- सत्तिथियाँ १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५, असत्तिथियाँ ४।६।८।९।१२।१४।३० सूर्यभाद् भौमभाद् या राहुभाद्गणना अथवा गुर्वाश्रितनक्षत्र अर्थात् सूर्यादि ग्रहाश्रित नक्षत्रसे दैनिक चान्द्रनक्षत्र तक गणना करके फल प्रसंगानुसार जानें। तिथियोंके नीचे जहाँ सत् लिखा हुआ है वहाँ पर सभी सत्तिथियाँ जाननी चाहिए। **स्मरण रहे-** तिथियाँ ८।१२ विकल्पमें मानी गई है। प्रसंगवस ग्राह्याग्राह्य समझनी चाहिए।

मुहूर्त्ता:	तिथि:	वारा:	नक्षत्रलग्नमासादिकम्
वापी नलकूप तड़ागारम्भः	सत्	र.चं.बु. गु.शु.श.	अ.रो.मृ.आर्द्रा.पुन.पुष्य.मघा.उफा.हस्त.चि.स्वा.अनु.उषा.ध.श.उभा.र. शुभे मासे स्थिरे लग्ने च बुध गुर्वोदये।
शिशुगोदलेना	सत्	र.मं.गु.शु.	अ.पुष्य.ह.चि.स्वा.वि.अनु.ध.नक्षत्र सिंह वृष लग्नमेंशुभ त्याज्य:८।११ल.
नौकर रखने का मुहूर्त्त	सत्	मं.श. त्याज्य:	अ.मृ.पुष्य.हस्त.चि.स्वा.अनु.अभि.रे.राशिशमैत्री+नक्षत्र योनि मैत्रीगण तथा काकिणीपरित्वेन वर्गपतिका चिन्तन करना श्रेष्ठ है।
प्लास्टिक उद्योग	सत्	बु.गु. सोम	अश्वि.पुष्य औरहस्तनक्षत्रउत्तम। मिश्रसंज्ञक:विशा.कृति.मध्यम। अमृतसिद्धि, सर्वार्थसिद्धियोग उत्तम। अन्यान्य शुभाशुभ योगों का भी विचार करें।
सौन्दर्य प्रसाधन	सत्	रवि चं. बु. शु.	रो.पुन.उफा.उषा.श्रव.ध.शत.शुभ। क्षयतिथि कुयोगरहित दिनमें कार्यारम्भ करें। अमृतसिद्धि व सर्वार्थसिद्धियोग उत्तम जाने।
वस्त्रोद्योग मुहूर्त्त	सत्	चं. बु. गु. शु.	अश्वि.रो.पुष्य.उफा.ह.उषा.श्रव.उभा.नक्षत्र शुभ है। राशिसे चन्द्रमा का विचार अवश्य करें। उद्योग मुहूर्त्त देखें।
फिल्मनिर्माण व संचालन	२।५।७ १०।१५	बु. गु. शु.	अश्वि.मृग.पुष्य.ह.चि.अनु.रेव.नक्षत्रोंमें शुभ। फिल्मप्रसारण हेतु रवि शुक्रवार सर्वोत्तम है। कर्त्ताके लिए चन्द्रमा शुभ हों।
स्वेटर अन्य बुनाई मुहूर्त्त	भद्रापूर्णा जया	रवि चं. बु. शु.	रो.मृग.उफा.चि.अनु.उषा.उभा और रेव.नक्षत्रमें कार्यारम्भ अभीष्ट सिद्धिदायक होता है। शुभ योग देख लें।
कलकारखाना उद्योग मुहूर्त्त	सत्	सोम मं. बु. शनि	अश्वि.पुन.पुष्य.हस्त.चित्रा.अनु.ज्ये.धनि. रेव. नक्षत्र शुभ हैं। धातुओंसे सम्बन्धित उद्योगमें तिथि वारादि का निर्णय स्वयं करें। चरलग्न व पुन. स्वा.श्रव. शत नक्षत्रभी शुभ हैं।
ईट बनाना भट्टा लगाना अग्नि लगाना	सर्वतिथि ग्राह्या: ३०वर्ज्य:	रवि गु. शनि	अश्वि.रो.पुष्य.ह.उफा.उषा.श्रव.उभा.रेव.नक्षत्रशुभ। अथेष्टिका निर्माण भौम भाद्गणना ५सौख्य,३मृत्यु,३सौख्य,५मृत्यु,७सौख्य,५मृत्यु। भट्टेमें अग्नि लगाना ७शोक,५लाभ,७रोग,४क्षय,५सुख होता है।
शीशा और चित्रात्मककला	सत्	र.चं.बु. गु.शु.	अश्वि.मृग.पुष्य.ह.चि.अनु.अभि.रेव.नक्षत्रोंमें शीशा उत्पादन चित्रात्मक शैलीके सभी कार्य सफल होते हैं।
औषधि नि. व सेवन मु.	सत् तिथियाँ	र.चं. बु.गु.शु.	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.मू.अभि.श्रव.ध.श.रे.नक्षत्र और शुभलग्न मुहूर्त्तमें औषधिनिर्माण तथा सेवन करना शुभ होता हैं
भूमि क्रय-विक्रय मु.	सत् तिथियाँ	चं.बुध गु. शु.	अश्वि.मृ.पुन.आश्ले.म.पूफा.वि.अनु.मूल.पूषा.पूभा.र.श्रेष्ठ है। कर्त्ताकी राशिसे ४।८।१२वाँ तथा घात चन्द्रमा वर्जित हैं।
पशु लेन-देन मुहूर्त्त	४,९व १४त्याज्य	भौमवार त्याज्य	अश्वि.पुन.पुष्य.ह.वि.ज्ये.ध.श.रेव.नक्षत्रोंमें गौ का लेन-देन शुभ है। अन्य पशु हेतु पुन. पूफा. ह. अनु. पूषा. ज्ये. पूभा. मूल. धनि और रेवती शुभ जानें।

शकुन- नौमी चौदस चौथ चौपाया। हानि करे मंगल घर आया।

मुहूर्त्ता:	तिथि:	वारा:	नक्षत्रलग्नमासादिकम्
कुम्भकार मु. सीमेन्ट उद्योग	४।९।१४ त्याज्य:	भौमवार त्याज्य:	रोहि.मृ.पुन.पुष्य.ह.चित्रा.स्वा.अनु.ज्ये.श्रव.रेव.शुभ है। ईट,चूना,सुरखी,पत्थर तथा सीमेन्ट उत्पादन में तीनोंउत्तरा-उफा.उषा.उभा.भी मान्य हैं।
स्कूटर,कार बस अन्य वाहनक्रयमु.	सत् तिथियाँ	भौमवार त्याज्य:	अश्वि.मृ.पुन.पुष्य.ह.स्वा.अभि.श्र.ध.शत.रेव.श्रेष्ठ,कर्त्ताकी राशिसे ४।८।१२वां एवं घात चन्द्रमा नेष्ट जानें। जन्मकुण्डलीमें शुभाशुभ समयका ध्यान कर लेना चाहिए। घात-मांस,तिथि वार नक्षत्रादि चक्र पृ.१०७ पर देखें।
रामायणादि कथा प्रारंभ मुहूर्त्त	रिक्ता ४।९।१४ त्याज्य:	सभी वार श्रेष्ठ	गुर्वाश्रितनक्षत्रसे १६संख्यांक तक अर्थलाभ,कार्यसिद्धि,२४तक नेष्ट, आगे२७ तक मोक्षप्रद जानें। देवप्रीत्यर्थ शुक्लपक्षमें और प्रेतदोषनिवृत्ति हेतु कृष्णपक्षमें शुभ है। भ.कृ.वि.मू.नक्षत्र एवं कर्त्ताकीराशिसे ४।८वां चन्द्रमा नेष्ट होता है।
देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त	सभी तिथियाँ	सभी वार श्रेष्ठ	अ.रो.मृ.आर्द्रा.पुन.पुष्य.म.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.ज्ये.मू.उषा.श्र.ध.श.उभा. रे.गुरु-शुक्र के उदयमें, स्थिरलग्न,कृष्णपक्षमें दशमीतक,जलाशय वागादि की प्रतिष्ठाभी शुभ है। १४तिथि में शिव,४में श्रीगणेश,भाद्रपदमें श्रीकृष्ण, आश्वि.नवरात्रमें देवी, चैत्रीपूर्णिमामें बजरंगबलीकी स्थापनाहेतु शुभ है। सात्त्विकदेव उत्तरायणे तथा तामसी देवी देवता इच्छित काले।
कृषिकर्म मु.	सत् तिथियाँ	भौमवार त्याज्य:	अ.रो.मृ.पुन.पुष्य.म.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.उषा.श्र.ध.श.उभा और रेव. में खेत जोतना शुभ है। सूर्यभात्गणना ३नेष्ट,३श्रेष्ठ,३नेष्ट,५श्रेष्ठ,३नेष्ट, ५श्रेष्ठ,३नेष्ट,२श्रेष्ठ जानें।
बीजवोबन मुहूर्त्त	सत्	भौमवार वर्ज्य	पुन.वि.श्र.और श.त्यागकर शेष उपरोक्त नक्षत्रोंमें बीजबोना श्रेष्ठ जानें। राहुभाद्गणनाक्रम ध्यान रखें।८ने.३श्रे.१ने.३श्रे.१ने.३श्रे.१ने.३श्रे.४ने.समझें।
कम्प्यूटर नि. व संचालन	सत् तिथियाँ	भौम वर्जित	अश्वि.मृ.पुन.पुष्य.ह.चित्रा.स्वा.अनु.ध.श.और रेव.नक्षत्र,शुभयोगोंमें कर्त्ता की राशिमें ग्रहगणना श्रेष्ठ होनेपर सफलता सुनिश्चित मिलती है।
प्रक्षेपास्त्र मुहूर्त्त	१।४।५ ८।१० १३।१५	र. मं. शु. श.	भ.आर्द्रा.श्ले.म.ज्ये.पूफा.मू.पूषा.पूभा.नक्षत्र चर, द्विस्वभाव,लग्न तथा चर, लाभ,अमृत और शुभके चौघड़िया मुहूर्त्त में मारक अस्त्र-शस्त्रोंका निर्माण व प्रयोग सफल रहता है।
हवाई यात्रा मुहूर्त्त	यात्रोक्त तिथियाँ	सभी वार	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.पूफा.उफा.ह.अनु.ज्ये.मू.पूषा.उषा.श.धनि.पूभा.उभा. रे.नक्षत्र श्रेष्ठ। कुयोग रहित शुभ मुहूर्त्त में यात्रा सफल होती है।
पुल निर्माण मुहूर्त्त	सत् तिथियाँ	भौम श. वर्जित	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.उफा.ह.चि.अनु.उषा और रेव.नक्षत्र स्थिरलग्न तथा सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धि या रवियोगमें निर्माण सफल रहता है।
बहीखाता पूजन	शुभ दिन	शुभ तिथि	मृग.पुन.पुष्य.उफा.ह.चि.अनु.उषा.श्र.उभा.रे. लग्न १।३।४।६।७।०।१० श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्र कुबेरभण्डारी आदि देवपूजनोपरान्त खातापूजन शुभ है।

❁ चौघड़िया मुहूर्तों के प्रारम्भ काल जानने की तालिका ❁

दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.

मास	तारीख	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
जनवरी	१	७।१३	८।३०	९।४७	११।५	१२।२२	१३।३९	१४।५७	१६।१४
	६	७।१५	८।३२	९।५०	११।७	१२।२५	१३।४२	१५।०	१६।१७
	११	७।१५	८।३३	९।५१	११।९	१२।२७	१३।४५	१५।३	१६।२१
	१६	७।१५	८।३३	९।५२	११।१०	१२।२९	१३।४७	१५।६	१६।२४
	२१	७।१४	८।३३	९।५२	११।११	१२।३०	१३।४९	१५।८	१६।२७
	२६	७।११	८।३१	९।५१	११।११	१२।३१	१३।५१	१५।११	१६।३१
	३१	७।१०	८।३०	९।५१	११।११	१२।३२	१३।५३	१५।१३	१६।३४
फरवरी	५	७।७	८।२८	९।५०	११।११	१२।३३	१३।५४	१५।१६	१६।३७
	१०	७।५	८।२७	९।४९	११।११	१२।३४	१३।५६	१५।१८	१६।४०
	१५	७।०	८।२३	९।४६	११।१०	१२।३३	१३।५६	१५।२०	१६।४३
	२०	६।५६	८।२०	९।४४	११।८	१२।३३	१३।५७	१५।२१	१६।४५
	२५	६।५१	८।१६	९।४१	११।६	१२।३२	१३।५७	१५।२२	१६।४७
मार्च	२	६।४७	८।१३	९।३९	११।५	१२।३२	१३।५८	१५।२४	१६।५०
	७	६।४१	८।८	९।३५	११।३	१२।३०	१३।५७	१५।२५	१६।५२
	१२	६।३६	८।४	९।३२	११।०	१२।२९	१३।५७	१५।२५	१६।५३
	१७	६।३१	८।०	९।२९	१०।५८	१२।२८	१३।५७	१५।२६	१६।५५
	२२	६।२५	७।५५	९।२५	१०।५५	१२।२६	१३।५६	१५।२६	१६।५६
	२७	६।२०	७।५१	९।२२	१०।५३	१२।२५	१३।५६	१५।२७	१६।५८
अप्रैल	१	६।१४	७।४६	९।१८	१०।५०	१२।२३	१३।५५	१५।२७	१६।५९
	६	६।८	७।४१	९।१४	१०।४७	१२।२१	१३।५४	१५।२७	१७।०
	११	६।३	७।३७	९।११	१०।४५	१२।२०	१३।५४	१५।२८	१७।२
	१६	५।५८	७।३३	९।८	१०।४३	१२।१९	१३।५४	१५।२९	१७।४
	२१	५।५३	७।२९	९।५	१०।४१	१२।१७	१३।५३	१५।२९	१७।५
	२६	५।४८	७।२५	९।२	१०।३९	१२।१६	१३।५३	१५।३०	१७।७
मई	१	५।४५	७।२२	९।०	१०।३८	१२।१६	१३।५४	१५।३२	१७।१०
	६	५।४१	७।१९	८।५८	१०।३७	१२।१६	१३।५४	१५।३३	१७।१२
	११	५।३८	७।१७	८।५७	१०।३६	१२।१६	१३।५५	१५।३५	१७।१४
	१६	५।३५	७।१५	८।५५	१०।३५	१२।१६	१३।५६	१५।३६	१७।१६
	२१	५।३२	७।१२	८।५३	१०।३४	१२।१५	१३।५६	१५।३७	१७।१८
	२६	५।३०	७।११	८।५३	१०।३४	१२।१६	१३।५७	१५।३९	१७।२०
	३१	५।२९	७।११	८।५३	१०।३५	१२।१७	१३।५९	१५।४१	१७।२३
जून	५	५।२८	७।१०	८।५२	१०।३५	१२।१७	१३।५९	१५।४२	१७।२४
	१०	५।२८	७।१०	८।५३	१०।३५	१२।१८	१४।१	१५।४३	१७।२६
	१५	५।२८	७।१०	८।५३	१०।३६	१२।१९	१४।२	१५।४५	१७।२८
	२०	५।२९	७।१२	८।५५	१०।३८	१२।२१	१४।४	१५।४७	१७।३०
	२५	५।३०	७।१३	८।५६	१०।३९	१२।२२	१४।५	१५।४८	१७।३१
	३०	५।३२	७।१४	८।५७	१०।४०	१२।२३	१४।५	१५।४८	१७।३०

रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.

मास	तारीख	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
जनवरी	१	१७।३२	१९।१४	२०।५७	२२।४०	०।२३	२।६	३।४८	५।३१
	६	१७।३५	१९।१७	२१।०	२२।४२	०।२५	२।७	३।५०	५।३२
	११	१७।३९	१९।२१	२१।३	२२।४५	०।२७	२।९	३।५१	५।३३
	१६	१७।४३	१९।२४	२१।५	२२।४७	०।२८	२।९	३।५१	५।३२
	२१	१७।४७	१९।२७	२१।८	२२।४९	०।३०	२।१०	३।५१	५।३२
	२६	१७।५२	१९।३१	२१।११	२२।५१	०।३१	२।११	३।५१	५।३१
	३१	१७।५५	१९।३४	२१।१३	२२।५२	०।३२	२।११	३।५०	५।२९
फरवरी	५	१७।५९	१९।३७	२१।१६	२२।५४	०।३३	२।११	३।५०	५।२८
	१०	१८।३	१९।४०	२१।१८	२२।५५	०।३३	२।११	३।४८	५।२६
	१५	१८।७	१९।४३	२१।२०	२२।५६	०।३३	२।९	३।४६	५।२२
	२०	१७।१०	१९।४५	२१।२१	२२।५६	०।३२	२।८	३।४३	५।१९
	२५	१८।१३	१९।४७	२१।२२	२२।५६	०।३१	२।६	३।४०	५।१५
मार्च	२	१८।१७	१९।५०	२१।२४	२२।५७	०।३१	२।५	३।३८	५।१२
	७	१८।२०	१९।५२	२१।२५	२२।५७	०।३०	२।२	३।३५	५।७
	१२	१८।२२	१९।५३	२१।२५	२२।५६	०।२८	२।०	३।३१	५।३
	१७	१८।२५	१९।५५	२१।२६	२२।५६	०।२७	१।५८	३।२८	४।५९
	२२	१८।२७	१९।५६	२१।२६	२२।५५	०।२५	१।५५	३।२४	४।५४
	२७	१८।३०	१९।५८	२१।२७	२२।५५	०।२४	१।५३	३।२१	४।५०
अप्रैल	१	१८।३२	१९।५९	२१।२७	२२।५४	०।२२	१।५०	३।१७	४।४५
	६	१८।३४	२०।०	२१।२७	२२।५३	०।२०	१।४७	३।१३	४।४०
	११	१८।३७	२०।२	२१।२८	२२।५३	०।१९	१।४५	३।१०	४।३६
	१६	१८।४०	२०।४	२१।२९	२२।५३	०।१८	१।४३	३।७	४।३२
	२१	१८।४२	२०।५	२१।२९	२२।५३	०।१७	१।४०	३।४	४।२८
	२६	१८।४५	२०।७	२१।३०	२२।५३	०।१६	१।३८	३।१	४।२४
मई	१	१८।४७	२०।९	२१।३१	२२।५३	०।१५	१।३७	२।५९	४।२१
	६	१८।५१	२०।१२	२१।३३	२२।५४	०।१५	१।३६	२।५७	४।१८
	११	१८।५४	२०।१४	२१।३४	२२।५५	०।१५	१।३५	२।५६	४।१६
	१६	१८।५७	२०।१६	२१।३६	२२।५५	०।१५	१।३५	२।५४	४।१४
	२१	१८।५९	२०।१८	२१।३७	२२।५६	०।१५	१।३४	२।५३	४।१२
	२६	१९।२	२०।२०	२१।३९	२२।५७	०।१६	१।३४	२।५३	४।११
	३१	१९।५	२०।२३	२१।४१	२२।५९	०।१७	१।३५	२।५३	४।११
जून	५	१९।७	२०।२४	२१।४२	२२।५९	०।१७	१।३५	२।५२	४।१०
	१०	१९।९	२०।२६	२१।४३	२३।१	०।१८	१।३५	२।५३	४।१०
	१५	१९।११	२०।२८	२१।४५	२३।२	०।१९	१।३६	२।५३	४।१०
	२०	१९।१३	२०।३०	२१।४७	२३।४	०।२१	१।३८	२।५५	४।१२
	२५	१९।१४	२०।३१	२१।४८	२३।५	०।२२	१।३९	२।५६	४।१३
	३०	१९।१४	२०।३१	२१।४८	२३।५	०।२३	१।४०	२।५७	४।१४

दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त

	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग
चन्द्र.	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत
मंग.	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग
बुध.	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ
गुरू.	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ
शुक्र.	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर
शनि.	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल

रात के चौघड़िया मुहूर्त्त

	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ
चन्द्र.	चर	रोग	काल	लान	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर
मंग.	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल
बुध.	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग
गुरू.	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत
शुक्र.	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग
शनि.	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ

प्रत्येक अहोरात्र में कुल सोलह चौघड़िया मुहूर्त्त वर्तमान रहते है। अर्थात् आठ दिन के और आठ ही रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त होते है। उपरोक्त चक्रोंमें 'प्रत्येक 'वार' के सामने दिन तथा रात्रि में व्यतीत होने वाले चौघड़िया मुहूर्तों के नाम लिखे हुए है। पंचांग के पृष्ठ १४६ पर भी विवरण दिया गया है।

बाई ओर अंग्रेजी मासों की तारीखों के सामने पहला दूसरा, तीसरा इत्यादि चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारंभ होने का समय घण्टा-मिनटों में लिखा है, ध्यान रहे:- तालिका के पहले हिस्से में दिन के चौघड़िया और दूसरे में रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त्त लिखे हैं।

अभीष्ट सन् के अभीष्ट मास की इच्छित तारीख में चौघड़िया मुहूर्त्त ज्ञात करने के लिए पहले पंचांग से उक्त तारीख में क्या वार है। यह जान लें। वारों के सामने दिन-रात्रि में बीतने वाले चौघड़िया मुहूर्त्तों के जो नाम लिखे है, वही मुहूर्त्त उक्त तारीख के सामने लिखित समयानुसार प्रारंभ होंगे।

❁ चौघड़िया मुहूर्त्तों के प्रारम्भ काल जानने की तालिका ❁

माह	तारीख	दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.								रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.							
		पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
जुलाई	५	५।३३	७।१५	८।५८	१०।४०	१२।२३	१४।६	१५।४८	१७।३१	१९।१४	२०।३१	२१।४९	२३।६	०।२४	१।४१	२।५९	४।१६
	१०	५।३५	७।१७	८।५९	१०।४१	१२।२४	१४।६	१५।४८	१७।३०	१९।१३	२०।३०	२१।४८	२३।६	०।२४	१।४२	३।०	४।१८
	१५	५।३८	७।१९	९।१	१०।४३	१२।२५	१४।६	१५।४८	१७।३०	१९।१२	२०।३०	२१।४८	२३।६	०।२५	१।४३	३।१	४।१९
	२०	५।४०	७।२१	९।२	१०।४४	१२।२५	१४।६	१५।४८	१७।२९	१९।११	२०।२९	२१।४८	२३।७	०।२६	१।४४	३।३	४।२२
	२५	५।४३	७।२३	९।४	१०।४४	१२।२५	१४।६	१५।४६	१७।२७	१९।८	२०।२७	२१।४६	२३।६	०।२५	१।४४	३।४	४।२३
	३१	५।४६	७।२५	९।५	१०।४५	१२।२५	१४।५	१५।४५	१७।२५	१९।५	२०।२५	२१।४५	२३।५	०।२६	१।४६	३।६	४।२६
अगस्त	५	५।४९	७।२८	९।७	१०।४६	१२।२५	१४।४	१५।४३	१७।२२	१९।२	२०।२२	२१।४३	२३।४	०।२५	१।४६	३।७	४।२८
	१०	५।५१	७।२९	९।७	१०।४६	१२।२४	१४।२	१५।४१	१७।१९	१८।५८	२०।१९	२१।४१	२३।३	०।२५	१।४६	३।८	४।३०
	१५	५।५४	७।३१	९।९	१०।४६	१२।२४	१४।१	१५।३९	१७।१६	१८।५४	२०।१६	२१।३९	२३।१	०।२४	१।४६	३।९	४।३१
	२०	५।५६	७।३२	९।९	१०।४५	१२।२२	१३।५९	१५।३५	१७।१२	१८।४९	२०।१२	२१।३६	२२।५९	०।२३	१।४६	३।१०	४।३३
	२५	५।५९	७।३४	९।१०	१०।४५	१२।२१	१३।५७	१५।३२	१७।८	१८।४४	२०।८	२१।३२	२२।५७	०।२१	१।४५	३।१०	४।३४
	३१	६।२	७।३६	९।११	१०।४५	१२।२०	१३।५४	१५।२९	१७।३	१८।३८	२०।३	२१।२९	२२।५४	०।२०	१।४५	३।११	४।३६
सितम्बर	५	६।४	७।३७	९।११	१०।४४	१२।१८	१३।५१	१५।२५	१६।५८	१८।३२	१९।५८	२१।२५	२२।५१	०।१८	१।४४	३।११	४।३७
	१०	६।६	७।३८	९।११	१०।४३	१२।१६	१३।४९	१५।२१	१६।५४	१८।२७	१९।५४	२१।२२	२२।४९	०।१७	१।४४	३।१२	४।३९
	१५	६।८	७।३९	९।११	१०।४२	१२।१४	१३।४६	१५।१७	१६।४९	१८।२१	१९।४९	२१।१८	२२।४६	०।१५	१।४३	३।१२	४।४०
	२०	६।१०	७।४०	९।११	१०।४१	१२।१२	१३।४३	१५।१३	१६।४४	१८।१५	१९।४४	२१।१४	२२।४३	०।१३	१।४२	३।१२	४।४१
	२५	६।१३	७।४२	९।१२	१०।४१	१२।११	१३।४१	१५।१०	१६।४०	१८।१०	१९।४०	२१।१०	२२।४१	०।११	१।४१	३।१२	४।४२
अक्टूबर	१	६।१५	७।४३	९।१२	१०।४०	१२।९	१३।३७	१५।६	१६।३४	१८।३	१९।३४	२१।६	२२।३७	०।९	१।४१	३।१२	४।४४
	६	६।१८	७।४५	९।१२	१०।४०	१२।७	१३।३४	१५।२	१६।२९	१७।५७	१९।२९	२१।२	२२।३४	०।७	१।४०	३।१२	४।४५
	११	६।२०	७।४६	९।१३	१०।३९	१२।६	१३।३२	१४।५९	१६।२५	१७।५२	१९।२५	२०।५९	२२।३२	०।६	१।४०	३।१३	४।४७
	१६	६।२३	७।४८	९।१४	१०।३९	१२।५	१३।३०	१४।५६	१६।२१	१७।४७	१९।२१	२०।५६	२२।३०	०।५	१।४०	३।१४	४।४९
	२१	६।२६	७।५०	९।१५	१०।३९	१२।४	१३।२८	१४।५३	१६।१७	१७।४२	१९।१७	२०।५३	२२।२८	०।४	१।३९	३।१५	४।५०
	२६	६।२९	७।५२	९।१६	१०।३९	१२।३	१३।२७	१४।५०	१६।१४	१७।३८	१९।१४	२०।५१	२२।२७	०।४	१।४०	३।१७	४।५३
नवम्बर	१	६।३३	७।५५	९।१७	१०।४०	१२।२	१३।२४	१४।४७	१६।९	१७।३२	१९।९	२०।४७	२२।२५	०।३	१।४०	३।१८	४।५६
	६	६।३७	७।५८	९।२०	१०।४१	१२।३	१३।२४	१४।४६	१६।७	१७।२९	१९।७	२०।४६	२२।२४	०।३	१।४२	३।२०	४।५९
	११	६।४०	८।०	९।२१	१०।४२	१२।३	१३।२४	१४।४५	१६।६	१७।२७	१९।६	२०।४५	२२।२४	०।४	१।४३	३।२२	५।१
	१६	६।४४	८।४	९।२४	१०।४४	१२।४	१३।२४	१४।४४	१६।४	१७।२४	१९।४	२०।४४	२२।२४	०।४	१।४४	३।२४	५।४
	२१	६।४८	८।७	९।२६	१०।४५	१२।५	१३।२४	१४।४३	१६।२	१७।२२	१९।२	२०।४३	२२।२४	०।५	१।४६	३।२७	५।८
	२६	६।५२	८।१०	९।२९	१०।४७	१२।६	१३।२५	१४।४३	१६।२	१७।२१	१९।२	२०।४४	२२।२५	०।७	१।४८	३।३०	५।११
दिसम्बर	१	६।५६	८।१४	९।३२	१०।५०	१२।८	१३।२६	१४।४४	१६।२	१७।२१	१९।२	२०।४४	२२।२६	०।८	१।५०	३।३२	५।१४
	६	६।५९	८।१६	९।३४	१०।५२	१२।१०	१३।२७	१४।४५	१६।३	१७।२१	१९।३	२०।४५	२२।२८	०।१०	१।५२	३।३५	५।१७
	११	७।३	८।२०	९।३७	१०।५५	१२।१२	१३।२९	१४।४७	१६।४	१७।२२	१९।४	२०।४७	२२।२९	०।१२	१।५५	३।३७	५।२०
	१६	७।६	८।२३	९।४०	१०।५७	१२।१४	१३।३१	१४।४८	१६।५	१७।२३	१९।७	२०।४९	२२।३२	०।१५	१।५८	३।४१	५।२४
	२१	७।९	८।२६	९।४३	११।०	१२।१७	१३।३४	१४।५१	१६।८	१७।२५	१९।८	२०।५१	२२।३४	०।१७	२।०	३।४३	५।२६
	२६	७।१२	८।२९	९।४६	११।३	१२।२०	१३।३७	१४।५४	१६।११	१७।२९	१९।११	२०।५४	२२।३७	०।२०	२।३	३।४६	५।२९
	३१	७।१३	८।३०	९।४७	११।४	१२।२२	१३।३९	१४।५६	१६।१३	१७।३१	१९।१३	२०।५६	२२।३९	०।२२	२।४	३।४७	५।३०

उदाहरण :- ५ अप्रैल सन् १९९८ श्रीरामनवमी के दिन यात्रा या किसी कार्य विशेष के संदर्भ में चौघड़िया मुहूर्त्त ज्ञात करने हैं, तो ध्यान दीजिए इस वर्ष संवत् २०५५ में श्रीरामनवमी के दिन रविवार है और रविवार के दिन क्रमशः उद्वेग, चर, लाभ, अमृत, काल, शुभ, रोग, उद्वेग, ये आठ चौघड़िया मुहूर्त्त होते हैं। और रात्रि में क्रमशः शुभ, अमृत, चर, रोग, काल, लाभ, उद्वेग, शुभ के चौघड़िया मुहूर्त्त बीतते हैं।

बाईं ओर की तालिका में अप्रैल के महीने में तारीख १ और ६ के सामने चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारंभ होने का समय दिया हुआ है। बीच की तारीखों का अनुपात से ग्रहण करना होगा। अतः रविवार के दिन पहला उद्वेग का चौघड़िया मुहूर्त्त सुबह ६ घं ९ मि. से शुरू होगा। दूसरा चर का ७ घं. ४२ मि. से, तीसरा लाभ का ९ घं. १५ मि. से, चौथा अमृत का १० घं. ४७ मि. से , पांचवाँ काल का १२ घं. २१ मि. से, छटा शुभ का १३ घं. ५४ मि. से, सातवाँ रोग का १५ घं. २७ मि. से, और आठवाँ उद्वेग का चौघड़िया मुहूर्त्त १७ घं. ०० मि. बजे से प्रारम्भ होगा, जोकि सूर्यास्त तक रहेगा। इसी प्रकार रात्रि के आठों चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारंभ होने का समय सहज ज्ञात कर सकते हैं।

१९ अक्टूबर ९८ महालक्ष्मीपूजन दिन सोमवार में पहला चौघड़िया मुहूर्त्त अमृत का ६।२५ से शुरू होगा, इसी प्रकार काल का ७।५० से, शुभ का ९।१५ से, रोग का १०।३९ से, उद्वेग का १२।५ से, चर का १३।३० से, लाभ का १४।५५ से और अमृत का १६।१९ से प्रारंभ हो जायेगा। जोकि सूर्यास्त तक रहेगा। इसी प्रकार तालिका की सहायता से इच्छित तारीख में चाहे जिस सन् में चौघड़िया मुहूर्त्तों के शुरू होने का समय ज्ञात कर सकते हैं।

संभालकर रखिए :- चौघड़िया मुहूर्त्त तलिका को यह आपके हरसमय, प्रतिदिन, प्रतिमास, प्रतिवर्ष काम आयेगी।

चन्द्रमा का नक्षत्र चार चरणमें प्रवेश भा.स्टै.टा. घं.मि.- बच्चों के नाम रखने की सुविधा, संवत् २०६७

ता.वार (अहोरात्र) में विहित नक्षत्र के चारचरण अर्धरात्रोत्तरघं.२४मि.० में जोड़कर लिखे हैं। सूर्योदय पश्चात् अग्रिमदिन ता. के घं. मि. लिखे हैं।

मार्च	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१५	पूभा.	६।४७	१०।५७	१७।३३	२४।१०
१६	उभा.	६।४७	१३।२८	१९।४९	२६।२०
१७	रेवती	८।५१	१५।१६	२१।४२	२८।०७
१८	अश्वि	१०।३३	१६।५२	२३।१२	२९।३१
१९	भर.	११।५१	१८।०५	२४।१८	
२०	भर.				६।३२
२०	कृति.	१२।४६	१८।५४	२५।०१	
२१	कृति.				७।०८
२१	रोहि.	१३।१६	१९।१७	२५।१८	
२२	रोहि.				७।११
२२	मृग.	१३।२०	१९।१४	२५।०८	
२३	मृग.				७।०१
२३	आर्द्रा	१२।५५	१८।४२	२४।२९	३०।१५
२४	पुन.	१२।०२	१७।४१	२३।२२	२९।०१
२५	पुष्य	१०।४०	१६।२३	२१।४६	२७।१९
२६	श्ले.	८।५२	१४।२९	१९।४७	२५।२४
२७	मघा	६।४२	१२।०६	१७।३०	२२।५४
२७	पूफा.	२८।२८			
२८	पूफा.		९।४०	१५।०२	२०।२५
२८	उफा.	२५।४७			
२९	उफा.		७।१०	१२।३३	१७।५६
२९	हस्त	२३।१९	२८।४६		
३०	हस्त			१०।१३	१५।३९
३०	चित्रा	२१।०६	२६।३१		
३१	चित्रा			८।१२	१३।५५
३१	स्वाती	१९।२८	२४।५१		
१अ	स्वाती			६।४१	१२।२२
१	विशा.	१८।०४	२३।५६	२९।४९	

अप्रै	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२	विशा.				११।४९
२	अनु.	१७।३४	२३।३९	२९।४३	
३	अनु.				११।४८
३	ज्ये.	१७।५३	२४।१०		
४	ज्ये.			६।२७	१२।४५
४	मूल	१९।०२	२५।३१		
५	मूल			७।५९	१४।२८
५	पूषा.	२०।५७	२७।३५		
६	पूषा.			१०।१४	१६।५२
६	उषा.	२३।३०			
७	उषा.		६।१४	१२।५९	१९।४३
७	श्रव.	२६।२८			
८	श्रव.		९।१५	१६।०२	२२।४८
८	धनि.	२९।३५			
९	धनि.		१२।२१	१९।०६	२५।५२
१०	शत.	८।३८	१५।२०	२२।०२	२८।४३
११	पूभा.	११।२५	१८।०१	२४।३७	
१२	पूभा.				७।१२
१२	उभा.	१३।४८	२०।१६	२६।४५	
१३	उभा.				९।१३
१३	रेव.	१५।४२	२२।०३	२८।२४	
१४	रेव.				१०।४६
१४	अश्वि	१७।०७	२३।२२	२९।३६	
१५	अश्वि				११।५१
१५	भर.	१८।०५	२४।१३		
१६	भर.			६।२२	१२।३०
१६	कृत्ति.	१८।३९	२४।४२		
१७	कृत्ति.			६।४५	१२।४८
१७	रोहि.	१८।५१	२४।४९		
१८	रोहि.			६।४७	१२।४५
१८	मृग.	१८।४४	२४।३८		
१९	मृग.			६।३१	१२।२५

अप्रै	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१९	आ.	१८।१९	२४।०८		
२०	आ.			५।५८	११।४७
२०	पुन.	१७।३७	२३।२२	२९।०७	
२१	पुन.				१०।५२
२१	पुष्य	१६।३७	२२।१८	२७।५९	
२२	पुष्य				९।४१
२२	आश्ले	१५।२२	२०।५९	२६।३६	
२३	आश्ले				८।१४
२३	मघा	१३।५१	१९।२५	२४।५९	
२४	मघा				६।३४
२४	पूफा.	१२।०८	१७।४०	२३।१२	२८।४५
२५	उफा.	१०।१७	१५।४९	२१।२१	२६।५३
२६	हस्त	८।२५	१३।५८	१९।३१	२५।०५
२७	चित्रा	६।३८	१२।१५	१७।५२	२३।२९
२७	स्वा.	२९।०६			
२८	स्वा.		१०।४९	१६।३२	२२।१४
२८	विशा.	२७।५७			
२९	विशा.		९।४८	१५।३९	२१।२९
२९	अनु.	२७।२०			
३०	अनु.		९।२०	१५।२१	२१।२१
३०	ज्ये.	२७।२२			
१म	ज्ये.		९।३३	१५।४४	२१।५५
१	मूल	२८।०७			
२	मूल		१०।२९	१६।५१	२३।१३
२	पूषा.	२९।०६			
३	पूषा.		१२।०८	१८।४०	२५।१२
४	उषा.	७।४४	१४।२४	२१।०४	२७।४४
५	श्रव.	१०।२४	१७।०८	२३।५३	
६	श्रव.				६।३७
६	धनि.	१३।२२	२०।०८	२६।५४	
७	धनि.				९।४०
७	शत.	१६।२५	२३।०८		

मई	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
८	शत.			५।५१	१२।३४
८	पूभा.	१९।१६	२५।५३		
९	पूभा.			८।३०	१५।०८
९	उभा.	२१।४५	२८।१४		
१०	उभा.			१०।४३	१७।१२
१०	रेवती	२३।४२			
११	रेवती		६।०२	१२।२३	१८।४३
११	अश्वि	२५।०४			
१२	अश्वि		७।१६	१३।२८	१९।४०
१२	भरणी	२५।५२			
१३	भरणी		७।५५	१३।५८	२०।०२
१३	कृत्ति.	२६।०६			
१४	कृत्ति.		८।०३	१४।००	१९।५७
१४	रोहि.	२५।५३			
१५	रोहि.		७।४४	१३।३५	१९।२६
१५	मृग.	२५।१७			
१६	मृग.		७।०४	१२।५०	१८।३७
१६	आर्द्रा	२४।२४			
१७	आर्द्रा		६।०८	११।५२	१७।३५
१७	पुन.	२३।१९	२९।००		
१८	पुन.			१०।४१	१६।२३
१८	पुष्य	२२।०४	२७।४४		
१९	पुष्य			९।२४	१५।०४
१९	श्ले.	२०।४३	२६।२२		
२०	श्ले.			८।०१	१३।४०
२०	मघा	१९।१९	२४।५७		
२१	मघा			६।३५	१२।१४
२१	पूफा.	१७।५३	२३।३२	२९।११	
२२	पूफा.				१०।४९
२२	उफा.	१६।२८	२२।०८	२७।४८	
२३	उफा.				९।२८
२३	हस्त	१५।०८	२०।५०	२६।३२	

मई	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२४	हस्त				८।१४
२४	चित्रा	१३।५६	१९।४१	२५।२६	
२५	चित्रा				७।११
२५	स्वा.	१२।५६	१८।४६	२४।३६	
२६	स्वा.				६।२६
२६	विशा.	१२।१५	१८।११	२४।०७	
२७	विशा.				६।०२
२७	अनु.	११।५८	१८।०१	२४।०४	
२८	अनु.				६।०६
२८	ज्ये.	१२।०९	१८।२०	२४।३१	
२९	ज्ये.				६।४२
२९	मूल	१२।५४	१९।१४	२५।३४	
३०	मूल				७।५४
३०	पूषा.	१४।१५	२०।४४	२७।१३	
३१	पूषा.				९।४१
३१	उषा.	१६।१०	२२।४७	२९।२३	
१जू	उषा.				११।५०
१	श्रव.	१८।२६	२५।१०		
२	श्रव.			७।५४	१४।४१
२	धनि.	२१।२५	२८।१०		
३	धनि.			१०।५५	१७।४०
३	शत.	२४।२५			
४	शत.		७।०९	१३।५४	२०।३८
४	पूभा.	२७।२२			
५	पूभा.		१०।०२	१६।४२	२३।२३
६	उभा.	६।०३	१२।३६	१९।०९	२५।४२
७	रेव.	८।१६	१४।४०	२१।०४	२७।२८
८	अश्वि	९।५२	१६।०६	२२।२०	२८।३४
९	भर.	१०।४९	१६।५३	२२।५७	२९।०१
१०	कृत्ति.	११।०४	१६।५९	२२।५३	२८।४७
११	रोहि.	१०।४२	१६।२८	२२।१५	२८।०१
१२	मृग.	९।४८	१५।२८	२१।०८	२६।४८

जून	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१३	आर्द्रा	८।२८	१४।०३	१९।३८	२५।२४
१४	पुन.	६।४९	१२।२१	१७।५४	२३।२७
१४	पुष्य	२८।५९			
१५	पुष्य		१०।३०	१६।०१	२१।३३
१५	आश्ले	२७।०४			
१६	आश्ले		८।३६	१४।०७	१९।३९
१६	मघा	२५।११			
१७	मघा		६।४५	१२।१८	१७।५२
१७	पूफा.	२३।२६	२९।०२		
१८	पूफा.			१०।३९	१६।१५
१८	उफा.	२१।५२	२७।३२		
१९	उफा.			९।१२	१४।५३
१९	हस्त	२०।३३	२६।१८		
२०	हस्त			८।०३	१३।४८
२०	चित्रा	१९।३३	२५।२३		
२१	चित्रा			७।१३	१३।०४
२१	स्वा.	१८।५४	२४।५०		
२२	स्वा.			६।४६	१२।४२
२२	विशा.	१८।३८	२४।४०		
२३	विशा.			६।४२	१२।४५
२३	अनु.	१८।४७	२४।५६		
२४	अनु.			७।०५	१३।१४
२४	ज्ये.	१९।२३	२५।३१		
२५	ज्ये.			७।५५	१४।२०
२५	मूल	२०।२६	२६।४९		
२६	मूल			९।११	१५।३४
२६	पूषा.	२१।५७	२८।२७		
२७	पूषा.			१०।५७	१७।२६
२७	उषा.	२३।५६			
२८	उषा.		६।३२	१३।०८	१९।४४
२८	श्रव.	२६।२०			
२९	श्रव.		९।०१	१५।४२	२२।२३
२९	धनि.	२९।०४			
३०	धनि.		११।४८	१८।३३	२५।१७

जुला	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१	शत.	८।०१	१४।४६	२१।३१	२८।१६
२	पूभा.	११।०१	१७।४४	२४।२७	
२	पूभा.				७।११
३	उभा.	१३।५४	२०।३२	२७।१०	
४	उभा.				९।४८
४	रेव.	१६।२६	२२।५६	२९।२७	
५	रेव.				११।५७
५	अश्वि	१८।२८	२४।४९		
६	अश्वि			७।१०	१३।३१
६	भर.	१९।५२	२६।०२		
७	भर.			८।१२	१४।२२
७	कृत्ति	२०।३२	२६।३१		
८	कृत्ति			८।३०	१४।२९
८	रोहि.	२०।२७	२६।१५	,	
९	रोहि.			८।०३	१३।५१
९	मृग.	१९।३९	२५।२८		
१०	मृग.			६।५७	१२।३६
१०	आर्द्रा	१८।१५	२३।४६	२९।१८	
११	आर्द्रा				१०।४९
११	पुन.	१६।२१	२१।४७	२७।१२	
१२	पुन.				८।३८
१२	पुष्य	१४।०४	१९।२७	२४।५०	
१३	पुष्य				६।१३
१३	श्ले.	११।३६	१६।५८	२२।२०	२७।४२
१४	मघा	९।०४	१४।२७	१९।५१	२५।१५
१५	पूफा.	६।३८	१२।०५	१७।३२	२२।५९
१५	उफा.	२८।२६			
१६	उफा.		९।५८	१५।३१	२१।०४
१६	हस्त	२६।३६			
१७	हस्त		८।१५	१३।५५	१९।३४
१७	चित्रा	२५।१३			
१८	चित्रा		७।००	१२।४७	१८।३५
१८	स्वा.	२४।२२			
१९	स्वा.		६।१८	१२।१३	१८।०१

जुला	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१९	विशा.	२४।०५			
२०	विशा.		६।०९	१२।१४	१८।१९
२०	अनु.	२४।२३			
२१	अनु.		६।३६	१२।४८	१९।०१
२१	ज्ये.	२५।१४			
२२	ज्ये.		७।३२	१३।५१	२०।१७
२२	मूल	२६।३५			
२३	मूल		९।०२	१५।२९	२१।५७
२३	पूषा.	२८।२४			
२४	पूषा.		१०।५७	१७।३०	२४।०३
२५	उषा.	६।३६	१३।२४	१९।५२	२६।३०
२६	श्रव.	९।०८	१५।४९	२२।३१	२९।१३
२७	धनि.	११।५४	१८।३८	२५।२२	
२८	धनि.				८।०६
२८	शत.	१४।५१	२१।३६	२८।२२	
२९	शत.				११।०७
२९	पूभा.	१७।५२	२४।३६		
३०	पूभा.			७।२०	१४।०५
३०	उभा.	२०।४९	२७।३०		
३१	उभा.			१०।१२	१६।५३
३१	रेव.	२३।३५			
१अ	रेव.		६।११	१२।४७	१९।२३
१	अश्वि	२६।००			
२	अश्वि		८।२८	१४।५७	२१।२५
२	भर.	२७।५४			
३	भर.		१०।१३	१६।३२	२२।५०
३	कृत्ति	२९।०१			
४	कृत्ति.		११।१७	१७।२५	२३।३३
४	रोहि.	२९।४१			
५	रोहि.		११।३८	१७।३४	२३।३१
५	मृग.	२९।२७			
६	मृग.		११।१२	१६।५८	२२।४३
६	आर्द्रा	२८।२८			
७	आर्द्रा		१०।०३	१५।३८	२१।१३

अग	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
७	पुन.	२६।४९			
८	पुन.		८।१६	१३।४२	१९।०८
८	पुष्य	२४।३५			
९	पुष्य		५।५५	११।१६	१६।३७
९	श्ले.	२१।५७	२७।१३		
१०	श्ले.			८।३०	१३।४६
१०	मघा	१९।०३	२४।१८	२९।३४	
११	मघा				१०।४९
११	पूफा.	१६।०५	२१।२२	२६।४०	
१२	पूफा.				७।५६
१२	उफा.	१३।१४	१८।३६	२३।५७	२९।१९
१३	हस्त	१०।४१	१६।०९	२१।३८	२७।०६
१४	चित्रा	८।३५	१४।१२	१९।५०	२५।२७
१५	स्वा.	७।०५	१२।५३	१८।४१	२४।२८
१६	विशा	६।१६	१२।१५	१८।१४	२४।१३
१७	अनु.	६।१२	१२।२२	१८।३१	२४।४१
१८	ज्ये.	६।५१	१३।११	१९।३२	२५।५२
१९	मूल	८।१२	१४।४०	२१।०९	२७।३८
२०	पूषा.	१०।०६	१६।४१	२३।१७	२९।५२
२१	उषा.	१२।२८	१९।०८	२५।४९	
२२	उषा.				८।२९
२२	श्रव.	१५।१०	२१।५३	२८।३७	
२३	श्रव.				११।२०
२३	धनि.	१८।०३	२४।४८		
२४	धनि.			७।३२	१४।१७
२४	शत.	२१।०२	२७।४७		
२५	शत.			१०।३२	१७।१७
२५	पूभा.	२४।०२			
२६	पूभा.		६।४६	१३।३०	२०।१३
२६	उभा.	२६।५७			
२७	उभा.		९।३९	१६।२१	२३।०२
२७	रेव.	२९।४४			
२८	रेव.		१२।२२	१९।००	२५।३८
२९	अश्वि	८।१६	१४।४१	२१।२१	२७।५४

अग	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
३०	भर.	१०।२७	१६।५३	२३।१८	२९।४४
३१	कृत्ति.	१२।१०	१८।२७	२४।४४	
१सि	कृत्ति.				७।०१
१	रोहि.	१३।१८	१९।२५	२५।३२	
२	रोहि.				७।३९
२	मृग.	१३।४६	१९।४२	२५।३९	
३	मृग.				७।३५
३	आर्द्रा	१३।३१	१९।२६	२५।०१	
४	आर्द्रा				६।४६
४	पुन.	१२।३२	१८।०७	२३।४२	२९।१७
५	पुष्य	१०।५२	१६।२८	२१।४४	२७।१०
६	श्ले.	८।३७	१३।५६	१९।१५	२४।३४
६	मघा	२९।५४			
७	मघा		११।०१	१६।२५	२१।४०
७	पूफा.	२६।५५			
८	पूफा.		८।०१	१३।२२	१८।३६
८	उफा.	२३।५०	२९।०५		
९	उफा.			१०।२०	१५।३६
९	हस्त	२०।५१	२६।११		
१०	हस्त			७।३०	१२।४९
१०	चित्रा	१८।०९	२३।३६	२९।०३	
११	चित्रा				१०।३०
११	स्वा.	१५।५८	२१।३४	२७।११	
१२	स्वा.				८।४७
१२	विशा	१४।२४	२०।१२	२६।०१	
१३	विशा				७।४१
१३	अनु.	१३।३८	१९।३९	२५।३९	
१४	अनु.				७।४०
१४	ज्ये.	१३।४१	१९।५४	२६।०७	
१५	ज्ये.				८।२०
१५	मूल	१४।३३	२०।५७	२७।२२	
१६	मूल				९।४६
१६	पूषा.	१६।११	२२।०५	२९।१८	
१७	पूषा.				११।५२

सित	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४	अव	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४	अव	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४	नव.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४	दिस	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१७	उषा.	१८।२६	२५।०६			६	उफा.	१०।३४	१५।५१	२१।०९	२६।२६	२५	रोहि.	२४।४८				१५	शत.			६।४६	१३।३०	४	अनु.	१८।५३	२४।४२	३०।३१	
१८	उषा.			७।४७	१४।२८	७	हस्त	७।४३	१३।०१	१८।२०	२३।३९	२६	रोहि.		६।५१	१३।११	१९।२३	१५	पूभा.	२०।१५	२६।५८			५	अनु.				१२।२०
१८	श्रव.	२१।०८	२७।५२			७	चित्रा	२८।५७				२६	मृग.	२५।३४				१६	पूभा.			९।४२	१६।२५	५	ज्ये.	१८।०९	२४।०५	३०।०१	
१९	श्रव.			१०।३६	१७।२०	८	चित्रा		१०।१९	१५।४२	२१।०४	२७	मृग.		७।४०	१३।४६	१९।५१	१६	उभा.	२३।०८	२९।४७			६	ज्ये.				११।५८
१९	धनि.	२४।०४				८	स्वा.	२६।२७				२७	आर्द्रा	२५।५७				१७	उभा.			१२।२७	१९।०६	६	मूल	१७।५४	२३।५९	३०।०४	
२०	धनि.		६।५०	१३।३६	२०।२२	९	स्वा.		७।५७	१३।२७	१८।५६	२८	आर्द्रा		७।५७	१३।५६	१९।५६	१७	रेवती	२५।४५				७	मूल				१२।०९
२०	शत.	२७।०७				९	विशा	२४।२६	३०।०५			२८	पुन.	२५।५६				१८	रेवती		८।१८	१४।५१	२१।२४	७	पूषा.	१८।१४	२४।२८	३०।४२	
२१	शत.		९।५२	१६।३६	२३।२१	१०	विशा			११।४४	१७।२४	२९	पुन.		७।४९	१३।४३	१९।३७	१८	अश्वि	२७।५७				८	पूषा.				१२।५७
२१	पूभा.	३०।०६				१०	अनु.	२३।०३	२८।५४			२९	पुष्य	२५।३०				१९	अश्वि		१०।२३	१६।४९	२३।१५	८	उषा.	१९।११	२५।३५		
२२	पूभा.		१२।४९	१९।३१	२६।२४	११	अनु.			१०।४४	१६।३५	३०	पुष्य		७।१६	१३।०३	१८।४९	१९	भरणी	२९।४०				९	उषा.			७।५८	१४।२२
२३	उभा.	८।५७	१५।३७	२२।२६	२८।५६	११	ज्ये.	२२।२५	२८।२८			३०	श्ले.	२४।३६	३०।१६			२०	भरणी		११।५९	१८।१८	२४।३६	९	श्रव.	२०।४६	२७।११		
२४	रेव.	११।३६	१८।२२	२४।४८		१२	ज्ये.			१०।३१	१६।३४	३१	श्ले.			११।५७	१७।३७	२१	कृत्ति.	६।५४	१३।०५	१९।१७	२५।२८	१०	श्रव.			९।५०	१६।२२
२५	रेव.				७।२४	१२	मूल	२२।३७	२८।५३			३१	मघा	२३।१७	२८।५१			२२	रोहि.	७।३९	१३।४४	१९।४९	२५।५४	१०	धनि.	२२।५५	२९।३४		
२५	अश्वि	१४।००	२०।३२	२७।०४		१३	मूल			११।०९	१७।२५	१न	मघा			१०।२५	१६।००	२३	मृग.	७।५९	१३।५८	१९।५७	२५।५७	११	धनि.			१२।१३	१८।५३
२६	अश्वि				९।३६	१३	पूषा.	२३।४०	३०।०७			१	पूफा.	२१।३५	२७।०५			२४	आर्द्रा	७।५६	१३।५०	१९।४५	२५।३९	११	शत.	२५।३२			
२६	भर.	१६।०७	२२।३४	२९।००		१४	पूषा.			१२।३४	१९।०१	२	पूफा.			८।३४	१४।०४	२५	पुन.	७।३३	१३।२३	१९।१३	२५।०४	१२	शत.		८।१५	१४।५९	२१।४२
२७	भर.				११।२६	१४	उषा.	२५।२८				२	उफा.	१९।३४	२५।००	३०।२७		२५	पुष्य	३०।५४				१२	पूभा.	२८।२५			
२७	कृत्ति.	१७।५३	२४।२४			१५	उषा.		८।०४	१४।४२	२१।२७	३	उफा.				११।५३	२६	पुष्य		१२।४०	१८।२७	२४।१३	१३	पूभा.		११।१०	१७।५४	२४।३९
२८	कृत्ति.			६।३४	१२।५५	१५	श्रव.	२७।५३				३	हस्त	१७।२०	२२।४६	२८।११		२६	श्ले.	२९।५९				१४	उभा.	७।२३	१४।०५	२०।४६	२७।२८
२८	रोहि.	१९।२५	२५।२८			१६	श्रव.		१०।३६	१७।२६	२४।००	४	हस्त				९।३७	२७	श्ले.		११।४२	१७।२५	२३।०८	१५	रेवती	१०।१०	१६।४६	२३।२३	२९।५९
२९	रोहि.			७।४१	१३।५४	१७	धनि.	६।४२	१३।२७	२०।१२	२६।५७	४	चित्रा	१५।०३	२०।३०	२५।५७		२७	मघा	२८।५१				१६	अश्वि	१२।३६	१९।०५	२५।३३	
२९	मृग.	२०।०८	२६।२३			१८	शत.	९।४३	१६।२८	२३।१३	२९।५९	५	चित्रा				७।२५	२८	मघा		१०।३१	१६।११	२१।५१	१७	अश्वि				८।०१
३०	मृग.			८।१८	१४।२३	१९	पूभा.	१२।४४	१९।२६	२६।०९		५	स्वा.	१२।५२	१८।२३	२३।५४	२९।२५	२८	पूफा.	२७।३१				१७	भर.	१४।३०	२०।५०	२७।०९	
३०	आर्द्रा	२०।२८	२६।२४			२०	पूभा.				८।५२	६	विशा	१०।५६	१६।३३	२२।१०	२७।४७	२९	पूफा.		९।०९	१४।४७	२०।२५	१८	भर.				९।२८
१अ	आर्द्रा			८।२०	१४।२६	२०	उभा.	१५।३४	२२।१२	२८।५१		७	अनु.	९।२४	१५।१०	२०।५५	२६।४१	२९	उफा.	२६।०३				१८	कृत्ति.	१५।४८	२१।५८	२८।०८	
१	पुन.	२०।२२	२५।५८			२१	उभा.				११।२९	८	ज्ये.	८।२७	१४।२३	२०।२०	२६।१६	३०	उफा.		७।३९	१३।१६	१८।५२	१९	कृत्ति.				१०।१८
२	पुन.			७।४५	१३।३२	२१	रेवती	१८।०७	२४।४०			९	मूल	८।१२	१४।१९	२०।२७	२६।३४	३०	हस्त	२४।२९	३०।०५			१९	रोहि.	१६।२८	२२।२९	२८।३०	
२	पुष्य	१९।२८	२४।५५			२२	रेवती			७।१३	१३।०६	१०	पूषा.	८।४१	१५।००	२१।१९	२७।३८	१दि	हस्त			११।४२	१७।१८	२०	रोहि.				१०।३१
३	पुष्य			६।३२	१२।१०	२२	अश्वि	२०।१९	२६।४७			११	उषा.	९।५६	१६।२५	२२।५५	२९।२४	१	चित्रा	२२।५४	२८।३१			२०	मृग.	१६।३२	२२।२५	२८।१८	
३	श्ले.	१७।४८	२३।२७	२८।४७		२३	अश्वि			९।१५	१५।४३	१२	श्रव.	११।५४	१८।३२	२५।०९		२	चित्रा			१०।०८	१५।४५	२१	मृग.				१०।१०
४	श्ले.				१०।२७	२३	भरणी	२२।११	२८।३३			१३	श्रव.				७।४६	२	स्वा.	२१।२२	२७।०१			२१	आर्द्रा	१६।०३	२१।४९	२७।३५	
४	मघा	१५।०६	२१।०९	२६।३२		२४	भरणी			१०।५६	१७।१८	१३	धनि.	१४।२४	२१।०७	२७।५०		३	स्वा.			८।४०	१४।२०	२२	आर्द्रा				९।२१
५	मघा				७।५५	२४	कृत्ति.	२३।४०	२९।५७			१४	धनि.				१०।३३	३	विशा	१९।५९	२५।४२			२२	पुन.	१५।०७	२०।४८	२६।२८	
५	पूफा.	१३।२८	१८।३७	२३।४६	२९।१५	२५	कृत्ति.			१२।२४	१८।३१	१४	शत.	१७।१६	२४।०१			४	विशा			७।२६	१३।१०	२३	पुन.				८।०९

दिस	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२३	पुष्य	१३।५०	१९।२७	२५।०५	३०।४२
२४	श्ले.	१२।२०	१७।५६	२३।३१	२९।०७
२५	मघा	१०।४२	१६।२७	२१।५२	२७।२७
२६	पूफा.	९।०२	१४।३८	२०।१३	२५।४८
२७	उफा.	७।२४	१३।०२	१८।३९	२४।१६
२७	हस्त	२९।५४			
२८	हस्त		११।३४	१७।१५	२२।५५
२८	चित्रा	२८।३५			
२९	चित्रा		१०।१८	१६।०२	२१।४५
२९	स्वा.	२७।२१			
३०	स्वा.		९।१६	१५।०४	२०।५१
३०	विशा	२६।३९			
३१	विशा		८।३१	१४।२४	२०।१६
३१	अनु.	२६।१८			
		सन् २०११ ई.			
१ज	अनु		८।०५	१४।०२	२०।००
१	ज्ये.	२५।५७			
२	ज्ये.		८।००	१४।०२	२०।०५
२	मूल	२६।०८			
३	मूल		८।१७	१४।२६	२०।३६
३	पूषा.	२६।४५			
४	पूषा.		९।०१	१५।१७	२१।३३
४	उषा.	२७।४९			
५	उषा.		१०।२२	१६।३५	२२।४८
५	श्रव.	२९।२१			
६	श्रव.		११।५१	१८।२१	२४।५१
७	धनि.	७।२२	१३।५८	२०।३५	२७।११
८	शत.	९।४८	१६।२९	२३।११	२९।५२
९	पूभा.	१२।३३	१९।१७	२६।०२	
१०	पूभा.				८।४७
१०	उभा.	१५।३१	२२।१५	२९।००	
११	उभा.				११।४४
११	रेवती	१८।२८	२५।०९		
१२	रेवती			७।५१	१४।३२

जन	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१२	अश्वि	२१।१३	२७।४८		
१३	अश्वि			१०।२३	१६।५८
१३	भरणी	२३।२३	२९।५१		
१४	भरणी			१२।२६	१८।५३
१४	कृत्ति.	२५।१८			
१५	कृत्ति.		७।३४	१३।५०	२०।०५
१५	रोहि.	२६।२०			
१६	रोहि.		८।२४	१४।२८	२०।३२
१६	मृग.	२६।३७			
१७	मृग.		८।३०	१४।२३	२०।१६
१७	आर्द्रा	२६।०९			
१८	आर्द्रा		७।५२	१३।३६	१९।१९
१८	पुन.	२५।०२	३०।३७		
१९	पुन.			१२।१२	१७।४७
१९	पुष्य	२३।२२	२८।५१		
२०	पुष्य			१०।१९	१५।४८
२०	श्ले.	२१।१७	२६।४२		
२१	श्ले.			८।०७	१३।३३
२१	मघा	१८।५८	२४।२२	२९।४५	
२२	मघा				११।०९
२२	पूफा.	१६।३३	२१।५८	२७।२३	
२३	पूफा.				८।४८
२३	उफा.	१४।१३	१९।४१	२५।०९	३०।३७
२४	हस्त	१२।०५	१७।३८	२३।११	२८।४४
२५	चित्रा	१०।१७	१५।५७	२१।३६	२७।१६
२६	स्वा.	८।५५	१४।४१	२०।२७	२६।१४
२७	विशा	८।०१	१३।५६	१९।५०	२५।४५
२८	अनु.	७।३१	१३।४१	१९।४२	२५।४४
२९	ज्ये.	७।४६	१३।५५	२०।०४	२६।१३
३०	मूल	८।२२	१४।३७	२०।५३	२७।०९
३१	पूषा.	९।२४	१५।४६	२२।०७	२८।२९
१फ	उषा.	१०।५१	१७।१८	२३।४५	३०।१२
२	श्रवण	१२।३१	१९।११	२५।४३	
३	श्रवण				८।१६

फर	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
३	धनि.	१४।४८	२१।२५	२८।०२	
४	धनि.				१०।३८
४	शत.	१७।१५	२३।५६	३०।३६	
५	शत.				१३।१७
५	पूभा.	१९।५८	२६।४१		
६	पूभा.			९।२५	१६।०९
६	उभा.	२२।५३	२९।३८		
७	उभा.			१२।२३	१९।०८
७	रेवती	२५।५३			
८	रेवती		८।३७	१५।२१	२२।०५
८	अश्वि	२८।५०			
९	अश्वि		११।३०	१८।११	२४।५२
१०	भरणी	७।३३	१४।०७	२०।४१	२७।१५
११	कृत्ति.	९।४९	१६।१४	२२।३९	२९।०४
१२	रोहि.	११।२९	१७।४३	२३।५६	३०।१०
१३	मृग.	१२।२४	१८।२६	२४।२८	३०।२९
१४	आर्द्रा	१२।३१	१८।२०	२४।०९	२९।५८
१५	पुन.	११।४८	१७।२६	२३।०४	२८।४२
१६	पुष्य	१०।१९	१५।४७	२१।१६	२६।४४
१७	श्ले.	८।१३	१३।३४	१८।५६	२४।१७
१७	मघा	२९।३८			
१८	मघा		१०।५५	१६।११	२१।२८
१८	पूफा.	२६।४५			
१९	पूफा.		८।००	१३।१६	१८।३१
१९	उफा.	२३।४६	२९।०३		
२०	उफा.			१०।१९	१५।३६
२०	हस्त	२०।५३	२६।१४		
२१	हस्त			७।३५	१२।५५
२१	चित्रा	१८।१६	२३।४३	२९।११	
२२	चित्रा				१०।३८
२२	स्वा.	१६।०६	२१।४२	२७।१८	
२३	स्वा.				८।५४
२३	विशा	१४।३०	२०।१६	२६।०३	
२४	विशा				७।४९
२४	अनु.	१३।३५	१९।३१	२५।२८	

फर	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२५	अनु.				७।२४
२५	ज्ये.	१३।२१	१९।२८	२५।३५	
२६	ज्ये.				७।४२
२६	मूल	१३।४१	२०।०५	२६।२२	
२७	मूल				८।३९
२७	पूषा.	१४।५५	२१।१९	२७।४४	
२८	पूषा.				१०।०९
२८	उषा.	१६।३३	२३।०४	२९।३५	
१मा	उषा.				१२।०६
१	श्रव.	१८।३७	२५।१३		
२	श्रव.			७।४८	१४।२४
२	धनि.	२१।००	२७।३१		
३	धनि.			१०।१९	१६।५८
३	शत.	२३।३८	३०।२०		
४	शत.			१३।०२	१९।४४
४	पूभा.	२६।२६			
५	पूभा.		९।१०	१५।५४	२२।३७
५	उभा.	२९।२१			
६	उभा.		१२।०५	१८।५०	२५।३५
७	रेवती	८।२०	१५।०४	२१।४८	२८।३२
८	अश्वि	११।१७	१८।००	२४।४२	
९	अश्वि				७।२५
९	भरणी	१४।०७	२०।४५	२७।२४	
१०	भरणी				१०।०२
१०	कृत्ति.	१६।४१	२३।१३	२९।४६	
११	कृत्ति.				१२।१८
११	रोहि.	१८।५०	२५।१३		
१२	रोहि.			७।३६	१४।००
१२	मृग.	२०।२३	२६।३६		
१३	मृग.			८।४८	१५।०१
१३	आर्द्रा	२१।१४	२७।१५		
१४	आर्द्रा			९।१६	१५।१६
१४	पुन.	२१।१७	२७।०५		
१५	पुन.			८।५४	१४।४३
१५	पुष्य	२०।३१	२६।०८		

मार्च	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१६	पुष्य			७।४५	१३।२२
१६	श्ले.	१८।५१	२४।२६	२९।५२	
१७	श्ले.				११।१९
१७	मघा	१६।४६	२२।०५	२७।२४	
१८	मघा				८।४३
१८	पूफा.	१४।०३	१९।१७	२४।३१	२९।४६
१९	उफा.	११।००	१६।१२	२१।२४	२६।३७
२०	हस्त	७।४९	१३।०२	१८।१६	२३।२९
२०	चित्रा	२८।४२			
२१	चित्रा		९।५९	१५।१७	२०।३४
२१	स्वा.	२५।५२			
२२	स्वा.		७।१६	१२।४०	१८।०४
२२	विशा	२३।२९	२९।०३		
२३	विशा			१०।३६	१६।१०
२३	अनु.	२१।४४	२७।२९		
२४	अनु.			९।१३	१४।५८
२४	ज्ये.	२०।४३	२६।४०		
२५	ज्ये.			८।३७	१४।३४
२५	मूल	२०।३०	२६।३९		
२६	मूल			८।४८	१४।५७
२६	पूषा.	२१।०६	२७।२६		
२७	पूषा.			९।४५	१६।०५
२७	उषा.	२२।२५	२८।५४		
२८	उषा.			११।२३	१७।५२
२८	श्रव.	२४।२१			
२९	श्रव.		६।५७	१३।३३	२०।०९
२९	धनि.	२६।४६			
३०	धनि.		९।२७	१६।०८	२२।४९
३०	शत.	२९।३०			
३१	शत.		१२।१४	१८।५७	२५।४१
१अ	पूभा.	८।२५	१५।०९	२१।५४	२८।३९
२	उभा.	११।२३	१८।०८	२४।५२	
३	उभा.				७।३७
३	रेवती	१४।२१	२१।०४	२७।४८	
४	रेवती				१०।३१

देश में होने वाले मेला, दशहरा, अन्यान्य उत्सव, सम्वत् २०६७

मेला चीमानानकसर(पंजाब)१६मार्च
आर्यसमाजस्था.दि.हेडगेवारज.१६ ”
श्रीझूलेलालज.सिंधीसम्प्रदाय१७ ”
गणगौरपूजन सवारी जयपुर १८ ”
सरहुल (बिहार) १८ ”
माईसरखाना अमृतसर पंजाब२१ ”
मनसादेवी (चण्डीगढ़) २३ ”
बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर) २३ ”
ज्वालामुखीहरचोबालगुरदासपुर२३ ”
श्री रामनवमी (अयोध्या) २४ ”
ब्राह्मणवास आश्रम नारनौल२४ ”
माताकांसादेवीप्रा.कांसलरोपड़२८ ”
श्रीमहावीरजयंती२६११वीं २८ ”
देवी मेला हथीहरा कुरुक्षेत्र २९ ”
देवबन्ददेवीकुण्ड सहारनपुर २९ ”
सालासरहनुमान-बालाजीराज.३० ”
मानकपुर शरीफ (पंजाब) ३० ”
वैशाखी पर्व (पंजाब) १४अप्रै
पिंजोर (हरियाणा) १४ ”
कशाधानहयाणीसह कुल्लूप्रा.१५ ”
देवदामोदर तिथि असम १५ ”
पीपलजातरप्रा.३दिन कुल्लू २९ ”
मनीआऊटरसिराजप्रा.कुल्लू ७ मई
डूंगरीजातर २दिनप्रा.मनाली १४ ”
मेलाबंजार ४दिन प्रा.कुल्लू १४ ”
शाढ़ीजातरप्रा.नगर (हिप्र.) १८ ”
समागमहरिहरघाट,मणिकर्णकुल्लूर २ ”
अजमेर का उर्स प्रारम्भ १४जून
मे.भुन्तर कुल्लू तीन दिन १५ ”
पाण्डवोंकावाडीसरयांझसोलन१५ ”
क्षीरभवानी (कश्मीर) १९ ”
श्रीगङ्गादशहरामेला हरिद्वार २१ ”
सोपोरयात्राधारलदा ऊधमपुर २१ ”
जोड़ ढूंढसा(पं.)पीपलू ऊना(हिप्र.)२२ ”

नौवें गुरु बहरे भटिंडा (पं.)२२ जून
मे.खाटूश्याम,पंचकोसीयात्राकाशीर२ ”
शुद्ध महादेव यात्रा ऊधमपुर २६ ”
बरसीबाबासंतोषसिंहनानकसर ९जुलाई
बडुसाहिबप्रारम्भ हिमाचल ९ ”
श्रीजगन्नाथजीरथोत्सव(पुरी)१३ ”
शरीफभवानी (जम्मूकश्मीर)१९ ”
दादामेला अजमेर प्रारम्भ २१ ”
परिक्रमा नैमिषारण्य २६ ”
गुरुपूर्णिमानदीपारआश्रमकुराली२६ ”
ब.स.बा.प्यारासिंहचमकौरसा. ५अग.
रुद्राभिषेक पुरामहादेव मेरठ ८ ”
नीलकंठ महादेव (उत्तराखंड) ८ ”
नैनादेवी चिन्तपूर्णी हिमाचल१७ ”
ओनम पर्व केरल तमिलनाडू२३ ”
श्रीअमरनाथ दर्शन (कश्मीर)२४ ”
बंगवाल उत्सव (उत्तरांखंड)२४ ”
कजरीप्रतियोगिता (बिहार) २७ ”
द्रौणमेला दनकौरका प्रारम्भ १सित.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (मथुरा) १-२ ”
कैलाश यात्रा (कश्मीर) ७ ”
सुथरेशाहदिल्ली,वीरजन्मोत्सवजैन ८ ”
श्री गुसांईआणां (कुराली) १० ”
रुणीचामेला जैसलमेर राज. १० ”
श्रीगणेशोत्सव मण्डी-हिमा. ११ ”
श्रीगणेशजन्मोत्सव(महाराष्ट्र)११ ”
मेला पट्ट प्रारम्भ(कश्मीर) १२ ”
मणिमहेश चम्बा(हिमाचल)१५ ”
श्रीचन्दनवमीउत्सवउदासीनसं.१६ ”
नवलदुर्गेमेलारामदेवजी(राज)१७ ”
फूलडोलचारभुजाजी(मेवाड़)१८ ”
वामनद्वादशी(अम्बालापटियाला)१९ ”
बाबासोढ़ल-छपार(पंजाब) २२ ”
गोयन्दवाल (अमृतसर) २३ ”

श्रीआशापति यात्रा (कश्मीर) ६ अक्टू
फल्गु पिहोवातीर्थ (हरियाणा) ७ ”
पितरविसर्जनश्राद्ध-गयाजी-पिंडारा ७ ”
ज्वालामुखीतारादेवीहिमाचल १५ ”
हरचोबालगुरदासपुर(पंजाब)१५ ”
दशहरा कुल्लू (हिमाचल) १७ ”
पीरशीखनशाह(घड़ामपटियाला)१९ ”
शाकम्भरीदेवी (सहारनपुर)२१ ”
देवीहथीहराकैथल(कुरुक्षेत्र)२१ ”
भ.हरिओमजीमानकपुरशरीफ३१ ”
दीपावली (अमृतसर) ५ नव.
बटेश्वर का प्रारम्भ (आगरा) ७ ”
छटिपर्व प्रा. (बिहार) ९ ”
रेणुका नाहन (हिमाचल) १७ ”
खाटूश्यामजी (राज.) १८ ”
बाबारुद्रानारीऊना (हिमा.) १८ ”
बीरवैरागी नकोदर(पंजाब) १९ ”
पुष्करराज रेणुकातीर्थ राज. २१ ”
रामतीर्थ कपालमोचन हरि. २१ ”
कार्तिकीपूर्णिमा स्नान गढ़गंगार१ ”
ब्राह्मणवास आश्रम नारनौल२९ ”
पुरमण्डलदेविकास्नान जम्मू ४दिस.
बाबावैशाखसिंहदुल्हेरसाहब,जम्मू ५ ”
नरसीमेहता जयंती १२ ”
श्रीघालदासज.रामधामखेड़ापा१७ ”
कपर्दीश्वरयात्रादर्शन(काशी)२० ”
मे.जोड़फतेहगढ़साहिब(पं) २६ ”
संगीतबाबाहरबल्लभजालंधर२७ ”
वकुलामावसपर्व उड़ीसा ४ जन.
सूर्यग्रहण स्नानमेला(कुरुक्षेत्र) ४ ”
हत्तापनाशन स्नान (मद्रास) ४ ”
सतगुरु प्रकाशोत्सव १० ”
लोहड़ी(दाऊबिदरखरोपड़) १३ ”
मुक्तसर (पंजाब) १४ ”

माघविहू पोंगलपर्व केरला १४जन.
शाम्बदशमी (उड़ीसा) १५ ”
मंढारदेवी सतारा(महा.) १९ ”
मेरुत्रयोदशी जैनोत्सव ३१ ”
मौनीमावस स्नान गंगाजी ३ फर.
मस्तुआणा (पंजाब) ३ ”
बाबा रामदेव लालदयालजी ५ ”
भैनीग्यारस (बंगाल) १४ ”
वेणेश्वरमहादेव डूंगरपुर १५ ”
पंचखण्डपीठ विराटनगर १६ ”
जितेन्द्र रथयात्रा जैन १७ ”
माघीपूर्णिमा,स्नानमेलाहरिद्वार १८ ”
महाशिवरात्रि मण्डी २ मार्च
मेला राठौडा रामपुर (उप्र.) ३ ”
नीलकण्ठमहादेव (उत्तराखंड) ३ ”
ऋषिबोधोत्सव आर्यसमाज ३ ”
खाटूश्यामजी (राजस्थान) १६ ”
फूलडोलोत्सवशाहपुरामेवाड़ १६ ”
होला आनन्दपुरसाहिबपंजाब २० ”
पंखामेला झज्जर(हरियाणा)२० ”
गुरु रामराय (देहरादून) २४ ”
बीरमदास बधोछी पटियाला २४ ”
शीतलामाता (कुराली) २५ ”
केसरियामेवाड़,केलादेवीकरौली२६ ”
नौचन्दी मेरठ (उ.प्र.) २७ ”
पिहोवातीर्थ (हरियाणा) २अप्रैल

नोटः देशकाल परिस्थित्यानुसार कभी-कभी पर्वोत्सवोंकी निर्धारित तिथियोंमें राज्य सरकारों के स्थानीय प्रबन्धकों को परिवर्तन करनेके लिए बाध्य होना पड़ जाता है,सो उसका उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं, पाठकोंसे- अपने यहाँ मान्य मेला उत्सवादि विवरण पंचांग कार्यालय को भेज दें, जिससे उन्हें सूचीमें शामिल कर सकें।

ब्रजक्षेत्र के खास उत्सव

पंचांगश्रवण श्रीबांके१६मार्च
बिहारीजीमहाराज वृन्दावन
सभीमंदिरोंकेसमयपरिवर्तन१६ ”
श्रीयमुनाजी उत्सव वृन्दावन२१ ”
देवी मेला नरीसेमरी मथुरा२३ ”
फूलडोल११,फूलबंगलाप्रा.२६ ”
बन्दी-आनन्दी मेला मथुरा२८ ”
द्वारिकाधीश५६भोगमथुरा३० ”
केशवेश्वरमें जलधारा घटस्था.१४अप्रै.
चरणदर्शनसर्वाङ्गचन्दनलेपन१६ ”
श्रीबांकेबिहारीमंदिरवृन्दावन
वृन्दावनपरिक्रमा वनविहार२९ ”
कृष्णद्वारारुक्मिणीहरणलीला२२जून
जगन्नाथस्नानयात्रागु.सेवा वृ. २६ ”
श्रीजगन्नाथजी रथयात्रा १३जुला.
मुडियापूनोगोवर्धनपरिक्रमा२६ ”
केशवेश्वरमहादेवबंगलादर्शन २अग.
श्रावणकेप्रत्येक सोमवारमें
श्रीबिहारीजीमहाराज स्वर्ण१२ ”
हिंडोले में विराजें वृन्दावन
विशालमेला जेतगांव मथुरा१४ ”
छटीकरा मेला मथुरा १७ ”
महारासलीलाउत्सववृन्दावन२४ ”
दाऊजी-मातारेवतीकाभव्यश्रृंगार२४ ”
१०००बत्ती-नामोच्चारआरती२४ ”
कृष्णजन्माष्टमीव्रतोत्सवमथुरा१-२सित.
नन्दोत्सव नन्दगांव बरसाना ३ ”
देवछटिमेलाब्रजमण्डल-गौमत१३ ”
राधिकाजन्मोत्सव बरसाना१५ ”
मेलागरुड़गोविन्द छटीकरा१५ ”
मटकीफोरडोंगालीलाबरसाना२१ ”
श्रीबिहारीजीकटिकाछनीमुकुट-२१अक्टू
मुरली धारण करें, वृन्दावन

महारासपूर्णिमा,शरद्पूर्णिमाव्रत २२ अक्टू.
८४ कोसकी ब्रजपरिक्रमा शुरु २३ "
श्रीराधाकुण्डमेंस्नान महोत्सव ३० "
अन्नकूटगोवर्धनपूजा,गोवर्धन ६ नव.
मोक्षप्राप्तियर्थयमुनास्नानमथुरा ७ "
जुगलजोड़ी परिक्रमा वृन्दावन १५ "
कंशवधलीलाचतुर्वेदीयप.मथु. १६ "
तीनवन परिक्रमा मथुरा वृन्दावन १७ "
एवं गरुड़गोविन्द
सभीमंदिर समयदर्शनपरिवर्तन २२ "
बांकेविहारीम.प्रादुर्भावउत्सव १० दिस.
श्रीविट्ठल विपुल उत्सव १० "
स्वा.हरिदासजीकीसवारीनिधिवन १० "
५६ भोगबलदेवजीगोपमाससमाप्त २१ "
छप्पनभोग,मे.गरुड़गोविन्द ९ जन.
श्रीठाकुरजीतिलकभोगस्वीकारें २९ "
दुर्वासाऋषि मेला मथुरा ८ फर.
श्रीमद्भागवतभवनप्रतिष्ठादि. २२ "
श्रीकृष्णजन्मस्थान मथुरा
लट्ठमारहोरी बरसाना में १४ मार्च
लट्ठमारहोरी नन्दगांव में १५ "
लट्ठमारहोलीजन्मभूमि,मथुरा १५ "
धार्मिकमे.मानसरोवरवृन्दावन १५ "
होलीमहोत्सवप्रा.रमणरेतीवृ. १७ "
पुजारीजी का होलीमें से १९ "
निकलना फालेन गांव कोसी
महारासलीलास्वामीरामस्वरुप १९ "
होलोत्सव राधावल्लभ-बांकेबिहारी २० "
श्रीदाऊजीके मन्दिर में हुरंगा २१ "
छोटी आतिशबाजी मंदिर श्री २३ "
रङ्गनाथजी वृन्दावन
रथोत्सव श्रीराधावल्लभ वृन्दावन २४ "
भण्डारा छटीकरा मथुरा में २४ "
श्रीरङ्गनाथजीरथोत्सव मेलावृन्दावन २८ "
बडीआतिशबाजी रङ्गनाथजीवृन्दा. २९ "

निम्नलिखित शहरों में सकष्टी श्री गणेश चतुर्थी वाले दिन चन्द्रोदय का समय

	२३अप्रैल	१ मई	३१मई	३०जून	२९जुला.	२८अग.	२७सित.	२६अक्टू.	२५नव.	२४दिस	२२जन.	२१फर.	२२मार्च
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अयोध्या	२१।५६	२१।३७	२१।५०	२१।३३	२०।३५	२०।१०	२०।०५	१९।४१	२०।३४	२०।३३	२०।२८	२१।२६	२१।१९
अलवर	२२।२२	२२।०३	२२।१५	२१।५८	२०।५९	२०।३३	२०।२७	२०।०३	२०।५७	२०।५६	२०।५२	२१।५१	२१।४५
अजमेर	२२।२८	२२।०८	२२।२१	२२।०५	२१।०७	२०।४२	२०।३८	२०।१४	२१।०७	२१।०५	२१।००	२१।५८	२१।५१
अमृतसर	२२।४०	२२।२१	२२।३१	२२।०९	२१।०७	२०।३६	२०।२६	२०।००	२०।५६	२०।५८	२०।५८	२२।०३	२२।००
अलीगढ़	२२।१६	२१।५६	२२।०९	२१।५१	२०।५२	२०।२६	२०।२०	१९।५६	२०।४९	२०।४८	२०।४५	२१।४४	२१।३८
आगरा	२२।१५	२१।५५	२२।०८	२१।५१	२०।५२	२०।२६	२०।२१	१९।५७	२०।५०	२०।४९	२०।४५	२१।४४	२१।३८
इटावा	२२।०९	२१।५०	२२।०३	२१।४६	२०।४८	२०।२३	२०।१८	१९।५४	२०।४७	२०।४६	२०।४१	२१।३९	२१।३२
इन्दौर	२२।१४	२१।५४	२२।०९	२१।५७	२१।०२	२०।४१	२०।४१	२०।१८	२१।०९	२१।०५	२०।५६	२१।४९	२१।४०
कलकत्ता	२१।२१	२१।०१	२१।१७	२१।०५	२०।१०	१९।५०	१९।४९	१९।२६	२०।१६	२०।१२	२०।०४	२०।५६	२०।४६
कानपुर	२२।०४	२१।४४	२१।५७	२१।४१	२०।४३	२०।१८	२०।१४	१९।५०	२०।४३	२०।४१	२०।३६	२१।३४	२१।२७
कोटा	२२।२०	२२।००	२२।१४	२१।५९	२१।०२	२०।३८	२०।३५	२०।१२	२१।०४	२१।०१	२०।५६	२१।५२	२१।४४
खीरीलखीमपुर	२१।५५	२१।३६	२१।५०	२१।३५	२०।३८	२०।१४	२०।११	१९।४७	२०।४०	२०।३७	२०।३१	२१।२७	२१।१९
ग्वालियर	२२।१२	२१।५३	२२।०६	२१।५०	२०।५२	२०।२७	२०।२३	१९।५९	२०।५२	२०।५०	२०।४५	२१।४३	२१।३५
जबलपुर	२१।५९	२१।३९	२१।५४	२१।४१	२०।४५	२०।२४	२०।२३	२०।००	२०।५१	२०।४७	२०।३९	२१।३३	२१।२४
जयपुर	२२।२४	२२।०४	२२।१७	२२।००	२१।०२	२०।३७	२०।३३	२०।०९	२१।०२	२१।००	२०।५५	२१।५४	२१।४७
जोधपुर	२२।३३	२२।१३	२२।२६	२२।१०	२१।१२	२०।४७	२०।४३	२०।२०	२१।१२	२१।११	२१।०६	२२।०४	२१।५६
झुंझनू	२२।२८	२२।०९	२२।२१	२२।०३	२१।०३	२०।३६	२०।३०	२०।०६	२०।५९	२०।५९	२०।५६	२१।५६	२१।५१
चंडीगढ़	२२।२९	२२।१०	२२।२१	२२।००	२०।५९	२०।२९	२०।२०	१९।५५	२०।५०	२०।५१	२०।५०	२१।५४	२१।५०
दिल्ली	२२।२१	२२।०२	२२।१४	२१।५५	२०।५६	२०।२८	२०।२२	१९।५७	२०।५१	२०।५१	२०।४८	२१।४९	२१।४४
बम्बई	२२।१९	२१।५८	२२।१५	२२।०६	२१।१४	२०।५७	२१।००	२०।३९	२१।२८	२१।२१	२१।१०	२१।५८	२१।४६
बरेली	२२।१२	२१।५३	२२।०५	२१।४७	२०।४७	२०।२०	२०।१४	१९।४९	२०।४३	२०।४३	२०।३९	२१।४०	२१।३४
बिलासपुर	२१।४७	२१।२६	२१।४२	२१।३०	२०।३५	२०।१५	२०।१४	१९।५२	२०।४२	२०।३८	२०।२९	२१।२१	२१।११
बीकानेर	२२।३७	२२।१८	२२।२९	२२।११	२१।१२	२०।४५	२०।३९	२०।१५	२१।०८	२१।०८	२१।०४	२२।०५	२१।५९
भोपाल	२२।०९	२१।४९	२२।०४	२१।५०	२०।५५	२०।३३	२०।३२	२०।०९	२१।००	२०।५७	२०।४९	२१।४३	२१।३४
मेरठ	२२।२२	२२।०३	२२।१४	२१।५५	२०।५५	२०।२७	२०।१९	१९।५५	२०।४९	२०।४९	२०।४७	२१।४९	२१।४४
रोहतक	२२।२५	२२।०६	२२।१८	२१।५९	२०।५९	२०।३१	२०।२५	२०।००	२०।५४	२०।५४	२०।५१	२१।५२	२१।४७
वाराणसी	२१।४९	२१।३०	२१।४४	२१।२९	२०।३२	२०।८	२०।०४	१९।४१	२०।३३	२०।३०	२०।२४	२१।२१	२१।१३
लखनऊ	२२।०३	२१।४३	२१।५६	२१।४०	२०।४२	२०।१७	२०।१२	१९।४८	२०।४१	२०।३९	२०।३४	२१।३३	२१।२६
सिलचर	२१।०८	२०।४९	२१।०३	२०।४९	१९।५३	१९।३०	१९।२७	१९।०३	१९।५५	१९।५२	१९।४५	२०।४०	२०।३२
सूरत	२२।२४	२२।०४	२२।१९	२२।०८	२१।१४	२०।५५	२०।५६	२०।३४	२१।२४	२१।१९	२१।०९	२२।००	२१।५०
हरिद्वार	२२।२०	२२।०१	२२।१३	२१।५३	२०।५२	२०।२३	२०।१५	१९।५०	२०।४५	२०।४६	२०।४४	२१।४७	२१।४२
हिसार	२२।३०	२२।११	२२।२२	२२।०३	२१।०३	२०।३५	२०।२७	२०।०३	२०।५७	२०।५७	२०।५५	२१।५७	२१।५२

श्री राधा - कृष्ण संवाद

सुखासीन ब्रजधाम में, कृष्णा परमानन्द।
सेवारत श्री राधिका, करें प्रश्न सुखछन्द॥
संवत सड़सठ आ गया, ईश जगत् आधार।
विश्वमें क्या कुछ होयगा, फलकहि दो विस्तार॥
राधा तुम जग कारिणी, हे जगत् तुम्हारे हाथ।
दुराचार नितबढ़ रहे, अब छोड़ो सुखका साथ॥
राजा मंगल मेघपति, मंत्री नपुंशक बुध जात।
राजनीति सहद्विन्द से, होंगे चौतरफा उत्पात॥
युद्ध और आतंक से, धरा जाय अकुलाय।
पश्चिम दिशि निर्मोहसे, कालबली सब खाय॥
सस्यनीरपति शुक्र है, रवि को रसपति मान।
धनधान्यादिक गुरु है,फलेशदुर्गेशचन्द्र को जान॥
वसी रोहिणी शिखरपर, समय कुम्भकारके द्वार।
जलनहिं वर्षेसमयपर, सब फसल होय बेकार॥
मेघनाम पुष्कर सुना, संवत्विश्वा दस आठ।
सुजन सभी दुःख पाऐंगे, लुच्चे गुंडन के ठाठ।
भूखप्यास से दुःखितजन, त्रिसित फिरे महिमाह॥
रुण्ड मुण्ड लुढ़कत फिरें, होहल्ला प्रति माह॥
शनी गुरुपतियोग में, रज तम गुण अधिकाय।
धर्मविराघी लड़ मरें, कहीं सत्ता पलटी जाय॥
बालमृत्यु जननी हनन, बढ़ते नित उत्पात।
समाधान इनका नहीं, अपस्वार्थी राजतन्त्रके हात॥
ब्रजभूमि सानन्द मय, दिनकटिहहिं ममसाथ।
कौशिक भारतभूमिके, रक्षक श्रीराधा-नाथ॥

ग्रहों की युति-प्रतियुतियाँ

सूर्य से हर्शल की युति	१७	मार्च
सूर्य-शनि का प्रतियोग	२२	"
शुक्र शनि का षडाष्टकयोग	१	अप्रैल
सूर्य से चन्द्र की युति	१४	"
सूर्य से बुध की युति	२८	"
सूर्य भौम का ९०डिग्रीकोण	४	मई
गुरु शनि का प्रतियोग	२३	"
भौम गुरु का षडाष्टक योग	८	जून
सूर्य बुध की युति	२८	"
सूर्य राहु का प्रतियोग	४	जुला.
मंगल शनि की युति	३१	"
भौम गुरु का प्रतियोग	४	अग.
शुक्र से शनि की युति	८	"
गुरु शुक्र का प्रतियोग	१०	"
मंगल शुक्र की युति	२१	"
सूर्य बुध की युति	३	सित.
सूर्य गुरु का प्रतियोग	२१	"
सूर्य शनि की युति	१	अक्टू.
मंगल शुक्र की युति	४	"
बुध शनि की युति	८	"
सूर्य बुध की युति	१७	"
बुध शुक्र की युति	२५	"
सूर्य शुक्र की युति	२९	"
पापग्रह त्रेकादश योग	१०	नव.
मंगल बुध की युति	२०	"
मंगल बुध की प्रतियुति	१४	दिस.
सूर्य बुध की युति	२०	"
सूर्य से राहु की युति	२४	"
गुरु शुक्र का नवपंचमयोग	४	जन.
बुध से राहु की युति	१५	"
सूर्य भौम की युति	४	फर.
गुरु शुक्र का ९० डिग्रीयोग	६	"
सूर्य नेपच्यून युति	१७	"
मंगल से बुध की युति	२१	"
सूर्य बुध की युति	२५	"
चतुर्ग्रही योग नेष्ट	४	मार्च
बुध शनि का प्रतियोग	१९	"
सूर्य से हर्शल की युति	२१	"
गुरु शनि का प्रतियोग	२९	"
सूर्य शनि का प्रतियोग	४	अप्रैल

नोटः- अक्टूबर २०१० में ग्रहों के अतिनेष्ट योग असम्भावी कुघटनाचक्र का संकेत है।

❊ अभिजित् नक्षत्र ❊

ता.	मास	घं.मि.	से	घं. मि.	तक
७	अप्रैल	११।४५	"	२८।१८	"
४	मई	२७।४४	"	-।-	"
५	"	-।-	"	१२।१४	"
१	जून	१२। १	"	२०।२७	"
२८	"	११।४६	"	२७। ९	"
२५	जुलाई	२६।३१	"	-।-	"
२६	"	-।-	"	१०।५७	"
२२	अगस्त	८।१८	"	१७। ०	"
१८	सितम्बर	१४।२९	"	२२।५८	"
१५	अक्टूबर	२१।१८	"	२९।४२	"
१२	नवम्बर	५।२२	"	१३।३२	"
९	दिसम्बर	१४।२४	"	२२।३३	"
५	जनवरी	२३।००	"	-।-	"
६	"	-।-	"	७। ८	"
२	फरवरी	६।१२	"	१४।२७	"
१	मार्च	१२। ८	"	२०।२५	"
२८	"	१७।५५	"	२६। ९	"

लाभ-खर्च देखने की विधि-

लाभ-खर्च अंक जोड़कर १ घटा दें, ८का भाग दें। शेष यदि १बचे तो उत्तम लाभ, २शेष में सुख, ३शेष में क्लेश, ४शेष में रोग उपद्रव, ५शेष में अपयश, ६शेष में मान-सम्मान, ७शेष में विजय लाभ और ०शेष बचे तो वर्ष में हानि हो, चिन्ता व्यथा रहे। अन्यान्य ग्रहोंका गोचरमें गतिशील प्रभाव भी चिन्तनीय विषय है।

❊ लाभ-खर्च ज्ञानाय कोष्ठक ❊

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
खर्च	१५	५	५	१४	११	५	५	१५	२	५	५	२

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र संवत् 2067

जयति जयति श्रीराधिके, बंदौ पद-अरबिंद। चहत मुदित मकरंद मृदु, जेहि ब्रजचंद मलिंद।।
राधाकृष्णात्मिकानित्यं कृष्णोराधात्मको ध्रुवम्। वृन्दावनेश्वरी राधा राध्यैवराध्यते मया।।

* राजा-मंगल, मन्त्री बुध के शासनकाल में विश्व के अधिकांश भागों में प्राकृतिक आपदा, आतंकीउत्पात, युद्ध, भयातंक के कारण त्राहि-त्राहि मचेगी। शान्तिके प्रयास गौण बनकर रह जायेंगे। बड़े देश छोटे देशों पर दवाब बनाने का प्रयास करेंगे। आतंकीप्रकोप प्रभावी देश को भारी पड़ सकता है।

* गुरु-शनि के प्रतियोग में कई देशों में सत्तापरिवर्तन के साथ-साथ असम्भावी कुघटनाएं घटित होंगी। बिगड़ता प्रकृति का सन्तुलन कहीं अतिवृष्टि, बाढ़, आंधी-तूफान, भूकम्प, भूस्खलन, झन्झावात, अग्निदाह, ज्वालामुखीविस्फोट का कारण बनेगा। पराशक्ति से अनुनय विनय है कि अमानवीय कुकृत्य तथा सिरफिरों से समूचे विश्व का बचाव करें, अन्न-जल की कमी सताने न लगे।

* इस वर्ष वेढ़ंगी ग्रहचाल के प्रभावा से अमेरिका, फ्रांस, खाड़ी के देश, ईरान-इराक, साऊदीअरब, टर्की तथा अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, बांग्लादेश और चीन में सर्वाधिक उपद्रव होंगे। कश्मीर समस्या गहरायेगी। सीमाओं पर युद्ध के बादल मंढ़राने लगें, अलगाववादी ताकतें सिर उठाने लगें तो आश्चर्य नहीं।

* इस वर्ष बालहत्यायें, बलात्कार, नारीअपमान, चोरी, डकैती, अपहरण, लूटपाट, घोटालेबाजी, यान-खान दुर्घटनाऐं, सर्वोच्च बैठकों में हिंसा, तोड़-फोड़, जूतपैजारी, हुडदंगी, आतंकी घटनाएं खूब घटेंगी। सरकारी तन्त्र की निष्क्रियतावसात् महानगरीय सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगेगा। न्याय व्यवस्था सुरक्षा से सम्बन्धित नये नियम निर्धारित कर सकती है।

* सभी देश सुरक्षा के नाम पर अत्याधुनिक हथियार, बारूद का ढ़ेर ऊंचा करने में लगे रहेंगे। शान्ति के नाम पर दूसरों को नसीहत देंगे। अन्तरिक्ष अनुसंधान, प्रकृति के रहस्य खोलने के नाम पर अपव्यय खूब होगा, फिर भी नतीजा सन्देहास्पद रहेगा।

* अन्तरिक्ष में प्रतिकूल ग्रहचाल के प्रभावावसात् मौसम कोई भी सही नही बनेगा। वर्षा अनियमित कहीं कम तो कहीं अधिक होगी। पूर्वापेक्षा फसल भी हल्की रहेगी। महंगाई बेतहासा बढ़ेगी। विदेशी व्यापार अधिक बढ़ेगा। खाद्यसामग्री का आदान-प्रदान होगा।

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः। सृष्टि-रक्षण-संहारा सर्वेचापिग्रहानुगाः।। सृष्टिसृजन, संरचना, रक्षण, भरण-पोषण तथा अभिवृद्धि, विनाशके कारण हेतु सूर्यादि समस्त ग्रह, नक्षत्रमण्डल, तारापुंज हैं। गुरु वृहस्पतिजीके अनुसार यह सारा जगत् ग्रहोंके प्रभावाधीन है। चराचरमें व्याप्त प्राणीमात्र ग्रहोंसे प्राप्त रश्मियोंद्वारा फलते-फूलते हैं और दुष्प्रभावावसात् भविष्यके गर्त में समा जाते हैं। "यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे" अर्थात् जो कुछ इन पिण्डों में है, वही सब कुछ इस ब्रह्माण्ड में भी है। वेदाङ्ग-कल्प, व्याकरण, छन्द, शिक्षा, ज्योतिष और निरुक्त हैं। जिनमें ज्योतिषशास्त्र को वेद का निर्मलनेत्र कहा गया है- "वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिष शास्त्र कलषम्"। नेत्रोंके बिना संसार में कुछ भी दृश्य नहीं हो सकता, इसीलिए ब्रह्माजीने इस शास्त्रकी रचना स्वयं की हैं- "तस्माज्जगद्धितावेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा" ज्योतिष ज्ञान ही नही, बल्कि विशुद्ध विज्ञान है। जरूरत है, वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य में इसे समझने की। ज्योतिष को देव विद्या कहा गया है। अतः जो द्विज ज्योतिषको भली प्रकार से समझकर राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति विशेषके विषयमें भविष्यवाणी करता है, वह दैवज्ञ कहलाता है। निराश्रित दैवज्ञ भी तो मनुष्य ही है, सर्वज्ञ निर्भ्रांत नहीं। यदि उसके द्वारा किंचित कोई त्रुटि रह जाए तो वह सहज मानवीय विकार है। श्रीब्रजभूमि पंचांग में की गई भविष्यवाणियाँ लगभग सही बैठती हैं, इसके साक्षी स्वयं पाठक हैं। आज जहाँ राज्याश्रय प्राप्त देश-विदेशोंमें एलोपैथी डाक्टरी, आयुर्वेद तथा विज्ञान शत-प्रतिशत सत्यता की गारंटी नहीं दे सकते। मौसम विभाग ७२ घण्टे से अधिक भविष्यवाणी नहीं कर सकता। यदि तीन दिन के अनन्तर करता भी है तो वह सम्भावना पर आधारित होती है। पूर्वाचार्य, ऋषि-महर्षियोंकी देन देवविद्या ज्योतिष पर आक्षेप तो बहुत लगाये जाते हैं, लेकिन इसके विकासमें सहयोग कोई नहीं करता। मेरे विचार से ज्योतिष के फलित भाग पर विद्वानोंका अधिक ध्यान केन्द्रित हो और सरकारी तौर पर सहयोग मिले तो भविष्य के यथार्थ को समझने में काफी मदद मिलेगी। जिससे मनुष्यादि प्राणी, समाज और राष्ट्र यानि समस्त संसार का हित होगा। राष्ट्र के निर्माण, कृषि आदि कार्योंमें पूरा सहयोग मिलेगा। दैवज्ञ भी वेद पारायण, सर्वांग सुन्दर, कुलीन, मिष्ठावान, वेदपाठी और धर्मज्ञ होना चाहिए।

वर्ष प्रवेश लग्नम्

१० ८ ११गु. ९ रा. ७ ने. सू. प्लू. बु.१२श. ६ श. चं.ह. १ ३ के. ५ २ मं.४

श्रीसम्वत् २०६७ का शुभारम्भ १५ मार्च २०१० चन्द्रवार की रात्रि में २ बजकर ३० मिनट पर उदित धनु लग्न से हो रहा है। तत्कालीन कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। लग्न में नीच का राहु प्लूटो (यम) के साथ बैठा है। शनि की त्रिपाद दृष्टि पड़ रही है। लग्नपति गुरु शनि की राशि में नीच मंगल की दृष्टि से त्रस्त है। लग्न, लग्नेश और वर्ष के राजा-मंगल, मन्त्री-बुध की बलहीनता इस बात का संकेत है, कि यह वर्ष पूरे विश्व के लिए हानिकारक सिद्धि होगा। धनु लग्न का फल वर्ष प्रबोध में ऐसा लिखा है-

धनुर्लनग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्।
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्यदेशे सरोगता॥

देश के उत्तर एवं पूर्व सम्भागों में किंचित सुख हो साथ ही अतिवृष्टि, बाढ़ से खेती में हानि, दुर्भिक्ष की त्रासदी झेलनी पड़े। मध्य देश में रोगोत्पातों की भरमार रहे।

पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात्।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीड़ा चतुष्पदे॥

देश के पश्चिम में पांच मास तक घी, अनाज कुछ सस्ते रहें। दक्षिण में समृद्धि बढ़े, किन्तु चौपाये जानवर, पशुओं में रोग फैलें, मनुष्यों को भी भारी क्षति उठानी पड़े। शनि दृष्टि दक्षिण में तथा प्रभाव पश्चिम में अत्यन्त अशुभता का लक्षण है।

वर्ष लग्न में राहु+प्लूटो का योग अतिनेष्ट है। युद्ध का देवता मंगल राजा होते हुए नीच का होकर लयपद (आठवें) स्थान पर बैठा है। मन्त्री बुध चार ग्रह संयोग में अस्तप्रायःबलहीन है अर्थात् इस वर्ष जो कुछ होगा, वह पाप ग्रह मंगल के इशारे पर होगा। पूर्वाचार्यों ने इसके राज्य का फल अग्निभय, प्राणियोंकाक्षयः, चोरों, आतंकियों, दुराचारी राजाओं का भयातंक, किंवा भारी राजविग्रह, प्रजा में नाना प्रकार के रोग पीड़ा, युद्धोत्पात, अत्याचार से दुःखित पृथ्वी का अकुलाना, भगदड़ मचना, वियोगपीड़ा सहना तथा हल्की वर्षा होना लिखा है-

भौमेनृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव विग्रहं च।
दुःखं प्रजाव्याधि वियोग पीड़ा स्वल्पं पयोमुञ्चन्ति वारिवाहाः॥

लग्नगत राहु+प्लूटो देश की राजनीति को त्रस्त करेंगे। वर्ष मध्ये कोई भी राजनीतिक दल विखण्डन से नहीं बच पायेगा। बड़े पैमाने पर फेरबदल होंगे। नारी नेतृत्व को बल मिलेगा। प्रभावी नेता व्याधिग्रस्त हो सकते हैं। कोई अपने आप सीट छोड़ने के लिए विवस हो जायेगा।

कन्यायां सूर्यपुत्रे च काश्मीरं याति नाशनम्। कन्या का शनि कश्मीर के लिए अनिष्टप्रद रहता है। देश के प्रहरियों को सजग रहना चाहिए। इस वर्ष शनि दोनों कुण्डलियों में कर्म का कर्त्ता बनकर उद्योग-धन्धों को खूब बढ़ावा देगा। विज्ञान के क्षेत्र में नई उपलब्धि करायेगा। सड़कों पर वाहनों की भरमार रहेगी। अन्तरिक्ष में नई खोज के लिए यह वर्ष यादगार बनेगा। ध्यान रहे- गुरु शनि के प्रतियोग में परस्पर वाहन बहुत टकराते हैं। सात्त्विक तामस वृत्ति वाले जनसमूह आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। ईसा-मूसा की ठन सकती है।

सौर जगत् लग्नम्

२ चं.१२ ३ बु. ह. के. श.११सू. गु.११ ने ४ मं. १० ५ ७ रा.९ प्लू. श.६ ८

ता.१४ अप्रैल २०१० प्रथम वैशाख कृष्ण पक्ष अमावस्या बुधवार को प्रातः घं.६ मि.५६ बजे सूर्यदेव अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में प्रवेश करेंगे। तत्कालीन मेष लग्न की कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। सौर जगत् लग्न का मालिक मंगल नीच का होकर केन्द्रगत सुख के स्थान पर बैठा है। भाग्य स्थान पर नीच का राहु तो पुरुषार्थ के क्षेत्र में केतु हीन फलदायक है। कर्मोद्योग के माध्यम से होने वाले भौतिक विकास तजन्य लाभ का स्वामी शनि कुण्डली में त्रिकस्थान पर है। इससे स्पष्ट है कि वर्षमध्ये समस्त संसार की उन्नति में गतिरोध होगा। सुख सुविधाओं के अभाव में जनता त्रस्त रहेगी। मेष संक्रान्ति अमावस्या में होने से बना खर्पर योग जीवहानि, अन्नादि का नाशक है- खर्परयोगोऽयं जीवधान्यादि नाशकः। संवत् २०६७ मध्ये कन्या में शनि तथा प्रतियोगी मीन के गुरु का फल भी कुछ ऐसा ही लिखा है-

यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराःसर्वनद्योपि विनश्यंति चतुष्पदाम्॥

सात समन्दर पार किन्हीं देशों में असामान्य विषम परिस्थितियाँ त्रस्त करेंगी। त्रियतापों के मार से जीवजगत् में भारी क्षति होगी। अमेरिकादि देशों में कहीं भी युद्ध व युद्ध से बदतर हालात बन सकते हैं।

यदा भास्करतनयःकन्याराशि प्रवश्यति। जलशोषं भवेद्वायुमध्यदेश नृपक्षयः॥

कन्यागत शनि जल, तेल, गैस तथा खनिजपदार्थों की कमी करेगा। इन्हीं को लेकर युद्ध होगा, जिसमें कोई राजा काल का ग्रास बनेगा। ग्रहचाल को देखने से विदित होता है कि पश्चिम के देशों में कब क्या कुघटनाचक्र बन पड़े, अनुमान लगाना मुश्किल है।

वर्षलग्न एवं जगत्लग्न दोनों ही कुण्डलियों में जगदात्मा सूर्य के साथ शुक्र है, सो यह विश्वव्यापी रुझान के तहत नारी नेतृत्व को बल दिलायेगा। मलेच्छावृत्ति वाले राष्ट्रनायकों को यूरोपियन देशों से हरसम्भव सहायता मिलेगी, जो कि विश्व के लिए खतरनाक सिद्धि होगी। शुक्र तामस वृत्तिवालों का रहनुमा है, सो देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपूज्यों को खूब पुजवायेगा। आरक्षण के नाम पर पद की योग्यता न रखते हुए भी उच्च पदों पर अभिषिक्त करायेगा। बढ़ती विषमता की खाई को पाटना मुश्किल हो जायेगा। २०१० के अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त, सित.मास अधिक परेशानियोंमें बीतेंगे।

१ जन. २०१०यूरोपदेश

७ ५ ८ ६ श. चं.४ सू. मं. प्लू.९रा. ३ के. शु.बु. १० १२ २ गु. ने.११ह. १

सन् २०१० यूरोपियन देशों की कुण्डली के केन्द्रस्थानों में पापग्रहों का वर्चस्व बना हुआ है। नीच के मंगल का शनि पर दृष्टिपात हो रहा है। इससे स्पष्ट है कि यूरोप के किन्हीं देशों में उग्रवाद, आतंकीकुकृत्यों के चलते भारी भगदड़ मचेगी, जन- धन की अपार हानि होगी। ब्रिटेन, अमेरिकाके प्रहरियोंको सचेत रहना चाहिए। विश्व के बिगड़ते हालात पर काबू पाने के लिए इन देशों को मिलकर किसी देशके खिलाफ सख्त कार्यवाही करनी पड़ सकती है।

हिजरीसन् १४३१

म.४		२
५	३ के.	१
६ श.		१२
७	सू. चं.१बु. रा.प्लू.	११ने ह.
शु.८		गु.१०

१८ दिसम्बर २००९ पौष शुदी द्वितीया शुक्रवार १७।२४ बजे नवीन चन्द्रमा के दर्शन होने पर अग्रिम दिन गुरुवार से हिजरी सन् १४३१ प्रारम्भ हो रहा है। तत्कालीन कुण्डली के केन्द्रस्थानों में पापग्रहों का वर्चस्व बना हुआ है और लग्नेश बुध धनु राशि में पांच ग्रहों के साथ अति विकल है, जो कि कहीं भारी विनाश का कारण बनेगा-

धनेमीने बुधोयाति मारयति मृगान् गजान्।
प्रजा शाशयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा॥

प्लूटो (यम) के साथ सूर्य तथा चन्द्रमा को ग्रहण लगा हुआ है। अतः सन् २०१० में सात्विक सोच मन्द पड़ जायेगी। राजसी तामसवृत्ति का खुला ताण्डव नृत्य होगा। चौतरफा हो हल्ला मचेगा। पृथ्वी पर रुण्ड-मुण्ड लुढ़कते फिरेंगे। इस वर्ष यूरोपियन तथा मुस्लिम देशों की कुण्डलियाँ मिलती जुलती हैं, फलतः परस्पर खींचतान चलती रहेगी। कोई किसी पर अटैक कर दे तो आश्चर्य नहीं।

एक राशौ यदायान्ति चत्वारःपंच खेचराः। प्लावयन्ति महीसर्वा रुधिरेण जलेनवा॥

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

श.६		शु.४
७ चं.	५ मं.	सू.३ के.
८		२ बु.
९ रा.	११	१
१०		गु.१२

२२ जून २०१० दिन में १० बजे भगवान् सूर्यदेव का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश होगा। तत्कालीन लग्न अग्नितत्त्व की है और उसमें अग्नितत्त्व का मंगल बैठा है, इससे स्पष्ट है कि वर्षाकाल में समयोचित वर्षा नहीं होगी। 'दिवाद्रौं यातिचेत् भानुर्जलभक्षण कारकाः' सूत्रानुसार जून में आंधी-तूफान का जोर रहेगा। मानसून की वर्षा न के बराबर होगी, वह भी देश के दक्षिण भागों में। उत्तरभारत में गर्मी बेतहाशा पड़ेगी। जुलाई के उत्तरार्ध से न्यूनाधिक मात्रा में वर्षा देश के अधिकांश भागों में होने से कुछ राहत मिलेगी। सूखे की आशंका फिरभी बनी रहेगी। आर्द्रा प्रवेश दिन मंगलवारका फल दैवज्ञोंने लिखा है-

मानोर्वेशःपृथ्वीसूनोर्वरिरौद्रेधिष्ण्येचेत्सात्।
शस्त्रघातात्पृथ्वीशानां निःसन्देहंमृत्युस्तदा॥

इस वर्ष देश की नय्या रामभरोसे ही चलेगी। राजतन्त्र की निर्बलता सभी सीमाएें पार कर जायेगी। निरंकुश नरपिशाच कुकृत्यों में लगे रहेंगे।

प्राकृतिक आपदा, राजनीतिक, सामाजिक झगड़े-झमेले

२२ जून २०१० मंगलवार के दिन १० बजे सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होगा। 'दिवार्द्रा जलशोषकः' सूत्रानुसार वर्षमध्ये वर्षा की कमी रहेगी। अग्नितत्त्व की लग्न में उसी तत्त्व का मंगल ग्रह भयंकर सूखा पड़ने का संकेत है। सिंह लग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभय मुदीर्यते। धान्ये समर्घता मासषट्कंयावर्द्धनं महतम्॥ के अनुसार ६ मास तक तेजी चलेगी अथवा सस्ते की लाईन बनेगी।

मार्च २०१० के उत्तरार्ध में ग्रहचाल के हिसाब से भावों में घटा-बढ़ी कम ही होगी। जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥ ता.२० एवं २७ मार्च के आस-पास तीव्र वायुवेग के साथ हल्की वर्षा होगी, मौसम की प्रतिकूलता से चैत्र में संक्रामक रोग फैल सकते हैं। पिता-पुत्र के प्रतियोग में सत्तासीन दलों में अकल्पित उलटफेर सम्भव है। नेता भद्दा प्रदर्शन करने लगें तो आश्चर्य नहीं। प्रादेशिक सरकार, प्रभावी राजनेता संकटग्रस्त हो सकता है। इमारती सामान, मशीनरी, वाहन, श्रृंगारप्रसाधन, घी, तेल, दूध, दही, फल, फूल, सब्जियाँ और शेयर, सर्राफा, सट्टाबाजार में तेजी सम्भव है।

अप्रैल २०१० के पूर्वार्ध वैशाख कृष्ण पक्ष में बुध शुक्र का राशि संयोग पृथ्वी पर शुभ फलों का प्रादुर्भाव करेगा- बुध शुक्रो यदैकत्र तदेवैकार्णवा महिम्। सुभिक्षं सर्व धान्यानां धरण्यां सुख सम्पदाम्॥ पैदावार बढ़ने, कल कारखानों में उत्पादन वृद्धि से भावों में गिरावट दर्ज हो सकती है। इस सुयोग का प्रभाव २० अप्रैल तक रहेगा। ग्रहों के त्रिकोणात्मक योग में गर्मी बेतहासा पड़ेगी। बिजली पानी की कमी के कारण चौतरफा हो-हल्ला मचेगा। ता.१४ अप्रैल वैशाखी के आसन्न मेघगर्जन, विद्युत्पात, आंधी-तूफान, हल्की बूंदा-बांदी से कुछ राहत मिलेगी। नीच का मंगल किन्हीं देशों में राजविग्रह करा सकता है। देश के पश्चिम उत्तर सीमावर्ती क्षेत्रों में चौकसी बरतनी चाहिए। विदेशियों का देश में आवागमन श्रेष्ठ नहीं।

१५ से २८ अप्रैल प्र. वैशाख शुदी में वृष का शुक्र अच्छे फल करेगा- भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथ्वीतले। प्रधानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रहकारकम्॥ राजा-प्रजाजनों में सौहार्दपूर्ण मैत्री की भावना पनपेगी। राजनैतिक पार्टियों में कलह होगा। भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बुल्गारिया, मैक्सिको, लिथूनिया, सीरिया, हालैण्ड, स्काटलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका, अमेरिका और फ्रांस के लिए नीच का मंगल नेष्ट है। कब कहाँ किस किस्म के उपद्रव होने लगें कुछ नहीं कहा जा सकता। पदार्थों की कमी भाववृद्धि का कारण बनेगी। ता.२० व २८ अप्रैल के आसन्न आंधी-तूफान के साथ जहाँ-तहाँ हल्की वर्षा से गर्मी कुछ कम होगी।

मई से अक्टूबर २०१० तक शनि के प्रतियोग में मीन का गुरु चौतरफा भय-विषाद का कारण बनेगा। यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराः सर्वनद्योपि विनश्यंति चतुष्पदाम्॥ मई में गुरु अतिचारी तो शनि वक्री है, फल दैवज्ञों ने ऐसा लिखा है- अतीचार गते जीवे शनौ वक्रत्व भागते। हा! हा!! भूतं जगत्सर्वं रुण्ड-मुण्डा च मेदिनी॥ वसुन्धरा पर जहाँ-तहाँ रुण्ड-मुण्ड लुढकते फिरेंगे। ता.७ व १४ मई के आसन्न यत्र-तत्र बूंदा-बांदी का संयोग बनेगा। मरुस्थलों में धूलभरी आंधियाँ चलेंगी। दक्षिण भारत में गर्मी बेतहासा पड़ेगी। किंवा भयंकर अग्निकाण्ड, यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। पश्चिमी सीमा पर सावधानी बरतनी चाहिए। मई के उत्तरार्ध में वैशाख का शुक्ल पक्ष तेरह दिन का है। जिस वर्ष ऐसा होता है, उस वर्ष पृथ्वी नरमुण्डों की माला धारण करती है। विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की भी

खूब होती है। राजनैतिक उतार-चढ़ाव भी देखने को मिलते हैं।

२८ मई से १२ जून २०१० ज्येष्ठ बदी में ग्रहचाल का प्रभाव कुछ अच्छा रहेगा। पश्चिम के देशों में युद्धोत्पाती षड्यन्त्र रचा जायेगा। वक्र चाल चलते हुये, शनि मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की एकदम पलटा खाय॥ चल रहे सामयक भावों में फेरबदल होगा। किसी देश-प्रदेश की सरकार विघटन के कगार पर पहुँच सकती है। यत्र-तत्र बादलचाल, आंधी -तूफान के साथ मौसम खराब होगा। तापमान रिकार्डतोड़ बढ़ सकता है। ता.१३ से २६ जून ज्येष्ठ शुदी में चन्द्रग्रहण प्रभावी राजनेता के लिए नेष्ट है- क्रूर संयुक्त सूर्येन्दोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः। राष्ट्रभङ्गं इति प्राहुर्भ प्रजावै मुनीश्वराः॥ यद्यपि चन्द्रग्रहण देश के पूर्वीभाग तथा विदेशों में होगा, फिर भी देश के कर्णधारों को सचेत रहना चाहिए। किंवा पदार्थों की कमी से महंगाई बढ़ेगी। ता.१७ व २६ जून के आसन्न मौसम खराब होगा। मेघगर्जन, विद्युत्पात, आंधी -तूफान, बडम्बर के साथ हल्की वर्षा से राहत मिलेगी। ज्येष्ठ शुदी भावों में दो तरफा चाल चलेगी। शेयर, सर्राफा सट्टा बाजार में अधिक घटा-बढ़ी सम्भव है। जून के आखरी सप्ताह में देश के किसी भाग में हो-हल्ला मच सकता है। महानगरीय सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

जुलाई २०१० के पूर्वार्ध आषाढ़ वदी में सूर्यासन्न ग्रहों का जमघट सत्तारूढ़ पार्टी के लिए श्रेष्ठ नहीं- आगे पीछे बहुत ग्रह, रवि केतू आगार। राजनीति सह द्विन्द से होवै बहुत बिगार॥ अकल्पित उलटफेर की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। भावों में घट-बढ़ चलेगी। कहीं वर्षा होगी तो कहीं नहीं। दक्षिण पूर्व सम्भागों में मानसून की भारी वर्षा हो सकती है। ता.१२ से २६ जुलाई आषाढ़ शुदी में पाकिस्तान, नेपाल, चीन, श्रीलंका, बांग्लादेश में भारी विग्रह के योग बन रहे हैं। समसप्तक बहु ग्रह हों, अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट पावे अति, जनविग्रह का रंग॥ राजनेता एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास करेंगे। किंवा प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, भूस्खलन, बादलफाड़ वर्षा, भयंकर बाढ़ जानलेवा सिद्धि हो सकती है। सिंह राशि में बुध शुक्र के प्रभाव से भावों में घट-बढ़ चलेगी। जुलाई के आखरी सप्ताह में अतिवृष्टि, बाढ़, यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है।

अगस्त २०१० में विरोधी ग्रह प्रतियोग का फल- देवगुरु के सामने, जब चलते शुक्राचार। धर्मविरोधी मर मिटें, करते पापाचार॥ धार्मिक उन्माद के तहत मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरिजाघर आदि को लेकर दंगे-फसाद होंगे। राष्ट्र विरोधी ताकतें सक्रिय होने लगें तो आश्चर्य नहीं। प्रान्तीय सरकार तथा पड़ौसी देश के लिए समय सानुकूल नहीं। सीमाविवाद उभरकर सामने आयेगा। बाह्य ताकतें कश्मीर के संदर्भ में दबाव बनाने लगेंगी। कन्या राशि में त्रग्रही योग भावों में अकल्पित उलटफेर करायेगा। श्रावणे शुक्ल पक्षे च क्षीणाक्वापि तिथि र्भवेत्। तदावे कार्तिके मासि छत्रभङ्गःप्रजायते॥ कार्तिक में कोई सरकार लुढ़क सकती है। अगस्त के उत्तरार्ध श्रावण शुदी में भाव बदलते रहेंगे। शेयर सर्राफा, सट्टाबाजार गर्म रहेगा। भूकम्प, समुद्री तूफान, वर्षा, बाढ़ से भारी क्षति सम्भव है। ता.८ अगस्त शिवरात्रि के आसन्न चौकसी बरतनी चाहिए।

१ सितम्बर २०१० श्रीकृष्णजन्माष्टमी तुला का शुक्र कहीं वैर-विरोध का कारण बनेगा, तो कहीं राजनैतिक सामाजिक वातावरण को सरस बनायेगा- यदा दैत्यगुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्॥ भादों के कृष्ण पक्ष में भाव वृद्धि को प्राप्त होंगे। सीमातिक्रमण क्षोभ को जन्म देगा। कश्मीर के मामले में सतर्कता बरतनी चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्तिपरिचर्चा मात्र लोकदिखावा ही जानें। ता.९ से २३ सितम्बर आकाश मेघाच्छांदित रहेगा। भादों शुदी में संक्रामक रोग फैल सकते हैं। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, साऊदीअरब, इराक, मिश्रगणराज्य आदि में अराजकता फैलेगी। आतंकी बौखलाहट किसी को निशाना बना सकती है। उदयास्तगतःशुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रियावृष्टिःशनैश्चरे॥ ता.१० व २३ सितम्बर के आसन्न अच्छी वर्षा हो सकती है। अन्तिम सप्ताह में शुभाशुभ फल समान घटित होंगे। वर्षा गतिरोध के साथ-साथ भाव वृद्धि को प्राप्त हो सकते हैं। अन्तरिक्ष में विस्मयकारी घटनाचक्र सम्भव है।

अक्टूबर २०१० आश्विन मास में अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में बड़ा हादसा सम्भव है। समसप्तक ग्रह योगों का फल- समसप्तक बहु ग्रह हों, अथवा एकहिसंग। प्रजा कष्ट पावे अति, जन विग्रह का रंग॥ युद्धोत्पात, भयातंक से दुःखित प्रजा पलायन करेगी। भारत, पाकिस्तान, रूस, चीन, नेपाल की राजनीति में उठापटक होगी। देश में बाह्यताकतों की दखलंदाजी क्षोभ का कारण बनेगी। सूर्य के साथ त्रग्रही योगका फल- एकराशौ गताह्येते सौम्य शुक्रदिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाःस्वल्पजलप्रदाः॥ आश्विन शुक्ल और कार्तिक कृष्ण पक्ष में महंगाई बेतहासा बढ़ सकती है। मौसम आमतौर पर साफ रहेगा। सुदूर दराज के पर्वतीय क्षेत्रों में झञ्झावात, दुर्दिन, हिमपात के कारण क्षति होगी। अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में सामाजिक दंगे-फसाद, आतंकी महोत्पात जानलेवा सिद्धि हो सकते हैं। तापमान में गिरावट आयेगी। शीतल मन्द सुगन्ध वायु मन को मोहित करेगी।

नवम्बर २०१० के आरम्भ में वक्री गुरु कुम्भ में प्रवेश करेगा, जिसका फल पूर्वाचार्यों ने ऐसा लिखा है- कुम्भ राशिगते जीवे करोति यदि वक्रताम्। आरोग्यं सर्वस्वस्थत्वं राज्ञांश्रीर्जय सम्भवः॥ देश देशान्तरों के कुछ भागों में सौख्य-समृद्धि बढ़ेगी, जनता सुख-शान्ति का अनुभव करेगी। ता.७ से २१ नवम्बर कार्तिक शुक्लपक्ष में- आगे पीछे बहुत ग्रह, रवि के भौम अगार। राजनीति सह द्विन्द से, होवे बहुत विगार॥ घिनौनी राजनीति के तहत नेताओं के इशारे पर उपद्रव के चलते भारी क्षति होगी। सीमाओं पर युद्ध के काले बादल मंडराने लगें तो आश्चर्य नहीं। चल रहे सामयक भावों में विशेष परिवर्तन नहीं होगा। ता.१७ देवउठान, ईदुलजुहा ईद के मौके पर विशेष चौकसी बरतनी चाहिए। ता.२१ में यत्र-तत्र बादलचाल मेघगर्जन वर्षा का संयोग बनेगा। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में भारी हिमपात, भूस्खलन, भूकम्पादि महोत्पात की आशंका जाननी चाहिए। धने मीने बुधो याति मारयति मृगान गजान्। प्रजा शाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा॥ पशु-पक्षी, जीव-जन्तुओं की क्षति होगी। धनु का मंगल महंगाई को बल देगा।

दिसम्बर २०१० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में- यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराःसर्वनद्योपि विनश्यन्ति चतुष्पदाम्॥ विश्व के किन्हीं देशों में अकाल जैसी असामान्य परिस्थितियाँ दुःख का कारण बनेंगी। इस मास में सूर्य के साथ बनने वाला चार ग्रह संयोग और अंगारक योग अति नेष्ट है। सीमाविवाद उभरकर सामने आयेगा। अग्निकाण्ड, आंधीतूफान, प्राकृतिक प्रकोप के कारण क्षति होगी। कश्मीर समस्या सिर चढ़कर बोलेगी। भावों में घट-बढ़ चलेगी। पर्वतीय प्रदेशों में भारी हिमपात से शीतलहर प्रभावित करेगी। दिल्ली के आसन्न राज्यों में हल्की बूंदा-बांदी का संयोग बनेगा। कोहरा छाया रहने से यातायात में व्यवधान होगा। राहुरंगारकश्चैकं राशिऋक्षगतौ तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिःप्रजायते॥ दिसम्बर के उत्तरार्ध पौष कृष्ण पक्ष में घी, तेल, किराना, शेयर, सर्राफा, मूंगफली, चाय, काफी, रूई, ऊन, मेवा, मिर्च-मसालों में तेजी होगी। पक्षान्तर्गत घामाछांई का संयोग बनेगा। मौसम खराब होगा। जहाँ-तहाँ ओले पड़ सकते हैं।

जनवरी २०११ पौष शुदी में गोचर का प्रभाव कुछ अच्छा रहेगा। जनता सुख शान्ति का अनुभव करेगी- बुधस्य पंचवाराःस्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥ ता.१४ मकर संक्रान्ति के आसन्न उच्च का मंगल राजनीति में भूचाल ला सकता है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, साऊदीअरब, अमेरिकादि में प्राकृतिक महोत्पात का कारण बनेगा। इस वर्ष कर्क और मकर दोनों संक्रान्तियाँ शुक्रवार में लगी हैं- करक मकर दो बहिन हैं, बैठे एकहि वार। कै परजा को पति मरै, कै पड़े अचिन्त्योकार॥ फलतः कोई राष्ट्रनायक संकटग्रस्त हो सकता है। किंवा वस्तुओं के अभाव, भयातंक के कारण भारी हो-हल्ला मचेगा। घी, तेल, मिर्च मसाले, मेवा, ऊनी-सूती वस्त्र, वाहन तथा मशीनरी के दामों में वृद्धि होगी। भारी मेघगर्जन, विद्युत्पात, हिमपात, तुषारपात होने से शीतलहर प्रभावित करेगी। अन्तरिक्ष में असम्भावी घटना तथा वाहन टकराव से क्षति सम्भव है। जनवरी के अन्तिम सप्ताह में वक्री होकर शनि युद्धोत्पाती षड्यन्त्र रचवायेगा।

फरवरी २०११ ता.४ से १८ माघ शुक्ल पक्ष में अतीचारी गुरु तथा वक्री शनि का फल- अतिचार गते जीवे शनौ वक्रत्व भागते। हा! हा!! भूतं जगत्सर्वं रुण्ड मुण्डा च मेदिनी॥ अतिनेष्ट है। चौतरफा हो-हल्ला मचेगा। किन्हीं दो देशों के बीच युद्धोत्पात शुरु होने लगे तो आश्चर्य नहीं। स्वदेश के प्रहरियों को सजग रहना चाहिए। श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, वर्मा, अफगानिस्तान, पाकिस्तान पर संकट गहरा सकता है। भाव घटते-बढ़ते रहेंगे। ता.६ व १८ फरवरी के आसन्न यत्र-तत्र बादलचाल, बिजली, गाज, हल्की वर्षा, किंवा ओलावृष्टि, हिमपात के कारण क्षति होगी। शीतलहर प्रभावित करेगी। ता.१९ फरवरी से १९ मार्च २०११ फाल्गुन में पांच शनिवारों का फल नेष्ट है- शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देशभङ्गश्च वह्निदाहो महार्घताः॥ इस योग के चलते प्रादेशिक सरकार लुढ़क सकती है। फाल्गुन वदी में मौसम की प्रतिकूलतावसात् खड़ी फसलों में क्षति होगी। तेजी का चक्र चलेगा। उपलवृष्टि, बर्फवारी, कोहरा के कारण यातायात, यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। विज्ञान के क्षेत्र मे नई उपलब्धि हो सकती है।

मार्च २०११ के पूर्वार्ध फाल्गुन शुक्ल पक्ष में मीन का बुध राजा-प्रजाजनों में परस्पर वैर-विरोध को बढ़ावा देगा। पशु-पक्षी, जीव-जन्तुओं की क्षति करेगा- घने मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान्। प्रजा शाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा॥ पश्चिम के देशों में युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च आदि को लेकर धार्मिक विवाद उग्र रूप धारण कर सकता है। ता.१९ मार्च होलिकादहन के आसन्न विशेष सावधान रहने की जरूरत है। सूर्य शनी सम सप्तक, राहु केतु केन्द्र। युद्ध कहीं पर होयगा, बन्दी बने नरेन्द्र॥ पक्षान्तर्गत मार्कीट का रुख नरम रहेगा। ता.११, १९, २०, २७ मार्च के आसन्न यत्र-तत्र बादलचाल, मेघगर्जन, बिजलीगाज के साथ बूंदा-बांदी होगी। जहाँ-तहाँ ओले पड़ सकते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में भारी हिमपात की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। उत्तरदिशा में भय व्याप्त रहेगा-- दिननाथेन्दु गुरुवः यदैकत्र समाश्रिता। उत्तरस्यां दिशिभयं प्रजाःक्रन्वन्तिनित्यशः॥ ता.२० मार्च से ३ अप्रैल २०११ चैत्र कृष्णपक्ष में बनने वाला चतुर्ग्रही योग किन्हीं देशों में तहलका मचवा सकता है। एक राशौ यदा यान्ति चत्वारःपंचखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वांरुधिरेण जलेन वा॥

तुष्टिकरण, भाई-भतीजावाद, जातिवाद के दलदल में फंसी देश की राजनीति

२२ मई २००९ शुक्रवार सायं साढ़े ६ बजे के आसन्न १६वीं लोकसभा विजयान्वित कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में बनने वाली सरकार में दूसरी बार डा. मनमोहन सिंह के प्रधानमन्त्री पद की शपथग्रहण समारोह की तत्कालीन वृश्चिक लग्न की कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। स्थिर संज्ञक लग्नमें होने वाले कार्य काफी समय तक टिके रहते हैं। लग्न पर सूर्य+बुध का प्रभाव सकुशल राजनीति में दक्षता प्राप्त कर ऐनकेन प्रकारेण सत्ता संचालन करते रहने का संकेत है।

आई कांग्रेस की प्रभाव राशियाँ मेष व मिथुन मानी गई हैं। इस वर्ष मेष का स्वामी मंगल राजा है, तो मिथुन का स्वामी बुध मन्त्री बना हुआ है। दोनों ग्रह २२ मई की कुण्डली में बलवान होकर बैठे हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि इस वर्ष में वर्त्तमान सरकार को कोई हिलाने वाला नहीं है। भले ही झंझावात क्यों न झेलने पड़ें। मनमोहनजी के असमर्थता जाहिर करने पर श्रीयुत राहुलजी को सत्ता संभालनी पड़ सकती है। प्रादेशिक चुनावों में आई कांग्रेस को अच्छी खासी सफलता मिलेगी। इस दल में अन्तर्कलह टूट-फूट का संयोग भी बनेगा। शनि की दृष्टि बृहस्पति, सूर्य तथा बुध पर पड़ रही है। श्रीमति सोनिया गांधीजी येन-केन-प्रकारेण दल का नेतृत्व करती रहेंगी। फिर भी इन्हें आस्तीन में छिपे भुजंगों से सचेत रहना चाहिए।

भारतीय जनता पार्टी- धनु राशि के प्रभावान्तर्गत है। सम्वत् २०६७ में धनु का स्वामी गुरु शनि के वेध में रहेगा, फलतः इस दल में नाटकीय परिवर्तन होंगे। फिर भी मीन में स्वगृही गुरु वर्षमध्ये सबलता प्रदान करेगा। किसी बड़े नेता का देहावसान पार्टीस्तर पर अखरेगा। मई

से अक्टूबर २०१० तक भा.ज.पा. में आश्चर्यजनक, अकल्पित उलटफेर होंगे। किसी प्रदेश में वर्चस्व बढ़ेगा तो किसी में घटेगा। शीर्षस्थ नेताओं ने सूझबूझ से काम लिया तो केन्द्रमें भागीदारी बढ़ सकती है। विघटनकारी तत्त्वोंसे सावधान रहें। दूसरे दलोंका अन्धा नुकरण न करते हुए आगे बढ़ें, अच्छा खासा लाभ होगा। इस वर्ष मीन में रहते हुए गुरु के इस पार्टी की जड़ें मजबूत होंगी। आम चुनाव में हर सम्भव सहयोग मिलेगा।

बहुजन समाजवादी पार्टी– की प्रभाव राशियाँ वृष और कुम्भ कही गई हैं। पार्टी की सुप्रीमो सुश्री मायावती की राशि सिंह में गुरु का वेध २०१० के जनवरी फरवरी मार्च और अप्रैल में रहेगा। शुभ ग्रह बृहस्पति दिसम्बर २००९ से इनकी तरक्की को बल देगा। मई २०१० से ६ मास पर्यन्त इन्हें पुनः अनेक तरह की राजनैतिक उलझनों का सामना करना पड़ेगा। सम्वत् २०६७ के आते-आते उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री पद का उत्तरदायित्व संभालने में सशक्त कोकर कामयाब रहेंगी। पार्टी सुप्रीमो नपे तुले कदमों से चलती रहीं, भीतरघात से बची रहीं, निजी सूझबूझ का खुलकर उपयोग करने में सफल रही तो इन्हें अच्छी खासी कामयाबी मिलेगी। दूसरी पार्टियों का विलय बहुजन समाजवादी पार्टी के लिये खतरनाक सिद्धि हो सकता है। २०१० में पार्टी नेतृत्व परिवर्तन का योग भी सबल बन रहा है। 'जगबौराइ राजपद पाए' इस सूत्र का भागीदार इन्हीं की पार्टी का कोई प्रभावी राजनेता बन सकता है।

राष्ट्रीय जनता दल– की प्रभाव राशि तुला है, जिसका स्वामी शुक्र सन् २०१० में खास प्रभावी नहीं है। श्री लालूप्रसाद यादव जी की राशि नायक मंगल वर्षारम्भ से ही नीच राशि में बलहीन चल रहा है। २०१० में मई तक इन्हें मुँह की खानी पड़ सकती है। इस अवधि में इन्हें राजनीतिक, सामाजिक तथा प्राकृतिक कठिनाइयों में से गुजरना पड़ेगा। पार्टी में विघटन उलटफेर से बचे रहना चाहिए।

समाजवादी पार्टी– के सुप्रीमो श्री मुलायमसिंह यादव की राश्यानुसार २०१० में ग्रहचाल पूरी तरह अनुकूल नहीं रहेगी। कन्यागत शनि इन्हें प्रभावित तो करेगा ही, पार्टी की राशि कुम्भ से आठवें स्थान में मानहानि का योग भी बनायेगा॥ समझौते के तहत चलना पार्टी के शीर्षस्थ नेताओं के लिए फायदे में रहेगा। आस्तीन के छिपे विषधरों से बचे रहने पर अच्छा खासा लाभ होगा।

मिलीजुली सरकार– को झटके तो लगेंगे, मगर सूझबूझ से काम लेने पर बड़ी कामयाबी हासिल होगी। नेतृत्वकर्त्ता बड़े दल को किसी ओछी विचार धारा वाले दल को अलग करना पड़ सकता है। अपस्वार्थ में संलिप्त नेता नीति को भले ही छोड़ दें, मगर सत्ता को छोडने के लिए सहज तैयार नहीं होंगे। देश की चिन्ता नहीं पेट की चिन्ता त्रस्त करेगी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वेभद्राणिपश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभागभवेत्॥

महापुरुषों के जन्मदिन

जयंती	तिथि		जयंती	तिथि	
डा. हेडगेवार जयंती	१६	मार्च	श्री विश्वेश्वरैया जयंती	१५	सित.
श्री गौत्तम जयंती	१६	"	बाबा रामदेव जयंती	१७	"
श्री झूलेलाल जयंती	१७	"	शहीद भगतसिंहजयंती	२८	"
सन्त पीपा जयंती	३०	"	श्री गांधीजी व शास्त्रीजीजयंती	२	अक्टू.
श्री बल्लभाचार्य जयंती	१०	अप्रैल	श्री अग्रसेन जयंती	८	"
डा. अम्बेडकर जयंती	१४	"	श्री माधवाचार्यजयंती	१७	"
श्री शुकदेव मुनि जयंती	१४	"	महर्षि बाल्मीक जयंती	२२	"
देवदामोदर तिथि असम	१५	"	सरदार पटेल जयंती	३१	"
बाबू कुंवरसिंहज. बिहार	२३	"	स्वा.रामतीर्थ जन्म+मोक्ष	५	नव.
कवि टैगोर जयंती	७	मई	पं.जवाहरलालनेहरु जयंती	१४	"
वीर शिवाजीजयंती	१५	"	कवि कालीदास जयंती	१८	"
आद्य श्रीशंकराचार्य जयंती	१८	"	वीर वैरागी जयंती	१९	"
भक्त सूरदास जयंती	१८	"	श्री निम्बार्काचार्य जयंती	२१	"
श्री रामानुजाचार्यजयंती	१९	"	बाबा सत्यसाई जयंती	२३	"
वीर सावरकर जयंती	२८	"	नरसी मेहता जयंती	१२	दिस.
देवर्षि नारद जयंती	२९	"	श्रीघालदास जयंती	१७	"
महाराणा प्रताप जयंती	१५	जून	श्रीदत्तात्रेय जयंती	२०	"
सन्त कबीर जयंती	२६	"	पं.म.मो.मालवीय जयंती	२५	"
अहिल्याबाई होल्करजयंती	२६	"	श्रीसुभाषचन्दबोस जयंती	२३	जन.
स्वा.कल्याणदेवनिर्वाण शुक्रताल	१३	जुला.	स्वाविवेकानन्द,रामानंदाचार्यज.	२५	"
सांई टेऊरामज.	१७	"	लाला लाजपतराय जयंती	२८	"
लोक. तिलकज., चन्द्रशेखरज.	२३	"	बाबा लालदयाल जयंती	५	फर.
स्वामी करपात्री जयंती	११	अग.	श्री देवनारायण जयंती	१०	"
कवि तुलसीदास जयंती	१६	"	श्री दीनबन्धु एण्डूयूजज.	१२	"
मदर टैरेसा जयंती	२७	"	श्री रामचरणस्नेही जयंती	१७	"
सन्त ज्ञानेश्वर जयंती	२	सित.	भक्त रविदास जयंती	१८	"
गुरु जम्भेश्वर जयंती	२	"	समर्थ गुरुरामदास जयंती	२६	"
डा. राधाकृष्ण जयंती	५	"	महर्षि दयानन्द जयंती	२७	"
सन्त सुथरेशाह जयंती	८	"	श्रीरामकृष्णपरमहंस जयंती	६	मार्च
स्वामी शिवानन्द जयंती	८	"	पं.लेखरामवीर तृतीया	८	"
गोविन्दवल्लभ पंतजयंती	९	"	संत दादूदयाल जयंती	१३	"
श्री विनोबाभावे जयंती	११	"	चैतन्य महाप्रभु जयंती	१९	"
महर्षि दधीच जयंती	१५	"	सन्त तुकाराम जयंती	२१	"

नाड़ीदोष और उसके परिहार

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रकम्।
गणकूटं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः॥

१ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४ योनि, ५ ग्रहमैत्री, ६ गणकूट, ७ राशिकूट और ८ नाड़ी। ये आठ प्रकार के कूट मेलापक में विचारणीय हैं। इनमें क्रमशः एक-एक गुण अधिक होते हुए अष्टकूटों का कुल योग ३६ होता है।

आठवाँ जो नाड़ीकूट है, यहाँ हम उसी पर विचार करते हैं।

आदि नाड़ी- अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ.फा., हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा और पू.भा.। ये ९ नक्षत्र आदि नाड़ी के हैं।

मध्य नाड़ी- भरणी, मृगशिर, पुष्य, पू.फा., चित्रा, अनुराधा, पू.षा., धनिष्ठा और उभा.। ये सभी ९ नक्षत्र मध्य नाड़ी के माने गये हैं।

अन्त्य नाड़ी- कृत्तिका, रोहिणी, श्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उ.षा., श्रवण और रेवती। ये ९नक्षत्र अन्त्य नाड़ी के हैं। निम्नचक्रसे आप स्पष्ट जान सकते हैं।

नाड़ी बोधक सर्पाकार चक्र

आदिनाड़ी	मध्यनाड़ी	अन्त्यनाड़ी
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
आर्द्रा	मृगशिर	रोहिणी
पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा
उ.फा.	पू.फा.	मघा
हस्त	चित्रा	स्वाती
ज्येष्ठा	अनुराधा	विशाखा
मूल	पू.षा.	उ.षा.
शतभिषा	धनिष्ठा	श्रवण
पू.भा.	उभा.	रेवती

उपरोक्त सर्पाकार चक्र में अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों को त्रिरावृत्ति में बांटकर आदि, मध्य, अन्त्य तीन नाड़ियों का उल्लेख ज्योतिष के लगभग सभी ग्रन्थों में मिलता है और इस सामान्य नियम से सभी परिचित हैं। किसी भी एक नाड़ी में वर-कन्या दोनों के नक्षत्र होने पर कहा जाता है कि इस सम्बन्ध में नाड़ी दोष अत्यन्त भयावह है।

दोनों में से किसी एक की मृत्यु हो जायेगी। सीधे शब्दों में पंचांग देखने वाले द्विजाचार्य बोल देते हैं, उनका इसमें दोष भी क्या है। इस संदर्भ में ज्योतिषीय ग्रन्थों में लिखा भी कुछ ऐसा ही है- **निधनं मध्यम नाड्यां दम्पत्यौर्नैव पार्श्वयोनाड्योः।** ज्योतिष प्रकाश के इस वाक्य में मध्य नाड़ी होने पर दोनों की मृत्यु लिखी है। अन्य मुहूर्त्तग्रन्थ व संहिताओं में तीनो नाड़ियों में कुछ न कुछ परेशानी होनी लिखी है।

निम्नलिखित 'वराह' व 'रत्नकोश' के वचनों पर ध्यान दीजिए-

आद्यैकनाड़ी कुरुते वियोगं मध्याख्यनाड्यामुभयोर्विनाश।
अन्त्या च वैद्यव्यमतीव दुःखं तस्माच्च तिस्त्रःपरिवर्जनीयाः॥

वर-कन्या के नक्षत्र आद्य नाड़ी में होने पर वियोग सहना पड़ता है, अर्थात् दोनों पति-पत्नी किन्हीं कारणवसात् कुछ समय तक अलग-अलग रहते हैं। मध्य नाड़ी में दोनों का विनाश होता है, अर्थात् दोनों की क्षति होती है। अन्त्य नाड़ी में वर-कन्या के नक्षत्र होने पर वैधव्यता (अधिकदुःख) उठाना पड़ता है। इसलिए तीनों का त्याग करना चाहिए।

सा मध्यनाड़ी पुरुषं निहन्ति तत्पार्श्वनाड़ी खलुकन्यकां तु।
आसन्न पर्यायसमागता चेद्वर्षेण साप्यन्तरिता त्रिवर्षैः॥

वशिष्ठजी के अनुसार वर-कन्या के मध्यनाड़ी में नक्षत्र होने पर पुरुष का विनाश और समीप की नाड़ी में कन्या का नाश होता है। और आसन्न पर्यायगत (अर्थात् अश्विनी आर्द्रा या रोहिणी आश्लेषा) में एक वर्ष में तथा एक नाड़ी में दोनों के दूर होने पर तीन वर्ष में फल की प्राप्ति होती है।

अग्रनाड़ी व्यधे भर्त्ता मध्यनाड़ी व्यधे द्वयम्।
पृष्ठनाड़ी व्यधे कन्या म्रियते नात्र संशयः॥

वर-कन्या के नाम नक्षत्र आदि नाड़ी में हो तो वर की हानि, मध्य नाड़ी होने पर दोनों की हानि और अन्त्य नाड़ी में आन पड़े तो कन्या की हानि हो इसमें संशय नहीं। यह रत्नकोश में लिखा है।

एकनाड़िवियोगश्च गुणैः सर्वैःसमन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योर्निधनप्रदः॥

ऋषि नारद ने कहा है कि मेलापक में वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक नाड़ी में हो तो त्याग करना चाहिए, चाहे सभी गुण क्यों न मिलते हों।

कुछ आचार्य आदि और अन्त्य नाड़ियाँ क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रों के लिए हानिकारक नहीं होती, ऐसा कहते हैं और ब्राह्मणों को तीनों नाड़ियाँ त्याज्य हैं। कुछ गौतमी नदी के दक्षिण सम्भागों में ही दोष माना जाए. ऐसा कहते हैं-

करग्रहे पृष्ठनाड्यो न निन्द्ये इति यद्वचः।
तत्क्षत्रियादि विषयं गौतमीयाम्यस्तथा॥

कश्यपजी का कहना है कि नाड़ी दोष सारस्वत, करहाट, कौंकण, चीन और बङ्ग देश को छोड़कर अन्यत्र नहीं मानना चाहिए।

सारस्वत-करहाट-कोंकण-चीन-बगेषु।
नाड़ीवेधश्चिन्त्यः पाणिग्रहे न चान्यत्रैवः॥

कुछ आचार्यों का कहना है कि नाड़ी दोष ब्राह्मणोंको, वर्ण दोष क्षत्रियों को, गण दोष वैश्योंको और योनि दोष शूद्रोंके लिए मान्य है। यथा-

नाड़ी दोषोऽस्ति विप्राणां वर्णदोषोऽस्ति भूभुजाम्।
वैश्यानां गणदोषःस्यात् शूद्राणां योनिदूषणम्॥

नाड़ी दोष के सन्दर्भ में परिहार वाक्य भी बहुत मिलते हैं- **'एकनक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'** शीघ्रबोध के इस वाक्य से स्पष्ट है कि एक नक्षत्र में वर-कन्या दोनों का जन्म हो तो उन्हें नाड़ी दोष नहीं लगता। इसका विरोध दूसरे आचार्य इस तरह करते हैं-

एक गृहसम्भवानां भवति विवाहः सुतार्थसम्पत्त्यै।
यद्युभयोरेकर्क्षं भवति तदा चांशको भिन्न भिन्नः॥
दाम्पत्योरेकनक्षत्रे भिन्नपादे शुभावहम्।
दाम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥

एक नक्षत्र में जन्म होने पर दोनों के नाम अलग-अलग चरणों में पड़ते हो तो शुभ अन्यथा वर-कन्या में किसी का वर्षान्त तक मरण हो। **नक्षत्रैके पादभेदे शुभं स्यात्।** यह मुहूर्त्त चिन्तामणिकार का सूत्र भी बहुत प्रचलित है।

एक नाड़ी विवाहश्च गुणैः सर्वैः समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योर्निधनं यतः॥

श्रीनारदजी के कथनानुसार उपयुक्त गुण मिलने पर भी एक नाड़ी के विवाह को प्रयत्नपूर्वक वर्जित कर दें, अन्यथा दम्पत्ति निर्धन रहते हैं।

रोहिण्यार्द्रा- मृगेन्द्राग्नि-पुष्य-श्रवण पौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्ष मैत्रेषां नाडी दोषो न विद्यते॥

रोहिणी, आर्द्रा, मृग., विशाखा, पुष्य, श्रवण, रेवती, उत्तराभाद्रपद। इन आठ नक्षत्रों में जिसका जन्म होता है, उसे नाड़ी दोष नहीं लगता। इसी सन्दर्भ में मुहूर्त्त चिन्तामणि ग्रन्थ में एक पद्य और मिलता है।

रोहिण्यार्द्रामघेन्द्राग्नी तिष्य श्रवण पौष्णभम्।
उत्तरा प्रोष्ठपाच्चेव नक्षत्रैक्येऽपि शोभनम्॥

इन दोनों में नक्षत्रनाम का भेद है। वैसे दोनों ही पद्य आमतौर पर कहे जाते हैं। यह बात अलग है कि प्राचीन मूल ग्रन्थों में इनका उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन हैं तो सही।

नाड़ी दोष के सन्दर्भ- **सारस्वत-करहाट...नाडीदोषोऽस्ति विप्राणां...** यह वाक्य सही प्रतीत नहीं होते, क्योंकि ज्योतिषशास्त्र की रचना किसी एक समाज, प्रदेश या देश, धर्म, जाति अथवा समुदाय विशेष के लिए नहीं हुई, वह तो सार्वभौम जगत् के कल्याणार्थ हुई है।

सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने ज्योतिषशास्त्र की रचना की थी, जिससे संसार में सभी प्राणियों के श्रौत (याज्ञादिकर्म) स्मार्त्त (उपनयन विवाहादि) कार्य सुचारुरूप से सही हो सकें-

विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्त्तं कर्म न सिद्ध्यति।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा॥

नाड़ी वर्ण, गण और योनि दोष तो राशियों की वर्ण व्यवस्था पर लागू होते हैं, न कि सामाजिक वर्ण व्यवस्था पर।

कर्कमीनालयो विप्राः सिंहो मेषो धनुर्नृपाः।
कन्यावृषमृगावैश्याःशूद्रा युग्मतुलाघटाः॥

कर्क, मीन, वृश्चिक ये तीन राशियाँ ब्राह्मण वर्ण की हैं, ऐसे ही मेष, सिंह, धनु ये क्षत्रिय वर्ण की कही गई हैं। कन्या, वृष, मकर वैश्य वर्ण की और मिथुन, तुला, कुम्भ शूद्रवर्ण की मानी गई हैं।

नाड़ीदोषोऽस्ति विप्राणां- इस पद्य के गूढ़ रहस्य को न समझते हुए मानव जातियों के ऊपर आरोपित कर दिया गया है। वस्तुतः यह नियम राशियों की वर्ण व्यवस्था पर लागू होता है। जैसे- ब्राह्मण वर्ण की कर्क, वृश्चिक, मीन ये तीन राशियाँ जो ऊपर लिखी हैं, इनमें विहित नाम नक्षत्र वालों पर विशेष रूप से नाड़ी दोष मान्य होगा, शेष राशियों पर नहीं। इस पर सभी विद्वान द्विजाचार्य गम्भीरतापूर्वक विचार करें। अब आपका ध्यान नाड़ी दोष की सूक्ष्मता पर आकर्षित करते हैं। जैसाकि ज्योतिष के प्रणेता पूर्वाचार्योंने दिव्यदृष्टि से निरीक्षण करके लिखा है। नाड़ी नक्षत्र सर्पाकार में होने के कारण श्रीपति लिखते हैं-

नाड्यस्तिस्त्रो न्यस्त निःशेषधिष्ण्याः त्रिभ्यश्चाश्वादिभ्य प्रसूताः।
सर्पाकारस्तत्र नाड़ी समाजः नक्षत्राणामेकराशिस्पृशां स्यात्॥

गतपृष्ठ के चक्र में आदि मध्य अन्त्य जो तीन नाड़ियाँ लिखी हैं, उनमें पड़ने वाले २७ नक्षत्र सर्प की आकृति में हैं। जैसेः- टेढ़ा-मेढ़ा सर्प चलता है, उसी प्रकार नक्षत्र रखे गये हैं। कश्यपजी एक नाड़ी में विहित किन्हीं दो नक्षत्रोंमें अलग-अलग वर-कन्या का जन्म नाम नक्षत्र होने पर मृत्युकारक बतलाते हैं।

रेखास्तिस्त्रो विरच्याशु दस्त्रभाद्यानि विन्यसेत्।
एक रेखास्थयो मृत्युःर्दम्पत्यो जन्मधिष्ण्ययो॥

नाड़ी दोष को नाड़ी वेध भी कहा गया है। नाड़ी की सीध में पड़ने वाले सभी नक्षत्रवेध युक्त कहे गये हैं। विवाह में वर्णित पंचशलाका वेध अभिजित्सहित २८ नक्षत्रों में सीधा-सीधा विभाजित् करके लिखा है। ध्यान रहे- नाड़ी वेध में अभिजित की गणना नहीं होती। तीनों नाड़ियों के चार-चार भाग होने की वजह से इसे द्वादश नाड़ी वेध भी कहा जाता है। नरपति जयाचार्य ग्रन्थ में वर्णित द्वादश नाड़ीचक्र विगत पृष्ठ पर दिया है-

वेधो द्वादशनाडीभिः कर्तव्य पन्नगाकृतौ।

ध्यान दीजिए- सर्पाकार नाड़ीचक्रमें किसी एक नाड़ीमें आने वाले नक्षत्र चरणवेध आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन आदिकम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥ नियमानुसार विद्ध होने पर ही दोषावह माने जाते हैं, अन्यथा नहीं।

☆ आदि नाड़ी ☆

सर्पाकार चक्र में आदि नाड़ी के अश्विनी, आर्द्रा, उ.फा. ज्येष्ठा और शतभिषा में परस्पर चरण वेध हो रहा है। इसी तरह आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, मूल और पू.भा. इन पांचों नक्षत्रोंमें चरण नियमेन वेध पूरा-पूरा हो रहा है, जिसे ज्योतिष की दृष्टि से दोषकारक माना गया है।

अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, मूल, पूभा. ये हैं तो आदि नाड़ी के, लेकिन चरण भेद से आपस में विद्ध नहीं हैं। ऐसे ही आर्द्रा, उ.फा., ज्येष्ठा और शतभिषा भी परस्पर वेध रहित होने के कारण दोष मुक्त कहे जा सकते हैं।

आदि नाड़ी पादवेध ज्ञानार्थ चक्रम्

आदि नाड़ी	अश्वि.१	आर्द्रा४	पुन.१	उफा.४	हस्त१	ज्ये.४	मूल१	शत.४	पूभा.१
	२	३	२	३	२	३	२	३	२
	३	२	३	२	३	२	३	२	३
	४	१	४	१	४	१	४	१	४

आदि नाड़ी के अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, मूल, पू.भा., इन पांच नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में लड़का अथवा लड़की का जन्म हुआ हो, उनमें नाड़ीदोष नहीं माना जाना चाहिए। उपरोक्त चक्र से स्पष्ट जान सकते हैं। यदि नाड़ीपाद वेध को गम्भीरतापूर्वक विचारकर सभी विद्वान निर्णय करें, तो इस भयावह दोष से अर्धाधिक मुक्ति मिल जायेगी। **यथो भाशव्ययश्चैवं जायते वर-कन्ययोः। तयोर्मृत्युर्नसंदेहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥** यह वाक्य (नरपतिजयाचार्या) का तभी सत्य सिद्धि होगा, जब इसे सभी स्वीकार करने लगें।

☆ मध्य नाड़ी ☆

मध्य नाड़ी में भरणी, मृगशिर, पू.फा., अनुराधा और धनिष्ठा का चरण नियमेन परस्पर वेध हो रहा है। ऐसे ही मृगशिर, पुष्य, चित्रा, पूषा. और उ.भा. का वेध हो रहा है। वेधरहित नक्षत्र भरणी, पुष्य, चित्रा, पूषा. और उ.भा., मृगशिर, पू.फा., अनुराधा और धनिष्ठा हैं, ऊपर गिनाये गये सभी नक्षत्र हैं तो मध्यनाड़ी के लेकिन कम दोषावह माने जाएंगे, क्योंकि परस्पर चरण नियमेन विद्ध नहीं हैं। निम्नचक्र से स्पष्ट जान लें।

मध्य नाड़ी पादवेध ज्ञानार्थ चक्रम्

मध्य नाड़ी	भर.१	मृग.४	पुष्य१	पूफा.४	चि.१	अनु.४	पूषा.१	धनि.४	उभा.१
	२	३	२	३	२	३	२	३	२
	३	२	३	२	३	२	३	२	३
	४	१	४	१	४	१	४	१	४

☆ अन्त्य नाड़ी ☆

अन्त्य नाड़ी चक्र में कृत्तिका, रोहिणी, मघा, विशाखा और श्रवण नक्षत्र का चरण नियमेन परस्पर वेध हो रहा है। ऐसे ही रोहिणी, आश्लेषा, स्वाती, उषा. और रेवती का परस्पर वेध हो रहा है। इनमें जन्म लेने वाले जातकों को नाड़ीदोष कहा जा सकता है। वेधरहित नक्षत्र- कृत्तिका, आश्लेषा, स्वाती, उ.षा. और रेवती हैं। ऐसे ही- रोहिणी, मघा, विशाखा और श्रवण हैं, जो कि नाड़ीदोष की भयावहता से मुक्त कहे जा सकते हैं। नीचे लिखे चक्र से अच्छी तरह समझ सकते हैं।

अन्त्य नाड़ी पादवेध ज्ञानार्थ चक्रम्

अन्त्य नाड़ी	कृत्ति.१	रोहि.४	श्ले.१	मघा४	स्वा.१	विशा.४	उषा.१	श्रव.४	रेव.१
	२	३	२	३	२	३	२	३	२
	३	२	३	२	३	२	३	२	३
	४	१	४	१	४	१	४	१	४

नाड़ीदोष के परिहार वाक्य

वर-कन्या की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक होते हुए राशियाँ अलग-अलग हों तो आचार्य बृहस्पतिके अनुसार नाड़ीदोष मान्यनहींहोता-

एकराशौ पृथग्धिष्ण्ये पृथग्राशौ तथैक भे।
गणं नाड़ीं नृदूरं ग्रहवैरं न चिन्तयेत्॥

मुहूर्त्त चिन्तामणि में लिखा है दोनों की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हो तथा नक्षत्र एक होते हुए राशियाँ अलग-अलग हों तो नाड़ी दोष एवं गण दोष मान्य नहीं होता। यदि वर-कन्या का जन्मनक्षत्र एक हो उसके अलग-अलग चरणों में जन्म हुआ हो तब तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है-

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोःस्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥

किसी एक नाड़ी के नक्षत्रों में भले ही जन्म क्यों न हुआ हो, दोष तो तभी मान्य होगा, जब नक्षत्र चरण नियमेन परस्पर एक-दूसरे से विद्ध होंगे। पादवेध न हो तो एक नाड़ीमें पड़ने वाले नक्षत्रोंमें भी दोष नहीं माना जाता है। तभी किसी आचार्य ने लिखा है-

'एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते'

यह परिहार वाक्य स्वतः सिद्धि है, क्योंकि किसी भी एक नक्षत्र में जन्म होने पर वेध या पादवेध का विचार तो हो ही नहीं सकता।

मुहूर्त्तचिन्तामणि के विवाहप्रकरण में लिखा है कि नाड़ीदोष शान्ति हेतु मृत्युञ्जय मन्त्र का सविधि जाप सुयोग्य द्विजाचार्य से तर्पण, पूजन, रुद्राभिषेक दक्षिण में सोना या सुनार के हाथ से निर्मित कोई चीज अथवा सोने से सींग मढ़े हुए सवत्सा गो का दान, अन्न वस्त्रादि का दान सभी दोषों का हरण करके सुख प्रदान करता है।

दोषापनुत्तये नाड्यामृत्युञ्जयजपादिकम्। विधाय ब्राह्मणांश्चैवं तर्पयेत्काञ्चनादिना॥
हिरण्यमयी दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके। गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वदोषपहारकम्॥

विदुषामनुचरः पं. प्रेमपाल कौशिक ज्योतिषाचार्य

सामूहिक व्यापार भविष्य संवत् 2067

श्री गुरुचरणों की वन्दना करते हुए पिता श्री ओंकार प्रसाद जी को नमनकर व्यापारियों के हितार्थ सामूहिक रूप से हाजिर व वायदा वस्तुओं पर तेजीमन्दी परिलेख कर रहा हूँ। आशा है व्यापारी बन्धु लाभान्वित होंगे।

सम्वत् २०६७ में राजा मंगल, मन्त्री बुध, सस्येश शुक्र, धान्येश गुरु, मेघेश भौम, रसेश रवि, नीरसेश शुक्र, फलेशचन्द्र, धनेश गुरु, दुर्गेशचन्द्र आकाशीय काउंसिल का कार्यसंचालन करेंगे। प्रजा पर सख्ती, वर्षा की खेंचतान, जनता पर टैक्स की मार, देशभक्ति में कमी, शत्रुप्रकोप, दुर्गभेद की हलचल होगी। कुलमिलाकर तेजी का रुख कायम रहेगा।

चैत्र शुक्लपक्ष १६ से ३० मार्च व्यापार भविष्य

इस पक्ष में ३ मंगलवार व्यापारिक वस्तुओं में तेजी को बढ़ावा देंगे। ता.२७ मार्च तक बुधास्त मन्दीकारक है। विशेष रूप से गेंहू, चना, बाजरा, क्रूडआयल, मेंथा, जूट, पाट, वारदाना, कॉपर, जिंक, लैड, निकिल के भाव पड़े रह सकते हैं। लौहपदार्थो में तेजी का ट्रेंड रहेगा। वायदा मार्केटों में १७ मार्च को विशेष रूप से सोना, चांदी, तांबा, क्रूडआयल, जिंक, लैड, ग्वार, चना, गुड़, जूट के ता.१६ के बने ऊंचे भाव से जिस वस्तु के भाव कटे, तब उसी वस्तु में ४ दिन तूफानी तेजी की चाल चलेगी। सरसों, सोयाबीन व तेल के वायदा मार्केटों में जोरदार तेजी १७ से १९ मार्च तक चलेगी। अगर १७ मार्च को १६ के बने नीचे भाव से मार्केट ५० पैसे से ऊपर टूट जाए तब मन्दी जाननी चाहिए। काले रंग की वस्तुएं लोहा, सरिया, उरद, लौंग, इलायची, कालीमिर्च आदि के भावों में पंचमी से विपरीति रुख बनेगा। ता.२७ से ३० मार्च जोरदार तेजी का प्रभाव गुड़, खांड, चीनी, चावल, चांदी, कपूर, ग्वार, जीरा, अजवायन के हाजिर मार्केटों पर पड़ेगा। वायदा मार्कीटों में अष्टमी तक जो चाल चले तब उसके विपरीत नौमी से पूर्णिमा तक जानें। हल्दी, खल, बिनौला, सरसों, ग्वार, चना, गुड़, कोपर, सोना, तांबा, जिंक में विशेष चाल चलेगी। अष्टमी में नवमी के लिए दुतरफा बोली भी लगानी चाहिए।

प्र.वैशाख ३१मार्च से २८अप्रैल व्यापार भविष्य

प्र.वैशाख वदी में एक ही हानि नौमी की वृद्धि हो रही है। माह में पांच मंगल एवं पांच बुधवार हैं। मंगलवारों का प्रभाव हाजिर मार्केटों पर विशेष तेजी का होगा। बुधवारों का समान रहेगा। कुलमिलाकर स्थिति तेजी में रहेगी। फसल की वस्तुओं का स्टाक करना, ज्वार, बाजरा, गेंहू, चना स्टॉक से फायदा उठाना। आलू फलों का दो माह में लाभ होगा। पांच मंगलवार साइलेंट मोड़ में है। वैशाख वदी २ रेवती में सूर्य प्रवेश जोरदार चाल देने वाला होगा। सोना, चांदी, रूई, कपास, तांबा, सरसों, चना, गुड़, चीनी, गेंहू के भावों में तेजी की चाल दो माह में ही बनेगी। पिछले मास की सुपीरियर चाल प्र. वैशाख मास में चलेगी। व्यापारियों को चेतावनी है कि जिन वस्तुओंमें पिछले संवत् तेजी बन चुकी है, उनका इस वर्ष स्टाक न करें। ता.१४ अप्रैल की मेषसंक्रांति कपास, रूई, गुड़, खांड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, तेल, सोना, चांदी, जिंक, लैड, कोपर, नारियल, सुपारी के भावों में तेजी और गेंहू, चना, मटर, बाजरा, जौं, उरद, अरहर, मूंग, धान में मन्दीकारक है। यह चाल पहले वैशाख में रहेगी। इस माह वायदा मार्केटों में जोरदार चांस है। ता.१४ अप्रैल को सरसों, सोयाबीन, गुड, धनिया, जीरा, हल्दी, सोना, चांदी, तांबा, जिंक, लैड, क्रूडआयल, वायदामार्केटों में खरीदकर सप्ताह से पहले ही मोटा लाभ उठाया जा सकता है। नोट- संक्रांति दिन १३ अप्रैल के बने भाव ऊपर लिखित जिन वस्तुओं के टूट जाएं उसी में मन्दी सप्ताहान्त तक चलेगी।

प्र.वैशाख शुदी ६ बुधास्त गेंहू, जौं, चना, रूई, कपास, सूत, सन, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जिंक, लैड, क्रूड, आयल के दामों में मन्दी का ट्रेंड बनायेगा। वृष का शुक्र रूई, कपास में अच्छी मन्दी लायेगा। धान्यों में तेजी को बल देगा। सोना, चांदी में घटा-बढ़ी करके तेजी करेगा। कुछ वस्तुओं में दुतरफा चाल चलेगी। १५ से २० अप्रैल के बीच बने हाइएस्ट भाव से बाद में मार्कीट बढ़ेगा ७ मई तक। उपरोक्त चांस का प्रभाव जीरा, धनिया, मेंथा, आयल, उरद, मूंग, मसूर, मोंठ के हाजिर व वायदा मार्केटों पर भी पड़ेगा। १४ अप्रैल से गुड़, खांड, चीनी, तिल, तेल, सोयाबीन, सरसों, क्रूड, पामआयल, अलसी, तिल के भावों पर तेजी का असर रहेगा। वायदा व्यापारियों के लिए २४ अप्रैल १० बजे से सोना, चांदी, गुड, निकिल, कोपर, जिंक, रूई, कपास, खल, बिनौला, क्रूडआयल, चना, ग्वार, खरीदकर ४ दिन में मोटा लाभ कमाने का चांस बनेगा। अगर २४ अप्रैल को २३ के बने भाव से मार्केट टूट जाए तब मन्दी उसमें चार दिन चलेगी।

द्वि.वैशाख २९ अप्रैल से २७ मई व्यापारभविष्य

माह पांच गुरुवार वदी में द्वादशी की वृद्धि शुदी में एकम चतुर्दशी का क्षयः विषम परिस्थिति का संकेत तेजीकारक है। गुरुवार मन्दीकारक है। व्यापार में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। वदी में वक्री बुध के प्रभाव से जौं, गुड, खांड, घी, तेल, तिल, सरसों, में मन्दी चांदी में विशेष मन्दी जानें। नोट- ३० अपैल को २९ के भाव टूटें, तब मंदी नहीं होगी। मन्दी चलने पर ७ मई तक रहेगी। मीन का गुरु हल्दी, सोना, मूंग, पीली वस्तुओं में तेजी करेगा। ता.७ मई दोपहर बाद दुतरफा गली लगानी लाभप्रद रहेगी। अमावस्या वृष संक्रांति विशेष तेजीकारक है। सरसों, तिल, तेल, घी के भावों में मन्दी होकर तेजी माह के अन्त में बनेगी। गेंहू, गुड, खांड, शक्कर, उरद, मोंठ, नारियल, सुपारी का स्टाक तीन माह तक आपको लाभ देगा।

द्वि.वैशाख शुदी में लोहा व काले रंग की वस्तुऐं, आयरन, स्टील के स्क्रेप में विशेष तेजी की चाल २५ मई तक चलेगी। ता.२६ मई सोना, चांदी, तांबा, पीतल, निकिल, जिंक, लालमिर्च, गुड, खांड, शक्कर, रूई, अलसी के भावों में विशेष तेजी ड़ेढ माह तक करेगा। वायदा वस्तुओं में धमाके दार चांस हैं। लिखित वस्तुऐं खरीदें और नेचुरल गैस, क्रूड आयल, कालीमिर्च, चना लेकर सप्ताह में लाभ उठा लेवें। २६ मई को २५ के बने नीचे भाव जिस वस्तु में टूट जाएं तब उसी में मन्दी जानकर व्यापार करें। तेजी के लिए विपरीति जानें। मन्दी में चीजों का स्टाक करना चाहिए।

ज्येष्ठमास २८ मई से २६जून व्यापार भविष्य

इस माह में पांच शुक्रवार तथा शनिवार हैं व्यापारिक

वस्तुओं में घट-बढ़ के साथ मन्दी का रुझान बनेगा। मन्दी के रिएक्शन आने पर खरीदकर तेजी आने पर लाभ उठाना चाहिए। कुल मिलाकर स्थिति तेजीकारक ही होगी। ज्येष्ठ बादी तीज को शनि का मार्गी होना रसपदार्थों, सरसों, तिल, तेल, कर्पूर, सोयाबीन, अलसी, सोयातेल के हाजिर व वायदा मार्केटों में मन्दीकारक है। कालीमिर्च, जीरा, लोहा, जिंक, लैड में मंदी होगी। यह चाल पन्द्रह दिन में अपना प्रभाव दिखयेगी। ४ जून को कृत्तिका में बुध गुड़, खांड, चावल, चना व धान्यों में तेजी को बढ़ायेगा। ज्येष्ठ वदी द्वादशी को कर्क में शुक्र से गुड़, खांड, शक्कर, घी, तेल, सरसों, सोयाबीन में अच्छी तेजी ज्येष्ठ मास में चलती रहेगी। ता.१० जून को ९ के बने ऊंचे भाव से जिस हाजिर या वायदा वस्तु में भाव न बढ़ें और ९ जून के बने नीचे भाव से टूट जाएें, तब तुरन्त बेचकर एक सप्ताह में ही मोटा लाभ उठाया जा सकता है। गुड़, सरसों, सोयाबीन, ग्वार, चना, सोयातेल, लोहा, सोना, चांदी, तांबा, क्रूडआयल, नेचुरलगैस, आलू, गेंहू, जिंक के वायदा में विशेष ध्यान रखें। यदि ऊंचे भाव कटें, तब ही तेजी का व्यापार भी करें।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में लाल-काले रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी का चक्र चलेगा। साथ ही रूई, कपास, पाट, वारदाना, सूत, रेशम, लोहा, सरसों, गुड़, खांड, चीनी, तिल, तेल, घी, उरद, मूंग, चावल, गेंहू, चना, अरहर, मोंठ के भावों में विशेष तेजी का प्रभाव बनेगा। इनमें अच्छी तेजी २२ दिन में ही आ लेगी। मंगल गुरु का षडाष्टक योग पीले रंग के पदार्थों में तूफानी तेजी का बिगुल बजायेगा। ज्येष्ठ शुदी पंचमी को बुधास्त विशेष तेजीकारक है। यह तेजी रूई, सूत, कपास, गेंहू, जौं, चना, मटर, मूंग, मोठ, सोना, चांदी, पाट, हैसियन, वारदाना, गुड़ के भावों होगी। ता.१४ जून से १७ के बीच बने लोएस्ट भाव से १७ जून को या बाद में जिस ऊपर लिखी वस्तु के भाव टूट जाएं, तब उसी में विशेष मन्दी ज्येष्ठ मास में ही चल पड़ेगी। १४-१५ जून विशेष मंदी बाद में चाल पलट जायेगी। ता.१४ व १५ जून में तेजी रह जाय तब तो १६ से १८ तक विशेष मंदी चलेगी। निफ्टी में १४ से १५ जून में तेजी होकर १६ से १८ में मंदी होगी। विपरीत में विपरीत चाल चलेगी। २३ जून से सोना, चांदी, रूई, खल, बिनौला में जोरदार मंदी १८ दिन चलेगी। ता.१८ जून को प्रातः १९ के लिए रूई, कपास, जूट, पाट, वारदाना, सोना, चांदी, गुड़, चना, तांबा में दुतरफा गली लगाना लाभ देगा।

आषाढ़मास २७जून से २६जुलाई तक व्यापारभविष्य

इस माह में पांच रविवार व सोमवार हैं। २९ जून तक इंफीरियर लाईन चलकर बाद में चाल पलट जायेगी। कुल मिलाकर सुपीरियर लाइन चालू हो जायेगी। यहीं से अधिकांश वायदा व हाजिर मार्केट भी पलटी खा जायेंगे। सुपीरियर लाइन के प्रभाव से मंदी का प्रभाव बढ़ जायेगा। जिन वस्तुओं में ता. २९ जून तक जोरदार तेजी आई हो, उनमें बेचकर ही काम करें। उछाले को देखकर धनी तेजी में न आयें, बल्कि विपरीत व्यापार करके लाभ उठाया जा सकता है। विशेष रूप से सोना, चांदी, तांबा, जिंक, लैड, निकिल, लोहा, चना, कालीमिर्च, जीरा, धनिया, लालमिर्च, गुड, चीनी, ग्वार के वायदा मार्केटों में ता.२९ जून तक बने ऊंचे भाव से ऊपर की स्टापलास लगाकर ऊंचे भाव के आसपास बिकवाली करना लाभप्रद होगा। २९ जून से ता.९ जुलाई तक जोरदार मन्दी की चाल चलने की धारणा है। हालांकि ता.३० जून से ४ दिन में ही मोटा लाभ प्राप्त होने के चांस हैं। ५ जुलाई सिंह में शुक्र से सोना, चांदी, तांबा, गेंहू, जौं, चना, लालमिर्च, मजीठ में तेजीकारक है। १० जुलाई को बुधोदय ६ मास तक व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी का कारक है।

आषाढ़शुदी में चन्द्रदर्शन तेजीकारक है, लेकिन गुड़, खांड, चीनी, शक्कर के भाव सम रहेंगे। गेंहू, जौं, चना, मटर, उरद, मूंग, मोंठ के भावों में मंदी का प्रभाव बनेगा। वायदा मार्केटों में यहाँ विशेष चाल सम्भव होगी। १४ जुलाई से सोना, हल्दी, पीतल, गेंहू, जौं, पीलेरंग के पदार्थों में तूफानी तेजी की चाल चलेगी। ग्वार, सरसों, सोयाबीन, निफ्टी, लोहा, लाल-कालीमिर्च, जीरा, धनिया में मंदी की चाल सप्ताहान्त तक चलने की धारणा है। अगर १४ जुला. को १३ के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाए, तब खरीदकर तीन दिन में ही लाभ उठायें। इसी प्रकार अगर १४ जुला. को ता.१३ के बने नीचे भाव जिस वस्तु के टूट जाए तब बेचो और मन्दी ही रहे तब आगे एक सप्ताह में लाभ उठायें। १६ जुला. की शाम को दुतरफा गली सोना, चांदी, तांबा, लोहा, हल्दी, गुड, सोयाबीन, अरन्डी, क्रूड-पाम आयल, खल, बिनौला, कपास में लगाना लाभप्रद होगा। ता.२० जुलाई कन्या का मंगल विशेष व तूफानी चाल देगा। रूई, सूत, पाट, वारदाना, हैसियन, लालमिर्च, सोना, चांदी, तांबा, निकिल, जिंक, अलसी के भावों में तेजीकारक है। अगर ये वस्तुएं मन्दी में नीचे स्तर पर मिले तब स्टाक कर डेढ माह में मोटा लाभ संभव है। सूर्य १४ से १९ जुलाई वर्गोत्तम में चलेंगे, जिसके प्रभाव से तूफानी चाल मणि, मोती, तांबा, सोना, रेशम, धान्य, कड़वी वस्तुएं, आयुधनिर्माण में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ, यूरेनियम, सरसों, सोयाबीन, लालरंग की सभी वस्तुएं विशेष तेजी पकडेंगी। ता.२३ जुलाई को वक्री गुरु गुड, चीनी, शक्कर, चावल, पाट, वारदाना, सरसों, अलसी, अरन्डी, रूई, कपास, नमक, घी, तेल, सोयाबीन के भावों में जोरदार तेजी लम्बी चलने की धारणा है। अतः नीचे भाव मिलने पर स्टाक करके तीन माह में मोटा लाभ उठा लेवें।

श्रावणमास २७ जुलाई से २४अगस्त व्यापारभविष्य

श्रावण में पांच मंगलवार तूफानी तेजीकारक हैं। सरसों, सोयाबीन, तिल, तेल, घी, सोना, चांदी, तांबा, अरण्डी, अलसी, पामआयल, गुड़, खांड, चीनी, रूई, कपास के भावों में तेजी चलने की धारणा है। श्रावण वदी छठ रविवार को कन्या का शुक्र गेंहू, जौं, चना, बाजरा, गुड, खांड, ऊनीवस्त्रों में विशेष तेजीकारक है। अतः ऊन का स्टाक आगामी सीजन के लिए नीचे स्तर के भावों पर करें। ता.२८ जुलाई से सरसों, सोयातेल, ग्वार, चना, जूट, सोना, चांदी, तांबा, क्रूडआयल, मेंथा, नेचूरल गैस में विशेष तेजी ता.३० तक चलेगी। ३१ जुलाई से ४ अगस्त तक जोरदार मन्दी होगी। जिस वस्तु में ता.२८ को २७ के बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाए तब मन्दी का चांस ३० जुलाई तक समझना। ता.३१ को ३० जुलाई के बने ऊंचे भाव से मार्केट के बढ़ने पर तेजी का चांस ४अगस्त तक समझकर व्यापार करें।

श्रावण शुदी प्रतिपदा क्षयः तेजी की चाल में आग में घी का काम करेगी। हस्तनक्षत्रमें शुक्र चांदी, रूई, कपास, धान,

चावल के भावों में मन्दी करेगा। सोना के भाव घट-बढ़ के साथ साधारण तेजी में चलेंगे। गुड, खांड में घटा-बढ़ी होगी। श्रावण शुदी सप्तमी को सिंह संक्रांति भावों में अधिक उठापटक नहीं करेगी। गेंहू, जौं, चना, ग्वार, बाजरा में नरमी होगी। सोना, चांदी, शेयर मार्केट, निफ्टी के भाव विशेष तेज होने की धारणा है। गुड़, खांड, रूई, तांबा, सरसों, सोयातेल, हीरा, नीलम, पुखराज आदि रत्नों में तेजी की चाल चलेगी। श्रावण शुदी दोज बुधवारी तूफानी तेजीकारक है। विशेषरूप से गुड़, खांड, सोना, चांदी, सोयातेल, सरसों, अरण्डी, क्रूड पाम आयल, घी, ग्वार, चना, खलबिनौला, जीरा, कालीमिर्च, हल्दी के भावों में ११ अगस्त से जोरदार तेजी १६ अगस्त तक चलेगी। अगर ११ अगस्त को ता.१० के बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाए तब मन्दी की धारणा बनाकर उसी वस्तु में एक सप्ताह में लाभ उठा लेना। साथ ही ता.११ अगस्त को १२ के लिए दुतरफा गली लगाना लाभप्रद होगा।

भाद्रपद २५अगस्त से २३सित. तक व्यापारभविष्य

भाद्रपद में पांच बुधवार, पांच गुरुवार हैं, जो बहुधा वस्तुओं में मन्दी का संकेत देते हैं। भादों वदी दशमी तक सुपीरियर लाइन चलकर बाद में इंफीरियर लाइन चलेगी। यह इंफीरियर लाइन धमाके के साथ पिछली चाल को पलट देगी। खासतौर से वायदा वस्तुओं में चाल पलट जायेगी। अर्थात् ता.४ सितम्बर के बाद से जिन वस्तुओं में तेजी चली आ रही हो, उनमें मन्दी और जिन वस्तुओं में मन्दी चली आ रही हो, उनमें तेजी चल पड़ेगी। एटमबम चांस- ता.६सित. से रूई, कपास, खलबिनौला, सूत, उरद, मूंग, गुड, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जिंक, लैड, जूट, पाट, मूंगफली, सोयातेल, सरसों, क्रूडआयल, गेंहू, चना के वायदा मार्केटों में तूफानी तेजी का चांस सम्पन्न होगा। साथ में यह विशेष ध्यान रखें कि जिस वस्तु में ता.६सित.को ४ सित. के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे, उसी में तूफानी मन्दी की चाल भादों शुदी दोज तक चलेगी और जिस वस्तु में भी ता.६ को ता.४ सित. के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा, तब उसी वस्तु में तेजी बन जायेगी। अतः मन्दी का चक्र चले तब लम्बी मन्दी भी खिंच सकती है। इस वर्ष जन्माष्टमी रोहिणी नक्षत्र का होना शुभ है। गेंहू, ग्वार, ज्वार, बाजरा, जौं, सोंठ, जीरा, धनिया, कालीमिर्च, दाख, हल्दी, गुड, तिल, तेल का स्टाक करके लाभ होगा। बदी अष्टमी से दो दिन में भाव नरम रहे तब स्टाक न करना। वदी तृतीया को बुधास्त होना तूफानी चाल देने वाला होगा। यहाँ पर ता.२८ अगस्त से रूई, पाट, जूट, क्रूडआयल, कापर, सोना, चांदी, गुड, तांबा, जिंक तेज होंगे। ता.२८ अगस्त को २७ के बने ऊंचे भाव से मार्केट न बढ़े और नीचे बने भाव से टूट जाएं तब नरमी का चांस ही ४ सितम्बर तक चलेगा।

भाद्रपद शुदी में दोज को बुधोदय तिथियों का घटना-बढ़ना पहले मन्दी होकर तेजी का सूचक है, अतः जो वस्तु पक्ष के प्रारम्भ में मन्दी हो उसमें तेजी का दौर आरम्भ होगा। धारणा- भाद्रपद शुदी चतुर्थी से हाजिर व वायदा में लोहा, ऐंगल, सरिया, जूट, जीरा, धनिया, सरसों, सोयाबीन, सोना, चांदी, कापर, निकिल, नेचुरलगैस के मार्केटों में तेजी होगी। जिस वस्तु के ता.१०सित. को बने नीचे भाव से मार्केट ता.११ को टूट जाएं, उनमें मन्दी की चाल चलेगी। यह चाल भाद्रपद माह के अन्त तक चलने की धारणा है। ता.१६ सितम्बर कन्या संक्रान्ति के प्रभाव से सेंसेक्स, निफ्टी, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, सरसों, तिल, तेल, अरण्डी, सोयाबीन, नारियल, सुपारी, काजू, अखरोट, बादाम, किशमिश, गोला, सूत, वस्त्रों के भावों में मन्दी की चाल एक माह चलने की धारणा है। शनि का अस्त होना उपरोक्त के विपरीत प्रभावकारी है। विशेषरूप से सोना, चांदी, शेयरमार्केट, गेंहू, जौं, चना, मटर, उरद, मूंग, बाजरा, मोंठ, ज्वार, ग्वार, रूई, अरन्डी, जूट, पाट, वारदाना में तेजी घट-बढ़ के साथ चलने की धारणा बनेगी। ता.११ सित.से १६ के बीच बने लोएस्ट भाव से ता.१७ को या बाद में मार्केट टूट जाए तब मन्दी की धारणा बनकर २३ सित. तक व्यापार करें। ता.१७ सित. को रूई, कपास, चांदी, सोना, गुड, हल्दी, जूट में दुतरफा गली लगाएं।

आश्विन २४सित.से २३अक्टू.तक व्यापारभविष्य

आश्विन में पांच शुक्रवार व्यापारिक तथा रस पदार्थों में मन्दीकारक हैं। पांच शनिवार तेजी के प्रभाव को बढ़ाने वाले हैं। निष्कर्षरूप में मन्दी का प्रभाव ही रहेगा, क्योंकि गुरु मंगल का षडाष्टक योग शनि सूर्य का गुरु के साथ समसप्तक योग विशेष मन्दी को प्रोत्साहन देगा। आश्विन बदी चतुर्थी हस्त में सूर्य से जौं, गेंहू, चना, गुड, खांड, सूत, जूट, हल्दी, कपास, रूई, जीरा, धनिया में तेजीकारक है। ता.३०सित. कन्या में बुध तूफानी मन्दीकारक हैं। मूंग, ज्वार, मटर, अरहर, चना, उरद, वनस्पति, हरे रंग की वस्तु, सरसों, तिल, तेल, सोयाबीन, धनिया, जीरा, मटर, ऊन, चमड़ा, कालानमक, सोना, लालरंगके पदार्थ, चिकने पदार्थ, गेंहू आदि के भाव मन्दी में चलेंगे। रूई, गुड़, खांड, कपास, चांदी में भी नरमी रहने की धारणा है। गेंहू, जौं, चना, मटर, धान्यों तथा गुड, खांड, चीनी में विशेष मन्दीकारक योग है। यह मन्दी पूरे महीने चलेगी। वायदा वस्तुओं पर मन्दी का भयंकर प्रभाव देखने में आयेगा।

ता.१ अक्टू.से २२ तक जोरदार मन्दी सोना, चांदी, रूई, कपास, गुड, खांड, चीनी, जिंक, लैड, क्रूडआयल, जीरा, धनिया, कालीमिर्च, हल्दी, जूट, पाट, वारदाना, में भी चलेगी। जिस वायदा मार्केट में ता.१अक्टू. से ३०सित. के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा, तब उसी में तेजी ता.५ अक्टू. तक चलेगी। बाद में ता.५ व ६ के बीच बने हाईस्ट भाव से जिस वस्तु के भाव बढ़ जाऐं उसमें खरीदकर ता. ८ अक्टू. तक व्यापार करें। आश्विन शुदी दशमी रविवार तुला में सूर्य से गेंहू, जौं, चना अनाजों के भावों में जोरदार तेजी होगी। सोना में भी तेजी का धारणा बनेगी। सुपारी, लालचन्दन, नारियल, गोला के भाव भी तेज होंगे। अगर ता. १८ अक्टू. को १६ के बने ऊंचे भाव क्रास हो जाएं तब तेजी ही स्थौर जानना। नीचे भाव कटने पर मन्दी की चाल ही चलती रहेगी। ता.१९ वृश्चिक में मंगल सोना, चांदी, रूई, कपास में तेजीकारक है। ता.१९ अक्टू. शनि उदय वायदा मार्केटों में भारी उथल-पुथल कारक है। उरद, सरसों, अलसी, अरन्ड, तिल, तेल, सोया, गुड, चीनी तेजी होगी। शेयर में जोरदार तेजी अगले माह में प्रवेश कर जायेगी। वायदा वस्तुओं में जिंक, लैड, निकिल, सोना, चांदी, कापर, ग्वार, हल्दी में ता.२० अक्टू. की चालू चाल ता.२१

अक्टू. तक चलेगी। अगर ता.२० अक्टू.को १९ के बने भाव ऊंचे से मार्केट बढ़ेगा तब पक्की तेजी २९ तक चलेगी। ता. २०अक्टू. को २१ की दुतरफा गली लगाना।

कार्तिक २४ अक्टू. से २१ नव. व्यापारभविष्य

कार्तिक वदी प्रतिपदा स्वाती में सूर्य ता.१ नव. को कुम्भ में गुरु का प्रवेश ता.४ को वृश्चिक मे बुध, ता.७ बुध उदय, ता.१६ को वृश्चिक संक्रांति का लगना, ता.२० को गुरु मार्गी होना विशेष ग्रह परिवर्तन के योग हैं। कार्तिक में प्रथम पक्ष मन्दीकारक व द्वितीय पक्ष विशेष तेजीकारक रहेंगे। वदी में स्वाती का सूर्य सोना, चांदी, रूई, सूत, कपास, खल, बिनौला, गुड, खांड, सुपारी, मिर्च, सरसों, राई, हींग, अलसी के भावों में तेजीकारक है। जिस वस्तु के भाव ता. २४ से बढ़ें व २३ अक्टू. के बीच बने लोएस्ट भाव से ता. २५ को या बाद में टूटेगा उसी में पूरे वदी पक्ष में मन्दीकारक होगा। पंचमी गुरुवारी आर्द्रा नक्षत्र युक्त होने से पशुचारा के भावों में तेजी होगी। धान्यों के भाव मन्दे होंगे। कार्तिक वदी त्रयोदशी को गेंहू, जौं, चना, बाजरा, घी, सरसों, तिल, सोयाबीन, सोयातेल, तिल में मन्दी की चाल जारी रहेगी। सोना, चांदी में स्थिरता रहने की धारणा है। वायदा मार्केटों में ता.२ नव. के बाद तूफानी चाल बनेगी। खासतौर से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, क्रूडआयल, जिंक, निफ्टीशेयर्स, सोयातेल, सरसों, सोयाबीन, जीरा, ग्वार में विशेष मन्दी की चाल सप्ताहभर चलेगी। इसमें विशेष है कि जिस वायदा मार्केट में ता.३ नव. को ता.२ के बने ऊंचेभाव से मार्केट बढ़ जाए तब उसी में तेजी का चांस बन जायेगा। साथही ता. ३ को ता.२ के बन्द भाव से ऊपर ही भाव बन्द हों तब चाल पक्की तेजी की ही जानना।

कार्तिक शुदी में जोरदार तेजी के योग हैं। ता.८ नव. से १२ तक जोरदार तेजी होगी, जिस वस्तु में ता.६ नव. तक मन्दी चली होगी, उसी में ८ नव. से १२ तक तेजी होकर ता.१३ से चांदी, चावल, रूई, कपास, सूत, सन, बिनौला, पाट, गुड, खांड, चीनी व सफेद रंग की वस्तुओं में तेजी की चाल चलेगी। ता.१३ नव. को १२ के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाए तब तेजी का चांस ता.१६ नव. तक सम्पन्न होगा। विपरीत में विपरीत चाल ही समझनी चाहिए। कार्तिक शुदी दशमी मंगलवार वृश्चिक संक्रांति से भावों में स्थिरता रहेगी। सोना, चांदी, तांबा, रूई, ऊनीवस्त्र, सरसों, सोयाबीन में तेजी होगी। लालमिर्च, लालचन्दन, लाल फल-फूल व वस्तुओं में मन्दी का रुख बनेगा। ता.१३ नव. को १४ के लिए दुतरफा गली लगानी लाभप्रद होगी।

मार्गशीर्ष २२ नव. से २१ दिस. तक व्यापारभविष्य

मार्गशीर्ष में पांच सोमवार तथा पांच मंगलवार हैं। भावों में दुतरफा चाल चलेगी। वदी दोज से चाल विशेष रूप से लोहा, सरिया, कालीमिर्च, जीरा, ग्वार, सरसों, सोयाबीन, जिंक, लैड, क्रूडआयल, चमड़े का सामान, दाख, धनिया, जूट, बारदाना के भावों में ता.२४ नवम्बर से चलेगा। यहाँ पर चाल जोरदार तेजी की १ दिस. तक होगी। अगर २४ नव. को ता. २३ के बने ऊंचे भाव से मार्केट न बढ़े और नीचे भाव टूटें तब न स्टाक करें न ही वायदा वस्तु खरीदें, अपितु डबल बेचान करके लाभ उठायें। २९ नव. से धान्य, भूसा, पशुचारा, जड़ व मूलपदार्थ, गुड़, रूई, कपास, खांड, तांबा, सोना, चांदी, सूत, सन, बिनौला, सरसों, गेंहू, चना के भावों में तेजी की धारणा है। किन्तु ता.२५ नव. से २८ नव. के बीच बने लोएस्ट भाव से ता.२८ में टूट जाऐं और नीचा बन्द हो तब मार्गशीर्ष मास में मन्दी की चाल चलेगी। संकेत- इस पीरियड में गुरु शुक्र का नवपंचम योग मंदीकारक है। मार्गशीर्ष वदी त्रयोदशी में गेंहू, गुड़, खांड, चीनी, कपूर, नमक, नारियल, सुपारी में तेजी होगी। रूई, कपास के भावों में आगामी ६ मास में ही भाव ड्योढ़े या दोगुने तक बनने की धारणा है। अतः नीचे स्तरों पर स्टाक करके व्यापारी बंधु लाभ उठा सकते हैं।

मार्गशीर्ष शुदी दोज को चन्द्रदर्शन वायदा मार्केटों में भारी उठापटक करेगा। अतः ता.८ दिस. से रूई, कपास, खल-बिनौला, गेंहू, गुड़, खांड, चीनी, सोना, चांदी, तांबा, चना, क्रूडआयल खरीदें और सप्ताहभर में ही लाभ उठायें। अगर ता.८ दिस. को ता.७ के बने नीचे भाव किसी वस्तु में टूटें, तब डबल बेचकर लाभ उठाना चाहिए। ता.१४ दिस. बुधास्त से वायदा मार्केटों में तूफानी तेजी की चाल चलेगी। यहाँ पर १०० तेज तो ५० मन्दी भी लगायें। ता.१६ धनुसंक्रांति से सोना, चांदी, कपास, तेल, सरसों, सोयाबीन के भाव तेज होंगे और अनाजों में मन्दी चलेगी।

पौष २२ दिस. से १९ जन.२०११ तक व्यापारभविष्य

पौषमास सुभिक्षकारक है। बाजार भाव समानान्तर चलते रहेंगे। इन्फीरियर लाइन माह के प्रारम्भ से अन्त तक चलेगी, जो मार्गशीर्ष की त्रयोदशी से प्रारम्भ हुई है। यह इन्फीरियर लाइन तिलहनों में भारी उठापटक करती है। खास तौर से सरसों, सोयाबीन, अलसी, अरन्डी, मूंगफली, घी, तिल, तेल के भावों में जोरदार तेजी बनाती है। माह के प्रारम्भ से पंचमी तक रहेगी। रूई, कपास, सूत, सन, चांदी, सोना, गुड, खांड में तूफानी तेजी और अनाज भी विशेष तेजी की ओर बढ़ेंगे। ता.२५ दिस. बुधोदय के प्रभाव से दुतरफा गली फलेंगी। पौष वदी द्वादशी को वृश्चिक में शुक्र गेंहू, जौं, चना, ग्वार, उरद, मूंग, मोठ के भावों में मन्दी करेगा। ता.१ जन. के बने नीचे भाव से ता.३ को टूटेंगे अन्यथा मन्दी नहीं होगा।

पौष शुदी प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन मामूली घट-बढ़ कारक हैं। ८ जनवरी धनु में बुध और मकर में मंगल का प्रवेश होगा। यह हल्दी, सोना में चल रही तेजी को ब्रेक लगा देगा और भाव मन्दी की ओर चलने लगेंगे। तब भी अगर ये वस्तुएं ता. १० जन. को ता.९ के बने ऊंचे भाव काटकर बढें, तब तेजी ही आगे बढ़ेगी। पौष शुदी नवमी १४ जनवरी मकर संक्रांति का प्रभाव १५ जनवरी से पड़ेगा। रूई, कपास, सूत, गुड, खांड, अलसी, घी, तेल तेजी पर जायेंगे। धान्य तथा सोना, चांदी, शेयरमार्केट, जूट, पाट, बारदाना में मन्दी का प्रभाव बनेगा। वायदा मार्केटों में ता.५ जन. की चालू चाल ७ तक चलकर ता.८ जन. से पुनः पलटेगी और ता.११ या १२ जन. तक चलकर बाद में एक बार पुनःपलटेगी, जो मकर संक्रांति तक चलती रहेगी। पौष शुदी त्रयोदशी का क्षयः धातुओं में जोरदार तेजी करेगा। क्रूडआयल, कापर, जिंक, लैड में मन्दी होगी। अगर ता.१९ जन. को ता.१८ के बने नीचे भाव टूटें तब मन्दी अगले माह में प्रवेश कर जायेगी।

माघ २० जन. से १८ फर.२०११ व्यापारभविष्य

माघ मास में पांच गुरुवार व शुक्रवार होंगे, जो व्यापारिक वस्तुओं में नरमी का वातावरण बनायेंगे। इस माह पोस्तदाना,

मेंथी, बादाम, छुहारा, काजू का स्टाक निकालना लाभप्रद होगा। माघ बदी २ श्रवण में भौम से रूई में घट-बढ़ के साथ तेजी, धान्यों में मन्दी का प्रभाव बढ़ेगा। सोना तथा चांदी में साधारण मन्दी होगी। गेंहू, जौं, चना के भावों में वृद्धि होगी। ता.२४ जन. को मंगल के साथ सूर्य अपने अधिकार की वस्तुओं में भारी तेजीकारक होंगे। पन्द्रह दिन में ही तूफानी तेजी भी आयेगी। ता.२७ जन. वक्री शनि दुर्भिक्षकारक है। गेंहू, मूंग, मोंठ, ग्वार, मटर, अरहर, अलसी, गुड, खांड, शक्कर, उरद, हरे रंग की वस्तुओं में जोरदार तेजी करेगा। इनमें संवत के अंत तक तेजी चलने की धारणा है। माघ वदी एकादशी धनु में शुक्र का प्रवेश रूई, कपास, सूत, गेंहू, जौं, चना, सोना, चांदी, तांबा के भावों में तेजीकारक होगा।

माघ शुदी में प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन विशेष मन्दी को बल देगा। ता.७ फरवरी को बुधास्त से अधिकांश वायदा व हाजिर वस्तुओं में मन्दी का बोलबाला होगा। गुड, खांड, चीनी, शक्कर, जूट, पाट, गेंहू, चना, जौं, मटर, सोना, चांदी में मन्दी की लम्बी चाल चलेगी। रूई, कपास में भी मन्दी होगी। कापर, क्रूड, जिंक में घट-बढ़ होगी। ८ फर. को ता.७ के बने ऊंचे भाव से जिस वस्तु के भाव बढ़ जायें, उसी में तूफानी तेजी का योग जानना। ता.९ को भी ऊंचे भाव ता.८ के बने, बढ़ें तब तेजी पक्की समझ लेना। यहाँ वायदा वस्तुओं में दुतरफा गली भी लगाना। माघ शुदी दशमी में कुम्भ संक्रांति अन्न, रूई, जूट, पाट, गुड, चीनी के भावों में नरमीकारक है। तेल, सरसों, अलसी, अरन्डी, सोयाबीन के भावों में तेजी का रुख रहेगा, अतः इन वस्तुओं के नीचे भाव मिलने पर स्टॉक करके लाभ उठाया जा सकता है। वायदा मार्केटों में भी ऊपर लिखे अनुरूप ही व्यापार करें। माघ शुदी द्वादशी को मंगल कुम्भ में प्रवेश के प्रभाव से जोरदार तेजी, लोहा, सरिया, कालीमिर्च, जीरा, धनिया, लोंग, दालचीनी, पीपल के भावों में होगी। अनाज, सोना, गुड, खांड में घट-बढ़ के साथ तेजी होगी, जो ता.१६फर. से प्रारम्भ होगी। रूई, चांदी के भावों में घटा-बढ़ी के साथ तेजी का रुख बनेगा। वायदा मार्केटों में तूफानी तेजी भी चलेगी। नेचुरल गैस, क्रूडआयल, जिंक, लैड, कापर में विशेष तेजी बन सकती है। जिस वस्तु में ता.१६ फर. को ता.१५ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे और नीचा ही बन्द हो उसी में तूफानी मन्दी का चक्र भी चलेगा। वायदा वस्तुओं में दुतरफा गली लगाना भी लाभप्रद होगा। माघ शुदी पूर्णिमा को कुंभ में बुध से रूई, गुड, खांड, तिल, तेल में मन्दीकारक है। लेकिन जिस वस्तु में ता.१९ फर. को १८ के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा, तब तेजीकारक ही आगे चलेगा।

फाल्गुन १९ फर. से १९ मार्च व्यापार भविष्य

फाल्गुन में चार शनिवारों का होना तेजी का सूचक है, लेकिन वदी प्रतिपदा को पूफा.नक्षत्र सुभिक्षकारक है, अतः समय के अनुरुप व्यापार करना ही लाभप्रद होगा। फाल्गुन वदी दूज का क्षयः होना विशेष रूप से मन्दी को ही बल देने वाला होगा। ध्यान रखें कि जिस वस्तु में ता.२१ फर. को १९ के बने ऊंचे भाव क्रास हों तब तेजी की चाल दस दिन की चलेगी। मकर का शुक्र २५ फर. से रूई, चांदी के भावों में घट-बढ़ के साथ तेजी की चाल देना वाला होगा। गुड, खांड, घी, गेंहू, जौं, चना, मटर के भावों में अच्छी वृद्धि होगी। अगर ता.२५ को ता.२४ के बन्द भाव से मार्केट नीचा ही बन्द होवे तब नरमी ही आगे चलेगी।

फाल्गुन शुदी दोज मीन में बुध और रविवार में चन्द्रदर्शन तेजी का सूचक है। रूई में जोरदार तेजी होगी। सोना, चांदी में पहले तेजी बाद में उसी के अनुरुप मन्दी होगी। सरसों, तिल, तेल, सोयाबीन, सोयातेल, हल्दी तेज होंगे। गेंहू, जौं, चना, गुड, खांड में मन्दी की चाल चलने की धारणा है। कापर, निकिल, लैड में जोरदार तेजी होगी। अगर जिस वस्तु में ता. ७ मार्च को ता.५ के बने नीचे भाव टूटें तब उसी में मन्दी का श्रीगणेश बारह दिन तक होगा। ता.११ मार्च बुधोदय मन्दी की चाल को तेजी में बदल देगा। ता.१२ मार्च से गेंहू, जौं, चना, ग्वार, ज्वार, बाजरा, गुड, खल-बिनौला, रूई, कपास, सूत, सोयातेल में तेजी का प्रभाव विशेष रूप से वायदा वस्तुओं पर होगा। जिस वायदा वस्तु में ता.१२ मार्च को ११ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे तब उसी वस्तु में मन्दी की चाल बनेगी जो ता.१८ मार्च तक चलेगी। फाल्गुन शुदी नवमी को मीन में सूर्य से अन्नादि के भावों में पहले तेजी बाद में मन्दी का रुख बनेगा। रूई, कपास, सूतीवस्त्र, बिनौला, सोना, चांदी, गुड, खांड, अलसी, तिल, तेल, सरसों में विशेष तेजी की चाल चलने की धारणा है। अतः हर मन्दी के रिएक्शन में खरीदकर बढ़ भाव से बेचते हुए व्यापार करें।

चैत्रमास २० मार्च से व्यापार भविष्य

चैत्र वदी में तीन रविवार तेजी के सूचक हैं। षष्ठी तिथि का क्षयः मन्दी का संकेत है।, चैत्र वदी तीज को कुम्भ में शुक्र से रूई, गेंहू, चना, उरद, मूंग, ज्वार, बाजरा, गुड़, खांड व सफेद वस्तुओं में मन्दीकारक है। पक्का प्रभाव तभी दिखायेगी जबकि ता.२३ मार्च को ता.२२ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेंगे। निफ्टी तथा शेयरबाजार तेज होंगे। अगले वर्ष शेयरों में विशेष तेजी देखने में आयेगी। षष्ठीक्षयः और नवमी की वृद्धि होना तेजीकारक है। अतः ता.२४ को घाटे में खरीदकर २८ तक लाभ उठाना श्रेष्ठ होगा। २५ मार्च मीन में भौम से जोरदार तेजीकारक सोना, चांदी, रूई, घास, भूसा, लकडी की वस्तुऐं तेज होंगी। जिंक, लैड, पीतल, तांबा आदि धातु तथा गेंहू, जौं, चना के भाव भी वृद्धि को प्राप्त होंगे। गुड, खांड, सरसों, सोयातेल, घी के भावों में मन्दी की चाल चलेगी। अगर चैत्र वदी अष्टमी को चैत्र वदी सप्तमी के बने नीचे भाव से मार्केट न टूटे और ऊंचे बने भाव से मार्केट बढ़ जाए तो तेजी की जोरदार चाल चार दिन की अवश्य चलेगी। ता.२७ मार्च को गुरु अस्त से तेजीकारक है। ता.१ अप्रैल को बुधास्त का होना धमाकेदार तेजी को बल देगा और यह तेजी अगले सम्वत् में प्रवेश करेगी। विशेषरूप से रूई, चांदी, सोना, तांबा, क्रूडआयल, नेचुरलगैस, गुड, चीनी, गेंहू, चना, जीरा, धनिया के भावों में भारी तेजी चैत्र शुदी त्रयोदशी तक चलेगी। जिस हाजिर या वायदा वस्तु में ता.२ अप्रैल को ता. १ के बने नीचे भाव से मार्केट टूट जाए तब उसी वस्तु में मन्दी की चाल जोरदार चलेगी।

हाजिर व वायदा वस्तुओं के अनमोल चांस एकवर्ष प्रति वस्तु १५००/- ६ मास के लिए ८००/- एकवस्तु एक माह ६०१/- एन.सी.डी.ई.एक्स तथा एम.सी.एक्स तथा निफ्टी वायदा की ग्रहचाल के आधार पर प्रतिदिन की प्रीडिक्शन की दक्षिणा १८००/- प्रतिमाह है। श्री विश्वबन्धुशर्मा

२१/२२ ब्रह्मानान पो. हापुड़ -२४५१०१ उ.प्र.
फोन नं. ०१२२२९५३१३८, ०१२२२३१२२३८
मो. ०९८३७२७९८२३, ०९४१२५७३८९५

श्री कृष्ण जन्माष्टमीव्रत-वैष्णव मत

श्री मथुरेश पदंनत्वा जन्माष्टम्याः व्रतं हरे।
सिद्धान्तंवैष्णवानां हि लिख्यते धर्मशास्त्रतः॥

श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मार्त्त व वैष्णवों के व्रत निर्णायक मूल वचन भेद से प्रायः दो दिन होता है। स्मार्त्तमत से जन्माष्टमी प्रायः प्रथम दिन हो जाती है और वैष्णव मत से प्रायः दूसरे दिन होती है, क्योंकि स्मार्त्त मत से मध्य रात्रिमें अष्टमी का होना प्रधान तत्त्व है और वैष्णव मत से व्रत वाले दिन अष्टमी तिथि का सूर्योदय में होना ही प्रधान तत्त्व है।

स्मार्त्त मत से मुख्य ६ पक्ष बनते है, इनमें अष्टमी तिथि की निशीथ व्याप्ति, अव्याप्ति व रोहिणी नक्षत्र की स्थिति द्वारा श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत व श्रीकृष्णजयन्ती व्रत नाम से दो भेद और होते हैं। इस स्मार्त्त मत के निर्णय में प्रथम पक्ष के इतर सभी पक्षों में प्रायःवैष्णव व्रत निर्णयसे साम्य ही है। वैष्णवपक्ष में केवल तीन मत ही बनते हैं जो इस प्रकार हैं।

१. शुद्धा अष्टमी में- सूर्यउदय में व्याप्त अष्टमी वाले दिन व्रत होगा। (सूर्यउदय काल में सप्तमी न हो)

२. अष्टमी तिथि वृद्धि होने पर प्रथम दिन ही व्रत होगा। (पूर्णातिथि लेने से)

३. अष्टमी तिथि क्षयः होने पर द्वितीय दिन नवमी वाले दिन व्रत होगा। (सप्तमी युता सर्वथा निषिद्ध होने से)

वैष्णव मत के निर्णायक मूल वाक्य कुछ इस प्रकार हैं।

उदये चाष्टमी किञ्चित नवमी सकला यदि।
भवेत्तु बुध संयुक्ता प्राजा पत्यर्क्ष संयुता॥१॥
पूर्व विद्धाष्टमी यातु उदये नवमी दिने।
मुहुर्त्तमपि संयुक्ता सम्पूर्णा साअष्टमी भवेत्॥२॥
कला काष्ठा मुहुर्त्तापि यदा कृष्णाष्टमी तिथिः।
नवम्यां सैव ग्राह्यास्यात् सप्तमी संयुता न हि॥३॥

ये मूल वाक्य पद्म, स्कन्द, ब्रह्म, वैवर्त आदि पुराणों में हैं। जिनको माधव, हेमाद्रि, निर्णयसिन्धु, मदनरत्न, पुरुषार्थ चिन्तामणि, जयसिंहकल्पद्रुम, व्रतराज आदि ग्रन्थों में भी प्रमाण रूपेण उपस्थापित किया है। इन सभी मूल वाक्यों का सारार्थ सूर्य उदय व्यापिनी अष्टमी को व्रत निर्देश है।

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म अष्टमी तिथि की मध्य रात्रि में हुआ तो वैष्णव मध्यरात्रि व्यापिनी अष्टमी को महत्व न देकर सूर्य उदय व्यापिनी तिथि को ही महत्व क्यों देते हैं?

प्रत्येक व्रत में मुख्य तीन कार्य हैं, जिन तीनों का निर्णय तिथि सत्ता पर ही निर्भर है।

१. उपक्रम-

यो यस्य विहितःकालःकर्मणःतत्उपक्रमे।
तिथिर्याभि मता सा तु कार्या नोप क्रमोज्झिता॥

अर्थात् जो अभिष्ट तिथि हो वह उस कर्म के उपक्रम (प्रारम्भकाल, प्रातःसंकल्प आदि) में होनी चाहिए। उपक्रम से इतर में स्वीकृत नहीं है।

२. मुख्य कर्मकाल- इसमें तिथि सत्ता न होने पर भी साकल्याभिधायक सिद्धान्त से तिथि मानी जाती है।

यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं, याति भास्करः।
सा तिथि सकला ज्ञेया व्रतपूजादि कर्मसु॥१॥
आदित्योदय वेलायां याल्पापि च तिथिर्भवेत्।
पूर्णा इत्येव मन्तव्या प्रभुता नोदयं बिना॥२॥

इन वाक्यों का सारार्थ यह है कि सूर्य उदय व्यापिनी तिथि पूर्ण मानी जाती है। सूर्य उदय में जो तिथि न हो वह तिथि अग्राह्य है।

३. पारणा- अ. 'तिथि भान्ते च पारणम्'
'अतोन्यथा पारणे तु व्रत भंगमवाप्नुयात्'

तिथि जन्य व नक्षत्रजन्य व्रतों में क्रमशः तिथि और नक्षत्र के अन्त में पारणा आवश्यक है, अन्यथा व्रत भंग दोष होता है।

ब. उपवासेषु सर्वेषु पूर्वाह्ने पारणम् भवेत्

अर्थात् सभी उपवासों में पारणा पूर्वाह्न में हो जाता है। अब हम इन तीनों सिद्धान्तों को वैष्णव मत के परिप्रेक्ष में देखें, जिनसे वैष्णव मत का शास्त्रीय स्वरुप दर्शन होता है।

१. उपक्रम- प्रत्येक व्रत में संकल्प का विधान है, जो कि प्रातःकाल ही होता है, अन्य समय में नहीं हो सकता। ऊपर वर्णित नियम के अनुसार संकल्प काल में तिथि का अस्तित्व आवश्यक है, जो कि वैष्णव निर्णय के ३ पक्षों में से २ पक्षों में सर्वथा सम्भव होता है, तृतीय पक्ष विशेष वाक्य बल से शास्त्रानुगत सिद्ध होता है। इस संकल्प काल में अष्टमी तिथि का अस्तित्व कितना महत्व रखता है, इस विषय में काल माधव का चतुर्थ प्रकरणस्थ जन्माष्टमीव्रत स्मार्त निर्णय देखने योग्य है। अर्थात् लिखने व बोलने में सूर्य उदय में व्याप्त तिथि ही उपादेया है। यदि सप्तमी के दिन व्रत करते हैं तो प्रातः व्रत संकल्प में व निशीथ में दोनों में ही सप्तमी तिथि का संकल्प अपरिहार्य होगा। इस स्थिति में विचार करें कि जिस तिथि को हम न तो लिख सकते और न ही उच्चारण कर सकते तो व्रत कैसे?

निंदाश्रुति- शास्त्रों में सप्तमी युता अष्टमी का निषेध ही नहीं किया अपितु निंदा की है और सर्वथा त्याज्य की घोषणा ही है।

वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तमी संयुताष्टमी।१।
सऋक्षापि न कर्तव्या सप्तमी संयुताष्टमी।२।
पंचगव्यं यथाशुद्धं न ग्राह्यं मद्य संयुतम्।
रविविद्धा तथा त्याज्या रोहिणी संहितायदि।३।
पलवेधेऽपि विपेन्द्र सप्तम्या अष्टमीं त्यजेत्।
सुराया बिंदुना स्पृष्टं गंगांभः कलशंयथा।४।

साथ ही ध्यान देने योग्य बात है कि शास्त्रों ने जहाँ सप्तमी युता को सर्वथा त्याज्य ही कहा है, किंतु नवमी युता को कहीं भी कोई एक वाक्य भी त्याज्य नहीं करता।

सामयिक- वैष्णव सिद्धान्त का शास्त्रीय आधार प्रस्तुति के साथ-साथ मेरा अपना विचार है कि वैष्णव सिद्धान्त सामयिम व व्यवहारिक भी है। क्योंकि युगधर्मानुसार वर्तमान में निरंतर शक्तिह्रास होने से पूर्ण उपवास की सामर्थ्य किसी विरल पुरुष में ही हो सकती है, अन्यथा प्रायः सभी व्रती पुरुष (अबाल वृद्ध) मध्याह्न/अपराह्न में ही फलाहार करते हैं। निशीथ में प्रभु जन्म व अभिषेक के बाद ही फलाहार करने वाले कितने होंगे? विचार करें- हमारा व्रत तिथि आधार निशीथ व्यापिनी में ही हो तो व्रत पालन प्रायः सप्तमी में ही होगा, अष्टमी में नहीं होगा। अतः वैष्णव सिद्धान्त व्यवहारिक व सार्वकालिक उपादेय है।

पुनश्च- वैष्णव सिद्धान्त प्रतिपादन में हमने जिस श्लोक को सर्वप्रथम लिखा है। 'उदयेचाष्टमीकिंञ्चित्' इस श्लोक का किसी पूर्वाग्रही शास्त्रदूषक द्वारा चंद्रोदय अर्थ द्वारा दिग्भ्रमित करने की कुचेष्टा भी की है, जो कि सर्वथा असंभव अनुचित अर्थ है, इसके लिए निर्णयसिंधु का जन्माष्टमी निर्णय देखें।

आचार्य उपेन्द्रनाथ चतुर्वेदी
भागवतभवन, डिब्बागली, नयागंज, हाथरस, उप्र.
फोन नं.०५७२२-२७०९७४, ९४१२७३२८१६

शुभकामनाएं एवं शंका समाधानार्थ मिले पत्र

खायरा, मथुरा से पत्र लिखते हैं पं. राधेश्यामजी **दिनांक ७.२.२००९**

श्रीमानजी, सादर जय श्री राधेकृष्ण, सं. श्री ब्रजभूमि पंचांग दिल्ली अत्र कुशलम तत्रास्तु, महोदय पंचांग आपका अनुकरणीय है।

१. मेष के सूर्य १३ अंश के बाद ४।८।१२ शुभ माना जाता है। इसका क्या कारण है? उत्तर लिखें।

२. बिटोरा मुहूर्त्त में गुरु शुक्रास्त का जिक्र क्यों नहीं किया है?

उत्तर- बृहज्ज्योतिषसार ग्रन्थ में विवाह प्रकरण में लिखा है- अपने उच्च में, अपनी राशीमें, मित्र की राशि में अथवा अपने नवांश में गुरु रहे तो अशुभ (४।८।१२ वाँ) भी शुभ होता है और नीच तथा शत्रु की राशि में रहे तो शुभ भी अशुभ होता है-

स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।
अशुभोऽपि शुभोज्ञेयो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन्॥

यहाँ गुरु उपलक्षण है- सब ग्रह (रवि चन्द्र आदि) अपने उच्चादि स्थान में रहने पर अनिष्ट स्थान में भी शुभ होते हैं। मेष राशि में गतिशील सूर्य उच्च का होता है। बिटोरा रखने के संदर्भ में गुरु शुक्र उदयास्त का विचार मान्य नहीं होता।

२४वीं पो.६ द्वारिका नई दिल्ली से पत्र लिखते हैं **दिनांक १७.२०.२००९**
ए. डी. शास्त्री गैरोला

आदरणीय कौशिकजी, सप्रेम नमस्कार

मैं श्री राजधानी पंचांग देखकर बहुत प्रभावित हुआ। योग्यतापूर्ण सभी आवश्यक विषयों का संक्षिप्त में समावेश कर शुद्ध रूप से दिल्ली ही नहीं, बल्कि समस्त देशवासियों के लिए परमोपयोगी रचना मात्र आपकी महती कृपा ही है। पंचांग की उन्नति हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

श्रीराजधानीपंचांग का सविधि पूजन रेवाड़ी में **दिनांक २७.०३.२००९**

संस्कार भारती के तत्वावधान में माडल टाऊन रेवाड़ी स्थित ज्योतिष दरबार में पं. श्रीनिवास शास्त्री, श्रीरमेश कौशिक, श्रीग्रोवरजी, श्री दिलीपशास्त्री, अन्यान्य ज्योतिषी कर्मकाण्ड के अद्वितीय विद्वानों ने विक्रम संवत् २०६६ के शुभारम्भ प्रथम नवरात्र दिन शुक्रवार की पावन वेला में प्रभावी राजनेता, उद्योगपति, जनसाधारण और विभिन्न अखबार के पत्रकारों सहित श्रीराजधानीपंचांग का सविधि पूजन कर इसे अग्रगण्य मान्यता प्रदान की। हम एतदर्थ रेवाड़ी निवासी विद्वत्समूह के आभारी हैं।

-पं.प्रेमपाल कौशिक

पं. श्री राधाकृष्ण शास्त्री कच्चीसड़क मथुरा **दिनांक १२.०६.२००९**

प्रतिष्ठायाम् ज्योतिषचक्र चूड़ामणिषु श्रीमतु प्रेमपाल कौशिक के महोदयेषु शतशः प्रणिपातः। ता.२०-२१ जून २००९ श्री राजधानी पंचांग कार्यालय, दिल्ली के तत्वावधान में अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन प्रान्त मथुरान्तर्गत वृन्दावनधाम पत्रं प्राप्तम् एतदर्थं धन्यवादः। यथा समय उपस्थिति स्वीकृति सन्देह सेवा प्रेषितः भवदीय राधाकृष्ण शास्त्रीः।

गांव सजूमा कैथल हरियाणा से **दिनांक १२.०७.२००९**

पत्र लिखा है पं. सत्यनारायण पुलस्त्यजी ने, श्रीमान पण्डितजी सादर प्रणाम्।

प्रश्न- देवप्रबोधिनी एकादशी, वसन्तपंचमी आदि अनपूछ जो मुहूर्त्त हैं, उनमें मृत्युवान जैसा दोष आन पड़े तो शाहा शुभ माने या अशुभ?

उत्तर- जिस दोष का शास्त्रमतेन परिहार नहीं होता, वह तो दोषयुक्त साहा अशुभ ही माना जायेगा। लेकिन साढ़े तीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त्त और चार लोकप्रसिद्ध मुहूर्त्त अपने आप में पूर्ण सक्षम होते हैं। आम जनता की श्रद्धा, अटूट विश्वास तजन्य लोकिक मान्यता स्नेह के सामने दोषों का अवलोकन नगण्य सा प्रतीत होता है।

प्रश्न- ३ जून २००९ को श्री राजधानी पंचांग में सूर्य के १८ अंश पर मृत्युवान दोष माना गया है। १९ अंश पर दोष होता है ऐसा क्यों?

उत्तर- मृत्युवान दोष ३ जून में १६।१० बजे शुरु हो जायेगा, क्योंकि तब तक सूर्य का उन्नीसवाँ अंश पूर्ण होकर बीसवाँ अंश भुक्तकाल प्रारम्भ हो चुका होगा। दिन के लग्न मुहूर्त्त में व्यतिपात, भद्रा, लग्नाऽभाव में नहीं लिखे गये हैं। आशा है पुलस्त्यजी सन्तुष्ट हो गये होंगे।

श्री मैथिली ब्राह्मणसभा श्रीरामकुंज शाहगंज आगरा से **दिनांक २८.०७.२००९**
पत्र लिखते हैं- पं. सीताराम झा महामन्त्री

श्रीमान ज्योतिषाचार्य पं. कौशलकिशोर कौशिक जी सादर सप्रेम नमस्कार

आपने वास्तव में इस ब्रजक्षेत्र के लिए गत पन्द्रह वर्षों से पंचांग का प्रकाशन कर बहुत ही महान कार्य किया है। 'गागर में सागर' वाली कहावत को चरितार्थ कर दिखाया है। यद्यपि धौलपुर, ग्वालियर, वैर आदि से विद्वतवर्ग ने परिश्रम करके पंचांग निकाले परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई। आपका पंचांग अद्वितीय होने के कारण विशेष पण्डितवर्ग, आचार्यगण, कर्मकाण्डी विद्वान सभी को मान्य है। हम संस्था की ओर से आपके समक्ष दो सुझाव रखना चाहते हैं। आशा है स्वीकारोक्ति प्रदत्त की जायेगी। अ,व,क,ह,डा चक्र पंचांग के पृष्ठ १०७ पर छप ही रहा है तो पृष्ठ ९४ पर निअर्थक महसूस होता है। उपयोगी मैटर छापा जाए। गुणमेलापक सारिणी में नक्षत्र चरणाक्षर भी छाप दिये जाएं तो सबको अधिक सुविधा होगी।

उत्तर- आपके सुझाव उत्तम हैं। इस वर्ष गोलाकार राशिचक्र हटा दिया गया है।

बालाजीमंदिर दूजोद दरवाजा, सीकर, राजस्थान से **दिनांक २४.०७.२००९**
पत्र लिखते हैं पं. बद्रीनारायण रामावतार मिश्र

आदरणीय पं. कौशलकिशोर कौशिकजी सादर हरिस्मरण
आपके पंचांग में सातूड़ी तीज ९ अगस्त २००९ रविवार में छपी है और दूसरे पंचांग में ८ अगस्त शनिवार में लिखी है। कौनसी सही मानी जाए?

उत्तर- भाद्रपद कृष्ण तृतीया कज्जली संज्ञका उदयाग्रहण की जाती है। देखें निर्णय सिन्धु का द्वितीय परिच्छेद पृष्ठ २६२ पर लिखा है- भाद्रकृष्ण तृतीया कज्जलीसंज्ञा। सा पराग्राह्येति दिवोदासीये उक्तम्। ता.९ अगस्त भाद्रपद कृष्ण तीज रविवार में ११ घं. ५९ मि. तक होने के कारण सातूड़ी तीज लिखी है, जो कि धर्मशास्त्रीय दृष्टि से सही है।

प्रश्न- वधू राशि मीन नक्षत्र उभा. और वर की राशि कन्या नक्षत्र हस्त श्री ब्रजभूमि पंचांग गुण मेलापक सारिणी में २६॥ गुण छपे हैं। दूसरे पंचांग की गुण मिलान सारिणी में वर्णदोष, वश्यदोष, तारादोष, राशिदोष आता है, ऐसा क्यों?

उत्तर- विप्र वर्ण की कन्या और वैश्य वर्ण का वर है, सो यह व्यवहारिक तौर पर कोई दोष नहीं होता। यह सामन्तशाही प्रथा की संकीर्ण भावना मात्र कोरी कल्पना है कि लड़की उच्चवर्ण की नहीं होनी चाहिए। वस्यदोष- जलचर और मानव वश्य संयोग कोई मायने नहीं रखता। तारा- तारा की गणना गुण मेलापक सारणी से पृथक की जाती है। इस संदर्भ में परिहार वाक्य बहुत मिलते हैं। देखें श्री राजथानी पंचांग पृष्ठ १०५ तथा श्री ब्रजभूमि पंचांग के पृष्ठ १२२ पर छपे टेबल (राशियों के परस्पर शुभाशुभ योग) को। उसमें कर्क-मकर और सिंह-कुम्भ ही अशुभ सम सप्तक योग में लिखी हैं, बाकी की सभी राशियाँ समसप्तक योगवाली आपस में शुभ होती है।

दूरभाष पर अगस्त २००९ में एक महानुभाव द्विजाचार्य ने कहा कि आपने २ सित. बुधवार श्रवण नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त किस आधार पर लगाया है? कृपया बताऐं।

गृहारम्भ में सौर मास फल

ग्रह संस्थापने सूर्यो मेषस्थो शुभदो भवेत्। वृषस्थे धनवृद्धिःस्यान्मिथुने मरणं भवेत्। कर्कटे शुभदम्प्रोक्तं सिंहेभृत्यविवर्धनम्। कन्या रोगन्तुलासौख्यं वृश्चिके धन वर्द्धनम्॥ कार्मुके च महाहानिर्मकरे स्याद्धनागमः। कुम्भे तु रत्नलाभःस्यान्मीने सद्यमभयावहम्॥

अर्थ- मेष की संक्रांतिमें शुभ, वृष- धनवृद्धि, मिथुन- हानि, कर्क- शुभ, सिंह- नौकर चाकर धन-धान्यादि की वृद्धि, कन्या- रोग, तुला- सौख्यसमृद्धि, वृश्चिक- धनवृद्धि, धनु- हानि, मकर- धनलाभ, कुम्भ- रत्नादि का लाभ और मीन की संक्रांति मे घर बनावे तो भय हो। बृहज्योतिष सार पृष्ठ ११६

गृहप्रवेश मुहूर्त्त

आश्लेषायां च विशाखायां सह मघां पूर्वात्रयंयाम्यभं
रिक्तां सूर्यकुजौ विहाय च कुहूँ वेश्मप्रवेशःशुभः।
गोसिंहालिघटास्तथैव धवलःपक्षःप्रशस्तोऽधिको
मध्वा मन्मथ चापमीनवनिता मासास्तु वास्तूदिताः॥

बृहज्योतिषसार पृष्ठ १३१

आश्लेषा, विशाखा, मघा, ३ पूर्वा., भरणी नक्षत्र, ४,९,१४ रिक्तातिथि रविवार भौमवार अमावस्या इन सबों को छोड़कर अन्यान्य तिथि, नक्षत्र, वार तथा वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, मिथुन, धनु, मीन, कन्या लग्नों में एवं वास्तु (गृहारम्भ) में कहे गये मासों में गृहप्रवेश शुभ रहता है।

सौरं यज्ञ विवाहादौ सूतकादौ च सावनम्।
घट्यादिमापनात्यार्क्षं चान्द्रं च पितृकर्माणि॥

यज्ञ, विवाहादि शुभ कार्यों में सौरमान (संक्रांतिजन्य मास) ग्रहण करें। सूतकादि में अहोरात्र गणनार्थ सावन, घटी आदि काल ज्ञानार्थ नाक्षत्र, पितृकर्म में चान्द्रमान और प्रभवादि सम्वत्सर में बार्हस्पत्यमान ग्रहण करना चाहिए। इसी आधार पर सभी पंचांगकार विवाहादि मुहूर्त्त सुनिश्चित करते हैं।

आशा फोनकर्त्ता सहज समझ लेंगे कि २ सितम्बर २००९ में जो गृहारम्भ व गृहप्रवेश मुहूर्त्त लगाया गया है, वह सिंह की संक्रांति सौर मास भाद्रपद में शास्त्रसम्मत शुद्ध है।

पं. प्रेमपाल कौशिक

राहुकाल ज्ञानाय चक्र

रवि	सायं	१६।३०	से	१८।००	तक
चन्द्र	प्रातः	७।३०	से	९।००	तक
मंगल	दिवा	१५।००	से	१६।३०	तक
बुध	दिवा	१२।००	से	१३।३०	तक
गुरु	दिवा	१३।३०	से	१५।००	तक
शुक्र	प्रातः	१०।३०	से	१२।००	तक
शनि	प्रातः	९।००	से	१०।३०	तक

राहुकाल किस दिन, कब से कब तक रहेगा। साथ के चक्र से सहज समझ सकते हैं। राहुकाल से दूषित समय का नर्मदा से दक्षिणी भारत में बहुत विचार किया जाता है। उत्तर भारत में इसकी मान्यता नगण्य है। धीरे-धीरे उत्तरभारत में इसकी मान्यता बढ़ रही है।

यमगण्ड ज्ञानाय चक्र

रवि	दिवा	१२।००	से	१३।३०	तक
चन्द्र	प्रातः	१०।३०	से	१२।००	तक
मंगल	प्रातः	९।००	से	१०।३०	तक
बुध	प्रातः	७।३०	से	९।००	तक
गुरु	प्रातः	६।००	से	७।३०	तक
शुक्र	दिवा	१५।००	से	१६।३०	तक
शनि	दिवा	१३।३०	से	१५।००	तक

गुलिक योग ज्ञानायचक्र

रवि	दिवा	१५।००	से	१६।३०	तक
चन्द्र	दिवा	१३।३०	से	१५।००	तक
मंगल	दिवा	१२।००	से	१३।३०	तक
बुध	प्रातः	१०।३०	से	१२। ०	तक
गुरु	प्रातः	९।००	से	१०।३०	तक
शुक्र	प्रातः	७।३०	से	९।००	तक
शनि	प्रातः	६।००	से	७।३०	तक

सातवें भाव और स्त्री जातक पर विशेष विचार

ज्योतिष में योग का बड़ा महत्त्व है। योग मिलन का पर्याय है। दो वस्तुओं के मिलन को योग और अलगाव को वियोग कहते हैं। जन्मकुण्डली में एक से अधिक ग्रह स्थितियों के विशेष तालमेल को योग कहते हैं। ये योग ही फलित ज्योतिष का आधार स्तम्भ है। यदि इन योगों को समझने में कहीं भूल हो जाए तो फलित में सभी कुछ गड़बड़ हो जायेगा। योग के बिना फलित ज्योतिष का कहीं अस्तित्व शेष नहीं रह जाता।

शास्त्रकारों ने कुण्डली के सातवें भाव को विवाह, प्रेम, रतिक्रीडा, दाम्पत्यसुख, गुप्तव्यापार और ससुराल का माना है। सातवें भाव को यदि पापग्रह देखते हों या उसमें अशुभ राशि या योग बनते हों तो स्त्री का पति चरित्रहीन होगा। स्त्री जातक की कुण्डली के सातवें भाव में पापग्रह हो और उसको कोई शुभग्रह न देखे तो ऐसी स्त्री पति की मृत्यु का कारण बनती है। परन्तु कुण्डली के दूसरे भावगत शुभ ग्रह हो तो पहले स्त्री की मृत्यु होगी, पति की नहीं। सूर्य-चन्द्रमा पति-पत्नि की कुण्डली में परस्पर शुभ दृष्ट हो तो वैवाहिक जीवन स्थिर रहता है। यदि सूर्य-चन्द्रमा परस्पर १५०, १८० या ७२ डिग्री पर हो तो ऐसी कुण्डलियों में कभी भी तलाक हो सकता है। केतु जिस राशि में हो उसका सम्बन्ध यदि मंगल से हो जाए तो वैवाहिक जीवन आदर्शहीन होगा। स्त्री की कुण्डली में सूर्य का सातवें भाव में होना ठीक नहीं, यह वैवाहिक जीवन के लिए कलहपूर्ण होता है।

सातवें भाव को लेकर पुरुष जातक के फलादेश व योगायोग अलग है और स्त्री जातक के अलग। स्त्री जातक का अध्ययन किए बिना फलादेश करना मुश्किल है। सातवें भाव को लेकर ज्योतिषी के पास ये प्रश्न आते हैं। शादी कब होगी? किस दिशा में होगी? ससुरालपक्ष कैसा रहेगा? घर-वर के बारे में अनेक प्रश्न किए जाते हैं।

शादी कब होगी? यह प्रश्न बड़ा कठिन है। पुराने ग्रन्थों के आधार पर इसे नहीं सुलझाया जा सकता, क्योंकि आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। पहले १२ वर्ष की कन्या का विवाह पुण्य समझा जाता था, परन्तु आज १८ वर्ष से पूर्व कानूनी अपराध है। चमत्कार चिन्तामणि के अनुसार-

शुक्राच्चन्द्रात्सप्तमे यद गृहंतत् संख्यातुल्ये वत्सरेकें युतेवा। स्यादुदाहो वत्सरे तछशान्ते वंशोरूपं तत्पतेश्चिन्तनीयम्॥

अर्थात् शुक्र या चन्द्रमा से सातवें भावगत जो राशि हो उसकी संख्या के तुल्य वर्ष में जातक का विवाह होता है। यदि वह उम्र कम है तो उसमें १२ और मिलाकर उस आयु में विवाह करना चहिए। जीवनसाथी के रूप, गुण, स्वभाव (राशिपति) के स्वामी के अनुसार कहना चाहिए। नितांत अंधेरे में यह सूत्र दीपक का कार्य करता है। विवाह की आयु निश्चित करने के लिए हमें गहराई में जाना होगा। तीन चीजें देखनी होंगी। १. विवाहयोग्य दशाएं। २. विवाहसमय निर्धारण के योगायोग। ३. गोचरग्रहों से विवाह निर्धारण।

विवाह योग्य दशाएं

कई बार शुभाशुभ योगों के होते हुए भी विवाह नहीं होता। इसका मुख्य कारण विवाह कारक ग्रहों की दशा का अभाव है। निम्नस्थितियों में जातक का विवाह होता ही है।

१. सप्तमेश या द्वितीयेश की अन्तर्दशा में ही विवाह योग बनता है। जब लग्न, चन्द्रमा या शुक्र से सातवें भाव के स्वामी की दशा हो, तब शुक्रकी अन्तर्दशामें विवाह समझना चाहिए।

२. शुक्र से युक्त लग्नेश, द्वितीयेश या आयेश की दशा में भी जातक का विवाह होता है। स्त्रियों की गुरु और पुरुषों की शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में विवाह होता है।

३. सप्तमेश के साथ यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की दशा अन्तर्दशा में विवाह होता है। द्वितीयेश जिस राशि में हो तो उस राशि के स्वामी की दशा अन्तर्दशा में विवाह होता है।

४. शुक्र जिस राशि में हो उसका स्वामी यदि (६,८,१२वें) भाव में न हो तो उसकी दशा में भी विवाह होता है। विवाह योग्य आयु में दशमेश एवं अष्टमेश की दशा अन्तर्दशा भी विवाह कराती है।

५. शुक्र या गुरु शुभ राशि में हो तो उसकी दशा के मध्य में विवाह होता है। पापी ग्रह यदि शुभ राशिगत हो तो उसकी दशा के अन्त में जातक का विवाह होता है।

विवाह समय निर्धारण के योगायोग

१. सातवें भाव का स्वामी शुभराशिगत हो या दृष्ट हो, शुक्र अपनी उच्च राशि या स्वराशि का हो तो जातक का विवाह १० वर्ष की आयु में होता है।

२. सूर्य सातवें भावगत हो, सातवें भाव के स्वामी या शुक्र से युति करके बैठा हो तो जातक का विवाह ११वर्ष की आयु में हो जाता है। शनि अपनी राशि मकर या कुम्भ में हो तथा शुक्र केन्द्र में हो तो ११वर्ष में विवाह होता है।

३. सातवें भाव का स्वामी स्वग्रही हो और उसपर गुरु की दृष्टि हो तो जातक का विवाह १२ वर्ष की आयु में होता है। लग्न का स्वामी सातवें भावगत हो, शुक्र केन्द्र में हो तो १२ वर्ष की आयु में विवाह होता है।

४. धनभाव का स्वामी आयभावमें, तथा आयभाव का स्वामी धनभाव में (परस्पर परिवर्तन योग करके) बैठे हों तो १३ वर्ष की आयु में विवाह होता है। द्वितीयेश, आयभाव में तथा सूर्य धनभाव में हो तो १३ वर्ष की आयु में विवाह होता है।

५. सातवें भाव का स्वामी एकादश भाव में तथा शुक्र दूसरे भाव में हो तो १० से १६ वर्ष की आयु में विवाह होता है। धन भाव का स्वामी शुक्र हो, सातवें भाव का स्वामी ४-१०-११-१२ राशि में हो तो १० से १६ वर्ष की आयु में विवाह होता है।

६. सप्तमेश और लग्नेश की युति जातक का विवाह १४ वर्ष के अन्दर ही करा देती है।

७. धनेश, एकादश भाव में, लग्नेश दशवें भाव में हो तो १५वें वर्ष में विवाह होता है। सप्तमेश आयभाव में, आयेश दशवें भाव में हो तो १५ वर्ष की आयु में विवाह होता है।

८. शुक्र केन्द्रभावगत हो, शुक्र से सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो १२ से १९वें वर्ष की आयु में विवाह होता है।

९. चन्द्रमा से सातवें भाव में शुक्र हो, शुक्र से सातवें भाव में शनि हो तो जातक का १८ वर्ष की आयु में विवाह होता है। जन्म लग्न से जिस राशि का नवांश हो, उस राशि नवांश के लग्न का स्वामी केन्द्रभाव में हो तो १८वर्ष की आयु में विवाह होता है।

१०. लग्न से अष्टम भावगत या दूसरे भाव में शुभग्रह हो

तो २१वें वर्ष में विवाह होता है। प्रथम भाव, दूसराभाव और सातवाँ भाव, ये तीनों भाव शुभग्रह से युक्त हो या स्वराशिगत हो या दृष्ट हो तो २१वें वर्ष में विवाह होता है।

११. शुक्र से सातवें भाव में चन्द्रमा हो, चन्द्रमा से सातवें भाव में बुध हो तथा अष्टमेश पांचवें भाव में हो तो जातक के तीन विवाह होते हैं। पहला विवाह दस वर्ष की आयुमें, दूसरा विवाह २२ वर्ष की आयु में और तीसरा विवाह ३३ वर्ष की आयु में होता है।

१२. चन्द्रमा से सातवें भाव में शुक्र हो और शुक्र जिस राशि में बैठा है उस राशि का स्वामी आय भाव में हो तो २७ वर्ष की आयु में विवाह होता है।

१३. शुक्र धन भाव में और मंगल की अष्टमेश के साथ युति हो तो जातक का विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में या इसके मध्य में होता है।

१४. सातवें भाव का स्वामी नवे भाव में हो, शुक्र तीसरे स्थान में हो तो जातक का विवाह २७ से ३० वर्ष की आयु में अथवा इसके मध्य में होता है।

१५. नवे भाव से नवां भाव (पांचवाँभाव) में शुक्र हो और शुक्र से नवे भाव (लग्न) में राहु हो तो जातक का विवाह ३१ से ३२ वर्ष के मध्य होता है।

१६. अष्टमेश स्वगृही हो और लग्नेश की शुक्र के साथ युति हो तो जातक का विवाह ३३ वर्ष की आयु में होता है। लग्न में जिस राशि का नवांश हो, उसमें शुक्र हो, आठवें भाव में जिस राशि का नवांश हो, वह राशि सातवें भाव में हो तो जातक का विवाह ३३ वर्ष की आयु में होता है।

१७. सातवें भाव का स्वामी पापग्रह के साथ त्रिकोण भाव (१,५,९) में हो तथा शुक्र भी पापग्रह के साथ दूसरे भाव में हो तो जातक का विवाह ३५ वर्ष की आयु में होता है।

१८. प्रथम भाव, सातवेंभाव और दूसरे भाव में नीच राशि में हो या शुभ शत्रुराशि में पापग्रह हो तो जातक का विवाह ३६ वर्ष की आयु में होता है

सप्तमेश को लेकर पूर्वाचार्यों ने विवाह की आयुनिश्चित की है। स्त्री और पुरुष के मानदण्ड को लेकर यह आयु अलग-अलग है। अपने अनुभव के आधार पर हमने जो परिणाम निकाले वह इस प्रकार हैं।

विवाह योग्य आयु का निर्धारण

पुरुष जातक	ग्रह	स्त्रीजातक
२६ वर्ष	सूर्य	२४ वर्ष
२२ वर्ष	चन्द्र	२० वर्ष
१८ वर्ष	मंगल	१६ वर्ष
१६ वर्ष	बुध	१४ वर्ष
२४ वर्ष	गुरु	२२ वर्ष
२० वर्ष	शुक्र	१८ वर्ष
२८ वर्ष	शनि	२६ वर्ष

गोचर ग्रहों से विवाह निर्धारण

१. गोचर का गुरु जब भी लग्न या सप्तम भाव से गुजरे या इन्हें देखे तो जातक का विवाह निश्चित होता है। जन्मलग्न, तृतीय, सप्तम एवं एकादश भाव में गोचरीय क्रम से गुरु आवे तो जातक का विवाह कराता है।

२. शुक्र से त्रिकोण (१,५,९) में या सातवें स्थान पर गोचर का गुरु विवाह कराता है। लग्नेश जिस नवांश में हो, उसका स्वामी जिस राशि में हो उससे दूसरे स्थान में गोचर का चन्द्रमा एवं गुरु आवे तब विवाह होता है।

३. लग्नेश जिस राशि या राशि नवांश में हो, इससे पंचम या नवम राशि में गोचर का शुक्र या सप्तमेश आने पर विवाह होता है।

४. जन्म नक्षत्र के स्वामी या सप्तमेश के नक्षत्र स्वामी के ऊपर से अथवा उनसे ५,९ स्थान पर गोचर का गुरु आवे तब जातक का विवाह होता है।

५. शुक्र के अष्टकवर्ग में जहाँ अधिक बिन्दु हो उस स्थान पर से गोचर का गुरु जातक का विवाह कराता है।

६. लग्नेश और सप्तमेश इन दोनों ग्रहों के स्पष्ट का योग करें, ततुल्य राशि में गुरु आने पर जातक का विवाह होता है।

७. चन्द्रमा और सातवें भाव के स्वामी दोनों के स्पष्टों का योग करें, ततुल्य राशिमें गुरु आने पर जातक का विवाह होता है।

विवाह दिशा विचार

विवाह कौनसी दिशा में होगा? इस पर हमारे पूर्वाचार्यों ने काफी अध्ययन किया, जिसके निष्कर्ष इस प्रकार हैं। जन्मकुण्डली का लग्न भाव पूर्व, चौथा भाव उत्तर, सातवाँ भाव पश्चिम और दसवाँ भाव दक्षिण दिशा में मानकर दसों दिशाओं की स्थापना करनी चाहिए।

१. चन्द्रमा और सातवें भाव का स्वामी जिस दिशा में हो, इनमें जो बली हो जातक का विवाह उसी दिशा में होगा।

२. चन्द्रमा सातवें भाव में हो तथा चन्द्रराशि का स्वामी मंगल या किसी पापग्रह से देखा जाता हो अथवा पापग्रह चन्द्रराशि से त्रिकोण में हो तो जातक का विवाह जन्मस्थान से दूरस्थ स्थान में होता है।

३. सातवें भाव का स्वामी और सातवें भाव में स्थित ग्रह और शुक्र बलवान हो तो उसकी स्थिति की दिशा में जातक का विवाह होगा।

४. चन्द्रमा सातवें भाव में हो तथा चन्द्रराशि का स्वामी मंगल से दृष्ट हो तो जातक का विवाह विज्ञापन या प्रचार माध्यम से होता है।

स्त्रीजातक पर विशेष चिंतन

लग्न से आठवाँ भाव पति सौभाग्य व वैधव्य का माना है। केवल आठवें भाव से स्त्री के पतिसुख को लेकर भावकुतूहल में एक बहुत ही रोचक श्लोक दिया है।

यदाष्टमे देवगुरु भृगुवा, विनिष्टगर्भा मृतपुत्रको वा।
कुजाष्टमेकुटिला मृगांक्षी,चन्द्राष्टमे स्वामी सुखेनहीन॥
मन्दाष्टमे रोग पतिस्वभार्या, दिनाधिपे परिताप तप्ता।
अनंग रंगा परपुरुष संगा, मृतावस्थेषु कुलधर्मभंगा॥

अर्थात् जिस स्त्री की कुण्डली में देवगुरु बृहस्पति आठवें भाव में हो उसका प्रथम गर्भ नष्ट हो जाता है। शुक्र आठवें भावगत हो तो प्रथम सन्तान मृतावस्था को प्राप्त होती है। यदि मंगल आठवें भावगत हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर नेत्रों वाली परन्तु स्वभाव की कुटिल होती है। चन्द्रमा आठवें स्थान में हो तो स्त्री को पतिसुख अत्यल्प होता है। शनि आठवें होने से स्त्री का पति रोगी होता है। सूर्य आठवें भावगत हो तो ऐसी स्त्री तेज स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्री मृतावस्था को प्राप्त होते-होते कुल की मर्यादा को कलंकित करती है।

ज्योतिर्विद् पं. रामजीलालगौड़ अग्निहोत्री
श्रीभृगु ज्योतिष रिसर्च केन्द्र, जीवाजी नगर, सूरजपुर,
गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र. २०१३०६
दूरभाष- ०१२०२९३०२०५, ९३५०३५४१६२

शेयर बाजार तेजी-मन्दी समीक्षा २०१०-११

अप्रैल- ता.१४ सूर्य मेष में ता.१७ बुध वक्री होगा। ता. १९ बुध अस्त तथा ता.२० को वृष में प्रवेश करेगा। ग्रहचाल के अनुसार इस माह बाजार के लिए उतना सकारात्मक नहीं है। अतः सावधानी से काम करना बुद्धिमानी होगा। ता.१ पू. भा. में गुरु से बाजार की धारणा कुछ तेज प्रतीत हो रही है। ता.२ को बाजार में भारी बिकवाली बन सकती है। ता.५ से ७ तक इस्पात, सीमेन्ट, भारी इंजीनियरी, बैंक, दूरसंचार की कम्पनियों के शेयरों में सामान्य तेजी की धारणा बन सकती है। ता.८ से ९ तक भारी बिकवाली से बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता.१२ से १३ तक बिकवाली से तेजी की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता.१४ से १६ तक अचानक कोई गलत अफवाह अथवा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की अफवाह से बाजार में भारी बिकवाली बन सकती है। ता. १९ को बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, दूरसंचार आदि कम्पनियों के शेयरों में लिवाली से तेजी, जबकि ता.२० को वृष में शुक्र से आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. २१ से २२ तक भयंकर तेजी, जबकि ता.२३ को १.४० तक भारी मन्दी, इसके बाद कुछ सुधार सम्भावित हो सकता है। ता.२६ को श्लेषा में मंगल से ता.२८ तक अच्छी तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। ता.२९ को बिकवाली से मंदी बन सकती है। जबकि ता.३० आश्विनमें बुध से घट-बढ़ पूर्ण बाजार में सुधार हो सकता है।

मई- ता.११ को चन्द्रोदय होगा। ता.२ को गुरु मीन में ता.७ को बुध पूर्व में उदय ता.१४ को बुध मार्गी, इसी ता. में सूर्य वृष में तथा शुक्र मिथुन में ता.२५ को मंगल सिंह में ता.२९ को शनि मार्गी होगा। फलतः इस माह दो ग्रहों का मार्गी होना इस बाजार के लिए शुभ प्रतीत नहीं होता। ता. ३ से ५ तक बाजार कुछ सकारात्मक दिशा में चलने की सम्भावना अधिक प्रतीत हो रहा है। ता.५ को १०.३० के बाद बाजार में बिकवाली भी बन सकती है। यह बिकवाली का दबाव ता.७ तक चल सकता है। अतः शेयरबाजार के सूचकांक में भारी गिरावट हो सकती है। ता.१० को नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में समर्थन से सामान्य तेजी जबकि ता.११ से १३ तक व्यापक घटा-बढ़ी धारणा मंदी की ओर जा सकती है। ता.१४ को उतार-चढ़ाव रह सकता है। ता.१७ को बाजार खुलते ही कोई गलत अफवाह अथवा अन्य कारणों से भारी बिकवाली बन सकती है। ता.१८ से १९ तक बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, दूरसंचार, इस्पात, विद्युत कंपनियों के समर्थन से तेजी बन सकती है। ता.२० को आर्द्रा में शुक्र से बाजार में गिरावट। बैंक, आटोमोबाइल, सीमेंट, धातु तथा दूरसंचार कंपनियों के शेयरों में समर्थन से तेजी आगामी सप्ताह बाजार कुछ सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना प्रतीत हो रही है। ता.२४ से २६ तक इस्पात, सीमेंट, रियलस्टेट, बैंक, फार्मा, आईटी कंपनियों के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने की धारणा अधिक प्रतीत हो रही है। ता. २७ को ११.५७ तक भारी मन्दी, इसके बाद घट-बढ़ ता.२८ तक जारी रहेगी। ता.३० को मिडकैप, स्मालकैप, विद्युत, पावर तथा अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में समर्थन प्राप्त होने से तेजी की धारणा बन सकती है।

जून- ता.६ को वृष में बुध, ता.९ को कर्क में शुक्र ता. १५ मिथुन में सूर्य केतु की युति करेगा। ता.१७ को बुध पूर्व में अस्त होगा। ता.२२ को मिथुन में सूर्य केतु के साथ प्रतियुति करेगा। फलतः ग्रहों के आपसी संबंध और योग की दृष्टि से यह माह काफी महत्वपूर्ण रहेगा। अतः बाजार देखते हुए काम करना बुद्धिमानी होगी। ता.१ को बाजार कुछ तेज खुलकर बंद होगा। ता.२ से ४ तक अचानक कोई गलत अफवाह अथवा अन्य कारणों से भारी बिकवाली बन सकती है। ता. ७ को बाजार में व्यापक घटा-बढ़ी चलकर धारणा मन्दी की ओर जा सकती है। ता.८ से १० तक दिन में १२ बजे तक इस्पात, सीमेन्ट, भारी इंजीनियरी, धातु, पावर, आटोमोबाइल कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली बन सकती है। ता.११ को घट-बढ़ जारी रहेगी। ता.१४ से १५ तक सामान्य तेजी की धारणा ता.१६ को भारी बिकवाली बन सकती है। ता.१७ से १८ तक विभिन्न बिलूचिप कंपनियों के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा गंभीर हो सकती है। ता.२१ को सामान्य सुधार। ता.२२ को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होना चाहिए। ता.२३ को बाजार खुलते ही बिकवाली बन सकती है। ता. २४ से २५ पुरानी अर्थव्यवस्था शेयरों में लिवाली से सामान्य सुधार की संभावना प्रतीत हो रही है। ता.२८ को सामान्य तेजी ता.२९ से ३० तक भारी बिकवाली इस्पात, सीमेन्ट, इंजीनियरिंग, आटोमोबाइल कंपनियों में बन सकती है।

जुलाई- ता.१ को पुनर्वसु में बुध ता.५ सिंह में शुक्र, ता. ६ को कर्क में बुध ता.१० बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. १६ को सूर्य कर्क में बुध के साथ युति करेगा। ता.१४ कन्या में मंगल शनि के साथ युति करेगा। ता.२२ गुरु वक्री होगा ता.२३ को सिंह में बुध प्रवेश करेगा। ग्रहों के आपसी संबंध योग शुभाशुभ कारक हैं। फलतः बाजार में अधिकांश दिन उठा-पटक जारी रहने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। ता.१ से २ तक व्यापक घटा-बढ़ी धारणा मंदी की ओर जा सकती है। ता.५ से ७ तक बैंक, फार्मा, साफ्टवेयर, मीडिया आदि कंपनियों के शेयरों में बिकवाली बन सकती है। ता. ८ से ९ तक विभिन्न सेक्टरों के बिलूचिप कंपनियों के शेयरों में खरीदारी होने से शेयरबाजार के सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार हो सकता है। आगामी सप्ताह ता.१२ से १६ तक बाजार सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना प्रतीत हो रही है। इस सप्ताह विभिन्न सेक्टरों के बिलूचिप कंपनियों में बारी-बारी से खरीदारी हो सकती है। ता.१९ को बाजार तेज खुलकर तेज बंद होगा। ता.२० को बिकवाली बन सकती है। ता.२१ से २३ तक घट-बढ़ धारणा कुछ तेजी की ओर जा सकती है। ता.२६ से २८ तक भारी बिकवाली बन सकती है। तबकि ता.३० को सामान्य सुधार हो सकता है। कुल मिलाकर ग्रहचाल के अनुसार मंदी का पडला गंभीर प्रतीत हो रहा है। इसमें तेजी कम मंदी का चांस अधिक है।

अगस्त- यह मास श्रावण कृष्ण पक्ष षष्ठी तिथि रविवार रेवती नक्षत्र मेष राशि से प्रारम्भ हो रहा है। ता.१ कन्या में शुक्र ता.१६ को सिंह में सूर्य ता.२१ को बुध वक्री होगा। ता.२७ बुध पश्चिम में अस्त होगा। ग्रहचाल के अनुसार ग्रहों की स्थिति बाजार की दिशा में अनुकूल नहीं है। इसका ध्यान रखकर ही काम करें। ता.२ से ३ तक व्यापक घटा-बढ़ी की धारणा मंदी की ओर जा सकती है। ता.४ से बाजार के सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। ता.९ को बिलूचिप कंपनियों के शेयरों में समर्थन से तेजी। ता.१० भयंकर बिकवाली बन सकती है। ता.११ से १३ तक बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, विद्युत, पावर तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन से सूचकांक में आश्चर्यजनक आगामी सप्ताह बाजार में घट-बढ़ अधिक चलेगी। ता.१६ से १८ तक किसी न किसी कारण से बिकवाली ता.१९ से २० तक सामान्य सुधार की संभावना है। ता.२३ से २५ तक अचानक कोई गलत अफवाह अथवा अन्य कारणों से भारी बिकवाली बन सकती है। ता.२६ से २७ तक सामान्य सुधार की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। ता.३० को घट-बढ़ ता.३१ को १२.३० तक भारी मंदी इसके बाद घट-बढ़ जारी रह सकती है।

सितम्बर- भाद्रपद कृष्ण पक्ष सप्तमी बुधवार कृत्तिकानक्षत्र वृष राशि में प्रारम्भ हो रहा है। ता.१ को तुला में शुक्र ता. ५ को शुक्र के साथ युति ता.१० को बुध पूर्व में उदय होगा। ता.१२ बुध मार्गी होगा। ता.१६ को शनि अस्त होगा। इसी ता. को सूर्य कन्या में शनि के साथ युति करेगा। ता.३० को बुध सूर्य शनि के साथ प्रतियुति करेगा। फलतः ग्रहचाल के

अनुसार इस बाजार के सकारात्मक दिशा में चलने की संभावना न्यूनतम प्रतीत हो रही है। फिर भी शनि सूर्य की युति इस बाजार की दिशा में अनुकूलता बना रहा है। अतः जैसा रुख चले वैसा अनुसरण करते चलें तो आप लाभ में रहेंगे। ता.१ से ३ तक बाजार की धारणा तेजीसूचक प्रतीत हो रही है। इसमें नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं तथा धातुओं के शेयरों में विशेष कारोबार होने की संभावना प्रतीत हो रही है। ता.१० तक भिन्न-भिन्न सेक्टरों में बिलूचिप कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी खरीदारी होने से सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है। ता.१३ से १७ तक घट-बढ़पूर्ण बाजार की धारणा कभी तेजी तो कभी मंदी की रहेगी। मेरे समझ से इस सप्ताह इस्पात, आटो, सीमेंट, भारी इंजीनियरिंग, पेट्रो रसायन तथा धातुओं के शेयरों में बिकवाली दबाव भी बना सकती है। बाकी सेक्टरों में कुछ कारोबार हो सकता है। ता.२० से २१ तक भारी बिकवाली से बाजार गिर सकता है। ता.२२ से २४ तक विद्युत, पावर, बैंक, फार्मा, मिडकैप, स्मालकैप कंपनी के शेयरों में समर्थन बन सकता है। ता.२८ से ३० तक सामान्य सुधार की संभावना प्रतीत हो रही है।

अक्टूबर- आश्विन कृष्णपक्ष अष्टमी शुक्रवार आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में प्रारम्भ हो रहा है। ता.४ को गुरु वक्री होगा। १७ को बुध तुला में शुक्र व सूर्य के साथ युति करेगा। ता.१९ वृश्चिक में मंगल तथा शनि उदय होगा। ता.२१ को शुक्र अस्त होगा। फलतः ता.१ को बाजार नरम खुलकर नरम बंद होगा। ता.४ बाजार बिकवाली के दबाव में रहेगा। ता. ५ से ८ तक भिन्न-भिन्न सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से खरीदारी हो सकती है। ता. ११ से १५ तक घट-बढ़ पूर्ण धारणा तेजीसूचक प्रतीत हो रही है। ता.१८ से १९ तक भयंकर घटा-बढ़ी धारणा मन्दी की ओर जा सकती है। ता. २० से २१ तक सामान्य सुधार जबकि ता.२२ को बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता.२५ से २७ तक बिलूचिप कंपनियों के शेयरों में अचानक लिवाली से सूचकांक में अच्छा सुधार हो सकता है। ता.२८ को भारी बिकवाली में सामान्य सुधार की संभावना अधिक प्रतीत हो रही है। तुला की सूर्य संक्रांति रविवार की होने से शेयर बाजार में प्रायः घट-बढ़ पूर्ण धारणा तेजी की ओर बना रही है। वैदेशिक नीति अपरिवर्तित होने से कभी-कभी तेजी मंदी की लाइन गंभीर हो सकती है। अतः रुख देखकर काम करें।

नवम्बर- कार्तिक कृष्ण दशमी सोमवार मघा नक्षत्र सिंह राशि से प्रारम्भ हो रहा है। ता.२ कुंभ में गुरु, ता.४ को शुक्र पूर्व में उदय तथा वृश्चिक में बुध ता.७ को बुध उदय होगा। ता.१६ वृश्चिक में सूर्य ता.२० को गुरु मार्गी होगा। ता.२५ धनु में बुध ता.२७ मंगल अस्त होगा। ता.२९ धनु में मंगल जायेगा। फलतः मास का प्रारम्भ तेजीसूचक प्रतीत हो रहा है। सभी सेक्टरों के बिलूचिप कंपनियों के शेयरों में बारी-बारी से खरीदारी चल सकती है। ता.५ तक बाजार में एकतरफा तेजी की लाइन बन सकती है। ता.८ से १२ तक घट-बढ़ पूर्ण धारणा अग्रसर तेजी की ओर रहनी चाहिए। इसमें बैंक, साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, दूरसंचार, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में समर्थन प्राप्त होना संभावित प्रतीत हो रहा है। ता. १५ को भारी मंदी, ता.१६ से १७ तक तेजी की धारणा ता. १८ से १९ तक मंदी की धारणा बन सकती है। ता.२२ से २३ तक सामान्य तेजी, ता.२४ से २५ तक घट-बढ़, ता.२६ को सुधार की संभावना प्रतीत हो रही है। ता.२९ को मंगल धनु में राहु मूल तथा केतु आर्द्रा में प्रवेश करने से ता.३० तक विदेशी निवेशकोंके समर्थनसे सूचकांकमें भयंकर सुधार होगा।

दिसम्बर- मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी बुधवार कन्या राशि में प्रारम्भ होगा। ता.४ को मीन में गुरु ता.९ को वक्रीबुध ता.१४ को बुध अस्त होगा। ता.१६ धनु में सूर्य ता.२२ वृश्चिक में बुध ता.२५ को बुध उदय होगा। ता.३० को बुध मार्गी होगा। ता.१ से ३ तक नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में समर्थन से तेजी की धारणा बन सकती है। ता.६ से ९ तक घट-बढ़ पूर्ण धारणा अग्रसर तेजी की ओर रहनी चाहिए। ता.१० को भारी बिकवाली बन सकती है। ता.१० से १५ तक तेजी इसके बाद ता.१७ तक किसी कारण से बिकवाली बनती रहेगी। आगामी सप्ताह ता.२० से २४ तक दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी, बैंक, फार्मा, साफ्टवेयर तथा धातुओं के शेयरों में अच्छी तेजी बनती है। ता.२७ से २९ तक उपरोक्त सेक्टरों में एकतरफा तेजी की लाइन बन सकती है। ता.३१ को अचानक बिकवाली बन सकती है।

जनवरी२०११- पौष कृष्ण द्वादशी अनुराधा नक्षत्र वृश्चिक राशि में प्रारम्भ होगा। ता.१ वृश्चिक में शुक्र, ता.७ धनु में बुध , ता.८ मकर में मंगल ता.१४ मकर में सूर्य, ता.१७ चित्रा में शनि ता.२६ को शनि वक्री होगा। ता.३० को मकर में बुध तथा धनु में शुक्र प्रवेश करेगा। फलतः ता.३ से ५ तक बिलूचिप कंपनियों के शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा प्रतीत हो रही है। ता.६ से ७ तक भारी बिकवाली बन सकती है। ता.१० से ११ तक सामान्य तेजी ता.१२ से १४ तक बिकवाली बनती रहेगी। ता.१७ को तेजी ता.१८ को भारी मंदी ता.१९ से २० तक तेजी ता.२१ को भारी मंदी बन सकती है। ता.२४ से २७ तक विभिन्न सेक्टरों के चुनिंदा शेयरों में लिवाली से तेजी की धारणा बन सकती है। ता.२८ को घट-बढ़ चल सकती है। ता.३१ सामान्य सुधार हो सकता है।

फरवरी- माघ कृष्ण चतुर्दशी मंगलवार पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र मकर राशि में प्रारम्भ होगा। ता.३ हस्त में शनि ता.१२ कुम्भ में सूर्य ता.१५ कुम्भ में मंगल, ता.१८ कुम्भ में बुध ता.२५ को मकर में शुक्र जायेगा। ता.५ को बुध अस्त होगा। ग्रहचाल के अनुसार ता.१ सामान्य तेजी ता.२ में सुधार ता.३ को भारी बिकवाली बन सकती है। ता.४ को भी बिकवाली बनी रह सकती है। ता.७ को सामान्य सुधार ता.८ को भारी मंदी ता. ९ से १० तक सुधार ता.११ को बिकवाली बन सकती है। ता.१४ से १८ तक तेजी की लंबी लाइन बन सकती है। ता. २१ से २३ तक भिन्न-भिन्न सेक्टरों के चुनिंदा शेयरों में खरीदारी भारी हो सकती है। ता.२४ से २५ तक बिकवाली बनती रहेगी। ता.२८ को खरीदारी होने से सूचकांक में आश्चर्यजनक सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है।

मार्च- फाल्गुन कृष्ण द्वादशी मंगलवार उत्तराषाढ़ानक्षत्र मकर राशि में प्रारम्भ हो रहा है। ता.१ पूभा.में बुध ता.४ पूभा.में सूर्य ता.६ मीन में बुध, ता.१४ मीन में सूर्य ता.२० मेष में भानु ता.२२ को कुम्भ में शुक्र, ता.२८ मेष में बुध ता.२५ मीन में मंगल स्थान परिवर्तन करेगा। ता.३० बुध वक्री होगा। फलतः इस माह के तेजी-मंदी अफवाहों पर आधारित होगी। ता.१ को सामान्य सुधार, ता.२ से ४ तक भारी बिकवाली बन सकती है। ता.७ से १० तक भारी बिकवाली बन सकती है। ता.११ को सामान्य सुधार ता.१४ को भारी बिकवाली ता.१५ से १६ तक सामान्य तेजी जबकि ता.१७ को भारी बिकवाली बन सकती है। ता.१८ को संस्थागत निवेशकों के समर्थन से बाजार में सुधार ता. २१ से २२ तक सामान्य तेजी ता.२३ से २४ तक व्यापक घट-बढ़ ता.२५ को सामान्य सुधार ता.२९ से ३१ तक भारी बिकवाली बन सकती है। जिससे बाजार गिर सकता है।

ग्रहों के उदय-अस्त वक्री-मार्गी, युति-प्रतियुति आदि कारणों से फल लिखा है, अतः अपने विवेक से काम लें। लाभ हानि की लेखक की जिम्मेदारी नहीं है। आप चाहें तो तेजीमंदी की संपूर्ण जानकारी हमारे यहाँ से प्राप्त की जा सकती है। जिसका सेवा शुल्क १२ माह का साधारण रु.१०५००/- मध्यम रु.१५५००/- स्पेशल रु.२०५००/-, कमोडिटी, ट्रेडिंग, व्यापार भविष्यफल सहित दैनिक रिपोर्ट सेवा शुल्क रु.३०५००/- निर्धारित है।

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य आचार्य पं. टुनटुन शास्त्री
व्यापार भविष्य एवं शेयरबाजार कमोडिटी ट्रेडिंग, समीक्षाकार
ग्राम-करौन्दी, पो.सरॉव,(नटवार),रोहतास,बिहार-८०२२१८
फोन नं. 09431486216, 09801873719

राशिफल गोचर ग्रहानुसार सं. 2067 वि. (अप्रैल 2010 से मार्च 2011 ई. तक)

मेष:- चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल:- मेहनत के चलते सेहत का ख्याल रखें। दैनिक कार्यभार की चिन्ता बढ़ेगी। उच्चअधिकारी की हाँ में हाँ मिलाते रहें। **मई:-** प्रियजन वियोग मन दुःखायेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। उत्तम ग्रहचाल से रुका हुआ काम बनेगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। **जून:-** बच्चों की पढ़ाई-लिखाई अच्छी रहेगी। यात्रा लम्बी व साधारण होगी। राजनीतिक सम्बन्धों से फायदा होगा। अत्याधिक व्यय से बचें। **जुलाई:-** अप्रत्याशित समाचार प्राप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करें। बढ़ते कारोबार से विशुद्ध लाभ अधिक होगा। **अगस्त:-** समस्याओं के समयोचित समाधान न मिलने से मानसिक परेशानी होगी। पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म दे सकती है। यात्रा लाभदायक जानें। **सितम्बर:-** नई योजना में ऊर्जा व पूंजी का निवेश होगा। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। मिथ्यापवाद, अनावश्यक भ्रमण से बचे रहें। **अक्टूबर:-** कानूनी दांव-पेच से बचे रहें। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में मन लगा रहेगा। व्यस्तता के बीच हंसी-खुशी के पल निकलेंगे। आप इच्छित उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। **नवम्बर:-** कठोर परिश्रम से रुका हुआ काम बन जायेगा। ललित कलाओं में रुझान बढ़ेगा। अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ होगा। योजना किसी के सहयोग से पूर्ण होगी। **दिसम्बर:-** अचानक मिली सफलता से हर्ष होगा। वाणी पर नियन्त्रण बनाए रखें। पुराने रिश्तेदारों, मित्रों के मिलने से खुशी होगी। लेन-देन में सावधानी बरतें। **जनवरी:-** आप इच्छित उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। अजनबी से सचेत रहें। लाभ से खर्च अधिक हो सकता है। युवावर्ग को सफलता मिलेगी। **फरवरी:-** नई योजना शुरु कीजिए, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। पदोन्नति में साथी रुकावट पैदा करेगा। मेहमानों के आगमन से हर्ष होगा। **मार्च:-** रुपये-पैसे का सोच विचारकर इस्तेमाल करें। कोई नया काम प्रारम्भ होगा। व्यर्थ की राजनीति में भाग न लें। पुराने रोग-ऋण से छुटकारा मिल जायेगा।

वृष:- इ, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल:- किसी परिचित से मनमुटाव हो सकता है। देवदर्शन से लाभ मिलेगा। अनावश्यक दुश्चिन्ताओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। **मई:-** माह आपके लिए सामान्य फलप्रद है। रुपये-पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। संतानसुख मिलेगा। पुराने रोग-ऋण से छुटकारा होगा। **जून:-** काफी समय से टल रही योजनाऐं पूरी होंगी। इष्ट-मित्रों की सूचना प्राप्त होगी। असीमित आकांक्षाऐं दुःखों का सृजन करेंगी। समय व्यर्थ न गंवाऐं। **जुलाई:-** मेहनत के चलते सेहत का ख्याल रखें। संतान पक्ष की ओर से नये अनुभव होंगे। मकान, वाहन, पशु लेन-देन में रुचि बनेगी। विवाद से बचें। **अगस्त:-** कहीं से अचानक शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। कार्यक्षेत्र में तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। बिगड़ते परिवेश में पुराने संपर्क फायदा देंगे। **सितम्बर:-** मास आपके लिए सामान्य फलदायी है। वाहन चलाने में सावधानी बरतें। लाभ-खर्च का संतुलन बनाए रखना श्रेयस्कर है। **अक्टूबर:-** नौकरीपेश वर्ग फायदे में रहेगा। दूर समीप की यात्रा का सुयोग है। तरक्की से मन प्रसन्न होगा। सह परिवारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। **नवम्बर:-** मास आपके लिए कुछ विशेषताएं लायेगा। मंगलोत्सव मिलन, आमोद-प्रमोद बढ़ेगा। प्रेम प्रसंग का चक्कर भी चल सकता है। **दिसम्बर:-** लम्बी लाभकारी योजनाओं में निवेश होगा। मनोरंजन का अवसर मिलेगा। आर्थिक चिंता से मुक्ति मिलेगी। देश-देशान्तर से समाचार आयेगा। **जनवरी:-** व्यवसाय के क्षेत्र में नया मार्ग प्रशस्त होगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में मन रमेगा। लाभालाभ समान जानें। जोखिमपूर्ण कार्य में हिस्सा न लें। **फरवरी:-** कार्यक्षेत्र में जीवनसाथी व साझीदारों का सहयोग मिलेगा। सद्कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन को शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा वर्ग को उन्नति मिलेगी। **मार्च:-** स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई नई परेशानी जन्म ले सकती है। वाद-विवाद में शत्रु पराभव से हर्ष होगा। सहपरिवारियों के पूर्ण सहयोग से नवनिर्माण का विचार पूरा होगा।

मिथुन:- का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

अप्रैल:- घर में नये मेहमान के आने से खुशी होगी। चालू योजना कठिनाई से पूर्ण होगी। न चाहते हुए भी कहीं जाना होगा। शत्रु से सचेत रहें। **मई:-** किसी खास उपलब्धि से मन खुश होगा। सेहत पर मौसम का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। मन की नवीन योजनाएं साकार रूप लेंगी। दिनचर्या बनाए रखें। **जून:-** मास नई खोज, रचनात्मक कार्य के लिए अच्छा रहेगा। राज-समाज में सम्मान बढ़ेगा। प्रतियोगिता में जीत हो सकती है। नये सम्पर्क बन सकते हैं। **जुलाई:-** सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी। आत्म अनुसंधान से कई समस्याएं सुलझ सकती हैं। नवनिर्माण तथा देवदर्शन का विचार पूरा होगा। **अगस्त:-** उन्नति की ओर प्रयासरत रहें, समय सानुकूल है। महत्वपूर्ण सफलता से मन उत्साहित होगा। दाम्पत्य वैमत्य परेशानी का कारण बनेगा। **सितम्बर:-** नवीन व्यवसाय, राजनीतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। प्रगतिपथ पर पूर्णविश्वास से बढ़ें। साझीदारों से मन-मुटाव समय रहते ही सुलझा लें। **अक्टूबर-** धार्मिक यात्रा संकीर्तन का विचार बनेगा। उत्तरार्ध में योजनापूर्ति से लाभ, किन्तु मनोमालिन्य भी सम्भव है। धन-ऐश्वर्य वृद्धि से शत्रुओं को ईर्ष्या होगी। **नवम्बर:-** नवीन क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएं हैं। भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। बच्चों का समय खेलकूद में बीतेगा। व्यापार में सूझबूझ से काम लें। **दिसम्बर:-** पुरानी निराशा समाप्त होकर नया प्रगतिपथ मिलेगा। महत्वपूर्ण सफलता मिलने से हर्ष होगा। आय का कुछ भाग पुण्यार्जन पर खर्च होगा। **जनवरी:-** राजनीतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। मिथ्यापवाद, अनावश्यक भ्रमण से बचे रहें। अपने कर्त्तव्य सही ढंग से निभाएं। **फरवरी:-** भूमि, वाहन, पशु लेन-देन का विचार बनेगा। धर्म के प्रति आस्था जाग्रत होगी। अत्याधिक व्यय क्षोभ पैदा करेगा। **मार्च:-** अधिक व्यय होने के साथ लाभ के अवसर भी आयेंगे। नई मित्रता उमंग पैदा करेगी। किसी की व्यर्थ बातों पर ध्यान न दें।

कर्क:- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल:- व्यवसाय, कार्यालय व्यस्तता के चलते दिनचर्या अव्यवस्थित न होने दें। अचानक धन लाभ होगा। पुराने विवाद का पटाक्षेप हो जायेगा। **मई:-** विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। बड़े अधिकारी से सहयोग मिलेगा। घर-गृहस्थी में सरसता बनाए रखें। सोचे काम बन जायेंगे। **जून:-** कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहें। यातायात के साधन सुलभ होंगे। रुका हुआ धन मिल जायेगा। स्वास्थ्य कुछ नरम चलेगा। अच्छा समाचार आयेगा। **जुलाई:-** यह मास अतिमहत्वाकांक्षी प्रवृत्ति वालों के लिए शुभ है। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। परिवार में सरसता बनाए रखें। अजनबियों से सावधान रहें। **अगस्त:-** मास सामान्य फलदायक है। स्वास्थ्य की परेशानी हो सकती है। पूर्वापेक्षा लाभ अधिक होगा। अकस्मात व्यय का सामना भी करना पड़ सकता है। **सितम्बर:-** ग्रहानुसार आपके भाग्य का सितारा चमकेगा। असामान्य परिस्थितियों से घबराएं नहीं। परिवार से अपेक्षित सहयोग मिलेगा। **अक्टूबर:-** अनावश्यक दु:श्चिन्ताओं से मन क्षुब्ध होगा। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद से बचे रहें। नई उपलब्धियाँ मेहनत करायेंगी। सामाजिक उत्तरदायित्व में वृद्धि होगी। **नवम्बर:-** मास में खट्टे-मीठे अनुभव मिलेंगे। बेकार के झंझटों से बचे रहें। महिलावर्ग का समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। मर्यादारहित व्यवहार क्षोभ का कारण बन सकता है। **दिसम्बर:-** कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभानी पड़ सकती है। घूमने-फिरने में अधिक समय व्यतीत न करें। तुरंत निर्णय अप्रत्याशित लाभ देगा। **जनवरी:-** साहित्य, संगीत व ललित कलाओं में मन लगा रहेगा। प्रतियोगिता में जीत आपकी होगी। नौकरीपेशा लोगों का श्रमसंघर्ष बढ़ेगा। **फरवरी:-** अच्छी खबर मन खुश करेगी। लम्बी बीमारी से पीछा छूट जायेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। कानूनी झगड़ा सुलझ जायेगा। **मार्च:-** नवनिर्माणकारी योजनाओं में मस्तिष्क उलझा रहेगा। बच्चों का ध्यान खेलकूद से दूर पढ़ाई में लगेगा। पुराने दोस्तों का सहयोग अपेक्षित जानें।

सिंह:- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल:- विवादास्पद प्रकरण समाप्त होगा। गुप्तशत्रु, ईर्ष्यालु साथी से सावधान रहें। ग्रहचाल का प्रभाव मध्यम रहेगा। पढ़ाई-लिखाई में मन रमा रहेगा। कुचक्र रचना से बचें। **मई:-** कर्मोद्योग में तत्परता बनी रहेगी। परिवार में सरसता का वातावरण बनेगा। निम्नस्तरीय जनसम्पर्क से लाभ तो उच्च अधिकारी से हानि सम्भव है। **जून:-** समय का सही उपयोग करने वालों का सितारा बुलन्द होगा। यात्रा मंगलोत्सवों का संयोग बन सकता है। राजसमाज में सम्मान बढ़ेगा। साथी से सुख मिलेगा। **जुलाई:-** लम्बीयात्रा, भूमि वाहनादि का विचार पूरा होगा। प्रतियोगी की गतिविधियों से सावधान रहें। महिलावर्ग को खासा फायदा होगा। जिम्मेदारियाँ भी बढेंगी। **अगस्त:-** व्यापारी वर्ग को कुछ मुश्किलें आ सकती हैं। किसी की कही सुनी बातों पर ध्यान न दें। धार्मिक कार्यों में यश बढ़ेगा। नौकरी संबंधी सूचना मिलेगी। **सितम्बर:-** जमा खाता बढ़ेगा। देवदर्शन से लाभ मिलेगा। सांसारिक सुख का साधन मिल सकता है। अच्छे समाचार से मन प्रसन्न होगा। स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करें। **अक्टूबर:-** गोचर के शुभ प्रभाव से सफलता मिलेगी। उत्तरदायित्व में वृद्धि, अस्थिरता को जन्म दे सकती है। वाहनादि का सुख मिलेगा। स्थान परिवर्तन सुखद। **नवम्बर:-** घर-गृहस्थी की समस्या समय रहते सुलझा लें। बड़े बुजुर्गों की अवमानना न करें। लाभ के अवसर सामान्य हैं। व्यर्थ विवाद हो सकता है। **दिसम्बर:-** खरीद-फरोख्त के धंधे में मुनाफा होगा। शुभ निमन्त्रण मिलेगा। बच्चों पर पढ़ाई का भार बढ़ सकता है। नये सम्पर्कों पर जल्दी यकीन न करें। **जनवरी:-** धार्मिक सामाजिक काम से कहीं जाना होगा। समय के मुताबिक कार्य करें। विरोधियों से सावधान रहें। पड़ौसियों से विवाद उत्पन्न हो सकता है। **फरवरी:-** किसी अनजान व्यक्ति से कुछ फायदा होगा। कर्मोद्योग में नया समझौता लाभ देगा। स्वजनों से सुख मंगल कार्यों की खुशी होगी। **मार्च:-** प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। दोस्तों से अच्छी पटेगी। प्रकृति के सानिध्य में सुख मिलेगा। भूमि, वाहन, पशुपक्षी की खरीद-फरोख्त होगी। नया राजनीतिक संबंध अच्छा रहेगा।

कन्या:- टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल:- व्यवसायिक शैथिल्यता, ग्रहप्रपंच से अन्तर्मन क्षुब्ध रहेगा। पुराने रोग से छुटकारा मिलेगा। सुख की सामग्री खरीदी जायेगी। पारिवारिक खुशी का समाचार मिलेगा। **मई:-** यह मास सामान्य रहेगा। सामाजिक संपर्क फायदेमंद रहेगा। किसी खास स्थान की यात्रा से सुकून मिलेगा। सेहत का ख्याल रखें। **जून:-** लाटरी आदि का लाभ हो सकता है। लेन-देन का विचार पूरा होगा। भौतिक विकास का योग अच्छा है। विवाहादि उत्सवों में जाना हो सकता है। **जुलाई:-** मास के उत्तरार्ध में किसी समस्या का सामना करना पड़ेगा। भगवद्भक्ति से मार्ग प्रशस्त होगा। किसी खुले स्थान पर घूमने जाने का मौका मिलेगा। **अगस्त:-** रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। प्रयत्न करने पर मनोरथ सिद्धि होगा। लाभहानि का समान योग है। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। **सितम्बर:-** बड़े अधिकारी से सावधान रहें। क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखें। नए संबंध से भाग्य चमकेगा। सामाजिक सम्मान मिलेगा। लम्बी यात्रा न करें। **अक्टूबर:-** यश-कीर्ति का विस्तार होगा। समय के अनुकूल कार्य करें। नौकरी पेशा लोगों का श्रमसंघर्ष बढ़ेगा। बाल बच्चों में हास्यरस बढ़ेगा। नये काम में सफलता तय जानें। **नवम्बर:-** असामान्य परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा। रोजगार में मदद लेनी पड़ सकती है। पारिवारिक कठिनाइयों से गुजरना पड़ सकता है। **दिसम्बर:-** देश-देशान्तर से शुभ समाचार मिलेगा। अपनी भूल का अहसास होगा। अनावश्यक यात्रा का विचार छोड़ दें। प्रेमप्रसंग का चक्कर चलेगा। घर-गृहस्थी का विचार पूरा होगा। **जनवरी:-** नवीन व्यवसाय, राजनीतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। मंगलोत्सव की सूचना मिलेगी। गृहस्थ जीवन में कठिनाई आ सकती है। **फरवरी:-** बच्चों को प्रिय वस्तु की प्राप्ति से खुशी मिलेगी। सरकारी लाभ की संभावना कम है। नए काम का विचार पूरा हो जायेगा। सुखोपभोग के साधन मिलेंगे। **मार्च:-** रुका हुआ धन मिलेगा। शुभ समाचार प्राप्त होगा। व्यक्तित्व में निखार आयेगा। आय-व्यय का संतुलन बना रहेगा। आलस्य का त्याग करें।

तुलाः- रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैलः- मास आपके लिए सामान्य फलदायक है। परम मित्र के सहयोग से नया काम बनेगा। कुछ समय बेमतलब की उलझनों में व्यतीत होगा। **मईः-** नये मेहमान के आने से गृहखर्च में बढ़ोत्तरी सम्भव है। व्यवसाय में तत्परता बनी रहेगी। प्रतियोगिता में विजय से मन प्रसन्न होगा। रुका धन मिलेगा। **जूनः-** तीव्र लाभ की उच्चाकांक्षाऐं मन में जन्म लेंगी। आर्थिक मामले में सहयोग अपेक्षित रहेगा। परिवार के लिए कुछ नया खरीदा जायेगा। गुप्त षड्यन्त्रकारी से सचेत रहें। **जुलाईः-** सामाजिक धार्मिक काम से कहीं जाना होगा। कुछ समय ज्ञानवर्धन में बीतेगा। नये काम में आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। समाज में रुतबा बढ़ेगा। **अगस्तः-** मास के पूर्वार्ध में योजनापूर्ति से लाभ होगा। घर-गृहस्थी की कोई प्रिय वस्तु खरीदी जायेगी। उच्चाधिकारी से विवाद होने की संभावना है। **सितम्बरः-** चल रहे साम्यक कार्यों में सजगता बरतें, पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। रचनात्मक कार्यों की ओर रुझान होगा। प्रेमप्रसंग के चक्कर में नुकसान उठाना पड़ सकता है। **अक्टूबरः-** असंयम. भाग्योन्नति में व्यवधान कारक है। विद्युत उपकरण, वाहनादि चलाने में सचेत रहें। उत्तरदायित्व वृद्धि शुभफलदायक है। **नवम्बरः-** मंगलोत्सवों में जाने का अवसर मिलेगा। यशोपलब्धि से पड़ौसी ईर्ष्या करेंगे। प्रतियोगिता परिणाम सुखद रहेगा। उच्चअधिकारी राजनेता से सन्निकटता श्रेष्ठ नहीं। **दिसम्बरः-** साहित्य-संगीत में रुचि बनेगी। नवीन व्यवसाय, राजनीतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। पुराने मित्र से मिलन, इच्छित सहयोग से मन खुश रहेगा। **जनवरीः-** अति महत्वाकांक्षा दुःख का कारण बन सकती है। मेहनत परित्वेन सफलता मिलेगी। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। यात्रा का अवसर मिलेगा। **फरवरीः-** मनोरंजन की सुविधा मिलेगी। कर्मोद्योग में तत्परता बनी रहेगी। पड़ौसियों से संबंध सुधरेंगे। समय रहते समस्या सुलझ जायेगी। खेलकूद में रुचि बढ़ेगी। **मार्चः-** आत्मविश्वास संजोएं, संयोग से कल्पना साकार हो सकती है। वाणी एवं क्रियाकलापों पर नियन्त्रण रखें। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृश्चिकः- तो,ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैलः- ग्रहचाल भाग्य विकास में सहायक है। कार्यारम्भ कीजिए समस्या का समाधान समय पर हो जायेगा। संयोग वियोग क्षोभ का कारण बन सकता है। **मईः-** व्यवसायिक उन्नति से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। सुख-सुविधा, भोगविलास में समय व्यतीत होगा। उच्चाधिकारी की घनिष्ठता से लाभ उठायें। आयात-निर्यात् फायदेमंद रहेगा। **जूनः-** ग्रहचाल अनुकूल रहेगी। बढ़ते कामकाज की चिन्ता रहेगी। परिवार में सरसता का संयोग बनेगा। व्यर्थ के लफड़ों से बचे रहें। शत्रु नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करेगा। **जुलाईः-** इस माह नाम और दाम दोनों का लाभ होगा। किसी खास काम से यात्रा पर जाना पड़ेगा। लम्बी योजना का शुभारम्भ होगा। **अगस्तः-** जनसम्पर्क अच्छा रहेगा। दीर्घकालीन विवाद समाप्त होगा। प्रियजन मिलन से मन प्रसन्न होगा। पारिवारिक अन्तर्विरोध घटनाचक्र को जन्म दे सकता है। **सितम्बरः-** दोस्तों के साथ लम्बी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। व्यापारी तबके को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साहित्य संगीत में मन लगेगा। दाम्पत्य में सरसता बनाए रखना श्रेष्ठ है। **अक्टूबरः-** सामाजिक संपर्क सुधरेगा। प्रतियोगिता में नम्बर मिलेगा। लम्बी यात्रा और देवदर्शन का लाभ उठायेंगे। घर में मेहमान का आगमन होगा। **नवम्बरः-** पुराने परिचितों से अच्छी पटेगी। खरीद-फरोख्त का धंधा पनपेगा। सुसंगत विचारधारा और स्पष्टवादिता आपके व्यक्तित्व में चार चांद लगा सकती है। कुछ विशेष उतार-चढ़ाव होगा। **दिसम्बरः-** राजकीय सहयोग अपर्याप्त रहेगा। अनियमित व्यवहार से मन दुःखेगा। व्यापारी तबके को लाभ होगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। **जनवरीः-** पढ़ाई या व्यवसाय हेतु परदेश भ्रमण का लाभ मिल सकता है। अभिष्टसिद्धि से प्रसन्नता मिलेगी। स्वास्थ्य कुछ नरम चलेगा। कानूनी विवाद में नया मोड़ आयेगा। **फरवरीः-** कारोबार में प्रगति होगी, किन्तु शत्रुभय भी रहेगा। रुके हुए कार्यों को बनाने का प्रयास करें। अनावश्यक भागदौड़ से बचें। **मार्चः-** मास में नई योजनाऐं पूरी होंगी। आगन्तुकों से गृहखर्च में वृद्धि सम्भव है। कारोबार अच्छा चलेगा। परिजनों से सहयोग मिलेगा।

धनुः- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे

अप्रैलः- नवीन कार्य की योजना मस्तिष्क में आकार लेगी। दोस्तों से मतभेद चल सकता है। नए मेहमान की खुशी होगी। गृहस्थी में लाभ-खर्च का सन्तुलन बनाए रखें। **मईः-** इस माह लाभ-खर्च बराबर रहेगा। कोई तुम्हें गुमराह करने की कोशिश करेगा। पत्नी और बाल-बच्चों की बात अनसुनी न करें। विरोधियों की गतिविधियाँ पहचानें। **जूनः-** मास शुभफलदायक है। कानून सम्बन्धी विवाद में विजय मिलेगी। भूमि वाहन लेन-देन का सौदा पक्का होगा। स्थान परिवर्तन से लाभ होगा। **जुलाईः-** साहित्य संगीत में मन लगेगा। नित नएपन का अहसास होगा। नया मेल-मिलाप लाभप्रद रहेगा। कुछ समय व्यर्थ ही सोच विचार में बीतेगा। जमा खाते में बढ़ोत्तरी होगी। **अगस्तः-** हास्यरस, आमोद-प्रमोद में समय बीतेगा। दूर-दराज की यात्रा का संयोग बनेगा। दुश्चिंताओं को हावी न होने दें। व्यर्थ राजनीतिक परिचर्चा त्याग दें। **सितम्बरः-** विचाराधीन काम देर से बनेगा। किसी नई भाषा में रुचि उत्पन्न हो सकती है। अच्छी खबर मन खुश करेगी। **अक्टूबरः-** पुराने दोस्तों के मिलने से मन में नई उमंग आ सकती है। सांसारिक सुखोपभोग, सम्मान वृद्धि, भाग्यविकास का सुयोग चल रहा है। नई खोज में रुचि बढ़ेगी। **नवम्बरः-** रुका हुआ धन देर से मिलेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ होगा। नए लोगों से सम्पर्क बनेंगे। **दिसम्बरः-** सामाजिक प्रशंसा एवं श्रीवृद्धि से मन प्रसन्न होगा। घर में त्यौहार जैसा माहौल रहेगा। रोजगार में पर्याप्त उन्नति होगी। गया हुआ धन मिलेगा। **जनवरीः-** संकीर्तन व धार्मिक यात्रा का विचार बनेगा। व्यर्थ के झगड़े-झमेलों से बचे रहें। बच्चों की साहित्य संगीत में रुचि बनेगी। उच्च अधिकारी से टकराव संभव है। **फरवरीः-** कानूनी विवाद से राहत मिलने की खुशी होगी। आमोद-प्रमोद के साधन सुलभ होंगे। नवीन क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएं बनेंगी। साझीदार से मनमुटाव हो सकता है। **मार्चः-** सत्कर्मजन्य पुण्यार्जन से अभिष्ट सिद्धि मिलेगी। परिजन विछोह मन को दुःखायेगा। राजनीतिक गतिविधियोंमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें।

मकर:- भो, ज, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खे, खो, गा, गी

अप्रैल:- आशानुसार यह मास श्रेष्ठ रहेगा। गृहस्थी की समस्याओं का निवारण सूझ-बूझ से करें। इष्टकृपा, संयम परित्वेन लाभ होगा। गृहप्रपंच से अन्तर्मन क्षुब्ध रहेगा। **मई:-** भाग्य का सितारा चमकेगा। भौतिकवादी दृष्टिकोण के चलते विलासिता की वस्तुओं पर अपव्यय न करें। रोग, चिन्ता व मानसिक परेशानी रहेगी। **जून:-** यह मास कुछ विशेषताएं लायेगा। मधुरता के चलते कटुता के अनुभव होंगे। पुराने मित्र मिलने पर खुशी होगी। भूमि वाहनादि लेन-देन का योग बनेगा। **जुलाई:-** स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें। मन की उलझनों का समाधान प्रकृति स्वयं करेगी। लम्बी यात्रा से कष्ट सम्भव है। लाभ के अवसर मिलेंगे। **अगस्त:-** भाग्य का सितारा बुलन्द होगा। विषय विशेष की विशेषज्ञता व्यक्तित्व विकास में सहायक है। लाभ-खर्च का सन्तुलन बनाए रखें। किसी निकट सम्बन्धी से अनबन हो सकती है। **सितम्बर:-** अवरोध-विरोध के चलते संकल्पित कार्य पूर्ण होगा। अनावश्यक श्रम से मानसिक परेशानी हो सकती है। कार्य विशेष से समाज में अच्छी छवि बनेगी। **अक्टूबर:-** मास सामान्य फलदायक है। कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। बढ़ती अभिलाषाएं अनैतिक कार्यों की ओर प्रेरित करेंगी। बच्चे प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करेंगे। **नवम्बर:-** मास का फल कर्मयोगियों के लिए श्रेष्ठ है। गुप्त षड्यन्त्रकारियों से सावधान रहें। पारिवारिक कहा-सुनी मानसिक विक्षेप का कारण बनेगी। **दिसम्बर:-** महिलावर्ग के लिए समय अनुकूल है। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद से बचे रहें। विरोधी परेशान कर सकता है। **जनवरी:-** कार्यक्षेत्र में शुभाशुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। किंचित अवरोध-विरोध के बाद आर्थिक उन्नति का सुयोग है। दाम्पत्य जीवन में सरसता बनेगी। **फरवरी:-** लाभालाभ के योग समान हैं। आस्थावान पुरुषों का साथ श्रेष्ठ रहेगा। अधिक व्यय होने के साथ-साथ लाभ के अवसर भी आयेंगे। **मार्च:-** पुराने झगड़े-झंझटों से मुक्ति मिलेगी। अधिकारी वर्ग से अच्छी सांठ-गांठ रहेगी। निराशाजनक विचारों से बचे रहें, समय सानुकूल है।

कुम्भ:- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल:- मास की ग्रहचाल आपके अनुरूप रहेगी। असमंजस की मनःस्थिति में सूझबूझ से काम लें। बच्चों को प्रियवस्तु मिलने से खुशी होगी। मित्र सहयोग मिलेगा। **मई:-** चल-अचल संपत्ति की खरीद-फरोख्त में सावधानी बरतें। गोचर ग्रहानुसार लाभ की संभावना है। करीबी रिश्तेदारों से मधुर संपर्क बनाए रखें। **जून:-** मास समान फलदायक है। व्यवसायिक निर्णय लेने में सावधानी बरतें। पेड़-पौधों और बागवानी से लगाव होगा। रुपये-पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। **जुलाई:-** अनावश्यक इच्छाएं नियंत्रित रखें। कार्य योजनाएं बनती-बिगड़ती रहेंगी। सामाजिक संपर्क से काम बनेगा। इस मास में धन लाभ का सुयोग है। समय का सदुपयोग करें। **अगस्त:-** रोजमर्रा के कामों में नियमितता बनाए रखें। धर्म और आध्यात्म का मार्ग सुबुद्धि देगा। अवरोध-विरोध के चलते संकल्पित कार्य पूर्ण हो जायेगा। **सितम्बर:-** मास के पूर्वार्ध का हर दिन एक नई उमंग लेकर आयेगा। काम के चलते सेहत को नजरअंदाज न करें। संकल्पित योजना समय पर पूर्ण होगी। **अक्टूबर:-** रचनात्मक कार्यों से लगाव होगा। विपरीत परिस्थितियों में भी क्रोध पर काबू रखें। गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। राजकीय मदद मिलेगी। अचानक लाभ हो सकता है। **नवम्बर:-** स्पष्टवादी विचारधारा दूरगामी फलदायक है। समय को ध्यान में रखकर कार्य करें। पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म देगी। **दिसम्बर:-** मास मिश्रित फलदायक है। दिनचर्या अव्यवस्थित होगी। सफलता के मध्य असफलता के योग बन रहे हैं। व्यवसाय में उन्नति के अवसर चूकें नहीं। **जनवरी:-** किसी सरकारी संस्था से दूरगामी लाभ हो सकता है। कुछ विशेष कर दिखाने की उधेड़बुन में समय बीतेगा। किसी परिचित से मन-मुटाव भी हो सकता है। **फरवरी:-** विवेकपूर्ण कार्य संपादन से लाभ मिलेगा। अच्छे समाचार से मन खुश होगा। नये कार्यों में ऊर्जा व पूंजी का निवेश होगा। बढ़ते जनसंपर्क से लाभ। **मार्च:-** मास में कारोबार में उन्नति होगी। समयानुसार कार्य पूरे करने का प्रयास करें। स्वास्थ्य कुछ ढ़ीला चलेगा। परस्पर मनोमालिन्य से बचे रहें।

मीन:- दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

अप्रैल:- प्रियजन मिलन से खुशी होगी। वर्त्तमान में परिश्रम का फल भविष्य में मिलेगा। मास के मध्य में आर्थिक तंगी व स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। **मई:-** सेहत पर मौसम का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। महिलावर्ग को आर्थिक लाभ होगा। व्यवसायिक समझौता हो सकता है। संदिग्ध व्यक्ति से समझौता न करें। **जून:-** नई योजनाएं बनाने में दिमाग उलझा रहेगा। ग्रहचाल के अनुसार स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। गृहस्थी में सामंजस्य बनाए रखना बेहतर है। चिरस्थाई योजना में धन खर्च होगा। **जुलाई:-** विवादास्पद प्रकरण अन्तर्विरोध को जन्म दे सकता है। सत्प्रयत्न से मनोरथ सिद्ध होगा। लम्बी योजनाओं में पूंजी खर्च होगी। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। **अगस्त:-** मिथ्यापवाद व्यर्थ भ्रमण से बचे रहें। राजकीय आश्वासन अधूरे भाग्य की विडम्बना ही जानें। व्यवसाय में तत्परता बनी रहेगी। पारिवारिक कहासुनी मानसिक विक्षेप का कारण बनती है। **सितम्बर:-** पराक्रम वृद्धि से शत्रु पराजित होगा। कार्यालय में अधिकारी से अनबन सम्भव है। दाम्पत्य में सरसता बनाए रखें। मंगलोत्सवों में जाना होगा। **अक्टूबर:-** माह महत्वाकांक्षी प्रकृति वालों के लिए शुभफलदायी है। विवेकपूर्ण कार्य संपादन से लाभ होगा। कानूनी एवं घर-गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। **नवम्बर:-** लम्बी योजना में पूंजी खर्च होगी। काम की व्यस्तता के चलते परिवार की उपेक्षा न करें। धार्मिक विवाद में उलझना श्रेयस्कर नहीं है। स्वास्थ्य कुछ नरम चलेगा। **दिसम्बर:-** सफलता के मध्य असफलता के योग बन रहे हैं। जनसम्पर्क, संचार क्षेत्र में संभावनाएं तलाशें। बच्चे खेलकूद तो स्त्रियाँ हास्यरस में विभोर रहेंगी। **जनवरी:-** अभिष्टसिद्धि से प्रसन्नता होगी। वाद-विवाद में शत्रु पराभव से खुशी। रोजगार में उन्नति के अवसरों पर चूके नहीं। ससुराल का समाचार आयेगा। **फरवरी:-** अचानक लाभालाभ के योग बन रहे हैं। कारोबार में नया समझौता होगा। राजनीतिक सम्पर्क फायदा देंगे। **मार्च:-** विशेष कार्य बनेंगे। देश-देशान्तर से समाचार मिलेगा। बढ़ते जनसम्पर्क का फायदा उठावें। गृहणियाँ साज सज्जा में व्यस्त रहेंगी।

आज का दिन कैसा रहेगा।

इस प्रश्न का उत्तर आप स्वयं ज्ञात कर सकते हैं। निम्नलिखित कालानल चक्र के द्वारा जिसे आप ध्यान से कोरे कागज, स्लेट या तख्ती पर लिख लीजिए।

शुभाशुभ ज्ञानार्थ चन्द्र कालानल चक्र

उपरोक्त चक्र में त्रिशूल के मध्य में जहाँ १ लिखा है, वहाँ पंचांग में देखकर आज का नक्षत्र अर्थात् जिस दिन का फल जानना चाहते हो, लिखकर क्रमशः अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों के नाम लिखकर देखिए। आपका जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र चक्र के किस भाग में कहाँ पड़ा है। आपसे अन्य कोई शुभाशुभ फल जानने के लिए प्रश्न कर रहा है तो उसका नक्षत्र चक्र में कहाँ पड़ता है। उसके अनुसार फल समझना चाहिए। आपके नाम का नक्षत्र त्रिशूल पर आन पड़े तो हानि या कष्ट हो। त्रिशूल के नीचे बाहर के स्थान में से किसी एक स्थान में आ जाए तो मध्यम फल जानना चाहिए। जिस दिन जन्म नक्षत्र त्रिशूल से रहित अन्दर के २६, ४, ५, ११, १२, १८, १९, २५ इन स्थानों में से किसी स्थान पर आ जाए, उस दिन लाभ, सुखोपभोग, विजय, बौद्धिक विकास अथवा यशोपलब्धि मिलेगी। मन खुश रहेगा। नई स्फूर्ती का संचार होगा।

अग्निवास ज्ञानाय कोष्ठक

पक्ष	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुक्ल पक्ष	१	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	२	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	३	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	४	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	५	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	६	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	७	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	८	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	९	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	११	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१२	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१३	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१४	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१५	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
कृष्ण पक्ष	१	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	२	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	४	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	५	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	६	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	७	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१५	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

साथ के अग्निवास कोष्ठक में शुक्ल और कृष्ण पक्ष की १५-१५ तिथियाँ लिखी हैं। आड़ी पंक्ति में वार अंकित हैं। तिथि व वार के सामने अग्निवास लिखा हुआ है, सो अग्निवास यज्ञादि (हवन) में पृथ्वी पर शुभ होता है। आकाश में प्राणनाशक, पाताल में धनैश्वर्य की हानि करता है। अग्निवास का विचार किन-किन कार्यों में करें- **लक्षकोटि हवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविद्यौ। देवखात भवने सुरालयादग्नि चक्रमवलोकयेत्सुधीः॥** इनमें इसका विचार न करें- **विवाह यात्राव्रतगोचेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगाद्यैः। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नेवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥**

अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन
दिनांक 20-21 जून 2009

नया प्रकाशन

श्री ब्रजराज

कालदर्शक पंचांग

दैनिक उपयोगी सामग्री सहित प्रकाशित

प्रत्येक पृष्ठ पर देवी-देवताओं के रंगीन चित्र, विक्रम सम्वत्, ईस्वी सन, शक सम्वत्, अंग्रेजी तारीख, चैत्र आदि मास, तिथि, प्रमुख व्रत एवं त्यौहार, सरकारी छुट्टियाँ, विवाह, व्यापार, वाहन एवं वास्तु मुहूर्त्त, दूध व अखबार का हिसाब, भद्रा, पंचक और गण्ड मूल, कुण्डलियाँ एवं ग्रह स्थिति, बारह महीने का राशिफल, कार्यसिद्धि योग, सर्वदोष नाशक रवियोग, द्वि-त्रिपुष्कर योग, रविपुष्य गुरुपुष्यामृत योग, तिथि व नक्षत्र का समाप्तिकाल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश तथा दैनिक सूर्योदयास्त, ग्रहण विवरण, शनि की साढ़ेसाती व ग्रह चाल का प्रभाव, जन उपयोगी बातें, गृहणी की रसोई, चिकित्सा, गौरख पतरा यात्रा मुहूर्त्त, चौघड़िया मुहूर्त्त, सूर्य चन्द्र आदि नवग्रह के दान रत्न एवं उपाय, महालक्ष्मी पूजन के श्रेष्ठ मुहूर्त्त, यंत्र-तंत्र-मंत्र, स्वप्न विचार, गोचर ग्रहानुसार संसार का घटना चक्र साथ ही अनेक नए एवं महत्वपूर्ण विषय।

१. लघु(टिप्पणी)- जन्मतिथि, तारीख, समय, नक्षत्रादि, राशिचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली का विवरण होता है। रु.१०१/-

२. जन्माक्षर पत्रिका- जन्म विवरण (तिथि,नक्षत्र,योगादि) राशिचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली के साथ विंशोत्तरी महादशा व अतिसंक्षिप्त फलमी लिखा होता है। रु.२५१/-

३. जन्माङ्ग पत्रिका- जन्मविवरण(तिथि,नक्षत्रादि) राशिचक्र, लग्न-चन्द्रकुण्डली,सूर्यादिस्पष्टग्रह,विंशोत्तरी महादशा,अन्तर्दशा और साधारण भविष्यफल का वर्णन होता है। रु. ७५१/-

४. सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका- जन्म विवरण (तिथि,नक्षत्रादि) राशिचक्र, घातचक्र, लग्न,चन्द्र व चलित कुण्डलियाँ,तत्कालीन सूर्यादि स्पष्टग्रह, होरा-द्रेष्काणादिकुण्डलियाँ, पंचधामैत्रिकोष्ठक, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनीदशा व अधिक विस्तार से भविष्यफल लिखा जाता है। यह ४० पृष्ठ की पुस्तकाकार हस्तलिखित जन्मपत्रिका बनाई जाती है। रु. २१०१/-

५. कुण्डली मिलान- वर-वधु जन्मपत्रिका मिलान शास्त्रोक्त विधि से किया जाता है। रु.२५१/-

६. शुभ मुहूर्त्त- गृहप्रवेश, दुकान, प्रतिष्ठान, वाहन खरीदने आदि सभी प्रकार के शुभ मुहूर्त्त बताने की फीस। रु.२५१/-

७. कम्प्यूटर जन्मपत्रिका- अत्याधुनिक कम्प्यूटर साफ्टवेयर द्वारा भी बनाई जाती हैं, जिनमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्रादि) राशिचक्र, घातचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली, सूर्यादि स्पष्टग्रह, होरा-द्रेष्काणादि कुण्डलियाँ, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनी दशा तथा जीवनके सभी पहलुओं पर विवेचन होता है। रु.५५१/-

नोट:- जन्मतारीख,माह,सन्, जन्म समय,जन्मस्थान,माता-पिताका नाम आदि विवरण स्पष्ट लिखकर भेजें। विदेश में जन्मे जातकों की फीस दोगुनी ली जाती है। जन्मपत्रिका बनाने की फीस पहले ही ली जाती है।

हमारा अन्य लोकप्रिय प्रकाशन

आपका अन्यन्त प्रिय नये सम्वत् का श्री राजधानी पंचांग कम्प्यूटर कम्पोजिंग द्वारा सुन्दर साज-सज्जा से सुशोभित, पूर्ववत् साइज, अधिक पृष्ठ, सुन्दर डिजायन, मोटे-मोटे, अक्षरों में छपकर तैयार है। आप अपने निकटवर्ती दुकानदार से प्राप्त कर सकते है, अथवा पंचांग कार्यालय से सम्पर्क करके मंगा सकते है।

★ श्री राजधानी पंचांग की विशेषताएँ ★

श्री राजधानी पंचांग में प्रतिवर्ष नये विषयों का समावेश कर आधुनिक बनाने का प्रयास किया जाता है। ज्योतिषियों के लिए नई सारणियाँ बना दी जाती है, जिनकी सहायता से देश-विदेश की कुण्डली निर्माण कर आप घंटों के काम को मिनटों में कर सकते है। नये शोधपूर्ण लेखोंके कारण इसकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आप अपनी प्रति पहले ही सुरक्षित करा लें।

श्री ब्रजभूमि पंचांग कार्यालय

कार्यालय : E - 219, मेन रोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-110053

कार्या.: 22852476
निवास: 22941608
मोबा. : 9868909063